

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X • SINCE 2000

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन
मानुषीमिह संस्कृताम्

१५ अक्टूबर २०२६ • वर्ष १९ • मास २२६

गद्य • पद्य • शोध-आलेख | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

विदेह ४५२

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनः मानुषीमिह संस्कृताम्

सम्पादकः गजेन्द्र ठाकुर।

[विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X Videha e-Journal (since 2000) at www.videha.co.in]

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२६. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , <http://www.geocities.com/ggajendra> आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट <http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> केर रूपमे इंटरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि (किछु दिन लेल <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> लिंकपर, सोत wayback machine of https://web.archive.org/web/* /videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- <http://videha.com/> भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग/ मैथिली ब्लॉगक एग्रिगेटर)।

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे <http://www.videha.co.in/> पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब “भालसरिक गाछ” जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रिगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers and writers to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, prose and verse in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili and from Maithili into English. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

(c)२०००- २०२६. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA. सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्ता मध्य) editorial.staff.videha@zohomail.in केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कौपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरी वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Font/ Keyboard Source: <https://fonts.google.com/> , <https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts> , <https://keyman.com/>

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@zohomail.in. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com) Cover design: AUM GAJENDRA THAKUR

VIDEHA:452



समानान्तर परम्पराक विद्यापति- चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा।

for the writers, readers, and listeners of Mithilā,

who have kept the lamp of Maithili burning

through a thousand years of storms

.....

“The Parallel is not the marginal

but the truthful, in long delay.”

Mānuṣim iha saṁskṛtām

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान्- मानुषीमिह संस्कृतम्।

मिथिलाक ओइ लेखक,

पाठक आ श्रोता लोकनि लेल,

जे सहस्र वर्षक झंझावात मे सेहो

मैथिलीक दीप प्रज्वलित रखने छथि।

समानांतर कात-करोट मे हएब नै अछि,

वरन् ई अछि असल सत्य, जे अपन समय लेलक अछि।

अनुक्रमणिका / CONTENTS

विदेह अंक ४५२ [१५ अक्टूबर २०२६]

वर्ष १९ मास २२६ ISSN 2229-547X

०.१. अंक ४५१ पर टिप्पणी.....1

गद्य Prose

- १.१. हितनाथ झा- मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-३०.....3
- १.२. कल्पना झा- मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-११.....40
- १.३. आशीष अनचिन्हार-शुगर डैडी (Sugar Daddy), शुगर मम्मी (Sugar Mommy वा Sugar Mama), मिथिलाक बिकौआ बियाह एवं वर्तमान.....47
- १.४. लालदेव कामत-एक कवि'क तकनीकी निबन्ध संग्रह/ प्रो० राम चन्द्र मण्डल जीकें पत्नी शोक मादे.....51
- १.५. प्रीति कुमारी-राना.सुधाकरके स्मृति पुनः बिराटनगरमे / व्यक्तित्व : फुले बाबू नैय रहलाथि.....59
- १.६. आचार्य रामानंद मंडल-मिथिला राज बनाम बज्जि महाजनपद/ मिथिला आ अंतर्जातीय विवाह.....66

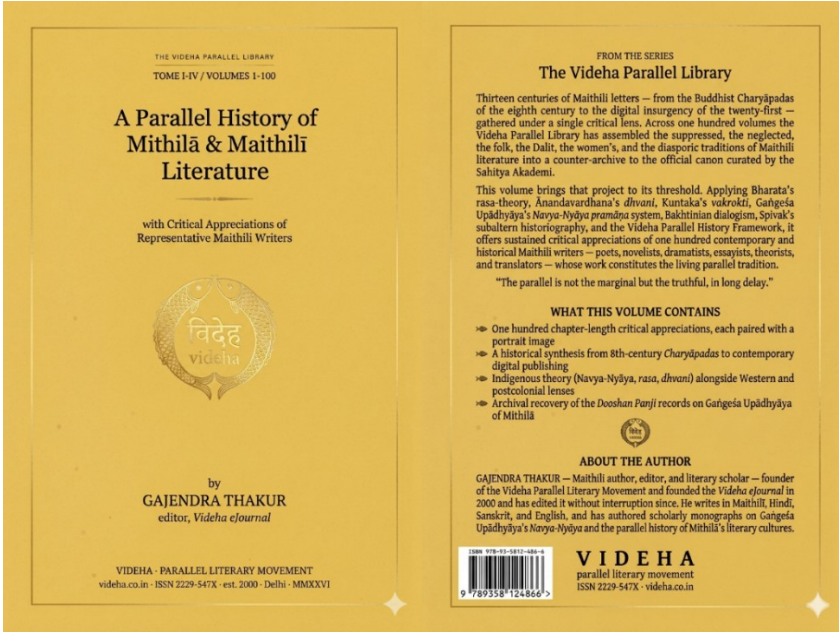
गजेन्द्र ठाकुरक शोध-आलेख (१.७-१.४३)

- १.७. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक : अभिलेख, शोक, श्रम आ ज्ञानक बहुस्तरीय महाकथा.....71
- १.८. नित नवल आशीष अनचिन्हार — नबोनारायण मिश्र समग्र.....103
- १.९. नित नवल आशीष अनचिन्हार — स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर.....128
- १.१०. नित नवल आशीष अनचिन्हार — गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा.....149
- १.११. नित नवल आशीष अनचिन्हार — गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय.....176
- १.१२. नित नवल आशीष अनचिन्हार — प्रीति कारण सेतु बान्हल.....201
- १.१३. नित नवल आशीष अनचिन्हार — सेतुषाम : Vibrant Maithili.....222
- १.१४. नित नवल आशीष अनचिन्हार — अनचिन्हार आखर.....242
- १.१५. नित नवल आशीष अनचिन्हार — जंघाजोड़ी.....259
- १.१६. नित नवल आशीष अनचिन्हार — कुमारि इच्छा.....276

१.१७. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजलक रेडी रेकोनर.....	296
१.१८. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास.....	317
१.१९. नित नवल आशीष अनचिन्हार — सन्दर्भ सहित.....	341
१.२०. नित नवल आशीष अनचिन्हार — शब्द-अर्थ-शक्ति.....	358
१.२१. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास.....	380
१.२२. नित नवल बेचन ठाकुर — नवघर.....	402
१.२३. नित नवल बेचन ठाकुर — बेटीक अपमान आ छीनरदेवी.....	419
१.२४. नित नवल बेचन ठाकुर — बाप भेल पित्ती आ अधिकार.....	436
१.२५. नित नवल बेचन ठाकुर — ऊँच-नीच.....	453
१.२६. नित नवल बेचन ठाकुर — बिसवासघात.....	473
१.२७. नित नवल बेचन ठाकुर — भअँट.....	489
१.२८. नित नवल कुमार पवन — पइठ.....	506
१.२९. नित नवल कुमार पवन — डायरीक खाली पन्ना.....	522
१.३०. नित नवल कुमार पवन — अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप.....	537
१.३१. नित नवल कुमार पवन — पइठ, स्मृति आ आत्मलेखन : तुलनात्मक समीक्षा.....	550
१.३२. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — गाम-घर.....	562
१.३३. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — आडम्बर.....	582
१.३४. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — गुदड़ीक लाल.....	605
१.३५. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — अनठिया कुकुर.....	629
१.३६. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — सुजाता.....	646
१.३७. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — सुकन्या.....	665
१.३८. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — परिवार.....	684
१.३९. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — दिल्लीक पार्क.....	703
१.४०. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — याचक के नजि.....	717
१.४१. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — महारानी कैकेयी.....	737
१.४२. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — काव्य सरिता.....	752
१.४३. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — स्वर्ण-कमल.....	771

पद्य Poetry

२.१. राजदेव मण्डल — बहीराक बस्ती.....	797
२.२. प्रणव कुमार झा — भगवान भरोसे.....	799



APPENDIX: METHODOLOGICAL NOTE

The Nepal Bikram Samvat years cited have been converted to approximate CE years using the standard offset of BS minus 56–57 years. Web sources consulted include the Videha digital archive (videha.co.in). All URLs were last accessed April 2026. This research was prepared using primary texts, and standard academic resources. All quoted material is from the cited sources. For the most current scholarship, consult the Videha Parallel History series at www.videha.co.in/gajenthakur.htm.

A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE: INTRODUCTION

DALIT LITERARY CRITICISM: TELUGU, GUJARATI, AND ODIA DALIT LITERATURE IN MAITHILI TRANSLATION

GANGES UPADHYAYA: LIFE, LOGIC, AND LEGACY IN THE NAVYA-NYAYA TRADITION [NAVYA-NYAYA'S HIERARCHICAL USE OF LIMITORS IS COMPATIBLE WITH MODERN ARTIFICIAL INTELLIGENCE AND NATURAL LANGUAGE PROCESSING (NLP)]

MITHILA & MAITHILI: CRITICAL ANALYSIS OF INSTITUTIONS

THE MAITHILI GHAZAL

VIDEHA (ISSUE 1-350) SADEHA SERIES (1-37)

VIDEHA ISSUES 351-438

VIDEHA MAITHILI PARALLEL DRAMA THEATRE

VIDEHA PARALLEL AUDIO VIDEO ARCHIVE

VIDEHA PARALLEL CHILDREN'S LITERATURE

Abdur Razzak, Abha Jha, Abhilash Thakur, Achhe Lal Shastri, Ajit Kumar Jha, Amit Mishra, Amod Kumar Jha, Amrendra Yadav, Anamika Raj, Anand Kumar Jha, Anil Mallik, Anjani Kumar Verma, Anmol Jha, Arvind Thakur, Ashish Anchinhar, Ashok (kathakar Ashok), Ashraf Rain, Dr. Bacheshwar Jha, Badri Nath Roy 'Amatya', Pt. Bal Govind 'Arya', Bechan Thakur, Pandit Bhavnath Jha, Bibhuti Anand, Bijayendra Jha, Binay Bhushan, Bindeshwar Thakur, Chandan Kumar Jha, Dinesh Kumar Mishra, Durganand Mandal, Gajendra Thakur, Ghanashyam Ghanero, Gopalji Jha 'Gopesh', Gyanvardhan Kanth, Harimohan Jha, Hitendra Gupta, Hitnath Jha, Hriday Narayan Jha, Ilarini Singh, Jagdanand Jha 'Manu', Jagdish Chandra Thakur 'Anil', Jagdish Prasad Mandal, Jhauli Paswan, Jitendra Kumar Jha 'Jeetu', Dr. Kailash Kumar Mishra, Kalikant Jha 'Buch', Kalpana Jha, Kalpana Jha, Bokaro, Kalpana Jha, Delhi, Kalpana Jha, Patna, Kameshwar Choudhary, Kameshwar Jha 'Kamal', Dr. Kamini Kamayini, Kamla Chaudhary, Kapileshwar Raut, Kedar Nath Chaudhary, Dr. Kirtinath Jha, Dr. Kishan Karigar, Krishna Kumar Kashyap, Kumar Manoj Kashyap, Kumar Pawan, Kundan Kumar Karn, Kusum Thakur, Lal Dev Kamat, Lalita Jha, Lallan Prasad Thakur, Laxman Jha 'Sagar', Mala Jha, Manmohan Jha, Meena Jha, Mithilesh Kumar Jha, Munnaji, Munnaji, Munni Kamat, Nabo Narayan Mishra, Nagendra Kumar, Nand Kumar Mishra 'Nand', Nand Vilas Roy, Nanda Vilas Ray, Narayan Yadav, Narayanji Chaudhary, Narendra Jha, Navendu Kumar Jha, Neeraja Renu, OM Prakash Jha, Panna Jha, Phanishwar Nath Renu, Prabhat Rai Bhatt, Pradeep Bihari, Pradeep Pushpa, Pranav Jha, Prayas Premi Maithil, Preeti Thakur, Premilata Mishra 'Prem', Premshankar Singh, Rabindra

Narayan Mishra, Rajdeo Mandal, Rajeev Ranjan Mishra, Rajnandan Lal Das, Ram Bharos Kapari 'Bhramar', Ram Chandra Roy, Ram Sogarth Yadav, Ram Vilas Sahu, Acharya Ramanand Mandal, Prof. Dr. Ramawatar Yadav, Ramdeo Prasad Mandal 'Jharudar', Ramesh, Ramesh Narayan, Rameshwar Prasad Mandal, Pandit Ramji Chaudhary, Ramji Prasad Mandal, Acharya Ramlochan Sharan, Ramlochan Thakur, Ravi Mishra Bhardwaj, Ravibhushan Pathak, Ravindra Nath Thakur, S.C. Suman, Sandeep Kumar Safi, Sanju Das, Santosh Kumar Mishra, Santosh Kumar Roy 'Batohi', Satyanand Pathak, Shail Jha 'Sagar', Dr. Shambhu Kumar Singh, Shanti Lakshmi Chaudhary, Shardinidu Chaudhary, Shashi Bala, Shashidhar Kumar 'Videh', Shiv Kumar Jha 'Tillu', Dr. Shiv Kumar Prasad, Shivshankar Singh Thakur, Shivshankar Srinivas, Dr. Shubh Kumar Barnwal, Shyam Darihare, Siyaram Jha 'Saras', Srijan Shekhar 'Ajneya', Subhash Chandra Yadav, Subhash Kumar Kamat, Subodh Jha, Subodh Kumar Thakur, Sujit Kumar Jha, Sushil, Sweta Jha Chaudhary, Taranand Viyogi, Prof. Udaya Narayana Singh Nachiketa, Umesh Mandal, Umesh Paswan, Veena Thakur, Vibha Rani, Vibhuti Anand, Vijaynath Jha, Vineet Utpal, Yoganand Jha, Prof. Dr. Yogendra P. Yadava, Yogendra Pathak Viyogi

A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Original Poem in Maithili, Translated into English, Children's Literature Theory, Children's Picture-Story Literature, Contemporary Mithila Artists, Contemporary Mithila Artists, Dalit and Subaltern Literature, Dalit Literary Criticism, Dalit Literary Criticism — Gujarati Dalit Literature in Maithili Translation, Dalit Literary Criticism — Odia Dalit Literature in Maithili Translation, Dalit Literary Criticism — Telugu Dalit Literature in Maithili Translation, Digital Maithili Children's Literature, Digital Maithili Literature, The Epistemology of Parallelism — Videha Sadeha Series and the Maithili Digital Renaissance, Gangeśa Upādhyāya / Navya-Nyāya, Gangeśa Upādhyāya — Life, Logic, and Legacy in the Navya-Nyāya Tradition, Institution Critical Analysis, Language Transmission, Laprek vs Bihani Kathā, Maithili Bihani Kathā — The Seed Story Tradition in Maithili Literature, The Maithili Ghazal — History, Theory, Revival, and the Anchinhar Era, Maithili Micronarrative, Mithila & Maithili — Critical Analysis of Institutions, Awards and Recognition Frameworks, Mithila & Maithili Institution Critical Analysis, Parallel Literature Movement, Seed Story Tradition, Tirhuta / Mithilakshar, Videha 351–438 Critic, Videha Children Literature Expanded, Videha Children Literature Expanded — Parallel Children Literature in Maithili, Videha eJournal, Videha Issues 1–350, Videha Issues 351–438, Videha Issues 351–438 — Epistemological and Canonical Transformations, The Videha Maithili Parallel Drama Theatre, Videha Maithili Parallel Drama Theatre, The Videha Maithili Parallel Drama Theatre — Critical Historiography and Epistemological Analysis, The Videha Parallel Audio Video Archive, Videha Parallel Audio Video Archive, The Videha Parallel Audio Video Archive — Digital Remediation and Subaltern Historiography, Videha Parallel Audio Video Critic, Videha Parallel Children Literature, Videha Parallel Drama Critic, Videha Parallel History Framework, Videha Sadeha 1–37 / Issues 1–350 Critic, Videha Sadeha, Videha Sadeha Series 1–37, Vidyapati, the Primal Poet of Maithili (Pre-Jyotirishvara), Women's Writing, Young Readers in Maithili
... AND MORE TO COME IN TOME 5.

A PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE [TOME 1-4; VOLUMES 1-100] BY GAJENDRA THAKUR
[ISBN NUMBER: 978-93-5812-486-6]

[GOOGLE PLAY BOOK](#) [TOME 1-4; VOLUMES 1-100]

<https://play.google.com/store/books/details?id=uvjREQAAQBAJ>

[GOOGLE PLAY AUDIOBOOK](#) [TOME 1-4; VOLUMES 1-100]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBas1rzEM>

[AMAZON KINDLE](#) [TOME 1-4; VOLUMES 1-100]

<https://www.amazon.in/dp/B0GX2XRKM7>

[POTHI.COM](#) HARDBACKS

[POTHI TOME 1](#) [VOLUMES 01-25]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-parallel-history-mithila-maithili-literature/>

[POTHI TOME 2](#) [VOLUMES 26-50]

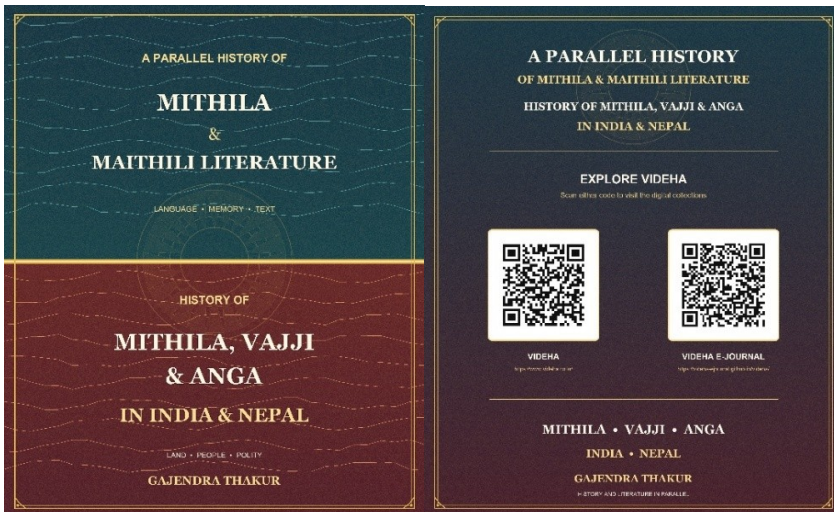
<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-parallel-history-mithila-maithili-tome-2/>

[POTHI TOME 3](#) [VOLUMES 51-75]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-parallel-history-mithila-maithili-literature-volume-1-100-tome-3-volume-51-75-b/>

[POTHI TOME 4](#) [VOLUMES 76-100]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-parallel-history-mithila-maithili-literature-volume-1-100-tome-4-volume-76-100-/>



HISTORY OF MITHILA, VAJJI & ANGA IN INDIA & NEPAL: FROM PREHISTORY TO THE CONTEMPORARY PERIOD [A PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE] VOLUME I

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-history-of-mithila-vajji-anga-india-nepal/>

Google Playbook

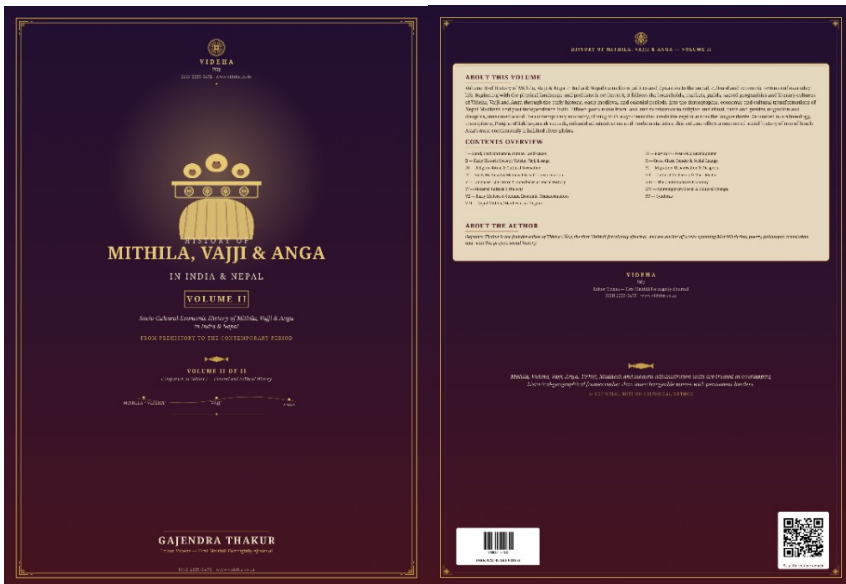
<https://play.google.com/store/books/details?id=xisIegAAQBAJ>

Google Play Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEAG7i6uSM>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HHJ27ZG4>



HISTORY OF MITHILA, VAJJI & ANGA: SOCIO-CULTURAL-ECONOMIC HISTORY OF MITHILA, VAJJI & ANGA IN INDIA & NEPAL FROM PREHISTORY TO THE CONTEMPORARY PERIOD [A PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE] VOLUME II

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-history-of-mithila-vajji-anga-in-india-nepal-volume-ii-part-1/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-history-of-mithila-vajji-anga-in-india-nepal-volume-ii-part-ii/>
<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-history-of-mithila-vajji-anga-in-india-nepal-volume-ii-part-3/>
 Google Playbook
<https://play.google.com/store/books/details?id=qKEJEGAAQBAJ>
 Google Play Audiobook
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEAGGTJZJM>
 Amazon Kindle
<https://www.amazon.in/dp/B0HHYHNXZ7>

II. DECODING PANJI: VOLUME I-VI

Decoding the Panji of Mithila

Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network

The Panji system of Mithila is a remarkable example of how communities preserved, recorded and transmitted social memory across generations. Spanning centuries, it functions as one of the world's oldest social networks—long before the digital age. This book decodes the structure, purpose and significance of Panji, bringing to light its value for understanding kinship, migration, marriage alliances and societal organization in India and Nepal.

Bridging tradition with modern research, this work offers surprising insights for scholars of sociology, anthropology and genomic genealogy. It opens new pathways for interdisciplinary studies, showing how ancient records can inform contemporary social science and genealogical mapping.

Gajendra Thakur



ISBN 978-93-5915-894-5



ISBN

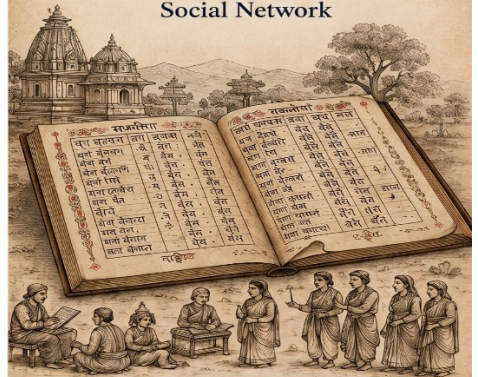
www.videha.co.in



videha.co.in

Decoding the Panji of Mithila

Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network



For the Research Students of Sociology, Anthropology and Genome/ Genealogical Mapping

Gajendra Thakur

Editor

Videha Maithili eJournal

VIDEHA

DECODING THE
PANJI OF MITHILA
VOLUME II

Genealogical Mapping, Mūla, Dūṣan, and the Videha
Panji Search System

Panji is Mithila's grammar of memory.
एजन्डी मिथिलाक स्मृतिक व्याकरण अछि।

Gajendra Thakur
Editor
Videha — First Maithili Fortnightly eJournal
www.videha.co.in

Decoding the Panji of Mithila Volume II

Decoding the Panji of Mithila Volume II introduces Mithila's Panji Prabandha as a layered archive of genealogy, marriage rules, mūla, mūlagrāma, gotra-pravara, maternal lines, scholarly titles, Dūṣan records, village memory, and historical persons. The book explains Panji as genealogical mapping, not modern DNA, and proposes the Videha Panji Search System as a responsible digital search aid.

Important Ethical Note
Panji records are historical and genealogical sources. They are not modern genetic proof, legal proof, or automatic marriage clearance. Dūṣan records must not be used to stigmatize living persons, families, villages, or communities.

Scan to read
पुढ छोलनाक लेल स्कैन करु



Videha — First Maithili Fortnightly eJournal
www.videha.co.in

VIDEHA EDITIONS

DECODING THE PANJI OF MITHILA
VOLUME II • GENEALOGICAL MAPPING • MITHILA • BIRLA • 2

In the third volume of this undertaking, Gajendra Thakur turns to the Uṣṭa Panji — one of Mithila's genealogical registers — and subverts it to a discipline rarely brought to manuscript genealogy before: the index-wise critique of genome mapping. What results is neither pure philology nor pure science, but a third thing — a complete, line-by-line decoding of a record that has long outlived the families it describes. Continuing the work begun in Volumes I and II, this khanda of Genome Mapping Volume I carries Mithila's tradition of written memory into the grammar of the genome itself.

"A Panji is not read so much as re-entered — each name a doorway back into the house that bore it."

2020 • BIRLA INNOVATION

EDITED BY
Gajendra Thakur
Videha • 2020 • 224p • INK



SCAN FOR MORE • VIDEHA.CO.IN

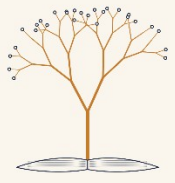
VIDEHA EDITIONS • VIDEHA.CO.IN • ISBN 978-81-950-3625-2

VIDEHA • MITHILA STUDIES

DECODING THE
PANJI OF MITHILA

मिथिलाक पान्जिक उद्घाटन

VOLUME
III



A Complete Index-wise Decoding
of Genome Mapping
Volume I — Ikhanda 2

BASED ON RPTIP PANJI

GAJENDRA THAKUR

GENOME MAPPING • 2020 • 224p • INK • VIDEHA.CO.IN



VIDEHA EDITIONS

DECODING THE PANJI OF MITHILA
VOLUME IV • BASED ON THE NAGRAH PANJI

The fourth volume turns to the Nagrah Panji, one of the named registers through which Mithila's genealogists have long kept track of lineage, marriage, and descent. Gajendra Thakur's index-wise method holds here as before: each entry is drawn out of the manuscript's continuous list and set back into its own place, so that what was compressed into a single running record becomes legible again as a structure of families, names, and the lines that connect them.

"Every Panji is a village that has agreed, for the length of a list, to stand still."

[FROM THE EPISTROPUS 1195](#)

ALSO FROM VIDEHA EDITIONS
VOLUME IV OF THE SERIES
Decoding the Panji of Mithila

EDITED BY
Gajendra Thakur
Videha • ISBN 2220-242X



SCAN FOR MORE • VIDEHA.CO.IN

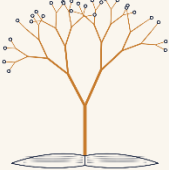
VIDEHA EDITIONS • 1805 2220-242X • ISBN 2220-242X

VIDEHA • MITHILA STUDIES

**DECODING THE
PANJI OF MITHILA**

मिथिलाक पंजिक उद्घाटन

VOLUME IV



Based on the Nagrah Panji

GAJENDRA THAKUR

VIDEHA EDITIONS • 1805 2220-242X • VIDEHA.CO.IN



VIDEHA EDITIONS

DECODING THE PANJI OF MITHILA
VOLUME V • A GENEALOGICAL MAPPING OF 430 AD

The fifth volume turns to the Panji of Volume II, mapping Mithila's genealogical record across the years 430 to 2009 AD. Rather than read the manuscript as a single continuous text, Gajendra Thakur decodes it index by index, setting out the branching and rejoining of lineages that the original compilers folded into one continuous list. The result is less a translation than an excavation — each entry restored to its place across more than a millennium and a half of recorded memory.

"A genealogy is a kind of clock — wind it back far enough and the names start keeping their own time."

[FROM THE EPISTROPUS 1195](#)

ALSO FROM VIDEHA EDITIONS
VOLUME V OF THE SERIES
Decoding the Panji of Mithila

EDITED BY
Gajendra Thakur
Videha • ISBN 2220-242X



SCAN FOR MORE • VIDEHA.CO.IN

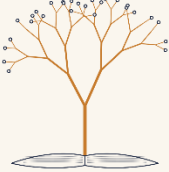
VIDEHA EDITIONS • 1805 2220-242X • ISBN 2220-242X

VIDEHA • MITHILA STUDIES

**DECODING THE
PANJI OF MITHILA**

मिथिलाक पंजिक उद्घाटन

VOLUME V

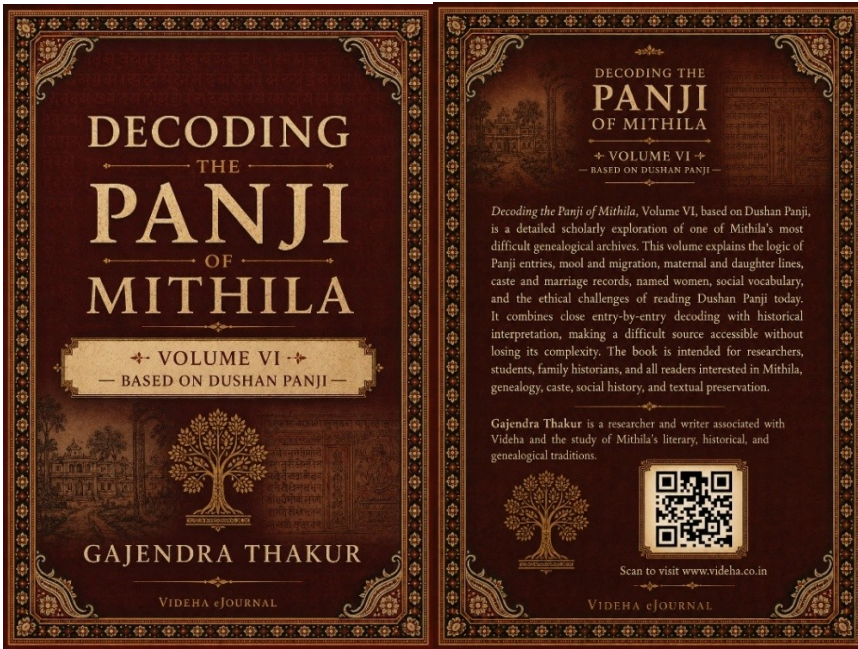


*Genealogical Mapping of Mithila
430 AD — 2009 AD*

BASED ON VOLUME II PANJI

GAJENDRA THAKUR

VIDEHA EDITIONS • 1805 2220-242X • VIDEHA.CO.IN



Decoding the Panji of Mithila Volume I-VI

POTHI.COM HARDBACK:

Decoding the Panji of Mithila : Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network [Volume I]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila/>

Decoding the Panji of Mithila Volume II: Genealogical Mapping, Mūla, Dūṣaṇ, and the Videha Panji Search System [Based on Prachin Panji]

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-volume-ii/>

Decoding the Panji of Mithila Volume III: A Complete Index-wise Decoding of Genome Mapping Volume I - Khand 2 Based on Uptin Panji

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-volume-iii/>

Decoding the Panji of Mithila Volume IV: Based on the Nagram Panji

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-volume-iv/>

Decoding the Panji of Mithila Volume V: Based on Volume II Panji: Genealogical Mapping of Mithila, 450 AD-2009 AD

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-volume-v/>

Decoding the Panji of Mithila Volume VI: Based on Dushan Panji

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-decoding-panji-mithila-0/>

KINDLE EDITIONS:

Decoding the Panji of Mithila : Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network Volume I

<https://www.amazon.in/dp/B0H463RV78>

Decoding the Panji of Mithila Volume II: Genealogical Mapping, Mūla, Dūṣaṇ, and the Videha Panji Search System

<https://www.amazon.in/dp/B0H6NPRTYB>

Decoding the Panji of Mithila Volume III: A Complete Index-wise Decoding of Genome Mapping Volume I - Khand 2 Based on Uptin Panji

<https://www.amazon.in/dp/B0H6R4BBFB>

Decoding the Panji of Mithila Volume IV: Based on the Nagram Panji

<https://www.amazon.in/dp/B0H6R6VSBF>

Decoding the Panji of Mithila Volume V: Based on Volume II Panji: Genealogical Mapping of Mithila, 450 AD-2009 AD
<https://www.amazon.in/dp/B0H6R4BBFD>

Decoding the Panji of Mithila Volume VI: Based on Dushan Panji
<https://www.amazon.in/dp/B0H6R2YCFP>

Google Playbooks:

Decoding Panji: Volume I
<https://play.google.com/store/books/details?id=rrniEQAAQBAJ>
Decoding Panji: Volume II
<https://play.google.com/store/books/details?id=5RrxEQAAQBAJ>
Decoding Panji: Volume III
<https://play.google.com/store/books/details?id=XD2EQAAQBAJ>
Decoding Panji: Volume IV
<https://play.google.com/store/books/details?id=bfn2EQAAQBAJ>
Decoding Panji: Volume V
play.google.com/store/books/details?id=hGH4EQAAQBAJ
Decoding Panji: Volume VI
<https://play.google.com/store/books/details?id=pch6EQAAQBAJ>

Google Play Audiobooks:

Decoding Panji: Volume I
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE64VahPM>
Decoding Panji: Volume II
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE6wVeBPM>
Decoding Panji: Volume III
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE6hDjE0M>
Decoding Panji: Volume IV
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE6GfBmVm>
Decoding Panji: Volume V
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE6Ui4SxM>
Decoding Panji: Volume VI
<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAE61GW2M>

III. गद्य पद्य भारती खण्ड १ आ २ (विदेह सदेह २८ & विदेह सदेह ३७)

[विभिन्न भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य रचना (खण्ड-१) & (खण्ड-२) (विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)
[खण्ड १ ISBN No: 978-93-341-0402-8; खण्ड २ ISBN No: 978-93-5890-150-4]

१

विदेह सदेह २८

GADYA PADYA BHARTI 1

विभिन्न भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य रचना (खण्ड-१) (विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)
<https://store.pothi.com/book/editor-gajendra-thakur-gadya-padya-bharti-1/>

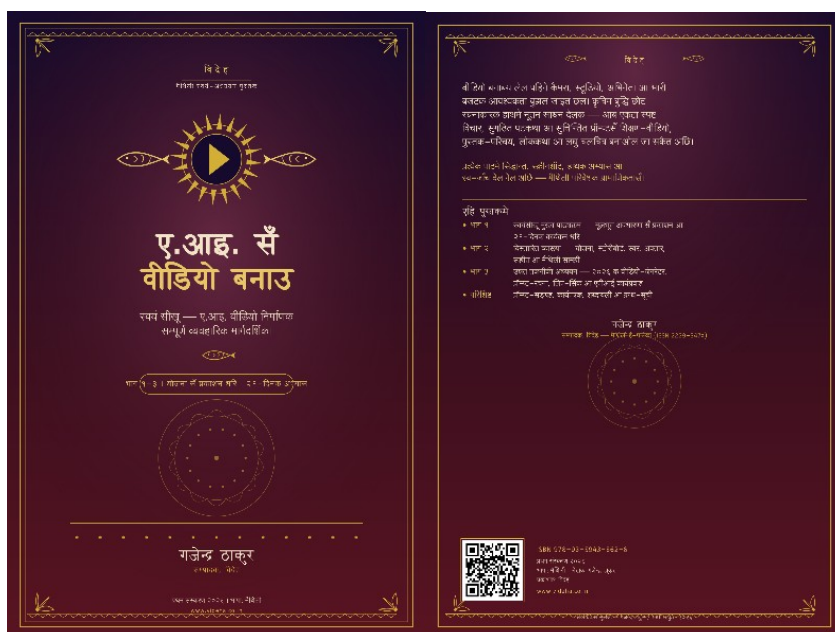
२

विदेह सदेह ३७

GADYA PADYA BHARTI 2

विभिन्न भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य रचना (खण्ड-२) (विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)
<https://store.pothi.com/book/translator-gajendra-thakur-gadya-padya-bharti-2/>

IV: SELF LEARNING SERIES (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)



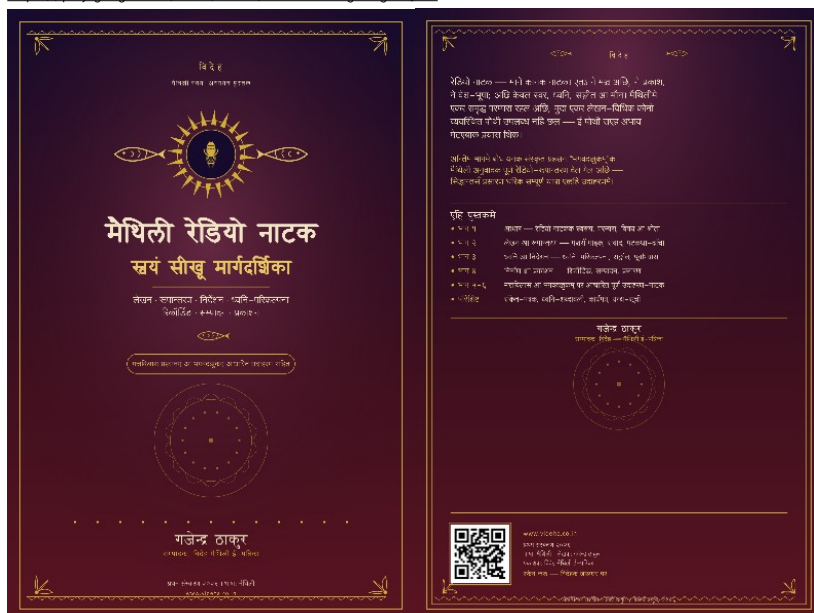
ए.आइ. सँ वीडियो बनाउ (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%8F%E0%A4%86%E0%A4%87%E0%A4%B8%E0%A4%B5%E0%A4%A1%E0%A4%AF%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%89/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=PgcDEgAAQBAJ>



मेथिली रेडियो नाटक: स्वयं सीखू मार्गदर्शिका (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI PAPERBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-maithili-radio-natak/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=bwcDEgAAQBAJ>

V: गोहि सभक बीच जलसमाधि- गजेन्द्र ठाकुर (मेथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास)

POTHI.COM HARDBACK

Khand 0:

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-gohi-sabhak-beech-jalsamadhi-part-0/>

Khand 1:

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-gohi-sabhak-beech-jalsamadhi-part-1/>

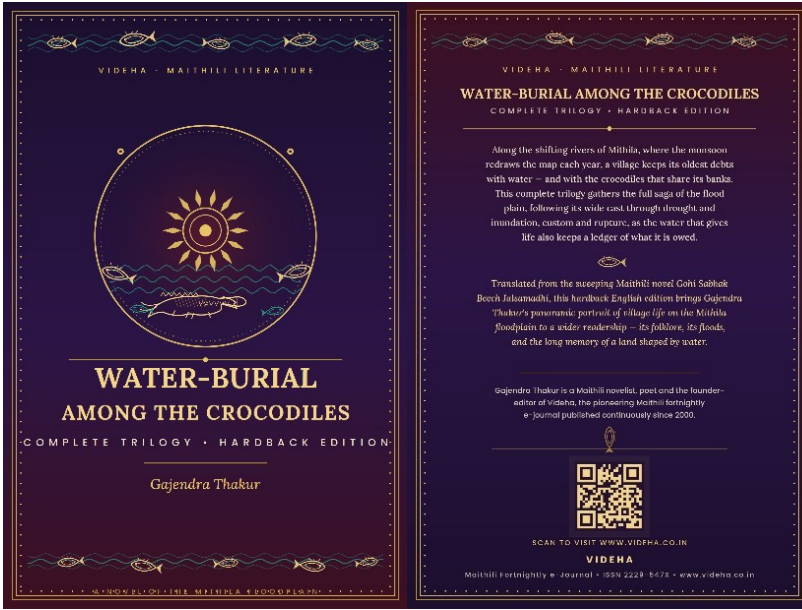
Khand 2:

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-gohi-sabhak-beech-jalsamadhi-part-2/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=pKX4EQAAQBAJ>

WATER-BURIAL AMONG THE CROCODILES [ENGLISH TRANSLATION BY THE AUTHOR GAJENDRA THAKUR HIMSELF]



POTHI.COM HARBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-water-burial-among-the-crocodiles-volume-0/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-water-burial-among-the-crocodiles-volume-1/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-water-burial-among-the-crocodiles-volume-2/>

Kindle Edition

<https://www.amazon.in/dp/B0HG3NTT13>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=dmoEEgAAQBAJ>

Google Play Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEAGpHjkbM>

TEACHING SERIES

Gohi Sabhak Beech Jalsamadhi Teaching Course

www.archive.org/download/videha-petar-2/Gohi_Jalsamadhi_Teaching_merge.pdf

Water-Burial Among the Crocodiles Teaching Course

https://archive.org/download/videha-petar-2/Videha_Teaching_Gohi_Jalsamadhi_Batch1-87.pdf



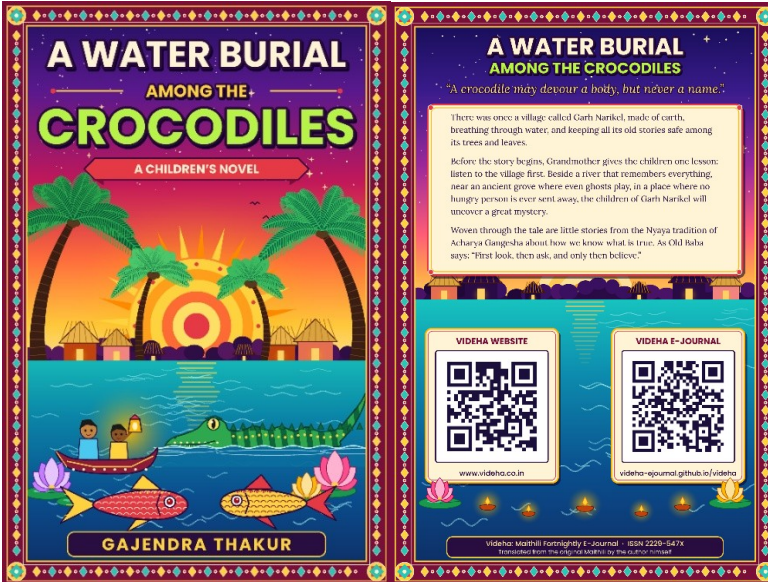
गोहि सभक बीच जलसमाधि - बाल संस्करण

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=2osiEgAAQBAJ>

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%97%E0%A4%B9-%E0%A4%B8%E0%A4%AD%E0%A4%95-%E0%A4%AC%E0%A4%9A-%E0%A4%9C%E0%A4%B2%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%A7-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A4%B8%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%A3/>



A WATER BURIAL AMONG THE CROCODILES [A CHILDREN NOVEL]

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=cg8jEgAAQBAJ>

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBGFxhXTM>



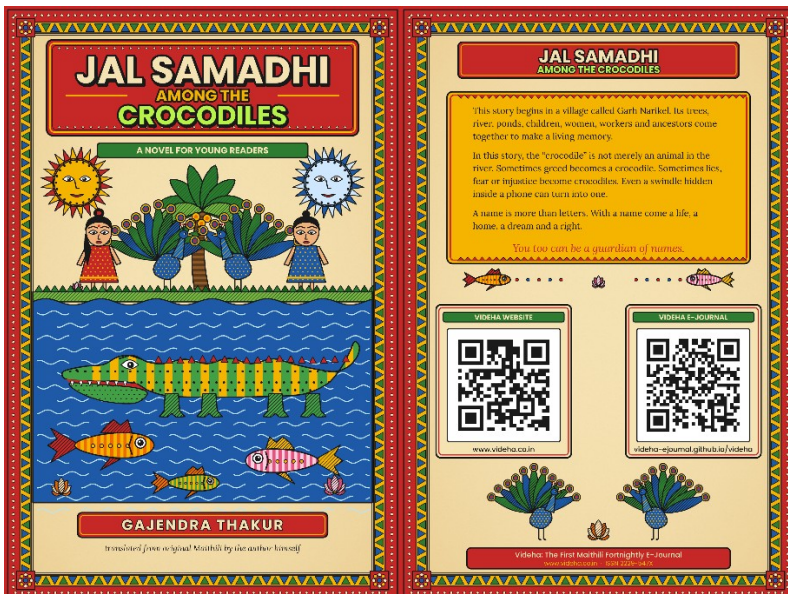
गोहि सभक बीच जलसमाधि - किशोर संस्करण

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=yowiEgAAQBAJ>

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%97%E0%A4%B9-%E0%A4%B8%E0%A4%AD%E0%A4%95-%E0%A4%AC%E0%A4%9A-%E0%A4%9C%E0%A4%B2%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%A7-%E0%A4%95%E0%A4%B6%E0%A4%B0-%E0%A4%B8%E0%A4%B8%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%A3/>



JAL SAMADHI AMONG THE CROCODILES [A NOVEL FOR YOUNG READERS]

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=QxwjEgAAQBAJ>

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBG1zqXbM>

VI. स्वप्नमे मिज्जर होइत WHEN DREAMS MERGE



POTHI.COM HARDBACK

[https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-](https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%B8%E0%A4%B5%E0%A4%AA%E0%A4%A8-%E0%A4%AE-%E0%A4%9C%E0%A4%9D%E0%A4%B0-%E0%A4%B9%E0%A4%B7%E0%A4%A4/)

[%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%B8%E0%A4%B5%E0%A4%AA%E0%A4%A8-%E0%A4%AE-](https://store.pothi.com/book/%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%B8%E0%A4%B5%E0%A4%AA%E0%A4%A8-%E0%A4%AE-%E0%A4%9C%E0%A4%9D%E0%A4%B0-%E0%A4%B9%E0%A4%B7%E0%A4%A4/)

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=qAwKEgAAQBAJ>



POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-when-dreams-merge/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=us0JEgAAQBAJ&pli=1>

Google Play Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEAGOT55KM>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/BOHJ1KXLZR>

VII: मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान (ठेठी, अंगिका आ बज्जिकारकें संग लऽ कऽ)- गजेन्द्र ठाकुर



साहित्य अकादेमीक संकीर्ण मैथिली भाषा विभागसँ विदेह (मैथिली साहित्यक समानान्तर मंच) ऐ अर्थमे सेहो फराक अछि जे विदेहमे ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक सन सहभाषाकें संग लऽ कऽ मिथिलाक बोली-वैविध्यक समग्र चित्र देल जाइत अछि। विदेहमे ठेठी, अंगिका आ बज्जिकाक भाषा विज्ञान, रचना आ व्याकरण मैथिलीक संग देल गेल अछि। अंगिका आ बज्जिका-रचना सँ लऽ कऽ भाषा-गठन, कालक-विभक्ति, धातु-स्य आ प्रयोग-विद्वान् अधिक विवेचना ऐ इनमे अछि, जे विद्यार्थी, शोधार्थी आ भाषाप्रेमी सबक लेल उपयोगी होएत।

गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादन, विदेह ISSN 2229-547X

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-maithili-thethi-angika-bajjika/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=pKX4EQAAQBAJ>

VIDEHA
First Maithili Fortnightly eJournal • B08 2229-647X

विदेह

शुद्ध मैथिली
लेखन-शैली निर्देशिका
गजेन्द्र ठाकुर
संशोधित आ परिचालित संस्करण - २०२६

ठेठी-अंगिका
लेखन-शैली निर्देशिका
लेखन — अनुवाद — सम्पादन — भाषिक वर्ग
परिचालित संस्करण — २०२६
Gajendra Thakur

बज्जिका
लेखन-शैली निर्देशिका
ठेठ बर्गीकरण — लिपिबद्ध-अलिपिबद्ध सम्पादन
परिचालित संस्करण — २०२६
Gajendra Thakur

विदेह : प्रथम मैथिली व जिक ई-जिक
विदेह
www.videha.co.in

VIDEHA
First Maithili Fortnightly eJournal • B08 2229-647X

विदेह

शुद्ध मैथिली • ठेठी-अंगिका • बज्जिका
लेखन-शैली निर्देशिका


Videha Website
<https://www.videha.co.in>


Videha eJournal
<https://videha.ejournal.gutenberg.io/Videha>

विदेह : प्रथम मैथिली व जिक ई-जिक
विदेह
www.videha.co.in

विदेह शुद्ध मैथिली लेखन-शैली निर्देशिका (बज्जिका आ ठेठी-अंगिका के संग लऽ कऽ)

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=BYQZEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%B6%E0%A4%A6%E0%A4%A7-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%B2%E0%A4%96%E0%A4%A8-%E0%A4%B6%E0%A4%B2-%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A4%A6%E0%A4%B6%E0%A4%95-%E0%A4%AC%E0%A4%9C%E0%A4%9C%E0%A4%95-%E0%A4%86-%E0%A4%A0%E0%A4%A0-%E0%A4%85%E0%A4%97%E0%A4%95-%E0%A4%95-%E0%A4%B8%E0%A4%97-%E0%A4%B2%E0%A4%BD-%E0%A4%95%E0%A4%BD/>

विदेह

शुद्ध मैथिली

लेखन-शैली निर्देशिका

गजेन्द्र ठाकुर

संशोधित आ परिवर्धित संस्करण - २०२६

विदेह - प्रथम मैथिली पात्रिक ई-पत्रिका

विदेह शुद्ध मैथिली

लेखन-शैली निर्देशिका

मैथिली वर्तनी, व्याकरण, शब्दप्रयोग, अनुवाद, समीक्षा, सम्पादन आ प्रकाशनक व्यापक निर्देशिका।

२६ भाग - ५९२ विषय - युनिकोड वेन्नागरी
मूल वर्तनी सिद्धान्त - मैथिलीमे नुक्ताबुक्क केवल 'ङ' आ 'ड़';
शब्दारम्भक 'ङ' आ 'ड़' नुक्तारहित।

- शब्द
- वर्तनी
- व्याकरण
- शैली
- अनुवाद
- शोध
- प्रकाशन



विदेह वेबसाइट
https://videha-journal.io



विदेह ई-जर्नल
https://videha-journal.github.io/videha/

गजेन्द्र ठाकुर
विदेह - प्रथम मैथिली पात्रिक ई-पत्रिका

आईएसएन २२९५-५४०४५४
२०२६ - ६ × ९ इंच

VIDEHA MAITHILI STYLE MANUAL

https://videha-ejournal.github.io/videha-ejournal/VIDEHA_STYLE_MANUAL_MAITHILI.pdf

VIDEHA
First Maithili Bilinguality eJournal • ISSN 2229-517X

विदेह

ठेठी-अंगिका

लेखन-शैली निर्देशिका

लेखन — अनुवाद — सम्पादन — भाषिक जाँच
परिवर्धित संस्करण — २०२६

Gajendra Thakur



विदेह
www.videha.io

VIDEHA

एहि पोथीक विषय

ई निर्देशिका ठेठी-अंगिकाक स्वर, सर्वनाम, सहायक क्रिया, ध्वनिगत भेद, वाक्यालय आ लोकशब्दकें केन्द्रमे राखिकें लेखनक पद्धति बताबै छै। भाषिक खोज, क्षेत्रीय प्रयोग आ लोकपाठक अलग मान सुरक्षित राखल गेल छै।

मुख्य विशेषता

- सर्वनाम, आदर, क्रिया आ नकारक समीक्षा
- साधारण आ ध्वन्यात्मक लिखनक भेद
- सोलमल ५२० शब्द-प्रविष्टिक संग्रह
- अनुवाद, साहित्य, सम्पादन आ गुणवत्ता-जाँच

विदेहक डिजिटल संसाधन



विदेह जाल-पता
<https://www.videha.io/>

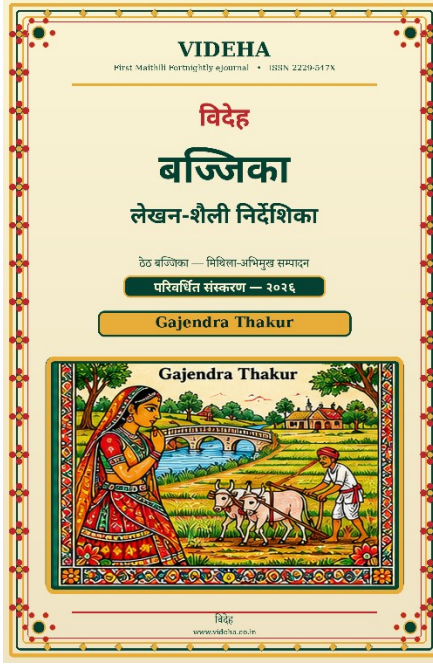


विदेह अंगिलेख
<https://videha-journal.github.io/videha/>

Gajendra Thakur
विदेह - प्रथम मैथिली पात्रिक ई-पत्रिका

VIDEHA THETHI-ANGIKA STYLE MANUAL

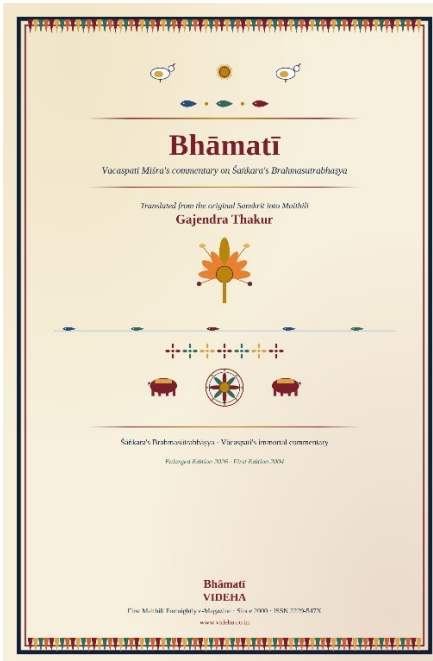
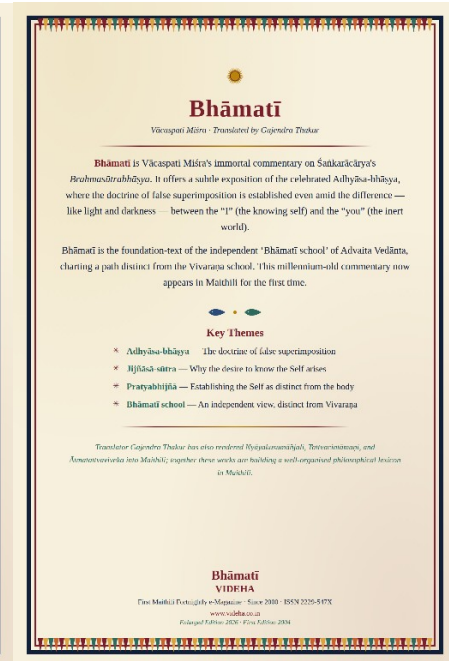
https://videha-ejournal.github.io/videha-ejournal/VIDEHA_STYLE_MANUAL_THETHI_ANGIKA.pdf



VIDEHA BAJJIKA STYLE MANUAL

https://videha-ejournal.github.io/videha-ejournal/VIDEHA_STYLE_MANUAL_BAJJIKA.pdf

VIII: भामती (वाचस्पति) / आत्मतत्त्वविवेक (उदयन) / न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन) / तत्त्वचिन्तामणि (गणेश) [मूल संस्कृत से मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)



भामती (वाचस्पति) [मूल संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-bhamti/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=PWcAEgAAQBAJ>



आत्मतत्त्वविवेक (उदयन) [मूल संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%AE%E0%A5%82%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4-%E0%A4%89%E0%A4%A6%E0%A4%AF%E0%A4%A8-atmatattvaviveka/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=I2cAEgAAQBAJ>



न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन) [मूल संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%AE%E0%A5%82%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4-%E0%A4%89%E0%A4%A6%E0%A4%AF%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E2%80%A2-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%B8%E0%A4%81-%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%A5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%80-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6-%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0-nyayakusumanjali/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=APECeGAAQBAJ>



तत्त्वचिन्तामणि (गंगेश) [मूल संस्कृत से मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

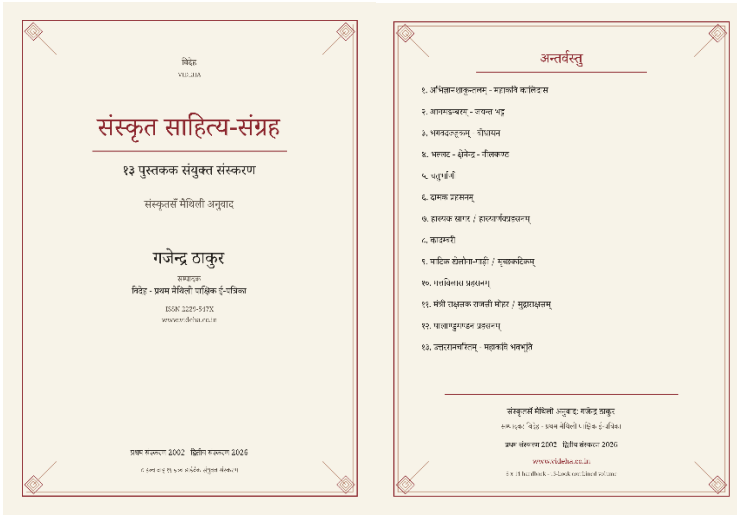
POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-tattvachintamani/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=FLP3EQAAQBAJ>

IX.[अभिज्ञानशाकुन्तलम् (महाकवि कालिदास); आगमडम्बरम् -जयन्त भट्ट; भगवदज्जुकम् -बोधायन; कवि भल्लट- भल्लट-शतक (भल्लटक शत अन्योक्ति), महाकवि क्षेमेन्द्र- छल-कौशलक विलास (कलाविलास), कवि नीलकण्ठ- कलियुग-विडम्बना (व्यंग्य); चतुर्भाण- श्री शुद्धक केर मूल संस्कृत- पद्मप्राभूतकम् (कमलक भेंट), ईश्वरदत्तक मूल संस्कृत- धूर्तवितसंवाद: (धूर्त आ दलालक विचार-विमर्श), वररुचिक मूल - उभयाभिसारिका (परस्पर प्रेम-पलायन) आ महाकवि श्यामिलक केर मूल संस्कृत- पादताडितकम् (लात); दामक प्रहसनम् (सम्भवत: भास रचित); हास्यक सागर / हास्यार्णवप्रहसनम् (मूल संस्कृत प्रहसन श्री जगदीश्वर भट्टाचार्य); कादम्बरी (वाणभट्ट आ भूषणभट्ट); माटिक खेलौना-गाड़ी / मूच्छकटिकम् (शुद्धक रचित संस्कृत नाटक); मत्तविलास प्रहसनम् (पल्लव नरेश श्री महेन्द्रविक्रम वर्मा प्रथम केर मूल संस्कृत प्रहसन); मंत्री राक्षसक राजसी मोहर / मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त रचित संस्कृत नाटक); पालाण्डुमण्डन प्रहसनम् (हरिजीवन मिश्रक संस्कृत प्रहसन); उत्तररामचरितम् (महाकवि भवभूति)]- संस्कृतसे मैथिली अनुवाद आ तखन अंग्रेजी अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)



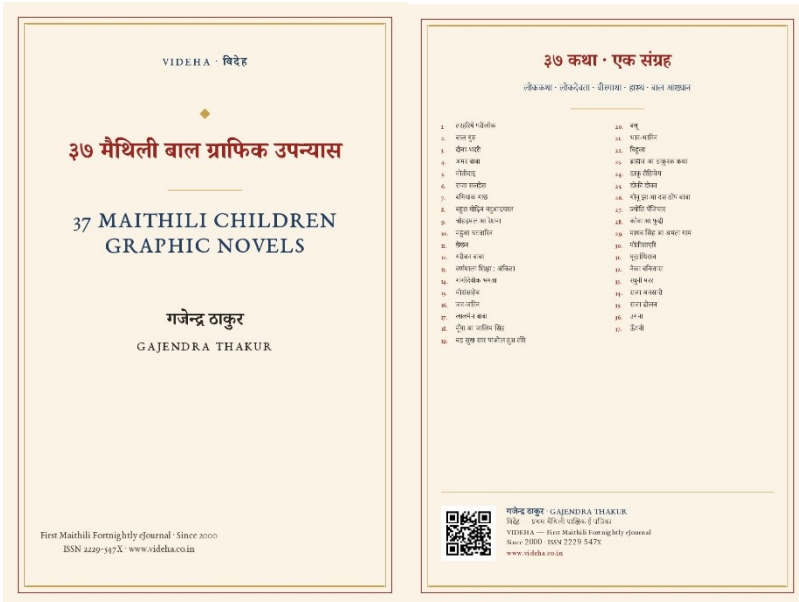
POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-sanskrit-sahitya-13-books/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=8ZkFEgAAQBAJ>

X. ३७ टा मैथिली बाल उपन्यास गजेन्द्र ठाकुर



३७टा मैथिली बाल उपन्यास गजेन्द्र ठाकुर

POTHI.COM HARDBACKS

खण्ड १ (१-१० बाल उपन्यास)

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A5%A9%E0%A5%AD-%E0%A4%9F-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%B8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7/>

खण्ड २ (११-२० बाल उपन्यास)

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A5%A9%E0%A5%AD-%E0%A4%9F-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%B8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>

खण्ड ३ (२१-३० बाल उपन्यास)

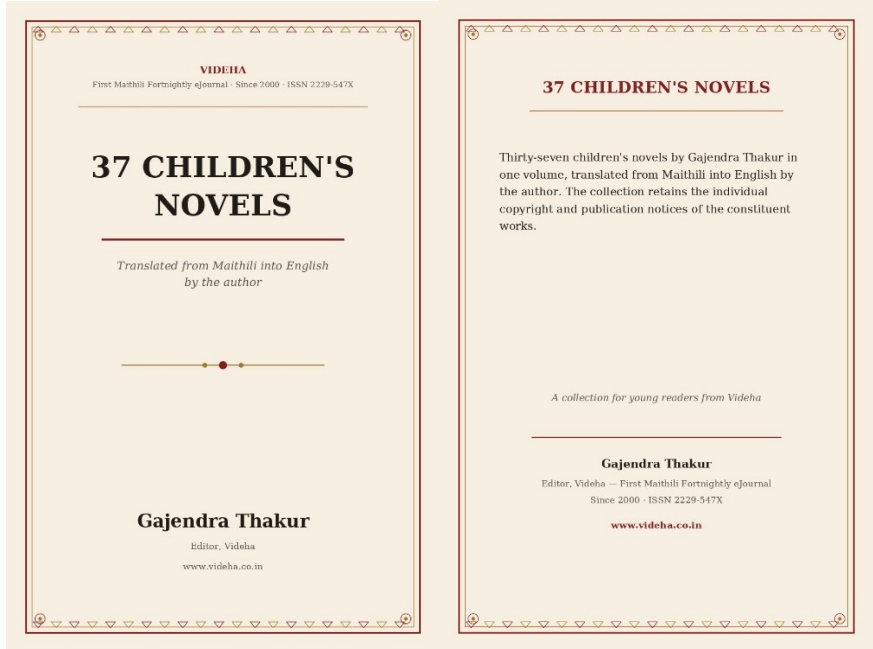
<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A5%A9%E0%A5%AD-%E0%A4%9F-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%B8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A9/>

खण्ड ४ (३१-३७ बाल उपन्यास)

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A5%A9%E0%A5%AD-%E0%A4%9F-%E0%A4%AE%E0%A4%A5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%B2-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%AF%E0%A4%B8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%AA/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=qdIFgAAQBAJ>



37 MAITHILI CHILDREN NOVELS IN ENGLISH TRANSLATION

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-37-maithili-children-novels-in-english-translation-part-1/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-37-maithili-children-novels-in-english-translation-part-2/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=QtUFgAAQBAJ>

Google Playbook Audiobook

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEAG8I-ySM>

XI.प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना सिद्धान्त आ अनुग्रयुक्त अध्ययन- गजेन्द्र ठाकुर



POTHI.COM HARDBACK

खण्ड-१

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%A7-%E0%A4%A8%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%A7-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A4%9A%E0%A4%A8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7-%E0%A4%B8%E0%A4%A6%E0%A4%A7%E0%A4%A8%E0%A4%A4/>

खण्ड-२

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%A7-%E0%A4%A8%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%A7-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A4%9A%E0%A4%A8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%AF%E0%A4%95%E0%A4%A4-%E0%A4%85%E0%A4%A7%E0%A4%AF%E0%A4%AF%E0%A4%A8/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=B84GEgAAQBAJ>



नित नवल वृषेश चन्द्र लाल

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-nit-naval-brikhesh-chandra-lal/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=3HQFEgAAQBAJ>



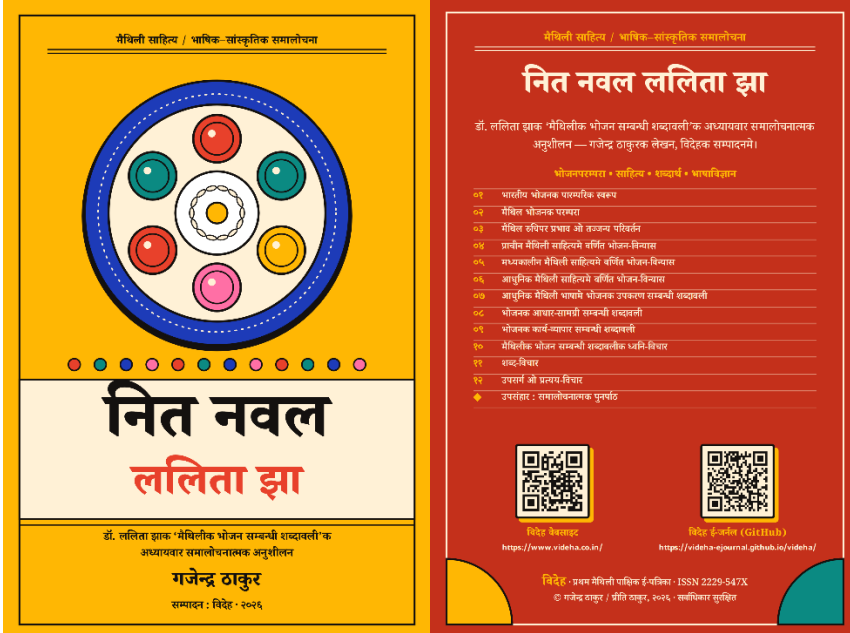
નિત નવલ કમલા ચૌધરી

POTHI PAPERBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%95%E0%A4%AE%E0%A4%B2-%E0%A4%9A%E0%A4%A7%E0%A4%B0/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=Va4dEqAAQBAJ>



નિત નવલ લલિતા ઝા

POTHI PAPERBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%B2%E0%A4%B2%E0%A4%A4-%E0%A4%9D/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=a64dEgAAQBAJ>



नित नवल कुणाल

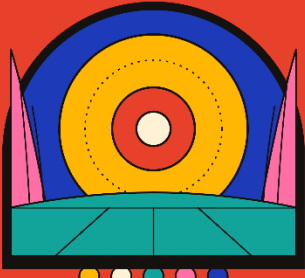
POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%95%E0%A4%A3%E0%A4%B2/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=y64dEgAAQBAJ>

मेथिली साहित्यालोचना / साहित्यिक अध्ययन



नित नवल परमेश्वर कापड़ि

कथा • कविता • समालोचना • रंगमञ्च
गजेन्द्र ठाकुर
सम्पादन : विदेह - २०२६

मेथिली साहित्यालोचना / साहित्यिक अध्ययन

नित नवल परमेश्वर कापड़ि

कथा, कविता, समालोचना आ रंगमञ्चक पाँच खण्डमे परमेश्वर कापड़िक रचना-संसारक आलोचनात्मक अध्ययन — गजेन्द्र ठाकुरक लेखन, विदेहक सम्पादनमे।

०१ कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा
०२ पद्य, अनुवाद आ काव्यालोचना
०३ रचना-संसारक विविध आयाम
०४ रेड-रेड : नाट्यकृति आ रंग-विमर्श
०५ गहन उमरास : नाट्यसाहित्यीय मीमांसा




विदेह वेबसाइट
<https://www.videha.co.in/>

विदेह ई-जर्नल (GITHUB)
<https://videha-e-journal.github.io/videha/>

विदेह : प्रथम मेथिली पत्रिका ई-पत्रिका • ISSN 2229-547X
४० गजेन्द्र ठाकुर • प्रथम खण्ड, २०२६ • साप्ताहिकार पुरस्कृत

नित नवल परमेश्वर कापड़ि

POTHI PAPERBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A4%B6%E0%A4%B5%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A4%AA%E0%A4%A1/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=6a4dEgAAQBAJ>

मेथिली साहित्य • आलोचना • अनुसन्धान

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

कविता, काव्यालोचना, रंगमंच आ विद्यापति-विमर्श



गजेन्द्र ठाकुर
सम्पादन : विदेह — प्रथम मेथिली पत्रिका ई-पत्रिका - २०२६

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

कविता, काव्यालोचना, रंगमंच आ विद्यापति-विमर्श

वीरेन्द्र मल्लिकक साहित्यिक एकटा पुस्तक विदेहक ई अर्धे जे ओ मेथिलीक रचनात्मक भाषाक जननीयक अस्मिता, साहित्यिक दृष्ट आ आलोचनात्मक विवेचनक जेहेन छथि।

प्रस्तुतक साहित्य-विमर्शमे रचनात्मक रचनात्मक आ ऐतिहासिक उल्लेखित एक-दोहराक विवेचन भेल।

प्रथम खण्ड
अर्धे जे ओ मेथिलीक
अर्धे जे ओ मेथिलीक
अर्धे जे ओ मेथिलीक

आ ओहोई विवेचन विमर्श

SCAN - VISIT VIDEHA




गजेन्द्र ठाकुर - विदेह — प्रथम मेथिली पत्रिका ई-पत्रिका
K ४५२ - VIDEHA

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A4%B2%E0%A4%95/>
Google Playbook
<https://play.google.com/store/books/details?id=F68dEgAAQBAJ>



नित नवल योगानन्द झा

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%AF%E0%A4%97%E0%A4%A8%E0%A4%A8%E0%A4%A6-%E0%A4%9D/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=j68dEgAAQBAJ>



नित नवल आशीष अनचिन्हार

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=9CwhEqAAQBAJ>

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%B6%E0%A4%B6%E0%A4%B7%E0%A4%B8%E0%A4%A8%E0%A4%B9%E0%A4%B8%E0%A4%B9%E0%A4%B0/>



नित नवल बेचन ठाकुर

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=fiYhEgAAQBAJ>

POTHI.COM PAPERBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%AC%E0%A4%9A%E0%A4%A8-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0/>

विदेह | साहित्य-अलोचना



**नित नवल
कुमार पवन**

तीन रचनाक आलोचनात्मक अनुशीलन
आ कथा-दृष्टिक तुलनात्मक विवेचन

पब्लिश - साहित्यिक काली पत्र - अंतर्राष्ट्रीय लुटि आ कोइलापर छाप

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह | साहित्य-अलोचना

नित नवल कुमार पवन

तीन रचनाक आलोचनात्मक अनुशीलन
आ कथा-दृष्टिक तुलनात्मक विवेचन

“पब्लिश”
“साहित्यिक काली पत्र”
“अंतर्राष्ट्रीय लुटि आ कोइलापर छाप”



विदेह मुख्य साइट
www.videha.co.in



विदेह ई-जर्नल
videha-journal.github.io/videha

विदेह — प्रथम संश्लेषी वार्षिक ई-पत्रिका — ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर • २०२६

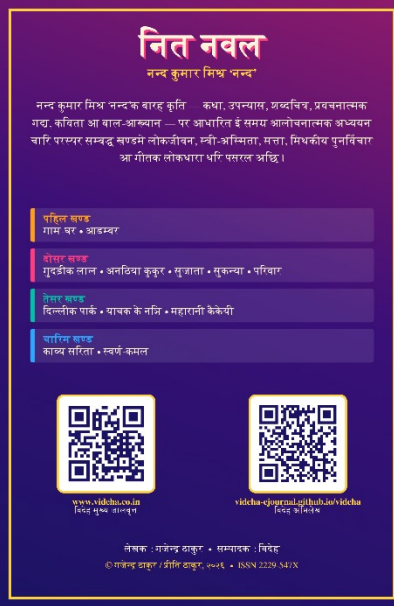
नित नवल कुमार पवन

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=xichEgAAQBAJ>

POTHI.COM PAPERBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%95%E0%A4%AE%E0%A4%B0-%E0%A4%AA%E0%A4%B5%E0%A4%A8/>



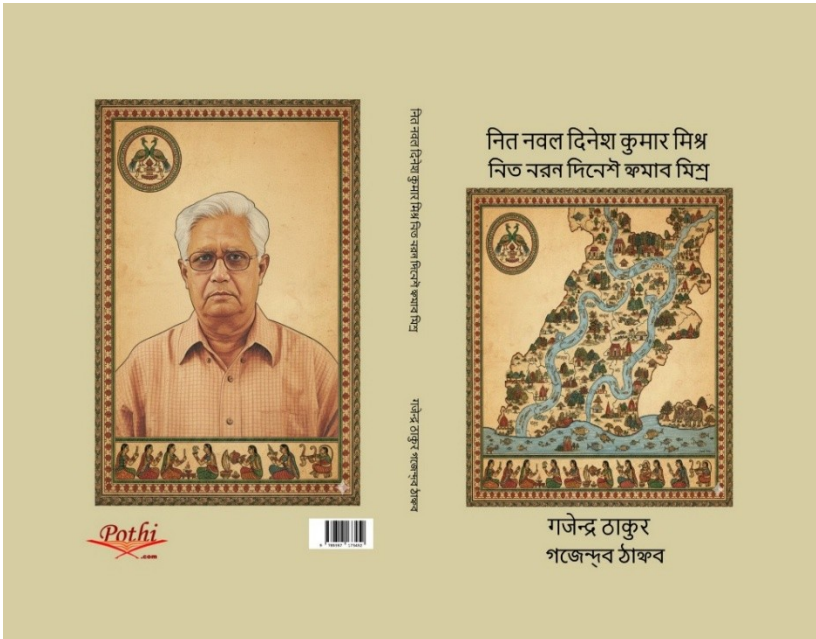
नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=fBQhEgAAQBAJ>

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%A8%E0%A4%A8%E0%A4%A6-%E0%A4%95%E0%A4%AE%E0%A4%B0-%E0%A4%AE%E0%A4%B6%E0%A4%B0-%E0%A4%A8%E0%A4%A8%E0%A4%A6/>



नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-nit-naval-dinesh-kumar-mishra/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=ukfHEQAAQBAJ>



Pothi
.com



नित नवल सुशील

गजेन्द्र ठाकुर

नित नवल सुशील



गजेन्द्र ठाकुर

नित नवल सुशील

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%B6%E0%A5%80%E0%A4%B2/>

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=sDoTEQAAQBAJ&rdid=book-sDoTEQAAQBAJ&rdot=1&source=gbs_atb&pcampaignid=books_booksearch_atb



Pothi



११ नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

गजेन्द्र ठाकुर

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव



गजेन्द्र ठाकुर

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/>

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0-%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%A4-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B2-%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7-%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0-%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%B5/>

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=YIT8EAAQBAJ&rdid=book-YIT8EAAQBAJ&rdot=1&source=gbs_atb&pcampaignid=books_booksearch_atb

XII. रंग-संगम (खण्ड १ आ २): १२ टा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर- गजेन्द्र ठाकुर

<https://play.google.com/store/books/details?id=Ae4GEgAAQBAJ>

[illegible]

<https://store.pothis.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B0%E0%A4%97-%E0%A4%B8%E0%A4%97%E0%A4%AE-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>

XIII. दीवान-ए-विदेह खण्ड १ आ २- गजेन्द्र ठाकुर



POTHI.COM HARDBACK

खण्ड-१

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B5%E0%A4%A8-%E0%A4%8F-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7/>

खण्ड-२

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B5%E0%A4%A8-%E0%A4%8F-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>
Google Playbook

खण्ड-१

<https://play.google.com/store/books/details?id=fzwLEgAAQBAJ>

खण्ड-२

<https://play.google.com/store/books/details?id=nYcMEgAAQBAJ>

XIII. अकुलाइत सुर (खण्ड-१: किशोर गजल, खण्ड-२: किशोर कविता-गीत)



POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8-%E0%A4%B8%E0%A4%B0/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=Q7cLEgAAQBAJ>

XIV. कूट शब्द तरहड़िमे गोहि (साइबर अपराध आधारित किशोर उपन्यास)

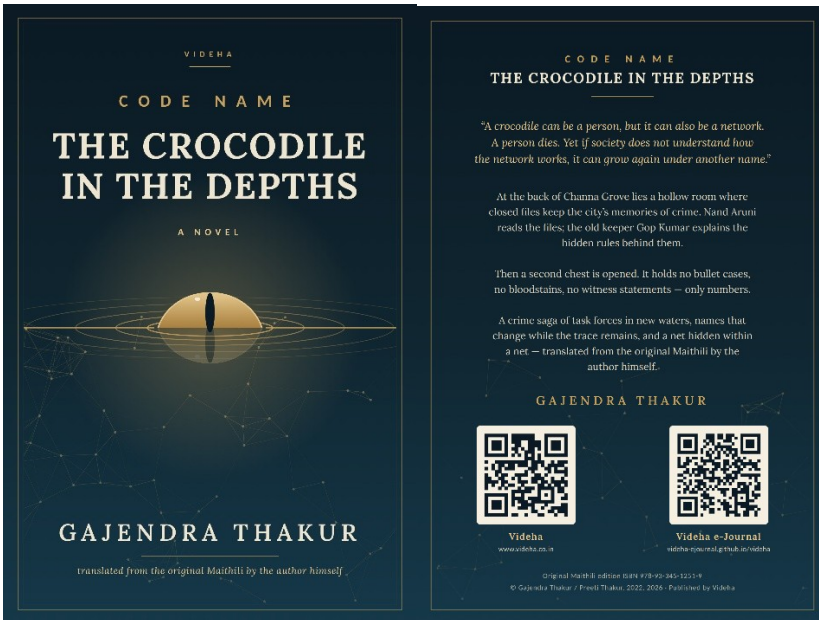


POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A4%9F-%E0%A4%A8%E0%A4%AE-%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%B9%E0%A4%A1%E0%A4%AE-%E0%A4%97%E0%A4%B9/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=xXsMEgAAQBAJ>



CODE NAME: THE CROCODILES IN THE DEPTHS [A NOVEL FOR YOUNG READERS]

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=AAkJEgAAQBAJ>

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBGZxQnQM>

XV. नव पाँखि (किशोर कथा संग्रह)



POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%A8%E0%A4%B5-%E0%A4%AA%E0%A4%96/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=jTwLEgAAQBAJ>



NEW WINGS [Stories for Young Readers]

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=_0EjEgAAQBAJ

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBGtyH3dM>

XVI. विदेह शोध-लेख (अंक १ सँ ४४७ धरि)



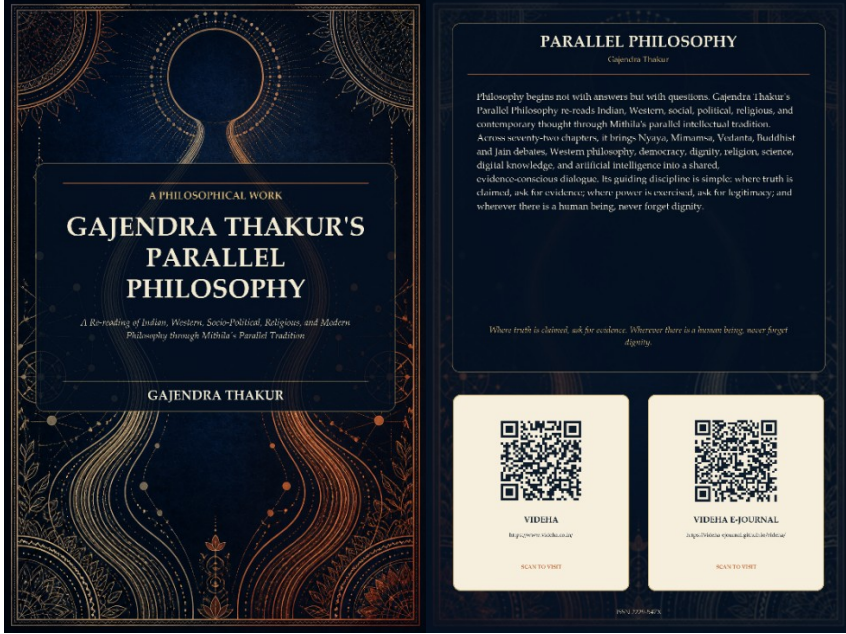
POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%B9-%E0%A4%B6%E0%A4%A7-%E0%A4%B2%E0%A4%96-%E0%A4%85%E0%A4%95-%E0%A5%A7-%E0%A4%B8-%E0%A5%AA%E0%A5%AA%E0%A5%AD-%E0%A4%A7%E0%A4%B0/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=k14HEgAAQBAJ>

VII. गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन GAJENDRA THAKUR'S PARALLEL PHILOSOPHY (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)



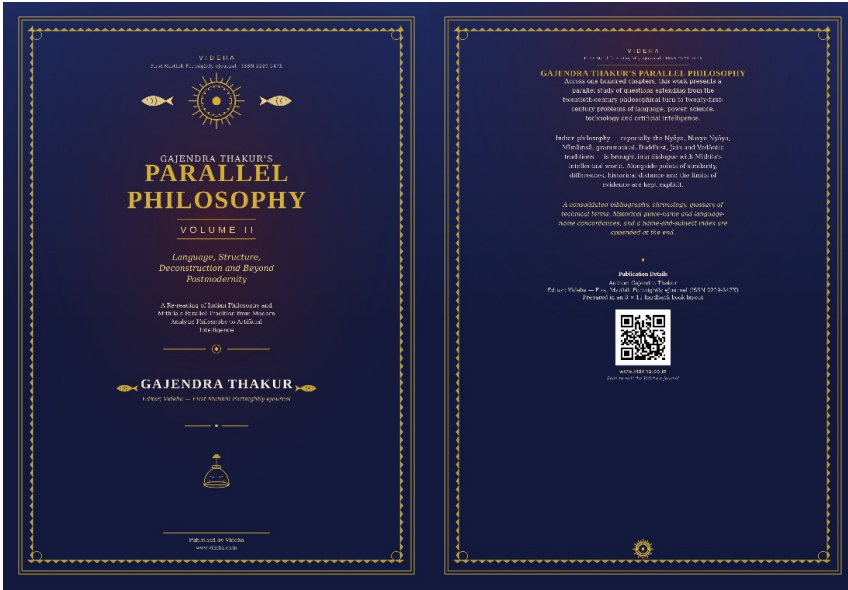
VOLUME I (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-gajendra-thakurs-parallel-philosophy/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=PQ8IEgAAQBAJ>



VOLUME II (MAITHILI-ENGLISH BILINGUAL)

POTHI.COM HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%95-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%A8%E0%A4%A8%E0%A4%A4%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%B6%E0%A4%A8-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=78kJEgAAQBAJ>

XVIII. MAITHILI SHORT STORIES



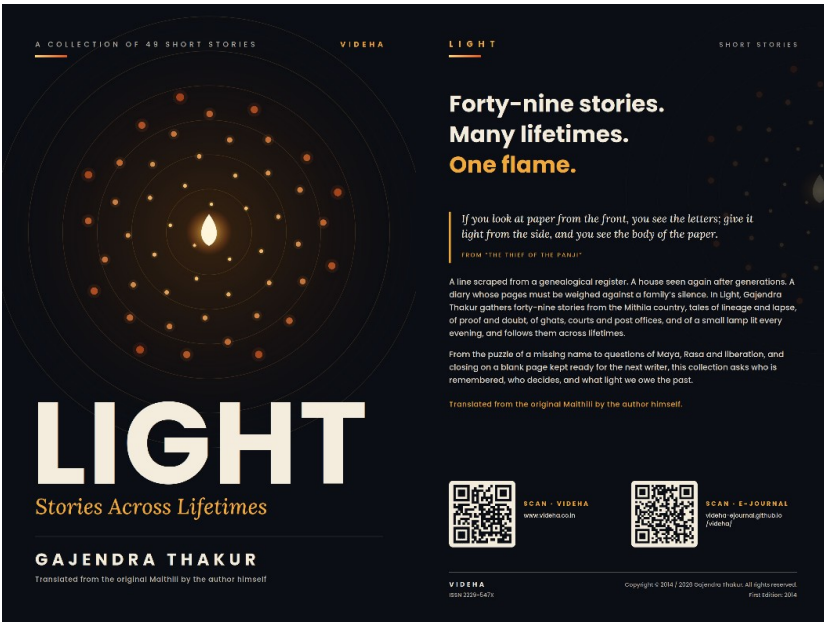
इजोत: जनम-जनम कथा

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=M_oVEgAAQBAJ

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%87%E0%A4%9C%E0%A4%A4/>



LIGHT: STORIES ACROSS LIFETIMES

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAECG1VCVxM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=A9YSEgAAQBAJ>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HMP6N55V>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-light/>



स्मृतिक दोसर दिस

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=R_oVEgAAQBAJ

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%A4%E0%A4%95-%E0%A4%A6%E0%A4%B8%E0%A4%B0-%E0%A4%A6%E0%A4%B8/>



THE OTHER SIDE OF MEMORY

Google Playbook **【Audiobook】**

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECG1T2VqM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=UglUEgAAQBAJ>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HP7F9SQR> [Part 1]

<https://www.amazon.in/dp/B0HP77SHG6> [Part 2]

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-other-side-of-memory/>

गजेन्द्र ठाकुर समग्र
गजेन्द्र ठाकुर समग्र
गजेन्द्र ठाकुर समग्र

कथा-शतत्रयी

गजेन्द्र ठाकुरक चयनित ३०० मैथिली कथा



१

खण्ड-१

कथा १ - १००

२

खण्ड-२

कथा १०१ - २००

३

खण्ड-३

कथा २०१ - ३००

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर समग्र
गजेन्द्र ठाकुर समग्र
गजेन्द्र ठाकुर समग्र

कथा-शतत्रयी

गजेन्द्र ठाकुरक चयनित ३०० मैथिली कथा

तीन खण्ड • तीन सय कथा

गजेन्द्र ठाकुरक चयनित तीन सय मैथिली कथाक ई समग्र-संग्रह तीन खण्डमे प्रस्तुत अछि। एहिमे गामक माटि-पानि, समाजक विसंगति, स्मृतिक गहन परत आ मनुक्खक अन्तर्मनक अनेक रंग एक संग भेटैत अछि।

प्रत्येक खण्डमे सय-सय कथा — पाठकक लेल एकटा बहुतरंगी, अविस्मरणीय कथा-यात्रा।

१

खण्ड-१

कथा १ - १००

२

खण्ड-२

कथा १०१ - २००

३

खण्ड-३

कथा २०१ - ३००

स्कैन करू • विदेहसँ जुड़



विदेह वेबसाइट
www.videha.co.in



विदेह ई-जर्नल
videha-ejournal.github.io/videha

प्रकाशक : विदेह • ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्र
गजेन्द्र ठाकुर समग्र
गजेन्द्र ठाकुर समग्र

कथा-शतत्रयी (खण्ड १-३)

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=mLoSEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

खण्ड-१

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%B6%E0%A4%A4%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%AF-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7/>

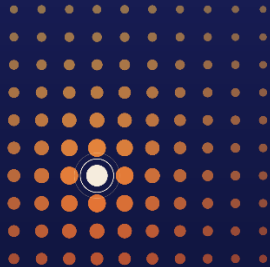
खण्ड-२

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%B6%E0%A4%A4%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%AF-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>

खण्ड-३

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%B6%E0%A4%A4%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%AF-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A9/>

THREE HUNDRED SELECTED STORIES



The Hundred-Story Trilogy

VOLUME I

GAJENDRA THAKUR Stories 1-100

A story lives as long as people and language live.

Gajendra Thakur's three hundred selected stories form a vivid mirror of the many shapes of life in Mithila, Vajji and Anga: folk life, human relationships, changing times, village and town, sorrow and joy, tradition and modernity, nature and society, women and men, childhood, old age, life away from home, memory, struggle and hope.

Across these three volumes, the simplicity of the people's language, the depth of life, and the cultural pulse of Mithila, Vajji and Anga dwell together.

INSIDE VOLUME I

The Flowerpot by the Window • Pension Day • Two Cups of Tea
The Broken Clock • The Star on the Roof • The Last Night



SCAN TO VISIT
videha.co.in



SCAN TO VISIT
videha-ajournal.github.io/videha

Translated from the original stories into English by the author. © Gajendra Thakur / Fresh Thakur, 2020 / 2020

SHORT STORIES • MITHILA, VAJJI & ANGA

THE HUNDRED-STORY TRILOGY

VOLUME II



Three Hundred Selected Stories
STORIES 101 - 200

GAJENDRA THAKUR

THE HUNDRED-STORY TRILOGY • VOLUME II

“Stories remain alive as long as people and language remain alive.”

— GAJENDRA THAKUR

Gajendra Thakur's three hundred selected stories form a vivid mirror of the many shapes of life in Mithila, Vajji and Anga: folk life, human relationships, changing times, village and city, sorrow and joy, tradition and modernity, nature and society, women and men, childhood, old age, migration, memory, struggle and hope.

Across these three volumes, the simplicity of the people's language, the depth of life, and the cultural pulse of Mithila, Vajji and Anga dwell together.

IN THIS VOLUME

Beyond the Embankment
The Veranda University
The Philosopher Betel Seller
A Feast on Debt
Curfew Milk

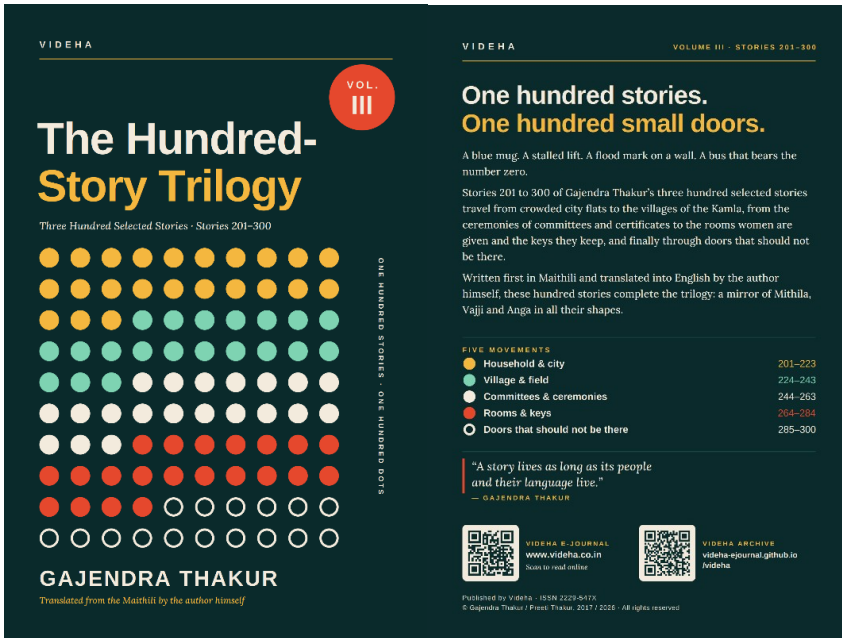
Half a Samosa
Love on Credit
The Renting Dog
Silent Testimony
The Dream of One Bigha



SCAN TO VISIT
videha.co.in
videha-ajournal.github.io/videha



Translated from the original Mithili into English by the author himself.



THE HUNDRED-STORY TRILOGY (VOLUME I-III)

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECGfQw9mM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=klQUEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

VOLUME I

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-hundred-story-trilogy-volume-i/>

VOLUME II

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-hundred-story-trilogy-volume-ii/>

VOLUME III

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-hundred-story-trilogy-volume-iii/>



कथा-त्रिधारा (खण्ड १-३)

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=O2kTEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

खण्ड-१

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%A7%E0%A4%B0-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A7/>

खण्ड-२

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%A7%E0%A4%B0-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A8/>

खण्ड-३

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%95%E0%A4%A5-%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%A7%E0%A4%B0-%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A4%A1-%E0%A5%A9/>

STORIES OF MITHILA • VAJJI • ANGA

SELECTED STORIES

THREE STREAMS OF STORIES

VOLUME I

VOLUME I

THREE STREAMS OF STORIES

Three hundred selected stories –
the first hundred.

1-100
STORIES

GAJENDRA THAKUR

TRANSLATED FROM THE MAITHILI BY THE AUTHOR

VIDEHA

A vivid mirror of life in Mithila, Vajji and Anga.

Gajendra Thakur's three hundred selected stories move through folk worlds and human relationships, changing times, village and town, sorrow and joy, tradition and modernity, women and men, the minds of children, old age, migration, memory, struggle and hope.

Across these volumes, the simplicity of the people's language, the depth of lived experience and the cultural pulse of Mithila, Vajji and Anga abide together. **Volume I** gathers Stories 1-100 – from quiet, lyrical scenes to satire, conscience and the quest for justice.

"Stories remain alive for as long as people and language remain alive." – Gajendra Thakur

INSIDE VOLUME I

- The Bell That Never Rang
- The Road That Turned Back
- The Woman Cutting Onions
- The Blank Notebook
- The Panchayat Expert
- The Devout Thief
- The Character Certificate
- The Forest School



READ ONLINE
videha.co.in
videha-journal



ARCHIVE
videha-journal
github.io/videha
videha-journal

© GAJENDRA THAKUR / PUSPITI THAKUR
2019 / 2026. TRANSLATED FROM THE MAITHILI BY THE AUTHOR

VIDEHA
ISBN 978-81-947-547X

VOLUME II

STORIES 101-200

THREE STREAMS OF STORIES

VOLUME II

THREE STREAMS *of Stories*

GAJENDRA THAKUR

Three Hundred Selected Stories. Translated from the Original Maithili by the Author.

Stories remain alive for as long as people and language remain alive.

— GAJENDRA THAKUR

Gajendra Thakur's three hundred selected stories are a living mirror of the many forms of life in Mithila, Vajji, and Anga: human relationships, changing times, village and town, sorrow and joy, tradition and modernity, nature and society, women and men, the minds of children, old age, migration, memory, struggle, and hope.

Volume II gathers Stories 101-200. Across these three volumes, the simplicity of the people's language, the depth of lived experience, and the cultural pulse of Mithila, Vajji, and Anga abide together.



SCAN TO VISIT
videha.co.in



SCAN TO VISIT
videha-journal.github.io/videha

© Gajendra Thakur / Preeti Thakur, 2019 / 2026. All rights reserved.



THREE STREAMS OF STORIES (VOLUME I-III)

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECG1QivnM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=QkoUEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

VOLUME I

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-three-streams-of-stories-volume-i/>

VOLUME II

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-three-streams-of-stories-volume-ii/>

VOLUME III

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-three-streams-of-stories-volume-iii/>



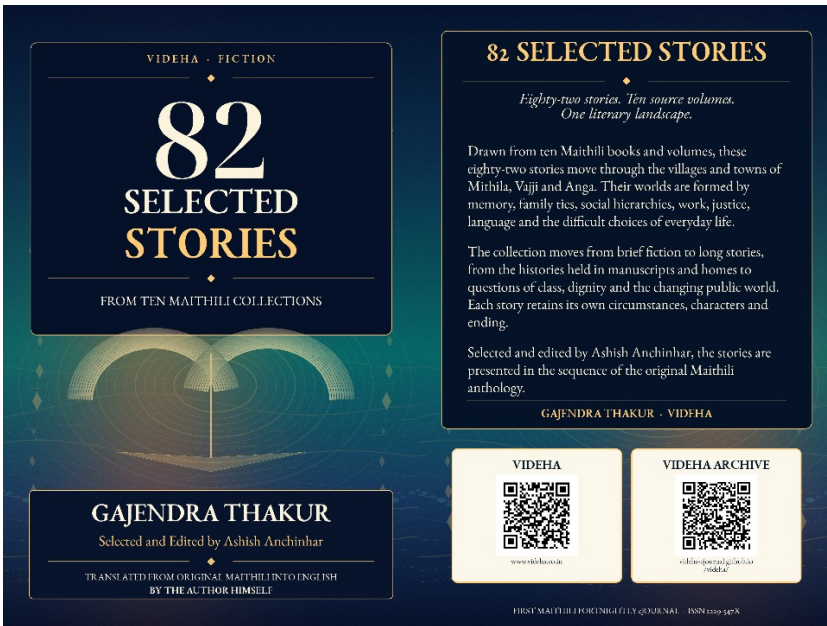
गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा [पर्वत ऊपर भमरा जे सुतल, स्मृतिक दोसर दिस, इजोत- जनम-जनमक कथा, कथा-शतत्रयी (खण्ड-१, खण्ड-२ आ खण्ड-३), कथा-त्रिधारा (खण्ड-१, खण्ड-२ आ खण्ड-३) आ नव पाँखि सँ चयनित आ सम्पादित] चयन आ सम्पादन : आशीष अनचिन्हार

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=EdwZEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/%E0%A4%AE%E0%A4%B2-%E0%A4%95%E0%A4%A5%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%9A%E0%A4%AF%E0%A4%A8-%E0%A4%86-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%AA%E0%A4%A6%E0%A4%A8-%E0%A4%86%E0%A4%B6%E0%A4%B7-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%B9%E0%A4%B0-%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%A0%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%95-%E0%A5%AE%E0%A5%A8-%E0%A4%9F-%E0%A4%9A%E0%A4%AF%E0%A4%A8%E0%A4%A4-%E0%A4%95%E0%A4%A5/>



82 SELECTED STORIES FROM TEN MAITHILI COLLECTIONS: GAJENDRA THAKUR

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=bH0aEgAAQBAJ>

Google Playbook (Audiobook)

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEGBGch8ySM>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HNF9HN8R>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-82-selected-stories-gajendra-thakur/>

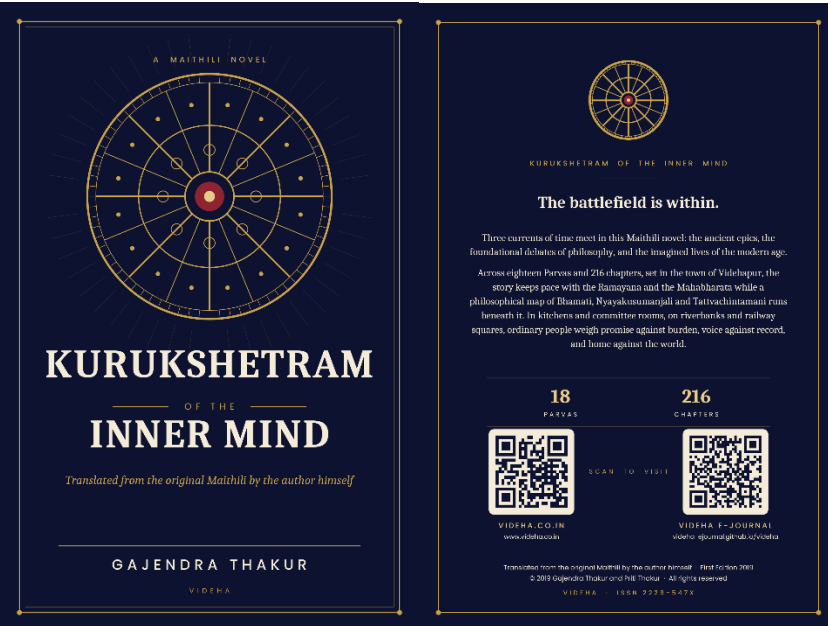
XIX. MAITHILI NOVELS



कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली कादम्बरी]

Google Playbook

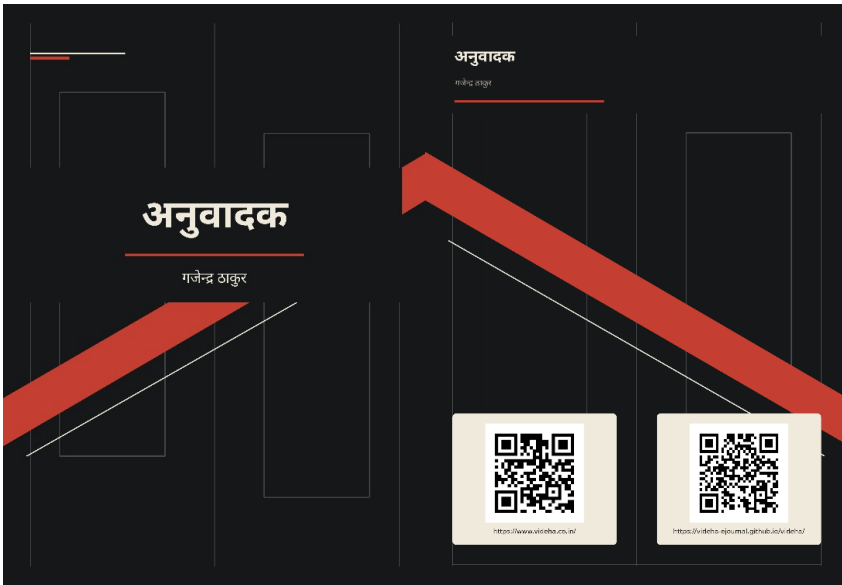
<https://play.google.com/store/books/details?id=rNMiEgAAQBAJ>



KURUKSHETRAM OF THE INNER MIND [A MAITHILI NOVEL]

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=WWgjEgAAQBAJ>



अनुवादक

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=DNgVEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A4%95/>



THE TRANSLATOR

Google Playbook (Audiobook)

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEFCG316fyM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=RUKWFgAAQBAJ>
 AMAZON KINDLE
<https://www.amazon.in/dp/B0HLZHMNZ9>
 POTHİ HARDBACK
<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-translator/>

पाँच प्रतिशत अन्हार
 गजेन्द्र ठाकुर

की पाँच प्रतिशत मात्र एकटा अंक अछि—बा ओ अन्हार, जाहिपर
 बाँकी पचानवे प्रतिशत इजोत टिकल अछि?

दरभंगक रेलो घुसक नीनी रानी दुईटा छोट डेकान, बेलक घुसक स्टेशन समवेत नइ पाँच सय क माती।
 मासक छान्ने अपरिचित भूतानक बरग, आ मिलने मैथिल दुनू मेकलसपर आलन एकटा ससरी। जाहिमे
 छती मास प्रति नवित दुईटास नइ अकिनीक पोत अछि, लन मकर, आ समस घुसक पाँच दिन बाद।
 हाल बली घुसकक नीकीर घुस पाँच कमाक छोट दरभंगर दिल्पी, लकड़, हलकल, माटा, बीजिन,
 दुईटा आ पटना परी चरित मो। कानू मुसक पै, कानू कि पछलता कमनी, कानू दूरा लोकक हाजिरी—
 आ सभक पाँच एकटा घुम दिनाक पाँच प्रतिशत।

१ पाँच सभक ललक
 अन्हार १-२००

२ पाँच सभक ललक
 अन्हार १-२००

३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

११ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२१ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

२९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३१ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

३९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४१ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

४९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५१ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

५९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६१ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

६९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७१ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

७९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८१ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

८९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९१ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९२ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९३ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९४ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९५ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९६ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९७ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९८ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

९९ ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

१०० ललकलक अन्हार
 अन्हार १-२००

पाँच प्रतिशत अन्हार

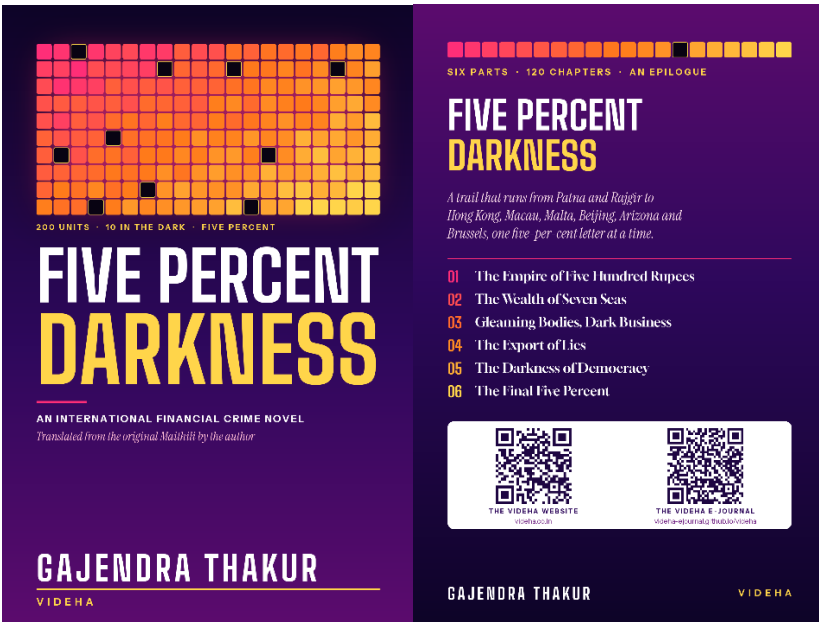
Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=9uUZegAAQBAJ>

POTHİ HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AA%E0%A4%9A-%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A4%B6%E0%A4%A4-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A4%B9%E0%A4%B0/>

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AA%E0%A4%9A-%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A4%B6%E0%A4%A4-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A4%B9%E0%A4%B0/>



FIVE PERCENT DARKNESS

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=5QAaEgAAQBAJ>

Google Playbook (Audiobook)

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAAEBGAKFCFM>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HNGZLNCC>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-five-percent-darkness/>

मैथिली न्यायालय प्रथम उपन्यास

नव्य न्याय आ अपततीय जुआ-जाल



श्रीका • प्रमाण • तर्क • निर्णय

गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA

न्याय केवल निष्कर्ष नहि — कारणक अनुशासन अछि

विश्लेषक गैरा उपप्रासक नव नव्य पद्धति ठाकुर आधुनिक रंगरचनी अलाप, आधुनिक जुआ-जाल, गुरुरतन सामाजी, निर्यातकिकर आ न्यायवैज्ञानिक उपप्रासक अद्वैत संसारक सभने मानैत अछि, तखन प्रसन्न उपप्रासक नवम्य रस पड जखन अछि। सत्य धरि पहुँचकक बेस पर कोर अछि?

अदोषण अधिकाजी अदोषण हए, रंगरचनीर सलसरी सिन्धेक सलसरी बान्, अधिकातर सिद्धांतन सिध, पत्रकार अलापक प्रकरण आ न्यायधुरि आधुनिक रंगरचनीर हुँ उपन्यास कए, आरोग्य, बौद्धिक, प्रत्यक्ष सामाजी, अनुपम, अनुपम, अछि आ निष्कर्षक सीमा परावर्त अछि। एत अद्यतन सिद्ध कोर अछि, सत्य नहि; निष्कर्षक सिद्ध नहि; गुरुर सत्यक प्रमाण नहि; आ पारम्य अद्वैत सिद्धि ठाकुर ठाकुर प्रमाण नहि।

अलाप, सिद्धि कएने प्रसन्न, पत्र आ निष्कर्षक नहि—पद्धति, रंगम, उपप्रास-अनुशासन, रंगमिणी रंगमिणी आ न्यायिक न्यायिक अछि।

लेखक
गजेन्द्र ठाकुर

रंगमक: पत्र, रंगम रंगमिणी रंगमिणी रंगमिणी
VIDEO: ISBN 978-81-9477-547-4




VIDEHA • FIRST MATHILU FORTHCOMING JOURNAL

नव्य न्याय आ अपततीय जुआजाल

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=4NoVEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%AF-%E0%A4%A8%E0%A4%AF-%E0%A4%AF-%E0%A4%86-%E0%A4%85%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A4%9F%E0%A4%AF-%E0%A4%9C%E0%A4%86-%E0%A4%9C%E0%A4%B2/>

A MATHILU COURICROOM NOVEL

NAVYA NYAYA AND THE OFFSHORE GAMBLING WEB

ORIGINAL MATHILU NOVEL
TRANSLATED INTO ENGLISH BY THE AUTHOR HIMSELF



GAJENDRA THAKUR

VIDEHA

NAVYA NYAYA AND THE OFFSHORE GAMBLING WEB

A MathilU courtroom novel in which questions of evidence are tested through the discipline of Navya Nyaya. Action now unfolds through the disciplines of inference, analogy, testimony, perception, and reason over questions of forensic language, institutional privilege, judicial process, and proof.

ORIGINAL MATHILU NOVEL TRANSLATED INTO ENGLISH BY THE AUTHOR HIMSELF

गजेन्द्र ठाकुर
नव्य न्याय आ अपततीय जुआ-जाल
GAJENDRA THAKUR




VIDEHA • FIRST MATHILU FORTHCOMING JOURNAL

NAVYA NYAYA AND THE OFFSHORE GAMBLING WEB

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=_lkWEgAAQBAJ

Google Playbook (Audiobook)

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAEBGAB5ASM>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HM267KJW>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-navya-nyaya-and-the-offshore-gambling-web/>



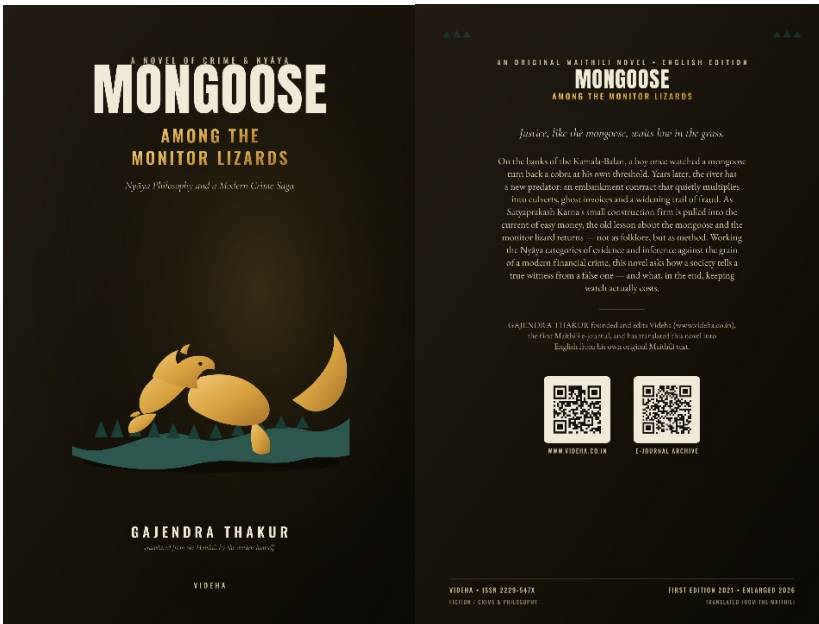
विज्जी गोहि सभक बीच

Google Playbook

https://play.google.com/store/books/details?id=s_kvEgAAQBAJ

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AC%E0%A4%9C%E0%A4%9C-%E0%A4%97%E0%A4%B9-%E0%A4%B8%E0%A4%AD%E0%A4%95-%E0%A4%AC%E0%A4%9A/>



MONGOOSE AMONG THE MONITOR LIZARDS

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECGNXB15M>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=josSEgAAQBAJ>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HL6FV3HX>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-mongoose-among-the-monitor-lizards/>



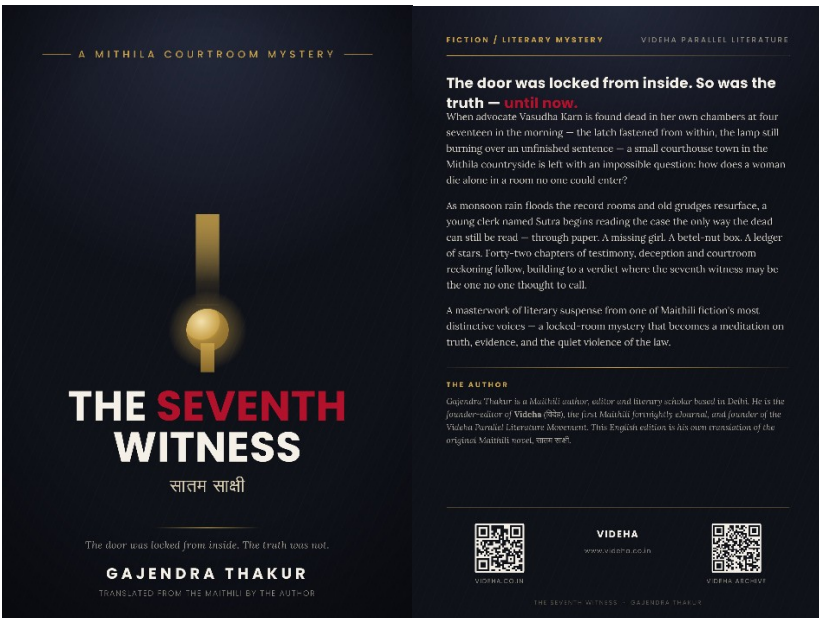
सातम साक्षी

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=1fkvEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%B8%E0%A4%E0%A4%E0%A4%B8%E0%A4%95%E0%A4%B7/>



THE SEVENTH WITNESS

Google Playbook [Audiobook]

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECGtQr1nM>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=goYSEgAAQBAJ>

Amazon Kindle

<https://www.amazon.in/dp/B0HMP663WK>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-seventh-witness/>



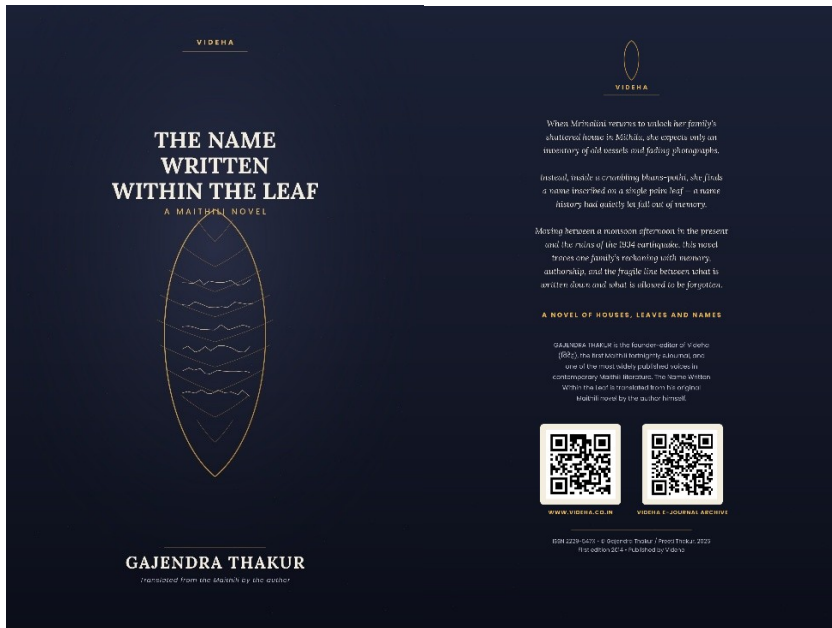
पातक भीतर लिखल नाँव

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=5fkVFgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A4%95-%E0%A4%AD%E0%A4%A4%E0%A4%B0-%E0%A4%B2%E0%A4%96%E0%A4%B2-%E0%A4%A8%E0%A4%B5/>



THE NAME WRITTEN WITHIN THE LEAF

Google Playbook **[Audiobook]**

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECGtWL19M>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=iRcSEgAAQBAJ>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0HL5KGJ4T>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-the-name-written-within-the-leaf/>



जल-पाँजि

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=-kVEgAAQBAJ>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-%E0%A4%9C%E0%A4%B2%E0%A4%AA%E0%A4%9C/>


JAL-PANJI: WATER REGISTER

Google Playbook **【AudioBook】**

<https://play.google.com/store/audiobooks/details?id=AQAAECGtXL15M>

Google Playbook

<https://play.google.com/store/books/details?id=ColREgAAQBAJ>

AMAZON KINDLE

<https://www.amazon.in/dp/B0H14THJWH>

POTHI HARDBACK

<https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-jal-panji-water-register/>

रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ७ पत्रिका

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका <https://www.videha.co.in/>

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका <https://videha-ejournal.github.io/videha/>

VIDEHA 23 LANGUAGE TRANSLITERATOR https://www.videha.co.in/new_page_101.htm

विदेह लिपि परिवर्तक IPA · IAST · Tirhuta · Braille <https://www.videha.co.in/script-converter.html>

विदेह आ सदेह सम्पूर्ण इंडेक्स <https://www.videha.co.in/script-converter.html>

विदेह पेटार VIDEHA ARCHIVE <https://www.videha.co.in/archive.htm>

विदेह मैथिली थेसॉरस — मैथिली-अंग्रेजी / अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोश <https://www.videha.co.in/maithili-thesaurus.html>

विदेह मैथिली ... अंग्रेजी अनुवादक · Videha Maithili → English Translator <https://www.videha.co.in/maithili-translator.html>

विदेह पञ्जी प्रबन्ध — मैथिल ब्राह्मण वंशावली इंडेक्स <https://www.videha.co.in/panji-mool-index.html>

विदेह गद्य <https://www.videha.co.in/prose.htm>

विदेह पद्य <https://www.videha.co.in/verse.htm>

विदेह स्त्री कोना <https://www.videha.co.in/femcorner.htm>

A PARALLEL HISTORY OF MITHILA & MAITHILI LITERATURE <https://www.videha.co.in/gajenthakur.htm>

विदेह मिथिला रत्न <https://www.videha.co.in/ratna.htm>

विदेह मिथिलाक खोज <https://www.videha.co.in/discovery.htm>

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण <https://www.videha.co.in/investigation.htm>

विदेह पुरान अंक <https://www.videha.co.in/videha.htm>

विदेह पोथी <https://www.videha.co.in/pothi.htm>

विदेह दृश्य-श्रव्य नाट्य उत्सव https://www.videha.co.in/Audio_Video.htm

विदेह शिशु, बाल आ किशोर उत्सव <https://www.videha.co.in/kids.htm>

विदेह ई-लर्निङ्ग/ विदेह ई-लर्निङ्ग क्विज <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm> [विदेह ई-लर्निङ्ग क्विज UPSC / BPSC / UGC-NET / NTA हेतु मैथिली भाषा, साहित्य आ मिथिला इतिहास पर निःशुल्क प्रश्नोत्तरी — क्विज खोलबा लेल कार्ड पर क्लिक करू। शब्दकोश मिथिलाक इतिहास साहित्यक इतिहास UPSC / UGC-NET समानान्तर इतिहास मिथिला पञ्जी मैथिली गजल वेब पत्रकारिता विदेह चित्रकला · कला · संगीत विदेह दृश्य-श्रव्य विदेह विशेषांक/ सम्मान विदेह प्रश्नोत्तरी विदेह नाट्य उत्सव विदेह शिशु उत्सव विदेह स्त्री कोना]

Videha Converters- Thesaurus, Panji, Script Converters, Transliterations, Translators, eLearning Quizzes, Maithili Language Search and other Technical Tools <https://www.videha.co.in/videha-converters.htm>

विदेह आ सदेह दुनू <https://archive.org/details/VidehaAndSadeha>

Videha Github: <https://github.com/videha-ejournal/>

TWITTER/ X <https://x.com/videha>

FACEBOOK <https://www.facebook.com/groups/videha/>

Videha Googlegroups <https://groups.google.com/g/videha>

Videha Mithila, Vajji & Anga: <https://videha-ejournal.github.io/mithila-vajji-anga/>

Preeti Thakur & Gajendra Thakur <https://videha-ejournal.github.io/gajendra-preeti/en/>

प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर <https://videha-ejournal.github.io/gajendra-preeti/>

Videha Scholar Research: <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/>

Videha Research Alphabetical/ Subjectwise: <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE [INCLUDING THETHI, ANGIKA & BAJJIKA]

<https://youtu.be/6h-nDjYHIME?si=ZVoaTnb13v8mn1a5>

PARALLEL PHILOSOPHY VOLUME I

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLA2N1jZn-iOU>

PARALLEL PHILOSOPHY VOLUME II

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLEeNFEaEfYd0>

PARALLEL HISTORY VOLUME I

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLcQhodF4PphE>

PARALLEL HISTORY VOLUME II

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLGfQDv03iFio>

गजेन्द्र ठाकुर समग्र

<https://www.videha.co.in/gajendra-thakur-samagra.htm>

<https://videha-ejournal.github.io/videha/gajendra-thakur-samagra.htm>

AUDIO-VIDEO VIDEHA DISCUSSIONS

https://youtube.com/playlist?list=PLM5fbK9_8fi&si=KyGSPoyXtdkDrWB <https://www.youtube.com/playlist?list=PLAzN1jzn-iOU>

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLEeNFEaEfYd0>

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLcQhodF4PphE>

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLGfQDv03iFio>

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLHsUvziV03Y8>

https://www.youtube.com/playlist?list=PLC_Z5EJx5T0k

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLdOvjwiODwfl>

https://www.youtube.com/playlist?list=PLVRnD_MMf7KE

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLUllIoUsnSQSY>

https://www.youtube.com/playlist?list=PLGzdz4a_-lo

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLJcSoFWlInLM>

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLJvzsA6r1wQU>

<https://www.youtube.com/playlist?list=PLHs32SE0gevU>

https://www.youtube.com/@videha_ejournal/playlists

<https://www.youtube.com/@videha-elearning/playlists>

<https://www.youtube.com/user/ggajendra71/playlists>

https://www.youtube.com/@accessible_videha/playlists

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-12>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-11>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-10>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-9>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-8>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-7>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-6>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-5>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-4>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-3>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-2>

<https://archive.org/download/videha-discussion-criticism-part-1>



V.L.F. Videha Literature Festival: [https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-](https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/)

[festival/](https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/)



VIDEHA विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका www.videha.co.in आ <https://videha-ejournal.github.io/videha/> दुनु लिंक पर उपलब्ध अछि।



०.१.अंक ४५१ पर टिप्पणी

आशीष अनचिन्हार

पछिला किछु अंकसँ प्रणव कुमार झा केर नीक-नीक आलेख पढ़बाक लेल भेटल।
वर्तमान अंक (४५१, ०१ अक्टूबर २०२६) मे सेहो प्लास्टिक कचरापर नीक आलेख
अछि। विदेहमे एहन-एहन आलेख आरो बेसी प्रकाशित हेबाक चाही।

संगहि एक सुझाव जे एहन-एहन आलेख केर क्रमस्थान सूचीमे सेहो ऊपर हेबाक चाही।

प्रीति कुमारीक आलेख सभ लगातार आबि रहल अछि से नीक लागि रहल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

गद्य Prose

१.१. हितनाथ झा- मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-३०



हितनाथ झा

(मैथिलीमे ग्रामगाथा विधाकेँ नव जीवन देनिहार, पाठकीय विधाक अगुआ।
संपर्क-9430743070)

मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-30

प्रभात पत्रिकाक विषय सूची

एहिसँ पूर्वक क्रममे विषयवस्तुक अनुरूप एक संग मात्र मैथिली भाषाक आलेख, कविता, कथा आदि प्रस्तुत करैत छलहुँ। एहि अंकमे उपलब्ध विषय-सूचीक स्क्रीन-शॉट एहि हेतु प्रस्तुत अछि जे भाषा आ विषयक चयनक विषयमे ज्ञात भ' सकत आ सम्पादकक दृष्टि स्पष्ट परिलिखित हैत, संगहि नियमावली जे प्रत्येक अंकमे रहैत छल, ओ सेहो प्रस्तुत क' रहल छी। किछु अंकक आलेख सभ अछि, मुदा विषय-सूची नष्ट भ' गेल छैक, तँ ओ प्रस्तुत नहि क' सकलहुँ। एखन धरि जे प्रस्तुत कयलहुँ अछि ओ मात्र मैथिली विषयक, ओहिमे सेहो सभ नहि। किछु स्पष्ट नहि पढ़ा रहल अछि,

किछु लेभरि गेल छैक किछु अंशतः एक अंकमे तँ छैक मुदा अग्रिम अंकमे नहि, तथापि जतेक संभव भ' सकत, ओ हम प्रस्तुत करबे करब, तखन हिन्दी आ अन्य भाषाक।

May-1933

प्रभात

विषय-सूची ।

क्र.सं.	विषय	भाषा	लेखक का नाम	पृष्ठसंख्या
१	संज्ञान लक्षण	संस्कृत	श्री श्रीगोपबन्धुभा	१
२	प्राचीन इतिहास	"	श्री ब्रह्मनाथभा	२-४
३	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	"	श्री अमरदेव मिश्र	५-१०
४	समस्याये	संस्कृत	सम्पादक	११
५	सम्पादकीय टिप्पणियाँ	संस्कृत	सम्पादक	१२-१३
६	सनातन धर्म	"	श्री देवाट मारिभा	१४-१६
७	बुद्धो जलि	"	श्री भननाथ मिश्र	१७
८	गीर्वाण पट्टनम भेदन	"	श्री चतानन्दभा	१८-२१
९	शेषित क अवगति	"	श्री तारा नाथभा	२२-२६
१०	भारत पुष्पा	हिन्दी	श्री राम कृष्णभा	२७
११	श्री मोहन भा का स्मरण	"	श्री ब्रजनाथभा	२८-४१
१२	अग्नि का प्रचार प्रदोष	"	श्री ब्रजनाथभा	४२-४६
१३	विष्णु भग्न होहि न प्रीति	"	श्री सदानन्दभा	४७-५०
१४	आकाश	"	मुस्ताफ़-बाबु	५१-५२
१५	कौजिये	"	श्री राम कृष्णभा	५३
१६	समाचार	"	सम्पादक	५४-५६
१७	ब्रह्म विष्णु शक्ति	हिन्दी	श्री ब्रह्मनाथभा	५७-६०
१८	Lubrication	English	Amirudh misha	६१-६२
१९	Wit + humour	"	Bhakti Nath misha	६३

सम्पादक ।
श्रीतारा नाथभा

June-1933

विषय-सूची ।

क्र.सं.	विषय	पृष्ठा	विषय	पृष्ठा
१	स्वभाव-प्रधानता	१-३	संस्कृत गद्य श्री श्रीनिन्दन का	१-३
२	विद्याधिगमः	४-५	११ पद्य श्री विष्णुदत्त गमु	४-५
३	पुराणस्य महत्त्वम्	६-७	११ गद्य श्री रत्नाकर का	६-७
४	दशानता एतोग्रन्थ	८-१०	११ पद्य श्री श्रीनिन्दन का	८-१०
५	समाख्या	११	छ.दि.भै. ११ सम्पादन	११
६	स्वास्थ्य	१२-१४	भेदिनी गद्य श्री निन्दन का	१२-१४
७	समादकीय-टिप्पणी	१५-१६	११ ११ सम्पादन	१५-१६
८	संस्कृत के नाद अवाशय	१७-१८	११ ११ श्री रत्न का	१७-१८
९	गोरी के प्रकीर्ण	१९-२०	११ ११ श्री ताराकाय का	१९-२०
१०	इलाहाबाद के उपयोगिता	२१-२४	११ ११ श्री वाञ्छीनाथ का	२१-२४
११	भेदिनी के उन्नतता के मुख्य कारण	२५-२८	११ ११ श्री सुशील कुमर का	२५-२८
१२	भोट के उन्नतता के मुख्य कारण	२९-३२	११ ११ श्री ताराकाय का	२९-३२
१३	आचार्य ओ विद्या	३३-३४	११ ११ श्री वाञ्छीनाथ का	३३-३४
१४	विद्यार्थी के प्राचीन धर्मोपदेश	३५-३६	११ ११ श्री ताराकाय का	३५-३६
१५	उन्नतता के मुख्य कारण	३७-४०	११ ११ श्री रत्नाकर का	३७-४०
१६	फुट-थोला-मैत्र	४१-४४	११ ११ श्री ताराकाय का	४१-४४
१७	युवक की	४५-४६	११ पद्य श्री वाञ्छीनाथ का	४५-४६
१८	यद्यपि की कथा	४७-४८	११ ११ श्री चन्द्रकाय का	४७-४८
१९	प्रियतम की	४९-५०	११ ११ श्री वाञ्छीनाथ का	४९-५०
२०	सत्ता	५१	११ ११ श्री वाञ्छीनाथ का	५१
२१	निन्दन	५२-५४	११ गद्य श्री ताराकाय का	५२-५४
२२	प्रसात	५५	११ गद्य श्री श्री श्री हरि बाबु	५५
२३	The feeling of a man about & die	५६-५८	११ ११ Havi Abhinav	५६-५८
२४	Headaches	५९-६०	११ ११ Bal des plain	५९-६०

August-1933

विषय-सूची ।

क्रम	विषय	भाषा	गद्य-पद्य	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या	उपसंहार
१	परोक्षभा सहिष्णुता	संस्कृत	गद्य	श्री सीतानन्द भा	१-२	
२	सम्पादकीय टिप्पणी	मैथिली	११	सम्पादक	३-५	
३	अशोकानिमज्जितकृत	११	११	श्री विष्णुदत्त ठाकुर	६-१०	
४	कनिहार रवीन्द्रनाथ ठाकुर	११	११	श्री विद्यानन्द भा	११-१२	
५	सम्पाद	मै.ल.दि.	पद्य	सम्पादक	१३	
६	भगवां नय हो गया	हिन्दी	गद्य	श्री हृषीकेश भा	१४-३०	
७	वैदेहि	मैथिली	११	श्री काञ्चीनाथ भा	३१-३३	
८	संगीत	११	११	श्री श्यामसुन्दर भा	३४-३६	
९	सम्पाद	११	११	सम्पाद दाता	३७-४०	
१०	विद्योगिनी	११	११	श्याम सुन्दर भा	४१-४३	
११	सिधिलाक रईस	११	११	श्री हृषीकेश भा	४४-४७	
१२	भक्तों के भगवान	११	११	श्री नृप नारायण चौधरी	४८-५०	
१३	वाचता	११	पद्य	श्री काञ्चीनाथ भा	५१	
१४	पद्यानि क कथा	११	११	श्री चन्द्रनाथ भा	५२	
१५	सद्भा-प्रेम	हिन्दी	गद्य	श्री नृजमोहन ठाकुर	५३-६७	
१६	चौं चो की चटनी	११	११	श्री श्यामसुन्दर भा	६८	
१७	सत्संग	११	११	श्री तेज नारायण भा	६९-७१	
१८	सफलता	११	११	श्री सीतानन्द भा	७२-७३	
१९	रूपेया - वरीन	११	पद्य	श्री नृप नारायण चौधरी	७४	

सम्पादक -
श्री नृप नारायण चौधरी

Sep-1933

विषय-सूची ।

विषय	भाषा	लेखक के नाम	पृष्ठ संख्या
सूक्त	संस्कृत गद्य	श्री उमा कान्त झा	१-७
सौन्दर्य-सहित	" "	श्री श्री नन्दन झा	८-६
समादकीय-टिप्पणी	मैथिली	समादक	१०
प्रकृति और पृथिवी	" "	श्री केदार साहू	११-१७
समान्तर	" "	सम्पाद-दाता	१८-१९
किरादेनी के प्रतिबन्ध	" "	श्री श्याम सुन्दर झा	२०-२३
समाख्या	मै.ल.हि. पद्य	समादक	२४
सा साज	मैथिली	श्री काशीनाथ झा	२५
शकुन्तला-जन्म	" "	श्री राम कृष्ण झा	२६-२८
यथाति के कथा	" "	श्री चन्द्र नाथ झा	३०
प्रातः काल	" "	श्री चन्द्र कान्त मिश्र	३१
बिहार का विद्या-वैभव	हिन्दी गद्य	श्री दीनानाथ झा (विद्या)	३२-३६
सा मेरी उठाने नहीं हो सकती	" "	श्री यमुनाधर विद्यार्थी	३७-४२
वर्षा बहार	" "	श्री सदानन्द झा	४३-४५

Oct-1933

विषय-सूची ।

गुरु-सम्पादक:	संस्कृत गद्य श्री श्री गुरुदेवता भा. भा. १-५	१-५
गुरु-सम्पादक:	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ६-७	६-७
संस्कृत	मै. ग. डि. मरा सम्पादक	८
पुस्तक-संग्रह अंगिका	मै. ग. डि. मरा श्री जमदेन मिका	८-१०
प्रेत	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ११-१६	११-१६
लगत-लगाता	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. १७-२०	१७-२०
संस्कृत	१, १ सम्पादक दाता	२०-२१
संस्कृत और संस्कृत सन्त	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. २२-४०	२२-४०
संस्कृत-विद्वान	१, १ "निसल"	४१-४२
मिथिला-संग्रह	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ४३-४६	४३-४६
कोइला-संग्रह	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ४७	४७
यथाति-क कथा	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ४८	४८
उपदेश में लीत अठनिमाँ	हिन्दी गद्य श्री गुरुदेवता भा. भा. ४९-५४	४९-५४
हे दुर्गे	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ५५	५५
विनय	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ५६	५६
आलोचना	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ५७	५७
प्राध्वनी	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ५८	५८
गुरु-वन्दना	१, १ श्री गुरुदेवता भा. भा. ५९-६०	५९-६०

सम्पादक-

श्री तारा नाथ भा. ।

Dec-1933

विषय-सूची ।

क्र.सं.	विषय	भाषा	संपादक	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या	पृष्ठ संख्या
१	आद्यं च माक्रोशं स्याति	संस्कृत	पद्य	श्री श्रीनिन्दनकाशावर्ती	१	
२	नवान्न मिलपराम्	"	गद्य	श्री कालीनाथभा	२-७	
३	सप्तस्था	संस्कृत	पद्य	सम्पादक	८	
४	समुष्णक षट् महारियु	संस्कृत	गद्य	श्री विद्यानन्दभा	९-११	
५	सम्पादकीय टिप्पणी	"	"	सम्पादक	१२-१३	
६	संस्कृत शिक्षाक आवश्यकता	"	"	श्री बालादत्तभा	१४-१७	
७	मिथिला क संगठन	"	"	श्री हृषीकेशभा	१८-२४	
८	वर्तमान राजवंश क गुणानुवाद	"	"	श्री चरुदत्तभा	२५-२६	
९	सम्पादक	"	"	सम्पादक	२७-३०	
१०	व्यापार	"	"	श्री ईशदत्तभा	३१-३२	
११	रामायण में आशंका	"	"	श्री तारानाथभा	३३-३७	
१२	परमुण्डे फलाहारी	"	पद्य	श्री रामचन्द्रभा "चन्द"	३८	
१३	किष्किन्धाकाण्ड-रामायण	"	"	श्री चन्द्रनाथभा	३९-४१	
१४	विरचित विलास	"	"	श्री रामचन्द्रभा "चन्द"	४२	
१५	अपरिचित-तल्लुगा	हिन्दी	गद्य	श्री रामचन्द्रभा	४३-४५	
१६	दान	"	"	श्री सदानन्दभा	४७-४८	
१७	सप्तस्था-पूति	"	पद्य	श्री रामचन्द्रभा "चन्द"	४९	
१८	जय राम-रमा	"	"	श्री रामचन्द्रभा "चन्द"	५०	

सम्पादक-
श्री तारानाथभा

Jan-1934

विषय-सूची।

क्रमांक	विषय	भाषा	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या	दृष्टिकोण
१	मिथिलादेश पर शासन का	संस्कृत	श्री आद्योदय का	१-२	
२	कविता	मैथिली	श्री रामचन्द्र का "चन्द्र"	३	
३	उद्योगिक व्यवस्था	"	श्री कल्याणदास दत्त मैथिली	४-१८	
४	उद्योग-व्यवस्था	"	श्री रामचन्द्र का नाम का	१९-२१	
५	संस्कृत और उद्योग का	"	श्री रामचन्द्र का नाम का	२२-२६	
६	संस्कृत-सूक्ति	"	श्री रामचन्द्र का "चन्द्र"	२७	
७	वाङ्मय का उद्भव	"	श्री रामचन्द्र का नाम का	२८-३८	
८	श्रीमती विद्यादास	"	श्री रामचन्द्र का "चन्द्र"	३९	
९	संस्कृत	"	श्री रामचन्द्र का नाम का	४०-४२	
१०	वाङ्मय	"	श्री विवेकानन्द का नाम का	४३	
११	मिथिलादेश का उद्योग	"	श्री चन्द्र नाम का	४४-४५	
१२	वाङ्मय के नाम	हिन्दी	श्री राजमोहन राय का नाम का	४६-५०	
१३	संस्कृत	मैथिली	संस्कृत	५१	
१४	वाङ्मय	हिन्दी	श्री शाश्वत नाम का	५२-५४	
१५	वहो	"	श्री रामचन्द्र का नाम का	५५	
१६	संस्कृत का वाङ्मय	"	श्री नारायण का नाम का	५६-५७	
१७	विनय	"	श्री राजमोहन राय का नाम का	५८	
१८	संस्कृत	"	श्री लोको नाम राय का नाम का	५९-६१	

Apri-1934

विषय-सूची ।

क्र.सं.	विषय	भाषा	लेखक का नाम	पृष्ठसंख्या
१	कविता	मैथिली	श्री रामचन्द्र झा 'चन्द्र'	१
२	सनातन धर्म के अनुसन्धाता	गद्य	श्री तुलानन्द मिश्र	२-६
३	प्रभात	पद्य	श्री ब्रजमोहन ठाकुर 'मोहन'	६
४	शिव शक्ति के मेल	गद्य	श्री रामचन्द्र झा 'चन्द्र'	७-१८
५	गर्विता	पद्य	श्री केदारमणि झा	१९
६	वृक्ष के बात	गद्य	'अबूझ'	२०
७	सन्तव्य	पद्य	श्री अयोध्यानाथ मिश्र	२१
८	समाचार	गद्य	सम्वाद द्वारा	२२-२८
९	श्री श्री रामचन्द्रावतारी की जयन्ती	पद्य	श्री काशीनाथ झा 'काशी' 'संयुक्त'	२९-३१
१०	आत्म अनुसंधान	हिन्दी	गद्य 'अरविन्द लिखर'	३२-३४
११	बुद्धि-परीक्षा	मैथिली	पद्य श्री रामचन्द्र झा 'चन्द्र'	३५
१२	क्रिष्णिका काण्ड रामायण	गद्य	'श्री चन्द्र नाथ झा	३६-३८
१३	भक्तमार्ग के विषय में बौद्धिक मत	हिन्दी	गद्य श्री दीनानाथ झा 'विद्यान्त'	३९-४१
१४	Wife को तानाशुन करने हैं 'मर्दान्त' के सामने	पद्य	श्री केदारमणि झा	४२-४४
१५	आत्मार्थ जनक घोड़ा	गद्य	श्री ब्रजमोहन ठाकुर 'मोहन'	४५-४८
१६	कथा १	पद्य	श्री तुलानन्द मिश्र	४९-५४
१७	हमारा	गद्य	श्री राजेश्वर झा	५५-६०
१८	भक्तु नरन नती रसनी है	पद्य	श्री ब्रजमोहन ठाकुर 'मोहन'	६१
१९	आशा	गद्य	श्री योगानन्द झा	६२-६४
२०	समस्या	मैथिली	गद्य सम्पादक	६५

सम्पादक -

May-1934

विषय-सूची ।

क्र.सं.	विषय	भाषा	प्रकाशक	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या	प्राप्ति संख्या
१	प्रस्ताव	हिन्दी	मद्रा	श्रीदिग्विजयनाथभा	१	
२	मद्रास विदेशी प्रत विनियमनाम्	संस्कृत	मद्रा	श्रीदिग्विजयनाथभा	२-३	
३	समस्या	मैसूरि	मद्रा	सम्पादक	४	
४	अधुना	मैसूरि	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	५	
५	संस्कृत-विद्या	संस्कृत	गवा	श्रीहृदयनाथभा	६-७	
६	संस्कृत-विद्या	मैसूरि	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	८-१०	
७	संस्कृत-विद्या	११	गवा	श्रीदेवा मरिगथा	११-१५	
८	संस्कृत-विद्या	११	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	१६	
९	संस्कृत-विद्या	११	गवा	श्रीदेवा मरिगथा	१७-२०	
१०	संस्कृत-विद्या	११	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	२१-२३	
११	संस्कृत-विद्या	११	गवा	श्रीदेवा मरिगथा	२४-२५	
१२	संस्कृत-विद्या	११	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	२६-२७	
१३	संस्कृत-विद्या	११	गवा	श्रीदेवा मरिगथा	२८-३०	
१४	संस्कृत-विद्या	११	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	३१-३३	
१५	संस्कृत-विद्या	११	गवा	श्रीदेवा मरिगथा	३४-३५	
१६	संस्कृत-विद्या	११	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	३६-३७	
१७	संस्कृत-विद्या	११	गवा	श्रीदेवा मरिगथा	३८-४०	
१८	संस्कृत-विद्या	११	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	४१-४३	
१९	संस्कृत-विद्या	११	गवा	श्रीदेवा मरिगथा	४४-४६	
२०	संस्कृत-विद्या	११	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	४७-४९	
२१	संस्कृत-विद्या	११	गवा	श्रीदेवा मरिगथा	५०-५२	
२२	संस्कृत-विद्या	११	मद्रा	श्रीदेवा मरिगथा	५३-५५	

सम्पादक-

June-1934

विषय-सूची ।

क्र.सं.	विषय	भाषा	लेखक/सं.नाम	पृष्ठसंख्या
१	विषय-सूची	हिन्दी	पद्य कवि "मोहन"	१-२
२	संस्कृत	संस्कृत	गद्य श्री कर्त्तिकेयभा	३-१४
३	संस्कृत	संस्कृत	पद्य सम्पादक	१५
४	संस्कृत ओ संस्कृति	संस्कृत	गद्य श्री ह्रीनाथमिश्र	१६-२५
५	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	पद्य श्री राधाकान्तमिश्र राखी	२६-२८
६	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	गद्य श्री श्रीरामदास सा.नि.	३०-३३
७	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	गद्य श्री वालादत्त भा	३४-३६
८	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	पद्य श्री रामचन्द्र का "चन्द्र"	३६-३८
९	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	गद्य श्री जयदेवमिश्र	३९-४०
१०	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	गद्य श्री रामचन्द्र का	४१-४५
११	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	पद्य श्री चन्द्रनाथ का	४६-४८
१२	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	गद्य सम्पादक दत्ता	४८-५१
१३	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	हिन्दी	पद्य श्री सहन्य का	५२
१४	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	गद्य श्री नारायण का	५३-५७
१५	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	पद्य श्री राजमोहन ठाकुर (गो.)	५८
१६	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	गद्य श्री सहन्य का	५९-६३
१७	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	पद्य श्री रामचन्द्रनाथ का	६४-६६
१८	संस्कृत संस्कृत संस्कृत	११	गद्य संज्ञा, सनातन दामोदर	६६-७०

July-1934

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	भाषा	लेखक व शीर्षक	पृष्ठ संख्या	उपसंख्या
१	हिमालय	हिंदी	मदन अग्रवाल	१-४	
२	निर्नायकता	संस्कृत	गदा श्री श्रीरामानन्द का स्तुति	५-७	
३	राजीव गान्धी जी के जीवन की प्रेरणा	मराठी	श्री राजेश्वर प्रसाद काशी 'मधु'	८-१०	
४	दास	११	गदा श्री दारुका नाथ का	११-१३	
५	मदन मोहन	११	पदा श्री अयोध्या का प्रसिद्धिदाता 'अवध' का	१४	
६	मिथिला के प्रति हमारे गहरे प्रेम का	११	गदा श्री वात्सल्य का	१५-१८	
७	किष्किन्ध्या का एक राजा का	११	पदा श्री चन्द्रनाथ का	१९-२०	
८	समाज	११	गदा श्री देवी रमा का 'मौलिकी' से 'सरोज'	२१-२६	
९	पावस	हिंदी	मदन श्री राजनाथ का	२७	
१०	भ्रम	११	गदा X.Y.Z.	२८	
११	समस्या	मैलंडि. मरा	समादक	३०	
१२	प्रभान का प्रकाश	हिंदी	११ श्री जगन्नाथ का	३१	
१३	सुन्दर संयोग	मौलिकी	गदा समादक	३२-३३	
१४	भरत-मिताक्ष	हिंदी	पदा श्री जगन्नाथ का	३४-३६	
१५	विद्या	मौलिकी	गदा श्री रामानन्द का	३७-३८	
१६	शिव-मोह	हिंदी	पदा श्री राजमोहन ठाकुर 'मोहन'	४०-४५	
१७	समाचार	मौलिकी	गदा समादक दाता	४६-४८	
१८	पहेलियाँ	हिंदी	पदा श्री राजनाथ का	४९	
१९	"न" का चालिख	हिंदी	गदा "अरिना"	४९-५३	
२०	उपदेश	११	पदा श्री रामानन्द का 'दाता'	५४	

Nov-1934

विषय-सूची ।

क्रमांक	विषय	भाषा	लेखक का नाम	पृष्ठसंख्या
१	संगीत-ग्रन्थ	हिन्दी	पद्म श्री राजमोहन ठाकुर 'मोहन'	१
२	सनातन धर्म	मैथिली	गद्य श्री शोभानन्द झा जी. ए. ए.	२-५५
३	समस्या-प्रति	"	पद्य श्री रामचन्द्र झा 'चन्द्र'	६
४	बृहज्जोगाधरकन्दविमर्श	"	गद्य श्री अच्युतानन्द झा जी. ए. ए. ए.	७-१५
५	समस्या	मैथिली	पद्य सम्पादक	१६
६	मैथिली कविता गद्य में प्रविष्टा	मैथिली	गद्य श्री रामचन्द्र झा 'चन्द्र'	१७
७	साहित्य-शक्ति	"	श्री श्रीनन्दन झा साहित्यतीर्थ	१८-२०
८	ईश-विनय	"	पद्य श्री भवनाथ मिश्र	२०
९	जन्मोद्भव ही पुरा	"	गद्य श्री रमानन्द झा	२१-३४
१०	मुकुलित-मुकुल	"	पद्य श्री रामचन्द्र झा 'मैथिली कवि विमर्श'	३५-३६
११	समाचार	"	गद्य सम्पादक	३६-३७
१२	अधुनैशानुराग	"	गद्य श्री भवनाथ मिश्र	४०-४२
१३	विश्वविद्यालय-समाचार	"	पद्य श्री चन्द्रमोहन झा	४३-४४
१४	समालोचना	"	गद्य श्री रामचन्द्र झा 'चन्द्र'	४५
१५	भौगोलिक मैथिली की नींव देता	हिन्दी	गद्य श्री राजमोहन ठाकुर	४६-४७
१६	प्रश्न	"	पद्य श्री हरिमान्न झा	४८-४९
१७	प्रत्युपवाह	"	गद्य श्री राजमोहन ठाकुर 'मोहन'	५०-५२
१८	भारत-बासी	"	पद्य श्री रामचन्द्र झा 'मैथिली कवि विमर्श'	५३
१९	आन्तिम भिन्नता	"	गद्य श्री राधाबाबा मिश्र	५४-५५

सम्पादक-

Dec-1934

विषय सूची।

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
१	इति-विषय	१
२	हनुमान-लङ्केश-सम्बाद-लेखक गद्य श्री रमानन्द झा	२-४
३	मैथिली के उन्नत गद्य श्री आशादत्त झा "मैथिली"	५
४	निनाबले के फेरि	११ गद्य श्री बालक दत्त झा
५	समस्या	१० गैर-समस्या
६	समस्या-सूत्र	११ मैथिली गद्य श्री रामचन्द्र झा "चन्द्र"
७	बाल्य-विवाह	११ गद्य श्री राजशङ्कर मिश्र "द्वारा" १२-१५
८	सिधिली	११ गद्य श्री उमेशनाथ झा "व्यास" १५
९	विद्युत्-मेलन	११ गद्य श्री रमानन्द झा १६-१७
१०	क्रिष्ण-काल रामायण	११ गद्य श्री चन्द्रनाथ झा २०-२१
११	समाचार	११ गद्य सम्बाद-दाता २२-२६
१२	अरुण-माला में शिव	हिन्दी गद्य श्री राजमोहन झा "मोहन" २८
१३	होस का परेचय	११ गद्य श्री राजनाथ झा २९-३३
१४	स्वप्न-दृष्टि	११ गद्य श्री रमानन्द झा "विश्व" ३४-३६
१५	प्रत्युपकार	११ गद्य श्री राजमोहन झा "मोहन" ३८-४३
१६	मैथिली से अंग्रेजी	११ गद्य श्री रामचन्द्र झा "मैथिली" ४४-४६

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-23](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-24](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-25](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-26](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-27](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-28](#)

[मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-29](#)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.२. कल्पना झा- मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-११



कल्पना झा

मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-११

नारी शक्तिक सम्मान कएनिहार 'विद्यालंकार'

कन्यादानक बिध काल बऽरक हाथ पर कन्याक हाथ राखल गेल। कन्याक कोमल हाथ, हाथक रेखा देखि बऽरक मोन विचलित ! "हे भगवान ! ई तऽ घोर अनर्थ भऽ रहल अछि हमरा हाथें" मोने मोन बड़बड़ा कऽ रहि गेलाह बऽर बाबू। एकर अतिरिक्त हुनकर साध्य छलनिओ नहि किछु। ताहि दिन परिवार-गाम-समाज द्वारा अपनहि मोने विवाह तय कऽ देल जाइत छलैक। बऽर सँ बिनु बिचार पुछनहि। बऽर केँ बेदी पर जाए कन्यादान काल भान भेलनि जे कन्या तऽ बच्चे छथि। मात्र बारह बरखक मालती देवी संग विवाह काल श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'क मनःस्थिति एहन उहापोह बला छलनि जे एक मोन भेलनि विवाह नहि करी, मना कऽ दी। मुदा डऽर भेलनि दरबज्जा पर सँ बऽर बरिआती घुरि जाएब, ओहि बिनु बापक बेटी पर कोनो वज्राघात ने सिद्ध भऽ जाइक। फेर कतहु विवाह होएब कठिन ने भऽ जाइन हुनकर। असले साँप-छुछुन्दर बला

पड़ि भऽ गेलनि 'विद्यालंकार' जीक। उगलब आ निगलब, दुनू कठिन। विवाहक बेदी पर बैसल अत्यधिक विचलित भेलाह एहि कारणेँ जे पत्रकारिता करैत सभदिन बाल-विवाह, बेमेल विवाहक विरोध मे लिखैत रहल छलाह। से बिधनाक लिखलाहा एहन किंकर्तव्यविमूढ़ बला स्थिति मे आनि पटक देलकनि जे स्वयं द्वारा विरोध कएल जाए बला कृत्य अपनहि करबालेल विवश छलाह। लोक हँसतनि, कटाक्षक प्रहार हेतनि, सेहो आशंका छलनिहँ। मुदा लिखलाहा मानि विवाह कएबे कएलनि। बिनु माएक बेटी अम्बा आ त्रिपुरा केँ माएक खगता छलनि। विशेष रूप सँ छोटकी बेटी त्रिपुरा केँ। दू टा पुत्रीक माए, 'विद्यालंकार'क पहिल पत्नीक मृत्युपरान्त लोक-बेद सएह सोचि दोसर विवाह लेल दबाव देलथिन। तकरहि परिणाम छलए ई बेमेल विवाह, जाहि मे बऽर छलाह बिआलीस बरखक आ कनिजा छलीह बारह बरखक। तीस बरखक अन्तर रहबाक कारणेँ पितृवत् ममता सेहो रहलनि पत्नी लेल 'विद्यालंकार' जीक हृदय मे।

मालती देवीक मूल ग्राम छलनि सतलखा, मुदा बिनु बापक बेटीक पालन-पोषण मातृक भवानीपुर मे भेल छलनि। हुनकर अनुज गर्भहि मे छलथिन जखन हुनकर पिताक देहान्त भेल छलनि। गर्भवती विधवा पुत्री केँ सासुर सँ आनि लेल गेल रहनि हुनकर माता-पिता द्वारा। तँ ई बेमेल विवाह भवानीपुर मे सम्पन्न भेल छलए। बहुत बाद मे पुनः सतलखा बसैत गेलाह मामा सभ, मतलब 'विद्यालंकार' जीक सार सभ।

विवाहोपरान्त पत्नी मालती देवीक संग हुनकर अग्रज शशिकान्त, अनुज कृष्णकान्त आ माएक जिम्मेदारी सेहो जमाए 'विद्यालंकार' जी स्वयं उठौलनि। विशेष रूप सँ जखन पटना रहए लगलाह तखन सँ। ओहि सँ पहिने जा धरि 'विद्यालंकार' जीक कर्मभूमि बंबई आ बनारस रहलनि ता धरि भवानीपुर मे रहैत गेलाह। मुदा पटना मे निज आवास 'विद्यालंकार भवन' बनितहि सभ पटने रहए लगलाह। सार सभक पढ़ाइ-लिखाइ,

विवाह-दानक जिम्मेदारी तऽ सहजहि, घर बनाबए लेल जमीन पर्यन्त लिखि देलथिन अपन पटना आवासक पछुआरे मे। पत्नीक मान-सम्मानक संग सासुक इच्छाक मान सेहो रखलनि 'विद्यालंकार' जी। बारह बरखक 'बच्चा कनिजा'क पतिक हृदय मे पत्नीक लेल पिता सन ममता सभदिन रहलनि। बल्कि पतिक अधिकार सँ बेसी पिता सम ममत्व छलनि, एहन सुनल अछि। नारी-शक्तिक सम्मान आ उत्थान पर विशेष रूप सँ ध्यान-केन्द्रित रहलनि 'विद्यालंकार' जीक। पत्नीक अतिरिक्त पुत्री, पुत्रवधू, पौत्री, दौहित्री, सभक प्रति एहन भाव रहलनि। आ जे पुरुष घरक नारी लेल सम्मान भाव राखब जानथि से बाहरक नारी लेल रखबे करताह, ई निश्चित अछि।

घरक पुत्री, पुत्रवधू, पौत्री, दौहित्री, सभ उच्च शिक्षिता होइथ, स्वावलंबी होइथ, एहि तरहक भाव आ प्रयास दुनू रहलनि 'विद्यालंकार' जीक। आ तैं हुनका घरक सभ बेटी वेल-एजुकेटेड छलीह। जखन कि ओहि समय मे कॉलेजक मुह कम्मे घरक बेटी देखैत छल। बड़ भेलैक तऽ मैट्रिक पास कऽ लेलनि बेटी सभ। ओतबे पर्याप्त मानल जाइत छल। विशेष बात ई जे शिक्षा, स्वावलंबनक पाठ पढ़ौनिहार पिताक हृदय मे ममत्व भाव माए सँ कनिको कम नहि छलनि। विवाहिता पुत्री केँ स्वास्थ्य समस्याक कारणेँ सोलह वर्ष धरि अपनहि संग बोरिंग रोड स्थित आवास 'विद्यालंकार भवन'मे रखलथिन। आ ई निर्णय 'विद्यालंकार' जीक छलनि। जखन कि अपना मिथिला मे विवाहोपरान्त बेटीक सुख-दुख सँ माता-पिता ततेक माने-मतलब नहि राखैत छलाह ताहि दिन। बेटीक भाग्य कहि हुनका, हुनकर हाल पर छोड़ि देल जाइत छलनि।

स्त्री-शिक्षाक प्रति 'विद्यालंकार' जीक जागरूकताक चर्चा करैत जमशेदपुर रेडियो स्टेशन मे अनाउंसर रहि चुकल हुनकर दौहित्री मिनाक्षी जी गप्पक क्रम मे कहलनि - "हमरा बहुत लोक शुद्ध उच्चारण लेल कॉम्पलिमेंट दैत छथि। से एकर पूरा क्रेडिट

नानाजी केँ जाइत छनि। एतेन शुद्ध उच्चारण करबाक अभ्यास हमरा ओएह करओलनि। जाहि स्पष्ट आ शुद्ध उच्चारणक आधार पर रेडियो अनाउंसरक जॉब भेटल हमरा। मोन पड़ैए 'विद्यालंकार भवन' मे रहैत सभदिन नानाजी अपना सोझाँ बैसाए कइअक टा दैनिक, जे नियमित आबैत छल घर मे, ओहि मे सँ हिन्दी-अंग्रेजी दुनू अखबारक समाचारक रीडिंग लगाबए लेल हमरा कहैत छलाह। आ जहाँ अशुद्ध उच्चारण भेल, टोकलनि। टोकबे टा नहि कएलनि, बेर-बेर शुद्ध उच्चारण करबाक प्रैक्टिस करओलनि।"

'विद्यालंकार' जीक सोच एहन छलनि जे नारीक सुरक्षा करबाक भार पुरुष-वर्ग केँ अपना कान्ह पर लेबाक बेगरता नहि छनि। अपितु नारीक भीतर सभ तरहक योग्यता विकसित करबा मे ओकर सहयोग करब पुरुषक धर्म छैक। योग्यता माने शिक्षा, निर्णय लेबाक क्षमता विकसित करब, अपन सुरक्षाक लेल सक्षम बनाएब। ओहि जमाना मे एहन जागरूकता कम पुरुषक भीतर देखल जाइत छल हेतनि। आम तौर पर लोक बेटी-पुतहुक सुरक्षा लेल चिन्तित रहैत छल। स्कूल-कॉलेज, नैहर-सासुर कतहु गेल तऽ संग मे कोनो पुरुष केँ अवश्ये पठाओल जाए, चाहे ओ पुरुष बएस मे ओहि स्त्री सँ छोटे किएक ने होइथ। माने पैघ बहिनिक सुरक्षाक भार छोट भाएक माथ पर दऽ देब आ गौरवान्वित होइत रहब जे हमर घरक बेटी-पुतहु कतहु एकसरि नहि जाइत छथि। एकरे अपन कर्तव्य बुझैत छलाह ताहि दिनक पुरुष। मुदा 'विद्यालंकार' जी नारी केँ माँ, बहिन, पत्नी वा बेटी सँ पहिने एकटा स्वतंत्र व्यक्ति मानैत छलाह।

अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता छलनि 'विद्यालंकार' जीक घरक महिला लोकनि केँ। अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता पर गप्प करैत 'विद्यालंकार' जीक दुलरी बेटी उर्मिला झा कहलनि, "घर पर बहुत लोकक अबरजात रहैत छल। कहियो जँ बाबूजी द्वारा ककरो

कहल कोनो बात हमरा अनर्गल बुझाइत छलए तऽ हम कहि दैत छलिअनि जे एना किएक कहलिअनि अहाँ हुनका। आ हमरा कहला पर ओ स्वीकार करैत छलाह अपन गलती।" ई कतेक पैघ बात भेल। जेनरली पिताक भीतर 'पिता' होएबाक 'इगो' हावी रहैत छै। एहन सन जे हम बाप छी तऽ हम सही छी। मुदा एतेक गुणी, एतेक प्रतिष्ठित व्यक्तिक भीतर एहि तरहक कोनो 'इगो'क छुतिओ नहि छलनि।

समग्रता मे कही तऽ ओ सामाजिक छवि अनुरूप सेहो महान छलाह, व्यक्तिगत जीवनक अनुरूप सेहो महान व्यक्तित्व छलाह। आदर्श व्यक्तित्व एहने लोकक कहल जाएत हमरा हिसाब सँ।

संपादकीय सूचना- एहि सिरीजक पुरान क्रम एहि लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकैत छी-

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-1](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-2](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-3](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-4](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-5](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-6](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-7](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-8](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-9](#)

[मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-10](#)

विद्यालंकारजीसँ पहिने विदेहपर व्यासजीक कृतित्वपर कल्पनाजी लीखि रहल छथि। पाठक व्यासजीपर प्रकाशित एखन धरिक सभ खंड निच्चा केर लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकै छथि-

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-1](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-2](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-3](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-4](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-5](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-6](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-7](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-8](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-9](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-10](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-11](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-12](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-13](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-14](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-15](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-16](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-17](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-18](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-19](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-20](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-21](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-22](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-23](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-24](#)

[मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-25](#)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.३. आशीष अनचिन्हार-शुगर डैडी (Sugar Daddy), शुगर मम्मी (Sugar Mommy वा Sugar Mama), मिथिलाक बिकौआ बियाह एवं वर्तमान

आशीष अनचिन्हार

शुगर डैडी (Sugar Daddy), शुगर मम्मी (Sugar Mommy वा Sugar Mama), मिथिलाक बिकौआ बियाह एवं वर्तमान

शुगर डैडी (Sugar Daddy), शुगर मम्मी (Sugar Mommy वा Sugar Mama) केर वर्तमान प्रचलन विदेशसँ भारतमे एलैक अछि मुदा एकरा पूर्णतः विदेशी कहब उचित नै। पहिने ई जानि ली जे ई कोन विषय-वस्तु छै।

एहन अधवयसु वा बूढ़ पुरुष जे अपनासँ बहुत कम उम्रक लड़की संग आपसी सहमतिक संग रहैत हो अथवा रहबाक प्रयास करैत हो अथवा एहन भावना रखैत हो तकरा शुगर डैडी (Sugar Daddy) कहल जाइत छै। कम उम्रक ओहि लड़कीकेँ शुगर बेबी (Sugar Baby) कहल जाइत छै।

जैँ उपर बातमे अधवयसु वा बूढ़ महिला हो आ ओ अपनासँ बहुत कम उम्रक लड़का संग आपसी सहमतिक संग रहैत हो अथवा रहबाक प्रयास करैत हो अथवा एहन भावना रखैत हो तकरा (Sugar Mommy वा Sugar Mama) कहल जाइत छै। कम उम्रक ओहि लड़काकेँ शुगर बेबी (Sugar Baby) कहल जाइत छै।

शुगर डैडी वा शुगर मम्मी बनबाक किछु कारण अछि जेना-

१) वैधानिक पति-पत्नीक आपसी संबंध खराप हएब।

२) पति वा पत्नीक मृत्युक बाद असगरे रहब।

३) चरित्रहीनता।

शुगर डैडी वा शुगर मम्मी बला संबंधक किछु मुख्य विशेषता ओ शर्ते-

१) वित्तीय सहायता: शुगर डैडी वा शुगर मम्मी समय केर बदला मे अपन संगीकेँ आर्थिक सहायता, यात्रा खर्च वा रहबा-खेबाक सुविधा दैत छै।

२ आपसी सहमति: ई संबंध आपसी सहमति (Mutual Understanding) पर आधारित होइत छै।

३ पारस्परिक लाभ: एहिमे एक पक्षकेँ वित्तीय सुरक्षा भेटैत छै आ दोसर पक्षकेँ समय ओ भावनात्मक संबल।

मिथिला ओ बंगालक संबंध अविभाज्य अछि। दूनू सभ्यता एक दोसरक नीक आ खराप वस्तु अपन संस्कृतिमे समाहित केने अछि। बंगालमे एहने एक संस्कृति छल कुलीन प्रथा जे बादमे मिथिलामे आएल आ जकर नाम भेलै "बिकौआ बियाह"।

बिकौआ बियाहमे उच्च कुलक बूढ़ ब्राह्मण सभ आन-आन छोटक कुल ब्राह्मणक बहुत छोट ओ अबोध लड़कीक संगे बियाह करैत छलाह। आ एहिमे लड़कीक सहमति नै के बराबर रहैत छल मुदा ओकर परिवारक सहमति रहैत छल। एहि प्रथासँ मैथिल ब्राह्मणकेँ कोनो लाभ तऽ नै भेलै उन्टा रक्तशुद्धता ओ आनुवांशिक परिस्थितिमे बहुत रास परिवर्तन भेल हैतै से सहजे अनुमान कएल जा सकैए। मिथिलाक ई बिकौआ बियाह एखनुक शुगर डैडी छलाह।

वर्तमान समयमे मिथिलाक समाजमे नुकाएल बहुत रास शुगर डैडी सभ छथि जकरा बारेमे हुनकर समाजकेँ पता रहैत छै।

मिथिलाक समाजमे शुगर मम्मीक उदाहरण बहुत कम अछि अथवा हमरे लग जानकारी कम अछि। किछु बखं पहिने पूर्णियाक लग-पासक एक घटना छल जाहिमे बियाहक बाद एक जमाए अपन सासु संगे बियाह कऽ लेने छल।

मैथिली भाषा-साहित्य लेल ई नव विषय अछि आ प्रायः मैथिलीक विद्वान सभ एहि संबंधक आलोकमे मिथिलाक प्राचीन वैवाहिक स्थितिपर नै लिखलाह अछि। उम्मेद अछि जे भविष्यमे ई काज हएत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.४. लालदेव कामत-एक कवि'क तकनीकी निबन्ध संग्रह/ प्रो० राम चन्द्र मण्डल
जीकें पत्नी शोक मादे



लालदेव कामत

एक कवि'क तकनीकी निबन्ध संग्रह/ प्रो० राम चन्द्र मण्डल जीकें पत्नी शोक
मादे

१

एक कवि'क तकनीकी निबन्ध संग्रह

मैथिली आ हिन्दी भाषामे ३० गोट सँ अधिक काव्य पोथीक रचनाकार केँ एक विशेष
सज्जनके आग्रह पर गद्य विधामे कलम चललनि हेन। ओना ओ पूर्वमे गल्प संग्रह

(अष्टदल) लिख चुकल रहथि। बहु चर्चित एहि 'सप्त - रश्मि ' पुस्तिकामे ६४ पृष्ठ , जकर मोल अढ़ाई सय टाका भारू. य । नवारम्भ सँ २०२५ ई० मे प्रकाशित ऐ केँ आई एस बी एन ९७८९३४८४९५९७६ भेटल छै। तथ्यपूर्ण ओ चर्चित मैथिलीक पोथीके आकर्षक कभर आ पछिला गत्ता पर लेखक श्री राज किशोर मिश्र जीके परिचयके सँग रंगील छवि ओ रचना संसारक एक झलक पाठककेँ प्रथम दृष्टया नजैर पड़त। पुस्तिकामे प्राक्कथन रूपेँ एहि मादे स्वयं लिखलनि हेन। पाठ- १. शिर्षक - ऊर्जा म ओ एहि तरहें लेखन आरम्भ करैत छथि -:

पूरा ब्रह्मांड ऊर्जेक रुप थिक। ब्रह्मांडक उत्पत्ति -कारण सेहो ऊर्जेकेँ मानल गेलैक अछि। दुर्गा सप्तशतीमे वर्णित अछि जे आदिशक्ति सभ प्राणीमे शक्ति - रुपमे स्थित छथि। ऋग्वेदमे भिन्न - भिन्न शक्तिक प्रतिनिधित्व अलग-अलग देवलोकनि करैत छथि । जेनाकि जल - शक्तिक अधिष्ठाता वरूणदेव छथि, वायुक देवता मरुद्गण छथि, अग्नि शक्तिक प्रतिनिधि - देवता अग्निदेव छथि प्रभृति, प्रभृति। श्री मिश्र जी सात गोट निबंध यथा-: १. ऊर्जा, २. भारतमे संचार - क्रान्ति, ३. अंतरिक्ष - अनुसंधानमे भारतक योगदान, ४. भारतमे डिजिटल (अंकीत) क्रांति, ५. खेती - बाड़ी आ किसान, ६. कम्प्यूटर ओ एआई , ७. पारिस्थितिकीय परिवर्तन। पाठके सारांश ऐ तरहें जनतब य -:

पृथ्वीक दूनू ध्रुव पर जमल बरफ पिघलि रहल अछि, जाहिसँ समुंदरके जलस्तर बढ़ि रहल छैक। प्रदूषण दुआरें तापमानमे जे वृद्धि भऽ रहल छैक ,ओहिसँ ऋतुचक्र बदलि रहल अछि। तँ वैज्ञानिक तकनीक ओ जन - जागरूकता सँ प्रदूषण केँ यथाशीघ्र रोकल जाय। जाहि उपकरण सँ प्रदूषित गैस निःसृत होईत अछि ,ओतय प्रदूषण- नियंत्रण - यंत्र जेनाकि प्रेसीपिटेटर ,फिल्टर आदिक आदिक प्रयोग कयल जाए। यातायातक साधनमे विद्युत् चालित - वाहनक प्रचलन बढ़य। पारंपरिक ऊर्जा स्रोतक साती नवीकरणीय ऊर्जा - स्रोतक बेसी सँ बेसी उपयोग होईक। एहिसभ तरहें पर्यावरण

स्वस्थ रहत आ हमहूँ सब। वर्ष २०१४ सँ अक्षय ऊर्जा क्षमता लगधक तीन गुणा बढलैक हय। भारत तँ गैर- जीवाश्म ईंधन स्रोत सँ ४०./। ऊर्जा प्राप्त करबाक सीओपी२१ केर लक्ष्य प्राप्त कयलक हेन। सन् २०१४ ई०मे आरंभ कयल गेल नमामी गंगे कार्यक्रमके तहत ४९४८९ करोड़क ४९४ परियोजना केँ मंजूरि देला हेन ,ओहिमे सँ ३१५ टा पुर्ण कय चुकल अछि। प्रधानमंत्री ई-बस योजनाक अन्तर्गत १४ राज्य आ ४ केन्द्र शासित प्रदेश'क शहरके लेल ७२९३ इलेक्ट्रिक बसक गत साल मंजूरी भेल रहय।

बिहारमे नमामि गंगे परियोजनाक ५९०० करोड़ टाकाक लागत सँ आवास,शहरी विकास लेल शुक्रवार २० जून २०२५ केँ श्री नरेन्द्र मोदी जीक कर कमल सँ उदघाटनमे ८०० करोड़ सँ अधिकके राशि विभिन्न परियोजनामे मोतिहारी, रक्सौल , बक्सर आ आरा एहन प्रमुख स्थानमे सीवेज उपचार योजना होयत। गंगा नदी क ' सफाय पर कुल लागत २६०० करोड़ टाका सँ अधिक खर्च होयत। गंगाके जल संसाधनके संरक्षण म ऐतिहासिक काज आरंभ भेल। पटना जिलाके मोकामा, फतुहा , बेगूसराय , बख्तियारपुर,दीघा आ कंकरबागमे स्थापित होयबाला एसटीपी प्रोजेक्टक क्षमता लाखो लिटर पानिके शुद्ध करबाक होयत। ऐ लेल इंटरसेप्शन एंड डाइवर्जन काजक शुरुआतमे १८०० करोड़ टाका सँ पर्यावरणीय स्थिरताकेँ वढ़ाबा लेल गेल छैक। नमामी गंगे कार्यक्रम - ऋषिकेश सँ नौआबाखर उच्च माध्यमिक विद्यालयके शिक्षक सुभाष कामत घुमि आबि बतेलनि जल शक्ति मंत्रालयके दिशसँ प्रौद्योगिकी आ बुनियादी ढाँचा पर सामुदायिक सहभागिता केँ महौत देल जा रहलैक य।

संचारक छोट सन गाछ आब विशाल वृक्ष भऽ गेल अछि। अपन बहुआयामी ओ विराट उपयोगिताक कारणेँ ओ कल्प तरु सन भऽ जायत। मानलहुँ जे संचारमे बड़ गुण छैक । मुदा मनुख जँ एकर दुरुपयोग करतैक , तँ एहि सँ क्षति सेहो भ' सकैत छैक। साइबर क्राइम एकरे प्रतिफल थिक। एहिमे तकनीकक कोनो दोख नहिं छैक। दोख तँ दुरुपयोग

करयबालाक छैक। संचार एतहि आबिकऽ नहिं खत्म भ' जायत अछि। संचारमे तँ ओ प्रतिभा छैक जे कहियो सुनबै पृथ्वीकेँ आकाशगंगा अथवा आन गैलेक्सी सँ सूचना - सम्पर्क भऽ गेलैक अछि। ५जी-६जी तँ अबिते रहतैक।

भारत पहिल उपग्रह 'आर्यभट्ट' बनौलक जकर प्रक्षेपण सोवियत संघ द्वारा १९७५ ई०मे कयल गेलैक। १९८० ई०मे रोहणी भारतके पहिल सैटेलाईट छल जकरा पृथ्वीक कक्षामे अपने देशमे बनल प्रक्षेपण - यान एस एल वी -३ द्वारा स्थापित कयल गेलैक। १९८३ ई०मे भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणालीक (INST-B) सफल प्रक्षेपण रहल। उपग्रह प्रक्षेपणक ई क्रम चलैत रहलै। भारत अंतरिक्ष - अनुसंधानमे आगाँ - आगाँ डेग बढबैत रहल। इनसैट - बीक मुख्य उद्देश छलैक दूरसंचार एवं टेलीविजन प्रसारण सेवामे तकनीकी योगदान। आई आर एस. प्रोग्रामक मिशन प्राकृतिक संसाधन ओ पर्यावरण - प्रबंधन सँ जुड़ल छलैक।

आधार कार्ड शुरूमे तँ परिचय - पत्र जेना छलै। मुदा बादमे ओ ऑनलाईन आ ऑफलाइनक बीच सेतुक काज करय लागल। जाहि देशमे अधिकतर नागरिकक बैंकमे कोनो अबरजात नहिं छलैक, ततय प्रधानमंत्री जन-धन योजनान्तर्गत अधिकांश लोकक खाता बैंकमे खुजि गेलैक। २०१४ ई०मे जन-धन योजना शुरू भेलै आ आठ बरखमे छियालीस करोड़ बैंक एकाउंट खुजि गेलैक। २००९-१४ केँ बीचमे लगभग सत्तर करोड़ आधार कार्ड बनल रहैक, जे २०२२ ई० धरि एक अरब तीस करोड़ पर पहुँच गेलैक। भारतमे हरित क्रांतिक जनक डॉ० एम एस स्वामीनाथनकेँ मानल जाइत छन्हि। ओ धान आ गहुँमक ओहन प्रजाति तैयार कयलन्हि जाहिमे कीड़ा नहिं लगैक आ उपज बेसी होइ। १९७० ई० धरि गहुँमक उबजा बीस मिलियन टनधरि पहुँच गेल आ तहिना धानक उपजमे सेहो वृद्धि भेलै। हरित क्रांतिक आरम्भहिसँ भारत अन्न उपजमे आत्मनिर्भर होअय लागल। छोट डांटबला गहुँमक प्रजातिमे सोनोरा -६४, सोनालिका आ कल्याण

सोना छल। ओडिशा आई आर- ८ सेहो छोट डांटबला धानक प्रभेद अछि, जकर उबज - क्षमता बहुत बेसी छै।

एआईमे अपना कोनो संवेदना नहिं होइत छैक । मुदा ओ मनुक्खक संवेदना - पद्धतिकें चिन्हि सकैत अछि। कम्प्यूटर नेटवर्क एकटा नव नोकरशाही अछि जे मनुक्खक नोकरशाही सँ बेसी शक्तिशाली अछि। उदाहरण स्वरूप, औद्योगिक क्रांतिक वाद जखन नव - नव तकनीक सब दुनिया भरिमे पसरऽ लगलै ,तं ओ परम्परागत आर्थिक, राजनीतिक ओ सामाजिक संरचनाकें बदलैत एकटा नव समाजक रचना अएलक जे पूर्वसँ बेसी सुखी छल। मुदा एकर अन्हार पक्ष सेहो छलैक।

अल्ट्राबायलेट किरिनकें पृथ्वीपर सोझे अएलासँ वैश्विक तापन बढ़ि रहल अछि। जलीय वनस्पति सभकें बड़ भारी नोकसान भऽ रहल छैक, माटिमे उपस्थित सूक्ष्म जीव जे गाछ - बिरिछकें पोषक तत्त्व देब'मे सहायक होइत छैक, ओहो सब एहि विकिरणसँ नष्ट भ ' रहल अछि। जाहि पदार्थ सभसँ ओजोन परतमे क्षरण भ' रहल छैक, ओहि सभक प्रयोग पर नियंत्रण आवश्यक अछि। पृथ्वीक ई प्रकृतिक कवच जँ एहिना टुटैत रहतै ,तँ एहि ग्रहपर रहनिहारक अस्तित्व पर खतरा बढ़ैत जेतैक। निबन्ध हिनक ठोसगर छन्हि। पोथी चर्चा सँग एक संस्कृतक पाँति -:

ॐ अंतरिक्षः शांतिः, वनस्पतयः शांतिः

प्रो० राम चन्द्र मण्डल जीकेँ पत्नी शोक मादे



स्मृति शेष उमा भारती जी बी एन एम यू. - मधेपुरा सँ दू विषयमे एम ए. (मनोविज्ञान आ गृहविज्ञान) पास रहथिन। सुपौल (बिहार) केर स्व० जागेश्वर कामत जीक' पुत्री उमा भारती 'क जन्म २५ अप्रील १९५९ ई० केँ वार्ड नं० ३ मे कृषिवर्त केबट परिवारमे भेल रहनि। हुनक आरम्भिक शिक्षा बबुजन बालिका विद्यालय - सुपौल आ वादक शिक्षा केशव कन्या विद्यालय मधेपुरा सँ मैट्रिक धरि भेल रहनि। पार्वती विज्ञान महाविद्यालय - मधेपुरा सँ, आ टी पी कालेज सँ पीजी. ओ कयने रहथिन। जीविकोपार्जन लेल प्रा०वि० राजपुरमे दि० ३-१-१९८७ केँ नोकड़ी धेलीह। तदन्तर स्थानान्तरित भऽ प्रा०वि० मधेपुरा आबि गेलीह। दि०. ३०-४-२०२३ ई० केँ सेवा निवृत्ति पौवलीह। सुश्री उमा जीके वियाह एम०ए० क' रहल छात्र पिपरा निवासी श्री राम चन्द्र मण्डल जीसँ दि० २५-६-१९७५ में भेल रहनि। हुनके सदकृपा सँ प्रवेशिका लगायत उच्चतम शिक्षा प्राप्त कयने छलीह। श्रीमती उमा भारती जीक दू पुत्र क्रमशः डॉ० आलोक कुमार - प्रधानाचार्य, वेदव्यास कालेज अमलेश्वर नगर, मधेपुरामे आ अमित कुमार एम टेक सम्प्रति शिक्षक - योगेन्द्र+२ उच्च विद्यालय मुरहो मे सेवारत छन्हि। एक पुत्र - आनन्द वर्धन ३४ वरखक उमेरमे ८ साल पूर्व रुग्णताक इलाज कराबैत दिल्ली स्थित मेदांता अस्पतालमे आखरि शांस लेलकनि। ताही दुखद चिन्तामे व्यथित रहैत अपनों स्फूर्ति कमय लगलन्हि।

ओ शालीन आ मृदुल व्यक्तित्वक' लौह स्त्री छलीह, अपन शील सोभावक कारणेँ शिक्षक समुदायमे विशेष लोकप्रियता हासिल कयने रहथिन। मध्यान्ह भोजन आ विद्यालयी प्रबन्धन एतेक राश दक्षता छलन्हि जे आनो सब अध्यापिका हुनका सँ विमर्श करथि! अपन ईमानदारी, निष्ठा ओ खुजल दिलक होयबाक कारणेँ सबहक हृदय पर राज करैत अपन गहिँर प्रभाव छोड़लनि। शिक्षा विभागक' अधिकारीगण हुनक प्रशासनिक क्षमता, निर्भिकता आ हाजीर जबाबी देखि मुक्तकण्ठ सँ प्रशंसा करन्हि। इयह एकटा संयोग रहैक जे ओ शिक्षक संघक चुनावमे जिला प्रतिनिधि उम्मीदवारक बीच सँ सर्वाधिक मत पाबि स्थापित नायिका बनि गेल छलीह। सन् १९८६ ई० सँ पूर्व कठिनता पूर्वक गुजर - बसर करैत डॉ० किष्टोके एक कक्ष खपरैल घरमे सबैतुड़ रहैत मधेपुरामे शिक्षाक अलख जगेबामे विदुषी उमा भारती जी अपन एक पृथक पहिचान बनेलीह। अपन पति यूनिवर्सिटी प्रोफेसर आर सी मंडल जीक सन् १९९० ई० मे त्रिवेणीगंज विधानसभा चुनावक सफल संचालन आ १९९६ ई० म मधेपुरा क्षेत्रसँ लोकसभा निर्वाचनमे पतिदेव महोदय केँ क्षेत्र परिभ्रमणमे संगसाथ एक चतुर नेत्री केर तरह भूमिका निभेने छलीह। राजनीतिक - सामाजिक जागरण आ महर्षि वेदव्यास कालेज फोलि शैक्षणिक जागरूकता लेल हुनका स्मरण कयल जाइत रहत। ऐ पाँतिक लेखककेँ एहिबेर सुपौलमे व्यास शिखर सम्मान भेटैक अवसर पर समारोहक शोभा बढ़बैत ओ उदास मुखाकृतिक आभामे संक्षिप्त भेंटवार्ता कयने रहनि। विनम्र श्रद्धांजलिक संग हुनक हुतात्माके शांति लेल ईष्ट सँ सतत प्रार्थना अछि। वेदव्यास कालेजक निगरानी ओ नितदिन जगजीवन आश्रम सँ डियुटि कऽ अबैत घरी करैत रहलीह। वेदव्यास कालेजक लेल दू बिगहा जमीन बेसाहि महामहिम राज्यपाल नामे निबंधन ओ स्थापनाकाल सँ हुनक आत्मसात् आचरण हरदम समर्पित रहलनि। जखन आँखिक उपचार लेल बंगलौरके यात्रा पर श्री मंडलजी रहलथि तँ पुत्रवधू फौन सँ

सूचित करैत छन्हि ३ वजे सकाले ७ अक्टूबर २०२६ केँ हृदयगति रुकला सँ महाप्रयाण लेल अनन्त यात्रा पर श्रीमती भारती जी चलि बैसलीह। भावभीनी श्रद्धांजलि! ॐ शान्ति!!

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.५. प्रीति कुमारी-राना.सुधाकरके स्मृति पुनः बिराटनगरमे / व्यक्तितत्व : फुले बाबू
नँय रहलाथि



प्रीति कुमारी बीए. बीएड.

राना.सुधाकरके स्मृति पुनः बिराटनगरमे / व्यक्तितत्व : फुले बाबू नँय रहलाथि

१

राना.सुधाकरके स्मृति पुनः बिराटनगरमे



एहिवर्ष २०२६ ई० मे विराटनगर फेर बनल राम ना० सुधाकर आ अन्यके स्मृतिक गबाह। मिथिला टाइम्स आ मैथिली सेवा समिति, मैथिली एसोसिएशन नेपाल, मैथिली विकास अभियान, विराट मैथिल नाट्यकला परिषद, आभा फाउण्डेशन, अपन विराटगढ़, परोपकार समाज आ स्वर संगम संगीतालयके संयुक्त आयोजनमे गत १४ मार्च २०२६ ई० केँ श्रद्धांजलि सभा राना. सुधाकर स्मृति कथा विमर्श संयोजक श्री राम रिझन यादव आ संचालन श्री शिव नारायण सिंघल जी द्वारा सुसम्पन्न भेल रहय। ताहि कार्यक्रम केर अवसर पर विगत ३० गते फागुन २०८२ शनिवार केँ भारत- नेपाल राष्ट्रके साहित्यकार, मैथिली भाषा आन्दोलनी, नेपाल पत्रकार महासंघ 'क सभा हॉलमे पैग जमघट लगौने रहथि। वक्तामे प्रमुख रूपेँ मधेश प्रदेश प्राज्ञ प्रतिष्ठानक अध्यक्ष श्री रामभरोस कापड़ी 'भ्रमर', प्रदीप बिहारी, चन्द्रेश जी, रोशन जनकपुरी, प्राज्ञ द्वय खेम नेपाली आ गंगा सुवेदी, प्राध्यापक कृष्ण पोखरेल, प्रवीण नारायण चौधरी, श्री डोमी कामत आदि रहथि। मैथिली सेवा समिति केर डॉ० एस एन झा 'क अध्यक्षतामे नेपाली आ मैथिली साहित्यके प्रसिद्ध कथाकार स्व० राम नारायण सुधारकके तैल्य चित्र पर पुष्पांजलि करैत अपन श्रद्धा सुमन अर्पित करयबालामे आभा अनुपमा, बसुन्धरा झा, कुशेश्वर राई

,पंकज वर्मा, नवीन कर्ण , विद्या मिश्र , भगवान झा , श्रीमती लक्ष्मी अधिकारी आदि प्रबुद्धजन सँ भरल खुब झमटगर ओ क्षण छल । ओहिमे सँ श्रीयुत् रामरीझन यादव जीक संयोजन आ श्रीमान शिव नारायण सिंघलके संचालनमे राना सुधाकर आओर पूर्वांचल मैथिलीक कवि शिरोमणि दयानन्द दिक्पालके स्मरणमे ३ अक्टूबर २०२६ शैनदिन संध्याकाल सँ भरि राति अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली कथा संगोष्ठी चलैत रहलैक। ' सगर राति दीप जरय ' के आयोजन विराटनगर - राम जानकी मंदिर परिसर ,जतुवा नेपालमे आयोजित कयल गेल रहय। मिथिला टाइम्स आ जतुवा नागरिक समाज विराटनगर केर संयुक्त तत्वावधानमे ई राष्ट्रगान आ मैथिलीकर्मि नन्द विलास राय जी द्वारा स्वागीत गीत सँ आरंभ कार्यक्रममे विद्युत संकट आ हथिया नक्षत्रक आकस्मिक बरखा सँ तत्काल पोथी लोकार्पण कार्यक्रम मोबाईल'क इजोत सँ कहुनाकेँ सम्पन्न भेल। एहि अवसर पर मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल डॉ० सुरेन्द्र लाभ , साहित्यकार मधुसूदन पोखरेल , साहित्य अकादमी सँ पुरस्कृत 'पंगू' उपन्यासक रचैता जगदीश प्रसाद मंडल , अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदके महासचिव नारायण यादव,मोरंग उद्योग व्यापारक अध्यक्ष अनिल कुमार साह, रामकुमार कामत सामुहिक रुपें दीप प्रज्वलन करैत उदघाटन भेल। आ अपन ओजस्वी भाषण कला सँ आगंतुक साहित्य प्रेमी लोकनिक स्वागत करैत तत्कालीन प्रधानमंत्री जीके सलाहकार प्रो० रामरिझन यादव जी सब गोटेकेँ वेश आह्लादित कयलन्हि। एहि सुअवसर पर २५ टा हिन्दी, अंग्रेजी अनुवाद पोथी आ मैथिलीक मूल पोथीक लोकार्पण महामहिम राज्यपाल महोदय के कर कमल सँ भेलैक। संगहि अनुकूल वातावरण होइतहि २५ गोट नूतन कथाके प्रस्तुति ६ पालीमे कथाकार लोकनि कयल,जकर त्वरित समीक्षा सेहो भेल। कथा पाठके अध्यक्षता सेवानिवृत्त शिक्षक दुर्गा नन्द मंडल आ संचालन सम्पूर्ण रात्रि वरेन साहित्यकार नन्द विलास रायजी कयलाह।

२

व्यक्तित्व : फुले बाबू नैय रहलाथि



मधुबनी जिलाक झंझारपुर नगर पंचायतमे ख्यातिनाम एक भण्डारी परिवार'क सुयश दहोदिश पसरल छैक। ऐ परिवारक स्व० गोपालजी भंडारी जीक मान्यजनीक भोज मादे अभिनव चर्च होइछ। ओ कोनो गामक भोजमे बिनु धोति लेने हाथी पर सँ नँय उतरैत रहथि। आओर जखन सिरखड़िया गामक भोजमे पहुँचलाह तँ सब नोतहारी पंचकँ पातपर भात पड़ल आ मैनेजन भंडारी जीके पात पर एक स्वर्ण अशर्फी आ ५ टाका चानिक खुदरा पाई हुनका पातमे दैत अचरज उपस्थापित भेलैक। सब अवाक्.! छरीदारके जिज्ञासा पर बारिक सब कहलकैन अपने तँ अहिक भुखल छी ,तँ लिअ। ताहि दिन सँ जातियातामे सामुदायिक भाव चेतलनि आ खाप पंचायतमे सेहो बैसय लगलाह। पछाति क्योटारेमे भ्रमण कय चन्दा संग्रह करैत भंडारी मंदिर बनाकँ , राधाकृष्ण भगवान् भजनमे लीन भेलाह। गाममे एक भीठ जमीनमे लगावोल रामबाग नामे प्रसिद्ध आम गाछीक चर्चा पुरान लोक नवतुरिया वर्गकँ खिस्सा रूपेँ सुनबैत गौरव बोधसँ भरि जाइत छथि। से बिनु पुछने ओ ४० बिगहामे राज दरबारक जगहमे कलम लगा देने रहथिन। हुनका मादे कियो संदेशवाहक महाराजा धिराज - दरिभंगा लग ऐ बिनु अधिकारक मसलाक बढिचढिकँ चर्च केलकनि। राज घराना सँ पहुँचल मैनेजर साहेब भंडारी जीकँ कहलकनि, अपनेके रैयत हसामी रूपेँ प्रशंसामे एक सभासदके बैसार आयोजित छैक,जाहिमे सादर उपस्थिति होइयौ! नियत समय पर गोपालजी भराड़ी अपन लाऊ लस्कर संग हाथी पर चढ़ि ओतय जुमि गेलाह। हुनक भव्य मुखाकृति ओ आभा देखि सबकेसब प्रशन्नतामे रहि कहलकनि एहन -एहन सम्पैतशाली रैयत एकाधटा तिरहुत राजमे रहना चाही। संगहि अपन जेष्ठ बालकके नीजी सलाहकार बनय लेल पठाबय राजाज्ञा पत्र देलकनि । समय सँ हुनक पैघ बेटा लक्ष्मी नारायण बाबू ओतय जाए हुनक सलाहकार बनि घर घुमलाह। कालांतरमे एक दिन नेपाल शिकार खेलय महाराजकँ जेबाक नियारमे अपेक्षित रशदपानि कतेक लगितैन से भंडारी जी सँ

पुछलथिन तँ ओ बतौलकनि। मुदा हुनका सँ द्वेष रखनिहार दरबारी कियो महाराजकें चुगली करैत कहलकनि फाजिल बजट बतेलक अछि। अपन घर भरैय लेल भंडारी जी बतौलक अछि। गंतव्य धरि पहुँचय सँ पूर्व एक केबट गांवमे महाराजकें पियास लगलन्हि। ओहिठाम अपन ईनार खुदबाकय जल पिलनि आ आगूक यात्रा करयमे रशद सामग्रीक अभाव देख मोन मलीन करैत भंडारी जी सँ ताकुत कयलन्हि। कथित सोईत लोकनि जे संगमे रहनि सेहो किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ गेलाह । लक्ष्मी नारायण बाबू तरेतर जेथगरकें रशदपानिके ओरियाउन कयने रहथि। तँ कहथिन - आब आन राजपाटमे भीख माँगू! पुनः व्यवस्थित होइत पारघाट लगेलकनि। हुनका एहि बौद्धिकता सँ प्रशन्न भ' ६०० बिगहा जागिर हुकुमनामा - पत्र दैत पुरस्कृत कयलकनि। इहो एक विडम्बना जे से छः सय बिगहा जायदाद स्व० भंडारी जी एकेदिन महंत आ अन्य खरीददार हाथे फरोख्त कयलाह। लक्ष्मी नारायण बाबू कें एक पुत्र कृष्ण नारायण जी आ एक पुत्री जे मधेपुरमे विवाहित छथिन। कृष्ण नारायण बाबूकें दू पुत्र क्रमशः अधिवक्ता अरुण कुमार जी आ संजीव कुमार जी तथा तीन पुत्री क्रमशः सीता देवी, अनीता देवी आ साधना छथि। गोपाल जी बाबूकें दोसर पुत्र राम नारायण भंडारी ,जिनकर पुत्र भेलथिन - देवनारायण भंडारी । देवनारायण बाबूकें तीन पुत्र क्रमशः श्याम नारायण भंडारी, श्रीनारायण भंडारी उर्फ फुले बाबू आ बद्री नारायण भंडारी एवं एक पुत्री जे मधेपुरमे ससुरवास छथिन। गोपाल जी बाबूकें तेसर पुत्र रहथिन - स्वतंत्रता सेनानी श्री राम गुलाम भण्डारी । राम गुलाम बाबूक पहिले विवाह सिरखड़िया गाम आ द्वितीय वियाह माड़र गाम । हुनक एकमेव पुत्र लाल बाबु जी ,जिनक मातृक मारड़ गाम भेलनि। हुनक ससुराईर सरौती गामक पूर्व मुखिया स्व० राजकुमार कामत जी ओतय रहनि। एहि यशस्वी परिवारमेकें स्थानीय राजनीतिक केन्द्रविन्दु मानल जाईत छैक। ५मार्च १९५९ ई० कें माता शकुन्तला देवी कें द्वितीय पुत्र रत्न नैहर तेनूआही नाजीटोलमे भेलनि। बालपन सँ मेधावी फुले

बाबुक शिक्षा दिक्षा पैतृक गाम झंझारपुर पुरानी बजारक विद्यालय सँ आरम्भ भेल छलन्हि। हुनक शुभ विवाह अलोला गाममे प्रभा देवी सँ भेलनि। गत १० अक्टूबर २०२६ केँ भोरमे एक शोकक लहैर आयल, जाहिक चपेट सँ खबेर पसरल अ० भा० कैवर्त कल्याण समिति (रजि०)केर राष्ट्रीय अध्यक्ष फुले भंडारी जी पटना मेदांता अस्पतालमे हृदयगति रुकलान्तर आकस्मिक निधन भ' गेलन्हि। ओ समाजसेवी आ मधुबनी जिला जद०(यू०) केर अध्यक्ष रहैत राजनीतिमे पैठ बनबैत जा रहल छलाह। पूर्वमे ग्रामीण क्षेत्रीय बैंक -शाखा अररियाके प्रवन्धक पद सँ सेवानिवृत्त अढ़ाय साल पहिले भेल रहथि। हुनक अभाव ऐ धराधाम पर खासकय कियौट समाज बीच सदा अखरैत रहतैन । ओ अपना पाँछा भरल पुरल परिवार छोड़ि पुत्र ई० कमलेश भंडारी , पुत्र वधू ई० प्रियंका कामत(गड़बा) , पुत्री क्रमशः पुनीता कुमारी आ संगीता कुमारी आ समस्त रियाद वादकेँ छोड़ि गेलाह अछि। ओ एक सच्चा समाजसेवी छलाह। विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित! ॐ शान्ति!!

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.६. आचार्य रामानंद मंडल-मिथिला राज बनाम बज्जि महाजनपद/ मिथिला आ अंतर्जातीय विवाह



आचार्य रामानंद मंडल

मिथिला राज बनाम बज्जि महाजनपद/ मिथिला आ अंतर्जातीय विवाह

१

मिथिला राज बनाम बज्जि महाजनपद

मिथिला राज पौराणिक हय त बज्जि महाजनपद ऐतिहासिक।

मिथिला राज के चर्चा महर्षि बाल्मीकि आ संत तुलसीदास कृत रामचरितमानस मे हय। तैं मिथिला राज धार्मिक आ सांस्कृतिक रूप से लोक मे जीवित हय। परंच बज्जि महाजनपद बौद्धकालिन हय परंच धार्मिक आ सांस्कृतिक रूप से लोक मे जीवित न हय। जौं कि बौद्ध काल मे मिथिला महाजनपद के सेहो दर्जा न पैलक। कारण मिथिला

मे बौद्ध धर्म के आदि शंकराचार्य द्वारा नष्ट क देल गेल। बौद्ध धर्म के विकास मे ब्राह्मण समुदाय रहलन। परंतु बौद्ध धर्म के नष्ट करय मे ब्राह्मण समुदाय सेहो रहलन। ब्राह्मण समुदाय बौद्ध धर्म के नष्ट करय के लेल सेहो बौद्ध धर्म धारण कैलन। बौद्ध धर्म के दू भाग में बांट देलन। जे हीनयान आ महायान कहलाइत हय। बौद्ध मठ पर बर्चस्व स्थापित कैलन। भगवान बुद्ध के मूर्ति के ब्राह्मणीकरण कैलन आ सनातन धर्म के भगवान मे बदल देलन। मिथिला के ब्राह्मण बहुल गांव के सनातनी देवी देवता वास्तव मे भगवान बुद्ध छतन। इ ब्राह्मणीकरण वा सनातनी करण स्पष्ट दिखाई पडैय हय। परंतु वो धर्म पल्लवित पुष्पित होइ हय जेकरा राजसत्ता के समर्थन मिलय हय। आ इ सर्वकालिक सत्य हय। धर्मो रक्षितः रक्षिताः।

धर्म के रक्षा करू, धर्म अंहा के रक्षा करत। बौद्ध बिहार के चलते बिहार प्रांत बनल। दरभंगा राज के मिथिला प्रांत प्रस्ताव के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू माने से इंकार क देलन। असल में पं नेहरू आधुनिक विचार के रहलन। वो मिथिला प्रांत के प्रस्ताव के संकीर्ण विचार से अंजान न रहत। मिथिला मैथिली एकटा संकीर्ण मानसिकता से भरल विचार हय। उच्च नीच, छुआ छूत, भेद भाव एकर मूल स्वभाव हय। जे आधुनिक भारत के लेल ठीक न हय। देखल जाय त अभियो इ मिथिला मे कायम हय। मिथिला अभियो संविधान के उपेक्षा करय छै। इंहा पिछड़ा वर्ग के राहुल मंडल के ब्राह्मण युवती तनु प्रिया झा से प्रेम विवाह कैला पर युवती के पिता द्वारा कालेज गेट पर गोली मार देय छै। ब्राह्मण युवती रिया गोस्वामी द्वारा एगो दलित मिलन पासवान से प्रेम विवाह कैला पर रिया के पिता द्वारा जिंदा रिया के श्राद्ध कर्म कैल जाइ छै। परंतु दोसर तरफ ब्राह्मण गायक युवा गौरव ठाकुर जौं पिछड़ा वर्ग गायिका युवती कल्पना मंडल से विआह करै छै त हर्षोल्लास मनायल जाइ छै। कारण ब्राह्मण वर्ग के विरोध आ समर्थन

के आधार संविधान न बल्कि मनुस्मृति होइ छैय। ब्राह्मण आन जाति से कन्या लेइ छै, ब्राह्मण अन्य जाति के कन्या न देइ छैय।

त एहन हय मिथिला के धर्म आ संस्कृति। मिथिला में बर्चस्ववादी अर्थात ब्राह्मणवादी धर्म आ संस्कृति हावी हय।

मिथिला में मैथिली अपन भाषागत बर्चस्व बनैले हय। अंगिका, बज्जिका आ ठेठी आदि के घोटें पर लागल हय। कोनो मिथिला मैथिली संगठन अंगिका बज्जिका आदि साहित्य के मान्यता न दे रहल हय। जौकि मिथिला मैथिली संगठन मातृभाषा मे मैथिली के अभियान चला रहल हय। मैथिली लिपि के लेल मिथिलाक्षर अभियान सेहो चला रहल हय। मिथिला मैथिली संगठन में ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ के बर्चस्व कायम हय। राजसत्ता के मोह से ग्रसित हय। भारत के सभ राज्य में मिथिला वा विद्यापति भवन निर्माण के होइ लगैले छतन। असल में इ बर्चस्ववादी किलावंदी हय। मिथिला मैथिली के आम मिथिलावासी से कोनो मतलब न हय।

अंततः जौ तक मैथिली समावेशी न बनत अर्थात बज्जिका अंगिका आ ठेठी आदि के मैथिली में समायोजित न कैल जाय मिथिला आ मैथिली अपंग रहत। आ बज्जिका अंगिका अपन अलग भाषा के मान्यता प्राप्त करत। मिथिला राज्य निर्माण के सपना पूरा न होयत आ उत्तर बिहार(बज्जि महाजनपद) राज्य के निर्माण होयत। काल के कपाल पर गीत नया लिखैत छी।

मिथिला आ अंतर्जातीय विवाह

करीब साल भर पहिले राहुल मंडल एकटा ब्राह्मण युवती तनु प्रिया झा वर्ग साथी से प्रेम विवाह क लेलन। त युवती के पिता राहुल मंडल के कालेज गेट पर गोली मार देलन आ बेटी के विधवा बना देलक। दोसर घटना मंडल समाज के गायिका बेटी कल्पना मंडल, ब्राह्मण गायक युवक गौरव ठाकुर से प्रेम विवाह क लेलन। मंडल समाज कोनो विरोध न कैलन। मंडल समाज के बुद्धिजीवी के भारतीय संविधान पर विश्वास हय। ब्राह्मण समाज सेहो विरोध न कैलन। हुनकर सोच मनुवादी हय। जे ब्राह्मण के क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र समाज के बेटी से विवाह के मनुस्मृति में विधान हय। ब्राह्मण समाज बेटी ले सकय छै परंच बेटी दे न सकय छै। इ विदेह संपादक आ साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर के दूषण पंजी के अनुसार केते ब्राह्मण के माता, दादी आ नानी शूद्राणी हय। एगो महापंडित गंगेश उपाध्याय के जन्म पिता के पांच वर्ष मृत्योपरांत जन्म भेल हय। आ वो चर्मकारिणी से विवाह कैले रहलन। गजेन्द्र ठाकुर त इहा तक कहैत छतन कि गंगेश के जन्म गैर ब्राह्मण से भेल रहय।

परंच ब्राह्मण समाज के भारतीय संविधान में विश्वास न हय।

पुनः हाल मे ब्राह्मण युवक पासवान युवती से प्रेम विवाह कैलन आ ब्राह्मण परिवार विवाह के स्वीकृत देलन। आब एकटा ब्राह्मण युवती रिया, पासवान युवक से प्रेम बिवाह कैलन त ब्राह्मण समाज मिथिला के संस्कृति के दुहाई दे रहल छतन। आ हुनकर परिवार रिया के सांकेतिक दाह संस्कार आ श्राद्ध कर्म क देलन। जौ कि ब्राह्मण रिया एगो भीडियो क्लिप में बतबैत छतन कि हमर बड़की मामी मंडल समाज से हतन। हमर

मातृक से मामी के संग कोनो आपत्ति न छैय। मिथिला के घटना से परिलक्षित होइ हय कि ब्राह्मण वर्ग मनुस्मृति के मानैत छतन आ समाज आ संस्कृति के नाम पर भारतीय संविधान से द्वेष रखैत छतन। परंच वर्तमान काल मे मनुस्मृति प्रासंगिक न हय। बल्कि भारत में प्रजातांत्रिक संविधान लागू हय।

-आचार्य रामानंद मंडल पश्चिमी मैथिली बज्जिका साहित्यकार सीतामढ़ी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

१.७. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक : अभिलेख, शोक, श्रम आ ज्ञानक बहुस्तरीय महाकथा

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

भारतीय काव्यशास्त्र, मिथिलाक न्याय-वेदान्त आ पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्तक आलोकमे एकटा विस्तृत पाठाधारित समालोचना

सार

गजेन्द्र ठाकुरक 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक' एकटा एहन मैथिली कादम्बरी अछि जाहिमे सार्वजनिक अभिलेखक एकटा असत्य, देहक वास्तविक क्षति, श्रमक अदृश्य इतिहास आ ज्ञानपर अधिकारक विवाद मिलिकऽ समकालीन कुरुक्षेत्र रचैत अछि। संलग्न प्रथम-संस्करण-विवरणमे २०१९ अंकित अछि; कथाक आधुनिक समयधारामे २०३९-२०४२ धरि पहुँचैत कालसङ्केत भेटैत अछि। २१६ अध्याय अठारह महाभारत-पर्वक अन्तर्गत बारह-बारह अध्यायक क्रममे विन्यस्त अछि, जखन कि सात रामायण-काण्ड एहि वृहत् ढाँचामे दोसर अन्तःसंरचना बनबैत अछि। भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणिक विवाद अलग कालधारामे प्रस्तुत भऽ आधुनिक साक्ष्य, प्रत्यक्ष-अनुमान, शब्द, श्रेय आ संस्थागत उत्तरदायित्वक प्रश्नकें चुनौती दैत अछि। एहि आलेखक मूल प्रतिपादन ई अछि जे उपन्यासक निर्णायक कथात्मक उपलब्धि महाकाव्यक विशालता मात्र नहि, अपितु 'के कथन करैत अछि, केकर बात प्रमाण मानल जाइत अछि, केकर श्रम लिखल जाइत अछि, आ के अपन जीवनक सूचना सार्वजनिक करबाक अनुमति दैत अछि'—एहि चारि प्रश्नकें कथा-निर्णयमे बदलि देब अछि। तथापि अत्यधिक अभिलेखीय स्पष्टीकरण, दार्शनिक संवादक पुनरावृत्ति आ कतिपय गौण पात्रक सीमित जीवन-विस्तार एहि उपलब्धिक अन्तर्निहित सीमा सेहो देखबैत अछि।

१. पाठ, अनुसन्धान-पद्धति आ आलोचनात्मक प्रतिज्ञा

एहि अध्ययनक प्राथमिक स्रोत संलग्न 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली कादम्बरी]'क सम्पूर्ण २१६-अध्यायी प्रति अछि। विस्तृत अनुक्रम, महाकाव्य-दर्शनक सम्बन्ध-

मानचित्र, पात्र-सम्बन्ध, मुख्य पात्रक निर्णय-पञ्जी आ १५७ व्यवसाय-समुदायक सूचीकें कथाक मूल अंशसँ अलग पारपाठीय सामग्री मानल गेल अछि। अनुक्रमसँ ककरो चरित्र-विकास सिद्ध नहि होइत; तकर पुष्टि कथाक दृश्य, संवाद आ निर्णयसँ करबाक चाही। तें एहि विवेचनमे आरम्भ, संकट, शोक, पुनर्निर्माण आ समापनक प्रमुख अध्यायसभक निकटपाठ तथा अठारह पर्वक समग्र संरचनात्मक तुलना दू भिन्न पद्धति रूपमे प्रयुक्त अछि। उद्धरण वा तथ्यक पाछाँ अध्याय-सङ्ख्या देल गेल अछि, जाहिसँ पाठक स्वयं प्रसंग जाँचि सकथि।

भारतीय पक्षमे भरतक रस-सिद्धान्त, आनन्दवर्धनक ध्वनि, अभिनवगुप्तक रस-व्याख्या, कुन्तकक वक्रोक्ति, क्षेमेन्द्रक औचित्य आ न्याय-वेदान्तक प्रमाण-विचारकें एक-दोसरक पर्याय नहि मानल गेल अछि। रस सौन्दर्यानुभवक प्रश्न उठबैत अछि; न्याय ज्ञापनक साधन आ युक्तिक वैधताक; वेदान्त व्यक्तिक पहिचानपर आरोपित अवधारणाक दार्शनिक जाँचक। पाश्चात्य पक्षमे मिखाइल बाख्तिनक बहुभाषिक संवाद, जेरार जेनेतक कथा-समय आ दृष्टिस्थिति, पॉल रिकरक काल-आख्यान, मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्याय, गायत्री स्पिवाकक प्रतिनिधित्व-विवाद, रोब निक्सनक मन्द हिंसा आ स्मृति-अभिलेखविषयक चिन्तन उपयोगी तुलनात्मक औजार अछि। सिद्धान्तकें उपन्यासपर आरोपित करबाक बदला प्रत्येक अवधारणासँ एकटा परीक्षणयोग्य प्रश्न पुछल गेल अछि।

एहि पाठ-पद्धतिक एकटा आवश्यक मर्यादा अछि। रामायण, महाभारत आ तीनू शास्त्रक प्राचीन विवाद उपन्यासक भीतर सृजित नाटकीय कालधारा अछि; ओहि प्रसंगसभकें शब्दशः मूल शास्त्रीय संस्करणक ऐतिहासिक प्रतिलेख नहि कहि सकैत छी। उपन्यास स्वयं एतय प्राचीन प्रसंग आ आधुनिक कल्पित पात्रक अलग-अलग समय मानैत अछि। तहिना १५७ व्यवसायवृत्तक उपस्थिति स्वतः सभ पात्रक समान सक्रियता अथवा सभ समुदायकें समान स्वायत्त वाणी प्राप्त भेलाक प्रमाण नहि अछि। बृहत्तरता आ प्रतिनिधित्वक बीच ई भेद समालोचनाक सम्पूर्ण यात्रामे आवश्यक अछि।

२. शीर्षकक 'कुरुक्षेत्र' : बाह्य युद्धसँ अन्तःकरणक संघर्ष धरि

कुरुक्षेत्र नाम सुनिते राजवंशक युद्ध, प्रतिज्ञा, उत्तराधिकार आ धर्मसङ्कट स्मरण होइत अछि। 'अन्तर्मनक' जोड़लासँ युद्धक स्थल व्यक्ति भीतर चलि जाइत अछि, मुदा उपन्यास ओकरा मनोवैज्ञानिक एकान्तमे कैद नहि करैत। भीतरक द्वन्द्व सार्वजनिक नियम, अस्पतालक ढाँचा, नगर-पञ्जी, परिवारक निर्णय आ श्रमिकक अनाम दिनक संग लगातार टकराइत अछि। एहि कारणेँ शीर्षकक आशय 'सभ किछु मनक भीतर अछि' नहि, अपितु मनक नैतिक प्रश्न बाहरी संस्थाक प्रयोगमे परखल जाइत अछि—एहन द्विमुखी तनाव अछि।

अध्याय १ 'मृतकक रसोइ'मे सरिता चूल्हापर भात रान्हि रहल छथि, तइ काल फोन कहैत अछि जे ओ मरि गेल छथि। हुनकर पति सत्रह वर्ष पहिने मरल छलाह, मुदा हुनकर नामक दवापर्ची काल्हिक अछि। एकटा जीवित देह आ ओकरा मृत घोषित करैत सूचना एक-दोसरक विरोधमे ठाढ़ अछि। ई विचित्र उद्धाटन केवल कौतूहल पैदा नहि करैत; नागरिक अस्तित्व आ अभिलेखीय अस्तित्वक बीच महाभेद तुरन्त उपस्थित करैत अछि। सरिताक उत्तर—'जँ ओ सभ फेर कहए जे हम मरि गेल छी, तँ पूछिहें—एहि भातक हिसाब के दैत अछि?'—अस्मिताक परीक्षण देहधारी श्रमसँ करैत अछि। भात, दवाइ, समयसीमा आ आवेदनक प्राप्ति-संख्या चारि अलग वस्तु रहितो एक प्रश्नक भिन्न साक्ष्य बनि जाइत अछि।

समापनक अध्याय २१६मे फेर चूल्हा, दाना, भात, लोटा आ नदी अछि। फर्क ई जे एखन नैरा नहि छथि; हुनकर अनुपस्थिति केवल अभिलेखक त्रुटि नहि, सत्यापित आ अपरिवर्तनीय मृत्यु अछि (अध्याय १२१, २१४)। आरम्भक झूठ 'मृत्यु' आ अन्तक अपरिवर्तनीय शोकक बीचक ई प्रतिलोम सम्बन्ध कथाक सूक्ष्म संरचनात्मक मेरुदण्ड अछि। आरम्भमे देह कागदक दावाकेँ खण्डित करैत अछि; अन्तमे कोनो नव कागद प्रियजनकेँ पुनर्जीवित नहि करैत। एहि अन्तरकेँ उपन्यास नीतिक सूत्रमे नहि, दिन-प्रतिदिनक भोजन आ खाली थारीमे अनुभवयोग्य बनबैत अछि।

३. अठारह पर्व, सात काण्ड आ पुनर्लिखित महाकाव्यत्व

अठारह पर्वमे प्रत्येक बारह अध्याय राखब एकटा अत्यन्त सजग स्थापत्य-निर्णय अछि। आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक आ स्वर्गारोहणक क्रम एक शास्त्रीय स्मृति-जाल बनबैत अछि। तकर भीतर बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड आ उत्तरकाण्डकें समायोजित कएल गेल अछि। तें एक अध्याय केवल अपन आधुनिक कथानकक चरण नहि, दूटा महाकाव्यीय वंशावलिक भीतर अपन स्थानो धारण करैत अछि। ई ‘कथानकक उद्धरण’सँ बेसी ‘रचनाक संरचनात्मक स्मृति’ अछि।

महाभारतक सभा-पर्वक आधुनिक अर्थ केवल पासा वा दरबार नहि। अध्याय १५मे द्रौपदीक प्रश्नक संग अनिता आ सलमाक दू अलग नागरिक मामला चलैत अछि। नैरा दुनूक यंत्रणा एक फाइलमे नहि मिला दैत छथि: एक ठाम गलत सामाजिक वर्गीकरण आ निजता, दोसर ठाम उपचारक पहिने पहिचानक शर्त। सभामे स्त्रीकें वस्तु मानबाक प्रश्न आधुनिक कार्यालयमे निर्णयक विषय बनल व्यक्तिक स्वत्वक प्रश्न बनैत अछि। समानता अछि, मुदा एक-दोसराक स्थानापन्न नहि। उपन्यासक आरम्भिक संरचनात्मक टिप्पणी सेहो स्पष्ट करैत अछि जे आधुनिक पात्र प्राचीन पात्रक पुनर्जन्म वा जातीय समतुल्य नहि छथि। इएह सावधानी प्रतिरूपकें सरलीकृत रूपक भऽ जाएबासँ बचबैत अछि।

उत्तरकाण्ड आ शान्ति-अनुशासन-अश्वमेध-स्वर्गारोहणक अन्तिम चरण कथाकें ‘विजय’क बादो लम्बा चलबाक बाध्यता दैत अछि। अध्याय १३२मे मृतकक सत्यापित संख्या स्थिर भेलाक बादो छूटल देय, सहायता, प्रतिनिधित्व आ शेष दावाक दोसर पञ्जी बिना अन्तिम मुहरक रहैत अछि। अध्याय १५७क अश्वमेधमे साम्राज्य-विस्तारक घोड़ा आ आधुनिक प्रवेशक सहमति अलग प्रश्न बनैत अछि; कोनो गामक अस्वीकार तुरन्त ‘अवरोध’ नहि होइत, ओकरा ‘उत्तरक प्रतीक्षा’ लिखल जाइत अछि। अध्याय २०५क स्वर्ग-सूची संस्थागत पदक बदला प्रमाणित नाम आ परिवारक अनुमति पर बल

दैत अछि। महाकाव्यक उत्तरार्द्ध एतय महिमामण्डनसँ हटि उत्तरदायित्वक कठिन काल बनि जाइत अछि।

एहि स्थापत्यक उपलब्धिक संग ओकर जोखिमो अछि। प्रत्येक पर्वकें ठीक बारह अध्याय देबाक सममिति पाठककें कालक्रमक विश्वास दैत अछि, मुदा अनेक प्रसंगमे फाइल, बैठकी, नापी, प्राप्ति-पत्र आ सुधार-पत्रक आवर्तन अत्यधिक पूर्वनिर्धारित बुझा सकैत अछि। महाकाव्यत्वक माप अध्यायक संख्या नहि; स्वरक स्वातन्त्र्य, चरित्रक अप्रत्याशितता आ घटनाक नैतिक परिणामो अछि। उपन्यास जखन पात्रकें अपन निर्दिष्ट दार्शनिक कार्यसँ आगाँ जीबय दैत अछि—सरिताक भात, महेशक बेटीक विद्यालय, द्रौपदीक छोट कटोरी—तखन ओकर महाकाव्यीय विस्तार सर्वाधिक प्रभावी होइत अछि।

४. कथा-समय, दृष्टिस्थिति आ बहुस्वरीय संरचना

जेनेतक आख्यान-विचारसँ एहि कादम्बरीमे ‘घटना कोन समय घटल’, ‘घटनाकें केकर अनुभवद्वारा देखाओल गेल’ आ ‘पाठककें सूचना कोन क्रममे भेटल’—ई तीनू प्रश्न अलग कए देखल जा सकैत अछि। आधुनिक विदेहपुरक २०३९-२०४२क समयधारा, रामायण-महाभारतक कथा-काल तथा वाचस्पति-उदयन-गङ्गेशक शास्त्रार्थक ऐतिहासिक-सांकेतिक धारा एकरूप काल नहि अछि। लेखक पारस्परिक कटानक द्वारा वचन, जन्म, साक्ष्य आ कारणकें बारम्बार नव परिप्रेक्ष्यमे रखैत छथि। प्राचीन पात्र आधुनिक कार्यालयमे स्वयं पहुँचि कागद नहि लिखैत छथि; हुनकर प्रसंगक बाद आधुनिक पात्रक अलग निर्णय देखाओल जाइत अछि। अतः समयक ई सामीप्य पाठकीय तुलना करबैत अछि, घटनाक वास्तविक समकालिकता नहि।

अध्याय ६१मे गङ्गा-शान्तनुक शर्त, सात शिशुक मृत्यु आ आठम पुत्रक भविष्यक बीच मौनक अर्थ बदलैत अछि; समवर्ती विदेहपुरमे नैरा लिखैत छथि जे शर्त स्वीकार करब, ओकरा बुझब आ परिणाम भोगब तीन अलग काज। ई दृश्य एकदम कथन-स्तरक सेतु अछि; पात्र-दुनियासभक अनिवार्य ऐतिहासिक मिलन नहि। अध्याय १२५मे कुन्तीक

कर्णसम्बन्धी स्वीकारोक्ति रक्तसम्बन्धक अधिकारकें राधा—अधिरथक पालनक जीवनसँ भिड़बैत अछि; आधुनिक कबीरक जन्म-पञ्जी आ पालनक गोपनीयताक प्रश्न संग तुलना सम्भव होइत अछि, मुदा दुनू जीवनक निष्कर्ष एक नहि बनैत।

उपन्यासमे तृतीयपुरुष कथन व्यापक अछि; तइयो दृष्टिस्थिति बेराबेरी सरिता, नैरा, तारा, रमा, रुहानी, महेश, मैथिली, शास्त्रार्थक पूर्वपक्षी आ अन्य पात्रक समीप सरकैत अछि। एहि पद्धतिकें अनेक स्वतन्त्र प्रथमपुरुष कथावाचकक उपन्यास कहब अशुद्ध होएत। उचित भेद ई अछि जे एक व्यापक कथनव्यवस्थाक भीतर अनेक अनुभवानिकट केन्द्र अछि। बाखिनक बहुस्वरिता एतय तखन सिद्ध होइत अछि जखन पात्रसभ लेखकक एकहि नैतिक वाक्यक प्रतिध्वनि बनबाक बदला वास्तविक असहमति राखि सकैत छथि। अध्याय १३१मे मीमांसक पूर्वपक्षी उदयनसँ जगतक कारणसम्बन्धी अनुमानक व्याप्ति पूछैत छथि; संवाद तत्काल 'एक पक्ष जीतल' कहि बन्द नहि होइत। अध्याय २१४मे कबीर नैराकें निर्दोष स्मारक-प्रतिमामे बदलबाक विरोध करैत छथि। एहन क्षणमे बहुस्वरिताक मूल्य स्पष्ट अछि।

रिकरक कथा-समयक दृष्टिसँ दैनिक पुनरावृत्ति—भात चढ़ब, पोखरि नापब, पर्ची सुरक्षित राखब—व्यापक ऐतिहासिक कालकें मानवीय समय बनबैत अछि। आपदा एकटा रातिक दुर्घटना मात्र नहि रहैत; ओकर कारण पहिनुक चेतावनीमे, ओकर परिणाम वर्षक बादक मजदूरी-पञ्जीमे, आ ओकर स्मृति घरक कोठरीमे रहि जाइत अछि। ई समय-विस्तार कथाक नैतिक आग्रहक मूल स्रोत अछि।

५. रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक भारतीय परीक्षण

भरतक रस-सिद्धान्तक आलोकमे 'करुण' एहि कादम्बरीक व्यापक स्थायी अनुभव बुझा पड़ैत अछि, किन्तु एकल रस घोषित करब पर्याप्त नहि। अध्याय ७०मे महेशक परिवारक भय, अध्याय १०८—१२१मे जलापदा, अध्याय १२३मे गान्धारीक मातृशोक, अध्याय १३०मे द्रौपदीक बचल दिन आ अध्याय २१४मे नैराक अनुपस्थितिक बोध करुणाकें अलग विभाव—अनुभाव दैत अछि। दोसर दिस अन्यायक विरोधमे उत्साह,

गवाहीक साहस, श्रमिकक सामूहिक निर्णय आ पाठशालाक प्रश्नमे वीररसक नैतिक आवेग सम्भव अछि। भयानकता अस्पतालक असुरक्षित पाँख आ धमकीक अनुभवमे उभरैत अछि। ‘शान्त’केँ पूर्ण समाधानक रूपमे नहि, असमाप्त शोकक बीच संयत जीवित रहबाक अभ्यास रूपेँ पढ़ब अधिक उचित अछि।

आनन्दवर्धनक ध्वनिसिद्धान्तक प्रयोग तखन सार्थक अछि जखन प्रत्यक्ष कथनसँ आगाँ अर्थक सङ्केत देखाओल जाए। प्रथम अध्यायक चूल्हा आ अन्तिम अध्यायक चूल्हा एके काजक पुनरावृत्ति अछि, मुदा अन्तमे थारी, एक दाना चाउर आ अनुपस्थित नैराक स्मृति पहिनुक ‘कागद बनाम देह’ विवादकेँ शोकक नव अर्थ दैत अछि। अध्याय २१४मे सरिता थारी धोइ सुखबैत छथि, मुदा ‘खाली जगह’केँ नव नाम नहि दैत छथि। ई रिक्ति केवल विवरण नहि; ओ कथाक अव्यक्त अर्थक वाहक अछि। तथापि प्रत्येक कागद, चूल्हा आ बूँदकेँ स्वतः प्रतीक मानब आलोचनात्मक अतिरेक होएत। किछु वस्तु श्रमक वास्तविक उपकरण मात्र सेहो अछि; ओकर प्रतीकत्व प्रसंगसँ सिद्ध होइत अछि।

कुन्तकक वक्रोक्तिक कसौटीपर अध्याय १क ‘मृतकक रसोइ’ शीर्षक अत्यन्त सार्थक अछि: मृत घोषित स्त्री स्वयं रान्हैत छथि। शब्दक अन्तर्विरोध कथा खोलैत अछि। अध्याय १५क ‘द्रौपदीक प्रश्न’ आधुनिक निजताक प्रश्नक रूपेँ प्रतिध्वनित होइत अछि; अध्याय २०५क ‘स्वर्गक सूची’ मृतकक सार्वजनिक सम्मान आ परिवारक अधिकारक बीच व्यङ्ग्यमय दूरी बनबैत अछि। ई केवल सुन्दर अलङ्कार नहि; नामकरणक प्रचलित अर्थक उलटफेर अछि।

क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचारसँ दृश्य, पात्र, वातावरण आ विचारक परस्पर उपयुक्तता जाँचल जा सकैत अछि। दार्शनिक तर्क जखन रसोइक मजदूरी, पुरान पन्नाक संशोधन अथवा नापक औजारक संग जुड़ैत अछि, तखन ओकर कथात्मक औचित्य बनैत अछि। मुदा सभ छोट सामाजिक प्रसंगकेँ तत्काल तर्कशास्त्रक दृष्टान्त बना देल जाए तँ अनुभवक स्वतन्त्र गहिराइ घटि सकैत अछि। एहि उपन्यासक कला अपने बनाएल अनुशासनसँ जखन मुक्त भऽ पात्रकेँ चुप रहबाक, क्रुद्ध होएबाक, व्यक्तिगत वस्तु नुकएबाक वा निर्णय टारबाक अवकाश दैत अछि, तखने अधिक सजीव होइत अछि।

६. भामती आ अध्यास : नाम, देह आ लेखकीय श्रेय

वाचस्पति मिश्रक ‘भामती’ अद्वैतवेदान्तक एक विशिष्ट व्याख्या-परम्परा अछि; ‘अध्यास’क शास्त्रीय आशय केवल सरकारी सूचीमे गलत नाम चढ़ब नहि, आत्मा—अनात्माक परस्पर आरोपसम्बन्धी गहन दार्शनिक प्रश्न अछि। उपन्यास एहि मूल प्रश्नकेँ आधुनिक पहिचानक नैतिक उपमान रूपेँ बरतैत अछि। जीवित सरिता मृतकक कोठरीमे, श्रम करनिहारी अनाम सेवाक कोठरीमे, आ ककरो जातीय-पेशागत नाम ओकर समस्त व्यक्तित्वक स्थानमे चढ़ि जाए—एहि प्रसंगसभमे ‘जे अछि’ आ ‘जे ओकरापर आरोपित कएल गेल’क अन्तर उजागर होइत अछि। ई अनुप्रयोग साहित्यिक समानता अछि, मूल अद्वैतसिद्धान्तक प्रत्यक्ष व्याख्यात्मक प्रतिस्थापन नहि।

उपन्यासक दार्शनिक सम्बन्ध-मानचित्र चतुःसूत्रीक चारि सूत्रकेँ अलग नैतिक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। ‘अथातो ब्रह्मजिज्ञासा’क समक्ष ‘प्रश्न पूछबाक अधिकार ककरा?’; ‘जन्माद्यस्य यतः’क समक्ष कारणक बहुस्तरीय खोज; ‘शास्त्रयोनित्वात्’क समक्ष पुस्तक, प्रमाण आ स्रोतक विश्वसनीयता; ‘तत्तु समन्वयात्’क समक्ष विरोधी वक्ताक कथनकेँ मिटौने बिना संग पढ़बाक अभ्यास। अध्याय ३२ ‘अथातो ककर’मे लिखब सीखैत बालक आ शास्त्रीय जिज्ञासाक प्रवेशक प्रश्न एक धरातलपर आबैत अछि। कथा मूल सूत्रक सर्वथा सामाजिक अनुवाद कऽ देबाक दावा नहि करैत; ओ पूछैत अछि जे ज्ञानक दुआर बन्द करनिहार संस्थाक अधिकार कतए धरि अछि।

अध्याय ८२मे मैथिली अपन हस्तलिखित संशोधनक पन्ना पहिल बेर अपन वाणीमे पढ़ैत छथि। ओ सार्वजनिक लेखकीय श्रेयक विवादकेँ कबीरक निजी जन्म-अभिलेखक प्रकाशनसँ अलग रखैत छथि। अध्याय ८४मे ईशान स्वीकार करैत छथि जे मूल विचार, संशोधनक ऐतिहासिक दायित्व आ छपल पुस्तकक धन्यवादसूची तीन अलग जाँच माँगैत अछि; तइयो हुनकर स्वीकारोक्तिसँ सरिताक तीन दिनक हिसाब वा मजदूरक बकाया स्वतः समाप्त नहि होइत। एहि ठाम ‘ज्ञान’क पूँजी आ ‘घरक काज’क अदृश्य आर्थिक आधारक सम्बन्ध पाठककेँ विचारबाक पड़ैत अछि।

अध्याय २१०मे ‘तत्तु समन्वयात्’क पढ़ाइमे मतभेदक पत्र अलग सुरक्षित रहैत अछि। सरिता स्पष्ट करैत छथि जे स्मारकमे मृत श्रमिकक नाम चढ़लासँ परिवारक बकाया नहि चुकैत। समन्वय अतः विरोधकें सजावटी रूपें मेटब नहि, परस्पर असंगत दावाक विषय, सीमा आ देय पहिचानब अछि। अध्याय २१३मे मैथिलीक पोथीपर सरिताक श्रमक सूची आ लेखकीय दोषक स्वीकृति छपैत अछि। मुदा पाठ आगाँ जोड़ैत अछि जे भुगतानक प्रश्न शेष अछि। ई भामती-विवेचनक सशक्त आधुनिक परिणाम अछि: सहलेखनक प्रतिपूर्ति केवल प्रशंसाक पाँति नहि, श्रमक वास्तविक मान्यता आ उत्तरदायित्वो चाहैत अछि।

७. न्यायकुसुमाञ्जलि : दृढ़ पूर्वपक्ष आ असमाप्त ईश्वर-विवाद

उदयनाचार्यक ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’कें उपन्यास पाँच स्तबकक तर्क-यात्रा रूपें ग्रहण करैत अछि। अदृष्ट आ कर्मफल, अनुष्ठानक स्वतन्त्रता, निषेधक प्रमाण, सर्वज्ञ वक्ताक प्रश्न तथा सकारात्मक ईश्वरानुमान—ई अलग-अलग चरण आधुनिक कारण-जाँचसँ संवाद करैत अछि। एहि ठाम विचारणीय बात ई नहि जे अस्पतालक दुर्घटनासँ ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध वा असिद्ध होइत अछि। कथा बारम्बार ओहि शॉर्टकटकें अस्वीकार करैत अछि। एकटा दार्शनिक निष्कर्ष आ एकटा प्रशासनिक दोष-निर्धारणक प्रमाण-विधि एक नहि होइत।

अध्याय ५४ ‘अनुष्ठान बिना प्रधान’मे सामूहिक भोजन बाँटबाक नियम आ उदयनक पूर्वपक्ष-दूटा कालधारा एकत्र पढ़ल जाइत अछि। मीमांसक आपत्ति पूछैत अछि जे वेदक प्रामाण्य यदि सर्वज्ञ वक्तापर निर्भर हो तँ तकर सर्वज्ञता कोन स्वतन्त्र प्रमाणसँ जाँचल जाएत; आ ईश्वरक परिचय फेर वेदसँ भेटत तँ परस्पर आश्रयक संकट बनत की नहि। आधुनिक आश्रयमे तख्ती कहैत अछि—मुख्य संयोजकक स्वीकृति अनिवार्य। रुखसाना तखन भोजनक तीन अलग स्रोतक हिसाब पूछैत छथि। ई समानान्तरता ‘प्रधान व्यक्ति अनावश्यक’क सरल राजनीतिक घोषणा नहि, दायित्व, स्रोत आ नियमक औचित्य जाँचबाक अवसर बनबैत अछि।

अध्याय १३९मे पूर्वपक्षी जगतक कारणसँ एकमात्र चेतन नियन्ताक अनुमानक व्याप्ति चुनौती दैत छथि: कुम्हारक घटसँ प्राप्त अनुभवकेँ सम्पूर्ण जगतपर कोना लागू कएल जाए? ई तर्कक असुविधाजनक सशक्तता लेखक बनौने रखैत छथि। विदेहपुरमे एकहि प्रसंगक काते गोमती आ रमा अलग-अलग फाइलमे आदेश, मौन, मजदूरी आ दायित्वक कारण जाँचैत छथि। साहित्यिक सेतु ‘कारण’ शब्द अछि, मुदा शास्त्रीय अनुमान आ विधिसम्मत जवाबदेहीक आधार अलग रहैत अछि।

अध्याय २११मे उदयन अपन प्रतिवादीक आपत्तिक प्रति सुरक्षित राखबाक लेल शिष्यक नकल-श्रमक दाम जोड़बाक कहैत छथि। विचारक संरक्षणक संग तर्क-विरोधीकेँ बोलबाक वास्तविक साधन प्रदान करबाक आग्रह उपन्यासक मौलिक नैतिक विस्तार अछि। एतय निष्पक्षता कोनो असम्भव स्वरहीनता नहि, अपितु पूर्वपक्षक उचित उपस्थिति, जाँचयोग्य प्रतिलिपि आ श्रमक मान्यता अछि। कोनो पक्षक अंतिम विजय घोषित नहि भेलापर सेहो शास्त्रार्थक महत्त्व कम नहि होइत; ओकर विधिगत शुचिता बढ़ैत अछि।

८. तत्त्वचिन्तामणि : प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आ प्रमाणक सीमा

गङ्गेश उपाध्यायक ‘तत्त्वचिन्तामणि’ न्यायपरम्परामे प्रमाणक सूक्ष्म विवेचन करैत अछि। उपन्यासक दार्शनिक मानचित्रमे प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक कथात्मक प्रयोग अलग देखाओल गेल अछि; ईश्वरानुमानपर विशेष विवाद सेहो अछि। आधुनिक कथामे एहि भेदक सभसँ महत्त्वपूर्ण परिणाम ई अछि जे पंजीमे लिखल शब्द, आँखिसँ देखल वस्तु, सुनल बयान, एकरासँ निकालल अनुमान आ सार्वजनिक अफवाह—सभ समान दर्जाक सूचना नहि अछि। प्रमाणक वर्गीकरण कथा-सुलझावक सुविधा मात्र नहि; पात्रक नैतिक आचरणक कसौटी अछि।

अध्याय २क ‘सत्ताइस नाम’मे नैराक लग छब्बीस नाम अछि; एकटा नामक अभावकेँ ओ स्पष्ट रूपेँ ‘प्रमाणक कमी’ लिखैत छथि, ‘कसूरक प्रमाण’ नहि। अध्याय ९मे तारा पुरान नक्शामे जलमार्गक रेखा भेटलापर ई नहि कहैत छथि जे मार्गक बन्द होएबाक

निश्चित दिन सिद्ध भऽ गेल। अध्याय ६८मे अदितिक मूल चेतावनी आ संक्षिप्त कार्यालयी सारांशक अन्तर जाँचल जाइत अछि; ओकरा बाद पुनर्निरीक्षण वास्तवमे भेल छल की नहि, ई तेसर प्रश्न रहैत अछि। नैरा चेतावनीक अस्तित्व, सारांशक कटौती आ दुर्घटनाक अन्तिम कारणक्रम तीन अलग स्तरपर राखैत छथि। ई विवेक नव्यन्यायक प्रमाण-शुचिता बुझबाक लेल कथात्मक रूपेँ अत्यन्त उपयुक्त अछि।

अध्याय ८८ ‘चौदह विसंगति’मे चौदह गलतीकेँ एक प्रकारक नाम-सुधार नहि मानल जाइत। सामाजिक वर्गीकरणक भूल, नामकेँ पेशामे बदलि देब आ धर्मक अनुमान मजदूरीसँ निकालब अलग अनर्थ अछि। उपमान—मिलैत चेहरा, मिलैत नाम वा समान काम—समान व्यक्ति वा समान धर्मक पर्याप्त आधार नहि। अध्याय १४७मे संकेत बनौने सहायक चिह्नक अर्थ बच्चासभसँ पुछबाक पद्दाक आग्रह स्मरणीय अछि: माध्यमक निर्माता अर्थक एकाधिकार नहि रखैत। ‘शब्द’क प्रामाण्य ककर अनुभवक विरुद्ध पहुँचैत अछि, ई प्रश्नो आवश्यक अछि।

अध्याय २०० ‘शब्दक अन्तिम जाँच’मे पद्दा चारि पट्टी पर ‘प्रत्यक्ष’, ‘श्रुत’, ‘अनुमान’ आ ‘कल्पना’ लिखैत छथि। ई चतुष्टय मूल न्यायग्रन्थक चारि प्रमाणक पर्याय नहि; विशेषत: ‘श्रुत’ आ ‘कल्पना’ आधुनिक अभिलेख-लेखनमे स्रोतक स्थिति सूचित करैत अछि। एहि भेदकेँ बुझने बिना पाठक अनजानेमे साहित्यिक वर्गीकरणकेँ शास्त्रीय प्रमाण-मीमांसाक स्थानमे रखि देताह। अध्याय २१२क ‘उदाहरण ककर जीवनसँ लेब?’ प्रश्न एकरा आरो पैघ बनबैत अछि। शास्त्रक उदाहरण चयन स्वयं सामाजिक जीवनक कोन अंशकेँ ज्ञानक योग्य मानल जाइत अछि, से निर्धारित करैत अछि। एहि दृष्टिसँ गङ्गेशक कथात्मक पुनर्पाठ बौद्धिक लोकतंत्रीकरणक प्रखर अवसर अछि।

९. अभिलेख, सत्ता आ ज्ञानगत अन्याय

मिरान्डा फ्रिंकर ज्ञानगत अन्यायक दू प्रमुख रूप चिन्हैत छथि: वक्ताक सामाजिक पहिचानक कारण गवाहीकेँ कम विश्वसनीय मानब आ अनुभवकेँ बुझबाक साझा भाषिक साधनक अभाव। उपन्यासमे एकर संग एकटा तेसर स्तर उभरैत अछि—

प्रशासनिक पञ्जी स्वयं जकरा नागरिक मानबाक चाही ओकरा नाम, देह, श्रम वा सम्बन्धकेँ गलत खानामे धकेलैत अछि। सरिताक मृतक-घोषणा, अनिताक गलत वर्गीकरण आ रोजीक धर्मक पेशासँ अनुमान एहि पीड़ाक अलग प्रतिरूप अछि। एहि उदाहरणसभमे ‘भूल’ एकरूप नहि: तकनीकी त्रुटि, संस्थागत असावधानी, सामाजिक रूढ़ि आ जानबूझि कएल कटौतीक नैतिक तथा प्रामाणिक स्थिति अलग-अलग जाँचबाक चाही।

अध्याय २०मे नैरा महेशक गवाही प्रकाशित करबाक हड़बड़ीमे नाम नहि लिखने रहितो कामक प्रकार, समय आ ठाम एहन जोड़ि दैत छथि जाहिसँ पहिचान उजागर होएबाक जोखिम बनैत अछि। अध्याय ७०मे महेशक घरक लोक पहिचान-उद्घाटनक परिणाम झेलैत छथि। अधिकारी कहैत छथि जे ‘नाम तँ नहि छपल’; पत्नी उत्तर दैत छथि जे घर, काम आ परिवारक इशारा छपल अछि। ई प्रसंग प्रेसक स्वतन्त्रता आ साक्षीक सुरक्षा बीच कठिन नैतिक सीमा देखबैत अछि। लेखक अपन खोजी नायिकाकेँ त्रुटिहीन न्याययोद्धा नहि बनबैत; सत्य प्रकाशित करबाक उत्साहो अनेकरा असुरक्षित कऽ सकैत अछि। अतः कथा नायकत्वक स्वसंशोधन माँगैत अछि।

मिशेल फूकोक संस्थागत ज्ञान-सत्ता विमर्शसँ पंजी, सूचीक खाना, अस्पतालक वर्गीकरण आ परीक्षणक प्रक्रियासभक सामाजिक प्रभाव देखल जा सकैत अछि। मुदा उपन्यासक अन्तर ई जे प्रत्येक अभिलेखकेँ केवल दमनक औजार नहि मानल गेल अछि। सटीक प्रमाणपत्र उपचार सुनिश्चित करैत अछि; श्रमक सही हिसाब भुगतानक आधार बनैत अछि; नामक गोपनीयता सुरक्षा दैत अछि। एकर राजनीतिक प्रश्न अछि— अभिलेख ककरा नियन्त्रित हाथमे, कोन स्पष्ट प्रक्रिया द्वारा, केकर सुधार-अधिकारसहित रहत? अध्याय २१५मे एक हाथमे सभ चाभी नहि देबाक निर्णय दस्तावेजीय सत्ता बाँटबाक ठोस प्रयोग अछि।

जाक देरिदाक अभिलेखसम्बन्धी चिन्तन स्मृति, अधिकार आ भविष्यक पाठकक जटिल सम्बन्ध उघारैत अछि। अध्याय २१४मे नैराक निजी फोनक सन्देश प्रकाशन लेल स्वतः उपलब्ध नहि होइत, जद्यपि सार्वजनिक स्मृति बनबाक आकांक्षा तीव्र अछि। अध्याय

२१५मे तीन प्राप्ति-प्रति तीन संरक्षक लग सुरक्षित होइत अछि; एकटा मूल दस्तावेजक अखण्डता आ सार्वजनिक पहुँच दुनू बचएबाक प्रयत्न चलैत अछि। ई अभिलेखक नायकत्व नहि, अभिलेखपर परामर्श, संशोधन आ सीमित अधिकारक संरचना अछि। कथाक भविष्य एखनुओ खुलल अछि, कारण नब पाठक प्रश्न पूछताह।

१०. स्त्रीक वाणी, देखभाल आ स्वत्व : एकाधिक स्त्रीवादी पाठ

एहि कादम्बरीमे स्त्री केवल शोक सहन करनिहारी वा संकटमे उद्धारक प्रतीक्षा करनिहारी नहि छथि। सरिता जीवनक प्रमाण आ चूल्हाक श्रमक हिसाब पुछैत छथि; नैरा पत्रकारिक साहसक संग आत्मसमालोचना करैत छथि; उर्मिला धुलाईक मजदूरी आ अस्पतालक कपड़ा-पञ्जी सुधारबाक प्रयत्न करैत छथि; तारा नापब, पुनर्जाँच आ ठेकेदारक दावाक जाँच अपन हाथमे लैत छथि; रुखसाना सामूहिक रसोइक आर्थिक तर्क सुनबैत छथि; रुहानी आश्रय देबाक अधिकारसँ नियन्त्रणक एकाधिकार दिस बढ़ि गेल अपन पुरान अभ्यास बदलैत छथि। स्त्रीक ई बहुरूपता 'स्त्री'केँ एकटा एकरूप पीड़ित वर्ग बना देबाक प्रवृत्तिकेँ चुनौती दैत अछि।

अध्याय १२३मे गान्धारीक शोक केवल राजपुत्रक पतनक कथा नहि; रणभूमिमे सत्तू आ नमकक पुड़िया खोजैत अनाम वृद्धाक पीड़ाक संग ओकरा जोडल गेल अछि। अध्याय १२४मे मन्दोदरी लङ्काक राजमहलमे शेष स्त्रीसभक बाहरी प्रवेश आ मृतकक असमान पहिचानपर प्रश्न करैत छथि। अध्याय १२५मे कुन्ती स्वीकार करैत छथि जे जन्म देलासँ कर्णक राधा-अधिरथक संग जिएल सम्पूर्ण जीवन हुनकर निज स्वामित्व नहि बनि जाइत। अध्याय १३०मे द्रौपदी अपन लेल छोट कटोरी भात मँगैत छथि। ई छोट निर्णय शोक आ अस्तित्वक संग बसबाक अधिकार देखबैत अछि। महाकाव्यक स्त्री पात्रसभकेँ युद्धक नैतिक टिप्पणीकार बनाकऽ छोड़ी नहि देल गेल; हुनका भोजन, देह, घर, स्मृति आ असहमतिक स्वायत्त उपस्थिति देल गेल अछि।

गायत्री स्पिवाकक प्रतिनिधित्वसम्बन्धी आलोचनासँ पुछल जा सकैत अछि: जकरा हकमे बोलल जा रहल अछि, ओकर अपन भाषणक स्थान कतए अछि? अध्याय १५मे

नैरा अनिताक ओरसँ तत्काल सार्वजनिक प्रदर्शन नहि करैत; अनिता तय करैत छथि जे पहिने लिखित प्रश्न राखल जाए, हुनकर नाम भीड़मे नहि पुकारल जाए। अध्याय १४३मे रुहानी बुझैत छथि जे संकटमे खोलल चाभी सँ आश्रितक राति आ देहपर शाश्वत अधिकार नहि प्राप्त होइत। अध्याय १५४मे चम्पा सार्वजनिक घाट देखबाक अधिकार आ अपन भीजल देहक चित्र प्रकाशित करबाक सहमति अलग करैत छथि। एहि तिहरी भेदमे स्त्रीवादी आलोचना रक्षा, प्रतिनिधित्व आ स्वामित्वक असमान अर्थकेँ ठोस बनबैत अछि।

तथापि सम्पूर्ण स्त्री-चरित्रक मुक्तिकथा समान गतिसँ विकसित नहि अछि। किछु पात्र विस्तृत जीवनक संग लौटैत छथि; किछु अपन सामुदायिक प्रतिनिधित्व वा पेशागत एक प्रश्नक माध्यम मात्र बनैत छथि। एतय आलोचककेँ स्त्रीक मात्र सङ्ख्या गनबाक बदला ओ निर्णय ककरा हाथ रहल, ओ अपन भूल स्वीकार कएलनि की नहि, आ ओ अपन असहमति कायम राखि सकलीह की नहि—एहि कसौटीपर प्रत्येक जीवन परखबाक चाही। उपन्यासक स्वर्णक्षण ओ अछि जतय मदद करनिहार व्यक्ति सेहो दोसरक स्वातन्त्र्यक आगे अपन अधिकार सीमित करैत अछि।

११. जाति, व्यवसाय आ १५७ वृत्त : विस्तारक उपलब्धि आ प्रतिनिधित्वक सीमा पाण्डुलिपिक ‘१५७ व्यवसाय-समुदाय’ सूचीमे बरही, डोम, कुम्हार, मलाह, जोलहा, पटवा, दर्जी, धुनिया, धोबि, लोहार, केवट, मुसहर, अनेक शिल्पी, कृषक, सेवा-समुदाय तथा अन्य वृत्तक पात्र-सङ्केत आ सम्बद्ध अध्याय देल अछि। सूची स्वयं चेतबैत अछि जे समुदाय वा व्यवसाय जन्मसँ पात्रक स्वभाव निर्धारित नहि करैत। एहि घोषणा आ कथा-दुनूकेँ एक संग पढ़ब आवश्यक अछि। विशाल पात्र-पुञ्ज मिथिलाक सामाजिक श्रम-विभाजनक स्मृति बनबैत अछि, किन्तु जाति-वृत्त आ व्यवसाय-वृत्त ऐतिहासिक रूपेँ एकार्थी नहि; नाम, स्थानीय पहचान, बदलैत जीविका आ व्यक्तिगत निर्णयक अन्तर पर ध्यान चाही।

अध्याय ९मे ललित अपन काठक खूँटा, अस्थायी घेराबन्दी आ नापीक मजदूरीकेँ केवल ‘सामूहिक पर्व’क नामपर निःशुल्क नहि करैत छथि। अध्याय ४३मे कसेरा, सोनार आ अन्य कारीगर अपन काजक बिल, वस्तुक स्वामित्व आ नमूनाक अलग दायित्व पर बल दैत छथि। अध्याय ५४मे रुखसाना भोजनक स्रोतक भेद पूछैत छथि; काज कएल स्त्रीक समय शून्य लिखबाक विरोध होइत अछि। अध्याय ८४मे मंगरी ईशानकेँ स्पष्ट कहैत छथि जे दार्शनिक भेद बुझा देबासँ हुनकर मजदूरीक दाम तय करबाक अधिकार नहि भेटैत। एहि दृश्यमे जाति-श्रमक चिन्तन आर्थिक श्रमक माप आ वक्ताक स्थितिक संग गुँथल अछि।

उपन्यास जाति-विरोधी विचारकेँ एकटा अमूर्त समानताक उद्घोषमे नहि रोकैत। अध्याय ७६क एकलव्य-सम्बन्धी पुनर्पाठमे पढ़बाक प्रवेश, विदेश पठाओल धन, महिलाक बचत आ फाटकक मार्ग जकाँ भिन्न अधिकारक तुलना अछि। अध्याय १४९मे जानकीक घुमन्तु दलपर बच्चा चोरीक झूठा आरोपक सार्वजनिक खण्डन तखनहुँ पर्याप्त नहि होइत जखन पुरान काटल दृश्य फेर प्रसारित होइत अछि। अध्याय १५१मे शम्बूकक पाठ कक्षाक फट्टापर दू प्रश्न बनि उभरैत अछि—‘के पढ़ि सकैत अछि?’ आ ‘के फैसला करैत अछि?’ ई प्रतिप्रश्न जाति-ज्ञानक असमान प्रवेशकेँ भक्ति अथवा नायकपूजाक सीमासँ बाहर लैत अछि।

एतय एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक आपत्ति सम्भव अछि। १५७ प्रविष्टिक पूर्वसूची कथाक भीतर प्रतिव्यक्ति समान विस्तृत मनोवैज्ञानिक जीवनक प्रमाण नहि देत। किछु प्रसंगमे पात्रक पहिल परिचय ओकर व्यवसाय आ सही रसीदक समस्या होइत अछि; ओकर प्रेम, भय, असंगत इच्छा, विलम्बित विकल्प वा निजी स्मृति अपेक्षाकृत कम खोलैत अछि। जँ प्रत्येक समुदायकेँ एक प्रतिनिधि आ एक अनिवार्य अधिकार-वाक्य मात्र देल जाए, तँ समावेशन फेर वर्गीकरणक दोसर रूप बनबाक जोखिम रहैत अछि। एहि उपन्यासक उत्कृष्ट प्रसंग एहन सामान्यीकरण तोड़ैत अछि—जखन यूसुफ अपन बेटाकेँ दोसर पेशा चुनबाक अवसर दैत छथि, जखन शकुन्तला नतिनीक शिक्षाक पक्षमे पुरान नियम बदलैत छथि, अथवा जखन मजदूरक दावा ओकर जातीय संकेतसँ स्वतन्त्र

प्रमाण चाहैत अछि। समावेशनक मूल्य उपस्थिति आ स्वतन्त्र कथात्मक जीवन—दूनूँ नापल जाएत।

१२. नदी, पोखरि, बाहा : पारिस्थितिक न्याय आ दीर्घकालिक हिंसा

आधुनिक विदेहपुरक भूगोल नदी, पोखरि, बाहा, बाढ़-सङ्केत, बाँसक नाप, नाली, जलनिकासी आ सामूहिक उराहिसँ बनल अछि। ई केवल प्रकृतिक मनोरम वर्णन नहि। जलमार्ग बन्द भेलापर ककर घरमे पानि चढ़त, अस्पतालक पाँखक आधार कतेक कमजोर होएत, गामक नावक सुरक्षित भार कतेक, पोखरिक पट्टा ककर प्रवेश रोकत—ई प्रश्न काज, वर्ग, जाति आ देहक जीवन-सुरक्षाकेँ एक ठाम आनैत अछि। पर्यावरण इहाँ मानवीय संस्थासँ बाहरक पृष्ठभूमि नहि, सामाजिक सम्बन्धक भौतिक शर्त अछि। अध्याय ९मे तारा घासक भीतर बन्द बाहाक ईंट देखैत छथि, मुदा ‘मुँह भेटल’सँ ‘बन्द होएबाक दिन’ सिद्ध नहि मानैत छथि। अध्याय ६८मे अदितिक मूल चेतावनीमे पुनर्निरीक्षणक स्पष्ट शर्त छूटि जएबाक परिणाम गम्भीर भऽ सकैत अछि, मुदा दोषक पूरा कारणक्रम जाँचबाक बाकी अछि। अध्याय १०८मे जलस्तर नापक लाल रेखासँ ऊपर उठि जाइत अछि; अध्याय १०९-१२०क बचाव-दृश्यसभ श्रम, साधनक असुरक्षा आ निर्णयक समय-सीमा दिखबैत अछि। रोब निक्सनक ‘मन्द हिंसा’ अवधारणासँ ई दीर्घ तैयारी-रहित क्षति बुझल जा सकैत अछि: दुर्घटना अचानक देखाइत अछि, मुदा ओकर परिस्थितिसभ दीर्घकालमे बनैत अछि। एहि विश्लेषणसँ तखनो ककरो विशिष्ट अपराधक स्वतः निष्कर्ष निकालब नहि चाही।

अध्याय १५४मे मत्स्यपट्टाक दस्तावेज पोखरिक सीढ़ी, पानि भरबाक अधिकार आ निजी चित्रक सहमतिक प्रतिस्थापन नहि बनि सकैत। अध्याय २१५मे २०४२क चैत्रमे सामूहिक उराहि पुनः शुरू होइत अछि। गोमती पहिने सुरक्षित पाट बनबाबय चाहैत छथि; हाजिरीमे नाम लिखबाक उत्सुकता खतरनाक काजक वस्तुगत आवश्यकताकेँ मेटा नहि सकैत। बच्चा दू टोपरी पाँक उठओने रहबाक दावा करैत अछि; गोमती श्रमक घटना मानैत छथि, मुदा बालकसँ असुरक्षित मजदूरी करएबाकेँ गलती कहैत छथि। एहि

एक दृश्यमे पर्यावरणीय पुनर्निर्माण, श्रमिकक श्रेय, बाल-अधिकार आ सुरक्षाक बीच द्वन्द्व मूर्त अछि।

अमिताव घोषक जलवायु-विमर्श आ दोरीन मैसीक स्थानसम्बन्धी विचारसँ उपन्यासक नदीक बहावकेँ ऐतिहासिक गतिशीलता रूपेँ पढ़ब सम्भव अछि। मुदा ई पाठमे कोनो वैश्विक जलवायु-परिवर्तनक विशेष वैज्ञानिक कारण सिद्ध भेल अछि—एहन दावा स्रोत-विरोधी होएत। कथामे जे देखल जा सकैत अछि, से स्थानीय ढाँचाक अपूर्ण माप, जलमार्गक अवरोध, स्मृति-नक्शाक अन्तर आ सार्वजनिक निर्णयक असमान अधिकार अछि। एहि प्रमाणिक सीमाक भीतर रहिते उपन्यासक पर्यावरणीय चेतना पर्याप्त तीक्ष्ण अछि।

१३. हिंसा, आपदा, शोक आ करुणाक अपूर्ण मुक्ति

त्रासदीक आलोचनामे ई भेद अत्यन्त आवश्यक अछि जे त्रासद घटनाक बाद कथा कोन प्रकारक ‘समाधान’ प्रस्तावित करैत अछि। एहि उपन्यासमे नैरा आ उर्मिलाक मृत्युसँ उत्पन्न पीड़ा प्रशासनिक संख्या-निर्धारण, दायित्वक जाँच, सहायता, उत्तरजीवीक जीवन आ स्मरणक अनेक काम आरम्भ करबैत अछि। मुदा एहि सभमे सँ कोनो कार्य मृतकेँ लौटबैत नहि। अध्याय १२१मे सरिता अपन पहिनुक झूठ मृत्यु-पञ्जी आ नैरा-उर्मिलाक सत्यापित सूचना अलग-अलग परीक्षण करैत छथि। ओ स्पष्ट मानैत छथि जे पहिल कागद झूठ छल, नव कागद सत्य; तइयो सत्यवाला कागद दुःख घटाबयवाला औषधि नहि। एहि कथनमे उपन्यासक शोकदर्शनक सार निहित अछि।

अध्याय १३२मे एकटा मृत्यु-सङ्ख्या सत्यापित भेलापर जाँच सम्पन्न नहि होइत। सहायता, चिकित्सकीय देखभाल, पारिश्रमिक, धार्मिक स्वैच्छिक सेवा आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व अलग खाता माँगैत अछि। रमा दू रङ्गक स्याही प्रयोग करैत छथि, मुदा सावधान करैत छथि जे असल भेद रङ्गमे नहि, अलग क्रमाङ्क, हस्ताक्षर आ स्रोतमे अछि। ई अंश त्रासदीक ‘संख्या’क अमानवीकरणकेँ उलटैत अछि: संख्या अनिवार्य अछि, मुदा ओ व्यक्ति, श्रम आ परिजनक निर्णयक पर्याय नहि।

अध्याय २१४मे नैराकैँ एकदम निर्मल सार्वजनिक प्रतिमा बनबएबाक प्रस्तावक विरोध स्वयं कबीर करैत छथि: नैरा बहस करैत छलीह, कखनो बात काटि दैत छलीह, हुनकर संग मतभेद सेहो छल। एहन स्मृति दुःखक अवमानना नहि, व्यक्तिक वास्तविक जटिलताक रक्षा अछि। उपन्यास मृत्युकैँ कथानकक पवित्र निष्कर्ष नहि बनबैत। नैराक कापी बन्द अछि, निजी फोनक सन्देश प्रकाशन लेल उपलब्ध नहि, आ खाली स्थान रिक्त रहबाक अधिकार रखैत अछि। रिकरक स्मृति-विचार एहि प्रसंगमे उपयोगी अछि, कारण विश्वसनीय स्मरण केवल नाम-संग्रह नहि; स्मृति, विस्मरण, न्याय आ गोपनीयताक कठिन सन्तुलन अछि।

भारतीय करुणारसक अनुभूति सहृदयकैँ दुःखक सार्वजनीन बोध दऽ सकैत अछि, मुदा एहि पाठमे एक अतिरिक्त नैतिक माँग अछि: पाठक रसोइक आंशिक रिक्ति देखि भावुक होथि, तइयो उर्मिलाक बकाया मजदूरी वा असुरक्षित अस्पतालक कारण-जाँच नहि बिसरथि। एहिसँ रस आ उत्तरदायित्व विरोधी नहि बनैत; काव्यानुभव जीवनक कार्यक प्रति सजग बनैत अछि। त्रासदीक सफल कला एतय आँसूक पूर्णता नहि, शोकक बादो अपूर्ण देयकैँ देखैत रहबाक साहस अछि।

१४. भाषा, संवाद आ रोजमर्रा वस्तुक आख्यानशक्ति

मैथिली कथनभाषाक सभसँ ध्यानयोग्य विशेषता ई अछि जे विशाल दार्शनिक प्रश्न ओकरा सामान्य घरेलू क्रियासँ अलग नहि करैत। सरिता चाउर छाँटैत, तारा बाँस गाड़ैत, रुखसाना भाँड़ धोइत, गान्धारी फाटल सीवन टोहैत, द्रौपदी भातक कटोरी मँगैत, पद्मा काठक पट्टीपर शब्द लिखैत छथि। ओहि सामान्य क्रियासँ सोचक मार्ग खुलैत अछि। एहि कारण उपन्यासक सर्वाधिक स्मरणीय वाक्य अनेक बेर कठिन शास्त्रीय पद नहि, अनुभवसँ निकसल संवाद होइत अछि। ‘नाम सँ पहिचानक शुरुआत होइत अछि, अन्त नहि’ (अध्याय ६१) वा ‘जकर पयर फँसत ओकर नाम लिखलासँ पयर नहि बाँचत’ (अध्याय २१५) भाषिक सादगीक भीतर सामाजिक आलोचना संचित करैत अछि।

कथाकार वस्तुक नाममे विशिष्टता रखैत छथि—पीतरक डिब्बा, कपड़ाक किनार, गोदामक चालान, माटिक घैला, बाँसक खूँटी, थारीक तली, स्याहीक दाग, आधा खुजल दरबज्जा। एही वस्तुसभक आवागमन अध्यायक बीच दृष्टिगत लय बनबैत अछि। श्वलोव्स्कीक अपरिचयीकरणक अवधारणासँ एकर किछु अंश पढ़ल जा सकैत अछि: परिचित भातक हाँड़ी अचानक प्रशासनिक ‘मृत्यु’क असम्भव दावाकें उधारैत अछि। तथापि वस्तुकें अलौकिक बनाउब एहि उपन्यासक आवश्यक शर्त नहि; वस्तुक वास्तविक उपयोग आ ओकर सांकेतिक क्षमता एक साथ रहैत अछि।

दुइ तरहक वाक्यरचना विशेष ध्यान खींचैत अछि। पहिल, निरीक्षणात्मक वाक्य—कोन कागद कतय छल, के मापलक, कतेक प्रमाण शेष। दोसर, निर्णयक क्षणमे प्रश्नवाचक वाक्य—के बोलत, के लिखत, ककर अनुमति, ककर दाम? एहि प्रवृत्तिसँ पाठक निष्कर्षक निष्क्रिय उपभोक्ता नहि रहैत; ओ लेखकक प्रस्तुत भेद पुनः जाँचबाक हेतु आमन्त्रित होइत अछि। किन्तु लगातार ‘ई अलग, ओ अलग’ शैली कथानकक भाषिक पुनरावृत्तिक जोखिम सेहो पैदा करैत अछि। जखन प्रत्येक दृश्य तुरन्त नैतिक सार-वाक्यपर समाप्त होइत अछि, तखन वक्रता आ अव्यक्त अर्थक खुलल ठाउँ कनेक कम भऽ सकैत अछि।

एकटा अनिवार्य सम्पादकीय सावधानी सेहो अछि। व्याकरणगत मानकक नामपर पात्रक जीवित बोलचाल, पेशागत शब्दावली वा स्थानिक उच्चारणकें अनावश्यक रूपेँ एकरूप करब उपन्यासक सामाजिक वाणी कमजोर करत। साहित्यिक मैथिलीमे सम्मानसूचकता, संवादक सामाजिक दूरी, लोक-क्रियाक ध्वनि आ शास्त्रीय पदक सटीक प्रयोग—ई सभ संगहि रहि सकैत अछि। एहि कादम्बरीक आलोचनामे भाषाक ‘शुद्धता’क अर्थ ओकर आन्तरिक औचित्य, अर्थक स्पष्टता आ पात्रानुकूल भेद सुरक्षित राखब होएबाक चाही, न कि सर्वत्र एकटा निर्जीव रजिस्टर लादब।

१५. कथा-प्रकार : यथार्थवाद, उत्तराधुनिक विन्यास अथवा जादुई यथार्थवाद?

एहि उपन्यासक रचना-विन्यास ऐतिहासिक महाकाव्य, सामाजिक यथार्थ, शास्त्रार्थ, दस्तावेजीय खोज आ आत्मविवेचनक अनेक परत जोड़ैत अछि। एकरा मात्र ‘ऐतिहासिक उपन्यास’ कहला सँ आधुनिक अस्पताल, अभिलेख आ प्रवासी जीवनक जटिलता छूटि जाएत। केवल ‘सामाजिक समस्या उपन्यास’ कहला सँ रामायण—महाभारत—नव्यन्यायक रचनात्मक कालधारा दबि जाएत। उत्तराधुनिक अन्तर्पाठ्यता, बहु-समय आ स्वपरीक्षणक औजार एहि संरचनाकेँ बुझएबाक काज करैत अछि, मुदा एहि शब्दसभक प्रयोग एकर यथार्थवादी नैतिक आग्रह मेटएबाक अधिकार नहि दैत।

‘जादुई यथार्थवाद’ पद एहि पाठमे सावधानीसँ लागू करबाक चाही। प्राचीन कालक पात्रक स्वतन्त्र अध्याय, आधुनिक दृश्य लग समानान्तर तर्क अथवा शास्त्रार्थक सजीव पुनर्रचना अपन आपमे अलौकिक घटना नहि अछि। वेंडी फारिस जादुई यथार्थवादमे असम्भव घटना आ यथार्थक सहअस्तित्व पर ध्यान दैत छथि। एहि उपन्यासमे दृश्यसभ अक्सर अपना-अपना कालधारामे पहचानल जा सकैत अछि; असम्भवकेँ प्रत्यक्ष यथार्थ मानबाक बाध्यता सभ ठाम नहि भेटैत। अधिक सटीक वर्णन ‘महाकाव्यीय अन्तर्पाठसहित बहुकालिक सामाजिक—दार्शनिक आख्यान’ भऽ सकैत अछि। जँ विशिष्ट अध्यायमे यथार्थक नियम तोड़ैत असाधारण घटना प्रमाणित भेटय, तखन जादुई यथार्थवादक दावा दृढ़ कएल जा सकैत अछि; केवल शीर्षकक आधारपर नहि।

पाश्चात्य उपन्यास-परम्परामे लूकाचक समष्टिगत यथार्थक प्रश्न एहि ग्रन्थसँ संवाद करैत अछि: व्यक्तिक दुःख सामाजिक संस्थाक सम्बन्धविहीन बुझल नहि जा सकैत। तथापि एकटा पूर्ण व्यवस्थाक कथात्मक चित्र बनएबाक इच्छा पात्रक सजीव अव्यवस्थाकेँ दबा सकैत अछि। ई तनाव एहि उपन्यासक रूप-राजनीतिक मूल समस्या अछि—विस्तार कतेक धरि अनुभवक विविधता बचबैत अछि, आ कोन बिन्दुपर काज-विभाजनक सूची साहित्यिक जीवनक स्थान लेबए लगैत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर ग्रन्थक सर्वत्र एक समान नहि अछि।

१६. देखल-सुनल-लिखल : पत्रकारिता, निजता आ सार्वजनिक न्याय

ई कादम्बरी समकालीन डिजिटल सूचना-प्रवाहक उपन्यास सेहो अछि। फोटो, फोन, काटल वीडियो, सार्वजनिक प्रेषण, नाम-मिलान, अभिलेखक प्रतिलिपि आ संशोधनक इतिहास कथानकक साधन अछि। अध्याय ११मे संकेतक फोनपर अधिकारक प्रश्न आरम्भ होइत अछि; अध्याय १५मे ओ नैरासँ पूछैत अछि जे तस्वीर बिना ओकर कथन सुनल जाएत की नहि। नैरा उत्तर दैत छथि जे सुनब, देखब आ जाँचब अलग कार्य अछि, आ संकेतक इच्छा बिना ओकर तस्वीर नहि देखतीह। बालकक साधारण निर्णय एहि प्रसंगमे विचारक मूल नैतिक मापदण्ड बनैत अछि।

अध्याय २०क जल्दबाजी नैराकेँ नायकक स्थानसँ आलोचनाक विषय बनबैत अछि। प्रमाणित सार्वजनिक हित आ अनाम साक्षीक पुनःपहिचानक जोखिम बीच अन्तर नहि रखल गेल तँ सत्य-प्रकाशन स्वयं अन्यायक माध्यम बनि सकैत अछि। अध्याय ७०मे महेशक पत्नी एहि हिंसाकेँ फाइलक भाषासँ बेसी स्पष्ट चिन्हबैत छथि। जे नाम प्रकाशित नहि, तकर पहिचान स्थान, काम, समय आ सम्बन्ध जोड़ि उजागर होएब सम्भव अछि। कथा पत्रकारिक नैतिकताकेँ ‘सत्य छापू’ बनाम ‘नहि छापू’क द्वैतमे नहि राखैत; ओ पूछैत अछि जे केकर सत्य, कोन सुरक्षा, कतेक समय, कोन अनुमति, आ सुधारक दायित्व?

अध्याय १४९मे जानकीक दलपर पुरान आरोपक काटल वीडियो नव शीर्षकसहित फेर घूमैत अछि। एक बेर सार्वजनिक खण्डन भेला मात्रसँ दुष्प्रचार नष्ट नहि होइत। जानकी प्रतिशोधक अनन्त मौखिक झगड़ामे नहि पड़ि संदेशक समय, प्रेषक आ प्रति सुरक्षित करैत छथि। एहि कथात्मक निर्णयमे व्यक्ति अपन सार्वजनिक छवि पर नियंत्रण प्राप्त करबाक एक प्रक्रिया अपनबैत अछि, यद्यपि हिंसात्मक सामाजिक स्मृति तत्काल समाप्त नहि होइत।

अध्याय २००मे चारि सूचना-स्तरक वर्गीकरण आ अध्याय २१५मे प्रतिलिपिक वितरित संरक्षण मिलिकऽ उपन्यासक पत्रकारिक नैतिक संहिता जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। तइयो कला सावधान करैत अछि जे एकटा भरोसेमन्द वर्गीकरण-पद्धति अपन आपमे

सत्यनिष्ठ जीवनक समकक्ष नहि। कखनो जानल बातो निजताक कारण नहि छापल जाएत, आ कखनो अभिलेखमे सत्यापित नामो परिवारक अनुमति बिना स्मारकक सार्वजनिक पट्टीपर नहि चढ़त। सत्य, न्याय आ प्रकाशन तीनूकेँ पृथक् औचित्य चाही।

१७. समापनक नैतिक संरचना : वितरित सत्ता आ शेष रहैत प्रश्न

अध्याय २०५सँ २१६ धरि कथाक दार्शनिक चर्चा पुनः खुलैत अछि। जनमेजयक प्रश्न आ उग्रश्रवाक श्रोता कथनक परम्परा पर विचार करबैत छथि; लव-कुशक पाठ कथाक प्रसारणक अधिकार पूछैत अछि; भामती, उदयन आ गङ्गेशक पाठ खुलल पाठशालामे पहुँचि ते ज्ञानक पुरान अधिकार-ढाँचा पुनर्परीक्षित होइत अछि। अध्याय २१३मे मैथिली अपन दोष-सहित लेखकीय नाम प्रकाशित करैत छथि। अध्याय २१४मे नैराक व्यक्तिगत शोक सार्वजनिक स्मारकीकरणक दबावक प्रतिरोध करैत अछि। एहि क्रममे निष्कर्ष स्वयं नव आरम्भक शर्त बनैत अछि।

अध्याय २१५ ‘वितरित अभिलेख’मे सामूहिक पोखरि-उराहिक चौठ बेर शुरू होएब शासकीय पुनर्निर्माणक आवर्तन अछि, परिपूर्ण विजय नहि। गोमती कहैत छथि जे फँसल पयरकेँ सूचीमे नाम लिखलासँ नहि बचाओल जा सकैत। कागद आ वस्तुगत सुरक्षा दोसर-दोसर कार्य अछि; दूनूक आवश्यकता अछि। जखन रमा तीन संरक्षकक लग तीन प्रति सुरक्षित करैत छथि, तखन ज्ञान पर एकाधिकारक विरोध प्रशासनिक पद्धतिमे आकार ग्रहण करैत अछि। मुदा मूल पञ्जीक अपूर्ण जाँच, बकाया मजदूरी, सरिताक रोकल देय आ भविष्यक दुरुपयोगक आशंका शेष अछि। समापन वस्तुस्थिति पर पर्दा नहि खींचैत।

अध्याय २१६मे बालिका पूछैत अछि जे पाठशाला काल्हि खुलत की नहि; बच्चासभ नव अलमारीक चाभी देखबए चाहैत अछि। उत्तर भेटैत अछि जे सभ चाभी एक ठाम नहि अछि, आ दायित्वक नाम आ दोसर प्रति कतय अछि, से सीखल जाएत। ई दृश्य महाकाव्यक ‘स्वर्गारोहण’क उल्लेखनीय नव पाठ अछि: स्वर्ग एक अन्तिम छुटकारा नहि, काल्हि खुलबाक सार्वजनिक दुआरक सम्भावना अछि। सरिता भात परोसैत छथि;

नैराक खाली स्थान एखन खाली अछि। न्याय पूर्ण भेल नहि, मुदा ओकरा प्रश्न पूछबाक संस्था कनेक अधिक बाँटल गेल अछि।

अस्तित्ववादी दृष्टिसँ ई उपन्यास शोकसँ मुक्त मनुष्यक स्वप्न नहि गढ़ैत; ओ बाधित जीवनक भीतर विकल्पक छोटे अवसर खोजैत अछि। नैराक मृत्युकें कहानी बचा नहि सकैत; किन्तु ओकर अनुपस्थितिकें असत्य अर्थ भरि उपभोग करबाक विरुद्ध पात्रसभ प्रतिरोध कऽ सकैत छथि। एहि कारण शीर्षकक अन्तर्मन निजी उद्धारक गुहा नहि, अपूर्ण संसारक संग नीक निर्णय लेबाक एकटा सतत् साधना बनि जाइत अछि।

१८. प्रतिवाद, शिल्पगत सीमा आ मूल्याङ्कन

कोनो वृहत् महाग्रन्थक समालोचना केवल ओकर उद्देश्यक प्रशंसा नहि भऽ सकैत। पहिल सीमा रचनाक बारम्बार व्याख्यात्मक प्रवृत्ति अछि। कागदक भेद, अधिकारक सीमा, अनुमतिक नियम आ तर्कक विभिन्न स्तर अनेक बेर पात्र स्वयं स्पष्ट कऽ दैत छथि। एकर लाभ ई जे कथाक नैतिक अस्पष्टता विनाशकारी अफवाहमे नहि बदलैत; हानि ई जे पाठकक स्वतन्त्र अर्थान्वेषण किछु दृश्यक अन्तमे संकुचित भऽ सकैत अछि। करुणा अथवा ध्वनिक उभार अनेक बेर तखन तेज होइत अछि जखन कथा अपन सिद्धान्त कहबाक बदला दृश्यकें जीवित छोड़ि दैत अछि।

दोसर सीमा समष्टि आ व्यक्ति बीचक अनुपात अछि। १५७ व्यवसाय-समुदाय आ २१६ अध्यायक सूची ऐतिहासिक जनजीवनक पैघ परिसरक आकांक्षा देखबैत अछि। मुदा ‘सूचीमे उपस्थिति’ आ ‘कथामे पूर्ण स्वायत्त चरित्र’ एक नहि। विशेषतः कोनो व्यक्ति जँ एकहि बार अपन पेशागत विवरणक प्रमाण बनि उभरि विलीन भऽ जाइत अछि, तँ पाठक ओकर सम्बन्धक दीर्घ विकास नहि देखि पबैत। समालोचककें एहि सीमा स्वीकार करितो ई देखबाक चाही जे एहि उपन्यासक अनेक जीवनक पुनरावर्तन एके व्यक्ति पर निर्णायक बदलैत बोझ दैत अछि। सरिता, नैरा, रुहानी, तारा, मैथिली, उर्मिला आ कबीरक प्रसंग एहि दृष्टिसँ अपेक्षाकृत गहिर अछि।

तेसर प्रश्न कथा-कालक सन्धिसभसँ जुड़ल अछि। प्राचीन शास्त्रार्थक बाद आधुनिक कार्यालयक प्रसंग आएब पाठककेँ फलदायक तुलना दैत अछि, मुदा अति-नियमित समानान्तरता दर्शनक स्वतन्त्र जटिलता कम करि सकैत अछि। अध्याय ५४ आ १३९ एहि जोखिमसँ बचैत छथि, कारण पूर्वपक्ष स्वतन्त्र रूपेँ सशक्त अछि; अध्याय २११मे विरोधी पाण्डुलिपिक नकल-श्रमक दाम निर्धारित करब तर्क-विधिक गम्भीरता बढ़बैत अछि। जखन दार्शनिक बहसक निष्कर्ष पहिनेसँ आधुनिक पाठकक अपेक्षित नैतिक वाक्यक अनुसार व्यवस्थित लगैत अछि, तखन ऐतिहासिक विमर्शक खुलल प्रश्न सीमित पड़ि सकैत अछि।

चारिम प्रश्न नीतिपरक कथनक कलात्मक परिणाम अछि। उपन्यास बारम्बार सही प्रक्रिया, सहमति, स्रोत-जाँच, क्षतिपूर्तिक अधूरापन आ सामूहिक अधिकारक पक्ष लैत अछि। एहि मूल्य-व्यवस्थामे आन्तरिक संगति अछि; तथापि जटिल चरित्रक इच्छा हरदम नैतिक रूपेँ व्यवस्थित नहि होइत। महेशक भय, सरिताक शोक, कबीरक आंशिक असहमति, द्रौपदीक छोट भूख, शास्त्रार्थक तीक्ष्ण विरोध—ई सभ प्रसंग उपन्यासकेँ घोषणापत्र बनबासँ बचबैत अछि। अतः ओकर सर्वाधिक ठोस उपलब्धि विचारक संख्या नहि, विचारक कारण पात्रकेँ देबए पड़ल जीवनमूल्य अछि।

१९. सिद्धान्तसभक तुलनात्मक निष्कर्ष

रससिद्धान्त पूछैत अछि—कथाक दृश्य पाठकमे कोन अनुभूति जाग्रत करैत अछि? ध्वनि पूछैत अछि—प्रत्यक्ष कथनसँ बेसी कोन अव्यक्त अर्थ टिकैत अछि? औचित्य पूछैत अछि—दृश्य, भाषा आ विचार कथाक सम्बन्धमे उपयुक्त अछि की नहि? न्याय पूछैत अछि—एहि दावाक प्रमाण की, अनुमानक व्याप्ति कतेक, आ कोन हेत्वाभास सम्भव अछि? भामतीक पाठ पूछैत अछि—जे देखाइत अछि ताहिपर कोन गलत आरोप भेल अछि, आ जिज्ञासाक प्रवेश ककरा भेटैत अछि? बाख्तिन पूछैत छथि—विरोधी आवाज अपन वास्तविक अधिकार राखैत अछि की केवल लेखकक निर्णयक आडम्बर अछि? जेनेत पूछैत छथि—कालक्रम, कथनक्रम आ दृष्टिस्थिति कोना परिणाम बदलैत अछि? फ्रिंकर आ स्पिंवाक पूछैत छथि—ककर गवाही विश्वसनीय कहल जाइत अछि

आ कोन प्रतिनिधि दोसरक आवाज हरण करैत अछि? निक्सन पूछैत छथि—दृश्य आपदाक पाछाँ अदृश्य लम्बा क्षति कतय जमैत अछि?

एहि प्रश्नसभकेँ एक-एक करि ग्रन्थपर प्रयोग कएलासँ स्पष्ट होइत अछि जे कोनो एक सिद्धान्त सम्पूर्ण कादम्बरीक चाभी नहि। न्याय कथाक अभिलेखीय अनुशासन समझा सकैत अछि, मुदा नैराक मृत्युजनित शोकक पूर्ण माप नहि। रस करुणाक अनुभव उघारैत अछि, मुदा अस्पतालक खर्च-पत्रक विधिक जाँच नहि। बहुस्वरिता असहमतिपर प्रकाश दैत अछि, मुदा नाप-डण्डाक भौतिक शुद्धताक जाँचक स्थान नहि लेत। पर्यावरणीय आलोचना पोखरिक सामुदायिक सम्बन्ध देखैत अछि, मुदा निजी फोनक चित्र प्रकाशित करबाक सहमतिक पूरा उत्तर नहि। एही अपर्याप्ततासभक बीच बहुपद्धतिमूलक अध्ययन सर्वाधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

उपन्यासक केन्द्रीय नैतिक खोज एहि विश्लेषणसँ चारि सूत्रमे उद्घाटित होइत अछि। प्रथम, ‘नाम’ व्यक्ति नहि; हुनकर देह, निर्णय आ जीवन पंजीसँ पैघ अछि। द्वितीय, ‘ज्ञान’ केवल विद्वानक कथन नहि; शिष्य, लेखिका, अनाम रसोइन, नापी करनिहार आ साक्षी सभक श्रमसँ निर्मित अछि। तृतीय, ‘सत्य’ स्वयं सुरक्षा, सहमति आ उत्तरदायित्वक स्थानापन्न नहि। चतुर्थ, ‘न्याय’ मृतककेँ फेर जीवित नहि करैत, मुदा जीवित लोकक बोलबाक अधिकार आ भविष्यक गलतीकेँ जाँचबाक बाट सुरक्षित कऽ सकैत अछि। ई चारू सूत्र कथाक आरम्भ, मध्य आ समापनमे अलग रूपेँ प्रमाणित अछि।

उपसंहार : ‘अन्तर्मन’क खुलल सार्वजनिक दुआर

‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’क साहित्यिक महत्त्व किछु पैघ संख्यामे समाहित नहि होइत, यद्यपि २१६ अध्याय, अठारह पर्व, सात काण्ड आ १५७ व्यवसायवृत्त ओकर असाधारण संरचनात्मक आकांक्षा देखबैत अछि। एकर वास्तविक मौलिकता महाकाव्यक युद्धकेँ कागदक असत्य, श्रमिकक अनाम समय, स्त्रीक प्रकाशन-सहमति, बाढ़क पहिनुक चेतावनी आ शोकक बादक अधूर जीवनक रूपमे पुनर्सृजित करब अछि। रामायण आ महाभारतक प्राचीन पात्र आधुनिक मनुष्यक सरल समतुल्य नहि बनैत; हुनकर प्रश्न

वर्तमानक संस्थागत निर्णयकें नव कोणसँ उजागर करैत अछि। भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणि शास्त्रीय आभूषण नहि, कथामे तर्कक सीमा जाँचबाक कठिन संसाधन बनबाक प्रयत्न करैत अछि।

एहि प्रयासक सफलताकें पूर्ण वा निर्विवाद कहब सेहो अशुद्ध होएत। कतहु संरचनाक परिमाण पात्रक स्वतन्त्र विकाससँ पैघ अछि; कतहु आलोचनात्मक वाक्य दृश्यपर भारी पड़ैत अछि। मुदा ई सीमा उपन्यासक मौलिक प्रश्नक महत्त्व घटबैत नहि: न्याय केवल निर्णयक घोषणा नहि, निर्णयक प्रमाण, दाम, सहमति, पुनर्विचार आ भविष्यक खुलल दुआर अछि। सरिताक घरमे झूठ मृत्यु-सूचनासँ शुरू भेल कथा अन्तमे सत्य मृत्युकें अपरिवर्तनीय मानि भात परसैत हाथपर टिकैत अछि। जे बचल अछि से जीवनक काज; जे नहि बचल से स्मृतिक सत्य; आ जे एखन खुलल अछि से प्रश्न पूछबाक अधिकार। एहि अर्थमे ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’ आधुनिक मैथिली कथासाहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण, विवादयोग्य आ गम्भीर अध्ययनक योग्य वृहत् आख्यान अछि।

परिशिष्ट : अठारह पर्वक संक्षिप्त परीक्षण-मानचित्र

एहि मानचित्रमे प्रत्येक पर्वक बारह अध्यायक समग्र भूमिका, एक-दूटा प्रतिनिधि दृश्य आ ओकर आलोचनात्मक प्रश्न संगहि राखल गेल अछि। एकरा पात्रक पूर्ण कथासार नहि, निकटपाठक लेल मार्गनिर्देश मानल जाए।

पर्व १—आदि (अध्याय १—१२)। ‘मृतकक रसोई’ आ ‘सत्ताइस नाम’ अभिलेखीय असत्य, जीवित देह आ अपूर्ण स्रोतक पहिल समस्या ठाढ़ करैत अछि। ‘बन्द बाहा’मे नाप-डण्डा बतबैत अछि जे नक्शाक रेखा आ वास्तविक जलप्रवाह एक नहि। आरम्भक बोध ई जे प्रत्येक पञ्जी मनुष्यक जीवनक एकटा सीमित व्याख्या अछि, सम्पूर्ण जीवन नहि।

पर्व २—सभा (अध्याय १३—२४)। ‘द्रौपदीक प्रश्न’, ‘विकर्णक बादक मौन’, ‘उर्मिलाक राति’ आ ‘जल्दी प्रकाशन’क बीच सार्वजनिक अपमान, निजता आ साक्षीक सुरक्षा

जुडैत अछि। नैराक हड़बड़ी नायकक प्रमाणभ्रमक रूपमे देखल जा सकैत अछि; प्रतिनिधित्वक अधिकार व्यक्तिक स्वीकृति बिना पूरा नहि होइत।

पर्व ३—वन (अध्याय २५-३६)। गुह, शबरी, अहल्या आ एकलव्यक पुनर्पाठ शिक्षा, जंगल, आश्रय आ समाजक किनारपर रहनिहार लोकक ज्ञानकेँ आगोँ अनैत अछि। ‘अथातो ककर’ प्रश्न शास्त्रीय जिज्ञासाक दुआर सामान्य विद्यार्थी लेल खोलबाक प्रतिज्ञा बनैत अछि। एकर परीक्षा प्रवेशक वास्तविक साधन आ श्रमक मान्यता अछि।

पर्व ४—विराट (अध्याय ३७-४८)। ‘रान्हनिहारक नाम’, ‘ताँतीक देय’, ‘कपड़ा पंजी’, ‘माटिक भविष्य’, ‘कसेरा आ सोनार’ आ ‘लोहारक औजार’ श्रमक बहुवचनता प्रत्यक्ष करैत अछि। एतय छद्मपरिचयक महाकाव्यीय स्मृति आधुनिक जीवनमे ओहि काजक अनामपन बनि उठैत अछि जे बिना मजदूरक नामक सम्पन्न कहल जाइत अछि।

पर्व ५—उद्योग (अध्याय ४९-६०)। ‘सहयोगक दाम’, ‘अनुष्ठान बिना प्रधान’ आ ‘पहिल सन्धि टूटल’ सहकारकेँ स्वाभाविक सद्भाव नहि, अलग हित, देय आ असहमतिक कठिन सन्धि मानैत अछि। उदयनक पूर्वपक्ष आ आश्रयक भोजन-नियम एक संग पढ़लापर प्रश्न उठैत अछि—ककर अधिकार वैध, आ नियमक मूल प्रमाण की?

पर्व ६—भीष्म (अध्याय ६१-७२)। गङ्गाक शर्त, भीष्मक प्रतिज्ञा, अस्पतालक पुरान पाँख आ महेशक रातिक कथाक बीच वचनक मूल्य परिणामक आधारपर जाँचल जाइत अछि। अदितिक चेतावनीक संक्षेपण आ महेशक असुरक्षा दिखबैत अछि जे समयपर कहल सत्यक अपूर्ण ग्रहण स्वयं हिंसाक भूमि बना सकैत अछि; तइयो अंतिम दोष अलग जाँच चाहैत अछि।

पर्व ७—द्रोण (अध्याय ७३-८४)। नावक क्षमतासँ शुरू भऽ ‘एकलव्यक बाद’, ‘मैथिलीक पन्ना’ आ ‘गुरुक स्वीकार’ धरि कथा गुरु, विद्यार्थी, मजदूर आ लेखिका बीच श्रेयक दावाक नव मानचित्र बनबैत अछि। विद्वत्ता यदि मजदूरक देय नकरैत अछि तँ ओकर आन्तरिक सत्यो संस्थागत अन्याय रोकि नहि सकैत।

पर्व ८—कर्ण (अध्याय ८५-९६)। राधाक श्रम, जन्म-पालनक अन्तर, चौदह विसंगति आ सत्ताइस नामक मिलान सामुदायिक पहिचानक जटिलता उघारैत अछि। एक नामक अनुपस्थिति, एक रसीदक विसंगति आ एक निजी जन्मपञ्जीक प्रश्नकेँ एकहि रहस्यक सोझा उत्तरमे मिला देबाक लोभक विरोध एहि पर्वक आलोचनात्मक सार अछि।

पर्व ९—शल्य (अध्याय ९७-१०८)। ‘शल्यक निष्ठा’ आ ‘जलस्तरक बाहर’क बीच सहमति, कारणक जाल, पुलक परीक्षण आ बढ़ैत पानिक दबाव कथा-गतिकेँ प्रबल करैत अछि। ई पर्व जाँचैत अछि जे सदृच्छा बिना वास्तविक माप आ आपात व्यवस्थाक कोन सीमा धरि पर्याप्त भऽ सकैत अछि।

पर्व १०—सौप्तिक (अध्याय १०९-१२०)। ‘गोदाम खुलल’, ‘अश्वत्थामाक राति’, ‘दवाइ आ बचल श्वास’ तथा ‘उर्मिलाक थाकल हाथ’ विपत्तिक समय निर्णयक अपरिवर्तनीय दाम देखबैत अछि। ‘आश्वासन’ आ ‘प्राप्त सेवा’क बीचक दूरी असुरक्षित ढाँचामे देहक क्षतिक कारण बनि सकैत अछि; शोकक नैतिक आलोचना एतहि सँ तीक्ष्ण होइत अछि।

पर्व ११—स्त्री (अध्याय १२१-१३२)। नैरा-उर्मिलाक मृत्यु-पुष्टि, गान्धारीक प्रश्न, मन्दोदरीक घर, कुन्तीक स्वीकृति आ द्रौपदीक बचल दिन मृतककेँ संख्या वा स्मारक बनबासँ रोकैत अछि। ‘नम्बरक बाद’ मृत्युसत्यक प्रमाणित सङ्ख्या प्राप्त कऽ लेब आ शेष परिवारक देय चुकता भऽ जाएब एक नहि—ई स्पष्ट करैत अछि।

पर्व १२—शान्ति (अध्याय १३३-१४४)। युद्धक बाद शासन, दोष, पहिनुक प्रतिवेदन, तर्कक पुनरागमन आ आश्रयक नव नियम सोझाँ अबैत अछि। भीष्मक शय्याक उपदेश आ समकालीन समितिक जाँचक बीच सम्बन्ध उत्तरदायित्वक अछि; क्षमाक सार्वजनिक घोषणा वास्तविक बकायाक स्थानापन्न नहि।

पर्व १३—अनुशासन (अध्याय १४५-१५६)। राशनक पाँति, संकेतक कक्षा, जानकीक खण्डन, शम्भूकक पाठ आ सहमतिक दस्तावेज ‘नियम’क प्रयोग वास्तविक कमजोर व्यक्ति लेल कोना होइत अछि, से जाँचैत अछि। कागदपर लिखल सार्वभौम अधिकार

तखनहि अर्थपूर्ण होइत अछि जखन विद्यालय, घाट आ आश्रयमे ओकर पालनक खर्च आ निर्णय स्पष्ट हो।

पर्व १४—अश्रमेध (अध्याय १५७-१६८)। घोड़ाक निर्बाध यात्रा आ विदेहपुरक गामसभक प्रवेश-सहमति बीच तुलना सम्राटीय विस्तारक स्थाने सीमाक परस्पर मान्यता प्रस्तुत करैत अछि। ‘सरिताक योगदान’, ‘मैथिलीक अपना नाम’, ‘बुनकरक बाजार’ आ ‘बिना सम्राटक नाप’ अधिकारसहित श्रेयक नव सार्वजनिक मानचित्र बनबैत अछि।

पर्व १५—आश्रमवासिक (अध्याय १६९-१८०)। वृद्धक देखभाल, कुन्तीक शेष वचन, ईशानक कमरा, कबीरक चिट्ठी आ आश्रयक बाहरक नियम निजी समयक स्वतन्त्रता पर बल दैत अछि। जीवित रहब केवल सुरक्षा-अभिलेखमे अंकित होएब नहि; सहायता स्वीकार अथवा अस्वीकार करबाक स्वतन्त्रता सेहो अछि।

पर्व १६—मौसल (अध्याय १८१-१९२)। यादवक विघटन, स्मारकक ठेका, औजारक बाजार आ कृष्णक अन्त सामूहिक विजयक पछिलुका संस्थागत भ्रंशक दृश्य देखबैत अछि। २०४१क जलस्वच्छता पर्वक क्रममे पुनः बकाया श्रम आ स्मारक पर नियन्त्रणक प्रश्न उठैत अछि। निष्कर्ष ई नहि जे सभटा नष्ट, अपितु नव व्यवस्था सेहो त्रुटिसँ मुक्त नहि।

पर्व १७—महाप्रस्थानिक (अध्याय १९३-२०४)। द्रौपदीक बाट, फकीराक स्टेशन, मृतकक फोन, शब्दक अन्तिम जाँच आ ‘पर्वत नहि दरबज्जा’ शेष यात्रा आत्मसमर्पण नहि, भविष्यक छोट दुआरमे प्रवेश मानैत अछि। नैराक फोनक निजीपन आ बुजुर्गक स्वतन्त्र यात्रा एतय मुख्य नैतिक सन्धि अछि।

पर्व १८—स्वर्गारोहण (अध्याय २०५-२१६)। स्वर्गक सूचीसँ भामतीक सूत्र, उदयनक उत्तर, गङ्गेशक कक्षा, मैथिलीक वाणी, नैराक रिक्ति आ वितरित अभिलेख धरि समापन कथनक सत्ता बाँटैत अछि। अन्तिम अध्यायमे भोजनक पुनरावृत्ति कोनो

चमत्कारी पुनर्मिलन नहि देत; वास्तविक मृत्युक बाद न्यायपूर्ण सामुदायिक जीवन सम्भव बनेबाक अपूर्ण काज देत।

पाठ-सन्दर्भ सम्बन्धी टिप्पणी

एहि आलेखमे उपन्यासक उद्धरण आ घटना-निर्देशनक पहिचान अध्याय-सङ्ख्या द्वारा कएल गेल अछि। संलग्न पाण्डुलिपिक प्रारम्भिक सम्बन्ध-मानचित्र आ पात्र-पञ्जीकें रचनाकारक व्याख्यात्मक परिपाठ मानल गेल अछि, स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाण नहि। अध्याय १, २, ९, १५, २०, ३२, ५४, ६१, ६८, ७०, ७६, ८२, ८४, ८८, १०८, १२१, १२३-१२५, १३०, १३२, १३९, १४३, १४७, १४९, १५१, १५४, १५७, २००, २०५, २१०-२१६ सहित विविध पर्वक प्रसंगक निकटपाठ एकर प्रमुख आधार अछि। सिद्धान्तक प्रयोग आलोचनात्मक तुलना अछि; एहि तुलना सँ मूल शास्त्रीय ग्रन्थ आ कल्पित पात्रक वचन एके ऐतिहासिक दर्जाक नहि भऽ जाइत।

ग्रन्थसूची

क. प्राथमिक साहित्य आ भारतीय शास्त्रीय ग्रन्थ

१. ठाकुर, गजेन्द्र। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली कादम्बरी]। प्रथम संस्करण, २०१९।

संलग्न सम्पूर्ण २१६-अध्यायी प्रति।

२. वाल्मीकि। रामायण। मूल संस्कृत महाकाव्य; विभिन्न आलोचित संस्करण।

३. व्यास। महाभारत। मूल संस्कृत महाकाव्य; विभिन्न आलोचित संस्करण।

४. भरतमुनि। नाट्यशास्त्र। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

५. आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

६. अभिनवगुप्त। अभिनवभारती। नाट्यशास्त्रपर संस्कृत टीका।

७. कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

८. क्षेमेन्द्र। औचित्यविचारचर्चा। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

९. वाचस्पति मिश्र। भामती। ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यपर संस्कृत व्याख्या।

१०. उदयनाचार्य। न्यायकुसुमाञ्जलि। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

११. गङ्गेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

ख. पाश्चात्य आख्यान, आलोचना, स्मृति आ सामाजिक सिद्धान्तक पुस्तकसभ

१२. Bakhtin, Mikhail M. The Dialogic Imagination: Four Essays. University of Texas Press, 1981.

१३. Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Cornell University Press, 1980.

१४. Ricoeur, Paul. Time and Narrative. 3 vols. University of Chicago Press, 1984–1988.

१५. Ricoeur, Paul. Memory, History, Forgetting. University of Chicago Press, 2004.

१६. Booth, Wayne C. The Rhetoric of Fiction. University of Chicago Press, 1961.

१७. Chatman, Seymour. Story and Discourse: Narrative Structure in Fiction and Film. Cornell University Press, 1978.

१८. Bal, Mieke. Narratology: Introduction to the Theory of Narrative. University of Toronto Press, 2009 edition.

१९. Shklovsky, Viktor. Theory of Prose. Dalkey Archive Press, 1990 English edition.

२०. Fricker, Miranda. Epistemic Injustice: Power and the Ethics of Knowing. Oxford University Press, 2007.

२१. Spivak, Gayatri Chakravorty. A Critique of Postcolonial Reason: Toward a History of the Vanishing Present. Harvard University Press, 1999.

२२. Foucault, Michel. Discipline and Punish: The Birth of the Prison. Pantheon Books, 1977 English edition.

२३. Derrida, Jacques. Archive Fever: A Freudian Impression. University of Chicago Press, 1996.

२४. Nixon, Rob. Slow Violence and the Environmentalism of the Poor. Harvard University Press, 2011.

२५. Ghosh, Amitav. The Great Derangement: Climate Change and the Unthinkable. University of Chicago Press, 2016.

२६. Massey, Doreen. For Space. SAGE Publications, 2005.

२७. Faris, Wendy B. Ordinary Enchantments: Magical Realism and the Remystification of Narrative. Vanderbilt University Press, 2004.

२८. Lukács, Georg. The Theory of the Novel. MIT Press, 1971 English edition.

सन्दर्भसीमा

उपर्युक्त ग्रन्थसूचीमे केवल पुस्तक आ मूल ग्रन्थ समाविष्ट अछि; बाह्य वेबसाइट, अनिश्चित वेब-लेख अथवा अप्रमाणित उद्धरण नहि जोड़ल गेल अछि। भारतीय मूलग्रन्थक लेल प्रकाशन-वर्षक कृत्रिम निर्धारण नहि कएल गेल, कारण विभिन्न आलोचित संस्करण प्रचलित अछि। पाश्चात्य पुस्तकक वर्ष निर्देशित संस्करणक अछि, सभ ठाम मूल रचनाक प्रथम प्रकाशन-वर्ष नहि।

१.८. नित नवल आशीष अनचिन्हार — नबोनारायण मिश्र समग्र

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

खण्ड १

सम्पादन, साहित्यिक स्मृति आ बहुविध इतिहास

मैथिली साहित्यिक पुनर्पाठ

साहित्य, आन्दोलन आ स्मृतिक संगम

सन्दर्भ-पोथी : नबोनारायण मिश्र समग्र • सम्पादक : आशीष अनचिन्हार • २०२६

सारांश

नबोनारायण मिश्रक साहित्यकें एकटा विधाक सीमामे राखि कऽ बुझब सम्भव नहि अछि। हुनक रचना-संसारमे साक्षात्कार, संस्थागत इतिहास, व्यक्तिचित्र, संस्मरण, कथा, व्यङ्ग्य, उत्सवगीत, शोककविता आ भाषिक अधिकारक पक्षधर कविता एक-दोसराक सङ्ग संवाद करैत अछि। आशीष अनचिन्हार सम्पादित «नबोनारायण मिश्र समग्र» एहि बिखरल रचनाकें एक ठाम आनैत अछि आ आधुनिक मैथिली साहित्यक ओहि श्रमशील आधारकें दृश्य बनबैत अछि जे केवल नामी रचनाकार, पुरस्कार आ प्रकाशित स्वतंत्र पोथीक गणनासँ पकड़मे नहि अबैत अछि। संकलनक विशेष महत्त्व कोलकाताक मैथिली आन्दोलन, पत्र-पत्रिका, सांस्कृतिक संस्था आ कोकिल मञ्चक रङ्गकर्मक अभिलेखीकरणमे अछि।

एहि शोधमे समग्रक साक्षात्कार, आलेख, कथा आ पद्यकें अलग-अलग परखल गेल अछि। साक्षात्कारसभमे भाषिक अधिकारक आन्दोलनक जीवन्त साक्ष्य, आलेखसभमे संस्थागत स्मृतिक संरक्षण, कथामे पारिवारिक सम्बन्ध, दहेज, परोपकार, प्रवास आ नैतिक विडम्बना, आ कवितामे सामुदायिक चेतना आ निजी चोटक स्वर भेटैत अछि। एकर साहित्यिक उपलब्धि सङ्गहि सीमा सेहो अछि: कतहु आदर्शोन्मुख समाधान कथाक बहुस्तरीयता घटबैत अछि; कतहु प्रशंसात्मक व्यक्तिचित्र आलोचनात्मक दूरी

कम करैत अछि; कतहु कविता प्रत्यक्ष वक्तव्यक अधीन भऽ जाइत अछि। तथापि ई समग्र साहित्यक सामाजिक आधार, मज्जीय श्रम आ ऐतिहासिक स्मृतिपर विचार करबाक लेल एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिक ग्रन्थ अछि।

बीजशब्द : नबोनारायण मिश्र; आशीष अनचिन्हार; मैथिली गद्य; कोलकाता; कोकिल मज्ज; साक्षात्कार; मैथिली आन्दोलन; लोकस्मृति; मैथिली कथा; साहित्येतिहास।

प्रस्तावना : साहित्यक इतिहासमे अदृश्य श्रमक प्रश्न

साहित्यक इतिहास प्रायः रचनाकारक नाम, प्रकाशित कृतिक सूची, साहित्यिक प्रवृत्ति आ पुरस्कारक क्रममे लिखल जाइत अछि। मुदा भाषा-साहित्यक जीवन केवल रचनाक पाठमे नहि, रचनाकेँ सम्भव बनबयवला समाजमे सेहो विद्यमान रहैत अछि। जे गोटे सभागार बुक करैत अछि, मंच बनबैत अछि, कलाकार जुटबैत अछि, निमन्त्रण पहुँचबैत अछि, हस्तलिखित सामग्री बचबैत अछि, पत्रिकाक ग्राहक बनबैत अछि आ आन्दोलनेर रस्ता धरैत अछि, ओकर योगदान बिनु साहित्यक प्रसारक कथा अपूर्ण रहैत अछि।

नबोनारायण मिश्रक साहित्य एहने अदृश्य श्रमक ऐतिहासिक उपस्थिति थिक।

नबोनारायण मिश्र केवल कथाकार वा कवि नहि, बल्कि मैथिली सार्वजनिक जीवनक सहभागी, अनुभव-लेखक आ सांस्कृतिक साक्षी छथि। सम्पादकक भूमिकामे स्पष्ट कएल गेल अछि जे हुनक पहिल प्रकाशित रचना १९७७ मे आएल आ दशकसभक अन्तरालपर हुनकर रचनासभ २०२६ मे एकत्र भेल। ई दीर्घ अन्तराल हुनकर साहित्यिक उपेक्षाक अकेल प्रमाण नहि, मुदा एहि प्रश्नकेँ अनिवार्य बनबैत अछि जे प्रकाशनक संस्थागत साधन आ मान्यताक वितरण कोन-कोन रचनाकारकेँ दृश्य बनबैत रहल।

एहि पोथीक ‘समग्र’ पदकेँ आक्षरिक पूर्णताक दावाक रूपमे नहि, प्राप्त सामग्रीक एक ऐतिहासिक संरक्षण-यत्नक रूपमे देखब उचित अछि। सम्पादक स्वयं संकेत करैत छथि जे रचनासभक क्रम, प्रकाशन-विवरण आ उपलब्धतामे अन्तर अछि आ आगू सामग्री जुड़ि सकैत अछि। एहि ईमानदार स्वीकारसँ पोथीक महत्त्व घटैत नहि; उलटे एकर पाठ-इतिहासक जटिलता स्पष्ट होइत अछि।

रचना-संरचना आ आलोचनात्मक दृष्टि

समग्रमे तीनटा साक्षात्कार, पन्द्रहटा आलेख, एगारहटा कथा आ उन्नैसटा पद्य-रचना संकलित अछि। एहि चतुष्पदी संरचनामे साक्षात्कार ऐतिहासिक आवाजकें, आलेख संस्मरणात्मक आ संस्थागत व्याख्याकें, कथा सामाजिक प्रसङ्गकें, आ कविता भावात्मक तथा प्रतिवादी अभिव्यक्तिकें उपस्थित करैत अछि। भिन्न-भिन्न विधा होयबो पर सबहक आन्तरिक सूत्र अछि—मैथिली भाषाप्रति निष्ठा, लोकक आपसी जिम्मेवारी आ मानवीय व्यवहारक नैतिक परीक्षा।

आलोचनाक लेल तीन स्तर उपयोगी अछि। पहिल, प्रत्येक रचनाक भीतर कथ्य, दृश्य, पात्र आ शिल्पक सम्बन्ध; दोसर, समान विषयक भिन्न विधामे अभिव्यक्ति; तेसर, मैथिली साहित्येतिहासक ओहि प्रचलित रूपसँ तुलना जाहिमे महान रचनाकार प्रधान आ संगठनक कार्यकर्ता गौण रहैत छथि। एहि तीनू स्तरक भेद बनौने रहने समग्रक साहित्यिक आ ऐतिहासिक मूल्य एक-दोसरामे बिलीन नहि होइत अछि।

साक्षात्कार : मौखिक इतिहास आ भाषिक सार्वजनिकता

तीनू साक्षात्कारक विषय क्रमशः किशोरीकान्त मिश्र, रामलोचन ठाकुर आ डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक छथि। प्रश्नोत्तरक रूपक कारणे ई सामग्री लेखकक एकाकी विचार नहि, संवादमे उभरैत बहु-स्वरक दस्तावेज अछि। प्रश्नकर्ताक चयनित प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि: कोलकाता आगमन, संस्था, सम्पादन, रङ्गमञ्च, आन्दोलन, पत्रिका, युवा पीढ़ी, भाषाक अधिकार आ व्यक्तिगत अनुभव। एहिसँ नबोनारायण मिश्रक सांस्कृतिक प्राथमिकता स्पष्ट होइत अछि।

किशोरीकान्त मिश्रसँ बातचीत : भाषा, शिक्षा आ मुद्रण-संस्कृति

किशोरीकान्त मिश्रक स्मृतिमे मातृभाषाप्रति आकर्षण विद्यालयी वाद-विवादक अनुभवसँ सम्बद्ध अछि। कोलकातामे मिथिला सांस्कृतिक परिषदसँ जुड़नाइ व्यक्तिगत रुचिकें संस्थागत अभियानमे बदलैत अछि। विशेष महत्त्वक बात अछि पत्रिका-प्रकाशनक व्यावहारिक श्रम आ वर्तनीक एकरूपताक चिन्ता। ओहि अनुभवमे मिथिला

मिहिर आ मुद्रण-व्यवस्था मात्र तकनीकी प्रसङ्ग नहि, भाषिक मानकीकरणक प्रश्न बनैत अछि।

विद्यापतिक स्मारक-छविक निर्माण, डाक-टिकटक अभियान आ जनगणनामे मैथिली लिखबाक आग्रहसँ स्पष्ट होइत अछि जे भाषा-आन्दोलन साहित्यिक प्रतिष्ठा, प्रतीक-निर्माण आ जनसांख्यिक उपस्थिति—तीनू स्तरपर चलैत रहल। तथापि साक्षात्कारमे व्यक्त ऐतिहासिक दावासभकेँ अन्तिम निर्णीत तथ्य मानि लेब उचित नहि; ओ सहभागी व्यक्तिक स्मृति छथि, जिनक समीक्षा अन्य स्वतंत्र दस्तावेजसँ होएबाक चाही।

रामलोचन ठाकुरसँ बातचीत : आन्दोलन, सम्पादन आ रङ्गमञ्चक त्रिकोण
रामलोचन ठाकुरक उत्तरसभ मैथिली सार्वजनिक जीवनक संस्थागत जाल उद्धाटित करैत अछि। मैथिली मुक्तिमोर्चा, पत्रिका सम्पादन, नाटकक अनुवाद, कविता, आन्दोलनक आयोजन आ नव रचनाकारक प्रोत्साहन—ई सभ अलग-अलग गतिविधि नहि, भाषा-संस्कृतिक एक संयुक्त रणनीति जकाँ उभरैत अछि। प्रकाशनक अभावमे सामूहिक रचनापाठ आ बैसारक महत्त्वक चर्चा साहित्यिक लोकतन्त्रक मूल प्रश्न उठबैत अछि।

एहि साक्षात्कारक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष ई अछि जे साहित्यक इतिहास रचनाक मुद्रित सूची मात्र नहि रहैत; ‘सम्पर्क’ सन बैसार, पत्रिकाक अल्पजीविता, छद्मनामसँ लिखब आ सहयोगी सम्पादन सेहो रचनात्मक संस्कृतिक आधार मानल जाइत अछि। एहि संग अन्तर्विरोध सेहो देखाइत अछि: व्यक्तिगत स्मृति कतेक स्पष्ट, आ संस्थागत तिथि-कथा कतेक विशिष्ट, ताहि लेल शोधमे समकालीन पत्रिका आ आयोजन-विवरणक तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक अछि।

डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकसँ बातचीत : आलोचना, संचार आ पीढ़ीगत संक्रमण
वीरेन्द्र मल्लिकसँ संवाद साहित्यकारक बौद्धिक आत्मस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि। साहित्यक विकास, रङ्गमञ्चक क्षेत्र, रचनाशील समुदाय आ बदलैत परिवेशपर हुनक विचारकेँ नबोनारायण मिश्र व्यापक ऐतिहासिक प्रसङ्गमे रखैत छथि। ई सामग्री विशिष्ट

लेखकक आत्मवृत्तान्तसँ आगाँ बढ़ि मैथिली साहित्यिक जगतक परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

तीनू साक्षात्कारमे प्रश्नकर्ता कतहु आलोचकसँ अधिक सांस्कृतिक आयोजक जकाँ देखाइत छथि। ई कमजोरी आ शक्ति दुनू अछि: निकटताक कारणे भरोसा आ दुर्लभ सूचना भेटैत अछि, मुदा प्रतिप्रश्नक कठोरता सदा समान नहि रहैत अछि। शोधार्थीकें एहि द्वैध स्थितिक ध्यान रखनाइ चाही।

आलेख : कोलकाताक जीवित सांस्कृतिक अभिलेख

आलेखखण्ड समग्रक ऐतिहासिक मेरुदण्ड अछि। पन्द्रहटा रचनामे स्मृतिचित्र, व्यक्तित्व-परिचय, संस्थागत लेखाजोखा, पत्रिका-इतिहास, लोककथापर विचार, आत्मस्मरण आ नाट्य-दस्तावेज सभ उपस्थित अछि। नबोनारायण मिश्रक गद्यक मूल प्रवृत्ति बिखरल अनुभवकें सामाजिक उपयोगक योग्य स्मृतिमे बदलनाइ अछि। एहि सन्दर्भमे लेखकक ‘हम’ आत्मप्रदर्शनक प्रतीक नहि, बहुतो ठाम सामूहिक अनुभवक प्रवेशद्वार बनैत अछि।

रामलोचन ठाकुर : व्यक्तित्वसँ सामाजिक परम्परा धरि

‘हमरा नजरिमे : श्री रामलोचन ठाकुर’ आ ‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता’ कें संग पढ़लासँ व्यक्तिचित्रक दू रूप देखाइत अछि। पहिलमे साहित्यकार, सम्पादक आ आन्दोलनकारी रामलोचनक सार्वजनिक उपलब्धिपर बल अछि; दोसरमे दीर्घ संस्मरणक माध्यमसँ मित्रता, संवाद, संगठन आ वियोगक निजी आयाम प्रमुख भऽ उठैत अछि। एकही व्यक्तिक चारूकात विद्यमान संस्थासभक कथा धीरे-धीरे व्यक्तिनिष्ठ शोकक कथा बनैत अछि।

एहिमे आलोचनात्मक प्रश्न अछि जे रामलोचनक साहित्यिक रचनाक औपचारिक विवेचन अपेक्षाकृत कम, हुनक अभियानक प्रशंसात्मक विवरण अधिक अछि। मुदा एहि प्रवृत्तिकें पूर्णतः असाहित्यिक नहि कहि सकैत छी, कारण मैथिली आन्दोलनीय लेखनमे

व्यक्तित्व-निर्माण स्वयं एक सांस्कृतिक क्रिया रहल अछि। आवश्यकता एतबे अछि जे श्रद्धा आ ऐतिहासिक परीक्षणकें पृथक राखल जाय।

राजनन्दन लाल दास : पत्रिका, संस्थागत नेतृत्व आ श्रेयक राजनीति ‘युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास’ आ ‘युगप्रवर्तक राजनन्दन लाल दास’ व्यक्तित्वकें साहित्यिक पत्रकारिताक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। ‘आखर’, ‘कर्णामृत’, कर्णगोष्ठी आ मैथिली सांस्कृतिक गतिविधिक उल्लेखसँ प्रकाशन-श्रमक निरन्तरता उद्घाटित होइत अछि। एतय लेखकक प्रमुख आग्रह साहित्यक विकासमे पत्रिकाक आयोजन, सम्पादकीय निर्भीकता आ सामुदायिक संरक्षणकें उचित स्थान देबाक अछि।

दूनू आलेखक पुनरावृत्तिमे आलोचक लेल एक प्रश्न सेहो अछि—संक्षिप्त श्रद्धाञ्जलि आ विस्तृत परिचयक बीच तथ्यक अन्तर, समान दावाक दोहरान आ स्मृतिजन्य मूल्याङ्कनक मानदण्ड कतेक स्पष्ट अछि? एहि प्रश्नकें नकारलासँ लेखकक ऐतिहासिक प्रयत्न बुझब कठिन भऽ जाएत।

प्रबोध बाबू आ लक्ष्मण झा ‘सागर’ : बौद्धिक स्नेहक स्मृतिशास्त्र ‘मिथिला-मैथिलीक प्रबल पक्षधर : प्रो. प्रबोध बाबू’ मे सार्वजनिक योगदान आ व्यक्तिगत सान्निध्यक मेल अछि। लेखक केवल प्राप्त उपलब्धि नहि गनबैत छथि; भेट, अधूर इच्छा, निधन आ अपूरित सांस्कृतिक सम्भावनाक मार्मिक स्थितिक स्मरण करैत छथि। यस्मिन् बौद्धिक जीवनक मूल्यक एक पक्ष भावनात्मक आ नैतिक बनि उठैत अछि।

‘सर्वगुण सम्पन्न सागरजी’ व्यक्तित्व-चित्रणमे संवादी स्नेह आ मध्यस्थताक प्रसङ्ग विशेष उल्लेखनीय अछि। प्रसिद्ध व्यक्तिक गुणगान करैत लेखक अपन विनम्र उपस्थितिकें सेहो दर्ज करैत छथि। एहि शैलीक मूल्य एहि बातमे अछि जे साहित्यिक समुदाय केवल विचारक एकमततासँ नहि, मनमुटाव सुलझेबाक दैनिक प्रयत्नसँ बनैत अछि।

मिथिला विकास परिषद् : संस्थागत सहकार आ प्रतिस्पर्धा

‘मिथिला विकास परिषद्, कोलकाता : जेना हम देखल’ मे संस्थागत एकता आ पारस्परिक अविश्वासक कथा भेटैत अछि। लेखक संस्था-विशेषक उपलब्धि स्वीकार करैत छथि, मुदा विभिन्न संस्थाक बीच उत्पन्न दूरीक आलोचनासँ नहि बचैत छथि। ई आलेख आन्दोलनक इतिहासकें केवल गौरवकथासँ बचबैत अछि: संस्था बनब तऽ उपलब्धि अछि, मुदा व्यक्तिक अहं, गुटबन्दी आ कार्यक्रमक बहिष्कार ओकर सामुदायिक लाभ कम कऽ सकैत अछि।

एहि प्रसङ्गक विशेषता ई अछि जे लेखक अपन सम्बद्ध कोकिल मञ्चक स्थितिकें सेहो सामने आनैत छथि। तँ ई रचना ऐतिहासिक तथ्यक संग आत्मस्थितिक दस्तावेज अछि, जाहिमे पक्षधरता स्पष्ट रहितो आत्मालोचनाक अवसर बनैत अछि।

पीताम्बर पाठक आ बाबू साहेब चौधरी : भाषा-आन्दोलनक मानवीय चेहरा
‘मैथिली आन्दोलनक नायक : पीताम्बर पाठक’ संस्थागत गतिविधिक पछाँ निरन्तर काज करनिहार व्यक्तिक चरित्रक स्मरण करैत अछि। लेखक नवतुरिया लोककें जोड़ब, उत्तराधिकारी तैयार करब आ सामूहिक कार्य-संस्कृतिक चर्चा करैत छथि। स्मृतिमे अचानक निधनक प्रसङ्ग एकर भावात्मक अन्त बनैत अछि, जाहिसँ सार्वजनिक इतिहास निजी क्षतिक अनुभव धरि पहुँचैत अछि।

‘प्रसङ्ग : बाबू साहेब चौधरीक’ भाषिक आन्दोलनक सांस्कृतिक मनोविज्ञानकें खोलैत अछि। मैथिली गीत, डहकन, स्त्रीकण्ठ, रंगमञ्च आ मातृभाषाक घरेलू जीवनसँ सम्बन्धक चर्चा भाषाक संरक्षणकें केवल सरकारी मान्यतापर निर्भर नहि रखैत। यद्यपि लोकस्त्रीकें परम्पराक एकमात्र रक्षक बुझनाइ प्रश्नातीत नहि, तथापि मौखिक संस्कृतिक चिन्ता एहि गद्यक मूल्यवान पक्ष अछि।

कलकत्ताक मैथिली आन्दोलन आ मिथिला दर्शन : पत्रिकाक जनपथ

‘कलकत्ताक मैथिली आन्दोलन आ मिथिला दर्शन’ प्रवासी नगरमे भाषा-संघर्षक जीवित इतिहास चित्रित करैत अछि। पत्रिकाक माध्यमसँ साहित्यकार, कार्यकर्ता, शिक्षक आ

प्रवासी समुदाय जुड़ैत छथि। प्रकाशित सामग्रीक विधागत वैविध्य—भाषाविज्ञान, कथा, कविता, एकाङ्की, नाटक—एकटा पत्रिकाकेँ सामूहिक बौद्धिक मंचक रूपमे देखबयवला महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अछि।

एहि लेखमे अनेक नाम आ प्रकाशनक प्रसङ्ग एकत्र अछि। ई सूचना-सघनता उपयोगी रहलो पर प्रसङ्गक्रम सदिखन व्यवस्थित नहि; शोधमे सूचीकेँ समकालीन अंकक अनुक्रमसँ मिला देखबाक प्रयोजन बचैत अछि। साहित्यिक पत्रकारिताक इतिहास लेल एहि रचनाक महत्त्व ‘दावा’ मात्र नहि, जाँचल जा सकय योग्य शोधसूत्र प्रदान करब अछि।

‘स्मृति आखर’ : आत्मवृत्तान्तक भीतर रङ्गमञ्च

‘स्मृति आखर’ मे गामक अभिनय-प्रयाससँ महानगरीय मंच धरि जएबाक सांस्कृतिक यात्रा अछि। संस्था कोना बनल, कलाकार कोना जुड़ल, महिलाक मंचीय सहभागिता केना विकसित भेल, प्रशिक्षण आ निर्देशनक श्रम कोना बँटल—एहन प्रसङ्गसँ रङ्गकर्मक सामाजिक आधार प्रत्यक्ष होइत अछि। गङ्गा झाक निर्देशन आ किरण झा तथा अन्य कलाकारक सक्रियताक उल्लेख सामूहिक रंगमञ्चक प्रश्नकेँ केन्द्रमे आनैत अछि।

रचनामे स्वयं लेखकक संस्थागत जिम्मेदारीक विवरण सेहो अछि। एतय आत्मस्मरणक आलोचनात्मक महत्त्व एहि कारण अछि जे लेखक रंगमञ्चक केवल दर्शक नहि, संस्थाक संचालनक सहभागी छथि। मुदा एहि निकटताक कारणे उपलब्धिक विवरणक संग असफलता, दर्शक-वर्ग, रंगभाषा आ मञ्च-प्रयोगपर अतिरिक्त विवेचन अपेक्षित रहि जाइत अछि।

‘मैथिली लोककथा’ : लोकसाहित्यक संरक्षण आ सीमा

‘मैथिली लोककथा’ मे लेखक मौखिक परम्पराक व्यापकता आ प्रकाशित संकलनक अल्पताक बीच दूरी रेखांकित करैत छथि। मौखिक कथा सामाजिक आ पीढ़ीगत स्मृति संचरित करैत अछि, मुदा लिखित संग्रह बिनु ओकर प्रसार सीमित भऽ सकैत अछि।

मैथिलीमे लोककथा-संकलनक उपलब्ध उदाहरणक चर्चा संग्रहणक संस्थागत प्रश्न बनैत अछि।

तथापि लोककथा केवल सुरक्षित करबाक वस्तु नहि; कथनक परिस्थिति, कथावाचकक सामाजिक स्थिति, बोलीभेद, स्त्री-पुरुष दृष्टि आ कथाक परिवर्तित रूप सेहो अध्ययनक विषय अछि। समग्रक ई आलेख संग्रहणक आवश्यकता ठीक प्रकारें चिन्हैत अछि, मुदा लोककथाक शक्ति-सम्बन्ध आ रूपभेदपर आगू शोधक प्रचुर सम्भावना छोड़ैत अछि।

‘मिथिला मिहिर आ सम्पादकजी’ : मुद्रित सार्वजनिकताक सौन्दर्य

‘मिथिला मिहिर आ सम्पादकजी’ मे साहित्यिक पत्रकारिता, सम्पादकक व्यक्ति-प्रभाव आ भाषाक मानकीकरणक इतिहास एकत्र होइत अछि। लेखकक ध्यान पत्रिकामे विकसित कथा, उपन्यास, नाटक आ विचारक व्यापक लोकपर अछि। सुबोध गद्यक भीतर इतिहासक अभावक पीड़ा सेहो अछि—नियमित पत्रिकाक छूटल अङ्क, बिखरल योगदान आ सम्पादकीय अनुशासनक प्रश्न।

एहि लेखकें किशोरीकान्त मिश्रक साक्षात्कारसँ संग पढ़लासँ स्पष्ट होइत अछि जे वर्तनीक एकरूपता मात्र भाषाशास्त्रीय निर्णय नहि, मुद्रणक श्रम आ सम्पादकीय व्यवहारसँ निर्मित सार्वजनिक अनुबन्ध अछि। एहि दिशामे समग्रक योगदान मौलिक अछि।

‘अनन्य मैथिली हितैषी अजय सिंह’ : स्नेह, शोक आ सार्वजनिकता

अजय सिंहपर केन्द्रित लेखमे व्यक्तिगत परिचयकें सामुदायिक कर्मक मूल्याङ्कनसँ जोड़ल गेल अछि। कोविडकालीन मृत्यु आ सांस्कृतिक संस्थाक ह्रासक प्रसङ्ग एक पीढ़ीक अवसानक बोध करबैत अछि। एहने श्रद्धाञ्जलि-पाठ भविष्यक शोधार्थीक लेल सांस्कृतिक सम्बन्धक धागा बचा सकैत अछि, यद्यपि घटना, तिथि आ योगदानक स्वतंत्र पुष्टि ऐतिहासिक अध्ययनक लेल अलग जरूरी रहैत अछि।

‘मैथिली रङ्गमञ्च आ कोलकाता’ : प्रदर्शनक सूचीसँ रंग-इतिहास धरि

ई आलेख समग्रक एकटा आधारभूत दस्तावेजी उपलब्धि अछि। रंगकर्मी, नाटककार, अनुवाद, प्रस्तुति, सभागार आ निर्देशनक क्रम एकत्र करबाक प्रयास मैथिली नाट्यसाहित्यकेँ केवल लिखित नाटकक इतिहाससँ बाहर निकालैत अछि। कोकिल मञ्चसँ जुड़ल प्रस्तुति-विवरणसँ रङ्गमञ्चक सामाजिक जीवन, आयोजनक्षमता आ प्रवासी नगरक सांस्कृतिक भूगोलक अध्ययन सम्भव भऽ सकैत अछि।

एहि सूचीमे विवरणसँ उपलब्ध तारीख आ नाम शोध-सूत्रक रूपमे बहुमूल्य छथि; मुदा एकरा स्वतः सत्यापित कालक्रमक पूर्ण विकल्प नहि बनाओल जाय। नाटकक प्रस्तुति केहन छल, स्त्री-पात्रक अभिनयमे की परिवर्तन भेल, दर्शक कोन वर्गसँ छल, टिकट-व्यवस्था आ नाट्याभ्यासक स्वरूप की छल—एहि प्रश्नक व्यवस्थित उत्तर एहि आलेखसँ पूर्णतः नहि भेटैत अछि। तइयो सूचीकरणक एहि कार्यकेँ साहित्येतिहासमे योग्य स्थान देबाक आवश्यकता अछि।

कथा-खण्डक पृथक पाठविश्लेषण

समग्रक कथा-लेखनमे ग्रामीण जीवन, प्रवासक कठिनाई, परिवारक हित-अहित, विवाहक सामाजिक बन्धन, धन आ श्रमक नैतिकता, सार्वजनिक भाषिक चेतना आ व्यङ्ग्य उपस्थित अछि। बहुतो कथाक अन्तमे नैतिक निष्कर्ष स्पष्ट रहैत अछि; कतहु अन्तिम दृश्य पाठककेँ स्वयं अर्थनिर्माणक अवसर दैत अछि। कथासभक आन्तरिक भिन्नताकेँ सुरक्षित राखि पढ़ल जाए, नहि तँ पूरा कथा-जगत ‘उपदेशात्मक’ कहि कऽ सरल बना देल जाएत।

‘एहनो होइत छै’ : हास्यक दृश्य-रचना

मोहनजीक पहिल सिनेमाघर-यात्रा एहि लघुकथाक विषय अछि। अन्हारमे कुर्सीक आसन नहि खसाएलाक कारणे ओ कुर्सीक बाँहिपर झूलल रहैत छथि; इन्टरवलक उजासमे भ्रमक कारण उद्धाटित होइत अछि। हास्य मुख्यतः शब्दचमत्कारसँ नहि,

दृश्यगत विलम्ब आ पाठकक अपूर्ण सूचनासँ पैदा होइत अछि। शीर्षकक अर्थ अन्तमे उलटि जाइत अछि।

एहि कथामे आधुनिक मनोरञ्जनक स्थल आ ग्रामीण अनुभवक अन्तर हलुक व्यङ्ग्यमे उपस्थित अछि। कथाकार पात्रकेँ अपमानित करबाक बजाय ओकर अज्ञानकेँ सामाजिक अनुभवमे बदलैत छथि। संक्षिप्तता, समयबद्ध उद्घाटन आ विनोदी संवाद एकर सफलता अछि।

‘एकटा पाकल आम’ : नेनाक नैतिक दृष्टि

एकटा पाँच वर्षक बालक अपन हिस्सा भेटल आमकेँ पितियौत भाइसँ बाँटबाक आग्रह करैत अछि, जखन पिता अलग गृहस्थी आ अधिक सुविधा पएबाक तर्क दैत छथि। बालकक सहज सहानुभूति बड़काक विभाजनपरक यथार्थवादकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। आम एतय केवल खाद्य वस्तु नहि, संयुक्त परिवारक भीतर न्याय आ सहभागिताक प्रतीक अछि।

कथाक विशेष गुण ई अछि जे नैतिक विवादक केन्द्र बच्चाक अनुभव बनेत अछि, न कि कथाकारक उपदेश। तथापि पिताक पक्षकेँ बड़ सहज स्वार्थक रूपमे देखाओल गेल अछि; आर्थिक विवशताक जटिलता कथामे कम खुलैत अछि। लघुकथा रूपमे ई संकुचन एकर प्रभाव बढ़बैत सेहो अछि।

‘यात्राक फेरी’ : प्रवासी जीवनक विनोदी संकट

नोकरीक दबाव, बंगाल बन्दसँ बनल छुट्टीक संयोग, घरक स्मृति, रात्रिक यात्रा, बरसात, असुरक्षा, गामक सामाजिक अपेक्षा आ कार्यालयमे अनुपस्थितिक भय—ई सभ यात्रा-वृत्तान्तक कथामे एकसाथ चलैत अछि। कथा एकटा सीमित छुट्टीकेँ अनन्त दायित्वमे बदलैत अछि। परिवारक आह्वान पात्रकेँ खींचैत अछि, मुदा संस्थागत रोजगार ओकरा बान्हने रहैत अछि।

एहि रचनाक औपचारिक समस्या विस्तार अछि; अनेक प्रसङ्ग रोचक रहितो कथाक तनावकेँ कखनो-कखनो बिखेरैत अछि। फेरो घटनाक क्रम, पत्नी-संवादक पूर्वानुमान,

रास्ताक बाधा आ बरियातीमे अटकब, प्रवासक मानसिक विभाजनक प्रामाणिक बोध उत्पन्न करैत अछि। एतय हास्य जीविका आ सम्बन्धक बीच असम्भव चयनसँ उपजैत अछि।

‘कालचक्र’ : उत्तराधिकार, सम्पत्ति आ परिश्रम

पिता-विहीन बालक उपेन्द्रक जीवनमे दायादक सम्पत्ति-लोलुपता, परिवारक संकट, अध्ययन आ कठिन परिश्रमक माध्यमसँ आगाँ बढ़बाक कथा अछि। बालकक निर्बल सामाजिक अवस्थाकेँ आत्मनिर्माणक प्रसङ्गमे बदलल गेल अछि। दायादक चरित्र आ सम्पत्तिपर अधिकारक विवाद मिथिलाक ग्रामीण सामाजिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि।

कथाक अन्तमे पात्रक आर्थिक-सामाजिक प्रतिष्ठा दृढ़ बनैत अछि। एहि संरचनामे नैतिक प्रतिपूर्ति स्पष्ट अछि; संघर्षक बहुस्तरीय सत्ता-समीक्षा अपेक्षाकृत सीमित रहैत अछि। मुदा श्रम आ शिक्षाकेँ वंशगत सम्पत्तिसँ बेसी महत्त्व देबाक आग्रह समकालीन सामाजिक परिवर्तनक संवेदनशील संकेत अछि।

‘आदर्श विवाह’ : दहेजक बाजार आ युवा प्रतिरोध

धनाढ्य नारायण बाबू अपन बेटीक विवाहमे कएल खर्चक ‘वसूली’ पुत्रक विवाहसँ करबाक मानसिकता राखैत छथि। कन्यागतसँ सहमतिक बाद बाँचल धन नहि भेटलापर विवाह रोकबाक निर्णय लैत छथि। एही निर्णायक क्षणमे बेटा राजन पिता-सत्ताक विरोध करैत अछि, लेन-देनक धन लौटबैत अछि आ दहेज-विहीन विवाहक आग्रह करैत अछि।

ई कथा सामाजिक कुप्रथाक विरोधमे नाटकीय सार्वजनिक वक्तव्यक उपयोग करैत अछि। ताकत एहि बातमे अछि जे प्रतिरोध घरक भीतरसँ उठैत अछि; सीमा एहि बातमे जे दहेजक जटिल सामाजिक संरचनाकेँ एक सजग युवकक नैतिक साहससँ तुरन्त निराकृत देखाओल गेल अछि। परन्तु कथाक समयसन्दर्भमे दहेजक सामान्यीकरण विरुद्ध एहन दृश्यक सार्वजनिक महत्त्व अस्वीकार नहि कएल जा सकैत अछि।

‘परोपकारक फल’ : विडम्बना आ नैतिक दृढ़ता

हरीबाबूक परोपकारक लाभ लैनिहार लोक हुनके विरुद्ध षड्यन्त्र रचैत अछि; हिंसक डकैतीक परिणाममे हुनक बेटा विनयक मृत्यु भऽ जाइत अछि। परिवार सहयोग बन्द करबाक सलाह दैत अछि, मुदा हरीबाबू परोपकारक प्रतिज्ञासँ नहि हटैत छथि। शीर्षक उपकारक सामान्य फलप्राप्तिक अपेक्षाकेँ दुःखद विडम्बनामे बदलैत अछि।

एहि कथाक गूढ़ प्रश्न ई अछि जे न्यायविहीन समाजमे सद्गुणक अभ्यास केना सम्भव अछि। कथाकार हरीबाबूक नैतिक जिदकेँ मानवताक सर्वोच्च मूल्यक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। आलोचनात्मक दृष्टिँ हिंसा आ परोपकारक बीच सम्बन्धक राजनीतिक-आर्थिक विवेचन कम अछि; दुष्ट पात्रसभ सामाजिक प्रकारमे सिमटि जाइत छथि। तथापि दुःखान्त निष्कर्ष कथाकेँ मात्र सुगम उपदेशक स्तरसँ ऊपर उठबैत अछि।

‘करोड़पतिक कर्मठता’ : उपहासक उलट अर्थ

दिल्लीक मैथिलबहुल क्षेत्रमे जलक लाइनपर उठल विवादसँ एक दम्पतीक नामपर उपहास जुड़ैत अछि। उपहासमे कहल गेल ‘करोड़पति’ बादमे पात्रक परिश्रमसँ वास्तविक उपलब्धिक संकेत बनैत अछि। कथा नगरजीवनक संसाधन-अभाव, सार्वजनिक अनुशासन आ सामाजिक नामकरणक विनोदक उपयोग करैत अछि।

एकर कमजोरी ई अछि जे पत्नीक व्यवहारकेँ लिंगगत सामान्यीकरणक सहारे व्याख्यायित कएल गेल अछि आ श्रमसँ आर्थिक चमत्कार धरि पहुँचबाक अन्तिम वक्र अपेक्षाकृत सरलीकृत अछि। किन्तु सामाजिक खिल्लीकेँ आर्थिक उन्नतिक प्रतीक बनाबयवला रूपान्तरण मनोरञ्जक अछि।

‘मैथिलीक मर्यादा’ : गाँवक सार्वजनिक पठन-संस्कृति

टेलिफोन-संवादपर आधारित ई लघु रचना ग्रामीण सार्वजनिक स्थल—सैलून, चाय-दोकान, पुस्तकालय—केँ भाषा-साहित्यक प्रचारक केन्द्रक रूपमे कल्पित करैत अछि। पात्र बतबैत अछि जे मैथिली पत्रिका नगरमे मात्र नहि, गामक सामुदायिक बैसारमे सेहो

उपस्थित रहि सकैत अछि। एहि कथाक सार सरकारी मान्यता नहि, पाठकक निर्माण अछि।

कथात्मक तनाव बहुत कम अछि; ई लगभग भाषिक संकल्पक दृश्य बनि जाइत अछि। मुदा एहि संक्षिप्त संवादमे मैथिली आधुनिक सार्वजनिकताक एक लोकतान्त्रिक सपना निहित अछि—साहित्य केवल शिक्षित विशिष्ट वर्गक सम्पत्ति नहि रहय।

‘सुन्दर-संयोग’ : विवाह-आयोजन, सहयोग आ संयोग

लम्बा कथात्मक विन्यासमे परिवारक विवाह-संयोजन, नौकरीसँ छुट्टीक संकट, गाम-अनुभव, रिश्तेदारीक आग्रह, आर्थिक व्यवस्था आ बरियातीक अनिश्चितता एक-दोसराकेँ घेरैत अछि। अप्रत्याशित परिस्थिति अन्तमे नव रिश्ताक सम्भावना खोलैत अछि। कथा पारिवारिक जीवनक अदृश्य संगठनात्मक श्रमक विस्तृत चित्र अछि।

एहि लेखनमे छोट-छोट व्यवहारक जीवित विवरण अमूल्य अछि—ककरा सूचित करब, ककरा आग्रह करब, काज कोन सम्हारत, समधी पक्षक अपेक्षा केना पूरा करब। जखन ई सभ बहुत विस्तार पाबैत अछि, कथानकक केन्द्र शिथिल भऽ सकैत अछि। कथा आ आत्मसंस्मरणक सीमा एहि रचनामे जानि-बुझि धुँधला होइत बुझाइत अछि।

‘युगधर्म’ : घूरक आगि आ रिश्ताक शीतलता

प्रचण्ड जाड़, गाँवक घूर, सामूहिक बातचीत आ लालबिहारीक पारिवारिक उपेक्षा—एहि कथाक रचनात्मक विन्यास विशेष सफल अछि। बाहर आगिक ताप अछि, मुदा परिवारक भीतर कृतघ्नताक शीतलता। जेठ भाइक द्वारा भाइसभक शिक्षा-व्यवस्था आ जीवननिर्माणमे देल त्यागक बदला उपेक्षा भेटैत अछि।

बड़का दलानक सामूहिक दृश्य कथाक नैतिक संघर्षकेँ स्थानीय संवेदनामे मूर्त करैत अछि। अन्तिम मौन कथामे अनेक व्याख्याक अवसर छोड़ैत अछि; ई खुलापन लेखकक अपेक्षाकृत परिपक्व कथाशिल्पक उदाहरण अछि। सामाजिक हितक भाषा एतय कथाकारक टिप्पणीसँ बेसी दृश्य आ मौनक माध्यमसँ निर्मित होइत अछि।

‘घमण्डक फल’ : स्थानीय शक्ति आ सामाजिक प्रतिशोध

बच्चीबाबूक आर्थिक प्रभुत्व आ अपमानजनक व्यवहार हुनका सामाजिक रूपे अलग करैत अछि। मामूली विवाद न्यायालयी संघर्षमे बदलैत अछि आ समाजसँ समर्थन नहि भेटलापर हुनकर शक्ति क्षीण होइत अछि। कथाक नामहि अन्तक नैतिक दिशा सूचित करैत अछि।

ई रचना संक्षिप्त दृष्टान्तक निकट अछि: घमण्डक दण्ड। समाजक सामूहिक प्रतिशोध स्वयं केतबा न्यायसंगत अछि, एकर परीक्षण कथामे अधिक नहि अछि। तइयो धनबल आ सामाजिक प्रतिष्ठाक अन्तर स्पष्ट करबाक शक्ति एहि लघु कथामे अछि।

पद्यक पृथक विवेचन : गीत, शोक आ प्रतिरोध

समग्रक पद्यरचना बहुविध अछि। कतहु मुक्त-लयक सार्वजनिक वक्तव्य, कतहु दोहराइट टेकवला गीत, कतहु स्मृतिगीत, कतहु भगवती-आराधना, कतहु होलीक हास्य-विनोद भेटैत अछि। एखनक समीक्षात्मक कसौटीपर एकर समग्रकें ‘श्रेष्ठ काव्य’ वा ‘केवल प्रचारगीत’—कोनो एक नाम देब ठीक नहि। रचनाक उपलब्धि ओकर विषय, लय, भाषिक ऊर्जा आ सामुदायिक प्रयोजनक अलग-अलग परीक्षणसँ खुलैत अछि।

‘नव वर्षक सन्दर्भमे’ आ ‘अनन्त यात्राक यात्री’ : वियोगक सार्वजनिक मुद्रा प्रथम प्रकाशित रचनाक रूपमे चिह्नित ‘नव वर्षक सन्दर्भमे’ मे नववर्षक सामूहिक उल्लासक पृष्ठभूमिपर दिवङ्गत ललितबाबूक स्मरण अछि। समयक नव आरम्भ आ व्यक्तिक अनुपस्थितिक टकराहट कविताक मूल भाव-तनाव बनबैत अछि। ‘अनन्त यात्राक यात्री’ मे यात्री-नागार्जुनक सृजन-स्मृति आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रश्न एकत्र होइत अछि।

दूनू कवितामे निधन मात्र निजी शोक नहि, सांस्कृतिक ह्रासक अनुभूति अछि। तथापि कतिपय स्थलपर गुणगानक प्रत्यक्ष कथन काव्यात्मक रूपकक विकासकें सीमित करैत अछि। एहि सीमा बीच ऐतिहासिक संवेदना महत्त्वपूर्ण रहैत अछि।

‘पृथ्वीक भार’, ‘ई कीर्तिमान बनल’ आ ‘विडम्बना’ : आलोचनात्मक लोकस्वर ‘पृथ्वीक भार’ साहित्यिक संस्थाक अल्पायु, स्वार्थपरता आ कृतघ्नताक विरुद्ध आक्रोश दर्ज करैत अछि। ‘ई कीर्तिमान बनल’ सार्वजनिक सफलता आ श्रेय-लोलुपताक विचित्र सहअस्तित्वकें उजागर करैत अछि। ‘विडम्बना’ सामाजिक-राजनीतिक प्रसङ्गमे आलोचनात्मक भावकें तीव्र करैत अछि। एहि तीनू मे कविताक वक्ता समुदायसँ बाहरक निरीक्षक नहि; भीतरसँ आहत सहभागी छथि।

एहि रचनासभक काव्य-भाषा घोषणात्मक अछि। प्रत्यक्ष सम्बोधन आ प्रश्नवाचक लय वक्तव्यकें सार्वजनिक पाठक उपयुक्त बनबैत अछि, मुदा विशिष्ट बिम्बक सघनता हर ठाम नहि भेटैत अछि। लेखकक आक्रोशक ऐतिहासिक मूल्य आ एकर सौन्दर्यात्मक सीमा दुनू स्वीकार करब आवश्यक अछि।

‘नवगीत’ : भ्रष्टाचार-विरोधक टेक

‘नवगीत’ मे पुनरावृत्त टेक जन-उच्चारणक स्वर बनबैत अछि; नेता-अफसरक भ्रष्टाचार, महँगाई, असमान वितरण आ सामान्य लोकक विवशता विषय बनैत अछि। सम्पादकीय टिप्पणीमे एहि रचनाक गीतात्मक वर्गीकरणक प्रश्न सेहो उठल अछि। एहि प्रसङ्गसँ एक महत्त्वपूर्ण तथ्य स्पष्ट अछि: छन्दनाम आ विधानाम अपने-आप काव्य-रूपक प्रमाण नहि; रचनाक अन्तर्लय, टेक, आवृत्ति आ प्रस्तुति-क्षमता देखबाक चाही।

‘फगुआ’, ‘कनियाँ महारानीक आरती’ आ ‘फगुआक प्रेमोपहार’ : उत्सवक बहुवचन

‘फगुआ’ मे ऋतु, रङ्ग, भोजन, संगीत आ सामुदायिक मेलक दृश्य अछि। ‘कनियाँ महारानीक आरती’ मे धार्मिक आरतीक भंगिमा घरेलू प्रेम आ उत्सवी विनोदमे रूपान्तरित होइत अछि; धार्मिक शब्दावलीक लोक-हास्यात्मक प्रयोग ओकर प्रमुख कलात्मक युक्ति अछि। ‘फगुआक प्रेमोपहार’ विशिष्ट व्यक्तिसभ लेल लिखल लघु संबोधनक शृंखला अछि, जाहिमे उत्सवक अवसर सामाजिक सम्बन्धक दर्जाक माध्यम बनैत अछि।

एहि रचनासभक मूल्य केवल उच्च काव्यात्मक कसौटीपर नहि, मैथिली सार्वजनिक संस्कृतिक जीवित प्रयोगमे सेहो अछि। विशेषतः प्रेमोपहारक नामावली कोलकाताक सामाजिक जालक एक छोट अभिलेखक रूपमे देखल जा सकैत अछि।

‘एकटा साहित्यिक दीप’, ‘श्रद्धाञ्जलि’ आ ‘शोक गीत’ : स्मृति-संरक्षणक काव्य एहि कवितासभमे श्रद्धाञ्जलि मात्र भावुकता नहि, दिवङ्गत साहित्यसेवीक काजक सूची आ समाजक ऋणस्वीकार अछि। ‘एकटा साहित्यिक दीप’ मे दीपकक परम्परागत प्रतीक साहित्यिक साधनाक निरन्तरता व्यक्त करैत अछि। ‘श्रद्धाञ्जलि’ मे नामक अक्षरानुसार विन्यास शोकक औपचारिक शिल्प बनैत अछि। ‘शोक गीत’ सांस्कृतिक प्रतीक, आयोजन आ मैथिलीकें मान्यता दिलेबाक अभियानक स्मृति जोड़ैत अछि। एहि रचनासभमे संस्मरणात्मक जानकारी आ भावात्मक आवेगक मेल उपयोगी अछि, किन्तु काव्यक स्वायत्तता कतहु तथ्य-उल्लेखक भारसँ दबि जाइत अछि। एखनक पाठक लेल ई कवितासभ एकसाथ साहित्य आ स्मृतिलेख छथि।

‘भगवती-वन्दना’क दू रूप : लोकभक्ति आ आत्मपरीक्षण दू अलग स्थानपर संकलित भगवती-वन्दनामे शरणागतिक विन्यास, पापक आत्मस्वीकार, दुःखक अभिव्यक्ति आ मातृदेवीक प्रति भरोसाक स्वर अछि। एहिमे परम्परागत भक्तिकाव्यक भाषा अपन आधुनिक सामाजिक आ निजी व्यग्रताकें स्थान दैत अछि। दोहराइत सम्बोधन श्रोता-केंद्रित लय बनबैत अछि।

एहि कविता-द्वयक साहित्यिक महत्त्व मौलिक दार्शनिक सिद्धान्तमे नहि, भावक स्थानीय अनुकूलनमे अछि। निजी कातरता आ देवीक सार्वजनिक छविक बीच कविता लोकधार्मिक संवेदनाक सेतु बनैत अछि।

‘किछु लोक’, ‘ई नजि उचित विचार’ आ ‘मैथिलीक उक्ति : सन्तानक प्रति’ : असहमतिक कविता

‘किछु लोक’ मे विश्वशान्ति आ हिंसाक प्रश्न उठैत अछि; ‘ई नजि उचित विचार’ मे साहित्यिक-वैचारिक मतभेदक प्रत्यक्ष सम्बोधन अछि; ‘मैथिलीक उक्ति : सन्तानक

प्रति' मे मातृभाषा स्वयं आवाज पाबि अपन सन्तानकेँ प्रश्न करैत अछि। अन्तिम रचनामे भाषा-मानवीकरण विशेष प्रभावी शिल्पक सम्भावना खोलैत अछि।

एहि तीनू रचनामे सामुदायिक विवेककेँ जगायबाक दृढ़ आग्रह अछि। तथापि समसामयिक राजनीतिक कथनकेँ कविता मानि लेबाक बदला कवितात्मक जटिलता, विडम्बना आ अन्तरस्वरक कसौटीपर परखब जरूरी अछि। लेखकक निष्ठा निर्विवाद, मुदा निष्ठा स्वयं शिल्पक विकल्प नहि।

‘स्वीकार करू प्रेमालिङ्गन’ आ ‘मैथिली-महोत्सव’ : अलग-अलग सार्वजनिक क्षण ‘स्वीकार करू प्रेमालिङ्गन’ वसन्तक सौन्दर्य, घरेलू प्रणय आ फगुआक अवसरकेँ मिलबैत अछि। एकर अन्तर्गत अलग शीर्षक-प्रयोगक सम्पादकीय संकेत पाठपरम्पराक रुचिकर समस्या अछि: एक रचना भिन्न नामसँ प्रसारित होइत रहल हो सकैत अछि। ‘मैथिली-महोत्सव’ संविधानमे मैथिलीकेँ स्थान भेटबाक सामुदायिक उत्साहकेँ गीतक रूप दैत अछि।

पहिल कविता निजी आकर्षणक लोकशैली अछि, दोसर सार्वजनिक उपलब्धिक अभिनन्दनगीत। दुनूमे सरल टेक-आधारित भाषाक कारणे सामूहिक पाठक सुविधा अछि। तुलना करैत स्पष्ट होइत अछि जे लेखकक कविता निजी आ सामुदायिक दुनू समारोहमे स्थान लैत अछि।

काव्यशास्त्रीय आ आख्यानशास्त्रीय समेकित परीक्षण

नबोनारायण मिश्रक कथामे कथानक प्रायः व्यक्ति-आचरणक नैतिक फलतक पहुँचैत अछि। ‘एकटा पाकल आम’ मे बालकक भावनात्मक प्रश्न, ‘आदर्श विवाह’ मे सार्वजनिक प्रतिरोध आ ‘घमण्डक फल’ मे दण्ड-सिद्धि एक तरहक नैतिक परिणतिक तीन अलग मॉडल छथि। एहि तुलनामे ‘युगधर्म’ अपेक्षाकृत गम्भीर काव्यात्मक उपलब्धि अछि, कारण प्रकृति-वर्णन, स्थान-रचना आ पात्रक मौन मिलि जे अर्थ बनबैत अछि, से सुस्पष्ट उपदेशसँ अधिक बहुअर्थी अछि।

रसक दृष्टिँ विनोद, करुणा, आक्रोश आ भक्ति उपस्थित अछि। ‘एहनो होइत छै’क हास्य उलटप्रकाशपर, ‘परोपकारक फल’क करुणा नैतिक दृढ़तापर, ‘कनियाँ महारानीक आरती’क हास्य परम्परागत आरतीक रूपान्तरणपर आ ‘युगधर्म’क करुणा विपरीत ताप-बिम्बपर आधारित अछि। ध्वनिक दृष्टिँ सर्वाधिक प्रभाव ताहि क्षणमे अछि जतय लेखक निष्कर्षकें कहब नहि, दृश्यकें कार्य करबाक अवसर दैत छथि।

कथा-भाषामे संवादक मैथिलीय सहजता, सामाजिक सम्बोधन आ घरेलू व्यवहारक विवरण प्रमाणिकता उत्पन्न करैत अछि। मुदा लेखकक व्याख्यात्मक वाक्य अनेक ठाम पात्रक स्वतन्त्रता सीमित करैत अछि। अन्तिम नैतिक टिप्पणी घटैत तँ ई कथासभमे रहल विडम्बना अधिक गाढ़ भऽ सकैत छल। कवितामे गीतक लय कएक ठाम अपेक्षाकृत स्वाभाविक अछि, मुक्तछन्दमे वक्तव्यक दबाव अधिक देखाइत अछि। स्त्री-पात्रक दृष्टिसँ मूल्याङ्कन करैत द्वन्द्व अछि। एक दिस बालक द्वारा पितृक विभाजन-विरोध, दहेजक विरुद्ध युवकक प्रतिरोध आ मंचक महिलाक सक्रियताक उल्लेख प्रगतिशील सम्भावना खोलैत अछि; दोसर दिस कतिपय कथामे पत्नीकें झगड़ालू वा घरेलू दबावक प्रतीक रूपमे सीमित कएल गेल अछि। ई विरोधाभास लेखकक रचनाप्रक्रियामे परम्परा आ सुधारवादी नैतिकताक सहअस्तित्व स्पष्ट करैत अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन

मैथिली साहित्यक इतिहासक एक प्रबल प्रवाह विद्यापति, ज्योतिरीश्वर, आधुनिक गद्यक विकास, यात्री-नागार्जुन, हरिमोहन झा, राजकमल चौधरी आ नव साहित्यिक आन्दोलनसभक माध्यमसँ लिखल जाइत अछि। एहि इतिहासक केन्द्र रचनाक भाषा-शिल्प आ लेखकक वैचारिक नवान्वेषण रहैत अछि। नबोनारायण मिश्र एहि परम्परामे केवल एक नव रचनाकार नहि जोड़ैत छथि; ओ इतिहासक प्रश्न बदलि दैत छथि— साहित्यकें जीवित रखनिहार संस्था, प्रदर्शन, सम्पादक, पुस्तक-वितरण आ पाठकवर्गक भूमिका केतबा अछि?

कथाशिल्पक तुलनामे हरिमोहन झाक सामाजिक विनोद अधिक सतत मनोवैज्ञानिक व्यङ्ग्यक परिचय दैत अछि, जखन नबोनारायणक ‘एहनो होइत छै’ दृश्यगत भूलपर अवलम्बित लघु हास्य अछि। यात्री-नागार्जुनक जनधर्मी कवितामे भाषा आ व्यङ्ग्यक बहुअर्थकता तीव्र देखल जाइत अछि, जखन नबोनारायणक राजनीतिक कविता प्रायः तात्कालिक सार्वजनिक घोषणाक नजदीक रहैत अछि। ई तुलना प्रभाव वा अनुकरणक दावा नहि, रूपविधानक अन्तर बुझबाक आलोचनात्मक उपक्रम अछि।

महेन्द्र मलंगिया आ मैथिली रंगपरम्परामे नाट्यलेखनक अर्थ स्वतन्त्र शिल्प-सृजन अछि; कोकिल मञ्चक प्रसङ्गमे नबोनारायणक महत्त्व लिखित नाटकसँ आगाँ मंचन, संगठन आ दर्शक-समाजक निर्माणमे अछि। एकरा कमतर योगदान कहब साहित्येतिहासक एकांगी दृष्टि होयत। ‘मंच पर की खेलल गेल’ आ ‘मंच सम्भव कोना भेल’—दूनों प्रश्न बराबर आवश्यक छथि।

मैथिली साहित्यक प्रवासी भूगोलमे कोलकाता विशिष्ट केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। एहि नगरमे रोजगार, मुद्रण, उच्चशिक्षा, संस्था, पुस्तक-वितरण, आन्दोलन आ रंगमञ्चक सम्बन्ध मैथिली साहित्यक सार्वजनिक आकार बनबैत अछि। नबोनारायणक गद्य शहरकेँ केवल प्रवासक पीड़ा नहि, सांस्कृतिक श्रमिक आ सृजनात्मक सम्भावनाक केन्द्रक रूपमे देखबैत अछि। एहि आधारपर हुनकर संग्रह ‘मैथिली साहित्य’ आ ‘मैथिली आन्दोलन’क कृत्रिम विभाजन प्रश्नांकित करैत अछि।

विदेहक समानान्तर साहित्येतिहासक उपक्रममे उपेक्षित रचनाकार, लघु पत्रिका, लोकसाहित्य, रङ्गमञ्च आ भाषिक विविधताक अध्ययनकेँ महत्व देल जाइत अछि। एहि आलोचनात्मक रूपरेखाक संग समग्रक प्राकृतिक संवाद अछि, किन्तु दूनोंकें तादात्म्य मानल जाय से उचित नहि। ऐतिहासिक साक्ष्य, पाठ-स्वरूप आ सामाजिक प्रतिनिधित्वक मानदण्डपर प्रत्येक दावाक पुनः परीक्षण आवश्यक अछि।

साहित्यिक पत्रकारिता, संस्था आ इतिहासलेखनक प्रमाण-संरचना

समग्रमे 'मिथिला मिहिर', 'मिथिला दर्शन', 'आखर', 'कर्णामृत' आ अन्य पत्रिका मात्र शीर्षक रूपमे नहि, सामुदायिक स्मृतिसंस्थाक रूपमे आओत अछि। पत्रिकाक प्रकाशनक निरन्तरता, सम्पादकक परिश्रम, अंकक सामग्री आ पाठक-निर्माण मिलि भाषा आन्दोलनक अवयव बनैत अछि। जे साहित्यिक इतिहास छपल महान पोथी मात्र पढ़ैत अछि, ओ पत्रिकाक ई योगदान छीन लैत अछि।

तथापि ऐतिहासिक अनुशीलनमे विभिन्न प्रमाणकें एकसमान दर्जा नहि देब उचित: स्वयं लेखकक प्रत्यक्ष सहभागिता, साक्षात्कारदाताक स्मृति, संपादकक परिचय, कार्यक्रमक विवरण आ बादक स्मरण—सभक विश्वसनीयताक स्वरूप अलग अछि। एहि संग्रहक उपयोग करैत काल कालक्रम, वैकल्पिक स्मृति आ वास्तविक प्रकाशनक अस्तित्वक पृथक पुष्टि करबाक चाही। एहि सावधानीसँ संग्रहक महत्त्व कम नहि होइत; प्रमाणक श्रेणी अधिक स्पष्ट होइत अछि।

संस्थागत इतिहासक आलोचनात्मक पाठमे सामाजिक समावेशनक प्रश्न सेहो आवश्यक अछि। कोन कलाकारक नाम बार-बार आएल? स्त्री-अभिनेत्री, तकनीकी सहयोगी, स्वैच्छिक आयोजक, दलित-पिछड़ा समूह आ सामान्य दर्शकमे के कतेक दृश्य अछि? जे सामग्री नामोल्लेख करैत अछि, ओहि सामग्रीक मौन क्षेत्र सेहो इतिहासक विषय अछि। एहि दृष्टिँ समग्र भविष्यक सामाजिक-सांस्कृतिक शोध लेल प्रेरक काज करैत अछि।

सम्पादनक उपलब्धि आ पाठगत सावधानी

आशीष अनचिन्हारक सम्पादकीय श्रमक सर्वाधिक महत्त्व बिखरल सामग्रीक संरक्षण अछि। व्यक्तिगत लेख, स्मृतिग्रन्थ, पत्रिका, साक्षात्कार, पुरान प्रकाशन आ अप्रचुर उपलब्ध सामग्री एक संग भेटनाइ पाठक आ शोधार्थीक लेल बड़ी सुविधा अछि।

सम्पादक भूमिकामे ई स्वीकार सेहो करैत छथि जे सामग्रीक मूल प्रकाशन-सूचना सर्वत्र समान रूपे उपलब्ध नहि आ भविष्यत् रचना जुड़ब सम्भव अछि।

समालोचनात्मक संस्करणक अगिला चरणमे रचनाक प्रथम प्रकाशन-वर्ष, पत्रिकाक अङ्क, मूल शीर्षकक पाठभेद, लेखन-तिथि आ पुनर्प्रकाशनक जानकारी एकरूप ढंगसँ जुटाओल जाय। भिन्न शीर्षक अन्तर्गत उपलब्ध समान कविताक सम्बन्ध, रचनाक क्रम, एकहि प्रसङ्गक अनेक वृत्तान्त आ संस्थागत तिथिक भिन्न साक्ष्यक तुलनात्मक निबन्धन विशेष उपयोगी होयत।

एहि समीक्षामे शब्दशः उद्धरणक अपेक्षा पात्र, घटनाक्रम, साक्षात्कार-विषय आ विचारक सन्दर्भसिद्ध विवेचन अपनाओल गेल अछि। उपलब्ध रचनासभक पाठरूप सर्वत्र समान रूपे स्थिर नहि रहलासँ असन्दिग्ध मूल शब्दावलीक पूर्ण निश्चय बिना प्रत्यक्ष उद्धरण प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। एहि संयमक उद्देश्य इतिहासक विश्वसनीयता सुरक्षित रखब अछि।

समग्र मूल्याङ्कन : उपलब्धि, सीमा आ भविष्यक सम्भावना

नबोनारायण मिश्रक साहित्यिक उपलब्धिक तीन प्रमुख स्तर अछि। पहिल, मैथिली सांस्कृतिक संस्थाक श्रम आ कार्यक्रमक इतिहासकें शब्द देब; दोसर, लघु कथा आ सामाजिक प्रसङ्गमे नैतिक विरोधाभासक प्रभावी स्थितिसभ निर्माण करब; तेसर, कविता आ गीतक माध्यमसँ भाषिक आ सामुदायिक भावनाकें स्वर देब। एहि तीनूमे सबसँ विशिष्ट स्थान आलेख आ साक्षात्कारक अछि, कारण ओतय लेखकक प्रत्यक्ष सहभागिता ओहि संसारक उपेक्षित इतिहास खोलैत अछि।

कथा-खण्डमे ‘एकटा पाकल आम’क संक्षिप्त नैतिक प्रश्न, ‘एहनो होइत छै’क हँसी, ‘आदर्श विवाह’क प्रतिरोध, ‘परोपकारक फल’क दुःखान्त जिद आ ‘युगधर्म’क मौन विशेष ध्यान खींचैत अछि। ‘यात्राक फेरी’ आ ‘सुन्दर-संयोग’ मे जीवनानुभवक विस्तार रोचक अछि, मुदा कथाशिल्पक कसाव कम पड़ैत अछि। पद्यक तीव्र सार्वजनिकता ऐतिहासिक साक्ष्यक रूपमे प्रभावी अछि; काव्यरूपक जटिलता सभ ठाम समान नहि।

समग्रक वैचारिक सीमा मुख्यतः नीतिपरक सहज समाधान, श्रद्धाभावक अतिक्रमण आ सामाजिक सम्बन्धक कतिपय पारम्परिक रूढ़ रूपरेखामे देखाइत अछि। लेखकक

विचारमे प्रबल मातृभाषा-निष्ठा अछि, मुदा साहित्यिक असहमति, वैकल्पिक दृष्टि आ हाशियाक अनुभूतिक लेल अधिक स्थान होइत तँ चित्र आरो व्यापक बनित। एहि आलोचनाक उद्देश्य अवमूल्यन नहि, योगदानक सही रूपरेखा बनायब अछि।

अन्ततः ‘नबोनारायण मिश्र समग्र’ एकटा लेखकक स्वतंत्र साहित्यिक मापकसँ बेशी मैथिली भाषिक सार्वजनिक जीवनक सामूहिक आत्मकथाक अंश अछि। मैथिली साहित्येतिहास जखन शहरक मंच, संस्थाक बैठक, पत्रिकाक सम्पादक, अघोषित श्रमिक, गाँवक पाठक, लोककथा आ भाषिक आन्दोलनक आपसी सम्बन्धमे लिखल जाएत, तखन एहि संग्रहक वास्तविक मूल्य स्पष्ट होयत। ई पोथी अतीतक स्थिर स्मारक नहि, भविष्यक शोधक प्रश्नावली सेहो अछि।

विस्तृत सन्दर्भसूची

मिश्र, नबोनारायण। नबोनारायण मिश्र समग्र। सम्पादक : आशीष अनचिन्हार। मैथिली, २०२६। एहि शोधक मूल आधारग्रन्थ।

अनचिन्हार, आशीष। ‘यात्रा : एक एहन लेखक केर जिनका लेखक बनबाक लोल नहि छन्हि’। नबोनारायण मिश्र समग्रमेक सम्पादकीय भूमिका, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘किशोरीकान्त मिश्रसँ साक्षात्कार’; ‘रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार’; ‘डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकसँ साक्षात्कार’। नबोनारायण मिश्र समग्र, सम्पादक : आशीष अनचिन्हार, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘हमरा नजरिमे : श्री रामलोचन ठाकुर’; ‘युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास’; ‘युगप्रवर्तक राजनन्दन लाल दास’; ‘मिथिला-मैथिलीक प्रबल पक्षधर : प्रो. प्रबोध बाबू’; ‘सर्वगुण सम्पन्न सागरजी’। नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘मिथिला विकास परिषद्, कोलकाता : जेना हम देखल’; ‘मैथिली आन्दोलनक नायक : पीताम्बर पाठक’; ‘कलकत्ताक मैथिली आन्दोलन आ मिथिला दर्शन’; ‘स्मृति आखर’; ‘प्रसङ्ग : बाबू साहेब चौधरीक’। नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘मैथिली लोककथा’; ‘मिथिला मिहिर आ सम्पादकजी’; ‘अनन्य मैथिली हितैषी अजय सिंह’; ‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता’; ‘मैथिली रङ्गमञ्च आ कोलकाता’। नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘एहनो होइत छै’; ‘एकटा पाकल आम’; ‘यात्राक फेरी’; ‘कालचक्र’; ‘आदर्श विवाह’; ‘परोपकारक फल’; ‘करोड़पतिक कर्मठता’; ‘मैथिलीक मर्यादा’; ‘सुन्दर-संयोग’; ‘युगधर्म’; ‘घमण्डक फल’। कथा-खण्ड, नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘नव वर्षक सन्दर्भमे’; ‘पृथ्वीक भार’; ‘ई कीर्तिमान बनल’; ‘नवगीत’; ‘विडम्बना’; ‘अनन्त यात्राक यात्री’; ‘फगुआ’; ‘कनियाँ महारानीक आरती’; ‘एकटा साहित्यिक दीप’; ‘श्रद्धाञ्जलि’। पद्य-खण्ड, नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

मिश्र, नबोनारायण। ‘भगवती-वन्दना’ (दू रचना); ‘किछु लोक’; ‘स्वीकार करू प्रेमालिङ्गन’; ‘ई नजि उचित विचार’; ‘मैथिलीक उक्ति : सन्तानक प्रति’; ‘मैथिली-महोत्सव’; ‘शोक गीत’; ‘फगुआक प्रेमोपहार’। पद्य-खण्ड, नबोनारायण मिश्र समग्र, २०२६।

विदेह। ‘नबोनारायण मिश्र समग्र’क ग्रन्थ-सूची प्रविष्टि। विदेह मैथिली पोथीक अभिलेखागार। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह। ‘नबोनारायण मिश्र समग्र’क गद्य-सूची प्रविष्टि। विदेह, गद्य-संसाधन। <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>

विदेह। ‘नबोनारायण मिश्र’क लेखक-परिचय आ रङ्गमञ्च-संबन्धी जानकारी। विदेह रत्न-सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/ratna.htm>

विदेह। मैथिली साहित्य, नाटक, लोकसाहित्य, भाषा आ आलोचनासम्बन्धी विदेह शोध-सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

विदेह। ‘विदेह शोध-लेख : अंक १ सँ ४५१ धरि’। शोध-संहति, आलोचनात्मक आ साहित्येतिहास-संबन्धी प्रविष्टिसभ।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

मिश्र, नबोनारायण। ‘हमर संस्मरण रमणजीक संग’। विदेह, अङ्क ४४८, १५ अगस्त २०२६; विदेह शोध-सूचीमे दर्ज स्वतंत्र रचना।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

विदेह। ‘रामलोचन ठाकुर विशेषांक’। अङ्क ३१९, १ अप्रैल २०२१; समग्रमे पुनर्संकलित लेखकक आलेखक प्रकाशन-सूचनाक अनुसार। विदेहक अङ्क-अभिलेख।

विदेह। ‘राजनन्दन लाल दास विशेषांक’। अङ्क ३३३, १ नवम्बर २०२१; समग्रमे पुनर्संकलित आलेखक प्रकाशन-सूचनाक अनुसार। विदेहक अङ्क-अभिलेख।

विदेह। ‘लक्ष्मण झा सागर विशेषांक’। अङ्क ३८२, १५ नवम्बर २०२३; समग्रमे पुनर्संकलित आलेखक प्रकाशन-सूचनाक अनुसार। विदेहक अङ्क-अभिलेख।

विदेह। ‘मिथिला विकास परिषद् विशेषांक’। अङ्क ४०८, १५ दिसम्बर २०२४; समग्रमे पुनर्संकलित आलेखक प्रकाशन-सूचनाक अनुसार। विदेहक अङ्क-अभिलेख।

विदेह। मैथिली नाट्यमञ्चक आलोचनात्मक विवेचनासम्बन्धी लेख-शृंखला; विदेह शोध-सूचीमे निर्दिष्ट कुणाल-कृत नाटकपर अध्ययन।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

१.९. नित नवल आशीष अनचिन्हार — स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

व्यक्तित्व-कृतित्वक बहुस्वरीय पाठ

समीक्ष्य पोथी स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर—व्यक्तित्व-कृतित्व | सम्पादक : आशीष अनचिन्हार | शशि प्रकाशन, सुपौल | प्रथम संस्करण : २०२० | ISBN 978-81-948818-0-3

सार

आशीष अनचिन्हार-सम्पादित स्वतंत्रचेता साहित्यिक व्यक्तित्वक सामान्य प्रशस्ति-पोथी नहि, बल्कि अरविन्द ठाकुरक रचना, सामाजिक उपस्थिति, विचारगत असहमति आ समकालीन स्वीकार्यताक अनेक स्वरकेँ एकत्र करएवला आलोचनात्मक दस्तावेज अछि। विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांकसँ विकसित एहि संकलनमे कथा, कविता आ गजलपर केन्द्रित समीक्षा; रचनाकारक साक्षात्कार; संस्मरण; आत्मकथ्य; आ संक्षिप्त जीवन-वृत्त एक-दोसराक संग संवाद करैत अछि। एतए साहित्यिक मूल्यक संग साहित्यिक व्यक्तित्वक निर्माण-प्रक्रिया सेहो विचारणीय होइत अछि। प्रस्तुत अध्ययन संकलनक सम्पादकीय अभिकल्पनाकेँ खोलैत, अन्हारक विरोध मे कथासंग्रहक राजनीतिक-सामाजिक आख्यान-शिल्प, परती टूटि रहल अछि केर लोकाभिमुख कविता-दृष्टि आ बहुरूपिया प्रदेश मे क गजल-स्वरूपसम्बन्धी बहसक पृथक पाठविश्लेषण करैत अछि। साहित्यिक इतिहासमे ग्राम्य जीवन, वैचारिक प्रतिरोध, शैलीगत प्रयोग आ समानान्तर प्रकाशन-संस्कृतिक पारस्परिक सम्बन्धक परीक्षण एहि निबन्धक प्रधान उद्देश्य अछि। समग्र मूल्याङ्कनक निष्कर्ष ई अछि जे संग्रहक सर्वाधिक महत्त्व एक गोट लेखकक निर्विवाद प्रतिमा गढ़बामे नहि, अपितु अपन भीतर विद्यमान सहमति, असहमति आ आलोचनात्मक अपूर्णताकेँ सुरक्षित रखबामे अछि।

बीजशब्द : अरविन्द ठाकुर; स्वतंत्रचेता; आशीष अनचिन्हार; विदेह; कथा-समीक्षा; ग्राम्य चेतना; मैथिली गजल; साम्प्रदायिकता; प्रतिरोध; साहित्यिक इतिहास।

पोथीक स्वरूप आ समीक्षाक आधार

स्वतंत्रचेता केँ अरविन्द ठाकुरक मौलिक कविताक, कथाक अथवा गजलक नवा संग्रह मानि पढ़नाइ मूलभूत भूल हएत। ई हुनक रचनात्मक जीवनपर लिखल अनेक आलोचकक मूल्याङ्कन, रचनाकारक अपन बयान आ निकट सम्पर्कमे रहल लोकनिक स्मृति मिलाकए निर्मित एकटा सम्पादित पोथी थिक। एकरा पढ़ैत आलोचककेँ दुइ स्तरपर निरन्तर ध्यान राखए पड़ैत अछि—रचनाकारक कृतित्वक मूल्य आ ओहि कृतित्वक चारू दिस निर्मित आलोचनात्मक धारणाक मूल्य। पहिल स्तरपर प्रश्न उठैत अछि जे कथामे समाजक कोन द्वन्द्व, कवितामे केहन लोकभाषा आ गजलमे कोन रूपगत अनुशासन अछि। दोसर स्तरपर पूछल जाइत अछि जे आलोचक लोकनि एहि सभकेँ कोन सैद्धान्तिक पूर्वधारणासँ देखैत छथि, आ रचनाकारक प्रति निकटतासँ समीक्षा कतए समर्थ आ कतए शिथिल बनैत अछि।

पोथीक मूल सम्पादकीय तथ्य साहित्यिक इतिहास लेल निर्णायक अछि। विदेहक पहिने प्रकाशित अरविन्द ठाकुर विशेषांक, जे २०१५ मे निकलल छल, ओकर आधारपर २०२० मे ई रूप विकसित भेल। सम्पादकीय भूमिकामे किछु मूल रचना हटाकए तकर स्थानपर परवर्ती समीक्षा आ संस्मरण जोड़बाक बात स्पष्ट कएल गेल अछि। अर्थात् पत्रिकाक मूल विशेषांक आ पोथी पूर्णतः एक समान पाठ-वस्तु नहि अछि। एकरा केवल पुनर्मुद्रण कहला सँ पाठ-चयनक सक्रिय सम्पादकीय भूमिका अदृश्य भऽ जायत। साहित्यक दस्तावेजीकरणमे ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ संकलनक स्वरूप स्वयं समयक संग लेखकक स्वागत, पुनर्पाठ आ मूल्याङ्कनक बदलैत प्रक्रिया देखबैत अछि। एहि अध्ययनमे संकलनक विषयक्रम आ विदेहमे प्रकाशित मूल आलोचनात्मक आलेखकेँ पारस्परिक सन्दर्भमे राखल गेल अछि। जतय संकलित आलेख कोनो मूल कृतिक पक्षमे दाबी करैत अछि, ओतए दाबीकेँ प्रत्यक्ष रूपसँ प्रमाणित रचना-पाठक विकल्प नहि मानल गेल अछि। ई सावधानी आवश्यक अछि; रचनाकारक महत्त्वक तर्क आलोचकक प्रभावशाली वाक्यसँ नहि, वर्णित कथा-विन्यास, पात्र-व्यवस्था, भाषिक बनावट आ आलोचकसभक पारस्परिक असहमतिसँ पुष्ट होइत अछि।

सम्पादकीय संरचना : जीवनीक स्थानपर बहुस्वरीय आलोचनात्मक अभिलेख सम्पादक संग्रहकें आलोचना, साक्षात्कार, संस्मरण, आत्मकथ्य आ संक्षिप्त जीवन-वृत्तक क्रममे राखैत छथि। आलोचनाक भीतर कथा-विषयक विवेचन, कविताक सामाजिक प्रयोजन, गजल-चिन्तन आ व्यक्तित्व-कृतित्व विषयक लेख संग-संग रहैत अछि। तकर बाद मुन्नाजी द्वारा लेल गेल साक्षात्कार, बिनय भूषण, शैलेन्द्र आनन्द, अजित आजाद आ आन संस्मरणकारक स्मृति, फेर रचनाकारक आत्मकथ्य आ जीवन-वृत्त अबैत अछि। एहि क्रमसँ रचनाकारक बाहरी मूल्याङ्कनसँ भीतरी आत्मविवेचन धरि एकटा पाठकीय यात्रा तैयार होइत अछि।

ई योजना रचनात्मक लेखककें इतिहासक सामग्री बनबैत अछि, मुदा अपन संग किछु जोखिम सेहो अनैत अछि। संस्मरणमे निकटता, श्रद्धा आ चयनित स्मृति प्रधान रहैत अछि; आलोचनामे मूल्यांकनक कसौटी प्रमुख होएबाक चाही। दुनूकें एकहि भावमे पढ़ला सँ समालोचनाक कठोरता कम पड़ि सकैत अछि। मुदा संस्मरणक माध्यमसँ समाज, सम्पादन, पत्रिका-प्रकाशन, कृषि-संस्कार आ कोसी क्षेत्रक साहित्यिक सम्बन्धक जे अंश प्रकट होइत अछि, से रचना-इतिहासक शुष्क कालक्रमसँ नहि भेटि सकैत अछि। ग्रन्थक सबलता एहि विधागत भिन्नताकें एक जिल्दमे बचा रखब अछि। सम्पादकीय भूमिका रचनाकारक आलोचक-चिन्तक रूपकें पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहि भेटबाक अभाव सेहो स्वीकार करैत अछि। ई स्वीकारोक्ति पोथीक सीमाकें छिपबैत नहि, बल्कि शोधक अगिला प्रश्न तय करैत अछि। जाहि लेखकक कथा आ गजलपर अनेक टिप्पणी सुरक्षित हो, मुदा हुनक स्वतन्त्र समालोचनात्मक चिन्तन अपेक्षाकृत कम उपस्थित हो, ताहि लेखकक विचार-संसारक चित्र अधूर रहब स्वाभाविक अछि। एतए पोथीक आत्म-सीमा साहित्यिक इतिहासकार लेल नवा अनुसन्धानक आधार बनैत अछि।

प्रतिरोधक व्याकरण : अन्हार एकटा घटना नहि, व्यवस्था थिक

अरविन्द ठाकुरक कथासंसारक आलोचनात्मक पाठमे अन्हार शब्दकेँ सामान्य निराशा अथवा प्राकृतिक रातिक प्रतीक मानल नहि जा सकैत अछि। ई सत्ता, सामाजिक पूर्वग्रह, जाति-सम्प्रदाय आधारित विभाजन, न्यायिक असमानता आ व्यक्तिगत अकर्मण्यताक सम्मिलित रूप लैत अछि। ओहि अर्थमे कथासंग्रह अन्हारक विरोध मे एकटा रूपकात्मक शीर्षक मात्र नहि; विभिन्न सामाजिक अवस्थाकेँ बुनएवला वैचारिक सूत्र अछि। डा. योगानन्द झा, गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष चमनक मूल्याङ्कन अलग-अलग रीतिसँ एहि सूत्रकेँ चिन्हैत अछि, मुदा लेखसभ एकहि निर्णयपर नहि पहुँचैत अछि।

अन्हारक विरोधक एक दिशा सार्वजनिक जीवनक नैतिक अधःपतन अछि; दोसर दिशा ओ अधःपतनक कारणे व्यक्तिक भीतर जगैत संशय, भय आ असहायता। एतए प्रतिरोधक अर्थ केवल घोषणात्मक आक्रोश नहि होइछ। कथाक पात्र जे परिस्थिति बुझैत छथि, ओहि परिस्थिति सँ निकलबाक हुनक सामर्थ्य कतेक अछि—ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि। साहित्यिक उपलब्धि तखने उत्पन्न होइत अछि जखन लेखक एक पक्षकेँ सज्जन आ दोसरकेँ दुष्ट चिन्हित कय दैत नहि, बल्कि सामाजिक तन्त्र एहन विभाजन कोना उत्पन्न करैत अछि से सेहो देखबैत अछि।

संकलनमे एहन अवसर सेहो भेटैत अछि जतए आलोचक कथाक विचार-निष्ठाकेँ अधिक महत्त्व दैत छथि आ जटिल चरित्र अथवा कलात्मक अनिर्णयक सम्भावनाकेँ कम स्थान दैत छथि। प्रस्तुत निबन्धक मूल्यांकन ई अछि जे प्रतिरोध-केन्द्रित कथा सामाजिक रूपसँ आवश्यक तखन होइत अछि, जखन ओकर कारण-सम्बन्ध आ कलात्मक प्रमाण विश्वसनीय रहए। नीतिपरक उत्तर पहिनेसँ तय करब कथा केँ विचारक उदाहरणमे सीमित कऽ सकैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : खिस्सा सियार यार आ राजनीतिक व्यंग्य

खिस्सा सियार यार शीर्षकहि सँ सत्ता-राजनीतिक मानवीय चरित्रकेँ पशु-रूपकक माध्यमसँ देखबाक संकेत दैत अछि। डा. योगानन्द झा कथामे पार्टी-आधारित स्वार्थ,

टिकट-प्राप्तिक आकांक्षा, चाटुकारिता आ राजनीतिक अवसरवादक अनेक चरित्रक उल्लेख करैत छथि। आशीष चमन ई राजनीतिक समयकेँ लालटेन-युगक पूर्वपीठिकासँ जोड़ैत छथि; गजेन्द्र ठाकुरक विवेचनमे सार्वजनिक नैतिकता आ दलगत व्यवहारक अन्तर उभरैत अछि। एहि त्रिसंवादी पाठसँ कथा केवल दल विशेषक व्यंग्य नहि, राजनीतिक संस्कृतिक विस्तृत संकट बनैत अछि।

कथाक मुख्य व्यंग्य-यन्त्र पात्रक कहनामे आ करनामे दूरी बनब अछि। सिद्धान्तक बचन देनिहार नेता निजी पद, अपन संतानक रोजगार, सिफारिश अथवा समर्थन-समीकरणक समय अलग व्यवहार करैत छथि। एहि द्वैधकेँ सहज विडम्बनामे बदलि देबाक कारणे कथा सार्वजनिक भाषाक अविश्वसनीयता उजागर करैत अछि। मुदा पात्रक संख्या आ रूपकक स्पष्टता कथाकेँ कखनो-कखनो सामाजिक प्रकारचित्र बनएबाक खतरा दैत अछि। जँ प्रत्येक पात्र केवल राजनीतिक दुर्गुणक प्रतिनिधि बनि रहि जाए, तखन ओकर स्वतन्त्र मनोविज्ञान ओझराए सकैत अछि।

मैथिली व्यंग्य परम्परामे हरिमोहन झाक विनोदक संग एकर तुलना उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा दुनूकेँ एक किसिमक हास्य कहि देब अनुचित हएत। हरिमोहन झाक व्यंग्यमे सामाजिक संस्कार, शास्त्रीय उपहास आ व्यक्तित्वक घरेलू विडम्बना प्रमुख रूपसँ चिन्हल जाइत अछि; एहि कथाक समीक्षासँ उभरैत राजनीतिक विनोद अधिक प्रत्यक्ष, अवसरवाद-विरोधी आ सार्वजनिक सत्ता-केन्द्रित अछि। एतए हँसी सुधरल समाजक विश्वासघातकेँ चिन्हबाक माध्यम बनैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : पियासल पानि आ स्त्रीक विरुद्ध नैतिक कसौटी

पियासल पानि संग्रहक सभसँ निर्णायक कथामे सँ एक बुझाइत अछि।

नारायणपुरवालीक जीवनक सामाजिक निर्णय पति-सत्ता, यौन-संयमक दोहरा मानदण्ड, आर्थिक निर्भरता आ अफवाहक सहायतासँ आकार पबैत अछि। डा. योगानन्द झा कथामे स्त्रीक मानसिक पीड़ा आ सामूहिक अत्याचारक प्रक्रिया केन्द्रमे रखैत छथि; आशीष चमन एहि चरित्रकेँ देखैत समाजक पाखण्डपर तीखा प्रश्न उठबैत छथि।

पुरुषक अक्षमता छिपाएल जाइत अछि आ स्त्रीक व्यवहार सार्वजनिक आरोपक वस्तु बनैत अछि—ई कथा-विन्यासक नैतिक केन्द्र अछि।

विश्लेषणक दृष्टिसँ ई कहानी केवल करुणा जगएबाक प्रयत्न नहि। कथाक ज्ञान-संरचना अहम अछि : पाठक आ पात्र आरम्भमे नारायणपुरवाली विषयमे जे मानि लैत छथि, बादक जानकारी ओकरा उलटि दैत अछि। ई उलटफेर स्त्री-विरोधी समाजक निर्णय-प्रक्रिया स्वयं संदिग्ध बना दैत अछि। कथा सत्यकेँ देरिसँ प्रकट कय पाठकक पूर्वनिर्मित निष्कर्षपर प्रश्नचिह्न लगबैत अछि। एहि अर्थमे ओकर शिल्प ओहि सामाजिक आलोचनाक अङ्ग बनि जाइत अछि, जे बात ओ कहए चाहैत अछि।

मुदा प्रश्न एतहि समाप्त नहि होइत अछि। स्त्रीक निर्दोषता यदि अन्ततः पुरुषक जैविक असमर्थतासँ सिद्ध होइत अछि तँ स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छा अथवा स्वाधीन अस्तित्वक अपन बलपर स्थापना कतेक दूर धरि भेल? सामाजिक आरोपक खण्डन प्रभावशाली अछि, मुदा नारीक अपने स्वर आ निर्णय-क्षमताक पूरा विस्तार एखन आलोचनात्मक जाँचक विषय बनल रहैत अछि। एहन दोहरा मूल्यांकन कथाकेँ स्त्री-विमर्शक सरलीकृत विजय-कथा होएबाक अपेक्षा अधिक अर्थवान बनबैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : शीर्षक कथा आ साम्प्रदायिक सद्भावक कठिन राजनीति अन्हारक विरोध मे शीर्षक कथा हिन्दू-मुसलमानक बीच स्थापित रोजमर्राक सामाजिक सम्बन्धकेँ राजनीतिक उत्तेजनाक विरुद्ध रखैत अछि। डा. योगानन्द झाक विवेचनमे रंजनक मुस्लिम बस्तीमे प्रवेश, अलीमुद्दीनक अपराधपर क्षोभ आ साम्प्रदायिक विभाजन करएवला तत्त्वक मंशा एकहि घटनाक परस्पर विरोधी अर्थ बनैत अछि। एतए सामाजिक सम्बन्ध धार्मिक पहिचानक पूर्ववर्ती, जीवित संरचना रूपमे उपस्थित अछि; हिंसा ओहि संरचनाकेँ भंग करबाक राजनीतिक प्रयास बनि जाइत अछि।

कथा-संरचनाक मुख्य तनाव ई अछि जे अपराधक जिम्मेदारी व्यक्तिक आ समुदायपर आरोपित सामूहिक कलंक दुनू एक नहि अछि। अपराधीकेँ बचाएब अथवा दोष समुदायपर टाँगब—दुनू व्यवस्था अन्यायक रूप अछि। साहित्यिक रूपसँ एहन स्थिति

सफल तखन होइत अछि जखन पात्र सभक भय, क्रोध, आत्मीयता आ नैतिक निर्णय समकालिक रूपसँ स्पष्ट हो। आलोचकसभक पाठ एहि तनावकेँ सामाजिक समरसताक आधार मानैत अछि।

फेरो साम्प्रदायिकता-विरोधक पाठमे करुण अन्त अथवा उदात्त कथन मात्रे पर्याप्त नहि। ई देखब आवश्यक अछि जे स्थानीय सत्ता, बाजार, अफवाह आ जनमत कोना हिंसाक सम्भावना तैयार करैत अछि। कथा जे आपसी भाइचाराकेँ केन्द्रमे रखैत अछि, ओकर राजनैतिक सबलता एही जटिल यथार्थक समावेशमे अछि; अन्यथा सद्भावक संदेश ओकर कथात्मक अन्तर्दृष्टिपर भारी पड़ि सकैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : ढाँचा-१९९२ आ प्रजातंत्र परिकथाक विरोधी युक्ति ढाँचा-१९९२ मे भारतीय सार्वजनिक जीवनक एक ऐतिहासिक विदारक क्षणक प्रसंग आएल अछि। आशीष चमन एहि कथाक पत्र-शैलीकेँ विशेष महत्त्व दैत छथि; डा. योगानन्द झा ओहि घटनाक सामाजिक-मानसिक प्रभाव आ साम्प्रदायिक विश्वासक क्षतिपर बल दैत छथि। पत्ररूपकेँ कथात्मक माध्यम बनाओलासँ एकटा पैघ राजनैतिक घटना व्यक्तिक चिन्ता, अपराधबोध आ निजी दृष्टिकोणसँ देखल जा सकैत अछि। एहि विधामे पत्र लिखनिहारक सीमित ज्ञान स्वयं अर्थक साधन बनैत अछि।

प्रजातंत्र परिकथा मे सार्वजनिक आन्दोलन, चिकित्सकक हत्या, प्रशासनिक प्रतिक्रिया आ आन्दोलनक नैतिक अपहरणक चक्र केन्द्रमे अछि। समीक्षकसभक वर्णनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मूल अपराध, तकर विरोधमे उठल भीड़, आ भीड़क भीतर अवसरसँ लाभ उठाबएवला समूहक क्रिया एक-दोसरसँ अलग अछि। ई कहानी सामूहिक क्रियाशीलताक नैतिक अस्पष्टता देखबैत अछि; हर जुलूस न्यायोचित नहि होइत अछि, आ प्रशासनक हर दमन सर्वजनहितक रक्षाक नामपर सही नहि ठहराएल जा सकैत अछि।

दुनू कथाकेँ साथ पढ़ला पर लोकतन्त्रक एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न निकलैत अछि—जनताक सामूहिक स्वर कखन न्यायपूर्ण प्रतिरोध अछि आ कखन राजनीतिक स्वार्थक

उपकरण? पहिल कथामे साम्प्रदायिक हिंसाक स्मृति निजी वाणीमे प्रवेश करैत अछि, दोसरमे निजी अपराध सार्वजनिक क्रियाक अवसर बनैत अछि। ई उलट सम्बन्ध कथादुनियाकें वैचारिक रूपसँ गहीर बनबैत अछि। अन्यथा अलग-अलग प्रसंगमे पढ़ल कथासभ परस्पर असम्बद्ध राजनैतिक टिप्पणीक रूपमे बुझाए सकैत छल।

पृथक पाठविश्लेषण : मूस आ अय्यासी—श्रम, लज्जा आ आत्मप्रवंचना
मूस आ अय्यासी कथापर आशीष चमनक व्याख्या रोचक अछि, किएक तँ ओ दुनूकें अलग-अलग नीतिक उदाहरण मानि नहि, एक-दोसरक सम्भावित पूरक आख्यान मानैत छथि। एक कथामे मध्यवर्गीय उपभोगक इच्छा घरक आवश्यकतासँ टकराइत अछि; दोसरमे ऋण, पैतृक सम्पत्ति, रोजगारक असमर्थता आ उत्पादनक प्रश्न उभरैत अछि। एहि क्रममे सुखक तात्कालिक उपभोग आ श्रमक दीर्घकालिक सार्थकता बीच संघर्ष स्पष्ट होइत अछि।

मूसक प्रतीक-रचना एतए विशेष महत्त्वक अछि। आलोचनात्मक लेखसभ एहि जीवकें उद्योगशील जीवनक बिम्ब आ सर्पकें श्रमफलपर आधिपत्य जमएवला बलक बिम्ब मानैत अछि। मुदा रूपक एक अर्थमे सीमित नहि : मूसक जीवट व्यक्ति कें कर्महीनताक आत्म-बोध धरि पहुँचबैत अछि। एतए राजनीतिक अर्थ आ आत्मनैतिक अर्थ साथ-साथ उपस्थित अछि। जे पात्र शोषक संरचनाकें देखैत अछि, ओकरा अपन आचरणक उत्तरदायित्वसँ मुक्त नहि कएल जा सकैत अछि।

एहि कथायुग्मक बल दृष्टान्तात्मक अन्तिम शिक्षामे नहि, अपितु ओहि मनोवैज्ञानिक अन्तरमे अछि जतए पात्र अपन विफलता लेल परिस्थितिकें जिम्मेदार ठहरबैत-ठहरबैत अपनही निर्णयक आलोचक बनि उठैत अछि। तथापि श्रमकें नैतिक समाधान घोषित करैत सामाजिक पूँजी, संसाधनक असमान उपलब्धता आ बेरोजगारीक संरचनात्मक बाधाकें ओझराए देबाक खतरा अछि। एकर सजग विवेचन उपदेशात्मक कथा आ सामाजिक यथार्थवादक बीच आवश्यक दूरी बचा सकैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : जातिगत अवसरवाद, गिरगिट आ न्यायिक विष बैकबा-फोड़बा आ अथ गिरगिट गाथा मे राजनीतिक पहिचानक अस्थिरता आ संगठित स्वार्थक खेल प्रमुख अछि। बैकबा-फोड़बामे व्यक्तिगत उधारीक विवाद जातीय सामूहिक संघर्षक रूप लैत अछि; अथ गिरगिट गाथामे आपसी शत्रुता निर्वाचनी गणितक समय गठजोड़मे बदलि जाइत अछि। ई दुनू स्थिति संकेत करैत अछि जे संगठनक नामपर उद्धोषित विचारधारा भित्रे-भित्र निज लाभक हिसाबसँ संचालित होइत अछि। गिरगिटक रूपक अपन रङ्ग बदलैत राजनीतिक देहकेँ दृश्य बनबैत अछि।

एहि कथा-श्रेणीक विशेषता अछि जे जातिक उल्लेख सामाजिक अन्यायक पहचान लेल आवश्यक रहितो, ओकर प्रयोग सदिखन सद्भावनापूर्ण नहि होइत अछि। आलोच्य प्रसंगमे जातिगत अपमानक भाषा आर्थिक हितक संघर्षकेँ दू समूहक झगड़ामे रूपान्तरित करबाक हथियार बनैत अछि। मुदा एकर आलोचनामे इहो सावधानी चाही जे जातिगत उत्पीड़नक वास्तविक इतिहासकेँ केवल अवसरवादी नेताक चाल कहि अस्वीकार नहि कएल जाए। कथा तखने अधिक सम्यक् होइत अछि जखन वास्तविक असमानता आ ओकर राजनीतिक दुरुपयोगक दू अलग स्तर दर्शाओल जाए।

विष-पानमे न्यायप्रणालीक दीर्घ प्रक्रिया, अर्थबल, गवाहीक अस्थिरता आ पराजित न्याय-याचीक दशा महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। डा. योगानन्द झाक विवरणमे गोपालजी आ चतुराननक सम्बन्ध न्यायालयमे प्रवेश कए अलग शक्तिसन्तुलन पबैत अछि। एहि प्रकार कथा-संसार एकहि व्यक्ति-नैतिकतापर नहि, संस्था सभक क्रियाविधिपर सेहो प्रश्न उठबैत अछि। सामाजिक अन्यायक प्रतिनिधि कखनो दुष्ट पात्र, कखनो विधिक प्रक्रिया स्वयं बनि सकैत अछि—एहि परिवर्तनमे कथाक यथार्थदृष्टि विस्तार पबैत अछि।

कविताक धरातल : परती टूटि रहल अछि आ भूमिक प्रतिरोधी स्मृति परती टूटि रहल अछि शीर्षक स्वयं सामाजिक रूपान्तरणक कृषि-प्रतीक अछि। परती भूमि स्थिर, अनुपजाऊ अथवा सम्भावनाहीन अवस्था होइत अछि; ओकर टूटब नवा

श्रम, बीज आ भविष्यक विश्वासक प्रस्ताव करैत अछि। मुन्नाजीक आलेखमे एहि कृषि-रूपककें काव्यक विकास आ लेखकक ग्राम्य संवेदनासँ जोड़ल गेल अछि। अरविन्द श्रीवास्तव कविताक सत्ता-विरोधी साहस आ सामन्ती वातावरणसँ बाहर निकलि जनपक्षमे ठाढ़ होएबाक प्रवृत्तिपर बल दैत छथि।

काव्यक उपलब्धिक माप केवल उच्चारित विरोध नहि। लोकजीवनक वस्तु, भाषाक ठेठ मुहावरा आ कृषकक अनुभव जखन कविताक भीतर अपन उपयोगिता सँ आगू बढ़ि प्रतीक बनैत अछि, तखन कविता सामाजिक दस्तावेजसँ कलाकृति बनैत अछि। परती, खेतिहर, बीज, श्रम आ मौसमी चक्र एक-दोसरक संग सक्रिय अर्थसम्बन्ध बनैत अछि। कविताक रूपक परती भूमि कें नव आशामे बदलैत अछि; तथापि एहि आशाक नैतिक विश्वसनीयता तखन बनैत अछि जखन किसानक वास्तविक असुरक्षा आ असमानताकें छिपाओल नहि जाए।

रचनाकारक पारिवारिक समाजवादी विरासत आ हुनक अपन सामाजिक अनुभवक सम्बन्धक चर्चा अनेक आलोचक करैत छथि। किन्तु पारिवारिक विचारधारासँ सृजनक गुणवत्ता स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। साहित्यिक इतिहास लेल वंश-परिचय एकटा सन्दर्भ अछि, मूल्यनिर्णयक प्रमाण नहि। कविता अपन शब्द, बिम्ब, लय आ अन्तर्विरोधक आधारपर मूल्यवान होइत अछि। स्वच्छ आलोचनाकें लेखकक जनपक्षीय घोषणाक संग ओकर कलात्मक सम्पादन सेहो परखबाक चाही।

ग्राम्य शब्दावली, कोसी अंचल आ आधुनिकताक वैकल्पिक रूप अरविन्द ठाकुरक भाषा-विन्यासपर मुन्नाजी, अरविन्द मिश्र नीरज आ आन आलोचकक विचारसँ ग्राम्य शब्दावलीक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि। गामक उच्चरित शब्दकें साहित्यक भीतर प्रतिष्ठा देब मात्र रङ्ग-रोगन अथवा लोकजीवनक सजावट नहि होइत अछि। ई निर्णयक प्रश्न थिक जे कथाक वक्ता के, ओकर अनुभव सामाजिक रूपसँ कतेक मान्यता पबैत अछि, आ कोन भाषा साहित्यिक सार्वजनिकतामे प्रवेश पबैत

अछि। गमैया शब्दक स्वाभाविक प्रयोग साहित्यक अभिजात मानदण्डपर प्रश्न उठा सकैत अछि।

ग्राम्यताकेँ पुरातनता मानब सेहो भूल हएत। कोसीक कृषि, नदी, आवागमन, बजार, राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, छपाई आ शहरी सम्पर्क समकालीन इतिहासक अङ्ग अछि। लेखकक ग्रामीण परिवेशमे आधुनिकताक संकट अनिवार्य रूपसँ पहुँचल अछि। एहि दृष्टिसँ अरविन्द ठाकुरक कथामे गाम आ नगरक विभाजन अचल नहि, बल्कि निरन्तर चलैत सामाजिक-सांस्कृतिक विनिमयक रूपमे प्रकट होइत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक ग्राम्य भाषा-संसारसँ तुलना करब उचित अछि, मुदा एकर सीमा निर्धारित रहबाक चाही। दुनू क्षेत्रीय वाणीकेँ साहित्यिक चर्चामे स्थान दैत छथि, एतबा सामान्य समानता सँ हुनक सौन्दर्यदृष्टि एक कहि नहि सकैत छी। अरविन्दक समीक्षासँ जे चित्र बनैत अछि ताहिमे ग्राम्य-भाषिक जीवत राजनीतिक असहमतिक सँग जोड़ल अछि; तुलना लेल मूल रचनासभक ध्वनि, पद-क्रम आ चरित्र-वाणीपर स्वतन्त्र, विस्तृत अध्ययन अपेक्षित रहत।

मैथिली गजल : विषयगत आजादी आ विधागत अनुशासनक द्वन्द्व

बहुरूपिया प्रदेश मे पर केन्द्रित बहस सम्पूर्ण संकलनक सभसँ मूल्यवान असहमति-स्रोत अछि। जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल रचनाकारक निर्बाध कथन-प्रवृत्तिक पक्षमे आजाद गजलक अवधारणाकेँ स्वीकार करैत छथि। हुनक विवेचन अनुसार संग्रहमे छयसठि गजल अछि; ताहिमे किछु रचनामे रदीफ-काफियाक परम्परागत संतुलन नहि रहितो सामाजिक कथन आ तखल्लुसक प्रयोग महत्वपूर्ण अछि। दोसर दिस ओमप्रकाश झा प्रश्न उठबैत छथि जे जखन गजल नाम ग्रहण कएल गेल अछि तखन बहर आ काफियाक अनिवार्य नियमसँ अलग हटबाक कलात्मक न्यायसंगत आधार स्पष्ट किबैक नहि कएल जाए।

एहि विवादक समाधान सरलीकृत पक्ष-चयनमे नहि। विधा अपन इतिहासमे रूपगत अनुशासनसँ चिन्हल जाइत अछि, मुदा नवानुभव ओकर अभिव्यक्तिक सीमा बदलैत

रहैत अछि। जँ काफियाक स्थिर व्यवस्था अथवा बहरक अनुशासन नितान्त हटि जाए तखन रचनाकेँ गजल कहल जाए वा नव शेर-आधारित कविता—एहि प्रश्नक उत्तर मात्र लेखकक घोषित स्वातन्त्र्यसँ नहि निकलत। फेर जँ काव्यक मूल्य केवल स्थापित मापपर नापल जाए तँ नव सामाजिक भाषा आ अभिव्यक्ति पद्धतिक ऐतिहासिक सम्भावना दबि जाएत।

अनिलक लेख संग्रहक सर्जनात्मक आवेग आ सामाजिक विवेककेँ केन्द्रमे अनैत अछि; ओमप्रकाश झाक लेख काव्य-विधाक आन्तरिक निर्माण-विधानकेँ। दुनू लेख परस्पर आवश्यक सुधारक थिक। पहिल दृष्टि मात्र स्वीकार कएलासँ रूपगत लापरवाहीकेँ सृजनात्मक स्वतन्त्रता कहि देबाक खतरा अछि; दोसर दृष्टि मात्र स्वीकार कएलासँ कविता शब्दार्थक सामाजिक आवेगसँ कटि सकैत अछि। एहि बहसकेँ संग्रहमे सुरक्षित रखनाइ सम्पादकीय रूपसँ महत्त्वपूर्ण योगदान अछि।

बहुरुपिया प्रदेश मे : रूपक, बाजार आ नागरिक विडम्बनाक पाठ

बहुरुपिया प्रदेश मे शीर्षक आधुनिक राजनीतिक आ सामाजिक जगतकेँ रूप बदलैत, अपन वास्तविक चेहरा नुकबैत प्रदेशक रूपमे समझएबाक संकेत दैत अछि। अरविन्द मिश्र नीरज, राम चैतन्य धीरज आ जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल एहि संग्रहमे खेतिहर, बाजार, संसदीय संस्कृति आ सामाजिक विषमताक चिन्ता चिन्हैत छथि। ई विषय-चयन मैथिली गजलकेँ केवल प्रणय, विरह अथवा आत्मालाप धरि सीमित नहि रहने दैत अछि। गजलक शेर रूपगत संक्षिप्तता आ अर्थक तीव्र उलटफेरक विशेष अवकाश दैत अछि। राजनीतिक व्यंग्यमे ओ छोट आयाम प्रभावी भऽ सकैत अछि, किएक तँ पाठक परिचित घोषणाक उलटा अर्थ सहसा देखैत अछि। मुदा प्रत्येक व्यंग्यात्मक द्विपदी गजल नहि भऽ जाइत अछि। वैचारिक तीक्ष्णता, लयात्मक अनुशासन आ शेरक अर्थ-स्वायत्तताक अनुपातकेँ अलग-अलग परखब आवश्यक अछि। तँ एहि संग्रहक परीक्षणमे सामाजिक उद्देश्य आ छन्द-रूप दुनू समान रूपसँ विचारणीय छथि।

राम चैतन्य धीरज अपन आलोचनामे दार्शनिक एकात्मता आ भोगबादी बाजारक विरोधी प्रश्न उठबैत छथि। हुनक विवेचन कविक राजनीतिक प्रश्नकेँ आध्यात्मिक-सामाजिक विमर्शमे स्थानान्तरित करैत अछि। ई रूपान्तरण विचारोत्तेजक अछि, मुदा कविक प्रत्यक्ष वर्ग-अनुभव आ आलोचकक दार्शनिक एकता-आग्रह एक नहि अछि। एतए अलग-अलग वैचारिक पाठक सह-अस्तित्व संग्रहक बौद्धिक विस्तार बढ़बैत अछि।

साहित्यिक इतिहासमे स्थान : मैथिली कथा आ गजलक समानान्तर विकास मैथिली आधुनिक साहित्यक चर्चा प्रायः कथात्मक नवजागरण, सामाजिक विनोद, ग्रामीण जीवनक प्रत्यक्षता, नव कविता आ नवीना विधासभक विकासक क्रममे कएल जाइत अछि। अरविन्द ठाकुरक साहित्यपर केन्द्रित ई संकलन एहि इतिहासमे कोसी क्षेत्रक रचनाकारक भूमिका आ लघुकथात्मक राजनीतिक विषयकेँ स्पष्ट स्थान दैत अछि। हिन्दी अथवा आन भाषाक प्रभावक सामान्य प्रश्नसँ आगू बढ़ि एहि पोथीमे मैथिलीक अपन समाज-राजनीतिक शब्दसंसारक प्रतिनिधित्व खोजल जा सकैत अछि।

आशीष चमन ढाँचा-१९९२क पत्र-विन्यासक संदर्भमे हरिमोहन झा आ राजकमलक पत्ररचनाक उल्लेख करैत छथि। एहि तुलनाक ऐतिहासिक उपयोग ई अछि जे आधुनिक मैथिलीमे पत्ररूप एकटा स्थिर विनोदी विधा नहि, बल्कि करुण, सामाजिक आ राजनीतिक संवेदनाक वहन सेहो करि सकैत अछि। रूप समान रहलो पर ओकर भाव-प्रयोजन बदलि सकैत अछि। एहि बदलावकेँ मौलिकताक दावा बनबैत काल मूल रचनाक वास्तविक पाठान्तर आ कालक्रम स्वतंत्र रूपसँ जाँचल जएबाक चाही।

प्रजातंत्र परिकथाक नाम आ सार्वजनिक यथार्थक कारणे फणीश्वरनाथ रेणुक परती परिकथा स्मृतिमे आबि सकैत अछि। तथापि शीर्षक-सादृश्यकेँ प्रभावक प्रमाण मानब असंगत हएत। रेणुक उपन्यासिक परती विशाल सामाजिक भूगोल आ सामूहिक गतिशीलताकेँ धरैत अछि, जबकि अरविन्दक कथापर संकलनमे भेल आलोचना राजनीतिक घटनाक अल्पविस्तारित रूपक आ तात्कालिक सार्वजनिक प्रतिक्रियापर

केन्द्रित अछि। एहि भिन्नतासँ साहित्यिक इतिहासक समृद्धि कम नहि, बल्कि कथाशिल्पक आकार आ संवेगक अन्तर स्पष्ट होइत अछि।

गजलक क्षेत्रमे गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हारक व्याकरण-विषयक उपक्रमक उल्लेख अनिलक निबन्धमे भेटैत अछि। एहन पृष्ठभूमिमे बहुरूपिया प्रदेश मे रूपगत स्वातन्त्र्यक बहस आओर तीव्र बनैत अछि। साहित्यिक इतिहासमे नव विधाक प्रवेश मात्र लेखकक इच्छासँ नहि, पाठक, सम्पादक, व्याकरणकार आ आलोचकक सामूहिक विवादसँ रूप लैत अछि। एहि कारणे स्वतंत्रचेता रचना-इतिहासक संग विधा-इतिहासक दस्तावेज सेहो अछि।

चिन्तक अरविन्द ठाकुर : काव्यसँ बाहरक सांस्कृतिक प्रश्न

समीक्ष्य संकलनक अधिकतम आलोचनात्मक सामग्री कथा, कविता आ गजलपर केन्द्रित रहने हुनक चिन्तनधर्मिताक पर्याप्त विस्तार नहि देत—सम्पादकीय भूमिका एहि अभावक संकेत करैत अछि। मुदा विदेहक मूल विशेषांकमे उपलब्ध मिथिलामे सांस्कृतिक आन्दोलनक भविष्य तथा लक्ष्मीनाथ गोसांई : परम्परा, भाषा आ निर्गुण भाव सन आलेख देखबैत अछि जे रचनाकारक रुचि सामाजिक आन्दोलनक चरित्र, भाषा-सत्ता, सांस्कृतिक संरचना आ परम्पराक विचारपर सेहो रहैत छल।

मिथिलामे सांस्कृतिक आन्दोलनक भविष्य मे लेखक समाजक कथित आन्दोलनशीलताकेँ संस्थागत स्वार्थ आ सत्तापोषणक इतिहाससँ जाँचैत छथि। ई तर्क उग्र आ विवादास्पद अछि; एकरे सहारे समस्त मैथिल समाजक अतीतविषयक अन्तिम निष्कर्ष निकालब अनुचित हएत। मुदा एहि लेखसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लेखकक राजनीति मात्र दलगत टिप्पणी नहि, सांस्कृतिक आत्मालोचनाक रूप सेहो ग्रहण करैत अछि। कविता आ कथामे निन्दित सार्वजनिक पाखण्ड एहि निबन्धमे वैचारिक विश्लेषणक विषय बनैत अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसांई विषयक आलेखमे भक्ति-परम्परा, निर्गुण-सगुण वर्गीकरण आ क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रभाव जोड़बाक प्रयत्न अछि। तथापि सामाजिक इतिहासक दीर्घ काल-

रेखाकें लिखैत कखनो व्यापक सामान्यीकरण आ स्रोत-विवेचनक कमी देखल जाए सकैत अछि। एहन आलेखक आलोचनामे रचनाकारक सांस्कृतिक दृष्टि आ ऐतिहासिक प्रमाणक स्तरकें अलग-अलग राखब उचित अछि। लेखकक गद्य-विचारक स्वतंत्र सम्पादन आ स्रोत-आधारित पुनर्पाठ हुनक समग्र कृतित्व बुझबाक अगिला अनिवार्य कार्य बनैत अछि।

साक्षात्कार, संस्मरण आ आत्मकथ्य : एक जीवनी नहि, अनेक स्मृति

साक्षात्कारक मूल्य केवल तथ्यात्मक प्रश्नोत्तरमे नहि रहैत अछि। साक्षात्कारमे लेखक अपन जीवनकें जे शब्द दैत छथि, ओ शब्द सार्वजनिक रूपसँ निर्मित आत्मछविक अंश बनैत अछि। मुन्नाजी द्वारा लेल गेल बातचीतकें समीक्षा आ संस्मरणक बीच राखब रचनाकारक अपन विचारक संग आलोचकक विचारक सामना करबएबला सम्पादकीय निर्णय अछि। मुदा मौखिक कथनकें बादक घटनाक सर्वथा निष्पक्ष तथ्य नहि मानल जाएबाक चाही; स्मृति, चयन आ आत्म-प्रतिरक्षाक भूमिका एहिमे रहि सकैत अछि।

संस्मरणसभ परिवार, साहित्यिक संगत, पत्रिका, सामाजिक उपस्थिति आ वैयक्तिक व्यवहारक बहुरंगी चित्र दैत अछि। साहित्यिक इतिहासकार लेल ई सामग्री अभावग्रस्त संस्थागत अभिलेखक पूरक भऽ सकैत अछि। मुदा जखन स्मृतिकार रचनाकारक श्रेष्ठताक दाबी करैत छथि, तखन वैयक्तिक स्नेह आ कलात्मक मूल्यांकनक भेद सुरक्षित राखब चाही। अनेक व्यक्ति अपन-अपन अनुभवक आधारपर लेखकक एकटा रूप स्मरण करैत छथि, मुदा कोनो एक संस्मरण सम्पूर्ण जीवनीक समतुल्य नहि अछि। आत्मकथ्यक शीर्षकमे आत्म-परिचयक प्रश्न अछि। एहि आत्म-प्रश्नकें कथा आ कवितामे उपस्थित स्वतन्त्रता, मनुष्यक गरिमा आ सामाजिक अन्तर्विरोधसँ जोड़ला पर लेखकक व्यष्टि-सत्ता आ रचनात्मक सरोकारक संवाद दिखाइत अछि। आत्मकथ्यक साहित्यिक महत्त्व एहि खुला प्रश्नमे अधिक अछि, आत्मसमर्थनक निश्चित उत्तरमे कम। संकलनमे एहि विधाक उपस्थिति पाठककें अवसर दैत अछि जे लेखककें आलोचकसभक प्रशंसा अथवा असहमतिसेँ स्वतंत्र रूपसँ सेहो विचारथि।

समालोचना आ प्रशस्तिक बीच : संग्रहक आन्तरिक आलोचनात्मक तनाव संकलनमे किछु लेख रचनाकारक प्रति आत्मीय अभिनन्दनक स्वरमे लिखल गेल अछि; किछु लेख स्पष्ट मूल्यांकन अथवा आपत्तिक भाषा बरतैत अछि। जीवित लेखकक सम्मानमे प्रकाशित विशेषांकक सामग्रीमे ई द्वैध सामान्य अछि, मुदा शोधक दृष्टिसँ एकर विश्लेषण आवश्यक अछि। जे आलोचक कथाक नैतिक उद्देश्यक प्रशंसा करैत छथि, ओ सदैव कथा-रूपक सीमाकेँ समान कठोरतासँ नहि जाँचैत छथि। तकर विपरीत गजल-विवादमे विधागत नियमक गम्भीर चर्चा प्रशंसाक सहज प्रवाहकेँ रोकैत अछि।

अशुद्धि, कथाक क्रम, चरित्रक व्यवहार, रूपकक पर्याप्तता आ छन्द-नियम—ई सभ आलोचनाक असली प्रश्न थिक। आशीष चमनक लेखमे कथा-क्रम आ चरित्रक निर्णयपर आपत्ति, ओमप्रकाश झाक आलेखमे गजल-रूपक दोषपर प्रतिवाद, आ अनिलक लेखमे खुलल भाषिक प्रयोगक पक्ष—एकहि पोथीमे ई सभ रहब संकलनक बहुलताक प्रमाण अछि। शोध-पत्रिका लेल पोथीक उपयोग करैत समय केवल प्रशंसा-सूचक वाक्य चुनि लेब संग्रहक असली आलोचनात्मक सम्भावनाकेँ खण्डित करब हएत।

संस्मरणक गौरव-गाथा आ आलोचनाक विश्लेषणात्मक विधान अलग साहित्यिक क्रिया छथि। एहि अंतरकेँ सुरक्षित राखि ग्रन्थक मूल्यांकन करब आवश्यक अछि। अरविन्द ठाकुरक लेखकीय स्वतन्त्रताक अवधारणा सफल तखने होएत जखन पाठको हुनक रचनाक स्वतंत्र, असहमतिपूर्ण आ प्रमाणाधारित पाठ करबाक अधिकार पाबथि। एहि अर्थमे स्वतंत्रचेता शीर्षकक सार्थकता सम्पादकक घोषित छविसँ बेसी पोथीमे संरक्षित आलोचनात्मक असहमतिमे निहित अछि।

समानान्तर साहित्यिक इतिहासक दृष्टिसँ पुनर्विचार

मुख्यधाराक साहित्यिक इतिहास प्रायः संस्थागत पुरस्कार, पाठ्यपुस्तक आ अधिक प्रचार पाओल कृतिसभकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। क्षेत्रीय पत्रिका, पत्राचार, मौखिक साहित्यिक संगत, स्थानीय प्रकाशन आ अल्पचर्चित विधागत बहस इतिहासक

किनारापर छुटि जाइत अछि। विदेहक विशेषांकसँ विकसित स्वतंत्रचेता एहि अभावक एकटा उपयोगी प्रतिरोध अछि। लेखकक रचनाक चर्चा मात्र नहि, ओकर चारू दिस बनैत छोट-पैघ आलोचनात्मक समुदाय सेहो अभिलेखित होइत अछि।

तथापि समानान्तर इतिहासक दाबी अपने आपमे प्रामाणिकता प्रदान नहि करैत अछि। एकरा विशिष्ट बनबैत अछि स्रोतक उल्लेख, असहमतियुक्त साक्ष्य, प्रकाशन-क्रमक स्पष्टता आ स्थानीय आवाजक तुलनात्मक मूल्यांकन। एहि कसौटीपर स्वतंत्रचेता महत्त्वपूर्ण आरम्भ होइत अछि, अन्तिम प्रामाणिक जीवनी नहि। पत्रिका सँ पुस्तक धरि पाठ-चयनक अन्तर, मूल रचनाक अनुपस्थिति, आलोचनाक असमान गहराइ आ आत्मकथ्यक निजी दृष्टिक कारणे बादक शोधकें अलग पाठ-संग्रह आ प्रामाणिक प्रकाशन-वृत्त बनएबाक आवश्यकता रहत।

ग्रन्थ एहि बातक उदाहरण अछि जे साहित्यिक इतिहास केवल रचनासभक सूची नहि, बल्कि पाठ, पाठक, विवाद, सामाजिक स्मृति आ सम्पादनक गतिशील अन्तरसम्बन्ध थिक। जँ एहि दृष्टिक विकास हो, तखन मैथिली इतिहासमे कोसीक लोकभाषा, वंचित अनुभवक प्रतिनिधित्व, पत्रिका-आधारित विमर्श आ विधागत नवाचारक चर्चा अधिक संतुलित स्थान पाबि सकैत अछि।

समग्र निर्णय : उपलब्धि, सीमा आ उत्तरवर्ती अनुसन्धान

स्वतंत्रचेताक पहिल उपलब्धि रचनाकारक कथा, कविता, गजल, सामाजिक विचार आ व्यक्तित्वक सम्बन्धपर अनेक लेखकक मत एकत्र करब अछि। दोसर उपलब्धि ई जे वैचारिक सहमति आ शिल्पगत असहमतिक पाठ एक दोसरा कें बाधित नहि, बल्कि परखैत अछि। तेसर उपलब्धि कोसी क्षेत्रक जनजीवन आ मैथिली साहित्यिक सार्वजनिकताक सम्बन्धकें दृश्य बनब अछि। चौथ उपलब्धि कथा-समीक्षा, संस्मरण आ आत्मकथ्यकें एक संग राखिकए जीवनी-विवेचनक बहुस्तरीय संरचना प्रस्तुत करब अछि।

ग्रन्थक सीमा सेहो विचारणीय अछि। संकलनमे आलोचकसभक पद्धति समान नहि, कतेको आलोचनामे मूल्यनिर्णय भावात्मक अछि, कथाक वैचारिक प्रयोजनक सामने रूपगत सूक्ष्मता कखनो पाछू छूटैत अछि, आ रचनाकारक स्वतंत्र चिन्तन अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व पबैत अछि। मूल रचनाक सम्पूर्ण पाठ संकलनमे नहियो रहलासँ साहित्यिक आलोचकक व्याख्याक निर्भरता बढ़ैत अछि। एहन परिस्थितिमे पोथीकेँ अन्तिम सत्य मानबाक अपेक्षा तर्कसंगत साक्ष्यसमूह मानब उचित अछि।

भविष्यक शोध लेल कथा-संग्रहसभक संस्करणान्तर, कविताक लोकशब्द-सूची, बहुरूपिया प्रदेश मे क गजलक छन्द-विश्लेषण, विदेह विशेषांक आ मुद्रित पोथीक पाठान्तर, तथा रचनाकारक आलोचनात्मक गद्यक स्वतंत्र सम्पादन अत्यावश्यक कार्य छथि। एहि सभ शोधमे स्त्रीक स्वायत्तता, जाति-राजनीतिक पहिचान, साम्प्रदायिक हिंसाक स्मृति, किसानक अर्थव्यवस्था आ क्षेत्रीय भाषिक अधिकार विषयक तुलनात्मक ढाँचा विकसित कएल जाए सकैत अछि।

अन्ततः स्वतंत्रचेता ओहि अर्थमे सार्थक अछि जे ई साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ केवल संस्थागत प्रतिष्ठाक माध्यमसँ नहि, बल्कि संघर्षशील शब्द, आलोचनात्मक वाद-विवाद आ निकट स्मृतिक माध्यमसँ प्रस्तुत करैत अछि। संग्रहकेँ पढ़बाक उचित रीति लेखकक प्रति आदर आ आलोचनात्मक स्वतन्त्रता दुनू बचा कए राखब अछि। मैथिली साहित्यक इतिहासमे ओकर स्थायी उपयोग एहि खुला, जाँचयोग्य आ बहुस्वरीय पाठ-सम्भावनामे निहित अछि।

सन्दर्भसूची

मूल संकलन, ताहिमे समाहित आलेख आ विदेहमे उपलब्ध समकालीन प्रकाशनकेँ आधार बनाकए सन्दर्भ व्यवस्थित कएल गेल अछि। समान पोथी अथवा आलेखक भिन्न रूपकेँ भिन्न पाठ-साक्ष्य बुझि पढ़ल जाएबाक चाही।

मूल संकलन

अनचिन्हार, आशीष (सम्पा.). स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर—व्यक्तित्व-कृतित्व। प्रथम संस्करण। सुपौल : शशि प्रकाशन, २०२०। ISBN 978-81-948818-0-3।

विदेह। अरविन्द ठाकुर विशेषांक। विदेह, अङ्क १८९, १ नवम्बर २०१५। विशेषांकसँ विकसित पोथी : स्वतंत्रचेता।

अरविन्द ठाकुरक कृति आ विचार-सामग्री

ठाकुर, अरविन्द। परती टूटि रहल अछि। कविता-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। अन्हारक विरोध मे। कथा-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। बहुरूपिया प्रदेश मे। गजल-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। मीन तुलसीपात पर। गजल-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। सबद मितारथ धाय्या। कविता-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। जड़ताक प्रतिवाद मे। दीर्घ कविता। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। लघुत्तमसमापवर्त्य। कथा-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। क्षितिकणक क्षेत्रफल। आलोचना। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। तिजहरियाक तितीर्षा। कविता-संग्रह। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। रोशनाइक लोकपक्ष। कथेतर गद्य। विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध ग्रन्थ-प्रविष्टि।

ठाकुर, अरविन्द। मिथिलामे सांस्कृतिक आन्दोलनक भविष्य। विदेह, अङ्क १८९, २०१५। <https://www.videha.co.in/research/2015/189/मिथिलामे-सांस्कृतिक-आन्दोलनक-भविष्य.htm>

ठाकुर, अरविन्द। लक्ष्मीनाथ गोसांई : परम्परा, भाषा आ निर्गुण भाव। विदेह, अङ्क १८९, २०१५। <https://www.videha.co.in/research/2015/189/लक्ष्मीनाथ-गोसांई-परम्परा-भाषा-आ-निर्गुण-भाव.htm>

समकालीन आलोचनात्मक आलेख

ठाकुर, गजेन्द्र। अन्हारक विरोध मे—अरविन्द ठाकुर। स्वतंत्रचेता मे संकलित।

झा, डा. योगानन्द। अन्हारक विरोधमे : एक दृष्टि। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/अन्हारक-विरोधमे-एक-दृष्टि.htm>

चमन, आशीष। अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/अन्हारक-विरोध-मे-अरविन्द-ठाकुर.htm>

अनचिन्हार, आशीष। लाल लंगौटी केर पहचान करैत कविता। स्वतंत्रचेता मे संकलित।

श्रीवास्तव, अरविन्द। सामंती सभहँक विरुद्ध तैयार कवि। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/सामंती-सभहँक-विरुद्ध-तैयार-कवि.htm>

मुन्नाजी। परती टूटि गेलै। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/परती-टूटि-गेलै.htm>

झा, ओमप्रकाश। बहुरूपिया रचनामे। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/बहुरूपिया-रचनामे.htm>

धीरज, राम चैतन्य। बहुरूपिया प्रदेश मे : एक दृष्टि। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/बहुरूपिया-प्रदेश-मे-एक-दृष्टि.htm>

ठाकुर, जगदीश चन्द्र 'अनिल'। अरविन्दजीक आजाद गजल। विदेह, अङ्क १८९, २०१५।

<https://www.videha.co.in/research/2015/189/अरविन्दजीक-आजाद-गजल.htm>

मिश्र नीरज, अरविन्द। अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व आ कृतित्व। विदेह, अङ्क १८९, २०१५। <https://www.videha.co.in/research/2015/189/अरविन्द-ठाकुर-व्यक्तित्व-आ-कृतित्व.htm>

कानन, केदार। परती दूटि रहल अछि—यात्रा-कथा। स्वतंत्रचेता मे संकलित।

किसलय, सी. ए। परती दूटि रहल अछि : कृषकक अन्नदायी चेतना आ अन्वेषण-वृत्तिक अध्ययन। स्वतंत्रचेता मे संकलित।

सम्पादकीय अभिलेख आ विदेहक पोथी-सूची

विदेह। पोथी-सूची : अरविन्द ठाकुरक रचनासभ आ आशीष अनचिन्हारक सम्पादन-संबद्ध प्रविष्टि। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह। शोध-सूची : २०१५ केर अरविन्द ठाकुर विशेषांकसँ सम्बद्ध आलोचनात्मक आलेख। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.htm>

विदेह। गद्य-सूची : अरविन्द ठाकुरक कृति-सन्दर्भ आ संकलन। <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>

१.१०. नित नवल आशीष अनचिन्हार — गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

अभिलेख, अस्मिता आ लोकजीवनक कथात्मक पुनर्पाठ

आधार-कृति : गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा

मूल कथाकार : गजेन्द्र ठाकुर | चयन आ सम्पादन : आशीष अनचिन्हार | विदेह,
२०२६

सारांश

गजेन्द्र ठाकुरक बयासी चयनित कथाक अध्ययनसँ मैथिली कथालोकक एक विशिष्ट विस्तार उद्घाटित होइत अछि। एहिमे गामक परम्परागत जीवन, पारिवारिक सम्बन्ध आ जातिगत संरचनाक संगहि अभिलेखालय, न्यायालय, विद्यालय, अस्पताल, पंचायत, निर्माणस्थल, श्रम-पाँजि आ आधुनिक संचारक संस्थागत संसार एक-दोसरामे प्रवेश करैत अछि। लेखकक प्रमुख कथात्मक प्रश्न ई नहि जे ककर कथन अन्तिम सत्य अछि, बल्कि ई जे विभिन्न मनुष्य, कागज, स्मृति आ संस्थाक बीच सत्यक दावा कोना बनैत अछि। एहि अध्ययनमे दस स्रोत-पोथी अथवा खण्डसँ लेल गेल सभ बयासी कथाक स्वतंत्र संक्षिप्त पाठविवेचन, चुनल प्रतिनिधि कथाक विस्तृत निकट-पाठ, कथन-शिल्प आ भाषिक गठनक परीक्षण, चयन-पद्धतिक आलोचना तथा मैथिली कथापरम्परासँ तुलनात्मक सम्बन्ध निरूपित कएल गेल अछि। निष्कर्ष ई जे ई कथा-संकलनक विशिष्ट उपलब्धि अधिकार-विमर्शकें केवल वैचारिक उद्घोष नहि बनाकऽ रोजमर्राक वस्तु, संख्या, देह, स्वर आ प्रमाणक सूक्ष्म नाट्यमे बदलि देब अछि; संगहि किछु आख्यानमे प्रक्रियागत विवरणक अधिकता आ समान प्रतीकक पुनरागमन आलोचनात्मक प्रश्न बनैत अछि।

बीज-शब्द : मैथिली कथा; गजेन्द्र ठाकुर; अभिलेख; स्मृति; जाति; श्रम; संस्थागत हिंसा; स्त्री-अस्मिता; लोकभाषा; कथा-शिल्प; साहित्येतिहास।

अध्ययनक आधार आ आलोचनात्मक दृष्टि

एहि अध्ययनक मूलाधार गजेन्द्र ठाकुरक “८२ टा चयनित कथा”क उपलब्ध सम्पादित पाठ अछि। प्रकाशकीय अनुसार दस स्रोत-पोथी अथवा खण्डसँ चयन आशीष अनचिन्हार कएने छथि। पाँच कथा “पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल”सँ, दस “स्मृतिक दोसर दिस”सँ, पाँच “इजोत — जनम-जनमक कथा”सँ, तीस “कथा-शतत्रयी”क तीन खण्डसँ, तीस “कथा-त्रिधारा”क तीन खण्डसँ आ दू “नव पाँखि”सँ अएल अछि। एहिसँ संग्रहक विन्यास अपनेमे एकटा आलोचनात्मक तर्क बनैत अछि : पुरनका सामाजिक व्यंग्यसँ स्मृतिक अपूर्णता, ताहिसँ संस्थागत जीवनक सूक्ष्म अनुभव धरि।

पाठविश्लेषणमे घटना आ पात्रक स्पष्ट कथनकेँ आलोचकक अनुमानसँ अलग राखल गेल अछि। जतय कथान्त निर्णय स्थगित करैत अछि, ओतय कृत्रिम समाधान नहि जोडल गेल अछि। उद्धृत पंक्ति सभकेँ एहि उपलब्ध चयनित देवनागरी पाठक शब्दसँ मिलान कऽ राखल गेल अछि; मूल स्रोत-पोथी सभक अलग-अलग संस्करणक पाठभेदक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि। उद्धरणक परिचय कथा-शीर्षकसँ देल गेल अछि, जाहिसँ विचार आ मूल कथनक अन्तर स्पष्ट रहय।

पाठक भीतर “मूल”, “स्मृति” आ “सुधार”क अन्तर बारम्बार उपस्थित होइत अछि। आलोचनात्मक दृष्टि सेहो एहि अन्तरकेँ स्वीकार करैत अछि : साहित्यिक सत्य प्रायः न्यायिक निष्कर्ष नहि होइत; पात्रक शब्द लेखकक अन्तिम मत नहि होइत; संपादित चयन समग्र कृतित्वक पूर्ण पर्याय नहि होइत। एहि कारण मूल्यांकनमे कथाक नाटकीय निर्माण, वाचकक दूरी, विवरणक चयन, प्रतीकक क्रम-विकास आ मौनक काज अलग-अलग परखल गेल अछि।

समग्र साहित्यिक समीक्षा : दस स्रोतसमूहक सौन्दर्य-रचना

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल : व्यंग्य, जाति आ ज्ञानक सार्वजनिक कसौटी “सिद्ध महावीर”मे अनमना दीदीक मन्दिरक निर्माण आ पारिवारिक जमीन-विवादक कथा धार्मिक प्रतिष्ठाक भीतर लुकायल अर्थलाभ आ विश्वासक संकटकेँ एक संग

उजागर करैत अछि। कागजपर नाम चढ़लाक बाद धर्मक भूमि बचेनिहार स्त्रीए पहुँचहीन भऽ जाइत छथि। व्यंग्यक धारि खास एहि ठाम अछि जे चमत्कारक परवर्ती सामूहिक व्याख्या, अनमना दीदीक चिकित्सकीय तर्कसँ टकराइत अछि। कथा पाठककें एके घटना पर दुइ सामाजिक व्याख्याक तंत्र देखबैत अछि।

“डोमा, बुधन आ...” जातिगत रुढ़िक विरुद्ध केवल सदिच्छाक कथा नहि। चण्डीगढ़क प्रवासन, शिक्षा, भोजक छुआछूत आ अगिला पीढ़ीक उच्च पेशागत स्थिति एके परिवारक सामाजिक समयमे गुँथल अछि। कथा-वक्ताक स्मृतिदोष आ लम्बा वैचारिक संवाद मिलि सामाजिक प्रगतिक निश्चयात्मक चित्रकें जटिल बनबैत अछि।

“शब्दशास्त्रम्”मे तालपत्र, पाठ-व्याख्या आ दार्शनिक विवादक माध्यमसँ अर्थपर स्वामित्वक प्रश्न उठैत अछि; अनेक शास्त्रीय सन्दर्भक समावेश कलात्मक सम्पन्नता सेहो दैत अछि आ पाठकसँ अतिरिक्त धैर्य सेहो माँगैत अछि।

“महिसबार ब्राह्मणक गाम” वर्णनप्रधान आख्यान अछि। पोखरि, धानक किसिम, जातिगत पहिचान आ स्थानीय व्यवहारक बहुलता एकर सामाजिक भूगोल बनबैत अछि। “जाति-पाति”क अत्यल्प आकारक प्रतिवाद एहि विस्तृत लोकवृत्तान्तक तीव्र संक्षेप जकाँ सामने अबैत अछि। एक तरफ सामाजिक पहचानक अनेक परत, दोसर तरफ सार्वजनिक रूपसँ अपन जाति कहबाक असमान साहस : एहि द्वन्द्वमे समूहक कथा-नैतिकता रचल अछि।

“यएह जे अंधविश्वास हमरा मोनसँ हटा दिअ” — ‘सिद्ध महावीर’

“जाति आ जाति-व्यवस्था दू चीज!” — ‘डोमा, बुधन आ...’

“की हम ई कहि सकैत छी छाती पीटि कऽ- जे हम डोम छी” — ‘जाति-पाति’

स्मृतिक दोसर दिस : स्मरण, अपूर्ण पाठ आ साक्ष्यक राजनीति

“प्रतिलिपिकार”क कथात्मक केन्द्रीयता एक खाली कोष्ठकमे अछि : सुन्दर, पठनीय प्रतिलिपि बना देबाक लोभ आ मूल पाठक अनिश्चितता सुरक्षित रखबाक जिम्मेवारीक बीच सुधीन्द्रक चुनाव। एहि कथामे मौन कमी नहि, ज्ञानक ईमानदारी अछि। “अन्तिम

पाठक” आगिमे नष्ट जनवाचनालयसँ आरम्भ भऽ स्मृतिसँ पुस्तक पुनर्रचनाक जोखिम-सम्भावना खोलैत अछि; लोकक स्मरण नष्ट संग्रहक पूर्ण विकल्प नहि बनैत, मुदा नव साहित्यक स्रोत बनि सकैत अछि।

“सीमाक गोली” घटना-विवरणक बहुस्तरीय संरचना प्रस्तुत करैत अछि। सीमापत्थर, जवानक चेतावनी, देखनिहारक स्थिति, वस्तुक पहचान आ अनुदित अनुभव सभ अलग-अलग साक्ष्य रूपेँ उपस्थित छथि; एकल सर्वज्ञ निर्णायक अनुपस्थिति कथा केँ एखनक दस्तावेजी कथा-शिल्पक महत्त्वपूर्ण नमूना बनबैत अछि। “राजमिस्त्रीक गिरावट”मे सुरक्षा-निर्देश आ कार्यस्थलक वास्तविक साधनक अन्तर संस्था बनाम श्रमिकक सम्बन्धपर कठोर प्रश्न अछि।

“काजर”, “बहिनसभ” आ “घर नम्बर पाँच” स्त्री-अनुभवक भिन्न रचना छथि : शृंगारक अर्थपर पीढ़ीक बातचीत, बहिनपनक स्मृतिक दूरी, आ घरक वास्तुशिल्पमे जमल समय। “सूखल कमला” आ “माटिक गन्ध”मे माटि-नदीक भूगोल निज स्मृति आ प्रवासनक अनिश्चित अनुभवमे रूपान्तरित होइत अछि। “संगीत शिक्षक”मे पाठशाला आ कौशलकेन्द्रक संस्थागत समानता-असमानता, आवाज आ मौनक माध्यमसँ परखी जाइत अछि।

“नहि लिखल चीजे सबसँ सटीक प्रतिलिपि छल” — ‘प्रतिलिपिकार’

“लेखक सेहो अन्ततः अपन पाठक बनि जाइत अछि” — ‘अन्तिम पाठक’

“हम सुनल नहि” केँ “ओ बोलल नहि” नहि कहल जाए” — ‘सीमाक गोली’

“ऊपर रस्सी बदलय कहने।” — ‘राजमिस्त्रीक गिरावट’

इजोत — जनम-जनमक कथा : वंश, राग आ निर्णायक खुलल आकाश

“मातृवंश” वंशावली आ उत्तराधिकारक जेठ बेटीपर आरोपित आदेशकेँ परिवर्तित कऽ

“घर धरि पहुँच”क साधन बनबैत अछि। “राग”मे सांगीतिक परम्पराक एकल

स्वामित्वक बदला सुनब, अनुमति लेब आ पुनर्गायनक सामूहिक प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण

अछि। “अदालत”मे गवाही प्रश्नोत्तरक अनुशासन अपन शिल्प बनैत अछि : समय, पानि, पुरान मानचित्र आ उपयोगक चिन्ह मिलि निर्णयक कठिनाई रचैत अछि।

“डूम”मे जल-आपदा, हेरायल व्यक्ति आ मृत्यु-तिथिक अनिश्चितता पात्रक गृहस्थ जीवनपर दीर्घ असर छोड़ैत अछि। “विदेह”मे वंशक सूची, सम्पत्ति-संबंधी प्रमाण आ स्मृति-संरक्षणक स्पष्ट अन्तर पर जोर अछि। एहि समूहक अन्तमे खाली सम्पादकीय पन्ना पाठकें आदेश नहि, अगिला लेखकक सम्भावना दैत अछि। “इजोत” एकरे कारण विजयक उन्मत्त रूपक नहि, अपूर्णताक बीच छोट आ साझा उजास अछि।

“मूलक घमण्ड नहि रहल” — ‘मातृवंश’

“सम्पत्ति, जाति, उत्तराधिकार वा विधिक प्रमाणक दावा नहि” — ‘विदेह’

कथा-शतत्रयी, पहिल खण्ड : देह, वस्तु आ अदृश्य पात्र

“दू अक्षर”क छोट सन्देश, “फोटो स्टूडियो”क वर्तमान चेहराक आग्रह, “एक जोड़ी जूता”क उपयोगक पुनर्वितरण आ “बाँटल छाँह”क साझा सार्वजनिक ठाम : एहि कथासभमे साधारण वस्तु आ छोट क्रिया कथानकक निर्णायक सूत्र छथि। “दोसर दर” अस्पतालक प्रवेश-विन्यासमे मनुष्यक योग्यताक सूक्ष्म विभाजन खोलैत अछि। “सात मिनटक आवाज” ध्वनिक मापमे सम्बन्धक दूरी सुनेबाक प्रयास करैत अछि।

“अधूर नाटक” मंचक अपूर्ण तैयारीकें जीवनक असमाप्त सम्बन्धसँ जोड़ैत अछि।

“एकतीसम खाट” आश्रयक गणितमे फँसल अतिरिक्त मानवीय जरूरत; “ईंटक निशान” कारीगरक श्रमक पहिचान; आ “गिनतीक बाहर” क्षति-प्रपत्रमे अदृश्य निवासी — ई तीनू कथा गणनाक सीमा आ देहक अस्तित्वमे तनाव प्रकट करैत अछि। एहि खण्डक ताकत कर्तव्य आ सहानुभूतिक अमूर्त भाषणक बदला खाट, ईंट आ पाँजिक धरातलपर बहस उतारब अछि।

“पाँजि आब ओकर भीतर रहयवला लोकक रेखा सेहो छोड़ि रहल छल” — ‘गिनतीक बाहर’

कथा-शतत्रयी, दोसर खण्ड : खेत, भोजन, श्रम आ परस्परता

“बाँधक ओहि पार” विस्थापनक बाद देवस्थानक ठाम आ सामूहिक परिचयक प्रश्न उठबैत अछि। “जमीनक आवाज” बाट आ सीमा-निर्माणक स्थानीय राजनीति उजागर करैत अछि। “सिलाइ मशीन”क मोटर मात्र उपकरण नहि; ओ आत्मनिर्भर काज आ पारिवारिक समझौताक नव ताल सुनबैत अछि।

“दस किलो चाउर”मे तौल, पर्ची आ अधिकारक भाषाक सूक्ष्म सम्बन्ध देखबामे अबैत अछि। “अधूरा गीत” लोकगीत पर रचनाकारक व्यक्तिपरक दावा अस्वीकार करैत सामूहिक स्मृतिक पक्ष खोलैत अछि। “माटिक बाँसुरी” वस्तु बनेबाक धैर्य आ बालकक जिज्ञासाकें मिलबैत अछि। “खुलल दरवाजा” अवसरक संग भय देखबैत अछि, “मौन गवाही” न्यायमे बोलि नहि सकबाक अर्थपर विचार करैत अछि। “कुर्थीक दालि” खाद्य-श्रृंखला आ बाजारक असमान विनिमय; “एक बीघाक सपना” जमीनक माप आ श्रमिकक अपन खेती करबाक इच्छा रचैत अछि।

“गीत खेतक छल। जकर कंठमे पड़ल, ओकर भेल” — ‘अधूरा गीत’

कथा-शतत्रयी, तेसर खण्ड : सार्वजनिक स्थानक वर्ग-चरित्र

“खाली थैला” आ “नाव बान्हल रहल” आपदाक समय वस्तु, परिवहन आ सामूहिक निर्भरताक कथा बनैत अछि। “पोखरिक रखबार” सार्वजनिक पानिक रखवारीक प्रश्नसँ आरम्भ भऽ उपयोगक अलग-अलग दावासँ भिड़ैत अछि। “डोमक बाँसुरी” जातिगत अवमूल्यनकें समारोहक भुगतान-पाँजि धरि आनैत अछि; कलाकारक सुर सुनब आ हुनका श्रमक उचित मान देब दुनू अलग चरण छथि।

“बरगदक नीचाँ रजिस्टर”क ग्राम्य छाँह आ कागजी गणना; “जातिक कुर्सी”क बैसबाक स्थान; “किरायेदार कन्या”क आवासीय असुरक्षा; “गुप्त बचत”क स्त्री-संचित आर्थिक विवेक; “स्टेशन जे नक्शामे नहि”क देखल-अदेखल मार्ग; आ “अपरिचित अपन घर”क स्मृतिगत विस्थापन—सभ कथा निजी जीवनक सीमा सार्वजनिक व्यवस्थासँ निरन्तर बदलैत देखबैत अछि।

“स्थानीय एकल कलाकार—चन्देश्वर डोम—बाँसुरी—पाँच सय रुपैया” — ‘डोमक बाँसुरी’

“कुर्सी अट्टाइस। स्थायी स्थान—कोनो नहि” — ‘जातिक कुर्सी’

कथा-त्रिधारा, पहिल खण्ड : ध्वनि, गलत शब्द आ दस्तावेजक असर

“आवाज नहि देनिहार घंटी”क निष्क्रिय उपकरण घरक मौन इतिहासक वाहक अछि।

“उल्टा रास्ता” सीधी रेखा बनाम मनुष्यक चलबाक अनुभव देखबैत अछि। “खाली काँपी” ज्ञानक बहुलता स्वीकारबाक अभ्यास अछि, “एक शब्द गलत” एकटा शब्दक सम्बन्ध-विघटनकारी प्रभाव उद्घाटित करैत अछि। “दीप मिझेबाक पहिने” साझा सीमाक भीतर अपन बाटक पुनर्निर्माण करैत अछि।

“रातिक नाव” आपदामे नैतिक चयनकें तीव्र बनबैत अछि; “नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक” शिक्षकीय उत्तरदायित्व आ स्मरणक दुर्बलताक बीच प्रश्न उठबैत अछि।

“नदीक कागज” नक्शामे अदृश्य लोकक पुनर्गणना; “बालू घाट” प्राकृतिक संसाधनक उपभोगक माप; “हस्ताक्षरक शक्ति” स्त्री-मण्डलीक कागजी स्वीकृतिक वास्तविक अर्थ जाँचैत अछि। एहि खण्डमे कागज केवल बही नहि, निर्णयक प्रवेश-द्वार अछि।

“आइ सँ हम अपन उत्तर कें नम्बर नहि देब” — ‘खाली काँपी’

कथा-त्रिधारा, दोसर खण्ड : प्रपत्र, मोहर आ अदृश्य श्रम

“मचानक राति” रातिक रखवारीक अधूर लेखा प्रस्तुत करैत अछि। “घुरैत मोहर”

आधा चिन्हसँ बनैत सत्यक कहानी अछि। “प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य” संस्थागत नियममे बाहरी आवश्यकता प्रवेश करबाबैत अछि। “दिनांकक खाली खाँचा”मे सहायता लेल भरल सरकारी तिथि धीरे-धीरे व्यक्ति-क स्मृति बदलि दैत अछि—एहि कथा द्वारा दफ्तरी वाक्यक स्मृतिपर असर सूक्ष्म रूपेँ सामने अबैत अछि।

“सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ” मूल प्रविष्टिक त्रुटि मेटेबाक बदला ओकर इतिहास बचबैत अछि। “तीनटा खाली कुर्सी”क भोजन-क्रम अनुपस्थित व्यक्तिक स्थानकें दृश्यमान करैत अछि। “ओसाराक बल्ब” घरेलू छोट प्रकाशक वितरणमे सम्बन्धक राजनीति

देखबैत अछि; “एक कप चाय कम” हिसाब आ स्नेहक बीच रहस्य-सम्बन्ध; “बाँसक पुल” काजक बीच टूटल संवादक पुनर्स्थापन; “उजड़ल मेड़” खेतीक व्यवहारसँ झगड़ाक बादक सहकारपर रोशनी दैत अछि।

“मुदा लोकक बोलीमे ओ एखनो कुर्सी नम्बर शून्य छल” — ‘प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य’

“जे दिन कागजमे मानल जाए, ओ दिन कहू” — ‘दिनांकक खाली खाँचा’

“मूल इतिहास अछि, सुधार इतिहासक अगिला पाँति” — ‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’

कथा-त्रिधारा, तेसर खण्ड : अनुत्तरित प्रश्नक नैतिक सम्पन्नता

“विद्यालयक जूता” अभावग्रस्त बच्चीक विद्यालय-यात्रा आ घरक बीया बचबाक दृढ़ता मिलबैत अछि। “पंचायतक नल” पानिक उपयोगपर टोलक असमान पहुँचक प्रश्न राखैत अछि। “मजदूरी” भट्ठाक हिसाबमे बचल पचासक न मिटायल जायबकँ छोट मुदा ठोस श्रमिक-विजय बनबैत अछि। “छोट मास्टर” उत्तर देने बला गुरुक बदला प्रश्न सुननिहार बच्चाक शिक्षकीय दायित्व रचैत अछि। “सात सीढ़ी” स्मृतिक गिनती आ मानसिक व्यवधानक कथा अछि।

“नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा” संचिकाकँ कथावाचक बनाकऽ विभागीय विलम्बक नैतिक व्यंग्य गढ़ैत अछि। “सीमा” प्रशासनिक वर्गीकरणक सहजता आ खेत-पानिक निरन्तरता तुलबैत अछि। एहि खण्डक “ओसाराक बल्ब” पहिल खण्डक समान शीर्षकवाली कथासँ भिन्न अछि : एतय अनिमाक घरेलू ओसार श्रमक समयबद्ध ठाम बनैत अछि। “अनन्त पञ्जी” वंशक सूचीकँ अजन्मल भविष्यपर शासन करबासँ रोकैत अछि। “मिथिलाक पुस्तकालय” दुर्लभ पोथीक मोहक कल्पनाक बदला जाँचयोग्य सीमित प्रमाण स्वीकार करबाक अनुशासन विकसित करैत अछि।

“पचास बहुत पैघ संख्या नहि छल। मुदा पहिल बेर ओ कतहु बिलायल नहि छल” — ‘मजदूरी’

“कागज यात्रा करैत अछि जाहिसँ जिम्मेवारी नीचाँ उतरय” — ‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’

“अगिला जीवन एखन लिखल नहि अछि” — ‘अनन्त पञ्जी’

“जहाँ स्रोत एक-दोसरसँ नहि मेल खाइत अछि” — ‘मिथिलाक पुस्तकालय’

नव पाँखि : किशोर दृष्टि, गरिमा आ साझी धरोहर

“बैसाखीपर जिनगी”मे देहगत असमर्थताकेँ दया-प्रदर्शनक कथा बनएब अस्वीकार कएल गेल अछि। जीवनसंगी चुनबाक अधिकार, प्रश्न पूछबाक मर्यादा आ आत्मनिर्भर भविष्यक कल्पना पाठकेँ नैतिकता सिखबैत अछि, मुदा सहज चरित्र-व्यवहारक भीतर। “बाढ़िमे बचल पोथी” पानिसँ बचाओल पुस्तकक माध्यमसँ सामूहिक स्मृतिक संरक्षणकेँ साहसिक घटनाक संग जोड़ैत अछि; आपदा पार कऽ पोथी मात्र वस्तु नहि, पीढ़ीसभक सेतु बनैत अछि।

दुनू किशोर कथा पैघ पाठक लेल सेहो महत्वपूर्ण अछि। पहिल व्यक्तिक गरिमाक सम्बन्धमे दृष्टिक कोण बदलैत अछि, दोसर ज्ञान-संरक्षणक उत्तरदायित्वकेँ सामुदायिक कर्म बनबैत अछि। संकलनक अन्तमे एकरा राखब मात्र आयुवर्गक भेद नहि, संग्रहक नैतिक सूत्रकेँ अग्रिम पीढ़ी धरि बढ़ाएब अछि।

“जिनगी बैसाखीपर हो सकैत अछि, सपना नहि” — ‘बैसाखीपर जिनगी’

“किछु दाग क्षति मात्र नहि होइत अछि; ओ स्मरण सेहो करबैत अछि” — ‘बाढ़िमे बचल पोथी’

पृथक निकट-पाठ : प्रतिनिधि कथाक रचनात्मक संरचना

‘सिद्ध महावीर’ : लोककथनक विडम्बना आ धर्मक अर्थव्यवस्था

एहि कथामे अनमना दीदीक कथित सरलता नैतिक कमजोरी नहि। मन्दिरक लेल अपन अन्न बेचि कऽ श्रमक सम्मान राखनिहार स्त्री कानूनी कागजक जटिलता नहि बुझि सकैत छथि; भातिज आ दासजीक भाषाक तीर्थ-व्यवहारपर विश्वास करैत छथि।

कथानकक निर्णायक मोड़ जमीनक अंश हस्तान्तरण नहि, रास्ताक बन्द भेनाइ अछि। निहितार्थ—सम्पत्ति पर नाम आ सम्पत्तिक उपयोगक अधिकार अलग-अलग अछि। अन्तमे भातिजक मृत्युक चमत्कारवादी आ चिकित्सकीय दू व्याख्या थिक। लेखक ओहि विपरीत अर्थसभ केँ सामना करबैत छथि; घटना पर अलौकिक निर्णय नहि थोपैत। “सिद्ध” पद एहि कारण अर्थक विडम्बित केन्द्र बनि जाइत अछि।

‘जाति-पाति’ : बीहनि संरचनामे एक प्रश्नक विस्फोट

एहि कथा केँ सामान्य क्षुद्र आकारक प्रसंग बुझब भूल होयत। छोट संवादमे दूटा उच्चाधिकारीक समान पद, समान सामाजिक माहौल आ आत्मपरिचय देबाक असमान सुविधा मुठ्ठी भरि वाक्यमे टकराइत अछि। “क्यो किछु नै बाजत” दम्भक वाक्य नहि रहि सामाजिक सुरक्षा हासिल करबाक एकतरफा क्षमता बनि जाइत अछि।

एहिमे कथा कियो “नीक” पात्र चुनि नहि दैत; भाषाक अनुमति आ निषेध स्वयं घटना बनैत अछि। ई मैथिली बीहनि-कथाक संक्षेपण-सम्भावनाक उपयोगी प्रमाण अछि।

‘प्रतिलिपिकार’ : न भरल कोष्ठकक गम्भीरता

सुधीन्द्रक व्यावसायिक कौशल अक्षर स्वच्छ करब अछि। कथा कौशलकेँ नकारैत नहि, मुदा ओकर सीमा देखबैत अछि : एकरे बाद कथा लिखिते चाहै जे पहिल पाठ अज्ञेय अछि। प्रदर्शनीक दबाव “पढ़य लायक” रूप बनाबऽ चाहैत अछि, जबकि फाटल अक्षरक अस्पष्टता ऐतिहासिक तथ्य अछि।

एतय खाली स्थान कलात्मक बिम्ब आ पाठालोचनाक नियम दुनू अछि। ओकरा नहि भरब निर्णयहीनता नहि, अनुमायक लोभक विरुद्ध सक्रिय जिम्मेदारी अछि।

‘सीमाक गोली’ : बहुसाक्ष्यक अधूर निर्णय

कथामे एक गोली चलैत अछि, मुदा कथक ओकरा अनन्त निर्णयमे बदलि नहि दैत। आवाज सुनब, वक्तव्य देब, दूरी नापब आ खतरा मानब सभ भिन्न स्तरक क्रिया अछि। तथ्य आ अर्थक एहन छानबीन न्यायिक साक्ष्यविचारक रूप ग्रहण करैत अछि।

कथाक रचना अलग देखनिहारक सीमित दृष्टिसँ बनेल गेलेना अन्तिम वाक्य “गोलीक आवाज एक क्षणक छल” दीर्घ सामाजिक स्मृतिक सामना करैत अछि। एहि संरचनामे संवेदना तथ्यक प्रतिस्थापन नहि बनैत।

‘सूखल कमला’ : अनुपस्थित श्रोता संग नदीक संवाद

कथक गोपीसँ बात करैत रहैत छथि; सम्बोधित व्यक्ति अनुपस्थित रहितो कथाक नैतिक केन्द्र बनल रहैत अछि। सूखल धार प्राकृतिक वर्णन नहि, स्मृतिसँ भिन्न-भिन्न लोकक सम्बन्धक नक्सा अछि।

“तोहर स्थान पर अपन आवाज रखि देब”क अस्वीकृति कथावाचकक सीमा-बोधक सर्वाधिक निर्णायक रूप अछि। अपन प्रियजनक स्मृतिसँ कथा बना सकब आ ओकरा अन्तिम सत्य कहब अलग बात अछि।

‘मातृवंश’ आ ‘अनन्त पञ्जी’ : उत्तराधिकारसँ स्वायत्त जीवन धरि

दुनू कथामे वंशक लेखा अनिवार्य सांस्कृतिक धरोहर होइतहुँ भविष्यक आदेश बनलापर प्रश्नाकुल अछि। “मातृवंश”मे जेठ बेटीमे सौंपल घर चाभीक अर्थ बदलि देबाक बाद आदेशसँ पहुँच बनैत अछि।

“अनन्त पञ्जी”क अन्तिम स्थगन—शिशुक नाम बादमे राखब—वंशक निरन्तरता नहि मेटैत; ओकरा एक नव व्यक्तिक अनलिखल जिनगीक अगाँ सीमित करैत अछि। दुनू कथा समाजक स्मृति आ व्यक्तिगत इच्छाक बीच निर्मित नैतिक सहमतिक नमूना छथि।

‘डोमक बाँसुरी’ आ ‘जातिक कुर्सी’ : समताक भौतिक भाषा

“डोमक बाँसुरी”मे सुरक प्रशंसा पर्याप्त नहि; कलाकारक नाम आ भुगतान कार्यक्रम-पाँजिमे दर्ज होइत अछि। ई आर्थिक स्वीकृति कला आ जाति दुनूक प्रश्नकें एक संग उद्घाटित करैत अछि।

“जातिक कुर्सी”मे लिखित जातिनियम नहि रहितो कुर्सीक पूर्वनिर्धारित स्थान व्यवस्था पुनरुत्पादित करैत अछि। खिसकल कुर्सी सामाजिक चिन्ह बदलि दैत अछि। दुनू कथा अधिकार-विमर्शकें वस्तुक स्तरपर सजीव बनबैत अछि।

‘दिनांकक खाली खाँचा’ आ ‘सुधार-पौजिक मूल पृष्ठ’ : कागजक काल-सत्ता बाढ़ि अलग-अलग दिन घरक अलग भाग नष्ट करैत अछि; सहायता-प्रपत्र एकटा अधिकृत तिथि माँगैत अछि। धीरे-धीरे उक्ति “जे दिन कागजमे मानल जाए” घरक घटनागत स्मृतिमे घुसि जाइत अछि। कथा सूक्ष्म रूपसँ देखबैत अछि जे सरकारी सुविधा लेल मानकीकरण आवश्यक होइतहुँ अनुभवक इतिहासकें संकुचित करि सकैत अछि। “सुधार-पौजिक मूल पृष्ठ” प्रतिलोम सम्भावना खोलैत अछि : चूक मिटाबय नहि, चूक-सुधारक क्रम देखबाक योग्य रखब। दुनू कथा प्रमाणक सामर्थ्य आ ओकर जोखिमक परस्पर आलोचना करैत अछि।

‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’ : वस्तु स्वयं कथावाचक संचिका स्वयं अपन जनम आ विभागीय यात्रा कहैत अछि। मनुष्यक अधिकारपर अधिकारिक कागजक पहरा जतय भासैत अछि, ओतय बोलनिहार संचिका पाठककें प्रशासनिक विलम्बक ऐतिहासिक तंत्र भीतर लऽ जाइत अछि। भंग पड़ल साँधक मरम्मत फेर नव संचिकाक आरम्भ बनि जाइत अछि।

इएह पुनरावर्तन आख्यानक व्यंग्य अछि : समस्या वास्तविक समयमे बहैत रहती, कागज पदक्रमक सीढ़ी चढ़ैत रहत। कथा-कथनक मानवीकरण अन्तिम नैतिक प्रभाव धरि शिल्पक बुनियादी साधन बनैत अछि।

‘मिथिलाक पुस्तकालय’ : सर्वग्राही संग्रहक मोहसँ प्रमाणक विनय धरि ईशानक सोझाँ अकल्पनीय ज्ञान-संग्रहक सम्भावना अबैत अछि, मुदा रचनाक सार असीम साहित्यिक भण्डारक जयघोष नहि। अन्तमे ओ केवल तीन संचिका, चारि ध्वनि-टिप्पणी, दू नकाशा आ एक अधूर प्रश्नकें पर्याप्त मानैत अछि।

जे स्रोत एक-दोसरसँ नहि मेल खाइत अछि तकरा एके कथामे बाध्यतापूर्वक जोड़ि देबाक बदला मतान्तर स्वतंत्र राखब—ई कथाक विशेष उपलब्धि अछि। इतिहासलेखनक कल्पना स्वयं पर आलोचनात्मक अंकुश एतय प्राप्त करैत अछि।

‘बैसाखीपर जिनगी’ : करुणाक दया-विरुद्ध पुनर्स्थापन

शीर्षक आ दृश्य शारीरिक सहाराक चर्चा करैत अछि, मुदा पाठ भविष्यक आत्मनिर्णय पर केन्द्रित होइत अछि। विवाहक विषयमे दया-पात्र बनबाक विरोध स्वयं पात्रक सम्मानक विधान अछि।

कथान्तक वाक्य याद रहि जाइत अछि, कारण ओ देहक सीमाकेँ नकारैत नहि, बल्कि जीवनक सम्भावनाकेँ ताहि सीमामे कैद होयबासँ रोकैत अछि।

‘बाढ़िमे बचल पोथी’ : बचत वस्तुसँ सामुदायिक स्मृति धरि

किशोर पात्रक सक्रिय जोखिम-बोध आ पुस्तक बचेनिहार सामूहिक सहयोगक कथा सन्देश मात्र नहि। भीजल पोथीपर रहल दाग तकर भौतिक यात्रा आ आपदाक स्मृति बनि जाइत अछि।

पुस्तकालयक ऊँच ताकमे राखल पोथी संग गामक इतिहास नव पीढ़ीक हाथ पहुँचित अछि। ई उपसंहार सम्पूर्ण चयनक अभिलेख-स्मृति बहसकेँ पठनीय आ आशामय अंत दैत अछि।

बयासी कथाक स्वतंत्र संक्षिप्त पाठविश्लेषण

निम्नलिखित पाठ-टिप्पणी सभ प्रत्येक रचनाक कथात्मक क्रिया, प्रमुख प्रतीक आ ओकर आलोचनात्मक प्रश्नकेँ अलग पहिचान दैत अछि। एके शीर्षकक दू भिन्न रचनाकेँ अलग-अलग मूल समूहसँ चिन्हल गेल अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

01. सिद्ध महावीर — अनमना दीदीक धार्मिक श्रम, भातिजक सम्पत्ति-चालि आ चमत्कारक दुहरी व्याख्या विश्वासकेँ प्रश्नसँ मुक्त नहि होमय दैत अछि।

02. डोमा, बुधन आ... — बुधनक प्रवासन-श्रम आ डोमाक शिक्षा जातिगत गतिशीलताक दीर्घ सामाजिक समय रचैत अछि; संवाद मूल प्रश्नक पुनरावृत्ति करैत अछि।

03. शब्दशास्त्रम् — तालपत्र आ शब्दार्थक दार्शनिक बहस ज्ञानक पाठ, दावे आ परम्परागत व्याख्याक सत्ताकेँ नाटक बनबैत अछि।

04. महिसबार ब्राह्मणक गाम — पोखरि, धान, जातिगत टोल आ कहबैका लोकक विस्तार गामकेँ एकरेखीय समुदाय नहि, परस्पर हितक बहुल भूगोल बनबैत अछि।
05. जाति-पाति — अत्यल्प संवाद पदसमानता आ जातिगत आत्मपरिचयक असमान सार्वजनिक अधिकारकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।
- स्मृतिक दोसर दिस
06. प्रतिलिपिकार — सुधीन्द्रक खाली कोष्ठक पाठ-सम्पादनक नैतिकता आ स्वच्छ प्रतिलिपिक संभावित छलना देखबैत अछि।
07. अन्तिम पाठक — जळल पुस्तकालय पुनर्संगठनक अवसर बनैत अछि, मुदा स्मृतिसँ मूल पुस्तक पुनः बना देबाक जोखिम बचले रहैत अछि।
08. सीमाक गोली — सीमा-पत्थर आ गोलीक घटनामे साक्ष्यक अंतर स्पष्ट कऽ कथा भय, इरादा आ क्रियाक भिन्नता बचबैत अछि।
09. राजमिस्त्रीक गिरावट — निर्माणस्थलक सुरक्षा-पट्टी आ कमजोर रस्सीक विरोधाभास दुर्घटनाकेँ व्यक्तिगत भूलक सरल कथासँ बाहर अनैत अछि।
10. काजर — दादीक काजर लगैनाइ पीढ़ीक संवादमे सजावटसँ अधिक आत्मप्रस्तुति आ स्त्रीक स्वीकृत रूपक प्रश्न खोलैत अछि।
11. सूखल कमला — अनुपस्थित गोपीकेँ सम्बोधन करैत कथक नदीक पुरनका धार आ निजी स्मृतिक बीच अपन कथनक सीमा स्वीकार करैत अछि।
12. माटिक गन्ध — पहिल बरखा आ माटिक गन्ध शहर-गामक दूरीकेँ स्मृतिपरक देहगत अनुभवमे बदलैत अछि।
13. बहिनसभ — मृदुला-नीराक दीर्घ अन्तरालक बहिनपन अधूर रेखा द्वारा असम्पूर्ण मेलमिलापक रूप लेइत अछि।
14. घर नम्बर पाँच — घरक पुरान खिड़की आ बदलैत निवासी स्थानक अनाम स्मृति आ पीढ़ीगत स्वामित्वपर प्रश्न उठबैत अछि।

15. संगीत शिक्षक — व्यावसायिक परीक्षा आ संगीत-स्मरणक समानान्तर प्रसंग कौशल, समान अवसर आ पुरान सुरक अवशेष जोड़ैत अछि।

इजोत — जनम-जनमक कथा

16. मातृवंश — जेठ बेटीकेँ सौंपल घर स्वायत्तताकेँ बाध्य करैत अछि; चाभी आदेशक बदला लौटबाक सम्भावना बनैत अछि।

17. राग — घाटक गीत आ रिकॉर्डिंगक प्रसंगमे लोकसुरक सामूहिक स्वामित्व, अनुमति आ पुनरुत्पादनक नैतिकता उपस्थित अछि।

18. अदालत — गवाहीक प्रश्नोत्तर नदी, सीमाचिन्ह आ मानव स्मृतिक विभिन्न स्तरकेँ खुलल रखैत अछि।

19. ड्रम — आपदामे हेरायल व्यक्तिक अनिश्चित कालक्रम दैनिक घर-व्यवहारमे अधूर शोकक उपस्थिति देखबैत अछि।

20. विदेह — वंशावलीक रिक्तिकेँ हकदारीक प्रमाण नहि बनबाक आग्रह आ खाली सम्पादकीय पन्ना साझा स्मृतिलाई खोलैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-१

21. दू अक्षर — घरक तीन छाता आ छोट पत्र मनुष्यक बीच शब्दक अनकहल दूरीक नितान्त निजी रूप अछि।

22. फोटो स्टूडियो — वृद्धा अपन आजुक चश्मा आ चेहराक निशानसँ चित्र चाहैत छथि; छायाचित्र बनैत अछि आत्मनिर्धारणक स्थिर क्षण।

23. एक जोड़ी जूता — जूता दानक वस्तु नहि, उपयोगसँ अगिला जरूरतमन्द धरि घूमयवला व्यावहारिक सहकारक चिन्ह अछि।

24. बाँटल छाँह — पड़ोसी ठेलावालाक साझी छाँह सार्वजनिक स्थानक निजी प्रतिस्पर्धा आ सामूहिक व्यवहारकेँ मिलबैत अछि।

25. दोसर दर — आरोग्य केन्द्रक दू दरवाजा प्रशासनिक भेदक अदृश्य भाषा अछि; गलत प्रवेश अधिकारक ठोस परीक्षण बनैत अछि।
26. सात मिनटक आवाज — सात मिनटक समय-सीमा भीतर ध्वनि आ घरपर दूर रहल सम्बन्धक अलग लय निहित अछि।
27. अधूर नाटक — मंचक अटकल परदा आ अधूर प्रस्तुति सम्बन्धक अनिर्णीत प्रश्नक समान्तर रचना करैत अछि।
28. एकतीसम खाट — महिला आश्रयक निर्धारित तीस खाट एकतीसम मनुष्यक जरूरत देखिते अपूर्ण संख्या सिद्ध होइत अछि।
29. ईटक निशान — ईटक छोट निशान श्रमिक टोलीक श्रमक लेखा आ गुमनामी दुनूक वाहक अछि।
30. गिनतीक बाहर — बाढ़-क्षति गिनतीक प्रपत्र एक मकान-नाममे भीतरी निवासी सभकेँ समेटि नहि सकैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-२

31. बाँधक ओहि पार — विस्थापित गामक देवस्थानक बहस भूगोल आ सामूहिक पवित्रताक टकराव पर टिकल अछि।
32. जमीनक आवाज — छओ हाथक बाट आ पुरान पाथर जमीनक कथित निःशब्दताकेँ अधिकारक विवाद बनबैत अछि।
33. सिलाइ मशीन — पुरान सिलाइ मशीनक नव मोटर श्रमिक स्त्रीक आय आ घरक भूमिका बदलैत अछि।
34. दस किलो चाउर — दस किलो चाउरक तौल सरकारी आश्वासनकेँ तराजू पर प्रत्यक्ष सत्यापनक माँग बनबैत अछि।
35. अधूरा गीत — अधूर लोकगीत कण्ठसँ कण्ठ धरि बहैत अछि; स्वत्व एकल नामक बदला सामूहिक श्रममे फैलैत अछि।

36. माटिक बाँसुरी — कुम्हारक चाक आ बालकक अधपाक माटि कौशल अर्जनक उचित समयक प्रतीक छथि।
37. खुलल दरवाजा — खुलल फाटक बाहर जेबाक अवसर भरि नहि; स्त्रीक संकोच आ घरक स्वीकृतिक कठिन लय उपस्थित अछि।
38. मौन गवाही — न्यायालयक मौन बोलबाक अक्षमता मात्र नहि, स्वतन्त्र गरिमा आ गवाहीक सीमा सेहो अछि।
39. कुर्थीक दालि — कुर्थी, मडुआ आ चाउरक घरैती भूख बाजार आ खेतीक बदलैत संबंधमे पिरोएल अछि।
40. एक बीघाक सपना — बीस हाथक रस्सी आ एक बीघाक खेती कामगारक सीमित, व्यवहारिक स्वप्नक माप बनैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-३

41. खाली थैला — खूँटीपर लटकल खाली थैला अभाव आ अपूर्ण रोजीरोटी-संबंधक अवशेष अछि।
42. नाव बान्हल रहल — नावक गाँठ आपदा आ सम्बन्धक बीच रहि गेल निर्णयक ठोस प्रतीक अछि।
43. पोखरिक रखबार — पोखरिक रखबारक रोजक व्यवहार सामूहिक संसाधन पर मालिकाना बनाम देखभालक प्रश्न बनबैत अछि।
44. डोमक बाँसुरी — डोम कलाकारक नाम-सहित मेहनताना सांस्कृतिक समानताकें आर्थिक लेखामे पंजीकृत करैत अछि।
45. बरगदक नीचाँ रजिस्टर — बरगदक छाँहक कात रजिस्टर सार्वजनिक वितरित लाभक आधारक परीक्षण करैत अछि।
46. जातिक कुर्सी — कुर्सीक पुरान जातिगत क्रम टूटैत अछि; कोनो उद्धोष बिना स्थानक व्यवहार बदलैत अछि।

47. किरायेदार कन्या — किरायेदार युवतीक आवास घरेलू सीमा आ शहरक असुरक्षित सम्बन्धक बीच बनैत अछि।

48. गुप्त बचत — मालती देवीक गुप्त बचत पारिवारिक आर्थिक श्रमक अदृश्यता आ स्वतन्त्र विवेक देखबैत अछि।

49. स्टेशन जे नक्शामे नहि — नक्शामे अनुपस्थित स्टेशन दृष्टिकोण आ यात्राक यादक बीच तथ्यक अपूर्णता खोलैत अछि।

50. अपरिचित अपन घर — अपन घर लौटि अपरिचित लगबाक अनुभव स्मृति, घरक वस्तु आ बदलल सम्बन्धक असहज कथा अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-१

51. आवाज नहि देनिहार घंटी — न बजबाक घंटी घरक मरम्मतिक संग अपूरित पुकारक ठोस, मौन अवशेष बनि रहैत अछि।

52. उल्टा रास्ता — सीधा नापल रस्ता आ मनुखक अनुभवक वक्रता आधुनिक नक्शाक सीमाकें उद्धाटित करैत अछि।

53. खाली कॉपी — खाली कॉपी शिक्षकीय उत्तरक निश्चितता छोड़ि प्रश्नक अनेक सम्भावना स्वीकार करैत अछि।

54. एक शब्द गलत — गलत उच्चरित एक शब्द उपकार, उधार आ पारिवारिक स्नेहक जटिल हिसाब उघारैत अछि।

55. दीप मिझेबाक पहिने — दीप बुझबासँ पहिने आँगनक रेखाक अतिक्रमण घरक भीतरक स्वायत्त बाट बनबैत अछि।

56. रातिक नाव — बाढ़िक राति नाव जकरा पहिने लऽ जाए, ओहि चयनमे संकट-नीति परीक्षण होइत अछि।

57. नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक — नाम बिसरनिहार शिक्षकक कथा स्मृति आ नैतिक दायित्वक बीच सरस किन्तु कठिन तनाव अछि।

58. नदीक कागज — नदीक कागज नामांकन आ पुरान नक्शामे नहि देखायल बसावटकेँ सर्वेक्षणमे दृश्य करबैत अछि।

59. बालू घाट — बालू घाटमे पानीक निर्मलता आ रस्सीक गाँठ प्राकृतिक संसाधनक हिसाबक दू पैमाना छथि।

60. हस्ताक्षरक शक्ति — महिला बचत-मण्डलीक हस्ताक्षर स्वीकृतिक औपचारिकता नहि, पूरा संचिका देखबाक अधिकार बनैत अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-२

61. मचानक राति — मचानपर रातिक पहरा आ खाली पाँजि जोखिमक सामूहिक समयक असमान लेखा अछि।

62. घुरैत मोहर — आधा मोहर सम्पूर्ण प्रमाणक छाया नहि बनैत; विचारक आधा वृत्त मनुष्यकेँ पूरा करब पड़ैत अछि।

63. प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य — अस्पतालक शून्य-नम्बर कुर्सी प्रपत्रक बाहरक आवश्यकता जगबैत संस्थाक नव प्राथमिक-जाँचक कारण बनैत अछि।

64. दिनांकक खाली खाँचा — बाढ़-सहायताक बाध्य तारीख घटना-स्मृतिपर फेर चढ़ि सरकारी दिनांककेँ निजी सत्य जकाँ स्थापित करैत अछि।

65. सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ — मूल खाता काटि नहि, सुधारक इतिहास बचा राखब कानून, समय आ भूलक जिम्मेदारीक संकेत अछि।

66. तीनटा खाली कुर्सी — भोजनक तीन खाली कुर्सी अनुपस्थित व्यक्तिक प्रतिष्ठा आ कागजी नामक रिक्ति द्वारा अर्थ ग्रहण करैत अछि।

67. ओसाराक बल्ब — पहिल ओसारा-कथामे बारह वाटक बत्ती घरेलू साझा स्थानक वितरणक लघु रूपक अछि।

68. एक कप चाय कम — एक कप चाय घटबाक घरेलू पाँजि हिसाब, प्रतीक्षा आ अनकहल दैनन्दिन सम्बन्धक ओर संकेत करैत अछि।

69. बाँसक पुल — बाँसक पुल पर पड़ोसीक मौन टूटैत अछि; सहकारक क्रिया संवादक पहिल शब्द बनैत अछि।

70. उजड़ल मेड़ — उजड़ल मेड़ संघर्षक इतिहास रखैतहुँ खेतीक व्यवहारमे साझा पानि-बाटक अवसर बनैत अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

71. विद्यालयक जूता — सरिताक जूताक संग बाबूक घरक बीया बचल रहनाइ शिक्षा आ भविष्यक दू तरहक निवेश अछि।

72. पंचायतक नल — पंचायतक नल सार्वजनिक सुविधा पर किसक समय आ पहुँचक अधिकार अछि, तकर कठोर परीक्षा अछि।

73. मजदूरी — ईंट-भट्ठाक “बाकी ५०” छोट संख्या भऽ कऽ श्रमिकक अदृश्य मजदूरीकेँ लेखामे दृश्यमान करैत अछि।

74. छोट मास्टर — बाल गुरु प्रश्नपर तैयार उत्तर देबाक बदला सहपाठीक अलग उत्तर सुनय लगैत अछि।

75. सात सीढ़ी — छापाखानाक सात सीढ़ी याद आ शरीरक गिनतीक विसंगतिक कहानी बनैत अछि।

76. नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा — संचिका प्रथम पुरुषमे अपन चालि कहैत विभागीय देरी आ मरम्मतक पुनर्निवेदनक विडम्बना खोलैत अछि।

77. सीमा — प्रशासनिक सीमा निर्धारण करैत अछि, पानि बिना रुकने बहैत अछि; वर्गीकरणक शर्तक भौतिक आलोचना अछि।

78. ओसाराक बल्ब — दोसर “ओसाराक बल्ब”मे अनिमाक सिलाइ-काजक ओसारा आय आ समयक सार्वजनिक घोषणा ग्रहण करैत अछि।

79. अनन्त पञ्जी — पञ्जीक नामकरणक दाबापर नवजातक अनलिखल जीवन नैतिक सीमा रचैत अछि।

80. मिथिलाक पुस्तकालय — अद्भुत संग्रहालयक सम्भावना छोड़ि सीमित अभिलेखक मतभेदक स्वीकार इतिहास-रचनाक अनुशासन अछि।

नव पाँखि

81. बैसाखीपर जिनगी — बैसाखीपर चलैत युवकक भविष्य पर दयाक नाममे अधिकार नहि जमाओल जाइत; स्वप्नक स्वाधीनता मुखर अछि।

82. बाढ़िमे बचल पोथी — पानीसँ बचल पोथीक दाग सामुदायिक स्मृतिक भौतिक चिह्न बनि नव पीढ़ी धरि हस्तान्तरित होइत अछि।

भाषा, शिल्प आ साक्ष्य-व्यवहारक तुलनात्मक विवेचन

वाचकक रूपान्तर आ समयक बहुस्तर

पहिल स्रोतसमूहक संवादप्रधान, कथकक हस्तक्षेप करैत लोकवाचक “सिद्ध महावीर” आ “डोमा, बुधन आ...”मे दृष्टिगोचर होइत अछि। “सूखल कमला”क पत्र-जेकाँ सम्बोधन, “अदालत”क प्रश्नोत्तर, “नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा”क बोलैत वस्तु, “सात सीढ़ी”क निजी स्मृतिवाचक आ “मिथिलाक पुस्तकालय”क आलोचनात्मक अन्वेषी—सभ अलग कथन-भूमिका रचैत छथि। अतः एकटा “लेखकीय आवाज” मानि सभ कथाकँ एकरूप करब पाठक संग अन्याय होयत।

समय कतेको ठाम घटनाक रेखा मात्र नहि। “दिनांकक खाली खाँचा”मे सरकारी तिथि बितल अनुभव बदलैत अछि; “बहिनसभ”मे चालीस बरखक दूरी रेखाक अर्थ बदलैत अछि; “अनन्त पञ्जी”मे लिखल पुरान नाम नवजातक भविष्य पर अधिकार नहि पबैत अछि। एहि कथासभमे समय स्मृति, दस्तावेज आ वर्तमान निर्णयक त्रिकोण बनि सक्रिय रहैत अछि।

वस्तु-संवेदना आ लघु रूपकक संरचना

जूता, कुर्सी, खाट, बल्ब, चाय, तौल, पाँजि, नकाशा, नाव, बाँसुरी आ चाभी कथाजगतक आवर्ती वस्तु छथि। ई महज प्रतीक सज्जा नहि, कारण वस्तुक उपयोगक कारण घटना आगाँ बढ़ैत अछि। “जातिक कुर्सी”मे कुर्सीक स्थान बदललासँ अभौतिक जातिभेदक

असर बदलैत अछि; “मजदूरी”मे पचास नहि मेटायब अर्थ-संबंधक हस्तक्षेप अछि; “बाढ़िमे बचल पोथी”मे दाग बचलासँ सांस्कृतिक स्मृति बचैत अछि।

तथापि एहि वस्तु-केन्द्रित पद्धतिक पुनरावृत्ति कतहु पाठककँ पहिने सँ कथान्त अनुमान करबा दैत अछि। किछु कथामे स्वल्प संकेतक बल अति प्रखर अछि, किछुमे एक वस्तुक प्रतीकात्मक अन्तिम वाक्य थोड़े बेसी स्पष्ट कऽ देल गेल अछि। एहि अन्तरकँ गुणवत्ता-मूल्यांकनक वास्तविक कसौटी मानल चाही।

संस्थागत शब्दावली आ मैथिलीक गद्य-सम्भावना

“नियम”, “आदेश”, “हस्ताक्षर”, “मूल”, “सुधार”, “साक्ष्य”, “मद”, “प्रपत्र”, “तौल” आ “क्रम” सन शब्द कथा-भाषामे एना प्रयुक्त छथि जे श्रम आ अधिकारक अनुभव एतहि प्रकट होइत अछि। एहि कारण कार्यालयी जीवन मैथिली कथाक अपरिक्लपनीय बाहरी भूगोल नहि रहैत। भाषा व्यवहारक सत्यापनीयता आ अधिकारक संरचनाकँ कथानकक भीतर अनैत अछि।

आन दिश “महिसबार ब्राह्मणक गाम”क लोकवर्णन, “अधूरा गीत”क कण्ठाधारित संस्कृति, “सूखल कमला”क संस्मरणात्मक आन्तरिक स्वर आ “डोमक बाँसुरी”क कलाकारक गीतात्मक संसार भाषा कँ सूखा दफ्तरी मुहावरा बनेबासँ बचबैत अछि। आलोचनात्मक चुनौती—दुनू भाषिक प्रवाहक अनुपात पहिचानब।

सामाजिक न्याय : उद्घोषक बदला कार्यविधि

जातिगत अवहेलना “जाति-पाति”, “डोमक बाँसुरी”, “जातिक कुर्सी” आ “डोमा, बुधन आ...”मे चारि अलग रूप लेइत अछि—बाजबाक साहस, कलाकारक भुगतान, बैसबाक स्थान, आ शिक्षा-गतिशीलता। एकर कारण समता केवल विचारधारा नहि, रोजक व्यवहारमे बदलबाक उपाय सेहो अछि।

स्त्री-पात्र “काजर”, “मातृवंश”, “गुप्त बचत”, “हस्ताक्षरक शक्ति”, “दोसर दर” आ “ओसाराक बल्ब”मे दयाक निष्क्रिय पात्र नहि। ओ पहचान, आय, अनुमति आ

निर्णायक कर्ता छथि। मुदा प्रायः एहि करुण सामाजिक अन्तसभमे जीत सीमित होइत अछि : एहि सीमा-बोधसँ कथा सरलीकृत विजयगाथा बनेबासँ बचैत अछि।

मैथिली साहित्येतिहासमे तुलनात्मक स्थान

मैथिली गद्यक पुरान वर्णनशीलता आ आधुनिक सामाजिक कथा एके सीधा विकासरेखाक दू छोर नहि। लोकजीवनक विस्तृत सूचनाक परम्परा, व्यंग्यक प्रश्न-भाव, ग्रामीण श्रमक यथार्थ, नगरक अस्थिर सामाजिकता आ बीहनि कथाक अर्थ-संकोचन अलग-अलग धाराक संग आजुक लेखनमे फेर सक्रिय होइत अछि। एहि संकलनक विशिष्टता ई जे ई सभ धारा अभिलेख, प्रपत्र आ सार्वजनिक साधनक संघर्षमे एक संग अनैत अछि।

यात्रीक “बलचनमा”क ग्रामीण श्रम आ सामाजिक असमानताक धरातलसँ “मजदूरी”, “कुर्थीक दालि” आ “डोमा, बुधन आ...”क विषयगत संवाद देखल जा सकैत अछि; मुदा तिनकर कृति आ एहि संकलनक ऐतिहासिक समय, कथा-विस्तार आ वाचक-विन्यास एक नहि। समान कथा-भूमि देखिते प्रभाव-सिद्धि मानि लेब उचित नहि। एहि तुलना केँ ग्रामीण वर्गानुभवक बदलल लेखनरूप बुझल जाए।

हरिमोहन झाक व्यंग्य-परम्परासँ “सिद्ध महावीर”क विश्वास-व्यापारपर प्रश्न आ “जाति-पाति”क शब्दगत उलटफेरक आलोचनात्मक निकटता अछि; तथापि एतुक्का व्यंग्य एकल चुटीला समाधानपर प्रायः समाप्त नहि होइत, बल्कि अनिर्णीत संस्थागत परिणति छोड़ैत अछि। राजकमल चौधरी जकाँ आधुनिक कथाक मानवीय विखण्डनक प्रसंगसँ “अपरिचित अपन घर”, “एक शब्द गलत” आ “सात सीढ़ी”क तुलना विचारोत्तेजक अछि, मुदा बिना स्वतंत्र समांतर पाठक विस्तृत जाँचक शिल्पगत समानता केँ ऐतिहासिक ऋण बताएब नहि चाही।

जगदीश प्रसाद मण्डलक ग्रामीण जीवनप्रधान कृतिसूचीसँ खेतीक वस्तु, श्रम-विभाजन आ सामाजिक व्यवहारक साझा क्षेत्र चिन्हित होइत अछि। मुदा गजेन्द्र ठाकुरक चयनमे विशिष्ट नव केन्द्र अधिकारीक संचिका, रजिस्टर, पंजीकरणक मोहर आ तकनीकी

प्रमाण अछि। मुन्ना जीक बीहनि कथा-परम्पराक सन्दर्भमे “जाति-पाति”क लघु प्रहार आ “नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा”क वस्तुवाचक प्रयोगकेँ विधागत वैविध्यक दू छोर मानल जा सकैत अछि। एतय तुलना परम्परा आ संभावनापर केन्द्रित अछि, कृतिक अनुकरण-सम्बन्ध सिद्ध करबाक प्रयत्न नहि।

विदेहक साहित्यिक पोथी-सूची आ शोध-सूची निरन्तर प्रकाशित स्रोतसभकेँ खोजबाक मार्ग दैत अछि। किन्तु कोनो सूचीमे कृतिक उपस्थिति मात्र ओकर ऐतिहासिक स्थान वा सौन्दर्य-मूल्यक अन्तिम प्रमाण नहि। ताहि कारण एहि अध्ययनक मूल्यांकनक मुख्य आधार संकलनक कथापाठ स्वयं रहल अछि, आ विदेहक सूचनासभ साहित्येतिहासक परिप्रेक्ष्य भरि प्रदान करैत अछि।

सम्पादकीय चयनक आलोचना आ मूल्यांकन

दस स्रोतसमूहक सुस्पष्ट पृथक्करण पाठक लेल लाभकारी अछि। विशेषतः “ओसाराक बल्ब”क दू भिन्न कथा अलग समूहमे रहितो शीर्षक एक होयबाक कारण मौलिक घटनाक आधारपर पहिचानल जाएबाक चाही। चयनमे कथासंख्याक बहुलता पाठककेँ सामूहिक विषय-सूत्र खोजबाक पर्याप्त अवसर दैत अछि; संगहि तीस-तीस कथा एक शृंखलाक तीन खण्डसँ लेबाक कारण ताहि शृंखलाक रीतिगत समानता तुलनात्मक कुल मूल्यांकनपर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव डालि सकैत अछि।

शिल्पगत रूपेँ संकलनक प्रमुख शक्ति बहुस्तरीय प्रमाण-व्यवहार, स्वल्प वस्तुसँ पैघ सामाजिक अर्थ उपजाएब, पात्रक अधिकारक सीमा बनाइब, आ कथान्तमे गैरजरूरी निर्णय सँ परहेज अछि। कमजोर पढ़निहार स्थल ओतय अछि जतय प्रक्रिया-लेखनक लम्बाइ भावगत तनावक गति धीमा करैत अछि—विशेषतः विस्तृत शास्त्रीय बहस अथवा दफ्तरी जाँचक क्रमक घनत्वमे। दोसर चुनौती एकर आवर्ती नैतिक रूपक : खाली पन्ना, अधूर हस्ताक्षर, बाँचल अङ्क आ मौन अन्त कएक बेर असाधारण प्रभाव छोड़ैत अछि, मुदा बहुत संख्यामे एकहि विन्यासक समीप पड़ला पर नवीनता कनेक क्षीण भऽ सकैत अछि।

एहि आलोचनात्मक आरक्षणकेँ रचनासभक सामाजिक प्रतिबद्धता-विरोध नहि बुझबाक चाही। साहित्यिक प्रश्न ई जे कोन कथा अपन नैतिक बोधकेँ पात्रक क्रियासँ उपजा सकैत अछि आ कोन ठाम अर्थक स्पष्टीकरण कने अग्रिम होइत अछि।

“प्रतिलिपिकार”, “सीमाक गोली”, “मातृवंश”, “जातिक कुर्सी”, “दिनांकक खाली खाँचा”, “अनन्त पञ्जी” आ “बैसाखीपर जिनगी” अपन शिल्पक निर्णय आ पात्रक अनुभवक कारण तुलनात्मक रूपेँ विशिष्ट ठहरैत छथि। “महिसबार ब्राह्मणक गाम” आ “शब्दशास्त्रम्”क पठनीयता दोसर प्रकृतिक अछि : वर्णनात्मक आ दार्शनिक घनत्वक कारण एकर कसौटी संक्षिप्त कथासँ भिन्न राखब आवश्यक अछि।

निष्कर्ष

गजेन्द्र ठाकुरक चयनित बयासी कथा मैथिली साहित्यक सामाजिक विस्तारकेँ केवल नव विषय देबाक प्रयत्न नहि, भाषा आ कथाशिल्पक भीतर प्रमाण, असहमति आ न्यायबोधक नव परिस्थिति अनबाक प्रयत्न अछि। जाति-व्यवस्था, स्त्रीक स्वायत्तता, भूमिक अधिकार, विद्यालयक पहुँच, बाढ़ि, श्रमिकक बकाया, अस्पतालक प्राथमिकता, लोकगीतक स्वत्व आ वंश-पाँजिक उपयोग—सभ ठाम कथा पुछैत अछि : ककर अनुभव गनल गेल, ककर नाम छूटल, ककरा बाजबाक अधिकार भेटल, आ कोन कागज मानवीय जीवनक ऊपर अनावश्यक शासन करैत अछि?

कथासभक एकटा केन्द्रीय उपलब्धि ई अछि जे अनिर्णीत प्रश्नकेँ आन्तरिक दुर्बलता नहि, आलोचनात्मक ईमानदारी बनबैत छथि। अनमना दीदीक अन्धविश्वास-त्यागसँ प्रारम्भ भेल यात्रा स्मृति आ मूलक भेद बचाबैत, श्रमिकक पचास टाका लिखाबैत, कुर्सीक स्थान बदलैत, अगिला नामक आदेश स्थगित करैत, अन्ततः बाढ़िमे बचल पोथी नव पीढ़ीक हाथ सौंपैत अछि। ई यात्रा सीधा प्रगतिक जयघोष नहि; ई रोजमर्राक निर्णयमे न्याय-सम्भावना खोजबाक साहित्यिक साधना अछि।

सन्दर्भ-सूची

मूल कृति आ स्रोत-पोथी

• गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा। चयन आ सम्पादन : आशीष अनचिन्हार। विदेह, २०२६।

- गजेन्द्र ठाकुर। पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल।
- गजेन्द्र ठाकुर। स्मृतिक दोसर दिस।
- गजेन्द्र ठाकुर। इजोत — जनम-जनमक कथा।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-शतत्रयी, खण्ड-१।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-शतत्रयी, खण्ड-२।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-शतत्रयी, खण्ड-३।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-त्रिधारा, खण्ड-१।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-त्रिधारा, खण्ड-२।
- गजेन्द्र ठाकुर। कथा-त्रिधारा, खण्ड-३।
- गजेन्द्र ठाकुर। नव पाँखि।

साहित्येतिहासक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

- यात्री। बलचनमा। विदेहक पोथी-सूचीमे सूचीबद्ध।
- जगदीश प्रसाद मण्डल। गामक जिनगी; जिनगीक जीत; मौलाइल गाछक फूल। विदेहक पोथी-सूचीमे सूचीबद्ध।
- मुन्ना जी। प्रतीक (विहनि कथा संग्रह)। विदेहक पोथी-सूचीमे सूचीबद्ध।
- अशोक। ओहि रातिक भोर; डैडीगाम। विदेहक पोथी-सूचीमे सूचीबद्ध।

विदेहक स्वीकृत अभिलेखीय आ शोध-सूची

- विदेह। “विदेह पोथी” : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- विदेह। “विदेह गद्य” : <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>
- विदेह। “विदेह शोध-सूची” :

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

• विदेह। “विदेह शोध-लेख : अंक १ सँ ४५१ धरि” :

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

सन्दर्भ-सूचीमे मूल स्रोत-पोथीक प्रकाशन-वर्ष अथवा प्रकाशकक विवरण नहि गढ़ल गेल अछि। तुलनात्मक परिप्रेक्ष्यक कृति-शीर्षक विदेहक उपलब्ध सूचीसँ ग्रहण कएल गेल छथि; प्रत्यक्ष पाठान्तर जाँचक अभावमे तिनका संग निश्चित प्रभाव-सम्बन्धक दावा नहि कएल गेल अछि।

१.११. नित नवल आशीष अनचिन्हार — गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

बहुविध रचनाशीलता, ज्ञानक प्रमाण आ समानान्तर साहित्येतिहास

सार

आशीष अनचिन्हारक ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’ मैथिलीमे लेखक-केन्द्रित समीक्षा-पुस्तकक प्रचलित सीमाकें विस्तृत करैत एकटा बहुविध बौद्धिक परियोजनाक रूप ग्रहण करैत अछि। एकर विवेच्य क्षेत्रमे उपन्यास आ कथा जकाँ सर्जनात्मक साहित्यक संग नाटक, पद्य, समालोचना, दर्शन, इतिहास, पञ्जी-प्रबन्ध, व्याकरण, शब्दार्थ-संसाधन, बाल-साहित्य आ द्विदिश अनुवाद सम्मिलित अछि। प्रस्तुत अध्ययनक प्रमुख प्रतिपाद्य ई अछि जे ई पुस्तक केवल कृतिसूची वा प्रशंसात्मक परिचय नहि, बल्कि ‘पाठक प्रमाण’ आ ‘प्रमाणक सामाजिक दायित्व’क बीच ठाढ़ एकटा सम्पादकीय प्रयास थिक। तथापि किछु स्थाने शीर्षकाधारित अर्थ-विस्तार, एकरूप समीक्षात्मक भाषा, विशाल सामग्रीक असमान आलोचनात्मक गहनता आ साहित्येतिहासक व्यापक दाबी लेल आवश्यक तुलनात्मक पुष्टिक अभाव एकर जाँचक विषय बनैत अछि। अध्ययनमे ग्रन्थक मूल सम्पादकीय विन्यास तथा प्रतिनिधि समीक्षाखण्डक निकट पठन, मूल मुद्रित अक्षर-संरचनासँ मिलाओल चयनित उद्धरण, मैथिलीक प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तिक तुलनात्मक अनुशीलन, तथा विदेहक प्रकाशित शोध-अभिलेखक सन्दर्भक उपयोग कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई सम्पादकीय परियोजना मैथिली साहित्यिक संस्थाक आत्मावलोकनक महत्त्वपूर्ण उदाहरण अछि; एकर स्थायी आलोचनात्मक फल आगा स्रोत-पञ्जी, विरोधी पाठ आ विशिष्ट कृतिसाक्ष्यक क्रमबद्ध परीक्षणपर निर्भर रहत।

बीजशब्द : गजेन्द्र ठाकुर; आशीष अनचिन्हार; मैथिली समालोचना; सम्पादकीय इतिहास; प्रमाण-विवेक; समानान्तर साहित्येतिहास; पञ्जी; अनुवाद; बाल-साहित्य; विदेह।

प्रस्तावना : लेखकक समग्रता आ सम्पादकक दृष्टिक भेद

‘समग्र’ शब्द प्रायः पाठकमे पूर्णता आ निर्णायकताक अपेक्षा जगबैत अछि। मुदा कोनो लेखकक समग्र कृतित्वकेँ एकहि ग्रन्थमे राखब आ ओहि कृतित्वक अर्थगत समग्रता प्रमाणित करब दू भिन्न काम थिक। पहिल काम संकलन, वर्गीकरण आ अभिलेखक; दोसर आलोचनात्मक चयन, तुलनात्मक दृष्टि आ असहमतिक। आशीष अनचिन्हारक एहि पुस्तकक विशिष्टता एहि भेदकेँ पूर्णतः मेटाएब नहि, बल्कि दुनूक बीच आवागमन करब अछि। एक दिश लेखकक विराट रचनाविस्तार, दोसर दिश सम्पादकक वर्गीकरण आ मूल्याङ्कन-व्यवस्था। फलतः पुस्तकसँ प्रश्न केवल ‘की-की लिखल गेल’ नहि, ‘एहि विविध लेखनकेँ कोन ज्ञान-दृष्टि एक-दोसरासँ जोड़ैत अछि’ सेहो बनैत अछि।

भूमिकामे सम्पादक स्पष्ट करैत छथि : ‘लोक आ शास्त्र, स्मृति आ अभिलेख, मातृभाषा आ बहुभाषी संवाद निरन्तर एक-दोसराकेँ परखैत अछि।’ ई कथन एहि समग्रक मुख्य आलोचनात्मक बीज थिक। लोक आ शास्त्रक सम्बन्धकेँ एक दिशासँ ‘उच्च’ ज्ञानक प्रसार मानबाक बदला परस्पर परीक्षण मानल गेल अछि। स्मृति आ अभिलेखक सम्बन्ध सेहो एतय सरल मेल नहि : स्मृति संवेदना, विस्मरण आ समाजक मौन लऽ अबैत अछि; अभिलेख तारीख, नाँव, अनुक्रम आ दावीक परख करबाक साधन दैत अछि। एहि दुनू बीचक विरोध साहित्य, इतिहास आ दर्शन सभमे पुनरावृत्त होइत अछि।

एहि आधारपर कृतिक श्रेष्ठ सम्भावना एकटा ‘समानान्तर पाठकीय संस्था’क कल्पनामे अछि। लेखक कृति लिखैत छथि; सम्पादक कृतिसभकेँ विधा, प्रश्न आ प्रमाणक क्रममे रखैत छथि; पत्रिका ओहि क्रमकेँ सार्वजनिक बनबैत अछि; पाठक फेर ओकरा चुनौती दैत छथि। एहि क्रममे सम्पादकीय काम साहित्येतिहास-निर्माणक प्राथमिक कार्य भऽ उठैत अछि। तथापि निर्माण आ प्रामाणिक इतिहास-विधान एके नहि। सम्मिलित सामग्री कतेक व्यापक अछि, आलोचनात्मक निष्कर्ष कतेक स्वतंत्र अछि आ संकलनक बाहर छूटल स्वर कोन अछि—ई तीनू प्रश्न निरन्तर खुलल रहबाक चाही।

ग्रन्थक विन्यास आ अध्ययनक कसौटी

पुस्तकक आरम्भिक भागमे विधानुसार स्वतंत्र सम्पादकीय टिप्पणीक विस्तार अछि; तकर उपरान्त खण्डवार विषय-सूची, विस्तृत अनुक्रम, विशिष्ट कृतिसमीक्षा आ शोध-आधारक विशाल संचय प्रस्तुत अछि। प्रकट विन्यासमे उपन्यास, कथा-संग्रह, नाटक, पद्य, समालोचना, दर्शन, इतिहास, पञ्जी, व्याकरण, थिसॉरस, स्वयं सीखू सामग्री आ अनुवाद अलग-अलग परिच्छेदित अछि; मुदा ई विभाजन केवल पुस्तकालयी सुविधा नहि। ई पाठककें सिखबैत अछि जे एक लेखकक समाज-दृष्टि कतेक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि।

सम्पादकीय पद्धतिक परीक्षण लेल चारि कसौटी उपयोगी अछि : चयनित पाठक विशिष्टता; आलोचनात्मक निर्णयक तर्क; अन्य कृतिसँ तुलनाक प्रमाण; आ लेखकीय एवं सम्पादकीय स्वरक पार्थक्य। एहि कसौटी पर पुस्तकक किछु भाग अत्यन्त फलदायी देखाइत अछि—विशेषतः आर्थिक अपराधक उपन्यासक सीमापर स्पष्ट टिप्पणी, कथा-खण्डमे पुनरावृत्ति चिन्हबाक प्रयास, पञ्जी-प्रबन्धक अभिलेखीय सावधानी, आ शीर्षकक आधारपर मनगढ़न्त कथानक नहि रचबाक निर्देश। किछु आन भागमे सामान्य प्रशंसा, विधा-वर्णन आ सम्भाव्य प्रतीकार्थ बेसी प्रबल अछि। एहन असमानता विशाल समग्रक स्वाभाविक समस्या भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा आलोचनात्मक समस्या मानब जरूरी अछि।

एहि शोधक विशिष्ट पाठाधार सम्पादकीय पुस्तक स्वयं अछि। गजेन्द्र ठाकुरक मूल रचनाक उल्लेख आशीष अनचिन्हारक विवेचनक माध्यमसँ पढ़ल जा रहल अछि; जाहि कृतिक मूल स्वतंत्र संस्करणक पूर्ण पाठ एहि परीक्षणमे आमने-सामने नहि राखल गेल, ओहिमे सम्पादकीय मतकें मूल कृतिक प्रमाणित तथ्य घोषित नहि कएल गेल अछि। उद्धरण सेहो सम्पादकीय पोथीक रूपमे परिचित कराओल गेल अछि, मूल उपन्यास वा कथाक स्वतन्त्र प्रमाण रूपमे नहि। एहि विभेदसँ पुस्तकक आलोचना आ लेखकक सम्पूर्ण रचनासंसारक अन्तिम निर्णय बीचक आवश्यक दूरी बनल रहैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : सम्पादकीय भाषाक निर्णायक पाठस्थल

भूमिकाक ‘लोक आ शास्त्र, स्मृति आ अभिलेख, मातृभाषा आ बहुभाषी संवाद निरन्तर एक-दोसराकें परखैत अछि’क भाषिक गठन देखल जाए। एहिमे तीन जोड़ी संज्ञा एके वाक्यविन्यासमे आबैत अछि। ‘लोक’क बाद ‘शास्त्र’, ‘स्मृति’क बाद ‘अभिलेख’ आ ‘मातृभाषा’क बाद ‘बहुभाषी संवाद’—ई क्रम बाहरसँ भीतर अथवा नीचाँसँ ऊपरक एकरेखीय गति नहि, द्वन्द्वात्मक समकक्षताक छाप बनबैत अछि। अन्तिम क्रिया ‘परखैत अछि’ एही समकक्षताकें सक्रिय बनबैत अछि। सम्पादकीयक आरम्भमे एहन संक्षिप्त सूत्र राखब केवल अलंकार नहि; ई पूरा पुस्तकक तर्करचनाक पूर्वसंकेत अछि। तथापि सिद्धान्तक वाक्य जतेक सशक्त अछि, ओकर प्रत्येक खण्डमे समान रूपेँ निर्वाह कएल गेल अछि कि नहि, ई जाँच अलग सँ करब पड़ैत अछि।

‘समालोचना साहित्यक आत्मबोध अछि’ अत्यन्त संक्षिप्त स्थापना अछि। ‘आत्मबोध’ शब्द आत्मस्वीकृति आ आत्मविवेचन दुनूकें समाहित करैत अछि। आलोचना जँ केवल सर्जकक महत्त्वक घोषणा हो, तँ ओ आत्मबोधक आधा काम मात्र करैत अछि; यदि ओ अपन संस्थाक चयनक मापदण्डकें सेहो खोलैत अछि, तखन एकर अर्थ पूर्णतर होइत अछि। एहि सूत्रक तुरन्त बाद ‘आधुनिक अकादमिक आलोचना केवल मूल्य-निर्णय नहि, पठनक विधि बनबैत अछि’क विधान एहि परिवर्तनकें पुष्ट करैत अछि। ‘केवल’ शब्द निषेध नहि, विस्तारक सूचक अछि : मूल्याङ्कन छोड़ल नहि गेल, ओकर पाछाँक पद्धति सार्वजनिक करबाक आग्रह कएल गेल अछि।

पञ्जी-विवेचनक ‘दस्तावेज जे कहैत अछि, ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ की नहि कहैत’ वाक्यमे समानान्तर संरचना रहितहुँ गहिर असमानता अछि। पहिल अंश उपलब्ध अभिलेखक; दोसर अनुपस्थित तथाकथित तथ्यक। ‘ओतबे’ शब्द दुनूक ऐतिहासिक महत्त्व बराबर करैत अछि, मुदा प्रमाणक दर्जा बराबर नहि करैत। एही सूक्ष्म भेद पर सम्पूर्ण पञ्जी-अध्ययनक विश्वसनीयता निर्भर अछि। रिक्तता निष्कर्षक स्थानापन्न नहि; ओ अनुसंधानक अगिला प्रश्नक आरम्भ अछि।

गद्यक सामाजिक रूपक सम्बन्धी समीक्षामे ‘कथाक वास्तविक घटनाक सम्बन्ध नहि भेटला धरि शीर्षकसँ कथानक आविष्कार नहि कएल जा सकैत’ एकटा स्पष्ट निषेधात्मक नियम अछि। ई नियम एतय विशेष मूल्यवान अछि, कारण समग्रक प्रारम्भिक भागमे शीर्षकक बिम्बसँ बहुधा विस्तृत अर्थ-सम्भावना खोलल गेल अछि। एहि वाक्यक आलोकमे प्रारम्भिक बिम्ब-पठनकें अन्तिम निष्कर्ष नहि, अस्थायी पाठकीय प्रस्ताव मानब अधिक न्यायसंगत अछि। ग्रन्थक भीतर विद्यमान ई आत्मनियामक चेतना ओकर आलोचना करबाक साधन ग्रन्थ स्वयं उपलब्ध करबैत अछि।

अनुवाद-विवेचनमे ‘विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकें ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि’क विरोधात्मक वाक्य महत्त्वपूर्ण अछि। ‘नहि’क पछाति ‘प्रदाता’ राखि मातृभाषाक एकतरफा निर्भरता उलटबाक प्रयास अछि। एकर अन्तर्निहित राजनीतिक अर्थ भाषिक हीनताबोधक अस्वीकार अछि। तथापि वाक्यक उपयुक्त साहित्यिक परीक्षण लेल वास्तविक अनूदित पाठक तुलनात्मक उदाहरण, लक्ष्यपाठकक उपलब्धता आ अभिव्यक्तिक रूपान्तरक निरीक्षण जरूरी अछि। वाक्य लक्ष्य निर्दिष्ट करैत अछि, स्वयं ओकर पूर्ण सिद्धि नहि।

एहि पाँच पाठस्थलसँ देखाइत अछि जे पुस्तकक सबसँ सशक्त सम्पादकीय भाषा घोषणाक संग प्रमाणक सीमा सेहो चिन्हैत अछि। तर्करचनाक निरन्तरता तखने सिद्ध होएत जखन सर्वत्र आन्तरिक स्वीकृति आ विशिष्ट साहित्यिक उदाहरण मिलिकय निर्णय तैयार करय। एहि कारण भाषिक निकट पठन, साहित्येतिहास आ सामाजिक आलोचना परस्पर पूरक साधन बनैत अछि, एक-दोसरक विकल्प नहि।

ज्ञानक कथा : उपन्यासक विस्तारित प्रतिमान

सम्पादकीय उपन्याससभ लेल ‘ज्ञानक कथा’क सूत्र प्रस्तावित करैत अछि। एहि सूत्रक अर्थ ई नहि जे कथाक स्थानपर दार्शनिक उपदेश आबि गेल अछि। अधिक सार्थक अर्थमे घटना-क्रम स्वयं एहन बनैत अछि जाहिमे पात्रकें ठोस सामग्री सँ प्रमाण

जुटएबाक पड़ैत अछि, स्मृतिक विश्वसनीयता परखबाक पड़ैत अछि, संस्थागत शक्ति सँ बहस करबाक पड़ैत अछि आ सत्यक अपूर्णतासँ जीबय पड़ैत अछि। उपन्यासक औपन्यासिकता एतय ज्ञानक सहज निष्कर्षमे नहि, ज्ञान-संघर्षक नाटकीय प्रक्रियामे अछि।

‘सहस्रबाढ़नि’क सम्पादकीय पठन जल, परिवार, स्मृति आ प्रशासनक परस्पर अवलम्बन पर टिकल अछि। बाढ़ि केवल मौसम वा विपदा नहि, पीढ़ीक अनुभवक विन्यास बनैत अछि। नदीक आवर्तन, बिसरल स्थानक स्मरण, पलायन आ सार्वजनिक संस्थाक असमर्थता—ई सभकेँ एकहि कथात्मक प्रश्नमे पढ़बाक प्रयास उपयोगी अछि। तुलनात्मक रूपेँ ‘सहस्रशीर्षा’क केन्द्र एकसँ अनेक स्वर दिस ससरैत अछि। ओतय सामाजिक अनुभवक बहुध्वनि, जाति आ पेशाक स्मृति, लोकगीत आ स्थानीय राजनीतिक जीवनक मिश्रण प्रमुख बनैत अछि। पहिल उपन्यासक आलोचनात्मक धुरी विपत्तिक अनुभवजन्य क्रम बुझाइट अछि; दोसरक धुरी असहमत आवाजक सह-अस्तित्व। दुनूकेँ केवल ‘मिथिलाक स्मृति’ कहि देब तऽ कृतिभेद अस्पष्ट भऽ जाएत।

‘पाँच प्रतिशत अन्हार’मे वित्तीय लेन-देन आ आर्थिक अपराधक अन्तरराष्ट्रीय संरचना मिथिलाक स्थानीय सामाजिक शरीर सँ जोड़ल गेल अछि। सम्पादकीय रानीक दोकान, अमरेशक कर्ज, अनजान भुगतान, जुआ आ संस्थागत जाँचक मार्गदर्शक प्रसंग दैत अछि। विशेष उल्लेखनीय ई जे सम्पादक मात्र उपलब्धि नहि गनैत छथि; अनेक पात्रक लगभग समान अनुशासित स्वर, विस्तृत अध्याय-विन्यासक कारण नाटकीय गतिमे शिथिलता आ विधिक-प्रशासनिक शब्दावलीक आधिक्यकेँ सीमा रूपमे चिन्हैत छथि। आलोचनाक विश्वसनीयता एहन प्रतिकूल मूल्याङ्कनसँ बढ़ैत अछि।

‘नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल’ आ ‘अनुवादक’ संग तुलना करिते एकटा आन्तरिक त्रिकोण खुलैत अछि : धनक प्रवाह, प्रमाणक साधन आ भाषिक मध्यस्थता। पहिलमे अपराधक आर्थिक संसर्ग; दोसरमे न्यायशास्त्रीय प्रमाण-विवेक; तेसरमे भाषाक व्यावसायिक आ नैतिक जिम्मेदारी। मुदा तीनूकेँ एकटा विचारक उदाहरण मात्र बनाओल जाए तऽ पात्रक निजी भय, निजी इच्छा आ वातावरणक दृश्यात्मक बल दबि

सकैत अछि। सफल समीक्षामे तर्कक प्रविधि आ कथाक सौन्दर्यगत स्वातन्त्र्य दुनूकें बराबर ठाम देब जरूरी अछि।

जल, पाँजि, साक्षी आ नाँव : प्रतीकसँ कथात्मक प्रमाण धरि

‘जल-पाँजि’मे ‘जल’ आ ‘पाँजि’क विरोध स्वयं शीर्षकमे अछि—एक चलायमान, दोसर स्थिरीकरणक संस्था। ई विरोध मिथिलाक भूगोल आ सामाजिक अभिलेखक बीच प्रश्न खोलैत अछि : जे बहि गेल, ओकर नाम ककरा लग सुरक्षित रहत? स्मृतिक रक्षक परिवार, गाम, नदी, दस्तावेज वा कथा—ककरा सत्यक प्राथमिक अधिकार भेटत? सम्पादकीय एहि रूपकक सार्थक व्याख्या करैत अछि। मुदा विशिष्ट दृश्य, चरित्रक निर्णय आ घटना-क्रमक प्रमाण दऽ सकलासँ एहि व्याख्याक साहित्यिक शक्ति सचमुच पुष्ट होएत।

‘बिज्जी : गोहि सभक बीच’क व्याख्यामे छोट जीव आ भयंकर पर्यावरणक विपरीतता शक्तिसम्बन्धक प्रतीक बनैत अछि। ‘सातम साक्षी’क पाठमे बाहरी गवाही आ अन्तःकरणक बीच तनाव उभरैत अछि। ‘पातक भीतर लिखल नाँव’ शीर्षक पहचान, क्षणभंगुरता आ लेखनक नाजुकता सुझाबैत अछि। एहि सभ विश्लेषणक उपयुक्तता अस्वीकार करबाक कारण नहि, मुदा शीर्षकक अर्थसम्भावना आ पाठक कथात्मक सत्यक बीच भेद जरूरी अछि। सम्पादकीयक विस्तारित खण्डमे एतय महत्वपूर्ण आत्मनियमन भेटैत अछि : ‘कथाक वास्तविक घटनाक सम्बन्ध नहि भेटला धरि शीर्षकसँ कथानक आविष्कार नहि कएल जा सकैत।’ ई वाक्य एहि सम्पूर्ण परियोजनाक पद्धतिगत धरोहर मानल जाएबाक चाही।

‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क मूल, किशोर आ बाल रूपान्तरणक समवेत चर्चा दोसर प्रश्न खोलैत अछि : अलग-अलग पाठकवर्ग लेल रचनाक अर्थ बदललाक बाद मूल भाव, संरचना आ नैतिक टकराव कतेक बचैत अछि? बाल संस्करणकें संक्षेपक निम्नतर रूप मानब साहित्यिक भूल होएत। रूपान्तरणमे दृश्य, कथाक जोखिम, भाषा-सरलता आ सामाजिक जटिलताक पुनर्वितरण होइत अछि। तीनू संस्करणक तुलना लेल समान

प्रसंगक कथावाचक-स्वर, संवाद, वर्णन आ निष्कर्षक पृथक मिलान चाही। सम्पादकीय एहि दिशामे प्रवेश करबैत अछि; एकर अनुप्रयुक्त पद्धतिमे एहन मिलानक अधिक सुस्पष्ट उदाहरण एकर तर्ककें आर बल दऽ सकैत अछि।

कथाक विस्तार : संग्रह, अनुक्रम आ सूक्ष्म नैतिकता

‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’, ‘स्मृतिक दोसर दिस’ आ ‘इजोत जनम-जनमक कथा’क सम्पादकीय परिचयमे शीर्षकक काव्यात्मक, स्मृतिपरक आ आलोक-सम्बद्ध अर्थ उभरैत अछि। ‘पर्वत’क स्थायित्व आ ‘भमरा’क गतिशीलता, स्मृतिक ‘दोसर दिस’ आ अनेक जनम धरि पसरैत ‘इजोत’—ई सभ संग्रह-पठनक प्रवेश-द्वार बनैत अछि। मुदा कथासंग्रहक समग्र प्रभाव प्रायः एकल कथाक समाप्ति, मौन आ क्रम-विन्याससँ बनैत अछि। तें शीर्षकाधारित व्यंजना अगिला पाठिय परीक्षणक प्रस्तावना हो, ओकर विकल्प नहि।

‘कथा-शतत्रयी’ आ ‘कथा-त्रिधारा’क रचनायोजनाक विशालता संख्या-प्रधान प्रशंसा लेल निमन्त्रण दैत अछि। तथापि आलोचनाक सही प्रश्न ई जे बहुसंख्य कथामे कोन शिल्प अनवरत लौटैत अछि, कोन पात्ररूप आपसमे बदलैत अछि, कोन मुद्दा नवनिर्मित प्रश्न बनैत अछि आ कोन कथा अपेक्षाकृत कमजोर रहि जाइत अछि। विषय-सूचीक व्यापकता साहित्यिक उपलब्धिक प्रारम्भिक संकेत मात्र होइत अछि; अन्तिम कसौटी भाषा, संरचना, अनिवार्यता आ पाठकीय प्रभाव अछि।

विशिष्ट कथा-पुनर्पाठमे घरेलू वस्तुकेँ सामाजिक दस्तावेज बनएबाक प्रवृत्ति विशेष ध्यानाकर्षक अछि। जूता, कापी, फोटो, मिठाइक डिब्बा, चप्पल, रसीद वा छोटी गलती सन सामग्री सामाजिक गरिमा, श्रम, लज्जा, देखभाल आ अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि। विशाल कथायोजनाक सम्बन्ध केवल महाकाव्यात्मक फैलावसँ नहि, दैनिक जीवनक अदृश्य इतिहाससँ सेहो अछि। दू-तीन निर्णायक वस्तु, ओकर प्रसंग आ चरित्रक बदलैत दृष्टिक जाँच कएलासँ लघुकथाक सामाजिक गहनता खुलैत अछि।

एहि कथाक क्षेत्रक एक आलोच्य सीमा सेहो अछि : जँ कथा-संरचना बेर-बेर गलत बुझाइ, छोट खोज, प्रमाण-प्राप्ति, कागजी सुधार आ अन्तिम उलटबाँसीपर निर्भर रहैत अछि, तऽ पुनरावृत्ति एकटा परिचित नैतिक सूत्र बनि सकैत अछि। पाठक क्रमशः अन्तिम समाधान अनुमानि लैत अछि। एकर विरोधमे सामाजिक द्वन्द्वक असमाधेयता, अस्पष्ट आन्तरिक इच्छा, विषम भाषिक स्वर आ अनिर्णीत समाप्तिकें स्थान देब कथा-विधाक गहराइ बढ़ा सकैत अछि। सम्पादकीय किछु प्रतिनिधि कथाक परीक्षणमे एहि खतरा दिस संकेत करैत अछि; एहि संकेतक व्यापक अनुप्रयोग एकर गंभीर उपलब्धि भऽ सकैत अछि।

किशोर आ बाल-साहित्य : पाठकक स्वतन्त्र कर्तृत्व

‘नव पाँखि’ आ सैंतीस बाल-उपन्यासक चर्चा मैथिली साहित्येतिहासक एक जरूरी अभाव भरबाक दिशा खोलैत अछि : बालककें मातृभाषाक ज्ञान-निर्माता आ निर्णयकर्ता रूपमे देखब। बाल-साहित्यकें केवल संस्कारक पाठ अथवा मनोरञ्जनक हलुक परिशिष्ट मानबाक परम्परा एहि दृष्टि सँ चुनौती पबैत अछि। बालक केहन प्रश्न पुछैत अछि, कथामे ओकर जोखिम कोन अछि, वयस्क सत्ता ओकर निर्णयकें कतेक जगह दैत अछि आ लोकगाथाक नायक-नायिका कोना नव पीढ़ी धरि पहुँचैत छथि—ई सभ साहित्यिक प्रश्न छथि।

विदेहमे प्रकाशित ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ सैंतीस कृतिक समेकित परीक्षणमे भारतीय रस, औचित्य आ ध्वनिक संग बाल-कथाक रूप-विज्ञान, बाल-मनक भय आ बालकक कर्तृत्वक सम्बन्ध उठबैत अछि। एहि सन्दर्भसँ सम्पादकीय पुस्तकक संक्षिप्त बाल-साहित्य सम्बन्धी प्रस्तुति विस्तारित होइत अछि। लोकनायकक जातीय पृष्ठभूमि आ इतिहासमे उपेक्षित समुदायसँ जुड़ल आख्यानक पुनरागमन बाल-साहित्यकें सामाजिक प्रतिनिधित्वक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। तथापि बाल-पाठकक वास्तविक प्रतिसाद, शब्दार्थ-सुगमता, चित्र आ कथ्यक सामञ्जस्य तथा भिन्न आयु-वर्गक समझक पृथक परीक्षणक आवश्यकता रहैत अछि।

बाल-साहित्यक आलोचनामे ‘उपदेश देब’ आ ‘विवेकक अवसर खोलब’ दूटा अलग क्रिया छथि। श्रेष्ठ कथा बालककेँ घोषित उत्तर नहि थमबैत; ओ ओकरा पात्रक काजक परिणाम देखबाक, भयकेँ भाषा देबाक आ अलग विकल्प चिन्हबाक स्वतंत्रता दैत अछि। एहि दृष्टिसँ मैथिली बाल-उपन्यासक वर्तमान विस्तार एकटा महत्त्वपूर्ण सम्भावना अछि, मुदा महत्त्वक अन्तिम निर्णय संख्या नहि, बालक-पाठकक साहित्यिक अनुभव तय करत।

नाट्य-संरचना आ गजलक आत्मस्वर : पाठ, उच्चारण आ प्रस्तुति

‘रंग-संगम’क सन्दर्भमे नाटककेँ केवल संवाद-प्रधान गद्य मानल जाए तऽ ओकर रंगकर्म नष्ट भऽ जाएत। नाटकक अर्थ मंचीय समय, प्रवेश-निर्गमन, विराम, दृश्य बदलबाक व्यावहारिकता, अभिनेता द्वारा उच्चारणीय भाषा आ दर्शकक सामूहिक अनुभवमे सँचित होइत अछि। सम्पादकीय नाटकक विषयसँ मंचीय सम्भावना दिस ध्यान खींचैत अछि; ई ओकर उचित मार्ग अछि। एहि संग अलग-अलग नाटकमे संघर्षक गठन, स्त्री-पुरुषक स्वायत्त स्वर, हास्यक सामाजिक लक्ष्य आ लोकनाट्यसँ आधुनिक मंचक सम्बन्धक निकट परीक्षण सेहो अपेक्षित अछि।

मैथिली नाट्यक साहित्येतिहासमे ज्योतिरीश्वरक ‘धूर्तसमागम’, मिथिलाक नाट्यपरम्परा आ आधुनिक रंगमंचक बीच सीधा, अविच्छिन्न वंशक्रम मानि लेब जोखिमपूर्ण होएत। भिन्न कालक पाठ, प्रस्तुति-प्रथा, श्रोता आ संस्था बदलैत गेल। तथापि हास्य, व्यंग्य, बहुभाषिक उच्चारण, सामाजिक छल आ मंचीय उपस्थिति सन प्रश्न तुलना लेल फलदायी छथि। ‘रंग-संगम’क प्रासंगिकता एहि ऐतिहासिक धुरीपर तखने स्पष्ट होएत जखन अलग नाटकक दृश्य-संरचना आ ऐतिहासिक सामग्रीक सम्बन्ध प्रमाणसहित देखाओल जाए।

‘दीवान-ए-विदेह’, ‘अकुलाइत सुर’ आ ‘स्वप्नमे मिज्झर होइत’क समालोचना मे एकहि प्रकारक भाव-प्रशंसा पर्याप्त नहि। गजलमे बहर, रदीफ, काफिया, स्वरक आवर्तन, शेरक स्वातन्त्र्य आ समग्र भावधारा; गीतमे उच्चारणीय लय; मुक्तछन्दमे पौतिक साँस, विराम

आ बिम्बक सम्बन्ध—अलग कसौटी माँगैत अछि। गजलक सामाजिक विषय तीक्ष्ण होअय, मुदा छन्दक बाध्यता टूटल रहय, तँ विषयगत महत्त्व आ शिल्पगत सिद्धि अलग-अलग दर्ज करब समीक्षकक कर्तव्य थिक। एही प्रकार पद्यक रूपात्मक नवाचारकें केवल भावुकता अथवा विचारक प्रवक्ताक रूपमे सीमित नहि करबाक चाही।

पद्य आ नाटकसँ जुड़ल विस्तृत समीक्षामे अनुवादित तथा मूल रचनाक पार्थक्यक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। एक भाषाक कथ्य दोसर भाषामे समान रहितहुँ उच्चारण, हास्य, औचित्य आ सार्वजनिक अर्थ बदलि सकैत अछि। सम्पादकीय समग्रक विधागत फैलाव एहि तुलनाक संभावना खोलैत अछि; आलोचनाक परिपक्व रूपमे शब्द-संरचना आ प्रस्तुति-परिस्थितिक ठोस अन्तरकें प्रमाण बनाओल जाएबाक चाही।

समालोचनाशास्त्र : आत्मबोधक दाबी आ आत्मपरीक्षणक जिम्मेदारी सम्पादकीयक एकटा सूत्र अछि : ‘समालोचना साहित्यक आत्मबोध अछि।’ एकर लगहि दोसर वाक्य भेटैत अछि : ‘आधुनिक अकादमिक आलोचना केवल मूल्य-निर्णय नहि, पठनक विधि बनबैत अछि।’ दुनू वाक्य मिलिकय एहि पुस्तकक आलोचनात्मक सिद्धान्त स्पष्ट करैत अछि। समालोचना जँ आत्मबोध अछि, तँ लेखकक मनसा, सम्पादकक आग्रह आ साहित्यिक संस्थाक अधिकार सेहो प्रश्नक दायरा भीतर आएबाक चाही। पठनक विधि जँ मुख्य अछि, तँ ओहि विधिक निष्फलता वा अपवादक उदाहरण सेहो प्रस्तुत होएबाक चाही।

प्रबन्ध-निबन्ध, लेखक-विशेष अध्ययन, विदेहक दीर्घ यात्रा, पत्रिका-सूचकांक आ ‘नित नवल’ शृंखला सभ एकटा सार्वजनिक आलोचनात्मक संस्कृतिक अङ्ग बनैत अछि। कृति-विशेषक मूल्यांकनक संग पाठक-समुदाय, प्रकाशनक क्रम, पत्रिकाक संवाद आ साहित्यक अभिलेख संचित होइत अछि। ई स्थिति मैथिलीक एक गहन प्रश्न उठबैत अछि : स्वतन्त्र साहित्यिक संस्था कियैक आवश्यक? कारण केवल पुस्तक छापब नहि; अलग-अलग पठन, प्रतिवाद आ स्मृतिक स्थान उपलब्ध कराएब सेहो साहित्यिक स्वराजक अवयव थिक।

मुदा एहि संस्थागत सफलताक संगे समीक्षकक स्वतन्त्रता अनिवार्य अछि। एकहि साहित्यिक वृत्तमे लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, समीक्षक आ अभिलेख-निर्माता परस्पर सम्बद्ध भेला पर समीक्षा अनजाने प्रशंसात्मक प्रतिध्वनि बनि सकैत अछि। ई आरोप नहि, संस्थागत संरचनासँ उठनिहार पद्धतिगत सावधानी थिक। एहि लेल रचनासंग्रहक अन्तर्गत स्वीकृत सीमासभ, मतभेद, ऐतिहासिक विवाद आ वैकल्पिक पाठक उल्लेख आलोचनाक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

‘नित नवल’ नामक शृंखलाकेँ विशेषतः एक नओका मूल्यांकन-परिपाटी रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि, जतय लेखक-विशेषक रचना, प्रसंग आ नव पठन नित परिवर्तनशील रूपमे विचारक विषय बनैत अछि। ई नाम निरन्तर नवीनताक आग्रह करैत अछि; आलोचनात्मक रूपमे प्रश्न उठैत अछि जे नवीनता कृतिक चयनमे अछि, पाठकीय विधिमे अछि अथवा साहित्येतिहासक उपेक्षित वस्तुकेँ सामने अनबामे? एहि तीनूकेँ अलग पहचानलासँ शृंखलाक उपलब्धि स्पष्ट होएत।

प्रमाण-विवेक, नव्य-न्याय आ कथाक नैतिकता

समग्रमे प्रमाण बारम्बार लौटैत अछि : अपराधक गवाही, पौजिक नाम, इतिहासक स्रोत, अनुवादक सही अर्थ, व्याकरणक रूप, न्यायालयक दस्तावेज। एहि पुनरागमनकेँ लेखकक चिन्ताक एकटा वैचारिक केन्द्र मानल जा सकैत अछि। नव्य-न्यायक विश्लेषणपरम्परा एहि केन्द्रकेँ बौद्धिक पृष्ठभूमि दैत अछि। तथापि आधुनिक विधिक साक्ष्य, ऐतिहासिक दस्तावेज आ साहित्यिक प्रतीकक ‘प्रमाण’ एके प्रकार नहि होइत अछि। साहित्यक कथावाचक विश्वसनीय वा अविश्वसनीय भऽ सकैत अछि; इतिहासकारक साक्ष्य सत्यापनयोग्य होएबाक चाही; न्यायालयक निष्कर्ष प्रक्रिया-सापेक्ष होइत अछि।

समीक्षाक सबसँ महत्त्वपूर्ण अनुशासन अछि—दृष्टान्त, अनुमान, शंका आ निर्णयक सीमाक भेद। ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क विवेचनमे रानीक हस्ताक्षरकेँ स्वतन्त्र इच्छाक अचूक प्रमाण नहि मानब, तृषा द्वारा स्रोतक गोपनीयता सुरक्षित रखब आ संयोगपूर्ण

संकेतसँ अपराधीक पहिचान निहित नहि करब : ई सभ कथनक नैतिक संयमक उदाहरण रूपेँ प्रस्तुत अछि। उपन्यासमे ई प्रक्रियागत सजगता सौन्दर्यगत उपकरण सेहो बनैत अछि, कारण तात्कालिक समाधानक स्थानपर अनिश्चितताक तनाव रचैत अछि।

एहि प्रवृत्तिक सीमा सेहो विचारणीय अछि। प्रमाणक सावधानी पात्रक भाषामे अत्यधिक समरूपता आनि दैत अछि तँ कथा विचारक दृष्टान्तक संग्रह बनि सकैत अछि। चरित्रक जीवित विरोध, अनैतिक आकांक्षा, असंगत प्रतिक्रिया आ अप्रत्याशित भाव—ई सभ सेहो साहित्यक सत्यक अङ्ग छथि। प्रमाणकेँ कथाक भीतर राखब आ कथा पर प्रमाणक अनुशासन थोपब, एहि दू प्रवृत्तिक बीच भेद राखलासँ समग्रक औपन्यासिकता अधिक सटीक रूपेँ बुझल जा सकैत अछि।

मिथिलाक अभिलेख आ पञ्जी : स्मृतिक समाजशास्त्र

पञ्जी सम्बन्धी परियोजनाक सम्पादकीय महत्त्व एहि बातमे अछि जे वंशावलीकेँ निष्प्राण नाँव-पञ्जी नहि मानि सामाजिक सम्बन्धक दीर्घकालीन अभिलेख मानल गेल अछि। मूल, गोत्र, ग्राम, वैवाहिक निकटता, प्रवास, स्त्री-रेखा आ उपाधि—ई सभ सामाजिक व्यवहारक निशान छथि। मुदा कोनो वंश-सूची आपसूक सम्पूर्ण समाजक इतिहास नहि। केकर नाँव लिखल गेल? के अनुपस्थित रहि गेल? स्त्रीक प्रवेश ककर सम्बन्धसँ भेल? वंशक बाहरो जाति, श्रम आ पारिवारिक व्यवस्था कोना दर्ज भेल? एहन प्रश्न पञ्जी-पठनकेँ सामाजिक इतिहास बनबैत अछि।

सम्पादकीयक पञ्जी-विवेचनमे एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कथन अछि : ‘दस्तावेज जे कहैत अछि, ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ की नहि कहैत।’ एतय रिक्त स्थानकेँ काल्पनिक सूचना सँ भरबाक बदला ओकर ऐतिहासिक कारण पुछल गेल अछि। इतिहासक मौन अभाव सेहो भऽ सकैत अछि, बहिष्कार सेहो, दस्तावेजक हानि सेहो, लेखन-पद्धतिक सीमा सेहो। ताहि कारणेँ मौनक व्याख्या समानार्थी नहि होइत; सम्भावनासभकेँ पृथक चिन्हब पड़ैत अछि।

विदेहक पञ्जी-प्रबन्ध सम्बन्धी शोध-लेख आ समग्रक छह खण्डक पञ्जी-विषयक विस्तारक बीच एही विधि-विवेकक एक निरन्तरता देखाइत अछि। पञ्जीकें केवल पुरान सामाजिक वर्गीकरणक गौरव रूपमे देखल जाए तँ जटिल समाजशास्त्रीय प्रश्न विलुप्त भऽ जाएत। एकर विपरीत प्रत्येक नाँवकें आधुनिक समानाधिकारक एकरूप साक्ष्य मानब सेहो अनुचित होएत। सामाजिक दस्तावेजक अध्ययन लेल कालगत परिवर्तन, प्रादेशिक भेद, वर्ग आ जातिक सत्तासम्बन्ध आ लोकजीवनक वैकल्पिक स्मृतिकें संग राखब आवश्यक अछि।

समानान्तर साहित्येतिहास : केन्द्र बदलबाक सम्भावना

साहित्येतिहास लिखबाक परम्परा बहुत बेर श्रेष्ठ लेखक, शास्त्रीय ग्रन्थ आ शहरी प्रतिष्ठानक इर्द-गिर्द केन्द्रित रहैत अछि। विदेहसँ सम्बद्ध ‘समानान्तर’ आग्रह एहि प्रश्नकें चुनौती दैत अछि जे साहित्यक इतिहास केकर रचनासँ बनत आ केकर अनुभव किनारपर छूटि जाएत। गजेन्द्र ठाकुरक समग्रक सम्पादकीयमे लोककथा, बाल-साहित्य, पञ्जी, अप्रचलित भाषा-रूप, अनुवाद आ आधुनिक विधिक-आर्थिक प्रसंगकें एकहि बौद्धिक परिसरमे रखबाक प्रयत्न एहि इतिहासबोधक एकटा ठोस संकेत अछि।

ज्योतिरीश्वरक ‘वर्णरत्नाकर’ आ ‘धूर्तसमागम’, विद्यापतिक पदावली आ मध्यकालीन काव्य, लोकनाट्य, मिथिलाक वंश-परम्परा, आधुनिक कथा-उपन्यास, सामाजिक व्यंग्य आ पत्रिका-संस्कृति—ई सभ मैथिली साहित्येतिहासक पृथक सामग्री छथि।

परम्परागत क्रममे काव्यक गरिमा आ धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृति जे स्थान पबैत अछि, आधुनिक समानान्तर पाठ ओहि क्रममे श्रम, स्त्री-अनुभव, बहिष्कृत समुदाय, प्रशासनिक दस्तावेज, लोकभाषा आ डिजिटल माध्यमक अनुभव जोड़बाक प्रस्ताव दैत अछि। एही विस्तारक कारण समानान्तर पद्धति आवश्यक भऽ उठैत अछि। मुदा विस्तार केवल नओका सूची नहि; पुरान इतिहासक तर्कक परीक्षण सेहो होएबाक चाही।

‘समानान्तर’कें ‘पुरान सब गलत, नव सब सही’क घोषणामे बदलि देब एही पद्धतिक विरोध होएत। इतिहासमे केन्द्रीय ग्रन्थक भीतरो बहुवचनता भेटैत अछि आ किनारक

सामग्रीमे सेहो सामाजिक बहिष्कारक उदाहरण रहि सकैत अछि। तँ समानान्तर इतिहासक विश्वसनीय रूप तुलनात्मक, स्रोत-आधारित आ आत्मसमीक्षात्मक होएत। गजेन्द्र ठाकुरक इतिहासक परियोजनाक सम्पादकीय परिचय एहि सम्भावनाक घोषणा करैत अछि; ओकर विस्तृत औचित्य निश्चित करबाक लेल काल-निर्धारण, दस्तावेजी स्रोत, पाठभेद आ अन्य इतिहासकारक मतक तुलनात्मक अनुशीलनक अतिरिक्त आवश्यकता रहैत अछि।

मायानन्द मिश्रक ऐतिहासिक उपन्यास-संसार, हरिमोहन झाक सामाजिक व्यंग्यक परम्परा, मैथिली आधुनिक कथाक विविधताक संग ‘सहस्रबाढ़नि’ वा ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क तुलना करबासँ रूपान्तरक प्रवृत्ति देखल जा सकैत अछि : ग्रामीण जीवनक केन्द्र कमजोर नहि, बल्कि ओकर सम्बन्ध राज्य, बाढ़ि, प्रवासन, वित्त आ आधुनिक प्रमाण-संस्थासँ जटिल होइत अछि। तथापि एहन तुलना समान विषय देखबाक आधारपर समान शिल्पक दावा नहि करबाक चाही। अलग काल, कथावाचक, पाठकीय समाज आ रचना-भाषाक अन्तर स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

भाषा-विज्ञान, थिसॉरस आ मानकीकरणक प्रश्न

व्याकरण आ कोश-साहित्यकें सर्जनात्मक साहित्यसँ बाहर मानल जाए तँ भाषाक बौद्धिक इतिहास अधूरा रहि जाइत अछि। ‘मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान’, ‘मैथिली-अंग्रेजी थिसॉरस’ आ ‘अंग्रेजी-मैथिली थिसॉरस’ जकाँ परियोजनासभ भाषाकें विचार आ खोजक साधन मानैत अछि। आधुनिक मैथिलीमे मानकीकृत देवनागरी लेखन, बोलिगत विविधता, शब्दार्थक सूक्ष्म भेद आ प्रयोगानुकूल शब्द-चयन बीच तनाव एकर आलोचनात्मक विषय अछि।

विशेष रूपें ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक तुलनात्मक सम्बन्धक प्रश्न केवळ शब्दसूचीसँ तय नहि भऽ सकैत अछि। ध्वनि, रूप, वाक्य-रचना, ऐतिहासिक विकास, बोली-समुदायक आत्मपहिचान आ प्रशासनिक वर्गीकरण—ई सभकें अलग-अलग स्रोतक रूपमे देखबाक चाही। साहित्यिक समीक्षामे ककरो रूपकें स्वतः ‘अशुद्ध’ कहब न उचित

अछि न भाषावैज्ञानिक दृष्टिसँ पर्याप्त। कोशमे प्रयोगक सन्दर्भ, मान्य रूपान्तर, सामाजिक रजिस्टर आ अर्थक फैलाव सुरक्षित रहलासँ ओ साहित्यक जीवित साधन बनैत अछि।

‘थिसॉरस’क आलोचना करते मात्र प्रविष्टि-संख्या गनलासँ काज नहि चलत। समानार्थक शब्दसँ ओहि अर्थक विनिमय-योग्यता सिद्ध नहि होइत; कोनो शब्द दैनन्दिन, दोसर विधिक, तेसर लोकगीतक, चारिम व्यंग्यक सन्दर्भमे अधिक उचित भऽ सकैत अछि। एहि कारण शब्दसंसाधनक प्रमुख कसौटी अर्थ-सापेक्षता, उदाहरणक विश्वसनीयता, भाषिक विविधता आ नियमित परिशोधन अछि। सम्पादकीय एहि दिशामे उपयोगिता आ प्रमाणक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, मुदा वास्तविक प्रविष्टि-आधारित आलोचनाक विस्तार एकर आवश्यकता रहैत अछि।

अनुवादक द्विदिशता : मातृभाषा ग्रहणकर्ता आ प्रदाता

समग्रमे आन भाषासँ मैथिली तथा मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवादक परियोजना साथ-साथ उपस्थित अछि। साहित्येतिहासक दृष्टिसँ एहि द्विदिशताक महत्त्व विशेष अछि। संस्कृतक दर्शन, नाटक, प्रहसन आ गद्यक मैथिली रूपान्तरण शास्त्रीय सामग्रीकेँ जीवित मातृभाषामे सुलभ करैत अछि; मैथिली कथा, उपन्यास आ पद्यक अंग्रेजी रूपान्तर मैथिली संसारकेँ विस्तृत पाठक-समाजमे प्रवेश करबैत अछि। ई आवागमन ‘परम्परा बनाम आधुनिकता’क सख्त विरोध कम करैत अछि।

सम्पादकीयमे उल्लिखित ‘भामती’, ‘आत्मतत्त्वविवेक’, ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ आ ‘तत्त्वचिन्तामणि’केँ एकहि अनुवादकीय विधा मानब उचित नहि; दर्शनक प्रमाण-शब्दावली, तर्कक सम्बन्ध आ सूत्र-व्याख्याक वाक्यगति खास परीक्षण माँगैत अछि। दोसर दिश ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’, ‘मृच्छकटिकम्’, ‘मुद्राराक्षसम्’, ‘भगवदज्जुकम्’ तथा प्रहसन-साहित्यक रूपान्तरणमे नाटकीय संस्कार, सामाजिक व्यंग्य, अभिनयनीयता आ भाषिक स्तरान्तर मुख्य समस्या बनैत अछि। एक पद्धतिसँ सभ अनुवादक समीक्षा सम्भव नहि।

मैथिलीसँ अंग्रेजी सन्दर्भमे सम्पादकीय कहैत अछि : ‘विश्व-साहित्यक दृष्टिसँ एहन अनुवाद मैथिलीकेँ ग्रहणशील भाषा नहि, प्रदाता भाषा बनबैत अछि।’ एहि वाक्यक ऐतिहासिक महत्त्व अछि। मैथिलीकेँ केवल आन भाषाक साहित्य ग्रहण करनिहार सांस्कृतिक क्षेत्र नहि, अपन लोकानुभव, रूपक, नदी-स्मृति आ आधुनिक नागरिक प्रश्नक दाता भाषा रूपमे परिकल्पित कएल गेल अछि। तथापि ‘विश्व-साहित्य’मे प्रवेश मुद्रित अनुवादक उपलब्धतासँ सिद्ध होइत अछि, वैश्विक पाठकीय स्वीकृतिसँ नहि। भाषा-परिवर्तनक वास्तविक फल जाँचबाक लेल पाठ-विन्यास, रूपकक अर्थ, अनूदित संवादक स्वाभाविकता आ लक्षित पाठकक प्रतिक्रिया आवश्यक अछि।

‘अनुवादक’ नामक उपन्यास एहि सम्पूर्ण योजनाक आत्मप्रतिबिम्ब बनैत अछि। अनुवाद एतय पेशागत सेवा मात्र नहि, कथ्यक नैतिक निर्णयक केन्द्र अछि। कोनो वाक्यक गलत अर्थ वित्तीय वा विधिक परिणाम बदली सकैत अछि; मौन सेहो कखनो निर्णय होइत अछि। एहि तरह अनुवादक कर्म सर्जनात्मक, सामाजिक आ ज्ञानमीमांसात्मक तिनू धरातलपर एकसंग स्थापित होइत अछि।

सम्पादकीय शैली : उपलब्धि, पुनरावृत्ति आ निर्णयक असमानता

‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’क शैलीक प्रमुख गुण व्यापक वर्गीकरणक क्षमता अछि। एकर सम्पादकीय वाक्य प्रायः शीर्षक, प्रतिपाद्य, सामाजिक प्रयोजन, तुलनात्मक संकेत आ निष्कर्षक क्रमानुसार आगू बढैत अछि। विशाल सामग्रीमे ई क्रम पाठककेँ दिशाबोध दैत अछि। उपन्यासक गहिर प्रसंगसँ कोश-विज्ञान आ पञ्जी धरि पहुँचैत काल विमर्श बिखरैत नहि, कारण अभिलेख, प्रमाण, भाषा आ स्मृतिक प्रश्न वारम्बार नओका रूपमे भेटैत अछि।

एही विन्यासक एकटा प्रतिकूल पक्ष अछि : जँ लगभग प्रत्येक कृतिक व्याख्या ‘शीर्षकमे फलाँ प्रतीक अछि’, ‘एहि कृतिक महत्त्व ई बातमे अछि’, ‘आधुनिक आलोचनाक दृष्टिसँ’ सन सूत्रपर निर्भर होइत अछि, तँ कृतिविशेषक शैलीगत विचित्रता कम देखाए लगैत अछि। एहि स्थितिमे समीक्षाक भाषिक सुविधा आलोचनाक

अनावश्यक समरूपता बनि सकैत अछि। एहिसँ बचबाक उपाय अछि—चुनल मूल प्रसंगक सूक्ष्म व्याख्या, भिन्न निष्कर्षक साहस आ सामान्य संज्ञाक स्थानपर ठोस साहित्यिक क्रिया पर ध्यान।

कथासंग्रह, अनुवाद आ कविता-समीक्षामे किछु स्थाने एकहि पद्धतिक कथन दोहराएल देखाइत अछि; किछु दोसर ठाम विशिष्ट पात्र आ सामाजिक प्रसंगक सहायता सँ समीक्षा विशेषतः जीवन्त भऽ उठैत अछि। सम्पादकीयक गुणानुसार मूल्याङ्कन करते एहि असमानताकें अदृश्य नहि बनाओल जाए। ई कमी प्रकल्पक कुल महत्त्व घटबैत नहि, बल्कि अगिला परिशोधनक ठोस दिशा देखबैत अछि।

विशाल संख्या अपने-आप आलोचनात्मक गहराइक पर्याय नहि। कोनो एकटा कथा पर दू पाँतिक निर्णय तखन सार्थक होएत जखन ओ कथाक निर्णायक व्यंजना खोलैत अछि; आ बीस पातक विवेचन तखने उपयोगी जखन ओ पुनरुक्तिसँ मुक्त अछि। ‘समग्र’क गरिमा तकर आयतन नहि, ओकर आलोचनात्मक चयनक विवेक आ पाठक लेल विश्वसनीय प्रमाण-मार्गनिर्माणसँ निर्धारित होइत अछि।

स्त्री, जाति, श्रम आ प्रतिनिधित्व : समानान्तर दृष्टिक आन्तरिक कसौटी समग्रमे उपस्थित लोक, पञ्जी, बालगाथा, घरेलू कथा आ आधुनिक संस्थाक विवेचन पढ़ैत काल समानान्तर इतिहासक सबसँ कठिन परीक्षा सामाजिक प्रतिनिधित्वक अछि। स्त्रीक नाँव पञ्जीमे केवल ककरो बेटी वा पत्नी रूपमे आएल अछि कि ओकर स्वतंत्र जीवन-वृत्तान्तक संभावना सुरक्षित अछि? श्रमजीवी समुदाय केवल लोकनायकक गौरवमय छवि बनि ठाढ़ अछि कि ओकर दैनिक आर्थिक संघर्ष, शिक्षा आ राजनीतिक असमानता सेहो कथामे स्पष्ट अछि? बालिका आ किशोरीक निर्णायक अधिकार कथाक वास्तविक शक्ति बनैत अछि कि अन्तमे वयस्कक शिक्षामे समा जाइत अछि? ई प्रश्न कृतिविशेषसँ आगाँ सम्पादकीय दृष्टिक परीक्षण बनैत अछि। लोकस्मृति सभ समय मुक्तिदायी होअय, से आवश्यक नहि; ओ सामाजिक बहिष्कार, जातीय पदानुक्रम आ लिंगगत असमानताक वाहक सेहो भऽ सकैत अछि। तें लोककें

शास्त्रक बराबरीमे राखबाक कथनक सही अर्थ आलोचनात्मक समकक्षता अछि, न कि लोकक प्रत्येक रूढ़िक बिना प्रश्न प्रतिष्ठा। एही दृष्टि सँ पञ्जी आ लोकगाथाक सामाजिक उपयोगिता तथा ओकर सीमाकेँ एकसाथ देखब समानान्तर इतिहासक विवेक होएत।

विदेहमे नारी-केन्द्रित आ दलित साहित्यक समीक्षाशास्त्र सम्बन्धी प्रकाशित शोध-विमर्श एहि सम्पादकीय परियोजनाकेँ आन्तरिक आलोचनात्मक प्रश्न दैत अछि। साहित्यिक विस्तार ककरा पाठक बनबैत अछि, आ ककरा चुप्पीमे छोड़ैत अछि? जे प्रश्न पुस्तकक भीतर खुलल अछि, ओकर उत्तर स्थिर घोषणासँ नहि, लगातार विशिष्ट पाठक परीक्षणसँ भेटत।

विदेह आ साहित्यिक सार्वजनिकता : पत्रिकासँ शोध-अभिलेख धरि

विदेहक ऐतिहासिक भूमिका एहि समग्रमे महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पत्रिका केवल प्रसारण-माध्यम नहि, आलोचनात्मक लेखनक संग्रह-स्थान सेहो बनैत अछि। निरन्तर अङ्क, शोध-लेख, सम्पादकीय, अनुवाद, बाल-साहित्य, पञ्जी, भाषा-विज्ञान आ लेखक-विशेष समीक्षा—ई सभक उपलब्ध अनुक्रम साहित्यिक जनसंवादकेँ दीर्घकालीन स्मृति प्रदान करैत अछि। एक लेखकक समग्र पठन असलमे एहि सार्वजनिक संस्थासँ संवाद करबाक एकटा पद्धति बनि जाइत अछि।

पत्रिका आ पुस्तकक सम्बन्ध ऐतिहासिक रूपेँ भिन्न अछि। पत्रिका चलैत समयक बहस राखैत अछि; पुस्तक चयनित सामग्रीकेँ क्रम, स्थिरता आ तुलनात्मक सम्बन्ध दैत अछि। विदेहक शोध-सूची आ पोथी-संग्रहक उपस्थिति एहि दुई रूपक सन्धि देखबैत अछि। मुद्रित-परम्पराक आलोचना जखन डिजिटल अभिलेखसँ जुड़ैत अछि, तखन उपलब्धता बढ़ैत अछि; मुदा स्रोतक स्थायित्व, संस्करणभेद, लेखकीय श्रेय आ संशोधित सामग्रीक पहचानक जिम्मेदारी सेहो बढ़ैत अछि।

एहि पुस्तकक एक उपलब्धि मैथिली आलोचनाक लेल शोध-विषयक संरचना तैयार करब अछि। अगिला शोधकर्ता एकहि खण्डसँ कोनो लेखकक साहित्यिक विकास,

विशिष्ट कथा-समूह, पञ्जीक सामाजिक इतिहास अथवा अनुवादक शब्दावलीक प्रश्न चुनि सकैत छथि। मुदा पुस्तकक ओहि उपयोगक लेल स्वतंत्र कृति, आलोचकक टिप्पणी आ पत्रिकाक सम्पादकीय सूचना बीच भेद सदा स्पष्ट राखब आवश्यक अछि।

प्रमुख प्रतिपाद्यक समेकित पुनर्मूल्याङ्कन

समग्रक पहिल उपलब्धि विधासभक कृत्रिम दीवार हटा कऽ एकटा साझा बौद्धिक परिसर रचब अछि। गद्य, पद्य, शास्त्र, इतिहास, बाल-साहित्य, व्याकरण आ अनुवादक परस्पर संगति स्पष्ट करैत पुस्तक ज्ञानक स्थानीय भाषिक आधार देखबैत अछि। दोसर उपलब्धि प्रमाण-संवेदनशीलता अछि—प्रत्येक मौनकेँ तथ्य नहि मानब, संयोगकेँ निर्णय नहि मानब आ शीर्षककेँ कथानक नहि मानब। तेसर उपलब्धि समानान्तर साहित्येतिहासक सामाजिक आकांक्षा अछि, जाहिमे लोक, उपेक्षित अभिलेख आ आधुनिक नागरिक अनुभव पुरान प्रतिष्ठानक संग बहस करैत अछि।

मुख्य आलोच्य पक्ष तीन प्रकारक छथि। पहिल, सभ साहित्यिक विधाक आलोचनात्मक कसौटी एक नहि; अतः सैद्धान्तिक संज्ञाक साझा उपयोगक संग विशिष्ट छन्द, दृश्य, घटना, स्रोत वा प्रयोगक भीतरी परीक्षण चाही। दोसर, समग्रता आ मौलिक प्रमाणक बीच दूरी बुझबाक चाही; सम्पादकीय निरूपणक आधारपर प्रत्येक मूल कृतिक सौन्दर्यगत उत्कृष्टता स्वतः सिद्ध नहि। तेसर, विशाल अनुक्रमक बीच अनावश्यक पुनरावृत्ति आ सामान्यीकृत निर्णयक आवृत्ति पाठकक अनुभव कम तीक्ष्ण करि सकैत अछि।

एहि सभक बावजूद पुस्तक एकटा निर्णायक प्रश्न उठबैत अछि : मातृभाषामे आधुनिक ज्ञानक बहुविधता केना रचल जाए? उत्तर एतय एकटा निर्बाध विकासगाथा नहि; सर्जनात्मकता, अनुवाद, स्मृति, सामाजिक जिम्मेदारी आ स्रोतक अनुशासनक संयुक्त प्रक्रिया अछि। एही कारण ई पुस्तक प्रशंसाक विषय मात्र नहि, तीक्ष्ण आलोचनाक विषय सेहो अछि। गम्भीर आलोचनाक अवसर दऽ सकब स्वयं एकर महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि अछि।

निष्कर्ष

आशीष अनचिन्हारक 'गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय' मैथिलीमे लेखकक रचनात्मक विस्तारकेँ सम्पादकीय पठनक विस्तृत स्थापत्यमे रूपान्तरित करबाक उल्लेखनीय प्रयत्न थिक। एकर केन्द्रमे प्रमाणक भाषा, जल-भूगोल, पञ्जीक स्मृति, लोक आ शास्त्रक संवाद, न्याय-विवेक, बालकक कल्पनात्मक अधिकार आ अनुवादक द्विदिश सांस्कृतिक यात्रा अछि। पुस्तकक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आग्रह ई जे मातृभाषामे शास्त्रीय आ आधुनिक ज्ञानक प्रश्न पूछल जा सकैत अछि आ ओकर उत्तर लेल मैथिली स्वयं पर्याप्त विमर्श-भाषा बनि सकैत अछि।

एकर वास्तविक आलोचनात्मक सिद्धि ओहि ठाम अधिक उज्ज्वल अछि जतय सम्पादक कृतिक सीमा स्वीकार करैत छथि, कल्पना आ प्रमाणक बीच अन्तर राखैत छथि आ कृतिविशेषक स्वर पकड़ैत छथि। जतय सामान्य प्रतिमा, सूत्रबद्ध प्रशंसा अथवा शीर्षकक अनुमान अधिक जगह लैत अछि, ओतय ओही आत्मपरीक्षणक पद्धति फेर लागू कएल जाएबाक चाही। साहित्यिक इतिहासक समानान्तर लेखनसँ उपजल व्यापक सामाजिक वचनबद्धता तखने स्थायी रहत जखन पुरान आ नव सभ पक्षक साक्ष्य पर बराबर प्रश्न उठाओल जाएत।

अन्ततः एहि ग्रन्थक सार कोनो एक लेखकक समग्र महिमा निर्धारित करब नहि, मैथिली आलोचनाक समग्र सम्भावनाकेँ विवाद, प्रमाण, असहमति आ पुनर्पाठ लेल खोलब अछि। साहित्यक इतिहास अभिलेखक जमा मात्र नहि; ओ एक निरन्तर आलोचनात्मक सार्वजनिक संवाद थिक। एहि संवादमे 'गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय'केँ ओकर व्यापकता, पद्धतिगत सम्भावना आ सुधारयोग्य सीमासहित पढ़ल जाए, तखन एकर सार्थक स्थान अधिक स्पष्ट होइत अछि।

सन्दर्भ-सूची

मूल सम्पादकीय ग्रन्थ आ तकर अन्तर्गत समीक्षा-खण्ड

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय। विदेह, २०२६। मूल सम्पादकीय भाग, खण्डवार अनुक्रम आ विस्तारित समीक्षा-संचय।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : इजोत, स्मृतिक दोसर दिस आ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल। विदेह, २०२६। समग्रक कथा-समीक्षा सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : कथा-शतत्रयी। विदेह, २०२६। कथा-समीक्षा सम्बन्धी तीन खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : कथा-त्रिधारा। विदेह, २०२६। कथा-समीक्षा सम्बन्धी तीन खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : नव पाँखि। विदेह, २०२६। किशोर कथा-सम्बन्धी समीक्षा-खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : सहस्रबाढ़नि। विदेह, २०२६। उपन्यासक आलोचनात्मक खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : सहस्रशीर्षा। विदेह, २०२६। उपन्यासक आलोचनात्मक खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : पाँच प्रतिशत अन्हार। विदेह, २०२६। आर्थिक अपराधक उपन्यास सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल। विदेह, २०२६। न्याय-विवेक आ अपराधक उपन्यास सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : अनुवादक। विदेह, २०२६। भाषा, जीविका आ उत्तरदायित्वक उपन्यास सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : जल-पाँजि। विदेह, २०२६। जल-स्मृति आ अभिलेख विषयक खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : बिज्जी : गोहि सभक बीच।
विदेह, २०२६। विस्तृत आलोचनात्मक खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : गोहि सभक बीच जलसमाधि।
विदेह, २०२६। मूल तथा किशोर-बाल रूपान्तरण सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : रङ्ग-संगम। विदेह, २०२६।
नाटक-समीक्षा सम्बन्धी खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : दीवान-ए-विदेह, अकुलाइत सुर
आ स्वप्नमे मिज्झर होइत। विदेह, २०२६। पद्य, गजल आ गीत सम्बन्धी पृथक समीक्षा-
खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर
दर्शन। विदेह, २०२६। दार्शनिक विवेचन सम्बन्धी दू खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : मिथिला आ मैथिली
साहित्यक समानान्तर इतिहास। विदेह, २०२६। साहित्येतिहास सम्बन्धी समीक्षा-खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : मिथिला, वज्जी आ अंगक
इतिहास। विदेह, २०२६। इतिहास सम्बन्धी दू समीक्षा-खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : पञ्जी-प्रबन्ध, प्राचीन पञ्जी,
उटीप पञ्जी, नगराम पञ्जी, वंशावली मानचित्रण आ दूषण पञ्जी। विदेह, २०२६।
पृथक अभिलेखीय समीक्षा-खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना।
विदेह, २०२६। सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन सम्बन्धी दू खण्ड।

अनचिन्हार, आशीष। गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-
मैथिली थिसॉरस। विदेह, २०२६। शब्दार्थ-संसाधन सम्बन्धी खण्ड।

विदेहमे प्रकाशित सन्दर्भ-पाठ आ शोध-अभिलेख

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘भामती, आत्मतत्त्वविवेक, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणि : ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध : वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘समग्र सिंहावलोकन : संस्कृतसँ मैथिली अनूदित साहित्यक तुलनात्मक अध्ययन’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४०, १५ अप्रैल २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिली लेल एकटा नारी-केन्द्रित समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४२, १५ मई २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘सहस्रबाढ़नि’; ‘सहस्रशीर्षा’; ‘अनुवादक’; ‘रंग-संगम’ विषयक शोध-लेख। विदेह, अङ्क ४५०, १५ सितम्बर २०२६।

विदेह पोथी-संग्रह। विदेहक मौलिक, ऐतिहासिक आ आधुनिक मैथिली पोथीक विषयानुसार सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह शोध-सूची। शोध, साहित्येतिहास, भाषा-विज्ञान आ समालोचना सम्बन्धी शोध-लेखक समेकित अनुक्रम।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

विदेह शोध-लेख : अङ्क १ सँ ४५१ धरि। लेखक, शोध-विषय आ विधागत अनुक्रम।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका। साहित्यिक अभिलेख, सम्पादकीय, गद्य, पद्य,
विदेह सदेह आ समानान्तर इतिहासक प्रकाशन-परिसर। [https://videha-
ejournal.github.io/videha/index.htm](https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm)

१.१२. नित नवल आशीष अनचिन्हार — प्रीति कारण सेतु बान्हल

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

सेतु, स्मृति आ डिजिटल जनक्षेत्र

मूल आलोच्य ग्रन्थ : आशीष अनचिन्हार सम्पादित ‘प्रीति कारण सेतु बान्हल—

Redefining Maithili’ (२०२४)

सार

‘प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili’ (२०२४), आशीष अनचिन्हारक सम्पादनमे प्रकाशित, मैथिलीक समकालीन आलोचना-साहित्यक एकटा विशिष्ट सामूहिक उपक्रम अछि। एकर मूल विन्यास कृपानन्द ठाकुर, प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुरसँ सम्बद्ध तीन खण्डमे अछि; मुदा विषय-विस्तार पारिवारिक जीवनवृत्तसँ आगू बढ़ि चित्रकथा, बालसाहित्य, वाचिक परम्परा, डिजिटल पत्रकारिता, पञ्जी-अनुसन्धान, लिपि, शब्दकोश, प्रकाशन-संस्कृति, उपन्यास, आलोचना आ वैकल्पिक साहित्यिक संस्थान धरि पहुँचैत अछि। प्रस्तुत अध्ययनमे ग्रन्थकें अभिनन्दनात्मक सामग्रीक संग्रह मात्र नहि, साहित्यिक प्रतिष्ठा आ सांस्कृतिक स्मृति गढ़बाक एकटा सक्रिय सम्पादकीय संरचनाक रूपमे पढ़ल गेल अछि। एक दिस प्रीति ठाकुरक चित्रकथा मिथिलाक बहुवर्णी लोकनायकसभकें दृश्य-भाषा द्वारा बालपाठक धरि पहुँचेबाक प्रयत्न करैत अछि; दोसर दिस गजेन्द्र ठाकुरसँ सम्बद्ध सामग्री मैथिलीक डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्र आ ज्ञान-संसाधनक नव सम्भावना स्पष्ट करैत अछि। अध्ययन ईहो देखबैत अछि जे ‘पहिल’ होयबाक दावासभ, पञ्जीक सामाजिक सीमासभ, व्यक्तित्व-केन्द्रित प्रशंसा आ सम्पादकीय चयनक असमानता स्वतन्त्र परीक्षण माँगैत अछि। एकर महत्त्व एहि द्वन्द्वमे निहित अछि—ग्रन्थ इतिहास लेल सामग्री सेहो दैत अछि आ स्वयं इतिहास-निर्माणक प्रक्रिया सेहो बनैत अछि।

बीज-शब्द

मैथिली साहित्येतिहास; आशीष अनचिन्हार; प्रीति ठाकुर; गजेन्द्र ठाकुर; चित्रकथा; बालसाहित्य; विदेह; पञ्जी; डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्र; समानान्तर साहित्यिक परम्परा; सम्पादकीय आलोचना।

ग्रन्थक स्वरूप आ आलोचनाक मूल प्रश्न

‘प्रीति कारण सेतु बान्हल’क प्रकाशन-वर्ष २०२४ अछि। प्रकाशन-विवरणमे एकरा गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुरक कृतित्वक आलोचनात्मक आस्वादन कहल गेल अछि। पुस्तकक शीर्षक मिथिलाक लोकगीत-परम्परासँ ग्रहण कएल गेल अछि आ अंग्रेजी उपशीर्षक ‘Redefining Maithili’ एकर समकालीन आकांक्षाकेँ सूचित करैत अछि। एहि दुनू संकेतक बीच एकटा अर्थपूर्ण तनाव अछि: एक दिस लोककण्ठसँ आबि रहल सांस्कृतिक निरन्तरता, दोसर दिस भाषा आ साहित्यकेँ नव माध्यम, नव विधा आ नव पाठकक अनुरूप परिभाषित करबाक प्रयत्न। आलोचक लेल पहिल प्रश्न इएह अछि जे ग्रन्थ एहि दुनू लक्ष्यकेँ कोना जोड़ैत अछि आ कतए ई संयोजन सफल अथवा अपूर्ण रहैत अछि।

ग्रन्थक रचनात्मक वस्तु स्वयं सम्पादकक एकल प्रतिपादन नहि, अनेक लेखकक मूल्याङ्कन, असहमति, स्मृति, साक्षात्कार, सूचना-संग्रह आ पुस्तक-सूचीक सम्मिलित उपस्थिति अछि। एहि कारणेँ प्रत्येक कथनकेँ सम्पादकक अन्तिम मत मानि लेब अनुचित होयत। किछु आलेख प्रत्यक्ष साहित्यिक पाठविश्लेषण करैत अछि; किछु जीवनक संस्मरण दैत अछि; किछु शोधपरक जानकारी संग्रहीत करैत अछि; किछु लेखकक सामाजिक वा सांस्कृतिक महत्त्वक पक्षमे तर्क रखैत अछि। एहि भिन्नताकेँ विवेचनक बाधा नहि, बल्कि पुस्तकक संरचनागत तथ्य मानबाक चाही। उपयुक्त आलोचनात्मक पद्धति एहि ठाम ‘कृति’, ‘कृतिपर प्रतिक्रिया’ आ ‘सम्पादकीय संयोजन’क स्तरकेँ अलग-अलग पहिचानैत अछि।

कुल तीन मूल खण्डमे आरम्भिक खण्ड कृपानन्द ठाकुरक जीवन-स्मृतिपर केन्द्रित अछि; दोसर खण्डमे प्रीति ठाकुरक चित्रकथा, मिथिलाक लोकदेवता, चित्रकथाक प्रारम्भिक इतिहास आ साक्षात्कार सम्बद्ध सामग्री अछि; तेसर खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक डिजिटल, सांस्कृतिक, भाषिक आ साहित्यिक उद्यमसभक व्यापक परीक्षण प्रस्तुत भेल अछि। ई क्रम एकटा वंश-सम्बन्धी जानकारीसँ बालसाहित्य आ ओतयसँ जनसुलभ साहित्यिक संस्थान धरि बढ़ैत अछि। कालक्रमक अपेक्षा ई विषयगत अनुक्रम अछि, तँ ग्रन्थ पाठकसँ विषयान्तरक बीच अन्तःसम्बन्ध स्वयं खोजबाक सक्रियता माँगैत अछि।

सम्पादकीय दृष्टि: शीर्षक, लोकगीत आ ग्रन्थ-रचना

सम्पादकक अपन कथनक अनुसार शीर्षक एकटा बारहमासा-सम्बद्ध लोकपाँतिसँ लेल गेल अछि। लोकगीतक अलग-अलग पाँतिसँ अनुक्रम, भूमिका, कृपानन्द ठाकुरक खण्ड, प्रीति ठाकुरक खण्ड, गजेन्द्र ठाकुरक खण्ड, परिचय आ समापनकेँ चिह्नित करबाक योजना मात्र अलङ्कारिक सज्जा नहि अछि। ई लोकसंस्कृतिक भाषाकेँ गद्य-आलोचनाक संरचनामे प्रवेश देबाक प्रयास अछि। ‘सेतु’क प्रतीक सेहो एक ठाम मात्र पति-पत्नीक रचनात्मक सहकार नहि, पीढ़ीक बीच, पुरान आ नव माध्यमक बीच, मौखिक आ लिखित स्मृतिक बीच, तथा मुख्यधारा आ समानान्तर पाठक-समाजक बीच सम्बन्धक प्रस्ताव करैत अछि।

सम्पादकक भूमिका स्पष्ट रूपसँ सम्पादनकेँ बाहरी सज्जाक बदला विवेकपूर्ण बौद्धिक काज मानैत अछि। ओ लिखैत छथि—“संपादन मुख्यतः दृष्टि, भिजन एवं आलोचनात्मक विचार केर वस्तु छै।” ई कथन ग्रन्थक आत्मव्याख्या लेल केन्द्रीय अछि। आलेखक प्राप्ति, मतभेदक समावेश, पूर्वप्रकाशित सामग्रीक पुनर्संग्रह, भिन्न वर्तनीक स्वीकृति आ पाठकक लेल सन्दर्भ उपलब्ध करब—ई सभ ‘दृष्टि’क व्यावहारिक रूप अछि। सम्पादक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे भिन्न लेखकक भाषा-स्वरूप समान नहि अछि, आ एकर सम्पूर्ण एकरूपीकरणक पक्षमे ओ नहि छथि। एहि सम्पादकीय उदारताक परिणाम भाषा-वैविध्यक संरक्षण अछि, मुदा पाठकीय सुगमता आ पाठ-संगति किछु ठाम चुनौती सेहो बनि सकैत अछि।

लोकगीतक माध्यमे ग्रन्थसज्जा करब मैथिलीक वाचिक साहित्यकेँ उच्च आ निम्न साहित्यक स्थिर विभाजनसँ बाहर निकालैत अछि। तथापि लोकगीतकेँ मात्र सांकेतिक प्रतिष्ठा भेटब आ ओकर गायन-समुदाय, लिङ्ग, अवसर, परिवर्तनशील पाठ आ सामाजिक संदर्भक आलोचनात्मक अन्वेषण करब भिन्न उपलब्धि अछि। प्रस्तुत ग्रन्थ पहिल कार्य प्रभावी रूपसँ करैत अछि; दोसर कार्यक सम्भावना खोलैत अछि, किन्तु सभ सन्दर्भमे ओकर विस्तार नहि करैत अछि। एहि सीमाकेँ रेखाङ्कित केनाइ लोकसंस्कृतिक अवमूल्यन नहि, बल्कि लोकस्रोतक ऐतिहासिक परीक्षणक आवश्यकता स्वीकार करब अछि।

कृपानन्द ठाकुर: व्यक्ति-संस्मरणसँ सामाजिक इतिहास धरि सियाराम झा ‘सरस’क ‘करोट फेरैत गामक निदर्शक: के.एन.टी.’ पहिल खण्डक मुख्य रचना अछि। एकर पठनमे जीवनीक पारम्परिक जन्म-मृत्यु-केन्द्रित रूपसँ बेसी गाम, विद्यालय, सार्वजनिक जीवन, समाजक सामूहिक काज आ प्रशासनिक-सांस्कृतिक परिवेश सामने अबैत अछि। लेखकक स्मृतिमे मधुबनीक पूर्वकालीन स्थिति, शैक्षिक संस्थान, शिक्षक-समुदाय आ ग्रामीण नाट्याभ्यासक उल्लेख व्यक्तिक जीवनकेँ सार्वजनिक युग-स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। ‘व्यक्तित्व’ एहिठाम निजता नहि, सामुदायिक सहभागिताक माध्यममें अभिव्यक्त होइत अछि।

एहि रचनाक महत्त्व ई नहि जे ओ कृपानन्द ठाकुरपर अन्तिम ऐतिहासिक निर्णय देत; महत्त्व ई अछि जे सामाजिक स्मृतिक एकटा स्थानीय स्रोत सामने अनैत अछि। संस्मरणमे कही गेल घटना, तिथि, संवाद आ अनुभूतिक अनुसन्धानक दृष्टिसँ स्तर अलग अछि। अनुभूति साहित्यिक सत्यक वाहक भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्येक संस्मरणात्मक कथन स्वतः अभिलेखीय प्रमाण नहि बनैत। तँ आलोचनात्मक पाठ एहि रचनाकेँ ग्रामीण मध्यवर्ग, शिक्षा, लोकसहयोग आ सार्वजनिक नैतिकताक परिवर्तनशील स्वरूपक साक्ष्य-सामग्रीक रूपमे ग्रहण करैत अछि, निश्चयात्मक इतिहासक विकल्पक रूपमे नहि। एहि प्रकारेँ पहिल खण्ड समूचा पुस्तकमे पीढ़ीगत सांस्कृतिक उत्तराधिकारक प्रश्न रखैत अछि।

प्रीति ठाकुरक चित्रकथा: मौखिक आख्यानक दृश्य पुनर्निर्माण

प्रीति ठाकुरक रचनात्मक उपस्थिति ग्रन्थक सबसँ विशिष्ट साहित्यिक योगदानसभमे अछि। प्रो. वीणा ठाकुरक विवेचनमे ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ (२००८)क सोलह कथामे नौ गोनू झासँ सम्बद्ध आ शेष रेशमा-चूहड़मल, नैका-बनिजारा, भगता ज्योति पुँजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछन महाराज आ कालिदास सन लोक-ऐतिहासिक पात्रसभक कथा अछि। लेखिकाक कथन—“सभ पात्र मिथिलाक सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत।” —विधाक मूल आशय खोलैत अछि। पात्रक चुनाव लोकगाथा, लोकविश्वास, हास्य, युक्ति, प्रतिरोध आ वंचित समूहक स्मृतिक साझा भूगोल तैयार करैत अछि।

चित्रकथा लोककथाक लिखित प्रतिलिपि मात्र नहि होइत अछि। शब्दक क्रम जे पाठकें एक दिशामे चलबैत अछि, चित्रक विन्यास पाठकक दृष्टिकें एकहि बेर अनेक वस्तु, पात्र आ मुद्राक बीच घुमबैत अछि। मौन स्थान, मुखमुद्रा, दृश्य-क्रम, संवादक संक्षिप्तता आ दृश्य-स्मृति कथ्यकें नव लय दैत अछि। एहि दृष्टिसँ प्रीति ठाकुरक कार्यकें ‘बालमनोरञ्जन’ कहि सीमित करब तकर सौन्दर्यात्मक उपलब्धिकें घटा देब होयत। मिथिलाक परिचित आख्यानसभ दृश्य-कथामे आबि नव पाठकीय माध्यम प्राप्त करैत अछि। ग्रन्थमे संकलित आलोचनासभ ई परिवर्तन पहिचानैत अछि, मुदा चित्रपट्टक संरचना, रङ्गक अनुक्रम, दृश्यदृष्टि आ पाठ-चित्र सम्बन्धक सूक्ष्म औपचारिक अध्ययन कम विस्तारसँ करैत अछि।

प्रो. वीणा ठाकुर, डॉ. रमण झा, शिव कुमार झा ‘टिल्लू’, धीरेन्द्र कुमार आ दुर्गानन्द मण्डलक आलेखसभक तुलना करैत स्पष्ट होइत अछि जे चित्रकथाक मुख्य विशेषता सभकें एके ढंगसँ नहि देखल गेल अछि। केओ एकरा सांस्कृतिक संरक्षणक साधन मानैत छथि, केओ बालसाहित्यक अभावक पूर्ति, केओ मिथिलाक बहुजन नायकसभक पुनर्परिचय, तँ केओ एकटा नव विधाक स्थापना। एहि मतसभक संयुक्त पठन बतबैत अछि जे ‘संरक्षण’ आ ‘सृजन’क कार्य भिन्न रहितहुँ परस्पर सम्बद्ध अछि। जखन

लोकमुखक कथा दृश्य रूप पबैत अछि, तँ ओ पारम्परिक कथ्यकेँ जस्ताक तस्त नहि रखैत; नव पीढ़ीक संवेदना आ अन्वेषणक अनुरूप ओकर पुनर्संयोजन सेहो करैत अछि। ‘मैथिली चित्रकथा’ (२००९)मे राजा सलहेस, दीना-भदरी, नैका-बनिजारा, बोधि कायस्थ आ विद्यापतिक आयु-अवसान सन विषयक उल्लेख मिलैत अछि। एतय पात्रचयन केवल प्रसिद्धिक क्रम नहि अछि। मुसहर समाजसँ सम्बद्ध दीना-भदरी वा सलहेसक परम्परा अपन जातीय-सामाजिक आधार रखैत अछि; चित्रकथा एहि स्मृतिसभकेँ व्यापक बालपाठकीय संसारसँ जोड़बाक अवसर उत्पन्न करैत अछि। मुदा मूल मौखिक परम्परा आ चित्रकथाक रूपान्तरणक तुलनात्मक अध्ययन बिना ई निष्कर्ष निकालब जे प्रत्येक चित्रण समुदायविशेषक दृष्टिकेँ पूरा न्याय दैत अछि, जल्दबाजी होयत। प्रतिनिधित्वक अवसर आ प्रतिनिधित्वक पर्याप्तता अलग-अलग प्रश्न अछि।

बालसाहित्य, स्त्री-लेखन आ भाषा-अधिग्रहण

डॉ. शेफालिका वर्माक आलेख महिला लेखनकेँ साहित्यिक इतिहासमे हाशियापर राखबाक प्रवृत्तिपर प्रश्न उठबैत अछि। ई सन्दर्भ प्रीति ठाकुरक रचनाकेँ मात्र लेखक-पत्नीक परिशिष्ट बनि जेबाक सम्भावनासँ बचबैत अछि। पुस्तक स्वयं एहि भेदकेँ ध्यानमे रखैत अछि: प्रीति ठाकुरक अपन स्वतंत्र चित्रकथा, चित्रनिर्माण, अनुवाद आ बालपाठक सम्बन्धी चयन अछि। एकर समाजशास्त्रीय महत्त्व ई अछि जे स्त्री रचनाकारक उपस्थिति केवल काव्य वा घरेलू लेखनक विधागत अपेक्षामे नहि, दृश्य-प्रौद्योगिकी आ भाषा-प्रसारक क्षेत्रमे सेहो अंकित भऽ रहल अछि।

प्रीति ठाकुरक साक्षात्कार एहि विवेचनकेँ आत्मवृत्तात्मक आधार दैत अछि। चित्र बनएबाक आरम्भपर हुनक उत्तर अछि—“चित्र बच्चेसँ बनबै छलिये, २००० मे पुत्र जन्मक बाद जखन ओ बाजब शुरु केलक तखन मोनमे आयल।” ई छोट उत्तर घरेलू अनुभूतिकेँ सृजनक स्रोत बनबैत अछि, मुदा रचनाकेँ घरेलू परिसरसँ बाँधि नहि दैत। नेनासभक पठन-अभिरुचि, चित्रक आवश्यकता, पुस्तक आ इलेक्ट्रॉनिक माध्यमक सहअस्तित्व तथा भाषा-सरलताक प्रश्न हुनक साक्षात्कारमे सामने अबैत अछि।

रचनाकारक अनुभवक एहन प्रत्यक्ष साक्ष्य पाठक लेल बहुमूल्य अछि; तथापि आत्मवृत्तकें आलोचनात्मक व्याख्यासँ पृथक रखब जरूरी अछि।

एहि सन्दर्भमे मातृभाषा आ बालसाहित्यक सम्बन्ध निर्णायक अछि। भाषा केवल विद्यालयक पाठ्यक्रम वा सांविधानिक स्वीकृतिसँ जीवन्त नहि रहैत; घरक संवाद, खेल, कथा, दृश्यकला आ सहज पठनसँ बालक ओकरा अपन भाषिक संसार मानैत अछि। चित्रकथा एहन संक्रमण-बिन्दुपर प्रभावी माध्यम भऽ सकैत अछि, जतए मौखिक खिस्सा आ अक्षराधारित पठन एक-दोसरक संग जुड़ैत अछि। मुदा कोनो एकल पुस्तकद्वारा भाषा-संक्रमणक संकट दूर भऽ गेल—एहन दावा प्रमाणसँ आगू होयत। एकर आवश्यकता नियमित प्रकाशन, पुस्तकालय, पाठशाला, वितरण आ पाठकीय अनुसंधानसँ जुड़ल अछि।

‘पहिल’ होयबाक दावाक साहित्येतिहासीय परीक्षा

ग्रन्थक भूमिका आ चित्रकथाक प्रारम्भिक इतिहासपर लिखल सामग्री प्रीति ठाकुरकें मैथिलीक पहिल चित्रकथा-लेखिकाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। संकलित विवरणमे २००२ क ‘छोट आ पैघ’क अनुवाद, २००३ क ‘माल-जाल आ जानवर दिस देखू’क अनुवाद, २००८ क ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’क मूल प्रकाशन, २००९ क ‘मैथिली चित्रकथा’, २०१० क ‘मिथिलाक लोकदेवता’ आ २०१२ क ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’क क्रम देखबाक अवसर भेटैत अछि। एकर ऐतिहासिक मूल्य ई अछि जे ‘पहिल चित्रकथा’ आ ‘पहिल मौलिक चित्रकथा’क प्रश्न अलग कएल जा सकैत अछि; अनुवादक इतिहासकें मूल लेखनक इतिहाससँ अदृश्य नहि करबाक चाही।

मुदा ‘सर्वप्रथम’क दावा सिद्ध करबाक लेल विधागत परिभाषा अत्यावश्यक अछि। एकपट्ट चित्र, समाचार-पत्रक व्यंग्यचित्र, धारावाहिक चित्र-शृंखला, अनूदित चित्रकथा, मौलिक चित्रकथा आ दीर्घ ग्राफिक आख्यान—ई सभ समान श्रेणी नहि अछि। आशीष अनचिन्हारक ऐतिहासिक आलेख पूर्ववर्ती उपलब्धिक खोज करैत अछि आ नवीन प्रमाण भेटलापर इतिहास संशोधित करबाक खुलापन राखैत अछि। संकलनक भीतर

धीरेन्द्र कुमारक टिप्पणीमे पूर्ववर्ती चित्रकथासँ सम्बद्ध एकटा भिन्न संकेत सेहो अछि। एहि भिन्न आवाजकें अन्तर्विरोध मानि दबेबाक बदला इतिहासलेखनक स्वस्थ चुनौती मानब उचित अछि। उपलब्ध दावाक स्तरपर प्रीति ठाकुरक उपलब्धि महत्त्वपूर्ण अछि; सम्पूर्ण पूर्ववर्ती पत्रिका-सामग्रीक क्रमबद्ध परीक्षण बिना अन्तिम सार्वकालिक निष्कर्ष सुरक्षित नहि अछि।

विदेहक पुस्तक-सूचीमे मूल आ अनूदित कृतिसभक पृथक वर्गीकरण एहि परीक्षणमे उपयोगी अछि। एकर अर्थ मात्र ई नहि जे सूची उपलब्ध अछि, बल्कि विधागत इतिहास लिखबाक समय रचनाक प्रकार, भाषा, माध्यम आ संशोधित संस्करणक क्रम अलग-अलग सूचित कएल जा सकैत अछि। आगामी साहित्येतिहासक लेल एहि ग्रन्थक प्रश्न सर्वाधिक फलप्रद होयत, जँ चित्रकथा मात्र प्रकाशन-तिथिक विवाद नहि, सौन्दर्य, पाठक, चित्र-भाषा आ सामाजिक प्रतिनिधित्वक इतिहास बनि सकय।

डिजिटल पत्रकारिता आ सार्वजनिक साहित्यिक क्षेत्र

गजेन्द्र ठाकुरसँ सम्बद्ध तेसर खण्डक आरम्भ डिजिटल पुस्तकालय आ पत्रकारितासँ होइत अछि। कल्पना झाक लेख सुलभ पठनक अनुभवक माध्यमे मुक्त पुस्तक-संसाधनक उपादेयता देखबैत अछि। कीर्तिनाथ झा प्रकाशनक दू ऐतिहासिक बाधा—धन आ सम्पादकीय स्वीकृति—पर विचार करैत डिजिटल माध्यममे वैकल्पिक प्रवेशद्वार देखैत छथि। लाल देव कामतक आलेख माध्यमक तकनीकी आ संचारगत परिवर्तन रेखाङ्कित करैत अछि। एहि तीन दृष्टिक संग सम्पादकीय भूमिका रखलापर बुझाईत अछि जे वेबपत्रकारिता एतय समाचार प्रसारण मात्र नहि, साहित्यिक अवसरक पुनर्वितरणक प्रश्न अछि।

ग्रन्थमे विभिन्न लेखक वेब-उपस्थितिक आरम्भ, ‘भालसरिक गाछ’, ‘समदिया’ आ ‘विदेह’क विकास-क्रमक उल्लेख करैत छथि। एहि वर्षक्रमकें एकरूप सुनिश्चित इतिहास मानबाक बदला स्रोतक दावाक रूपमे पढ़ब विवेकपूर्ण अछि, कारण ब्लॉगक आरम्भ, ई-पत्रिकाक नामकरण, नियमित पाक्षिकता आ प्रकाशन-संरचनाक संस्थानीकरण अलग

घटनासभ अछि। ‘विदेह’क २००८ सँ पाक्षिक प्रकाशनक उल्लेख आलोचनासभमे महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा एकर पूर्ण कालक्रम बनएबाक लेल मूल अङ्क, सम्पादकीय सूचना आ उपलब्ध अभिलेखसभक पारस्परिक मिलान अपेक्षित रहैत अछि।

प्रकाशनक लोकतन्त्रीकरणक चर्चा करैत किछु असुविधाजनक प्रश्न अनिवार्यतः उठैत अछि। डिजिटल संग्रहमे पुस्तक रहब आ ओकर वास्तवमे ग्रामीण विद्यार्थी, आर्थिक रूपसँ वञ्चित पाठक वा सीमित उपकरण रखनेवला व्यक्ति धरि पहुँचब एक बात नहि। निःशुल्क उपलब्धता प्रवेशक बाधा घटबैत अछि, किन्तु उपकरण, सम्पर्क-सुविधा, खोजयोग्यता, लिपि-समर्थन, दृश्य-अक्षमता, दीर्घकालिक संग्रहण आ सामग्रीक आलोचनात्मक गुणवत्ता सेहो पहुँचक शर्त अछि। संकलित सामग्रीक प्रमुख उपलब्धि डिजिटल माध्यमक आवश्यकता स्थापित करब अछि; अगिला आलोचनात्मक चरण एहि पहुँचक सामाजिक प्रमाण-संग्रह आ पाठकीय व्यवहारक अध्ययन होयबाक चाही।

‘मिथिला मिहिर’सँ ‘विदेह’ धरि: निरन्तरता आ विच्छेद

लक्ष्मण झा ‘सागर’क ‘मिथिला मिहिर आ विदेह वेब पत्रिका’ पारम्परिक पत्रिकाक सांस्कृतिक कार्य आ डिजिटल पाक्षिकक उपलब्धिक बीच तुलनात्मक अवसर दैत अछि। ‘मिथिला मिहिर’क ऐतिहासिक प्रतिष्ठामे रचनाकारसभक एकटा प्रकाशन-मंच, सम्पादकीय चयन आ मैथिलीक साहित्यिक संवादक साझा स्थल विकसित भेल छल। ‘विदेह’क सन्दर्भमे माध्यम बदलि जाइत अछि—भौतिक वितरणक स्थानपर अन्तरजाल, सीमित मुद्रणक स्थानपर पुनरुत्पादनयोग्य सामग्री, आ केन्द्रीय प्रवेशद्वारक सम्मुख वैकल्पिक लेखक-समुदायक आग्रह। मुदा साहित्यिक पत्रिकाक मूल प्रश्न, अर्थात् ककर रचना स्थान पबैत अछि, कोन मानदण्डपर, आ पाठक ओकरा कोना ग्रहण करैत छथि, दुनू कालमे जीवन्त रहैत अछि।

एहि प्रकारक तुलना केवल ‘पुरान श्रेष्ठ छल’ वा ‘नव अधिक लोकतान्त्रिक अछि’क द्विधा नहि बनबाक चाही। पुरान पत्रिकाक संस्थागत स्मृति आ डिजिटल पत्रिकाक त्वरित उपलब्धता अलग शक्ति रखैत अछि। साहित्यक इतिहासमे दुनू माध्यमक

सम्पादकीय अर्थव्यवस्था, भाषिक मानक, पाठक-विस्तार, मतभेदक स्थान आ संरक्षण-क्षमता तुलनीय आधार बनि सकैत अछि। प्रस्तुत ग्रन्थ एहि तुलनाक आरम्भ करैत अछि, मुदा निकास-संख्या, नियमित पाठक, सम्पादकीय नीति आ सहभागिताक दीर्घकालिक आँकड़ासभक एकरूप विवेचन नहि करैत। इएह एकर उपादेयता आ सीमा दुनू अछि।

पञ्जी: विरासत, वंशज्ञान आ अभिलेखीय राजनीति

पञ्जीपर विनयानन्द झा, जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल', डॉ. कैलाश कुमार मिश्र आ भवनाथ झाक लेखसभ एकटा महत्त्वपूर्ण विषय-समूह बनबैत अछि। पञ्जी केवल विवाहक गोत्र-व्यवस्था बुझबाक दस्तावेज नहि, बल्कि मूलग्राम, कुल, व्यक्ति, कालक्रम, सामाजिक सम्बन्ध आ ऐतिहासिक विस्थापनक अभिलेख सेहो अछि। एहि स्रोतक प्रकाशन आ डिजिटल सुलभता पुरान पाण्डुलिपिक सामग्रीकेँ अनुसन्धाता आ सामान्य जिज्ञासु दुनूक लेल खोलबाक सम्भावना बनबैत अछि। ग्रन्थमे 'जीनोम मैपिंग' आ पञ्जीसम्बद्ध सम्पादनक श्रेय गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झाक सामूहिक काजक रूपमे सेहो देल गेल अछि; व्यक्तिगत नायकत्वक बीच सहकारक ई बिन्दु विसरबाक नहि चाही।

पञ्जीक ऐतिहासिक उपयोगिता स्वीकार करितहुँ सामाजिक चयनक प्रश्न छोड़ल नहि जा सकैत अछि। वंशावलि जे समुदायसभक नाम, श्रेणी आ वैवाहिक व्यवहार अभिलिखित करैत अछि, ओकरा बाहर रहि गेल समूहक इतिहास ओहिमे कम दृश्यमान होयत। स्रोतक मौन स्वयं सामाजिक तथ्य बनि सकैत अछि। तँ पञ्जीक अध्ययनमे कोन समुदायक अभिलेखन भेल, कोन सामाजिक उद्देश्यसँ भेल, मूल लेखन आ बादक प्रतिलिपिक अन्तर कोना पहचानल जाए, तथा वंशसूचीसँ प्राप्त जानकारीकेँ आन ऐतिहासिक स्रोतक संग कोना मिलाओल जाए—ई प्रश्न आवश्यक अछि। 'संरक्षण'क कामकेँ सामाजिक न्यायसँ काटि देलापर ऐतिहासिक स्रोत केवल कुल-प्रतिष्ठाक उपकरण बनबाक जोखिम रखैत अछि।

ग्रन्थक भीतर भवनाथ झा प्रस्तुतिकरण, शीर्षक-संगठन आ पाठकीय सुगमताक व्यावहारिक समस्या उठबैत छथि। एहि आलोचनाक ऐतिहासिक महत्त्व कम नहि अछि। सामग्रीक विशालता स्वयमेव उपयोगिता नहि बनैत; शोधक लेल पाठान्तरक नियन्त्रण, नामक अनुक्रमण, स्रोत-चिह्न, लिप्यन्तरणक स्पष्ट नीति आ पुनःजाँचक सुविधा आवश्यक अछि। एहि कारणेँ पञ्जीसम्बद्ध आलेखसभक संयुक्त संदेश प्रशंसासँ व्यापक अछि: उपलब्ध कराएल अभिलेखक वैज्ञानिक उपयोग करबाक पद्धति विकसित करब सेहो उतने आवश्यक अछि।

भाषा, लिपि आ शब्दकोश: आधारभूत काजक साहित्यिक महत्त्व

उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'क कोशसम्बद्ध अध्ययन मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ संगणकीय शब्दावलीक उद्यमकेँ शब्दकोश-परम्पराक विस्तृत क्षितिजमे रखैत अछि। सामान्यतः साहित्यिक इतिहास कविता, कथा आ नाटककेँ केन्द्रमे रखैत अछि, मुदा शब्दकोश, लिपि-प्रविधि, वर्तनीक मानकीकरण आ शब्दार्थक उपलब्धता बिना बहुविध साहित्यिक उत्पादनक आधार दुर्बल रहैत अछि। कोश-साधना रचना नहि अछि—एहन विभाजन सहज अछि; तथापि शब्दक अर्थ-क्षेत्र, प्रयोग-स्रोत, काल-भेद, बोली-वैविध्य आ तकनीकी शब्दनिर्माणक निर्णय भाषा-समुदायक बौद्धिक भविष्यकेँ आकार दैत अछि।

ग्रन्थमे तिरहुता सहित अनेक लिपिमे सामग्री उपलब्ध करएबाक चर्चा एहि बातकेँ उभारैत अछि जे लिपिक प्रश्न केवल गौरव-स्मृतिक नहि, व्यवहारिक पाठकीय अधिकारक सेहो अछि। समान भाषा भिन्न लिपिमे उपलब्ध रहला सँ विरासत आ समकालीन अभिगमक बीच दूरी घटि सकैत अछि। मुदा बहुलिपि प्रकाशनक टिकाउपनक लेल मानकीकृत अक्षर-संयोजन, खोजव्यवस्था, अनुवाद/लिप्यन्तरणक त्रुटि-जाँच आ नव पाठकक प्रशिक्षण आवश्यक अछि। एहि आधारपर कोश आ लिपिक कार्यकेँ साहित्येतिहासक परिशिष्ट नहि, साहित्यिक संचारक संरचनात्मक इतिहासमे राखबाक अपेक्षा अछि।

‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’: विधा-संमिश्रण आ बौद्धिक विस्तार

ग्रन्थमे उदयनारायण सिंह ‘नचिकेता’ ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’क सात खण्डक विवेचन करैत छथि। एकर अन्तर्गत प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, उपन्यास, पद्य, कथा, नाटक, महाकाव्य आ बाल-किशोर साहित्यक उल्लेख अछि। ई सूची मात्र लेखकक उत्पादकता सिद्ध नहि करैत; समकालीन मैथिलीमे एक लेखकक बहुविध रचनात्मक कार्यक्रमक आकांक्षा सेहो सूचित करैत अछि। एकहि सृजन-जगतमे साहित्यिक परीक्षण, आख्यान, नाटक आ बालभाषिक प्रयोग होएबाक कारणेँ विधागत सीमा स्थिर नहि रहैत।

मुदा बहुविधता आ कलात्मक उपलब्धि पर्याय नहि। जे रचनामे विचारक विस्तार अछि, ओतहि कथानकक सघनता घटियो सकैत अछि; जतए भाषिक साहस अछि, ओतहि पाठकीय श्रम अधिक भऽ सकैत अछि। ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’पर अनेक समीक्षकक उपस्थिति एहि भिन्न मूल्याङ्कनकेँ सम्भव बनबैत अछि। राजदेव मण्डलक पत्रोत्तर शैली, शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क पाठकीय प्रतिक्रिया आ अशोकक उपन्यास-सम्बद्ध अध्ययन आलोचनात्मक अभिव्यक्तिक अलग रूप सामने अनैत अछि। एहन बहुशैली मूल्याङ्कनकेँ एक निष्कर्षमे विलीन करबाक बदला परस्पर परीक्षणक अवसर मानब अधिक फलप्रद अछि।

‘सहस्त्रबाढनि’: परिवारक भीतर सामाजिक परिवर्तनक कथा

अरविन्द ठाकुरक ‘सहस्त्रबाढनि: हमर दृष्टि मे (किछु टिप्पणी)’ एहि संकलनक अपेक्षाकृत सघन पाठ-आधारित आलोचनासभमे गनल जा सकैत अछि। हुनक आरम्भिक स्थापनामे अछि—“‘सहस्त्रबाढनि’ मूलतः एक परिवारक चारि पीढ़ीक क्रमिक विकासक (इवोल्युशन) कथा कहैत अछि।” परिवारक बहुपीढ़ीय कथा समाजक परिवर्तनकेँ निराकार राजनीतिक घोषणाक रूपमे नहि, शिक्षा, पेशा, अवसर, अपमान, निर्णय आ पारिवारिक तनावक मूर्त रूपमे उपस्थित करैत अछि। समीक्षक पात्र आ पीढ़ीक सम्बन्धसँ नव शिक्षा, औपनिवेशिक-अनुवर्ती व्यवस्था आ आधुनिक व्यावसायिक संस्थाक प्रश्नक पठन आरम्भ करैत छथि।

एहि दृष्टिसँ ‘सहस्त्रबाढनि’क अध्ययन वंशक कहानीक आन्तरिक विघटनक अध्ययन सेहो भऽ सकैत अछि। एक पीढ़ी जेकरा प्रगति मानैत अछि, अगिला पीढ़ी ओकर सीमाकेँ पहिचानैत अछि। सार्वजनिक सत्ता आ निजी महत्वाकांक्षाक बीच जे तनाव बनैत अछि, ओ आख्यानक नैतिक धरातल रचैत अछि। ग्रन्थक एहिठाम उपलब्ध आलोचना पठनीय अछि, कारण ओ प्रशंसात्मक विशेषणसँ अधिक कथावस्तुक संरचना आ सामाजिक परिवर्तनक सम्बन्धपर ध्यान दैत अछि। तथापि सम्पूर्ण उपन्यासक प्रत्येक प्रसंगक स्वतन्त्र पाठ-परीक्षणक बिना एतय उद्धृत आलोचनाकेँ रचनाक अन्तिम मानक नहि मानल जा सकैत अछि।

सामाजिक विषमता, कथारूप आ समानान्तर परम्परा

आभा झाक ‘सामाजिक विषमताक तह धरि पैसैत कथा’ गजेन्द्र ठाकुरक कथासाहित्यमे जाति-पाँति, स्त्री-अनुभव, भुखमरी, प्रवास, शिक्षाक बाजार, पर्यावरण आ सत्तासम्बद्ध प्रश्नक उपस्थिति रेखाङ्कित करैत अछि। एहि आलेखक विशेष महत्त्व ई अछि जे साहित्यकेँ केवल विधागत यश वा भाषिक कौशलक आधारपर नहि, सामाजिक अनुभवक जटिलताक माध्यमे पढ़बाक आग्रह करैत अछि। कथाक नैतिक अर्थ ओकर विषयसूची मात्रसँ सिद्ध नहि होइत; दृष्टिकोण, पात्रक अन्तर्विरोध, कथावाचकक दूरी आ अन्तिम कलात्मक प्रभाव सेहो निर्णायक अछि। ई सूक्ष्म भेद ध्यानमे राखि सामाजिक यथार्थक मूल्याङ्कन कएल जाएबाक चाही।

आचार्य रामानन्द मण्डलक आलेख मैथिली साहित्यक मुख्यधारा आ समानान्तर धाराक सम्बन्धक प्रश्न स्पष्ट रूपसँ उठबैत अछि। एहिठाम साहित्यिक इतिहास मात्र प्रसिद्ध लेखकक क्रम नहि, प्रतिष्ठाक संस्थासभक इतिहास सेहो बनि जाइत अछि। किनका पाठ्यक्रममे स्थान भेटल, किनकर रचनाक पुनर्मुद्रण भेल, ककरा पुरस्कार वा समीक्षाक अवसर भेटल, कोन बोली आ वर्गक कथा ‘मानक साहित्य’ मानल गेल—ई सभ प्रश्न साहित्येतिहासक समीक्षात्मक निर्माणक केन्द्रमे रहबाक चाही। तथापि मुख्यधारा आ समानान्तरताकेँ पूर्णतः अभेद्य दू शिविर मानलापर भितरिण मतभेद, आन्तरिक

असमानता आ परस्पर प्रभावक इतिहास अदृश्य भऽ सकैत अछि। ग्रन्थ ई जटिल प्रश्न उठबैत अछि, आ एकर सर्वोत्तम पाठ एहि प्रश्नकेँ खुलल रखैत अछि।

असहमतिक स्थान: प्रशंसात्मक संकलनक आन्तरिक आलोचना

व्यक्तित्व-केन्द्रित ग्रन्थक सामान्य जोखिम ई अछि जे आलोचनात्मक मत सम्मानसूचक भाषाक भीड़मे दबि जाए। प्रस्तुत संकलनमे धनाकर ठाकुरक ‘विदेह ओ गजेन्द्र’ एहन जोखिमक प्रतिरोधी पाठ अछि। ओकर आरम्भिक कथन—“गजेन्द्र ठाकुर विदेह नहि छथि नहि विदेह गजेन्द्र छलाह वा अछि।” —व्यक्ति आ संस्थाक बीच अन्तर राखबाक स्पष्ट आग्रह अछि। धनाकर ठाकुर सम्पादकीय निर्णय, पुरस्कार-व्यवस्था, प्रस्तुतीकरण आ संगठनक स्वरूपपर आपत्ति रखैत छथि। ई आपत्ति अनिवार्यतः सर्वमान्य निष्कर्ष नहि, मुदा ओकर उपस्थितिए संकलनक आलोचनात्मक क्षितिज विस्तृत करैत अछि।

व्यक्ति द्वारा आरम्भ कएल संस्थाक निरन्तरतामे सम्पादकक भूमिका निश्चित रूपेँ महत्त्वपूर्ण होइत अछि; तथापि पाठक, लेखक, तकनीकी सहकर्मी, सहयोगी सम्पादक, मुद्रक आ सामाजिक समर्थन सेहो संस्थाक इतिहासक अङ्ग अछि। ग्रन्थक अनेक आलेखमे व्यक्तिगत श्रेयक मात्रा अधिक अछि, जबकि किछु आलेख सामूहिक परिश्रमक उल्लेख करैत अछि। एहि असमानताकेँ समझबाक लेल ‘नायकत्व’क भाषा आ ‘संस्थागत इतिहास’क भाषाक भेद उपयोगी अछि। ग्रन्थ जखन स्वयं मतभेदकेँ स्थान दैत अछि, तखन ओकर आलोचनात्मक सामर्थ्य बढ़ैत अछि; जखन तीव्र प्रशंसा तर्कक स्थान लैत अछि, तखन ओकर प्रमाणात्मक मूल्य सीमित भऽ जाइत अछि।

साक्षात्कार आ सम्पादकीय टिप्पणी: जीवित इतिहासक निर्माण

संकलनमे प्रीति ठाकुरक साक्षात्कारक संग गजेन्द्र ठाकुरक पुरान संवाद आ नव साक्षात्कार प्रस्तुत अछि। साक्षात्कार तत्कालीन विचार, असहमति आ आत्ममूल्याङ्कनक प्रत्यक्ष स्रोत अछि। पुरान आ नव कथनक साथ-साथ उपस्थिति समयान्तरमे दावाक परिवर्तन वा निरन्तरताक परीक्षण करबाक सुविधा दैत अछि। ई

जीवनीपरक साहित्यक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि, कारण लेखकक कृति आ कृतिक बाहरी स्वागतक अतिरिक्त ओ स्वयं अपन कार्यक औचित्य, सीमा आ कार्यक्रमक चर्चा करैत छथि।

मुदा साक्षात्कार आत्मप्रस्तुति सेहो अछि; प्रश्नकर्ताक रुचि, सार्वजनिक विवाद आ उत्तरदाताक तत्कालीन स्थिति उत्तरकें प्रभावित करैत अछि। तँ साक्षात्कारकें समयविशेषक विचारक अभिलेख मानब उचित अछि, पूर्ण निष्पक्ष इतिहास नहि। सम्पादकीय टिप्पणी सेहो आलेखसभक बीच संवाद रचैत अछि, मुदा जँ ओ केवल प्रतिवाद करैत अछि आ मूल लेखकक प्रश्नक सम्पूर्ण विश्लेषण नहि करैत, तँ पाठककें आलोचनाक दू स्तर अलग रखबाक चाही। एहि भेदक ज्ञान ग्रन्थक पाठककें मतभिन्नता बुझबाक स्वतंत्रता दैत अछि।

साहित्येतिहासक तुलनात्मक रूपरेखा

मैथिली साहित्यक इतिहास सामान्यतः प्राचीन काव्य, मध्यकालीन दरबारी आ भक्तिकाव्य, आधुनिक पत्रकारिता, उपन्यास, कथा आ समकालीन रचनाशीलताक विकासक्रममे व्यवस्थित कएल जाइत रहल अछि। एहि व्यापक क्रममे ‘प्रीति कारण सेतु बान्हल’ एकटा अन्य महत्त्वपूर्ण धुरी प्रस्तुत करैत अछि: साहित्यक सामाजिक प्रसारक माध्यमसभक इतिहास। विद्यापतिक साहित्यिक प्रतिष्ठा वा ‘वर्णरत्नाकर’क गद्यपरम्परासँ आरम्भ कएल इतिहास यदि केवल उत्कृष्ट कृतिक संकलन हो, तँ चित्रकथा, बालभाषा, पुस्तकालय, पाण्डुलिपि-संरक्षण, लिपिसुलभता आ डिजिटल जनक्षेत्रक परिवर्तन ओहिमे पर्याप्त स्थान नहि पबैत। संकलन एहि रिक्तिकें देखबाक दृष्टि दैत अछि, यद्यपि ओ स्वयं पूर्ण साहित्येतिहास नहि अछि।

लोकगीतसँ ग्रन्थक आरम्भ, प्रीति ठाकुरक चित्रकथामे लोकनायकक दृश्य पुनर्जीवन, आ पञ्जी-सम्बद्ध लेखसभमे हस्तलिखित वंशज्ञानक सार्वजनिक सुलभता—ई सभ प्राचीन-मध्यकालीन-आधुनिक विभाजनक पार एकटा ‘स्मृति आ माध्यम’क इतिहास बनबैत अछि। एहि दृष्टिमे साहित्यक विरासत स्थिर सामग्री नहि, पाठान्तर आ

रूपान्तरक शृंखला अछि। लोककण्ठ, छपल पोथी, समाचार-पत्र, ई-पत्रिका, शब्दकोश आ पाठकीय चर्चा एक-दोसरकेँ बदलैत अछि। समकालीन मैथिलीक साहित्येतिहास लिखबाक लेल एहि परस्परावलम्बनकेँ आधार बनाओल जा सकैत अछि।

‘मिथिला मिहिर’क पत्रकारीय परम्परा आ ‘विदेह’क अन्तरजालीय प्रकाशन बीच तुलना करैत माध्यमक सामाजिक प्रभाव बुझबाक अवसर भेटैत अछि। पहिल कालमे सम्पादन, डाक-वितरण, मुद्रण आ सीमित संस्थागत प्रवेश प्रमुख छल; नव कालमे डिजिटलीकरण, निरन्तर अभिलेखन आ व्यापक पुनर्प्रसारण सम्भव भेल। मुदा नव काल पूर्ण समतावादी स्वतः नहि अछि। लोकप्रियताक माप, सम्पादकीय पूर्वग्रह, संजालक पहुँच आ स्थायी संरक्षणक संकट पुरान असमानताकेँ नव रूप देबाको सम्भावना रखैत अछि। इएह आलोचनात्मक सावधानी इतिहासक तुलना निष्पक्ष बनबैत अछि।

संरचनागत असमानता आ आलोचनाक मर्यादा

ग्रन्थक शीर्षक प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुरकेँ संयुक्त रूपसँ सामने अनैत अछि, मुदा सामग्रीक अनुपात समान नहि अछि। कृपानन्द ठाकुरपर एकटा दीर्घ संस्मरणात्मक लेख, प्रीति ठाकुरपर दसटा समीक्षा/इतिहास/साक्षात्कार सम्बद्ध सामग्री, आ गजेन्द्र ठाकुरपर उनतीसटा नामित आलेख-साक्षात्कारक क्रम देखबा योग्य अछि। ई असमानता महज अंकगणित नहि; पाठकीय ध्यानक वितरणक प्रश्न अछि। स्त्री रचनाकारक इतिहास पुनःस्थापित करबाक घोषणा तखन अधिक प्रभावी होइत जखन दृश्य-भाषाक विधात्मक विश्लेषण, चित्रकथा-प्रतिसंस्करण, बालपाठकक प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया आ रचनात्मक श्रमक अध्ययन सेहो पर्याप्त विस्तार पबैत।

दोसर सीमा प्रशंसात्मक शब्दावलीक पुनरावृत्ति अछि। ‘ऐतिहासिक’, ‘अभूतपूर्व’, ‘पहिल’ आ ‘विराट’ सन विशेषण अनेक आलेखमे उपलब्धिक ऊर्जा व्यक्त करैत अछि, मुदा स्रोतक पारस्परिक जाँच बिना वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि बनैत। एकटा सम्पादित पुस्तकक भरोसामे विविध लेखकक मत राखब स्वाभाविक अछि; तथापि शोध-

परम्पराक दृष्टिसँ दावासभक समयरेखा, दस्तावेजी आधार आ पूर्ववर्ती प्रयासक सम्पूर्ण उपस्थिति आवश्यक अछि। प्रस्तुत ग्रन्थ स्वयं एहन जाँचक भरपूर सामग्री दैत अछि, से एकर प्रशंसनीय विशेषता अछि।

तेसर सीमा ऐतिहासिक विषयसभक असमान गहराइ अछि। पञ्जीपर विस्तृत सामग्री उपलब्ध अछि, मुदा लोकनायकक कथाक अन्तर्विरोध, दृश्य-माध्यमक सौन्दर्यशास्त्र, पत्रिकाक पाठकवर्ग आ मुक्त अभिलेखक सामाजिक उपयोगपर तुलनात्मक अध्ययन आर अधिक अपेक्षित अछि। ई सीमासभकेँ गणना मात्र न बुझी; ई भविष्यक विशिष्ट अनुसन्धान-विषयसभक मानचित्र अछि। पुस्तक एहन प्रश्न उत्पन्न करैत अछि जकर समाधान कदाचित् एक सम्पादित ग्रन्थमे समाएबो सम्भव नहि छल।

शोध-पद्धति, प्रमाण आ व्याख्याक विश्वसनीयता

एहि अध्ययनमे मूल संकलनक सम्पादकीय भूमिका, खण्डीय विन्यास, विषय-समूह, चयनित आलोचनासभ, साक्षात्कार आ ग्रन्थक अन्तर्गत रचना-सूचीक पारस्परिक तुलना कएल गेल अछि। ऐतिहासिक क्रमक ठाम संकलनमे कहल गेल बातकेँ लेखकक कथनक रूपमे लेल गेल अछि; जतए विदेहक पुस्तक-सूची कृतिक प्रकाशन-वर्ष वा विधा-पहिचानक अतिरिक्त पुष्टिक अवसर दैत अछि, ओतए ओकर उपयोग सहायक स्रोतक रूपमे कएल गेल अछि। उपर्युक्त विधि ‘मूल लेखकक रचना’ आ ‘रचनापर समीक्षकक मूल्याङ्कन’केँ एक वस्तु मानबाक त्रुटिसँ बचबैत अछि।

ऐतिहासिक विवेचनमे सन्दर्भक स्तरक भेद आवश्यक अछि। प्रकाशित कृतिक उपलब्धता एक प्रकारक तथ्य अछि; ओकर ‘पहिल’ वा ‘श्रेष्ठ’ होयबाक दावा दोसर प्रकारक निर्णय; आ ओकर सामाजिक प्रभाव तेसर प्रकारक अनुसन्धानक विषय अछि। एहि तीनूक मिलान बिना साहित्यिक सम्मान इतिहासक स्थान लऽ सकैत अछि। समान रूपसँ लोकपरम्परा चित्रकथामे उपस्थित अछि—ई कथन चित्रकथाक सामग्रीसँ जाँचल जा सकैत अछि; मुदा एहि उपस्थिति द्वारा सामाजिक भेदभाव निश्चित रूपसँ समाप्त भऽ गेल—एहन निष्कर्ष लेल भिन्न प्रकारक प्रमाण अपेक्षित अछि।

निष्कर्ष: नव अर्थमे 'सेतु'

‘प्रीति कारण सेतु बान्हल’क स्थायी महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिलीक साहित्यिक काजकेँ केवल रचना-प्रकाशनक संकुचित अर्थमे नहि देखैत। विद्यालय आ गामक सामाजिक स्मृति, स्त्री द्वारा निर्मित दृश्य-आख्यान, लोकदेवता आ उपेक्षित नायकक पुनर्पाठ, डिजिटल पत्रिकाक जनक्षेत्र, पञ्जीक ऐतिहासिक संरक्षण, लिपि आ कोशक निर्माण तथा कथा-उपन्यासक सामाजिक आलोचना—ई सभ एक संग साहित्यिक जीवनक व्यापक संरचना उधारैत अछि। साहित्यक इतिहास केवल महान कृति आ नामक इतिहास नहि, माध्यम, सहकर्मि, पाठक, सम्पादक आ पहुँचक शर्तसभक इतिहास सेहो थिक—ग्रन्थक ई मूल संकेत विशेष महत्त्व रखैत अछि।

एहि उपलब्धिक संग एकर आलोचनात्मक सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि। दावाक दस्तावेजी परीक्षण, स्त्री आ पुरुष रचनाकारक बीच अधिक सन्तुलित विवेचन, व्यक्तिक प्रतिष्ठा आ संस्थाक स्वतंत्र इतिहासक पृथक्करण, पञ्जीक सामाजिक बहिष्करणपर गम्भीर विचार आ डिजिटल पहुँचक वस्तुनिष्ठ अध्ययन अगिला अनुसन्धानक आवश्यकता अछि। ग्रन्थक भीतर उपलब्ध मतभेद एहि कार्यक्रमकेँ वैधता दैत अछि। सही अर्थमे ‘सेतु’ तखने बनैत अछि जखन प्रशंसा, प्रश्न, प्रमाण आ असहमति पारस्परिक संवादमे रहय। एहि कसौटीपर ई सम्पादित पुस्तक समकालीन मैथिली आलोचनाक एकटा महत्त्वपूर्ण स्रोत-ग्रन्थ, बहुस्वरीय सांस्कृतिक दस्तावेज आ भावी साहित्येतिहास लेखन लेल विचारोत्तेजक आधार बनि सामने अबैत अछि।

विस्तृत सन्दर्भ-सूची

मूल संकलनमे प्रकाशित आलेख आ साक्षात्कार प्राथमिक सन्दर्भ छथि। सहायक प्रकाशन-सूचना केवल विदेहक साहित्यिक अभिलेखसँ ग्रहण कएल गेल अछि।

- अनचिन्हार, आशीष (सम्पादक)। प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili।

२०२४। ISBN 978-93-340-0956-9।

- अनचिन्हार, आशीष। “प्रथम गणेश पद गाओल देवता मनाओल हे...” (सम्पादकीय भूमिका)। पूर्वोक्त संकलन।
- झा, सियाराम ‘सरस’। “करोट फेरैत गामक निदर्शक: के.एन.टी.” पूर्वोक्त संकलन।
- वर्मा, डॉ. शेफालिका। “प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा।” पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, प्रो. वीणा। “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, डॉ. रमण। “‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ आ ‘मैथिली चित्रकथा’।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, शिव कुमार ‘टिल्लू’। “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”; “मैथिली चित्रकथा”; “मिथिलाक लोकदेवता।” पूर्वोक्त संकलन।
- कुमार, धीरेन्द्र। “प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर एक नजरि।” पूर्वोक्त संकलन।
- मण्डल, दुर्गानन्द। “नेना लेल सुन्दर चित्रकथा।” पूर्वोक्त संकलन।
- अनचिन्हार, आशीष। “मैथिली चित्रकथा केर प्रारम्भिक इतिहास (२००२ सँ २०१६)।” पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, प्रीति। “मैथिलीक पहिल चित्रकथा लेखिका प्रीति ठाकुर केर साक्षात्कार।” प्रश्नकर्ता: आशीष अनचिन्हार। पूर्वोक्त संकलन।
- झा, कल्पना। “विदेह डिजिटल पुस्तकालय: पठन-पाठनक सौखीन लोक लेल वरदान।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, कीर्तिनाथ। “मैथिली डिजिटल पत्रकारिताक सूत्रधार: गजेन्द्र ठाकुर।” पूर्वोक्त संकलन।
- कामत, लाल देव। “मैथिलीक इंटरनेट मैन: गजेन्द्र ठाकुर।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, विनयानन्द। “पञ्जी साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान।” पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, जगदीशचन्द्र ‘अनिल’। “की थिक पञ्जी-प्रबन्ध।” पूर्वोक्त संकलन।

- मिश्र, डॉ. कैलाश कुमार। “दूषण पञ्जी: गजेन्द्र ठाकुर केर मैथिली संस्कृति पर सार्वभौमिक योगदान।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, भवनाथ। “मिथिलाक पञ्जी आ ओकर संरक्षणक दिशामे श्री गजेन्द्र ठाकुर।” पूर्वोक्त संकलन।
- मिश्र, डॉ. शिव कुमार। “मिथिलाक धरोहरिक संरक्षक गजेन्द्र ठाकुर।” पूर्वोक्त संकलन।
- सिंह, उदयनारायण ‘नचिकेता’। “गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ अंग्रेजी-मैथिली कम्प्यूटर शब्दकोशपर।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, लक्ष्मण ‘सागर’। “मिथिला मिहिर आ विदेह वेब पत्रिका।” पूर्वोक्त संकलन।
- श्रीनिवास, शिवशंकर। “मैथिलीक पत्रिकामे विशेषांक (विशेष सन्दर्भ—व्यक्तिपरक विशेषांक)।” पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, धनाकर। “विदेह ओ गजेन्द्र।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, डॉ. योगानन्द। “मैथिली साहित्यक साधक-अराधक श्री गजेन्द्र ठाकुर।” पूर्वोक्त संकलन।
- सिंह, उदयनारायण ‘नचिकेता’। “गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक।” पूर्वोक्त संकलन।
- अशोक। “गजेन्द्र ठाकुर आ हुनक उपन्यास।” पूर्वोक्त संकलन।
- ठाकुर, अरविन्द। “सहस्त्रबाढनि: हमर दृष्टि मे (किछु टिप्पणी)।” पूर्वोक्त संकलन।
- मण्डल, राजदेव। “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)।” पूर्वोक्त संकलन।
- सिंह, प्रो. प्रेमशंकर। “मैथिली बाल काव्यधारा।” पूर्वोक्त संकलन।
- झा, आभा। “सामाजिक विषमताक तह धरि पैसैत कथा।” पूर्वोक्त संकलन।

- मण्डल, आचार्य रामानन्द। “साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर: व्यक्तित्व आ कृतित्व।” पूर्वोक्त संकलन।
- दत्त, मुकेश। “मैथिली वेब पत्रकारिता केर नव आयाम दैत गजेन्द्र ठाकुर।” पूर्वोक्त संकलन।
- अनचिन्हार, आशीष। “पञ्जी प्रबन्धक प्रकाशन बहन्ने श्रुति प्रकाशन एवं नागेन्द्र कुमार झाक चर्चा।” पूर्वोक्त संकलन।
- गजेन्द्र ठाकुर। “गजेन्द्र ठाकुर केर साक्षात्कार।” प्रश्नकर्ता: आशीष अनचिन्हार। पूर्वोक्त संकलन।
- विदेह। “मैथिली पोथीक अभिलेख: पुस्तक-सूची, प्रीति ठाकुरक मूल आ अनूदित कृति, गजेन्द्र ठाकुरक पुस्तक-संसाधन।” विदेह ई-पत्रिकाक पुस्तक-संग्रह,
<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm> (अवलोकन: अक्टूबर २०२६)।
- विदेह। “विदेह ई-पत्रिका आ साहित्यिक संसाधन।” <https://videha-ejournal.github.io/videha/> (अवलोकन: अक्टूबर २०२६)।

१.१३. नित नवल आशीष अनचिन्हार — सेतुषाम : **Vibrant Maithili**

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

सेतुक रूपक आ समावेशी साहित्येतिहास

शोध-सार

आशीष अनचिन्हार सम्पादित 'सेतुषाम: Vibrant Maithili' प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुरक कृतित्वक संग-संग आधुनिक मैथिली साहित्यक संस्थागत रूपान्तरणक दस्तावेज थिक। संग्रहमे प्रीति ठाकुरक बाल-साहित्य आ चित्रकथापर दूटा तथा गजेन्द्र ठाकुरक डिजिटल सम्पादन, पञ्जी-संरक्षण, शब्दकोश, बहुलिपि, नव लेखक, जनपक्षधरता, आलोचना आ साहित्येतिहासपर चौदहटा लेख संकलित अछि। एहि अध्ययनक केन्द्रीय स्थापना ई अछि जे ग्रन्थक वास्तविक मूल्य केवल दू व्यक्तिक प्रशस्तिमे नहि, बल्कि साहित्यक रचना, संरचना, प्रसार, अभिलेख, सम्पादकीय चयन आ पाठकीय सहभागिताक संयुक्त परिघटना मानबामे अछि। वेद-सामक 'सेतु' रूपक, स्त्रीक बाल-सृजनक स्थान, जाति-वर्गक प्रवेश, डिजिटल पुस्तकालयक सम्भावना आ मंच-संस्कृतिसँ दूरीक विचार एक-दोसरासँ टकराइट आ जुड़ैत छथि। तथापि स्रोत-प्रमाणक असमानता, लेख सभक प्रशंसात्मक मुद्रा, स्त्री-कृतित्वक अपेक्षाकृत कम विस्तार आ कतेको 'पहिल' सम्बन्धी दावाक ऐतिहासिक परीक्षणक आवश्यकता ग्रन्थक सीमा सेहो चिन्हित करैत अछि। शोध-निबन्ध एहि द्वन्द्वक आलोचनात्मक पद्धतिसँ पढ़ैत साहित्येतिहासक एकटा बहुकेन्द्रीय दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि।

बीजशब्द: मैथिली साहित्य, आशीष अनचिन्हार, प्रीति ठाकुर, गजेन्द्र ठाकुर, विदेह, चित्रकथा, डिजिटल मानविकी, पञ्जी, जनपक्षधरता, समानान्तर इतिहास, सम्पादन।

आलोचनाक केन्द्रीय समस्या : कृति, व्यक्ति आ संस्था

आधुनिक भारतीय भाषाक साहित्येतिहास प्रायः कवि, कथाकार, उपन्यासकार आ आलोचकक प्रसिद्ध कृतिक क्रमबद्ध सूचीसँ रचल जाइत रहल अछि। एहि इतिहासमे पत्रिका सम्पादकक श्रम, पुस्तक उपलब्ध करौनिहार लोकक काज, विस्मृत

हस्तलिखित सामग्रीक संरक्षण, नव लेखकक आरम्भिक प्रशिक्षण आ बाल-पाठक लेल साहित्यिक दृश्य-संसारक निर्माण परिधिमे रहि जाइत अछि। ‘सेतुषाम’ एही परिधिमें विषय बनबैत अछि। ग्रन्थ जे अनुभव सोझाँ अनैत अछि, ओकरा बुझबाक लेल ‘कतेक पोथी लिखल गेल’ मात्र गननासँ काज नहि चलत; ई सेहो देखबाक होयत जे पोथी कोना पाठक धरि पहुँचल, किनकर भाषा छपल, किनकर स्मृति सुरक्षित भेल, आ कोन साहित्यिक आवाजकेँ मान्यता भेटल।

एहि कारण ‘सेतुषाम’क आलोचना दू परतमे होयबाक चाही। पहिल परत थिक संकलित लेखक सभक स्थापना—प्रशंसा, अनुभव, ऐतिहासिक विवरण, असहमति आ भविष्यक प्रस्ताव। दोसर परत थिक स्वयं संग्रहक कृतिरूप—सम्पादन, पाठक-विन्यास, शीर्षक, खण्ड-विभाजन, वैदिक संकेत, लेख सभक आपसी सम्बन्ध आ वैचारिक असमानता। एहि दुनू परतकेँ अलग कएलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ग्रन्थ कतेक बात प्रत्यक्ष साक्ष्यसँ स्थापित करैत अछि आ कतऽ मूल्यनिर्णय अथवा व्यक्तिपरक अनुभवक आधार लैत अछि। स्वतन्त्र आलोचनाक कार्य एहि भेदकेँ सुरक्षित रखब थिक, श्रद्धा वा असहमतिक कारण एकरा मेटा देब नहि।

संग्रहक स्थापत्य आ सम्पादकीय स्वायत्तता

संकलनक आरम्भ सम्पादक आशीष अनचिन्हारक विस्तृत प्रस्तावनासँ होइत अछि। ओकर बाद योगदानक एकटा विवरणात्मक सूची, प्रीति ठाकुरक रचनाधारित छोट खण्ड आ गजेन्द्र ठाकुरक विविध काजपर केन्द्रित अपेक्षाकृत पैघ खण्ड उपस्थित अछि। मुन्नी कामत आ इरा मल्लिक स्त्री-सृजन, बाल-पाठक आ चित्रभाषाक विमर्श आरम्भ करैत छथि। तकर विपरीत कैलाश कुमार ठाकुर, विकास वत्सनाभ, भैरव लाल दास, पूनम झा ‘सुधा’, शिव कुमार प्रसाद, कल्पना झा, मुन्नाजी, धनाकर ठाकुर, हितनाथ झा, प्रवीण कुमार झा, कुन्दन कर्ण, जगदानन्द झा ‘मनु’, उज्ज्वल कुमार झा आ मुकेश आनन्द डिजिटल साहित्यिक क्षेत्रक विविध आयाम खोलैत छथि। एहि क्रममे लेखक सभक भिन्न सामाजिक अनुभव, शैली आ ज्ञानानुशासन संग्रहकेँ एकसुर प्रशस्तिपत्र बनबासँ आंशिक रूपेँ रोकैत अछि।

दू बनाम चौदह लेखक अनुपात मात्र आकस्मिक संख्या नहि, अर्थनिर्माणक एकटा सम्पादकीय परिस्थिति अछि। शीर्षक आ प्रस्तावना संयुक्त कृतित्वक दावा करैत अछि, मुदा उपलब्ध विवेचनक प्रमुख भाग गजेन्द्र ठाकुरक संस्था-निर्माण आ बौद्धिक श्रममे केन्द्रित रहैत अछि। प्रीति ठाकुरक रचनात्मक उपलब्धिक चर्चा सीमित आकारमे संकलित अछि। फलतः पाठक संयुक्त योगदानक कल्पना करैत अछि, किन्तु अध्ययनक विस्तार बराबर नहि पबैत अछि। एकरा सम्पादकक मंशाक निश्चयात्मक दोष मानबाक बदला ग्रन्थक संरचनात्मक सीमा कहब बेसी युक्तिसंगत होयत। एहि असन्तुलनकें चिन्हित करनाइ प्रीति ठाकुरक स्वतन्त्र साहित्यिक स्थानकें स्पष्ट करबाक पहिल शर्त थिक।

प्रस्तावनामे सम्पादक पहिने सम्पादित ‘प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili’क संग एहि नव संग्रहक पूरक सम्बन्ध बुझबैत छथि। पहिल संग्रह लोकगीत-आधारित प्रस्तुति राखैत छल, नव संग्रह वैदिक ऋचा द्वारा अपन आन्तरिक खण्डकें जोड़ैत अछि। सम्पादक नूतन लेख आमन्त्रित करबाक, पुरान लेखकक पुनरावृत्तिकें सीमित रखबाक आ मुख्यधारासँ बाहरक रचनाकारकें स्थान देबाक कारण सेहो स्पष्ट करैत छथि। ई सम्पादकीय स्व-विवेचन महत्त्वपूर्ण अछि: पोथी अपन संरचना पर स्वयं टिप्पणी करैत अछि, तँ ओकरा केवल विषय-संग्रह नहि, सम्पादन-सिद्धान्तक प्रस्तुति सेहो मानल जा सकैत अछि।

सेतुषामक अर्थ-संरचना : साम, सेतु आ सार्वजनिक नैतिकता

‘सेतुषाम’ शीर्षकक अर्थ एकटा प्राचीन सामगायनक आधुनिक पुनर्पाठसँ खुलैत अछि। सम्पादक मूल मन्त्र आ सामगायनक बीचक अन्तरक चर्चा करैत क्रोध, लोभ, अश्रद्धा आ असत्यक पारगमनक चारिटा प्रतीकात्मक साधन चिन्हित करैत छथि। हुनक संक्षिप्त व्याख्यामे लिखल अछि—“चारि टा सेतु बनाउ, चारि टा बाधा पार करू।” एहि वाक्यक महत्त्व शब्दार्थक पूर्ण तादात्म्यमे नहि, सांस्कृतिक संकेतक नूतन आलोचनात्मक प्रयोगमे अछि। सामवेदक सेतु एतऽ साहित्यिक नैतिकताक रूपक बनैत अछि: सृजनक

रास्ता केवल व्यक्तिगत प्रतिभासँ नहि, आदान-प्रदान, संयम, विश्वसनीयता आ सहयोगसँ निर्मित होइत अछि।

आगाँ बढ़ि सम्पादक साहित्यिक जीवनमे मंच-माला-माइक, पुरस्कारक मोह, रचनाचौर्य आ दोसर लेखककेँ आगू बढ़बाक मार्ग बन्द करबाक प्रवृत्तिकेँ बाधा मानैत छथि। एहि परिवर्तनमे पौराणिक-धार्मिक संकेत समकालीन संस्थागत आलोचनामे प्रवेश करैत अछि। रूपकक शक्ति एहि बातमे अछि जे ओ पाठककेँ मूल्यांकनक नैतिक शब्दावली दैत अछि; ओकर सीमा एहि बातमे अछि जे नैतिक आदर्शसँ तथ्यगत उपलब्धि स्वतः प्रमाणित नहि होइत। उदाहरणार्थ, पुरस्कारक समालोचना आ साहित्यिक सम्मानक व्यवहार—दूनोंकेँ अलग ऐतिहासिक सामग्रीसँ जाँचबाक आवश्यकता रहैत अछि।

लोक आ वेदक सम्बन्धक विषयमे सम्पादक स्पष्ट रूपेँ ‘लोक-वेद’क क्रम चुनैत छथि। पहिल ग्रन्थक लोकगायन आ दोसरक वैदिक आलोक एके सांस्कृतिक सूत्रक अलग स्वरूप बनैत अछि। तथापि एहि सम्बन्धक इतिहास स्वयं एकरूप नहि: लोकपरम्पराक स्वतन्त्रता, स्त्रीगानक परम्परा, पञ्जीकरणक सामाजिक सत्तासम्बन्ध आ वेदाधारित प्रतिष्ठाक अन्तर देखैत रहब आवश्यक अछि। एहि तनावकेँ अनदेखल करबासँ ‘लोक-वेद’ केवल शोभाक प्रतीक बनि रहि जाएत; प्रश्नक रूपमे पढ़लासँ ई ग्रन्थक समावेशी दावाकेँ कसबाक कसौटी बनैत अछि।

प्रीति ठाकुरक चित्रकथा : बाल-साहित्यक स्वतन्त्र सृजन-क्षेत्र

मुन्नी कामतक लेख ‘बाल मनक सिद्धहस्त लेखिका—श्रीमती प्रीति ठाकुर’ बालसाहित्यकेँ भाषाक भविष्यक नींव मानैत अछि। हुनक विवेचनमे बाल-पाठक लेल सहज कथा, दृश्य आकर्षण आ लोक-सांस्कृतिक परिचयक महत्त्व प्रमुख अछि। ओ ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’, ‘मैथिली चित्रकथा’, ‘मिथिलाक लोकदेवता’ आ ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’क उल्लेख करैत छथि। एहि कृति सभक माध्यमे हास्य-बुद्धिक लोकपात्र, मिथिलाक वीरगाथा, लोकदेवता आ शास्त्रीय कथासम्पदाक बच्चाक

संसारमे पुनः प्रवेश होइत अछि। एहि आधारपर चित्रकथा केवल छोट बच्चाक मनोरञ्जन नहि, भाषा-अर्जन आ सांस्कृतिक स्मृतिक संयुक्त माध्यम थिक।

इरा मल्लिकक ‘मैथिली चित्रकथा मे प्रीति ठाकुरक योगदान’ एहि रूपक चित्रकला-सम्बन्धी अध्ययनकेँ आगू बढ़बैत अछि। हुनकर दृष्टिमे रेखा, रङ्ग, आकृति, परम्परागत कचनी-भरनीक तकनीक आ कथा-वस्तुक समन्वय महत्त्वपूर्ण अछि। साहित्यिक कथा चित्रमे आबिते ओकर अनुक्रम, वातावरण, पात्रक देहभाषा आ पाठकीय अनुमान अलग रूप पबैत अछि। विशेषतः छोट पाठक ओहि दृश्यसँ कथाक सम्बन्ध रचैत अछि जाहि ठाम शब्द-भण्डार एखन विकसित होइत अछि। एकटा सशक्त चित्रकथा शब्दकेँ निरर्थक नहि बनबैत, बल्कि चित्र आ भाषा एक-दोसराक कमी पूरा करैत अछि।

बाल-साहित्यक ऐतिहासिक चर्चा लेल चित्रकथाक प्रारम्भ सम्बन्धी ‘पहिल’क दावाकेँ सावधानीसँ लेब आवश्यक अछि। संकलित लेखकक कथन ऐतिहासिक सूचना दैत अछि, मुदा सम्पूर्ण पुरान पत्र-पत्रिका, विद्यालयी पुस्तक, लोकप्रिय चित्रमाला आ निजी प्रकाशनक तुलनात्मक सूची बिना पूर्वताक निर्णायक स्थापना उचित नहि होयत। अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष ई अछि जे प्रस्तुत ग्रन्थ प्रीति ठाकुरक चित्रकथा-प्रयोगकेँ मैथिलीमे विधागत प्रतिष्ठा देबाक एकटा महत्त्वपूर्ण चरणक रूपमे दर्ज करैत अछि। सम्पादित पुस्तकक एहि मूल्यांकनकेँ स्वयं मूल चित्रकथा सभक कथानक, चित्र-विन्यास आ भाषा-परीक्षणसँ आगू विस्तृत कएल जा सकैत अछि।

बाल-पाठकक सक्रियता : पाठ सँ चित्र धरि

प्रीति ठाकुरक रचनाक सम्बन्धमे मुन्नी कामत जाहि विशेष प्रयोगक चर्चा करैत छथि, ओ अलग ध्यान माँगैत अछि: बच्चा कथाकेँ पहचानय, चित्रक शीर्षक दिअय, संवाद जोड़य आ रङ्ग भरय। एहि विधिमे पाठक कृतिक केवल उपभोक्ता नहि रहैत, सह-रचनाकारक भूमिका पबैत अछि। जखन कथाक रिक्त स्थान बच्चा स्वयं भरैत अछि, तखन कथाबोधक संग निर्णय, दृश्य-कल्पना, भाषा-प्रयोग आ आत्मविश्वासक अभ्यास

सम्भव होइत अछि। ई विशेषता चित्रकथाकें बाल-शिक्षा आ साहित्यिक सृजनक संधिस्थलपर राखैत अछि।

तथापि प्रत्येक बाल-पाठक समान आयु, भाषिक पृष्ठभूमि अथवा दृष्टि-अनुभव नहि रखैत अछि। अतः चित्रकथाक उपादेयता जाँचबाक लेल बाल-वर्गक भिन्नता, चित्रक स्पष्टीकरण, भाषा-सरलता आ बच्चाक वास्तविक प्रतिक्रिया आवश्यक कसौटी होयत। संग्रहमे एहन व्यवस्थित पाठकीय अध्ययन कम भेटैत अछि। कथाक मूल्यांकन प्रायः ‘सुन्दर’, ‘सरल’, ‘सफल’ सन विशेषणपर ठाढ़ अछि। आलोचनाक अगिला डेग प्रत्येक चित्रकथा-संग्रहमे पात्रक स्वतन्त्रता, स्त्री-पात्रक सक्रियता, जातीय प्रतिमान, लोकदेवताक रूपान्तरण आ कथान्तक नैतिक परिणाम जाँचब होयत। एहि आधारपर प्रीति ठाकुरक योगदानक असल साहित्यिक विशिष्टता आरो स्पष्ट होयत।

डिजिटल मैथिली : प्रकाशनसँ आगू भाषा-अवसंरचना

कैलाश कुमार ठाकुर आ विकास वत्सनाभक लेख डिजिटल रूपान्तरणकें मात्र वेबसाइट बनयबाक कथा नहि मानैत अछि। हिनक सभक विवेचनमे आरम्भिक अन्तर्जाल-उपस्थिति, विदेहक नियमित प्रकाशन, पुरान आ नव लेखकक पहुँच, शब्दकोश, बहुलिपिक प्रयोग आ खोजयोग्य साहित्यक सम्भावना एक संग आबैत अछि। एहन अवसंरचनामे सम्पादक केवल रचना स्वीकार करनिहार व्यक्ति नहि रहैत; ओ पाठ्य-सामग्रीक वितरण, अभिलेख-निर्माण आ पाठकीय समुदायकें जोड़निहार मध्यस्थ सेहो बनैत अछि। साहित्यक इतिहासमे छापाखानाक भूमिका पर जेना विचार होइत अछि, डिजिटल समयमे सर्वसुलभ पाठ-भण्डार आ खुला सम्पादकीय प्रक्रिया सेहो विश्लेषणक विषय हेबाक चाही।

‘विदेह’क सन्दर्भमे बहुलिपि प्रकाशनक चर्चा मैथिली पहचानक एक आवश्यक विवाद सोझाँ अनैत अछि: भाषा आ लिपि एके वस्तु नहि थिक। देवनागरीमे पाठक-संख्या बढ़ाओल जा सकैत अछि, तिरहुता आ कैथीक संरक्षण इतिहासक सम्पर्क राखैत अछि, आन लिपिक प्रयोग भाषिक अभिव्यक्तिक दायरा बढ़बैत अछि। मुदा बहुलिपिक

घोषणा आ व्यवहारिक पठनीयता अलग-अलग प्रश्न छथि। सही युनिकोड पाठ, मानकीकृत रूपान्तरण, मुद्रणयोग्यता, खोजबाक क्षमता, दृष्टिबाधित पाठक लेल सुगमता आ दीर्घकालीन संग्रहण—एहि सभक उपयोग-स्तरक साक्ष्यक बिना उपलब्धि सम्पूर्ण ठहराओल नहि जा सकैत अछि।

विकास वत्सनाभक शब्दकोश सम्बन्धी विवेचन एही प्रसंगकें आधार दैत अछि। मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ संगणकीय पारिभाषिक कोश-सृजन डिजिटल भाषाक व्यवहारिक जीवनसँ जुड़ल अछि। शब्द-निर्माण मात्र अनुवादक प्रश्न नहि: वैज्ञानिक विषयक शिक्षण, प्रशासनिक व्यवहार, प्रौद्योगिकी-सम्प्रेषण आ लेखकक आत्मविश्वास एहि पर निर्भर करैत अछि। साहित्येतिहासक आधुनिक पाठमे कोशकार आ भाषा-प्रौद्योगिकी कर्मिकें साहित्यिक परिवेश निर्माणक भागीदारक रूपमे देखल जा सकैत अछि, यद्यपि कोशक भाषावैज्ञानिक शुद्धता अलग परीक्षण माँगैत अछि।

पञ्जी-संरक्षणक द्वन्द्व : दस्तावेज, सामाजिक न्याय आ अधिकार

भैरव लाल दासक ‘मिथिलाक पंजी संरक्षणमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान’ संग्रहक सभसँ ऐतिहासिक आ सामाजिक दृष्टिसँ जटिल लेखमे एक थिक। पञ्जी वंशावली, विवाह-संरचना, कुल-सम्बन्ध आ स्थानीय इतिहासक सामग्री प्रदान करैत अछि; संगहि ओकर परम्परागत व्यवहार जातिगत क्रम-विभाजन आ सामाजिक नियंत्रणसँ सेहो सम्बन्धित रहल अछि। दास एहि दुनू तथ्यकें साथे रखैत छथि। ओ पञ्जी-प्रकाशनक दस्तावेजी महत्त्व देखबैत ऐतिहासिक पञ्जीकार-व्यवस्था, दरभंगा-राजक हस्तक्षेप, विवाहक बदलैत प्रथा आ पोथी सभक भौतिक क्षयक चर्चा करैत छथि। अतः संरक्षणक अर्थ पुरान व्यवस्था कें ज्यों-का-त्यों आदर्श मानब नहि, बल्कि ओकर सामग्रीकें ऐतिहासिक विवेकसँ सुरक्षित करब होयबाक चाही।

एहि सन्दर्भमे ‘जीनोम मैपिंग’क नामसँ प्रकाशित कार्यक चर्चा करैत समय विशेष सावधानी आवश्यक अछि। पञ्जी-सम्बद्ध वंशावलीक संकलन आ जैववैज्ञानिक आनुवंशिक अनुक्रमण एकटा समान विधि नहि थिक। ग्रन्थमे प्रयुक्त नाम कें प्रकाशन-

शीर्षक आ वंशावली-अनुसन्धानक सन्दर्भमे बुझब चाही, न कि जैविक परीक्षणक स्वतः प्रमाण मानि लेब। पञ्जीक सर्वसुलभताक विषयमे सेहो केवल डिजिटल उपलब्धता पर्याप्त नहि: वंशावलीमे जीवित व्यक्तिक सूचना, निजता, गलत वंश-निर्धारणक जोखिम आ जाति-आधारित बहिष्कारक पुनरुत्पादनक प्रश्न सम्मिलित अछि। जनोपयोगी अभिलेखक उद्देश्य तखने पूर्ण होयत जखन पहुँच, सन्दर्भ, संशोधन आ अधिकारक नीति सेहो स्पष्ट हो।

दासक लेखक एक महत्वपूर्ण गुण ई अछि जे ओ एकतरफा उत्सवधर्मितासँ हटि पञ्जी-संरक्षणक आर्थिक आ प्रबन्धकीय संकट सेहो देखबैत छथि। पञ्जीकारक जीविका, स्थानीय ज्ञानक उत्तराधिकार, नष्ट होइत हस्तलिखित सामग्री आ दूर बसल मैथिलक आवश्यकता—एहि सभकेँ एक संग राखि विचार कएल गेल अछि। संग्रहक इतिहास-संवेदी अध्ययनक लेल एहि लेखसँ एकटा पद्धति प्राप्त होइत अछि: इतिहासकेँ जीवित समाजसँ अलग नहि कएल जा सकैत अछि।

जनपक्षधरता : विचारक विविधता आ प्रवेशक लोकतन्त्र

पूनम झा ‘सुधा’क ‘डायभर्सिटी आ विदेह’ विविधताकेँ भाषा, लेखक आ विषय तीनू स्तरपर देखैत अछि। मुन्नाजीक ‘मैथिलीमे गैर सवर्ण लेखक कमी एवं गजेन्द्र ठाकुर’ साहित्यिक प्रवेशक जातिगत असमानताकेँ तीव्र वाणीमे प्रश्नांकित करैत अछि। धनाकर ठाकुरक ‘विदेह पत्रिकाक जनपक्षधरता’ एहि दूनों दृष्टिक बीच तर्कसंगत मध्यस्थता करैत अछि। ओ ‘भाषायी जनपक्षधरता’, ‘लेखकक वर्गक जनपक्षधरता’, ‘विषय एवं विधाक जनपक्षधरता’, ‘पुरस्कारक जनपक्षधरता’ आ ‘विशेषांकक जनपक्षधरता’ रूपेँ पाँचटा कसौटी प्रस्तावित करैत छथि। एहि विभाजनसँ जनपक्षधरता भावनात्मक विशेषण नहि रहि आलोचनाक परीक्षणीय विषय बनि जाइत अछि।

धनाकर ठाकुरक विवेचनक सभसँ महत्वपूर्ण सूक्ष्मता ई थिक जे ओ पहिनेसँ अस्तित्वमे रहल असवर्ण मैथिली रचनाकारक उपस्थिति स्वीकारैत छथि, मुदा हुनका लेल समान स्वीकृतिक साहित्यिक वातावरणक अभावकेँ मुद्दा बनबैत छथि। तें ‘पहिने

कोनो लेखक नहि छल' आ 'पहिने समुचित सम्पादकीय अवसर नहि छल'—दूनू कथन एक नहि छथि। एहि अन्तरकेँ सुरक्षित रखनाइ सामाजिक साहित्येतिहासक आधारभूत आवश्यकता थिक। 'विदेह'क योगदानकेँ एही पारिभाषिक स्पष्टतासँ देखब अधिक प्रमाणिक होयत।

जनपक्षधरता केवल लेखकक जातिगत परिचयसँ नहि मापल जा सकैत अछि। रचनामे श्रम, भूमि, स्त्री-अनुभव, शिक्षा, आर्थिक शोषण, लोकभाषा आ स्थानीय न्यायसँ सम्बन्धित प्रश्न कोना उपस्थित छथि, तकर विश्लेषण सेहो जरूरी अछि। शिव कुमार प्रसाद अपन दीर्घ लेखमे अनेक लेखकक उदाहरण आ कृतिक सन्दर्भ जोडैत छथि। एहि उदाहरण सभसँ संकेत भेटैत अछि जे प्रतिनिधित्वक साहित्यिक मूल्यांकन लेखकक संख्या आ रचनाक आन्तरिक रूप दूनूक संग कएल जाए। एकटा समावेशी पत्रिकाक वास्तविक शक्ति विविध स्वरक सह-अस्तित्व मात्र नहि, हुनका सभकेँ समान आलोचनात्मक कसौटी पर रखबाक साहसमे अछि।

नव लेखक, सम्पादकीय सहयोग आ साहित्यिक पीढ़ी

कल्पना झाक 'विदेह आ नव लेखक' सम्पादनक शिक्षकीय पक्षकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। नव लेखकक भाषा सँवारब, अर्थ स्पष्ट करब, पूर्ववर्ती कृति सभसँ परिचित करायब आ पाठकीय आत्मविश्वास जगायब—ई श्रम प्रसिद्ध रचनाक अन्तिम रूपमे बहुधा अदृश्य रहि जाइत अछि। कल्पना झा एहि अदृश्य श्रमकेँ साहित्यिक उत्तराधिकारक अङ्ग बनबैत छथि। एहि स्थापना मे एकटा महत्त्वपूर्ण अन्तर्ध्वनि अछि: नव लेखक तैयार करब पुरान लेखककेँ हटा देब नहि, बल्कि परम्परा आ प्रयोगक बीच जीवित संवाद रचब थिक।

कुन्दन कर्णक छोट आत्मकथ्य एहि सामान्य तर्ककेँ व्यक्तिगत प्रमाणक रूपमे रोचक बनबैत अछि। सोशल मीडियापर रचना, मुन्नाजीक सम्पर्क आ पत्रिकासँ परिचयक अनुभवक माध्यमे ओ नव लेखकक यात्रा बुझबैत छथि। एकर महत्त्व मात्र श्रद्धापरक उल्लेखमे नहि, रचनाकार बनबाक सामाजिक प्रक्रियाक झलकमे अछि। परन्तु एक

व्यक्तिक अनुभवसँ सभ लेखकक अनुभवक निष्कर्ष निकालब उचित नहि। अधिक समग्र अध्ययन लेल प्रारम्भिक प्रकाशन, सम्पादकीय संवाद, संशोधित रचना आ पश्चातवर्ती पुस्तकक सामग्री एकत्रित करबाक आवश्यकता अछि।

एहि विषयक ऐतिहासिक तुलना करैत समय आधुनिक मैथिलीमे सम्पादकीय पत्र-पत्रिका, गामक गोष्ठी, विद्यालयी पत्रक आ साहित्यिक सभा सभक परम्परा ओझरायल रूपमे सोझाँ अबैत अछि। ‘विदेह’ एहि परम्परासँ सर्वथा असम्बद्ध नव सृष्टि नहि, बल्कि ओकर डिजिटल विस्तार आ नव सामाजिक संरचना थिक। भिन्नता वितरणक गति, स्थायी अभिगम, प्रवासी पाठकक पहुँच आ भूगोल-पार संवादमे अछि। निरन्तरताक संग भिन्नताकें देखब इतिहासलेखनकें अधिक सक्षम बनबैत अछि।

आलोचनाशास्त्र : पक्षधरता आ पाठक निकटता

हितनाथ झाक ‘गजेन्द्र ठाकुर आ मैथिली समीक्षाशास्त्र’ लेखकक बौद्धिक श्रमक स्वरूप चिन्हित करैत अछि। ओ बीहनि कथा, लघुकथा, गजल, हाइकू, छन्द, शब्द-प्रयोग आ गद्य-पद्यक समीक्षा सम्बन्धी विचारक परिचय दैत छथि। एहि लेखमे दोसर कृतिक उद्धरणक माध्यमे आलोचनक एकटा महत्त्वपूर्ण सूत्र प्रस्तुत अछि—“लेखकक आइडियोलॉजी पानिमे नून सन हेबाक चाही, पानिमे तेल सन नहि।” हितनाथ झा द्वारा उद्धृत एहि कथनक आशय ई अछि जे विचारधारा कृतिक अर्थमे घुलल रहय, ओकर स्वायत्त संवेदना पर बाहरी आवरण बनि नहि चढ़ि जाय।

तथापि ‘विचारधारा’ आ ‘निरपेक्षता’कें सरल विरोधी जोड़ी नहि मानल जा सकैत अछि। प्रत्येक समीक्षा कोनो-ने-कोनो प्रश्न, रुचि, मूल्य अथवा सामाजिक अनुभवसँ आरम्भ होइत अछि। युक्तिपूर्ण आलोचना ओहि आधारकें पारदर्शी बनबैत अछि, आ अपन निर्णयकें भाषा, बिम्ब, संरचना, कथानक, पात्र, छन्द अथवा साक्ष्यसँ प्रमाणित करैत अछि। हितनाथ झाक विवेचन मैथिलीमे विधा-विशिष्ट समीक्षात्मक उपकरणक आवश्यकता पर प्रकाश दैत अछि, मुदा एहि उपकरण सभक व्यवहारिक सफलता जाँचबाक लेल स्वतन्त्र पाठ-समीक्षा आवश्यक अछि।

एहि बिन्दुपर पुस्तकक रूपक आ आलोचनाक पद्धतिक बीच रोचक सम्बन्ध स्थापित होइत अछि। समावेशी सम्पादकक कर्तव्य सभ विचारक लेख छापब थिक; समीक्षकक कर्तव्य सभ विचारकें एक समान मान्य कहि देब नहि, बल्कि प्रमाणक आधार पर निर्णय देब थिक। ‘सेतुषाम’क योगदान एही जटिल सह-अस्तित्वमे अछि—विविध लेखकीय दृष्टिकें एकत्र करब आ ओकर अन्तर्निहित अन्तरकें पाठक पर छोड़ब।

इतिहास, शब्दकोश आ बहुभाषिक आधुनिकता

प्रवीण कुमार झाक जीवन-कृतित्वपरक लेख आ उज्ज्वल कुमार झाक नवजागरण सम्बन्धी विवेचनमे गजेन्द्र ठाकुर लेखक, सम्पादक, इतिहासकार, शब्दकोशकार आ लिपि-अन्वेषक रूपमे उपस्थित छथि। एहि बहुक्षेत्रीय काजक एकटा समान लक्ष्य देखाइत अछि—पुरान ज्ञानक कड़ी टूटय नहि, आ नव साधनक कारण भाषाक भविष्य संकुचित नहि हुअय। पाण्डुलिपिक संरक्षण, शब्दकोश-निर्माण, अनुवाद आ डिजिटल प्रकाशन अलग-अलग श्रम छथि; तें सभकें एकटा नायकताक सामान्य प्रशंसामे विलीन करनाइ उचित नहि। प्रत्येक क्षेत्रक अपन तकनीकी प्रमाण, त्रुटि-संशोधनक विधि आ पाठकीय उपयोगिता अछि।

विदेहक शोध-सूचीमे उपलब्ध ‘मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास’, ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ आ ‘मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान’ सन अध्ययन एहि बहुविध परियोजनाक पाठ-परम्परागत विस्तार देखबैत अछि। एहि कृति सभक शीर्षक संकेत दैत अछि जे साहित्यकें केवल प्रतिष्ठित विधा अथवा एक मानक भाषारूपमे सीमित करबाक आग्रहसँ विमुख भऽ वैकल्पिक पाठक वर्गक संग विचार कएल जा रहल अछि। मुदा शीर्षक अथवा शोध-सूचीमे उपस्थिति रचनाक आलोचनात्मक गुणवत्ता स्वयं सिद्ध नहि करैत; एहि सम्बद्ध कृति सभक स्वतन्त्र मूल्यांकन अलग शोधक विषय थिक।

बहुभाषिक आधुनिकताक प्रसंगमे नेपाल आ भारतक मैथिली अनुभवक अन्तर सेहो स्मरणीय अछि। कैलाश कुमार ठाकुरक लेखमे नेपालीय मैथिली प्रयोग, शिक्षा आ

राज्यभाषिक दबावक अनुभव प्रखर रूपमे आबैत अछि। सम्पादकीय टिप्पणी एहि भाषायी भिन्नताकेँ पाठकक लेल व्याख्यायित करैत अछि। एकर महत्त्व ई थिक जे मानकता आ शुद्धता एकरूपता नहि बनि जाय; समकालीन मैथिली साहित्यक इतिहासमे सीमा-पार लेखकक वास्तविक शब्दावली आ सामाजिक स्थितिकेँ अपन स्थान भेटबाक चाही।

मंचक अनुपस्थिति : साहित्यिक सार्वजनिकताक वैकल्पिक अर्थ

मुकेश आनन्दक ‘मिथिला-मैथिलीक मंच सँ गजेन्द्र ठाकुरक अनुपस्थिति : कारण एवं प्रभाव’ ग्रन्थक अन्तिम मुख्य लेख थिक। एकर स्वर अन्य अनेक प्रशंसात्मक लेखसँ फराक अछि। लेखक साहित्यिक आयोजन, परिचयक राजनीति, सम्मानक आकांक्षा, गुट-सम्बन्ध आ पाठकीय विवेकक अभावपर असहज प्रश्न करैत छथि। हुनका अनुसार स्थायी रचनात्मक श्रम आ सार्वजनिक मंचपर नियमित उपस्थिति एकहि वस्तु नहि। एहि प्रसंगमे ‘अनुपस्थिति’ नकारात्मक रिक्तता नहि, साहित्यिक कार्यक स्वतन्त्र अवकाशक संकेत बनैत अछि।

मुदा मंचसँ दूरीकेँ स्वयं नैतिक श्रेष्ठताक एकमात्र प्रमाण मानब सम्भव नहि। साहित्यिक सभा प्रत्यक्ष वाचन, सामूहिक शिक्षण आ वाद-विवादक अवसर सेहो देइत अछि; डिजिटल मंच ओहि सभक विकल्पक संग पूरक सेहो भऽ सकैत अछि। मूल प्रश्न एहि बातक अछि जे मंचक निर्णय, अवसर-वितरण आ आलोचना कतेक पारदर्शी अछि। जे आलोचना परम्परागत संस्थापर लागू होइत अछि, से वैकल्पिक संस्थापर सेहो लागू हेबाक चाही। एहि समरूप कसौटीसँ पुस्तकक वैचारिक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

प्रशंसाक भाषा आ प्रमाणक गाम्भीर्य

जगदानन्द झा ‘मनु’, कुन्दन कर्ण आ उज्ज्वल कुमार झाक लेखमे असाधारण परिश्रम, अप्रतिम सेवा आ युग-निर्माणक अनेक उपमा भेटैत अछि। एहि उपमा सभक अपन सामाजिक प्रयोजन अछि—उपेक्षित श्रमकेँ दृश्य बनायब आ पाठकमे सम्मानक भावना उत्पन्न करब। किन्तु शोधपरक निर्णयक लेल ‘अद्वितीय’, ‘प्रथम’, ‘अनुपम’, ‘युगपुरुष’

सन पद पर्याप्त नहि। निर्णायक दावाक संग कृति-सूची, प्रकाशन-विवरण, पूर्ववर्ती कृतिक तुलना, तिथि-साक्ष्य आ प्रत्यक्ष पाठगत उदाहरण अनिवार्य छथि। ग्रन्थ एहि सबकेँ सर्वत्र समान कठोरतासँ प्रस्तुत नहि करैत अछि।

प्रशंसाक अधिकता स्वयं एकटा साहित्यिक लक्षण थिक। जखन संस्थागत मान्यताक अभावक अनुभूति होइत अछि, तखन समर्थक आलोचना प्रतिमान गढ़बाक भाषा ग्रहण करैत अछि। एकरे कारण रचनाक अन्तर्विरोध, रूपगत कमीक चर्चा अथवा विचारक सीमाक परीक्षण पाछू पड़ि सकैत अछि। ‘सेतुषाम’मे एहि प्रवृत्तिक संग धनी प्रश्नसूचक लेख सभ सेहो उपस्थित अछि। संग्रहक श्रेष्ठ उपयोग ओहि क्षण सम्भव अछि जखन पाठक प्रशंसा आ प्रश्न, दूनूकेँ एक-दोसरक संशोधनक रूपमे पढ़ैत छथि।

पृथक पाठविश्लेषण : चारिटा आलोचनात्मक केन्द्र

सम्पादकीय प्रस्तावनाक निकट पाठमे पहिल केन्द्र ‘सेतु’ थिक। एकर मूल अर्थ अलग वस्तुकेँ जोड़ब, बाधा पार करब आ यात्रा सम्भव बनायब अछि। प्रस्तावनासँ अध्याय-विन्यास धरि ई बिम्ब धार्मिक संकेतसँ सामाजिक क्रियामे रूपान्तरित होइत अछि। साहित्यिक संस्थाक तुलना नदीक किनारसँ करब सहज अछि, मुदा ई बिम्ब तखन कारगर बनैत अछि जखन ओ प्रश्न करय—कोन किनार जोडल गेल, कोन लोक एखनो पार नहि भऽ सकल, आ कोन सामाजिक शर्तक कारण पारगमन कठिन अछि। एहि रूपमे शीर्षक स्वयं आलोचनात्मक प्रश्नक स्रोत बनैत अछि।

दोसरा केन्द्रमे प्रीति ठाकुरक चित्रकथाक पाठ-प्रकृति अछि। एतऽ कथा शब्दमे मात्र नहि, दृश्यक्रममे प्रकट होइत अछि। गोनू झाक चातुर्यक कथा चित्रक माध्यमे नेनाक लग अबैत काल मात्र हास्य नहि रचैत; ओ लोकज्ञानक दृश्य प्रतिमा सेहो तैयार करैत अछि। ‘पुरुष परीक्षा’क कथाक रचनात्मक पुनर्प्रस्तुति एक विशिष्ट परिवर्तन करैत अछि—विद्वत् परम्पराक सामग्रीक बालपाठमे रूपान्तरण। मुदा एहन रूपान्तरणक अन्तर्गत मूल कथाक हिंसा, जाति, स्त्री-पात्र, शिक्षा अथवा नीति सम्बन्धी अनुद्घाटित मान्यता सभक

पुनर्पाठ जरूरी अछि। मूल बालपोथीक स्वतन्त्र अनुशीलन बिना एतऽ कथ्यक संकेत मात्र स्थापित होइत अछि, अन्तिम निर्णय नहि।

तेसरा केन्द्रमे भैरव लाल दासक लेख अछि। एकर विशिष्टता सूचनात्मक विषयकें सामाजिक प्रक्रियासँ जोड़ब थिक। वंशावलीक महत्त्वक संग ओकर जातिगत सीमा, पञ्जीकारक जीविका आ विवाह-प्रथाक बदलैत रूपक चर्चा एतऽ इतिहासकें विरोधाभास-सहित उपस्थित करैत अछि। चौथा केन्द्रमे धनाकर ठाकुरक लेख अछि, जाहिमे जनपक्षधरताकें पाँच भिन्न कसौटीमे विभाजित कऽ सम्पादकीय यशगानकें विवेचनात्मक रूप देल गेल अछि। ई दूनू लेख संग्रहमे आलोचनात्मक सम्भावनाक विशेष प्रखर उदाहरण छथि।

एहि चारू केन्द्रकें मिलायबासँ संकलनक कथ्यक एकटा आकृति बनैत अछि—रूपक, दृश्य-कथा, दस्तावेज आ संस्थागत नैतिकता। ई चारू साहित्यक परम्परागत ‘लेखक-रचना’ सम्बन्धसँ आगू जा कऽ ‘लेखक-माध्यम-समाज-पाठक’क बहुपक्षीय सम्बन्ध निर्मित करैत छथि। एहि स्तरपर ‘सेतुषाम’ एकटा व्यक्ति-केन्द्रित सम्मानग्रन्थसँ आगू बढ़बाक सम्भावना राखैत अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे तुलनात्मक स्थान

ज्योतिरीश्वरक गद्य-साहित्य, विद्यापतिक काव्य-संसार आ लोकगाथाक दीर्घ परम्परा मैथिलीक अभिव्यक्तिक भिन्न आधार प्रस्तुत करैत अछि। ओहि समय साहित्यक पाठ-प्रसार पाण्डुलिपि, गायन, पाठक-समुदाय, दरबारी तथा स्थानीय आश्रयक जटिल सम्बन्धपर निर्भर छल। आधुनिक मुद्रण-परम्परा आ पत्रिकाक विकास साहित्यक संग पाठकक नूतन सम्बन्ध जोड़लक। डिजिटल प्रकाशन एहि क्रममे तेसर सामाजिक चरणक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि—जाहि ठाम लेखनक प्रसार अत्यल्प समयमे दूर-दूर धरि सम्भव होइत अछि आ पुरान सामग्रीक पुनर्प्राप्ति सहज भऽ सकैत अछि। ई क्रम सरल ‘उन्नति’क रेखा नहि, अलग-अलग माध्यमक लाभ आ क्षतिक इतिहास थिक।

‘सेतुषाम’क अधिकांश लेख लेखक-कृतित्वक संग साहित्यिक प्रसारक इतिहास जोड़ैत छथि। एहि कारण ग्रन्थ केँ आधुनिक मैथिली साहित्यक संस्थागत इतिहासक स्रोत मानल जा सकैत अछि। काव्य वा कथा-कृतिसँ तुलना कएल जाए तऽ एहि ग्रन्थमे साहित्यिक मूल्य रचनाक भाषिक सौन्दर्य मात्र नहि, बल्कि सम्पादन, सङ्ग्रहण, मानकीकरण, प्रशिक्षण आ भाषा-नीतिक श्रमसँ सेहो उत्पन्न होइत अछि। तथापि ऐतिहासिक समता बनौने रखबाक लेल पुरान पत्रिका, मुद्रित संग्रह, नेपालक मैथिली सम्पादन, महिला लेखन आ अनौपचारिक लोकमंचक योगदानकेँ तुलनाक बाहर नहि राखल जा सकैत अछि।

धनाकर ठाकुर द्वारा मैथिली पत्रिकाक विकास-स्मृतिमे ‘मिथिला मिहिर’क उल्लेख विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि। एकरा पढ़ैत स्पष्ट होइत अछि जे लेखक स्वयं एकटा पुरान सम्पादकीय परम्परासँ तुलना करैत छथि। फलतः आधुनिकता केँ ‘पहिनुक सभटा शून्य, आब सभटा नव’ सन दावेमें बदलि देब इतिहासबोधक विरुद्ध होयत। नव योगदानक वास्तविक महत्त्व ओकर पूर्ववर्ती परम्परासँ सम्बन्ध आ ओकर परिवर्तन-क्षमताक उचित विश्लेषणसँ सिद्ध होइत अछि।

समानान्तर साहित्येतिहास : उपलब्धि आ सावधानी

समानान्तर इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रयोजन थिक ओहि स्रोतक खोज जे प्रतिष्ठित ग्रन्थसूची आ अकादमिक मानचित्रसँ छुटि गेल। ग्रामीण लेखक, असवर्ण साहित्यकार, प्रवासी पाठक, तिरहुता-कैथीक परम्परा, स्त्रीक बाल-रचना, स्थानीय गाथा आ बहुभाषिक सीमा-समाज—एहि सभकेँ एकत्रित कएलासँ साहित्यिक इतिहासक विस्तार होइत अछि। ‘सेतुषाम’ एहन प्रयासक सामाजिक दस्तावेज थिक। संकलनमे संस्थाक दरवज्जा खोलबाक कथा बारम्बार उठैत अछि; ई आवृत्ति स्वयं अध्ययनक विषय अछि।

मुदा समानान्तर इतिहास लिखिते वैकल्पिक सत्ता-केन्द्र गढ़बाक जोखिम सेहो रहैत अछि। पुरान मानदण्डक विरोध मात्र पर्याप्त नहि; नूतन मानदण्ड स्वयं कतेक खुला,

आत्मसमीक्षात्मक आ प्रमाणनिष्ठ अछि, ई देखबाक होयत। उदाहरण लेल जाति-आधारित बहिष्कारक प्रतिरोध कएल जाए तखन स्त्री-सृजनक उपेक्षा, कमजोर प्रमाण, सम्पादकीय पक्षपात अथवा प्रतिद्वन्द्वी संस्थाक एकतरफा चित्रण पर सेहो प्रश्न उठबाक चाही। एहन आत्मालोचनक माध्यमे समानान्तर साहित्येतिहास प्रतिरोधक घोषणासँ आगू बढ़ि ज्ञानक विश्वसनीय साधन बनैत अछि।

ग्रन्थक समीक्षात्मक सीमा आ भविष्यक अनुसंधान

सम्पूर्ण संग्रह पढ़ला पर किछु व्यवस्थित सीमा सोझाँ अबैत अछि। प्रीति ठाकुरक प्रत्यक्ष बालकथाक विस्तृत रूपात्मक पाठ कम अछि। गजेन्द्र ठाकुरक विशाल रचनाकर्मक प्रसंगमे सेहो सम्पादन आ सेवा सम्बन्धी चर्चा अधिक, कविता-कथा-नाटकक निकट पाठ अपेक्षाकृत कम अछि। संस्थागत उपलब्धिक ‘पहिल’ अथवा ‘एकमात्र’क अनेक दावा सर्वेक्षणमूलक प्रमाण माँगैत अछि। किछु लेखक स्वतंत्र साक्ष्य प्रस्तुत करैत छथि, किछु अपन अनुभवरूपी स्मृतिपर निर्भर छथि; एहि भेदकें ग्रन्थ प्रायः एकरूप पाठक-विन्यासमे रखैत अछि। एतऽ अधिक स्पष्ट स्रोत-वर्गीकरण आ परस्पर विरोधी साक्ष्यक परीक्षण उपयोगी होइत।

दोसर सीमा आलोचनक भाषामे अछि। उदात्त प्रशंसा आ भावनात्मक उपमा समाजक कृतज्ञताकें अभिव्यक्त करैत अछि, मुदा एकर अति कृति-समीक्षाकें दुरुह बना सकैत अछि। तेसर सीमा संस्थाक आत्मवर्णनसँ जुड़ल अछि: लेखक, सम्पादक आ प्रशंसित कर्मी सभक पारस्परिक सहयोग एकटा मूल्यवान तथ्य थिक, किन्तु स्वतंत्र बाह्य परीक्षणक विकल्प नहि। चौथी सीमा इतिहासक पद्धतिमे अछि: पुरान स्त्री-साहित्य, पुस्तक-संस्कृति, जाति-वर्गक विविधता, नेपाल-भारतक संयुक्त साहित्यिक परिसंचरण आ बालसाहित्यक आरम्भिक प्रयास पर तुलनात्मक शोधक पर्याप्त अवसर एखनहु शेष अछि।

आगाँक अनुसंधान लेल ‘सेतुषाम’क लेखक-निबन्ध सभकें केन्द्र मानि अलग-अलग मूल कृतिक पाठसमीक्षा, सम्पादकीय दस्तावेजक इतिहास, चित्रकथा-विज्ञान, पञ्जी-

सामाजिकता आ डिजिटल पत्रिकाक लेखकीय नेटवर्कक अध्ययन तैयार कएल जा सकैत अछि। एहि काजमे मात्र प्रशंसक वा विरोधी पाठ नहि, बहुविध साक्ष्यक तुलनात्मक परीक्षण अपेक्षित अछि। पुस्तकक दीर्घकालीन उपादेयता एतहिसँ उत्पन्न होयत जे ई भावी आलोचककें प्रश्नक सूची, रचनाकारक नाम आ स्रोतक प्रवेशद्वार उपलब्ध करबैत अछि।

निष्कर्ष : सेतु बनब, सेतु जाँचब

‘सेतुषाम: Vibrant Maithili’क समेकित मूल्यांकनमे दूटा कथन एक संग सत्य ठहरैत अछि। एक दिस ग्रन्थ आधुनिक मैथिली सार्वजनिकताक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि: ई चित्रकथाक स्त्री-सृजन, नव लेखकक उभार, डिजिटल पुस्तकालय, भाषा-प्रौद्योगिकी, पञ्जी-अभिलेख, बहुलिपि प्रयोग, जनपक्षधरता आ आलोचनक नूतन उपकरणक विविध प्रसंगकें एक ठाम अनैत अछि। दोसर दिस एकर कएक लेख उपलब्धिक परिभाषा आ प्रमाणक अनुशासनमे समान रूपें कठोर नहि छथि। एही कारण पुस्तककें आलोचनाविहीन विजयकथा मानब ओकर वास्तविक शोध-मूल्यकें घटायब होयत।

एहि ग्रन्थक सर्वाधिक सार्थक उपहार ‘सेतु’क प्रश्न थिक। सेतु ककरा जोड़ैत अछि? ककर पहुँच एखनो बाँकी अछि? जे ज्ञान सार्वजनिक भेल, ओ कतेक विश्वसनीय आ सर्वोपयोगी अछि? लेखकक योगदानक स्मृति साहित्यिक आत्मालोचना सहि सकैत अछि कि नहि? एहि प्रश्नसभक उत्तर खोजैत साहित्येतिहास व्यक्ति-पूजा अथवा संस्था-विरोधक सीमासँ बाहर अबैत अछि। ‘सेतुषाम’क महत्त्व एहि कारण स्थायी भऽ सकैत अछि जे ई मैथिलीक नव साहित्यिक संरचना देखय लेल सामग्री दैत अछि—आ एकर आलोचनात्मक पाठ ओहि संरचनाकें न्यायपूर्ण, प्रमाणसम्पन्न आ अधिक समावेशी बनेबाक आग्रह करैत अछि।

सन्दर्भ-सूची

मूल संग्रह, ओहिमे संकलित स्वतन्त्र आलेख, सन्दर्भित पोथी आ विदेहमे उपलब्ध शोध-सूचीक आधारपर। जाहि कृतिक स्वतन्त्र मूल पाठ एहि अध्ययनमे उपयोग नहि भेल अछि, ओकर उल्लेख सन्दर्भगत सम्बन्धक रूपमे कएल गेल अछि।

अनचिन्हार, आशीष (सम्पा.). सेतुषाम: Vibrant Maithili. गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुरक कृतित्वपर आलोचनात्मक आलेख-संग्रह, २०२६। ISBN 978-93-5717-358-2।

अनचिन्हार, आशीष (सम्पा.). प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili. मैथिली कृतित्व-अध्ययनक पूर्ववर्ती सम्पादित संग्रह; विदेह पोथी-सूचीमे उपलब्ध।

अनचिन्हार, आशीष. “गणानां त्वा गणपतिं हवामहे...”. सेतुषाम: Vibrant Maithili मे सम्पादकीय प्रस्तावना।

कामत, मुन्नी. “बाल मनक सिद्धहस्त लेखिका—श्रीमती प्रीति ठाकुर”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

मल्लिक, इरा. “मैथिली चित्रकथा मे प्रीति ठाकुरक योगदान”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

ठाकुर, कैलाश कुमार. “मैथिलीक डिजिटल युगक निर्माता: गजेन्द्र ठाकुर”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

वत्सनाभ, विकास. “डिजिटल युगमे मैथिली: विदेह आ गजेन्द्र ठाकुर”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

दास, भैरव लाल. “मिथिलाक पंजी संरक्षणमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

झा, पूनम ‘सुधा’. “डायभर्सिटी आ विदेह: आधुनिक मैथिली साहित्यक चेतनामूलक पुनर्जागरण”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

प्रसाद, शिव कुमार. “डायवर्सिटी आ विदेह”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

झा, कल्पना. “विदेह आ नव लेखक”. सेतुषाम: Vibrant Maithili।

मुन्नाजी. “मैथिलीमे गैर सवर्ण लेखक कमी एवं श्री गजेन्द्र ठाकुर”. सेतुषाम: Vibrant Maithili |

ठाकुर, धनाकर. “विदेह पत्रिकाक जनपक्षधरता”. सेतुषाम: Vibrant Maithili |

झा, हितनाथ. “गजेन्द्र ठाकुर आ मैथिली समीक्षाशास्त्र”. सेतुषाम: Vibrant Maithili |

झा, प्रवीण कुमार. “गजेन्द्र ठाकुर: लेखक, इतिहासकार आ आधुनिक मैथिली अध्ययनक शिल्पकार”. सेतुषाम: Vibrant Maithili |

कर्ण, कुन्दन. “अनुपम अतुल्य योगदान”. सेतुषाम: Vibrant Maithili |

झा, जगदानन्द ‘मनु’. “मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुर जीक योगदान”. सेतुषाम: Vibrant Maithili |

झा, उज्ज्वल कुमार. “गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली भाषा-साहित्यक नवजागरणक सेतु-पुरुष”. सेतुषाम: Vibrant Maithili |

आनन्द, मुकेश. “मिथिला-मैथिलीक मंच सँ गजेन्द्र ठाकुरक अनुपस्थिति: कारण एवं प्रभाव”. सेतुषाम: Vibrant Maithili |

ठाकुर, प्रीति. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा. श्रुति प्रकाशन, २००८; कृतिक सूचना मुन्नी कामत आ इरा मल्लिकक आलेखमे वर्णित।

ठाकुर, प्रीति. मैथिली चित्रकथा. श्रुति प्रकाशन, २००९; कृतिक सूचना मुन्नी कामतक आलेखमे वर्णित।

ठाकुर, प्रीति. मिथिलाक लोकदेवता. श्रुति प्रकाशन, २०१०; कृतिक सूचना मुन्नी कामतक आलेखमे वर्णित।

ठाकुर, प्रीति. विद्यापतिक पुरुष परीक्षा. बालपाठक लेल रूपान्तरित चित्रकथात्मक कृति; कृतिक सूचना संग्रहित आलोचनामे वर्णित।

अनचिन्हार, आशीष. मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास. विदेहक पोथी-सूची आ शोध-सूचीमे दर्ज।

ठाकुर, गजेन्द्र. मैथिली समीक्षाशास्त्र. हितनाथ झाक आलेखमे उद्धृत आलोचना-ग्रन्थ।

ठाकुर, गजेन्द्र. “मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र”. विदेह, अङ्क ४४७, अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र. “मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास”. विदेह, अङ्क ४५०, सितम्बर २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र. “मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र”. विदेह, अङ्क ४४०, अप्रैल २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र. “मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)”. विदेह, अङ्क ४४७, अगस्त २०२६।

विदेह. पोथी-सूची, गद्य-सूची आ शोध-सूची. मैथिली साहित्य आ अनुसन्धानक अनुक्रमित

संग्रह। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm> ; <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm> ;

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html> ।

खण्ड २

गजल-सृजन : शिल्प, समाज आ काव्यभाषा

मैथिली साहित्यक पुनर्पाठ

१.१४. नित नवल आशीष अनचिन्हार — अनचिन्हार आखर

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

अनुशासित गजल-शिल्प आ जनपक्षीय चेतना

सारांश

आशीष अनचिन्हारक “अनचिन्हार आखर” (२०११) मैथिली गजलक आधुनिक विकासमे एहन कृति अछि जतए रचनात्मक प्रयोग आ विधागत आत्मपरीक्षण एक-दोसराक पूरक बनि उपस्थित होइत अछि। संग्रहमे ७८ गजल, ३२ रुबाइ आ २ कता अछि। एहि रचनासभक पहिने लेखक गजलक इतिहास, मतला, मकता, काफिया, रदीफ, बहर, उच्चारण आ मैथिली ध्वनिव्यवस्थाक पारस्परिक सम्बन्धपर विचार करैत छथि। प्रस्तुत अध्ययन संग्रहक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रेमपरक आ आत्मसन्दर्भी आयामक पृथक पाठविश्लेषण करैत अछि। किसानक भूमि, महंगाई, भुखमरी, संसदीय निष्प्रभाविता, राजनीतिक अवसरवाद, प्रेमक अनुरोध आ गजलक आत्मचेतनाक विभिन्न रूप एकटा साझा काव्यभूमि निर्मित करैत अछि। लेखमे ऐतिहासिक तुलनासँ ई प्रतिपादित कएल गेल अछि जे मैथिली गजलक विकासक प्रश्न केवल बाह्य अरबी-फारसी-उर्दू शिल्प ग्रहण करबाक प्रश्न नहि, वरन् मैथिली उच्चारण, शब्दसंसार आ सामाजिक अनुभवकें ओहि शिल्पमे स्वाभाविक बनएबाक सेहो अछि। संगहि पुनरावृत्ति, रूढ़ बिम्ब, प्रत्यक्ष वक्तव्य आ शिल्पगत आग्रहक सीमासभक आलोचनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि।

बीजशब्द : मैथिली गजल; आशीष अनचिन्हार; काफिया; रदीफ; बहर; रुबाइ; कता; सामाजिक व्यंग्य; जनपक्षीय कविता; मैथिली साहित्येतिहास।

१. प्रस्तावना : अपन भाषा आ अनुशासनक बीच रचनात्मक संवाद

मैथिली कविता-परम्परामे गीत, पद, लोकधुन आ छन्दक दीर्घ इतिहास रहल अछि। एहिमे गजलक प्रवेश आ ओकर स्वतंत्र पहचान एकटा अतिरिक्त प्रश्न उत्पन्न करैत अछि : कोनो बाह्य साहित्यिक विधा स्थानीय भाषामे आबि केवल अपन तकनीकी ढाँचा

सुरक्षित रखत, अथवा नव भाषाक उच्चारण, सांस्कृतिक स्मृति आ अनुभवक दबाबमे नव रूप धारण करत? “अनचिन्हार आखर” एहि प्रश्नक एकटा ठोस रचनात्मक उत्तर प्रस्तुत करैत अछि। एक दिस कवि गजलक व्याकरणकें गंभीरतासँ ग्रहण करैत छथि, दोसर दिस गजलमे माटि, खेत, जनताक भूख, राज-काज, अन्हार, मोन, नोर आ प्रेमक स्थानीय संसार कें प्रतिष्ठा दैत छथि।

कृतिक नाम सेहो सांकेतिक अछि। “अनचिन्हार” ओहि अप्रतिष्ठित वा अनपहिचान आवाजक परिचायक मानल जा सकैत अछि जे स्थापित साहित्यिक अभिरुचि आ अभिजन-केन्द्रित विमर्शक बाहरसँ बजैत अछि। “आखर” भाषा मात्र नहि, रचना, प्रतिरोध, स्मृति आ पहिचानक आधार अछि। शीर्षकक एहि सम्भावित अर्थ-क्षेत्रकें प्रत्यक्ष लेखक-घोषणा नहि, पाठक-केन्द्रित आलोचनात्मक व्याख्याक रूपमे देखबाक चाही।

संग्रहक प्रकाशन-विवरणमे लेखक आशीष अनचिन्हार, प्रकाशक श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण २०११ आ ISBN 978-93-80538-48-8 निर्दिष्ट अछि। शीर्षकक अंग्रेजी परिचयमे सेहो एकरा मैथिली गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह कहल गेल अछि। संग्रह स्वयं बतबैत अछि जे ई केवल कविताक पोथी नहि, विधागत बहसक आरम्भिक दस्तावेज सेहो अछि।

एहि विवेचनाक मुख्य आधार संग्रहक रचना आ लेखकक आरम्भिक विवेचन अछि; साहित्यिक इतिहासक पार्श्वभूमि, पुस्तक-सूची आ पछातिक गजलविमर्श लेल विदेह पोथी-संग्रह, विदेह शोध-सूची आ विदेहमे प्रकाशित उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्रीक सहारा लेल गेल अछि। अन्य वेबसाइट वा असम्बद्ध अनुमानकें प्रमाणक स्थान नहि देल गेल अछि।

२. कृतिक संगठन आ काव्यात्मक अभिप्राय

पोथीक क्रमविन्यास ध्यान देबाक योग्य अछि। पहिने गजलक इतिहास आ व्याकरणपर लेखकक दीर्घ विवेचन, तकर बाद समर्पण, रचनानुक्रम, गजल, रुबाइ आ कता—ई क्रम

पाठकके रचनाक आस्वादनसँ पहिने विधाक व्याकरणिक संसारमे प्रवेश करबैत अछि। शिल्पक शिक्षा आ काव्यानुभूति एतए दू पृथक विभाग नहि, एकहि साहित्यिक परियोजनाक दू आधार बनैत अछि।

गजलक अठहत्तर रचनामे मनोदशा आ कथ्यक विस्तृत फैलाव अछि। आरम्भक कतेको गजलमे सत्ता, शोषण आ विषमता पर प्रहार अछि; मध्यक रचनामे प्रेम, विरह, सम्बन्ध, प्रकृति आ रचनात्मक आत्मचेतना व्यापक रूपेँ अबैत अछि; अन्तिम समूहमे सामाजिक आलोचना पुनः तीक्ष्ण रूप ग्रहण करैत अछि। काव्यक्रम पूर्णतः एकरेखीय नहि अछि, आ एहि अस्थिर आवागमनसँ गजलक स्वतन्त्र शेर-धर्मिता स्फुट होइत अछि।

बत्तीस रुबाइ संग्रहक भाव-विस्तारकेँ संक्षिप्त चारि पाँतिक संरचनामे लै जाइत अछि। कताक दू रचना प्रेमक वर्णन, सौन्दर्य आ मिथकीय साम्यक रूपमे उपस्थित अछि। तात्पर्य ई जे पुस्तक मूलतः गजल-केन्द्रित होइतहुँ अन्य लघु काव्यरूपक स्वतंत्र सम्भावना केँ सेहो स्थान दैत अछि।

३. आरम्भिक विधा-विवेचन : इतिहास, व्याकरण आ उच्चारण

लेखकक “गजलक संक्षिप्त परिचय” भाग अरबी कसीदा, फारसी गजल, उर्दू काव्य-परम्परा आ मैथिलीमे गजलक आगमनक एकटा अनुक्रम रखैत अछि। इमरउल कैस, रूदकी, सादी, हाफिज, अमीर खुसरो, मीर आ गालिब सन नामक उल्लेखसँ लेखक गजलकेँ बहुभाषी इतिहासक अन्तर्गत राखैत छथि। मैथिली सन्दर्भमे कविवर जीवन झाक “सुन्दर संयोग”क उल्लेख विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। एकरा लेखकक ऐतिहासिक प्रतिपादनक रूपमे ग्रहण कएल जा सकैत अछि; एहि संक्षिप्त लेखमे सभ मध्यवर्ती ऐतिहासिक दावा स्वतंत्र प्रमाणसँ पूर्णतः सिद्ध कएल गेल अछि, एहन मानब उचित नहि।

मतला, मकता, शेर, मिसरा, रदीफ, काफिया, गैर-मुसल्लसल गजल, मुसल्लसल गजल, बहर, तखल्लुस आदि पारिभाषिक शब्द सभक विवेचन लेखकक गंभीर शिल्प-चिन्तनक परिचायक अछि। खास बात ई जे ओ केवल अरबी-फारसीक नियम यांत्रिक रूपेँ उद्धृत

नहि करैत छथि; मैथिलीमे विभक्ति जुड़बाक प्रवृत्ति, अनुस्वार-चन्द्रबिन्दुक प्रयोग, संयुक्ताक्षर, ह्रस्व-दीर्घक लेखन-उच्चारण आ मात्रा-साम्यक व्यवहारिक कठिनाई पर सेहो विचार करैत छथि।

कविक दावा अछि जे भाषागत रूप आ बोलचालक ध्वनिप्रवाहकेँ बुझने बिना काफिया निर्धारित नहि कएल जा सकैत अछि। एहि विचारक महत्त्व एहि मे अछि जे गजल-व्याकरण मैथिलीकेँ अनुकरण करएबला निष्क्रिय भाषा मानि नहि चलैत, अपितु स्वतंत्र ध्वनितन्त्र-वला रचनात्मक भाषा स्वीकार करैत अछि। शिल्पक शुद्धता आ स्थानीय उच्चारणक बीच समन्वय एहि पुस्तकक सर्वाधिक उपयोगी बौद्धिक योगदानसभमे एक अछि।

तथापि आरम्भिक विवेचनमे प्रस्तुत सभ नियम एक समान सावदेशिक, निर्विवाद वा भाषावैज्ञानिक रूपेँ अन्तिम निष्कर्ष छथि, से मानि लेब उचित नहि। कतिपय स्थानपर उच्चारणक उदाहरण, परम्परागत छन्दक वर्गीकरण आ भाषिक व्यवहारक सीमा अलग-अलग प्रमाणक अपेक्षा करैत अछि। साहित्यिक सिद्धान्तक रूपमे एहि विवेचनक मूल्य असन्दिग्ध अछि; एकर प्रत्येक उपनियमक स्वतंत्र तकनीकी परीक्षण आ शेर-दर-शेर तक्तीअ एकटा अलग अध्ययनक विषय अछि।

४. चयनित गजलसभक पृथक पाठविश्लेषण

४.१. गजल १ : पूँजी, प्रदर्शन आ मनुष्यक अवमूल्यन

“मालक खातिर तँ माल-जाल बनल लोक” (गजल १)

प्रथम गजल संग्रहक वैचारिक दिग्दर्शन करैत अछि। “माल” आ “माल-जाल”क शब्द-निकटता मनुष्यक भीतर आर्थिक लोभक जाल निर्माण करैत अछि। एहि गजलमे भुखमरी, प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार आ आत्मविकृतिक चित्र एक दोसरासँ जुड़ैत अछि। कवि केवल गरीबीक वर्णन नहि करैत छथि; धनकेँ मनुष्यक व्यक्तित्व, नैतिकता आ पारस्परिक सम्बन्धक नियामक बनि जेबाक प्रक्रिया पर प्रहार करैत छथि।

“लोक”क पुनरावर्तन व्यक्तिगत अपराधकें सामूहिक प्रवृत्तिक रूप दैत अछि। ई शेर साधारण बोलचालक शब्दसँ व्यापक अर्थ उत्पन्न करबाक उदाहरण अछि।

४.२. गजल १६ : राजनीतिक अन्हार आ व्यंग्यक दोहरा स्वर

“अन्हरे सरकार तँ चला रहल राज-काज” (गजल १६)

एहि रचनामे दोसर पाँतिक अन्त्य “शेष कुशल अछि” एकटा स्थायी व्यंग्यात्मक निष्कर्ष बनैत अछि। साधारण समाचार वा चिट्ठीक कुशल-क्षेमक भाषा पर कवि राजनीतिक अस्वस्थताक आरोप करैत छथि। “अन्हरे सरकार” अभिव्यक्ति एक साथ नैतिक दृष्टिहीनता, नीति-विफलता आ सार्वजनिक गैरजिम्मेदारीक संकेत करैत अछि। “शेष कुशल अछि” जतेक बेर दोहराइत अछि, ततेक बेर ओकर साधारण आश्वासन कटु विडम्बनामे बदलैत अछि। एकर काव्यात्मक शक्ति रदीफक अर्थ-परिवर्तनमे अछि— ओहि शब्दसभसँ विश्वासक नहि, अविश्वासक अनुभव उपजैत अछि।

४.३. गजल २३ : स्वयं गजल पर गजल

“गजल सुख जिनगीक गजल दर्द जिनगीक” (गजल २३)

ई रचना विधाक आत्मपरक घोषणाक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। गजल एतए केवल प्रेम-वचन नहि, सम्पूर्ण जीवनक सुख-दुःखकें भाषा देबाक माध्यम अछि। हिमालय, आगि आ प्रतिरोधक बिम्ब गजलकें आन्तरिक दृढ़ता आ सामाजिक तापसँ जोड़ैत अछि। आत्मसन्दर्भी कविता होयबाक कारण रचना किछु स्थानपर गजल-विधाक प्रशस्तिमे परिणत होइत अछि। मुदा एहि आत्मस्तुतिमे लेखकक रचनात्मक आग्रह स्पष्ट अछि—मैथिली गजलकें सीमित श्रृंगार-विधासँ बाहर जन-जीवनक व्यापक संवेदना दैत स्थापित करब।

४.४. गजल २६ : सम्बोधन आ निकटताक विनम्र व्याकरण

“अपन आँखिमे बसा लिअ हमरा

अपन श्वासमे नुका लिअ हमरा” (गजल २६)

एहि मतलामे “लिअ हमरा”क पुनरावृत्ति प्रेमिकाक लग निकटता माँगबाक सुमधुर विनय बनैत अछि। आँखि आ श्वासक बिम्ब दृष्टि आ जीवन-दूनूकें प्रेमक अधिकार-क्षेत्रमे आनैत अछि। कवि आक्रामक अधिकारक बदला अपनाएल जेबाक आकांक्षा व्यक्त करैत छथि। एहि रचनाक उल्लेख आरम्भिक गजल-विवेचनमे सेहो उदाहरणक रूपमे भेटैत अछि; एहि प्रकारे रचना आ व्याकरणक बीच प्रत्यक्ष सेतु निर्मित होइत अछि। तकनीकी दृष्टिँ पुनरावृत्त “लिअ हमरा” केवल ध्वनि-सौन्दर्य नहि, सम्बन्धक भावात्मक केन्द्र अछि।

४.५. गजल ३१ : भूमि, विचार आ युद्धक अर्थान्तरण

“माटि-पानि बसात लेल युद्ध

देखू छोटको बात लेल युद्ध” (गजल ३१)

“माटि-पानि-बसात” मनुष्यक अस्तित्वक प्राथमिक आधारक सूची अछि। दोसर पाँतिमे “छोटको बात” एतेक कठोर शब्द “युद्ध”सँ जुड़िते राजनैतिक आ सामाजिक असंगति उजागर करैत अछि। रचना आगाँ आदर्श आ विचारधारा, जर-जमीन तथा संबंधक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। एहि गजलमे “युद्ध”क पुनरावृत्ति अर्थबोधक केन्द्र होइतहुँ एकरस घोषणापर निर्भर रहबाक जोखिम पैदा करैत अछि। तथापि रोजमर्रा के वस्तुकेँ वैचारिक संघर्षसँ जोड़बाक कविक चेष्टा उल्लेखनीय अछि।

४.६. गजल ४८ : अन्हार, किसान आ भूखक संयुक्त बिम्ब

“इजोत लेल अन्हरे नगरी जाइत लोक

सपनमे तँ सपनाक भात खाइत लोक” (गजल ४८)

ई दू पाँति कविक सामर्थ्यक तीक्ष्ण उदाहरण अछि। पहिल पाँतिमे प्रकाश खोजबाक दिशा उलटि गेल अछि—लोक अन्हारक नगरी दिस जाइत अछि। दोसर पाँतिमे भात जे आधारभूत भोजन अछि, से यथार्थसँ विस्थापित भऽ स्वप्नक वस्तु बनि जाइत अछि। स्वप्नमे भोजनक ई स्थिति क्षुधाक सामाजिक यथार्थकेँ अतिशयोक्तिक सहारे करुण बनबैत अछि। एहि गजलमे खेत, शोषण, अकाल आ श्रमजीवी जीवनक आनो उल्लेख

अछि। इजोत-अन्हार आ भात-सपना विरोधी युग्म मिलि राजनीतिक असफलताक रूपक रचैत अछि।

४.७. गजल ६० : महँगाइ आ जनप्रतिनिधिक विडम्बना

“सोना भेटत सस्ता महँग चाउर देखब एक दिन” (गजल ६०)

एहि पाँतिमे वस्तुक मूल्यक्रम उलटि गेल अछि। परम्परागत रूपेँ सोना विलासिता आ चाउर नित्य-जीवनक आवश्यकता मानल जाइत अछि; कवि दुनूकेँ विपरीत मूल्य-स्थिति मे रखैत छथि। ई उलटावक अलंकार मात्र नहि, खाद्य-सुरक्षा आ असमान वितरणक प्रश्न अछि। गजलमे लोकसभा-विधानसभा आ भूखल जनताक उल्लेख सत्ता-तन्त्रक सार्वजनिक उत्तरदायित्वक जाँच करैत अछि। रचना कखनो नारा बनबाक नजदीक पहुँचैत अछि, मुदा ओकर मूल व्यंग्य एकदम चिन्हार सामाजिक अनुभूति सँ बनल अछि।

४.८. गजल ७० : विकास-विमर्शक भाषा आ जनताक उदासी

“अखबारी विकास आ इ जनता उदास” (गजल ७०)

एहि पाँतिक केन्द्र “अखबारी विकास” अछि—एहन विकास जे सूचना-व्यवस्थाक शीर्षकमे चमकैत अछि, मुदा लोकजीवनमे तकर फल अनुपस्थित अछि। “जनता उदास” कथन एही कृत्रिम सफलता-घोषणाक विरुद्ध वास्तविक अनुभव रखैत अछि। दैनन्दिन राजनीतिक शब्दावलीकेँ कवि तकनीकी शेरक भीतर राखि विमर्शक मंचक रूप बदलैत छथि। कविता एतए तर्कपत्र नहि, जनमनक भाषिक प्रतिक्रिया बनि उठैत अछि।

५. प्रेम-विरहक बनावट : आँखि, मोन, श्वास आ देह

अनचिन्हारक प्रेमपरक गजलमे “अहाँ”क सम्बोधन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल पुरुषक “हम” आ दोसर पुरुषक “अहाँ”क बीच दूरत्व, अनुरोध, लाज, अपनापन आ कहियो असहायता बदलैत रहैत अछि। आँखि, नोर, ठोर, श्वास, मोन, करेज आ सपनाक शब्द-मण्डल प्रेमकेँ कोमल शारीरिकता दैत अछि। विशेष बात ई जे ई शब्द मैथिली बोलचालक सहज शब्द छथि; एकरा बाहरी काव्यभाषाक शब्दावलीसँ बदलल नहि गेल अछि।

गजल २६ मे प्रेम अपनाएल जेबाक निवेदन अछि; गजल ४३ मे प्रतिदिनक स्मृति आ पुनरागमनक दृश्य भेटैत अछि; गजल ५९ मे झगड़ा धरि निकटताक रूप बनि जाइत अछि; गजल ६१ मे प्रेम, स्वप्न आ तखल्लुस मिलिकए आत्मचेतन स्वर निर्मित करैत अछि। एहि प्रसंगसभमे कवि प्रेमकेँ केवल शारीरिक अनुरक्तिक विषय नहि बनबैत छथि, बल्कि सम्बन्धक भाषा, स्मृति आ निजी असुरक्षाक रूपमे देखैत छथि।

तथापि प्रेमक प्रतीक-व्यवस्थामे कतेको स्थानपर गुलाब, शराब, आँखि, ठोर सन परिचित बिम्ब बारम्बार अबैत अछि। एहि चित्रसभक सहज ग्राह्यता पाठकक निकटता बढ़बैत अछि, मुदा सबठाम नव सौन्दर्यानुभव उत्पन्न नहि करैत अछि। कविक विशिष्टता ओतए अधिक दमकैत अछि जतए साधारण मैथिली घरेलू क्रिया वा लोकप्रचलित सम्बन्धसूचक शब्द रूढ़ छविकेँ नव अर्थ प्रदान करैत अछि।

६. रुबाइक पृथक समीक्षा : चारि पाँतिक तर्क, प्रेम आ जीवनदर्शन

६.१. रुबाइ १ : आशावादक दैनन्दिन भाषा

“हिम्मति रखने काज सदा बनि जाएत

देह तँ जरत नाम मुदा रहि जाएत” (रुबाइ १)

आरम्भिक रुबाइ कर्म, मृत्यु, नामक स्थायित्व आ समस्यासँ जूझबाक मनोवृत्ति पर केन्द्रित अछि। पहिल दू पाँति जीवनक अस्थायित्व आ काजक मूल्यक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। आगाँ समस्याक पहाड़ रूढ़ जकाँ उड़ि जेबाक बिम्ब मनोवैज्ञानिक आ शिक्षाप्रद निष्कर्ष दैत अछि। एहि संरचनाक प्रभाव कथ्यक सीधापनमे अछि; संगहि ई प्रश्न सेहो उठैत अछि जे कठिन जीवनानुभवकेँ सरल प्रेरक-वाक्यमे बदलि देलासँ ओकर जटिलता कतबा बचैत अछि।

६.२. रुबाइ १३ आ १७ : अनुभवक निष्कर्ष आ सामाजिक विडम्बना

रुबाइ १३ टूटल विश्वासक पीड़ा केँ संक्षिप्त रूपमे व्यक्त करैत अछि। स्वप्न, मोन आ विश्वासक क्रम मानव-सम्बन्धक भावात्मक अवनतिकेँ निर्मित करैत अछि। रुबाइ १७ मे नैतिक कल्पना, अहिंसा आ सार्वजनिक जीवनक विसंगति एक दोसरा लग पहुँचैत

अछि। एहिमे कविक विवेक निजी प्रेमक सीमासँ निकलि सामाजिक व्यंग्य दिशि बढ़ैत अछि। दुनू रचनासँ स्पष्ट होइत अछि जे रुबाइ संग्रहमे केवल प्रेमक विकल्प नहि, संक्षिप्त जीवन-विचारक मंच सेहो अछि।

६.३. रुबाइ ३२ : प्रेमक अस्थिरता आ मृत्यु-जीवनक विरोध

“प्रेम मे खून सुखा नोर बनि जाएत” (रुबाइ ३२)

ई पाँति प्रेमक भावात्मक कष्टकें जैविक आ दृश्य बिम्बक मिलानसँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। रक्तक सूखब आ नोरक बनब शारीरिक अनुभूति कें दुःखक रूपकमय अर्थमे बदलब अछि। चारि पाँतिक सीमामे प्रेमीकें जीवन आ मृत्यु दुनूक सम्भावना घेरैत अछि। तथापि अतिशय भावुक छविक उपयोग कतेको रुबाइमे अनुमानित भावोत्कर्ष पैदा करैत अछि; एहि विधाक शक्ति ओतए अधिक अछि जतए अन्तिम पाँति आरम्भिक अनुभूतिक अर्थ बदलैत अछि।

७. कताक पृथक समीक्षा : विनोद, सौन्दर्य आ मिथकीय स्मृति

संग्रहक प्रथम कता सौन्दर्यक एकटा प्रश्नात्मक तुलना पर आधारित अछि। बाह्य देह-रूपक अपेक्षा आँखिक नोर आ ठोरक हँसीकें महत्त्व देबाक प्रसंग सौन्दर्यबोधकें केवल दृश्य देहधरि सीमित नहि रखैत अछि। प्रश्नोत्तरक स्वर कविता कें लोकबोलीक सहजता दैत अछि।

दोसर कतामे करेजक गाछ, प्रेमक गमक, पहिल गोपी आ कृष्णक मिथकीय सन्दर्भ एक संग अबैत अछि। एहि रचनामे प्रेमक अनुभव सांस्कृतिक स्मृतिसँ प्रकाशित होइत अछि। मिथकीय रूपककें एतए नायिका-नायकक स्थायी प्रतिमानक घोषणा नहि, निजी प्रेमक तुलना मानब अधिक संगत अछि। छोट आकारक कारण दुनू कतामे कथ्यक तात्कालिकता गजलक अपेक्षाकृत विस्तृत भाव-वितानसँ भिन्न छैक।

८. भाषा, स्वर आ अलंकार : मैथिलीकरणक वास्तविक आधार

मैथिली गजलक प्रसंगमे “मैथिलीकरण” केवल हिन्दी वा उर्दूक कोनो पदकें मैथिली शब्दसँ बदलि देब नहि अछि। ई उच्चारण, विभक्ति, क्रियारूप, सम्बोधन, मुहावरा आ

सांसारिक अनुभवक पुनर्संयोजन अछि। “अहाँ”, “हमरा”, “करेज”, “नोर”, “मोन”, “इजोत”, “बसात”, “माटि”, “चाउर” आदि एहि संग्रहमे केवल स्थानीय चिह्न नहि, भाव-विन्यासक सक्रिय अवयव छथि। एहि शब्दसभक कारण प्रेम गामक बोलीमे बजैत अछि आ राजनीतिक व्यंग्य लोकबोधक निकट पहुँचैत अछि।

विरोधी युग्म कविक प्रमुख अलंकारिक उपकरण अछि : इजोत-अन्हार, भूख-भात, सोना-चाउर, प्रेम-विरह, देह-आत्मा, सरकार-जनता, सपना-यथार्थ। एहि विपक्ष-संरचनामे सरलता अछि, मुदा एकर तेज कतेको ठाम उत्कृष्ट व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि। गजल ४८ मे सपना-सँ भातक विरोध आ गजल ६० मे सोना-चाउरक विरोध विशेष उल्लेखनीय अछि।

रदीफक पुनरावृत्ति संग्रहमे अर्थक एकटा स्वतंत्र साधन बनि उभरैत अछि। गजल १६ मे “शेष कुशल अछि” आश्वासन नहि, विडम्बना बनैत अछि; गजल २६ मे “लिअ हमरा” याचनाक माधुर्य प्रकट करैत अछि; गजल ६० मे “देखब एक दिन” भविष्यक आशंका आ चेतावनीक प्रभाव रचैत अछि। एहि उदाहरणसभसँ शिल्पक शब्द-अर्थ सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

८क. गीतात्मक रचना-संरचना : शेरक स्वायत्तता आ समग्र गजलक लय गजलक प्रत्येक शेर अपन सीमामे अर्थपूर्ण होइतहुँ रदीफ, काफिया आ आवर्ती लयक कारण समग्र गजलक अनुभूतिसँ जुड़ल रहैत अछि। “अनचिन्हार आखर”मे एहि सम्बन्धक अलग-अलग परिणाम देखबामे अबैत अछि। प्रेमपरक गजलमे रदीफ प्रायः आत्मीय अनुरोधकें स्थायित्व दैत अछि, जखन कि राजनीतिक गजलमे वएह आवर्तन निषेध, उपहास अथवा चेतावनी उत्पन्न करैत अछि। एहि हिसाबे गजलक संगीत केवल उच्चारणसँ नहि, भाव-परिस्थितिक परिवर्तनसँ सेहो बनैत अछि।

संग्रहक अनेक गजलक अन्तमे “वर्ण” सम्बन्धी सङ्केत देल गेल अछि। ई सङ्केत रचना-निर्माणक प्रति कविक गणनात्मक सजगताकें व्यक्त करैत अछि। तथापि वर्ण-संख्या, स्वरभार आ उच्चारण-व्यवहार एकहि वस्तु नहि छथि; शेरक वास्तविक छन्दगत

उपयुक्तता निश्चय करबाक लेल उच्चारित ध्वनिप्रवाह, यति आ प्रत्येक पाँतिक समतोल संरचनाकेँ संग राखि परीक्षण जरूरी होइत अछि। एहि कारण लेखकक छन्द-आग्रहक ऐतिहासिक महत्त्वकेँ मानैतहुँ प्रत्येक कविता केँ एक समान सिद्ध सफल छन्दक दर्जा देल नहि जा सकैत अछि।

काव्यभाषाक दृष्टिँ एकटा आर महत्त्वपूर्ण विशेषता अछि—गजलमे तखल्लुसक उपस्थितिसँ कवि आत्मनिरूपण करैत छथि। “अनचिन्हार” केवल पहचानक हस्ताक्षर नहि, अनेक ठाम चोट खाएल, विरोध करैत अथवा प्रेमसँ भरल काव्य-व्यक्तिक रूपमे उपस्थित होइत अछि। तखल्लुसक एहि कलात्मक उपयोगसँ कवि आ शेरक वक्ताक बीच निकटता बनैत अछि; मुदा दुनूकेँ पूर्णतः समान मानि कविक निजी जीवनक प्रत्यक्ष विवरण घोषित करब साहित्यिक दृष्टिँ उचित नहि।

गजल आ रुबाइक बीचक अन्तर केवल पाँतिक सङ्ख्यासँ नहि बनैत अछि। गजलमे शेरसमूहक लयगत पुनरावृत्ति अर्थक एक बहुकेन्द्रीय जाल रचैत अछि; रुबाइमे चारि पाँतिक भीतर कथनक प्रसार आ अन्तिम मोड़क दायित्व अधिक रहैत अछि। संग्रहमे कतेको रुबाइ अन्तिम पाँतिमे विचारक एकटा सामान्य निष्कर्ष प्रदान करैत अछि। एहि ठाम गजलक उलट रुबाइ कथात्मक अथवा सूक्तिपरक अधिक भऽ जाइत अछि। कता फेर एहि दुनूसँ पृथक छोट अनुभवक जकाँ उभरैत अछि। तीनू रूपकेँ संग पढ़लासँ लेखकक लघु काव्यक अलग-अलग स्वभाव अधिक स्पष्ट होइत अछि।

८ख. दृष्टि आ प्रतिनिधित्व : उपलब्धिक संग नव आलोचनात्मक प्रश्न

सामाजिक अन्यायक विरुद्ध स्वर संग्रहक प्रमुख उपलब्धि अछि, मुदा सामाजिक प्रश्नक विस्तार देखैतकाल ई सेहो पूछबाक चाही जे सभ वर्गक अनुभव समान तीव्रतासँ उपस्थित अछि की नहि। किसान, गरीब, भूखल जनता आ राजकीय दमनक भाषा पर्याप्त स्पष्ट अछि; मुदा स्त्रीक स्वतंत्र कर्तृत्व, श्रमक लैंगिक विभाजन आ जातिगत सम्बन्धक जटिलता अनेक रचनामे गौण देखाइत अछि। एहिसँ कविक सामाजिक प्रतिबद्धता निरस्त नहि होइत अछि, मुदा जनपक्षीय काव्यक अन्तर्गत कोन अनुभव

केन्द्रमे अछि आ कोन अनुभव अदृश्य रहि गेल अछि—ई आलोचनाक वैध प्रश्न बनैत अछि।

प्रेमपरक गजलमे “अहाँ” प्रायः आकर्षण, अनुपस्थिति, स्मृति अथवा प्रत्युत्तरक अपेक्षाक केन्द्र छथि; काव्य-वक्ताक अनुभूति स्पष्ट रूपेँ सामने अबैत अछि। प्रिय पात्रक स्वतंत्र आत्मविवरण अपेक्षाकृत कम अछि। एहि स्थिति केँ दोषक एकमात्र प्रमाण नहि, पारम्परिक सम्बोधन-केन्द्रित प्रेमगीत आ आधुनिक सामाजिक प्रतिनिधित्वक बीच आलोचनात्मक तनावक रूपमे देखल जा सकैत अछि। एहि प्रश्नसँ संग्रहक पाठ एतेक विस्तृत होइत अछि जे कविता केवल कविक भावना नहि, ओहि भावनाक सामाजिक स्थिति सेहो बनैत अछि।

९. इतिहासक तुलनात्मक विवेचन : परम्परा, पुनर्पाठ आ भिन्नता

९.१. मैथिली गीतिकाव्यक दीर्घ परम्परा आ गजलक नव व्याकरण

मैथिली गीतिकाव्यक प्रमुख ऐतिहासिक धरातलमे विद्यापतिक पदावलीक भाव-सघनता, लोकरागक निकटता आ सम्बोधनक लय एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ अछि। अनचिन्हारक गजलमे प्रेम, विरह आ सम्बोधनक पुनरावर्तनसँ पारम्परिक गीतिकाव्यक संग विषयगत संवाद देखल जा सकैत अछि। मुदा एहि साम्यकेँ प्रत्यक्ष प्रभाव वा एकहि छन्दात्मक वंशावलीक प्रमाण नहि मानब चाही। विद्यापतिक पद आ गजल अलग काव्य-विधान, पद-संरचना आ सांगीतिक-सांस्कृतिक आधार रखैत अछि। तुलना अर्थ-क्षेत्रक अछि, न कि यांत्रिक छन्द-समरूपताक।

९.२. जीवन झासँ आधुनिक मैथिली गजलक प्रवाह

लेखक स्वयं आरम्भिक विवेचनमे कविवर जीवन झाक “सुन्दर संयोग”क उल्लेख करैत छथि। विदेहक उपलब्ध आलोचनात्मक विवेचन आ सम्पादित प्रतिनिधि-संग्रहक विवरणमे मैथिली गजलक आरम्भिक साक्ष्यक सन्दर्भमे जीवन झा आ बीसम शताब्दीक प्रारम्भक उल्लेख भेटैत अछि। एकर बाद सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र “मधुप”, जगदीशचन्द्र ठाकुर “अनिल” आ अन्य काव्यप्रयासक प्रसंग विदेहक परवर्ती

इतिहासलेखनमे देखाओल गेल अछि। एहि इतिहासक सम्बन्धमे सावधानी जरूरी अछि : परम्परागत प्रथमत्व-निर्णय आ कालनिर्धारण साक्ष्यक नव उपलब्धता संग परिवर्तित भऽ सकैत अछि।

जीवन झाक प्रसंग मुख्यतः ऐतिहासिक आरम्भक प्रश्न उठबैत अछि; अनचिन्हारक संग्रह विधागत आत्मसजगताक प्रश्न जोड़ैत अछि। अर्थात् एक स्थानपर गजलक उपस्थिति इतिहासक विषय अछि, दोसर स्थानपर भाषानुकूल छन्द-व्याकरण तैयार करब आलोचनात्मक चेतनाक विषय। एहि आधारपर “अनचिन्हार आखर”कें इतिहासक अनिवार्य आरम्भबिन्दु नहि, आधुनिक शिल्पचिन्तनक प्रभावशाली प्रतिनिधि मानब समुचित अछि।

९.३. अरबी-फारसी-उर्दू रचना-विधान आ मैथिली लोकानुभव

अरबी-फारसी-उर्दू गजल-परम्परामे शेरक स्वतन्त्रता, रदीफ-काफियाक आवर्तन, तखल्लुस आ बहक नियमितता विशिष्ट शिल्पगत अपेक्षा छथि। अनचिन्हार एहि तकनीकी अवधारणासभकें ग्रहण करैत छथि; मुदा मैथिली उच्चारणक भिन्नतासँ उत्पन्न प्रश्नकें दबबैत नहि छथि। एहि पद्धतिक कारण शिल्पगत अनुरूपता आ भाषिक भिन्नता एकहि विमर्शमे स्थान पबैत अछि।

रचनाक विषयगत तुलना करैत काल गालिबक आत्ममंथन, उर्दू गजलक प्रेम-विरह आ आधुनिक जनवादी गजलक राजनीतिक प्रश्नक व्यापक परम्परा याद आबि सकैत अछि। तथापि गजल १६, ४८ आ ६० कें कोनो एक उर्दू अथवा हिन्दी कविक प्रतिरूप कहि देब ओहिमे व्यक्त मैथिली सामाजिक अनुभवकें गौण बना देत। अनचिन्हारक सशक्त शेरक पहिचान ओहि ठाम अछि जतए प्रतिष्ठित गजल-शिल्प मैथिली शब्दावलिक स्थानीय अनुभवसँ रूपान्तरित होइत अछि।

९.४. विदेहक परवर्ती विमर्शक आलोक

विदेहक शोध-सूचीमे आशीष अनचिन्हारक “काफिया”, “काफिया आ बहर”, “मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग”, “आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त

आलोचनात्मक परिचय”, “बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल” आ “नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना” सन शीर्षक दर्ज छथि। ई उपलब्ध शीर्षकसभ एतबा अवश्य स्थापित करैत अछि जे संग्रहमे उपस्थित शिल्प-प्रश्न पछातिक स्वतंत्र आलोचनात्मक विमर्शक विषय बनल। एहि आलेखसभक पूर्ण पाठक विश्लेषण बिना ओहिसँ अतिरिक्त निष्कर्ष निकालब उचित नहि।

गजेन्द्र ठाकुरक विदेहमे उपलब्ध विस्तृत मूल्यांकनमे आशीष अनचिन्हारकें मैथिली गजल-आन्दोलन, काव्यशास्त्रीय अनुशासन आ सम्पादनक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे देखल गेल अछि। ओहि मूल्यांकनकें समकालीन स्वागतक साक्ष्य मानल जा सकैत अछि, मुदा कृतिक कलात्मक गुणक अन्तिम निर्णय केवल प्रतिष्ठा अथवा प्रशंसाक आधारपर नहि; रचनासभक प्रत्यक्ष विवेचनपर आधारित होयबाक चाही।

१०. सौन्दर्यात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

पहिल उपलब्धि अछि विषयक सामाजिक विस्तार। प्रेमक निजी पीड़ाक संग जनताक भुखमरी, खेतीक संकट, संसदीय राजनीति आ मनुष्यक नैतिक विघटन एकहि संग्रहमे अएबाक कारण गजल अपन पारम्परिक सीमित पाठकीय अपेक्षासँ बाहर अबैत अछि। दोसर उपलब्धि अछि तकनीकी स्वचेतना। लेखक स्वयं रचनारूपक समस्या उठबैत छथि आ मैथिली ध्वन्यात्मक अनुभवक सहारे ओकर समाधानक प्रयत्न करैत छथि। तेसर उपलब्धि अछि लोकधर्मी शब्दकोश—गंभीर अनुभूति प्रायः सहज, घरेलू आ क्षेत्रीय शब्दसँ बनैत अछि।

मुख्य सीमा ओहिठाम देखबामे अबैत अछि जतए गजलक शेर राजनीतिक कथनकें केवल अंत्यानुप्रासक सहारे प्रस्तुत करैत अछि। “सरकार”, “जनता”, “विकास”, “भ्रष्टाचार” सन शब्द निश्चय सामाजिक यथार्थक सूचक छथि, मुदा प्रत्येक शेरमे एहन शब्दसँ स्वतः काव्यात्मक विस्फोट नहि जन्मैत अछि। जतेक ठाम एहन शब्द प्रतिमान, दृश्य आ अर्थक नव सम्बन्ध बनबैत अछि, ओतए कविता सफल अछि; जतेक ठाम कथन मात्र घोषणात्मक रहि जाइत अछि, ओतए कला अपेक्षाकृत दुर्बल होइत अछि।

दोसर सीमा रूढ़ प्रेमबिम्बक पुनरागमन अछि। आँखि-शराब आ चेहरा-गुलाबक साम्यक उपयोग रुबाइक एकाधिक रचनामे भेटैत अछि। एहन आवर्तन गेयता आ परिचित सौन्दर्यक अनुकूल होइतहुँ अर्थक नूतनता सीमित करैत अछि। एहि प्रकार संग्रह स्वयं अपन रचनात्मक उपलब्धिक संग आत्मसम्पादनक सम्भावना सेहो देखबैत अछि।

तेसर प्रश्न औपचारिक शुद्धताक अछि। लेखकक गजल-विवेचनमे बहर आ काफिया पर पर्याप्त बल अछि; तथापि प्रत्येक गजलक प्रत्येक शेरमे एक समान सफल छन्दानुशासन सिद्ध करबाक लेल स्वतंत्र तक्तीअ आवश्यक अछि। एहि अध्ययनमे उपलब्ध पाठक आधारपर एहन सर्वव्यापी शुद्धताक दावा नहि कएल गेल अछि। रचनाक सौन्दर्यात्मक मूल्य आ काव्यविधानक तकनीकी उपयुक्तता सम्बन्धित होइतहुँ सर्वथा समान प्रश्न नहि छथि।

अन्ततः “जनपक्षीय” कहि देलासँ कविता आलोचनासँ मुक्त नहि भऽ जाइत अछि। सामाजिक प्रतिबद्धता, भावक मौलिकता, शेरक अन्तर्गत तनाव, भाषाक संक्षिप्तता, ध्वनिक स्वाभाविकता आ विरोधाभासक रचनात्मकता—सभकेँ अलग-अलग देखबाक आवश्यकता अछि। “अनचिन्हार आखर” एहि बहुआयामी जाँच लेल पर्याप्त आधार प्रदान करैत अछि।

११. निष्कर्ष : गजलकेँ मैथिलीक सामाजिक आ भाषिक भूगोलमे प्रतिष्ठा “अनचिन्हार आखर”क महत्त्व एहि बातमे निहित अछि जे लेखक गजलकेँ केवल आयातित कविता-विधान नहि मानि मैथिलीमे बसाबय चाहैत छथि। हुनक प्रारम्भिक विवेचन गजलक रूपशास्त्रकेँ सार्वजनिक करैत अछि; गजलसभ लोकजीवनक भुखमरी, राजनीतिक प्रतिरोध आ प्रेमक अनुभूतिकेँ एकहि काव्यपरिसरमे जोड़ैत अछि; रुबाइ आ कता लघु काव्यरूपक स्वतंत्र अनुभव प्रदान करैत अछि।

सर्वाधिक प्रभावशाली रचनासभ ओ छथि जतए कथन आ रूप एक-दोसराकेँ रूपान्तरित करैत अछि—“शेष कुशल अछि” राजनीतिक व्यंग्य बनैत अछि, “सपनाक भात”

भूखक असह्य प्रतीक बनैत अछि, “देखब एक दिन” भविष्यक संकट-संकेत बनैत अछि, आ “लिअ हमरा” प्रेमक संकोची आकांक्षा बनैत अछि। एहि काव्यात्मक परिवर्तनमे संग्रहक असल उपलब्धि निहित अछि।

इतिहास-दृष्टिसँ ई संग्रह मैथिली गजलक एकमेव जन्मस्थान नहि, बल्कि ओकर आधुनिक विधागत आत्मसमीक्षाक महत्वपूर्ण पाठ अछि। भाषा-दृष्टिसँ ई मैथिली उच्चारण, विभक्ति आ लोकशब्दकें गजलक शिल्पमे वैध स्थान दैत अछि। आलोचना-दृष्टिसँ ई संग्रह प्रशंसा आ प्रश्न दुनूक अधिकारी अछि। एहि द्वन्द्वात्मक मूल्यांकनसँ स्पष्ट होइत अछि जे आशीष अनचिन्हारक योगदान केवल गजल लिखब नहि, गजल लिखबाक शर्त आ मैथिलीमे ओकर सम्भावना पर सुसंगत बहस प्रारम्भ करब सेहो अछि।

सन्दर्भसूची : मूल कृति आ विदेहक स्रोत

मूल कृति

[1] अनचिन्हार, आशीष। अनचिन्हार आखर। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०११। ISBN 978-93-80538-48-8। मूल पाठ। विदेह पोथी-संग्रह :

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[2] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास। विदेह पोथी-संग्रहमे सूचीबद्ध कृति : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[3] अनचिन्हार, आशीष। सन्दर्भ सहित (गजल-आलोचना)। विदेह पोथी-संग्रहमे सूचीबद्ध कृति : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[4] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक रेडी रेकोनर। विदेह पोथी-संग्रहमे सूचीबद्ध कृति : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[5] अनचिन्हार, आशीष। कुमारि इच्छा, जंघाजोड़ी। गजल-संग्रह। विदेह पोथी-संग्रहमे उपलब्ध कृति-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

- [6] अनचिन्हार, आशीष। “काफिया”; “काफिया आ बहर”; “मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग”। विदेहक शोध-सूचीमे अंकवार अभिलेख : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
- [7] अनचिन्हार, आशीष। “आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय”। विदेह, अङ्क २५३, २०१८। शोध-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- [8] अनचिन्हार, आशीष। “बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल”। विदेह, अङ्क २५१, २०१८। शोध-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- [9] अनचिन्हार, आशीष। “नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना”। विदेह, अङ्क २५२, २०१८। शोध-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- [10] अनचिन्हार, आशीष। “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै”। विदेह, अङ्क ३०७, २०२०। विदेह शोध-सूची : <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
- [11] ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (सम्पादन)। मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (१९०५–२०२२)। विदेहमे उपलब्ध ग्रन्थ-विवरण : https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm
- [12] ठाकुर, गजेन्द्र। “Critical Appreciation of Ashish Anchinhari”। A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ५६। विदेह : https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm
- [13] विदेह। “मिथिला रत्न” : आशीष अनचिन्हारक रचनासूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/ratna.htm>
- [14] विदेह। “विदेह पोथी” : मैथिली साहित्यक उपलब्ध कृतिसूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

१.१५. नित नवल आशीष अनचिन्हार — जंघाजोड़ी

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

बहरक अनुशासन आ लोकजीवनक प्रतिरोध

सार

‘जंघाजोड़ी’ आशीष अनचिन्हारक दू सय गजलक संग्रह अछि। एहि पोथीक साहित्यिक महत्त्व मात्र एतबामे नहि अछि जे एकटा मैथिली कवि गजल-जेकाँ अनुशासनप्रिय विधाक अभ्यास करैत छथि; एकर विशेषता ईहो अछि जे ओ मिथिलाक लोकबोली, देह-प्रेम, श्रमजीवी वर्गक वंचना, राजनीतिक संस्थाक विडम्बना आ सामाजिक पाखण्डकें गजलक संक्षिप्त, पुनरावृत्तिमूलक आ व्यंजनाशील विन्यासमे राखैत छथि। कविक आत्मवक्तव्य बहर, काफिया, रदीफ, गायन आ पाठकीय अर्थनिर्माणक प्रश्न उठबैत अछि; तें संग्रह कविता आ काव्यशास्त्रीय घोषणा, दुनूक रूपमे पढ़बाक माँग करैत अछि। ई अध्ययन गजलसभक भाषिक बनावट, कथ्य, बिम्ब, लय आ व्यंग्यक पृथक पाठ-विश्लेषण करैत अछि; गजल-इतिहासक विदेह-सम्बद्ध वृत्तान्तसँ तुलनाक क्रममे संग्रहक योगदान आ सीमा निर्धारित करैत अछि। निष्कर्ष ई जे अनचिन्हारक उपलब्धि परम्परागत विधागत अनुशासनकें लोकभाषिक आधुनिकतासँ जोड़ब अछि, मुदा विधागत आग्रह तथा काव्यगत सिद्धिक बीचक दूरीक आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक अछि।

मुख्य शब्द : मैथिली गजल, आशीष अनचिन्हार, जंघाजोड़ी, बहर, रदीफ-काफिया, व्यंग्य, लोकभाषा, पाठकीय अर्थनिर्माण, विदेह साहित्य आन्दोलन।

प्रस्तावना : पोथी, संरचना आ आलोचनाक प्रश्न

‘जंघाजोड़ी’क रचनात्मक केन्द्रमे एकटा उग्र विरोधाभास सक्रिय अछि : बाहरी बनावट अत्यन्त अनुशासित होबाक घोषणा करैत अछि, जखन कि भीतरक स्वर सत्ता, मर्यादा, शिष्टाचार आ सामाजिक अनुक्रमक निरन्तर परीक्षा लैत अछि। संग्रहमे लगातार दू सय गजल देल गेल अछि; प्रत्येक गजलक संग मात्राक्रम अथवा बहर-सम्बन्धी सूचना जोड़ल

गेल अछि। एहि योजना सँ रचनाक पढ़बाक दू बाट खुलैत अछि : भावात्मक ग्रहण आ औपचारिक जाँच। एहि दूनूक मेल एहि पोथीक आलोचनात्मक प्रवेशद्वार थिक।

‘जंघाजोड़ी’ शब्द स्वयं ठेठ बोलचालक शारीरिकता आ हँसी-विनोदक संस्कार जगबैत अछि। शीर्षक उच्चकाव्यक रूढ़ गरिमा सँ हटिकय लोक-उच्चारणक साहस अपनबैत अछि। मुदा एहि साहसकें मात्र उत्तेजना कहब पर्याप्त नहि; शीर्षकक अभिप्राय बुझबाक लेल पोथीक भीतर देह-चेतना, व्यंग्य आ आत्मपरिहासक पारस्परिक सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि। कविता जखन लघु कलेवरमे पैघ राजनीतिक वाक्य प्रस्तुत करैत अछि, तखन शीर्षकक आकस्मिकता सेहो एकटा सौन्दर्यशास्त्रीय संकेत बनैत अछि।

संग्रहक परिचयमे लेखक अपन मूल नाम आशीष कुमार मिश्र, गाम भटरा घाट, बिस्फी, मधुबनी आ ‘अनचिन्हार आखर’ नामक गजल-केन्द्रित जालपत्रिकाक सम्पादकीय सम्बन्ध बतबैत छथि। ओ ‘अनचिन्हार आखर’क बाद ‘जंघाजोड़ी’कें अपन दोसर गजल-संग्रह मानैत छथि आ दूनू बीच लगभग नौ वर्षक अन्तरक उल्लेख करैत छथि। एहि आत्मसाक्ष्य सँ लेखकक साधनापथ बुझाईत अछि; यद्यपि दू संग्रहक वास्तविक पाठक सम्पूर्ण तुलनाक स्थान ई कथन स्वयं नहि लऽ सकैत अछि।

रचनाकारक आत्मवक्तव्य : विधा, अनुशासन आ पाठक

‘अनचिन्हारक बात’ संग्रहक मात्र भूमिका नहि, गजल विषयक घोषणापत्रक रूप लैत अछि। कवि गजल कहबाक अधिकारकें बहर-काफिया-रदीफक पालनसँ जोड़ैत छथि। हुनक मते भाव आ छन्द परस्पर विकल्प नहि; एकटा सबल अनुभूतिक उपयुक्त काव्य-विन्यास चाही। एतए हुनक तर्कक साहित्यिक बल स्पष्ट अछि : छन्दहीनताकें नवीनता मानि लेबाक सहज मार्गसँ ओ अलग राह चुनैत छथि। संगहि हुनक भाषा कतेको ठाम अत्यधिक निर्णायक भऽ जाइत अछि, जकरा कारण अन्य काव्य-विन्यासक स्वतंत्र मूल्याङ्कन लेल अपेक्षित अवकाश सीमित भऽ सकैत अछि।

भूमिकामे गायन आ गजलकें समानार्थी मानबाक विरुद्ध तर्क भेटैत अछि। गायकक स्वतंत्र संगीतिक परिश्रम, शास्त्रीय ज्ञान आ रचनाक विधागत पहिचानपर कवि बल दैत

छथि। ई दृष्टि उल्लेखनीय अछि, कारणे मुद्रित काव्य, मंचीय पाठ आ संगीतिक प्रस्तुति एकै सौन्दर्यक मानदण्ड नहि रखैत अछि। मुदा कोनो गजल नहि गाएल जा सकबाक सम्भावनाकेँ मात्र हुनक शिल्पगत श्रेष्ठताक प्रमाण मानल नहि जा सकैत अछि; कविक आलोचना पढ़िते समय एहि भिन्नताकेँ मनमे रखनाइ चाही।

कवि 'मनोरंजन'केँ अपन घोषित अभिप्राय कहैत छथि; तथापि हुनक गजलमे राजनीतिक निराशा, बालश्रम, धनी-गरीबक भेद, धार्मिक पाखण्ड आ दैनन्दिन अन्याय प्रचुर अछि। फलतः मनोरंजन हुनका लग वस्तुस्थितिसँ पलायन नहि, व्यंग्य आ रस मार्फत सामाजिक यथार्थक सामना करबाक युक्ति बनैत अछि। एहि बिन्दुपर पाठक लेखकक घोषित सीमाकेँ स्वयं पाठकर्मसँ विस्तार दैत छथि।

पाठकीय बहुअर्थकता विषयक लेखकक विचार विशेष ध्यानाकर्षक अछि। हुनक तर्क अछि जे सरल भाषामे बनल रचनाक एकटा तत्काल बोधगम्य अर्थ रहि सकैत अछि, मुदा पाठकक अनुभव, समय आ मनःस्थितिक कारणे आन अर्थ खुलि सकैत अछि। एहि अवधारणाकेँ आलोचनामे फलदायी बनाबऽ लेल कविता-भितरक शब्द, प्रसंग आ संरचनाकेँ साथ राखब पड़त; अन्यथा प्रत्येक अनियन्त्रित अर्थ-आरोपकेँ बहुअर्थकता कहि देबाक जोखिम रहत। 'जंघाजोड़ी'क बहुतेक श्रेष्ठ शेर एहि सन्तुलनक परीक्षा लेल उपयुक्त अछि।

गजलरचना : बहर, पुनरावृत्ति आ शेरक स्वायत्तता

संग्रहक रचनात्मक अनुशासनक सर्वाधिक प्रत्यक्ष चिह्न गजलसभक अन्तमे अंकित मात्राक्रम अछि। कतहु छोट, तीव्र गतिवला पदरचना अछि; कतहु अपेक्षाकृत दीर्घ श्वासक संरचना। लेखक लघु-दीर्घक छूट, विशेष प्रयोजनसँ ग्रहण कएल दीर्घक लघुकरण आ बहरे मीरक उल्लेख सेहो करैत छथि। एहि मुद्रित सूचना सँ पाठक जाँचक आरम्भिक सूत्र पबैत छथि। मुदा केवल घोषित मात्राक्रम अपनहि आप सम्पूर्ण शुद्धता सिद्ध नहि करैत अछि; एक-एक मिसराक उच्चारण, शब्दक व्यवहारगत मात्रा, नियत रदीफ-काफिया आ छूटक सीमाक परीक्षण सेहो जरूरी अछि।

शेरक स्वतन्त्र अर्थ-संभावना एहि संग्रहमे तीव्र अछि। राजनीति, प्रेम, प्रकृति आ निजी कटु अनुभवक चित्र एकै गजलमे एक-दोसरसँ अचानक टकरा सकैत अछि। ई रचनाविन्यास गजलक परम्परागत शेर-प्रधान प्रकृतिसँ मेल खाइत अछि। जखन प्रत्येक शेर अपेक्षाकृत स्वायत्त हो, तखन संग्रहमे विषयक एकरूपता नहियो रहिते एकटा व्यापक दृष्टि आकार लैत अछि। एहि दृष्टिक केन्द्रीय गुण अछि : विरोधाभासकें बहुत छोट कथनमे पकड़ब।

रदीफक आवृत्ति कविक भाषा कें लयात्मक ठोक दैत अछि। ‘दुन्नू दिससँ’, ‘केकरो नै’, ‘किछु बात’, ‘पासी छै’ जेकाँ पदसमूह अलग-अलग भावभूमि कें जोड़बाक काम करैत अछि। सभ शेरमे पुनः सुनाइत ध्वनि पाठककें प्रतीक्षा करबैत अछि; काफिया ओ रदीफक सफल सम्बन्ध तखन बनैत अछि जखन दोहराएल पंक्ति नब अर्थ लऽ कऽ अबैत अछि। एहि संग्रहक सबल गजलमे आवृत्तिक अर्थक्रम बदलैत अछि; निर्बल रचनामे ओ मात्र ध्वन्यात्मक पूर्वानुमेयता बनि रहि जाइत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : सम्बन्धक दू पाठ आ विडम्बनाक विस्तार

‘हाथ बढ़लै दुन्नू दिससँ’ : सम्पर्क आ संकट

“हाथ बढ़लै दुन्नू दिससँ

डेग उठलै दुन्नू दिससँ”

आरम्भिक शेरमे द्विपक्षीय गतिक आवेग अछि। हाथ आ डेग सामाजिक सम्पर्कक संकेत देइत अछि; पाठक प्रारम्भमे मिलनक दृश्य देखैत छथि। मुदा आगाँ चलिकय एही दोहराइत पदमे जनतंत्रक लात, जनसमूहक फँसनाइ आ बान्ह टूटलाक बाद लोकक भगनाइ प्रवेश करैत अछि। एके रदीफ पहिने सम्पर्कक आश्वासन, फेर संकटमे समान रूपसँ आक्रान्त होबाक अनुभूति उत्पन्न करैत अछि। एतए बहुअर्थकता कोनो अस्पष्ट शब्दसँ नहि, एके व्याकरणिक संरचनाक भीतर विषय-परिवर्तनसँ जन्मैत अछि।

गजलमे प्रेमगत शारीरिक समीपता, राजनीतिक विफलता आ पर्यावरणीय जोखिमक निकटता मात्र संयोग नहि। ‘दुन्नू दिससँ’ माने सम्बन्धक दूनू छोर; ओहि छोरपर शक्ति

समान नहि होइतो परिणाम साझा भऽ सकैत अछि। एहि शेर-समुच्चयमे गजलक शेर-स्वायत्तता एकटा समग्र नैतिक दृश्य बनबैत अछि।

‘जे हमरा लेल विपदा अछि’ : विषमताक संक्षिप्त गणित

“जे हमरा लेल विपदा अछि

से हुनका लेल सुविधा अछि”

दू पाँतिक एहि दृश्यकेँ पढ़िते वर्ग-सम्बन्धक असमानता उघड़ैत अछि। एक व्यक्ति वा समूहक संकट दोसराक अवसर बनैत अछि। ‘हमरा’ आ ‘हुनका’क सर्वनाम व्यक्तिविशेषक सीमा लाँघि आर्थिक आ राजनीतिक संरचनाक स्थानापन्न बनि जाइत अछि। कवि शोषणक जटिल विवेचन नहि देइत छथि; एकटा तुलनात्मक वाक्यमे परिणाम प्रस्तुत करैत छथि। अनायास ई अर्थ सामाजिक भीड़, संसाधन-वितरण, बाजार आ सत्ताक प्रसंगमे पसारि सकैत अछि।

गजलक प्रभावक कारण केवल विचार नहि, प्रस्तावनात्मक कड़कपन अछि। इएह शेर जाहि पाठककेँ अपन भोगल विपदा याद देबैत अछि, ताहि पाठक लेल स्वतन्त्र अर्थ खोलैत अछि। मुदा ई बहुअर्थकता मूल नैतिक समीकरणकेँ भंग नहि करैत अछि।

राजनीतिक व्यंग्य : शब्दक चोट आ प्रतिरोधक सीमाबोध

‘मीडिया इच्छाधारी छी हम’ : संस्थागत आत्मस्वीकारक अभिनय

“मीडिया इच्छाधारी छी हम

कारपोरेटक नाती छी हम”

एहि शेरमे मीडिया स्वयं अपन मुखसँ वंशावलि सुनबैत अछि। ‘इच्छाधारी’क पौराणिक-लोकप्रचलित ध्वनि आधुनिक निगम-सम्बन्धक संग आवैत अछि। सार्वजनिक जानकारी देबाक संस्थाकेँ कवि स्वार्थानुकूल रूप बदलयवला प्राणी बनबैत छथि। ‘नाती’ नातेदारिक घरेलू पद अछि, जकर प्रयोग पूँजी आ खबरक निर्भरता केँ घर-परिवारक सम्बन्ध जेकाँ व्यक्त करैत अछि। एतए नवीनता राजनीतिक आरोपमे नहि, आरोपक लोकव्यंग्यात्मक वाक्य-विन्यासमे अछि।

एहि गजलमे बारम्बार ‘छी हम’क प्रयोग आत्मस्वीकारोक्ति बनैत अछि। कवि आलोचनाक बाहरी भाषण नहि दैत छथि; आलोच्य संस्था केँ स्वयं अपन विरोधमे बोलबैत छथि। ई नाटकीय आवाज व्यंग्यक खास शक्ति अछि।

‘दिनगर मुदा तैयो तँ अन्हार बड़’ : धार्मिक चमत्कार आ नागरिक अन्हार

“जै देशमे खाली बलात्कार छै

तै देशमे धर्मक चमत्कार बड़”

एहि शेरक झटका तर्कक कठोर विरोधाभाससँ उत्पन्न होइत अछि : सामाजिक हिंसाक संग धर्मक चमत्कारक सार्वजनिक उत्सव। ‘जै’ आ ‘तै’ शर्त-परिणामक वाक्य-ढाँचाकेँ व्यंग्यक न्यायालय बना दैत अछि। काव्यक निहित प्रश्न ई नहि जे धार्मिक अनुभवक कोनो मूल्य नहि; प्रश्न ई अछि जे नैतिक उत्तरदायित्वक स्थान चमत्कारक तमाशा किएक लऽ लैत अछि। कविता एतए आडम्बर आ सामाजिक हिंसाक सहअस्तित्वकेँ उजागर करैत अछि।

ओही गजलक अन्तमे कवि मात्राक्रमक सन्दर्भमे किछु विशेष छूटक उल्लेख करैत छथि। अतएव प्रभावशाली राजनीतिक अर्थ आ निर्दोष छन्दानुशासनकेँ स्वयंसिद्ध एकतारूपमे नहि लेबाक चाही। एहि दुहरी परखसँ कविताक सौन्दर्य आ औपचारिक अनुशासनक प्रश्न दुनू सुरक्षित रहैत अछि।

‘हुनके विकास, जनता उदास’ : घोषणाक विरुद्ध अल्पशब्दीय प्रतिवाद

“हुनके विकास

जनता उदास”

चारि शब्दमे सत्ताक प्रगति-कथाक प्रति संदेह उपस्थित होइत अछि। ‘हुनके’क सीमित हितग्राही आ ‘जनता’क विस्तृत समुदाय बीच सीधा वैचारिक द्वन्द्व अछि। एहि पाँतिक मार्मिकता विस्तृत रूपकसँ नहि, काटदार न्यूनतम वाक्यसँ बनैत अछि। कविता आगाँ संसद आ सार्वजनिक संस्थाक नैतिक पतन दिस संकेत करैत अछि। एहन लघु गजल

पाठककें तुरन्त याद रहि सकैत अछि; तथापि कखनो-कखनो घोषणात्मक संक्षेप जटिल यथार्थक सूक्ष्मता घटा सेहो सकैत अछि।

श्रम, बचपन आ वर्ग : सामाजिक यथार्थक लघु दस्तावेज

‘नौकर बनलै गरीब बच्चा’ : बचपनक विस्थापन

“नौकर बनलै गरीब बच्चा

होटल मोटेल ईटा भट्टा”

एहि शेरमे ‘होटल मोटेल ईटा भट्टा’ स्थान-सूचीक रूपमे नहि, श्रमक निरन्तर भूगोलक रूपमे अबैत अछि। गरीबीक कारण बालकक जीवन विद्यालय आ खेलसँ हटिकय व्यावसायिक श्रमस्थलपर फैलि गेल अछि। ‘गरीब बच्चा’ कोनो भव्य प्रतीक नहि; सामाजिक दृष्टिसँ प्रत्यक्ष दृश्य अछि। कविक यथार्थवाद एतए अनुभूति कें अधिक विशेषणसँ नहि लादैत अछि।

गजलक दोसर शेरमे जीवनक मिठास आ ओकर तुरन्त खट्टा भऽ जेबाक उलटबाँसी अछि। मिठाइक स्वादक तुलना जीवनपर लगैतहि बचपनक क्षणभंगुरता आ श्रमक कठोरता एक-दोसरकें काटैत अछि। ‘ईटा भट्टा’क ग्रामीण-औद्योगिक सन्दर्भ कविता कें स्थानीय बनबैत अछि, मुदा प्रश्न व्यापक अछि : विकासक दाबीक बीच सर्वाधिक असुरक्षित जीवनक मूल्य के तय करैत अछि?

‘ने अँगना जोगर ने दलान जोगर’ : निर्धनताक संस्कारगत बहिष्कार

“गरीब लड़किए जकाँ गरीब लड़को

ने बियाह जोगर ने चुमान जोगर”

एहि शेरमे निर्धन लड़का आ लड़की दुनूक तुलना सामाजिक संस्कारसँ बाहर कएल गेल देहक रूपमे होइत अछि। ‘बियाह’ आ ‘चुमान’ आर्थिक हैसियतसँ आबद्ध सामाजिक मान्यता बनि जाइत अछि। रचना वर्ग-संकटक लिंगाधारित अनुभवकें खुलबैत अछि, मुदा ओकर समाधान नहि दैत; अस्वीकृत व्यक्तिक स्वरमे समाजक व्यवहारक नैतिक

दरिद्रता दर्ज करैत अछि। ई प्रसंग संग्रहक ‘मात्र मनोरंजन’क घोषणाकेँ सबसँ सीधा चुनौती दैत अछि।

देह, नेह आ स्त्री-पात्र : संवेदनाक सामर्थ्य आ दृष्टिक असममिति

‘ओकर हाथसँ फूल अछि देह’ : देहक अनेक अर्थ

“ओकर हाथसँ फूल अछि देह

सदिन गम गम फूल अछि देह”

फूलक बिम्ब देहकेँ कोमलता, गन्ध आ स्पर्शक अर्थ दैत अछि। एहि गजलमे देह प्रेमक मिलन-स्थल, मोनक संग फूलक विभिन्न रूप, आ सामाजिक पहिचानक केन्द्र बनैत अछि। कविक रचनात्मक शक्ति एतए प्रत्यक्ष अछि : मैथिली लोकभाषाक गन्धवाचक पुनरुक्ति गजलक नियत अन्त्यानुप्रास सँ जुड़ि जाइत अछि। देह निष्क्रिय वस्तु नहि, अनुभूति सँ अर्थ पबैत स्थान बनैत अछि।

मुदा संग्रहक प्रेमपरक अनेक गजल स्त्रीक देह, आँचर, ठोर, आँखि आ रूपक वर्णनमे रमैत अछि। एतए स्त्रीक अपन इच्छा, निर्णय वा उत्तर-स्वर अपेक्षाकृत कम उद्धाटित होइत अछि। अतएव देहक सौन्दर्यपर लिखल पाँति मात्रक आधारपर समतामूलक प्रेम-दृष्टि सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि। आत्मीयता आ वस्तुकरण बीचक ई तनाव संग्रहक समीक्षाक एकटा आवश्यक पक्ष अछि।

प्रेमक शब्दावली आ वियोगक निजी प्रतिध्वनि

नेह, नोर, मोन, आँचर, चान, इजोरिया, कजरौटा, फूल, मधुमास जेकाँ शब्द संग्रहमे बारम्बार घुर्त अछि। एहि पुनरावृत्तिमे लोकगीत-परम्पराक भावक्षेत्र सक्रिय भऽ जाइत अछि। मुदा गजल अपन अपेक्षाकृत स्वायत्त शेरक कारण लोकगीतक सतत कथात्मक प्रवाहसँ भिन्न बनावट ग्रहण करैत अछि। प्रेम एतए ओतेक कथा नहि, जतेक क्षणक टकराहट, अपूर्णता आ स्मृतिक लघु प्रस्फुटन अछि।

कखनो अर्थ बहुत संकेतमय रहैत अछि; कखनो सरल संबोधन गीतात्मकता दिस लऽ जाइत अछि। ई द्वैधता कविक भितर दू स्वर देखबैत अछि : एक कठोर व्यंग्यक, दोसर

करुण वा चंचल प्रेमक। उत्कृष्ट गजल ओहि ठाम अछि जतए दुनू स्वर एक-दोसरकें पूरक बनैत अछि, नहि कि बस अलग-अलग विषय सूची जकाँ लगैत अछि।

लोकभाषा, धार्मिक संकेत आ सांस्कृतिक प्रतिलोम

‘मोनक रूप पासी छै’ : लोकजीवनक पुनर्मूल्याङ्कन

“मोनक रूप पासी छै

देहक रूप पासी छै”

पासी, ताड़ी, लबनी आ भुज्जा-चिखना जेकाँ शब्द गजलक परम्परागत दरबारी शब्दावलीकें स्थानीय लोकजीवनक धरातलपर आनैत अछि। एतए ‘पासी’ केवल पेय-पदार्थक सम्बन्धसूचक नहि; कविक रूपक-संसारक एकटा स्वायत्त मूल्य-वाचक पद बनैत अछि। एहि गजलमे वैदिक नामसभक संग लोकजीवनक एहि बिम्बक समीपता उच्च-नीच सांस्कृतिक विभाजनपर विनोदी दबाव उत्पन्न करैत अछि।

तथापि ई पुनर्मूल्याङ्कन केहन समाज-दृष्टि गढ़ैत अछि, से प्रश्न खुलल रहैत अछि। लोक-शब्दक बारम्बार प्रयोग अपनहि आप लोकसमुदायक सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व नहि दैत अछि। ओकरा कविताक वक्ता, प्रसंग आ मूल्यनिर्णयसँ जोड़ि कऽ देखनाइ चाही। साहित्यिक उपलब्धि एतए अभिजात शब्द-संहिता तोड़ि लोकानुभवकें गजलक भाषामे प्रतिष्ठा देब अछि।

राम-रहमान, मन्दिर-मस्जिद आ धर्मक राजनीतिक उपयोग

संग्रहक किछु गजल धार्मिक नामक बीच दूरीक अपेक्षा विनिमयक सम्भावना रखैत अछि, जखन कि अन्य शेर धर्मक नामपर हिंसा आ तमाशापर व्यंग्य करैत अछि। एहि कारण कविक धार्मिक संसारकें एकरेखीय विरोध वा आस्था-दर्शनक नाम दऽ सीमित करब उचित नहि। कविता सामाजिक पाखण्डक निन्दा करैत मानवीय सहअस्तित्वक संकेत देबैत अछि। लोकप्रयोग, पौराणिक संकेत आ समकालीन राजनीति मिलिकय गजलक कथ्य विस्तार करैत अछि।

शीर्षकक स्वसन्दर्भ : हास्य, हिंसा आ देहभाषा

“जंघाजोड़ी देखि कऽ

जांघो सभ खूब हँसल”

एहि शेरमे पुस्तकक नाम अपनहि रचनात्मक संसारक भीतर वापस अबैत अछि। ‘देखि कऽ’ दृष्टिक क्षण अछि; ‘जांघो सभ खूब हँसल’ शारीरिक अंगक मानवीकरण। हँसी एतए विनोद, असहजता आ शिष्टाचार-विघटनक मिश्रित क्रिया बनैत अछि। एहि पाँतिसँ पूर्व रक्तरंजित राजकीय बिम्ब अवस्थित अछि; तें शीर्षकक खेल केवल देहक चुटकुला नहि, हिंस्र सार्वजनिक जीवनक बगलमे उत्पन्न विचित्र हँसीक संकेत सेहो बनैत अछि।

शरीरक अंगकें हँसाबयवला वाक्य मर्यादित शुद्धतावादक भाषामे सहज नहि लगैत अछि। अनचिन्हार एहि असहजता कें चुनैत छथि। मुदा प्रत्येक असहज शब्द साहित्यिक नवोन्मेष नहि होइत अछि; एतए ओकर सार्थकता राजकीय-हिंसात्मक प्रसंगसँ अर्थगत टकराहटमे छैक। शीर्षकक आलोचनात्मक पठनीयता एहि रचनासँ विशेष रूपेँ स्पष्ट होइत अछि।

भाषिक बनावट : छोट वाक्य, पुनरुक्ति आ अर्थक विस्फोट

अनचिन्हारक भाषा निरन्तर उच्च साहित्यिक संस्कृतनिष्ठ वाक्य-रचनाक प्रयोग नहि करैत अछि। लोकबोलीक ‘कने’, ‘जकाँ’, ‘हुनके’, ‘हमरा’, ‘दुन्नू’, ‘नोर’, ‘मोन’ आ बाजार-राजनीतिक पद एक-दोसरसँ निर्भय भेटैत अछि। एहि मिश्रणमे भाषिक स्वाभाविकता अछि। शेरक छोट आकारक कारण एक-एक शब्दक भार बढ़ैत अछि; ‘विपदा’क सामने ‘सुविधा’, ‘विकास’क सामने ‘उदास’ आ ‘धर्मक चमत्कार’क सामने हिंसाक चित्र तीव्र द्वन्द्व बनैत अछि।

रूपात्मक स्तरपर समान ध्वनि-क्रम पाठकक स्मृतिमे ठहरैत अछि। आनफेर, पुनरुक्ति अनिवार्यतः नब अर्थ नहि जोड़ैत; कखनो अनुप्रासक चकाचौंधि शब्दार्थक सूक्ष्मताकें ढाँपि दैत अछि। एहि जोखिमक उदाहरण संग्रहक अत्यन्त छोट, अधिकतर ध्वनि-

साम्यपर टिकैत गजलसभमे देखाइत अछि। सफलताक कसौटी ई होबाक चाही जे पुनरावृत्ति प्रत्येक आगमनपर किछु अर्थगत परिवर्तन करैत अछि वा नहि।

आन एकटा प्रश्न ध्वन्यात्मक अनुशासन आ बोलचालक सम्बन्धक अछि। मैथिली उच्चारणमे शब्द-सन्धि, दीर्घ-लघु, स्थानीय स्वरविस्तार आ उच्चारणभेद अनेक सम्भावना खोलैत अछि। संग्रहमे अंकित मात्राक्रम पाठककेँ एकटा प्रस्तावित पाठ-विधान दैत अछि; तकर अतिरिक्त मौखिक पाठमे घटैत-बढ़ैत ध्वनिक परीक्षण परिश्रम माँगैत अछि। तें गजलकेँ केवल लिखित चिह्नक गणित वा केवल गायकक सहज सुरमे सीमित करब दूनू अनुपयुक्त हएत।

पाठकीय बहुअर्थकता : घोषणासँ रचनात्मक क्रियाधरि

कवि भूमिकामे पाठककेँ अर्थनिर्माणक प्रमुख भागीदार मानैत छथि। एहि सूत्रक वास्तविक उपयोग ‘जे हमरा लेल विपदा अछि’ जेकाँ शेरमे भेटैत अछि : वक्ता-परिवर्तनसँ संकट-लाभक अनेक सामाजिक दृश्य खुलैत अछि। ‘हाथ बढ़लै दुन्नू दिससँ’ मे सेहो रदीफ अलग-अलग प्रसंगसँ नब अर्थ लैत अछि। मुदा सभ गजल समान रूपसँ बहुअर्थी नहि। उदाहरणार्थ तीक्ष्ण राजनीतिक नारा एहन निश्चयात्मक कथन देइत अछि जकर अर्थ-दिशा तुलनात्मक रूपसँ स्थिर रहैत अछि।

एहि भिन्नताकेँ कमजोरी मानबाक बदला गजलक बहुविध कार्य बुझनाइ उचित अछि। कोनो शेर प्रश्न पैदा करैत अछि; कोनो तत्काल प्रतिरोधक घोषवाक्य जेकाँ काम करैत अछि; कोनो प्रेमक स्मृति सुरक्षित रखैत अछि। आलोचनात्मक कसौटी सभपर एक्कहि प्रकारेँ लागू नहि भऽ सकैत अछि। लेखकक बहुअर्थकता-सिद्धान्त संग्रहक सर्वश्रेष्ठ शेर बुझबा लेल उपयोगी अछि, मुदा ओकरा सर्वग्राही प्रमाणपत्र बना देल जाए तऽ कविता-विशेषक स्वरूप ओझरा जाएत।

मैथिली गजलक साहित्यिक इतिहासमे ‘जंघाजोड़ी’

मैथिली गजलक इतिहासकेँ उर्दू गजलक अनुकृति मात्रक रूपमे वर्णित करब आलोचनात्मक रूपेँ अपर्याप्त अछि। एक भाषासँ दोसरा भाषामे विधा अबैत काल मात्र

बहर वा काफियाक अनुकरण नहि होइत; स्थानीय वाक्य-विन्यास, सामाजिक प्रश्न, उपमा-परम्परा आ पाठकीय अभिरुचि ओकर नव रूप बनबैत अछि। ‘जंघाजोड़ी’ एहि सांस्कृतिक रूपान्तरणक एकटा देखबाक योग्य उदाहरण अछि : औपचारिक अनुशासनक दावा परम्परासँ सम्बन्ध रखैत अछि, आ कथ्यक लोकव्यंग्य आधुनिक मैथिली जीवनमे टिकैत अछि।

विदेहक उपलब्ध साहित्येतिहासपरक विवेचनमे पण्डित जीवन झा सँ प्रारम्भ होइत एकटा परम्परा-रेखा प्रस्तुत अछि; ताहिमे कविवर सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, विजयनाथ झा आ योगानन्द हीराक नाम जोड़ल गेल अछि। एहि क्रमकें निर्विवाद सर्वसम्मति नहि, विदेह-सम्बद्ध इतिहासलेखनक प्रस्तावक रूपमे ग्रहण करबाक चाही। एहि पृष्ठभूमिमे अनचिन्हारक पीढ़ीक विशिष्टता विधाक पुनः अनुशासन, कविक प्रशिक्षण, पाठकक तकनीकी सहभागिता आ जालमाध्यमक प्रसारक प्रश्नकें संगहि उठाएब अछि।

वर्तमान संग्रहक भूमिकामे लेखक स्वयं ‘अनचिन्हार आखर’ आ ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’क उल्लेख करैत छथि। रचनाक अन्तमे मात्राक्रम देबाक कारण ओ पाठककें बहर बुझबाक क्षमता विकसित करब मानैत छथि। एहि कारण संग्रह काव्यक संग एकटा अनौपचारिक काव्य-शिक्षालयक रूप सेहो धारण करैत अछि। जँ प्राचीन मैथिली पद-परम्परा सामूहिक गायन, राग आ लोकानुष्ठानक स्मृतिसँ संवाद करैत छल, तऽ एहि संग्रहमे छन्दक तर्क, भाषिक साक्षरता आ मुद्रित पाठपर आधारित नव पाठक-समुदाय आगाँ अबैत अछि। दुनू परम्परा बीच समरूपता नहि, बल्कि माध्यम आ उपयोगक रूपान्तरण अछि।

मैथिली कविता आ गजलक आधुनिक संयोगक बहस मे लेखकक स्थानकें केवल प्रथमत्वक दाबीसँ नहि मापल जा सकैत अछि। ऐतिहासिक योगदानक प्रमाण समुचित तिथिक्रम, प्रकाशित पाठ आ तुलनात्मक शिल्प-परीक्षणसँ प्राप्त होइत अछि। अनचिन्हारक महत्त्व ई अछि जे ओ विधा-चर्चाकें अपन रचना-संग्रहक भीतर स्थापीत

करैत छथि; परम्पराक इतिहास आ स्वयं रचनाक सौन्दर्यक प्रश्नकेँ पाठक लग एकसंग पहुँचबैत छथि।

तुलनात्मक विवेचन : उर्दू गजल, मैथिली पद-परम्परा आ आधुनिक जनकाव्य गजलक पारम्परिक संरचनामे मतलाक ध्वन्यात्मक स्थापना, शेरक अपेक्षाकृत स्वायत्तता, काफिया-रदीफक पुनरागमन आ बहरक अनुशासन महत्त्वपूर्ण अछि। ‘जंघाजोड़ी’ एहि संरचनाक संग अपन रूपात्मक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। उर्दू गजलक ऐतिहासिक उदाहरण लेखकक भूमिकामे उपस्थित अछि, मुदा एहि नामसभक उल्लेख सँ सिधैं शिल्पगत समानता सिद्ध नहि होइत। समान विधा होयब आ समान काव्य-मिजाज होयब भिन्न विषय अछि।

मैथिली लोकगीत आ पदक भाषामे प्रेम, विरह, ऋतु, अङ्ग-उपमा, घर-आँगन आ सामाजिक संस्कारक घनी परम्परा अछि। अनचिन्हार एहि बिम्बसभकेँ नव सामाजिक प्रसंगक संगे जोड़ैत छथि। ‘देह’, ‘नोर’, ‘चान’ आ ‘आँचर’क शब्दसंसार लोकगीतक स्मृति जगबैत अछि, मुदा रदीफक नियमित प्रत्यावर्तन आ एक शेरसँ दोसर शेरक विषय-उछाल गजलकेँ स्वतंत्र रूप दैत अछि। एहि अर्थमे ई संग्रह लोकगीतक विस्तार नहि, लोकभाषिक संसाधन सँ समृद्ध गजल अछि।

आधुनिक प्रतिरोधी काव्यक तुलनामे एहि संग्रहक राजनैतिक शेर छोट, तीव्र आ प्रायः व्यंग्यप्रधान अछि। विरोध कखनो उद्धोषणात्मक होइत अछि, कखनो संस्थागत आत्मस्वीकारक नाटकीय आवाज बनैत अछि। ओकर सरोकार दुष्कर मजदूरी, नेताक पाखण्ड, विकासक असमान लाभ, बाजारक क्रूरता आ बोलबाक नैतिक अधिकार अछि। तथापि वैचारिक स्तरपर एकर कोनो एकमात्र कार्यक्रम नहि; प्रेम, देह आ हँसीक निरन्तर उपस्थितिसँ संग्रह व्यापक मानवीय व्यवहारक पाठ बनैत अछि।

कविक आत्मनियमनक दावा आ आन्तरिक आलोचनाक आवश्यकता लेखक ‘नव प्रयोग’क शब्दकेँ सहज प्रतिष्ठा देबय सँ मना करैत छथि आ छन्दक विधान सीखलाक बादे प्रयोगक पक्ष लैत छथि। एहि कथनमे शिक्षणपरक सावधानी अछि। मुदा

स्वयं संग्रहमे पौराणिक संकेतक आधुनिक पुनःप्रयोग, मीडिया-राजनीतिक आत्मपरिहास, शरीरक मानवीकरण आ अत्यल्प शब्दक राजनैतिक शेर साहित्यिक अर्थमे प्रयोगधर्मिताक संकेत देइत अछि। अतएव लेखकक ‘प्रयोग नहि’ कहबाक अर्थ सम्भवतः नब बहर गढ़बाक दाबी नहि करब अछि; समस्त काव्यात्मक नवीनताक अभाव नहि। आलोचना एतए लेखकक वाक्य आ कृतिमे भेद करैत अछि।

ठीक एहने ढंगसँ प्रत्येक गजलक संग मात्राक्रम देब प्रशंसनीय अछि, मुदा गजलसभक अन्तमे स्वयं उल्लिखित छूट पाठककें स्वतन्त्र छन्दपरीक्षाक लेल प्रेरित करैत अछि। ई तथ्य लेखकक विरुद्ध दोषसिद्धि नहि, बल्कि विधागत पारदर्शिताक अवसर अछि। विश्लेषणक पर्याप्त आधार बिना शतप्रतिशत शिल्पशुद्धताक घोषणा करब अथवा छूटकें स्वतः त्रुटि कहि खारिज करब दुनू अतिशयता हएत।

राजनीतिक स्वरक सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि। कखनो व्यंग्यक तीव्रता चरित्रकें एकात्मक बनबैत अछि; सार्वजनिक जीवनक सभ जटिलता चोर, ठक वा पाखण्डीक छविमे समाइत अछि। कखनो प्रेमक शब्दावलि एके उपमान पर घुरि अबैत अछि। किन्तु अनेक ठाम मामूली शब्दक अनपेक्षित संयोग नब बिम्ब उत्पन्न करैत अछि। एहि कारण संग्रहक समग्र मूल्याङ्कन ‘सभटा श्रेष्ठ’ अथवा ‘सभटा दोषपूर्ण’ जेकाँ ध्रुवीकरणसँ बचबाक चाही।

गजलकार आ पाठकक नैतिक सम्बन्ध

‘घूस खा कऽ गरीबपर’ : कविक आत्मालोचनात्मक व्यंग्य

“घूस खा कऽ गरीबपर जिंदा गजल लिखू
होटल बैसि कऽ चिकेन अंडा गजल लिखू”

एहि शेरमे काव्य-व्यवसाय स्वयं आलोचनाक विषय अछि। वक्ता जे निर्देश दैत अछि से प्रत्यक्ष अर्थमे असंगत आ नैतिक रूपेँ आपत्तिजनक अछि; पाठक एहि उलट अभिप्रायकें पकड़ैत छथि। कवि प्रगतिशील नारा आ निजी आचरणक फाँक देखबैत छथि। भूमिकामे लेखक रचनात्मक कथन आ व्यक्तिगत आचरणक संगतिक बात उठबैत छथि; एहि

शेरसँ ओ विचार काव्यात्मक रूप ग्रहण करैत अछि। एतए व्यंग्यक लक्ष्य गरीबी नहि, गरीबक नामपर प्रतिष्ठा खरीदनिहार साहित्यिक पाखण्ड अछि।

व्यंग्य एतए अपन परम्पराक ओहि स्थिर जोखिमसँ बचैत अछि जे कवि सदैव उपदेशक होइ। निर्देशात्मक 'लिखू'क पुनरावृत्तिसँ वक्ता पाखण्डीक मुखौटा पहिरैत अछि आ पाठककेँ अर्थ उलटबाक श्रम देइत अछि। ई संग्रहक सबसँ प्रभावशाली स्व-आलोचनात्मक रणनीतिमे सँ एक अछि।

‘कहल करियौ किछु बात’ : संवादक पक्षधर अन्त

“कहल करियौ किछु बात

सुनल करियौ किछु बात”

संग्रहक अन्तिम गजल बोलब आ सुनबाक आवृत्तिसँ मानवीय सम्बन्धक आवश्यकता याद दियबैत अछि। लेखकक लम्बा आत्मवक्तव्य आ दू सय लघु रचनाक बाद ‘किछु बात’ कहल आ सुनल दुनूक आह्वान बनैत अछि। विचारक सार्वजनीन तत्त्व एतए अछि जे आलोचना, प्रेम आ समाज तीनू बातचीत बिना अधूरा अछि। एहि समापनक सौन्दर्य कठोर राजनीतिक शेरसभक बाद संवादक अपेक्षाकृत कोमल मुद्रा धारण करबमे निहित अछि।

निष्कर्ष : मैथिली गजलक लोकोन्मुख आधुनिकता

‘जंघाजोड़ी’क मूल साहित्यिक उपलब्धि गजलक औपचारिक आत्मचेतनाकेँ मैथिली लोकजीवनक खुरदुरा, असमान आ हास्य-विडम्बनामय अनुभवसँ मिलाएब अछि। बहरक नियम, काफिया-रदीफक पुनरागमन, छोट शेर, स्थानीय शब्दक स्पर्श आ सार्वजनिक संस्थापर तीक्ष्ण टिप्पणी एकटा चिन्हार शैली गढ़ैत अछि। संग्रहक केन्द्रमे कवि अपन पाठककेँ केवल रसग्राही नहि, शिल्प-जाँचक सहभागी मानैत छथि।

एहि रचनासंसारक सर्वोत्तम शेर ओ अछि जतए अर्थक संक्षिप्तता, ध्वनिक अनुशासन आ सामाजिक दृष्टि परस्पर बल दैत अछि। सबसँ कम सफल स्थान ओ छथि जतए पुनरावृत्ति नव अर्थ नहि देइत, आरोप समग्र यथार्थकेँ सरल करैत अछि, अथवा देह-

वर्णनक भीतर स्त्रीक स्वतंत्र स्वर अस्पष्ट रहि जाइत अछि। संग्रहक वास्तविक सम्मान एहि भिन्नताकेँ स्पष्ट करबमे अछि, न कि सभ रचनापर समान प्रशंसाक परत चढ़ाएबमे। मैथिली गजलक इतिहासमे अनचिन्हारक योगदान विधा-सम्मत लेखनक आग्रह, रचनाक संगे तकनीकी विवरण देबाक अभ्यास आ जालमाध्यमक साहित्यिक संवादसँ जुड़ल अछि। ‘जंघाजोड़ी’ एहि प्रयत्नक महत्त्वपूर्ण काव्यात्मक उदाहरण अछि। ई पोथी सिद्ध करैत अछि जे अनुशासन आ प्रतिरोध परस्पर विरोधी नहि; छन्दक भीतरहु समाजक असुविधाजनक प्रश्न उठि सकैत अछि। एकर अन्तिम महत्त्व एहि सम्भावनाक साहित्यिक साक्ष्यमे अछि।

सन्दर्भसूची

प्राथमिक कृति : अनचिन्हार, आशीष। ‘जंघाजोड़ी : गजल संग्रह’। विदेह, मैथिली साहित्य आन्दोलनक प्रकाशन-संग्रह। पुस्तकमे उपलब्ध प्रकाशकीय विवरणमे २०१२ आ २०२२ क अभिलेखीय अधिकार-वर्ष उल्लेखित अछि; एहि वर्षसभकेँ एकमात्र प्रथम प्रकाशन-वर्षक रूपमे ग्रहण नहि कएल गेल अछि।

अनचिन्हार, आशीष। ‘अनचिन्हार आखर’ (गजल, रुबाइ आ कता-संग्रह)। विदेहक पुस्तक-सूचीमे पंजीकृत; ‘जंघाजोड़ी’क लेखकक भूमिकामे पूर्ववर्ती संग्रहक रूपमे उल्लेख।

अनचिन्हार, आशीष। ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; ‘जंघाजोड़ी’क भूमिकामे सैद्धान्तिक मार्गदर्शक कृतिक रूपमे निर्देश।

अनचिन्हार, आशीष। ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; विधागत प्रशिक्षणक ग्रन्थ-सन्दर्भ।

अनचिन्हार, आशीष। ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; मैथिली गजल-आलोचनासँ सम्बद्ध कृति।

अनचिन्हार, आशीष। ‘संदर्भ सहित’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्ध; गजल-आलोचनासँ सम्बद्ध कृति।

अनचिन्हार, आशीष। ‘कुमारि इच्छा’ (गजल-संग्रह)। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्धः रचनाकारक अन्य काव्यकृति।

ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (संयुक्त सम्पादन)। ‘मैथिली गजल : आगमन ओ प्रस्थान बिंदु’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्धः मैथिली गजल-आलोचनाक सन्दर्भ।

ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (संयुक्त सम्पादन)। ‘मैथिलीक प्रतिनिधि गजल’। विदेह पुस्तक-संग्रहमे सूचीबद्धः गजलक परम्परा आ प्रतिनिधि रचनाक ऐतिहासिक सन्दर्भ।

विदेह। ‘विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका : पोथी-संग्रह’। प्रकाशकक ग्रन्थ-सूची; अनचिन्हारक प्रकाशित रचनासभक सूची आ सम्बन्धित गजल-साहित्यक प्रकाशकीय अभिलेख। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह। ‘A Parallel History of Mithila & Maithili Literature’। विदेहक साहित्येतिहासपरक शोध-विवेचन; मैथिली गजलक परम्परा-रेखाक सम्बन्धमे प्रस्तुत मत। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/2026/438/a-parallel-history-of-mithila-maithili-literature.htm>

विदेह। ‘विदेह शोध-लेख : अंक १ सँ ४५१ धरि’। शोध-सूची; आशीष अनचिन्हारक गजल-व्याकरण, गजल-आलोचना आ मैथिली साहित्येतिहास सम्बन्धी प्रकाशित लेखसभक प्रकाशकीय सूची।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

विदेह। ‘Critical Appreciation of Ashish Anchinar’। रचनाकारक जीवन, कृति, गजल-विधान आ आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्यपर विदेह-सम्बद्ध विवेचन। https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm

१.१६. नित नवल आशीष अनचिन्हार — कुमारि इच्छा

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

अपूर्ण आकांक्षा आ पूर्ण छन्द

सारांश

आशीष अनचिन्हारक 'कुमारि इच्छा' आधुनिक मैथिली गजलक ओहन संग्रह अछि जाहिमे छन्दक अनुशासन आ सामाजिक असन्तोष एक-दोसराक परीक्षण करैत अछि। संग्रहक सयटा गजलमे भूख, वर्गभेद, सत्ता, बाजार, पारिवारिक विखण्डन, आधुनिक सुविधाक विसंगति, स्त्रीक श्रम, रचनाकारक आत्मपरीक्षण आ अधूर आकांक्षाक अनेक रूप प्रत्यक्ष होइत अछि। कविक विस्तृत भूमिका ई रचनाकेँ केवल कविता-पोथी नहि रहय दैत अछि; ओ मैथिली लेल अपन बहर-विन्यास बनयबाक आग्रह, परम्परागत अरूजसँ सम्बन्ध आ नव नामकरणक प्रस्ताव प्रस्तुत करैत छथि। एहि शोधक केन्द्रीय प्रतिपाद्य ई अछि जे 'कुमारि इच्छा'क सार्थकता छन्द-विषयक घोषणामे मात्र नहि, बल्कि ओहि घोषणाकेँ जीवनानुभव, लोकभाषा, व्यंग्य आ सामाजिक आलोचनासँ भिड़बैत रहबामे अछि।

मूल संग्रहक सम्पूर्ण सयटा गजल, कविक आत्मवक्तव्य, रचनाक पछाति देल छन्द-विवरण आ विदेहक ग्रन्थ-सूची तथा शोध-अभिलेखक आधारपर एहि अध्ययनमे औपचारिक काव्यविश्लेषण, विशिष्ट गजलक पृथक पाठविश्लेषण, शीर्षकक अर्थ-मीमांसा आ मैथिली गजलक साहित्येतिहाससँ तुलनात्मक सम्बन्धक विवेचन कएल गेल अछि। मूलक अक्षररूप प्रत्यक्ष मिलानसँ सुनिश्चित भेल सीमित पाँति मात्र उद्धृत अछि। अध्ययन संग्रहक उपलब्धिक संग ओकर पुनरावृत्ति, छन्द-विचारक असम्पूर्णता, स्त्रीस्वरक सीमित स्वायत्तता आ उपदेशात्मक व्यंग्यक जोखिम सेहो रेखांकित करैत अछि।

बीजशब्द : मैथिली गजल; आशीष अनचिन्हार; कुमारि इच्छा; बहर; अरूज; विदेह; लोकधुन; व्यंग्य; आकांक्षा; सामाजिक न्याय।

साहित्यिक प्रश्न आ अध्ययन-दृष्टि

काव्यसंग्रहक मूल्यांकन करैत काल सहज प्रश्न होइत अछि जे कतेक रचना स्मरणीय अछि, कतेक लयबद्ध अछि आ कवि अपन समयकें कतेक सघन रूपमे चिन्हैत छथि। ‘कुमारि इच्छा’ एहि सामान्य कसौटीमे एकटा आर जटिल प्रश्न जोड़ैत अछि : जँ लेखक प्रत्येक गजलक संग बहरक मात्राक्रम आ कतहु-कतहु छूटक औचित्य स्वयं लिखैत छथि, तँ आलोचक केवल भावपर निर्णय दए सकैत छथि की छन्दक दावाक स्वतंत्र परीक्षण सेहो करबाक चाही? एहिठाम दूनू काज जरूरी अछि। छन्दक घोषणा अपना मे सफलता नहि; मुदा छन्द-विषयक प्रायोगिक सचेतना सेहो काव्य-इतिहासक दस्तावेज होइत अछि।

ई शोध मूलतः ग्रन्थकेन्द्रित अछि। पाठकें एकटा सतत काव्य-समुच्चय मानि गजलक क्रम, प्रतीक-परिवर्तन, कथ्यक आवृत्ति आ लेखकद्वारा देल शिल्प-टिप्पणीक अनुशीलन कएल गेल अछि। साहित्येतिहासक तुलनात्मक प्रसंगमे विदेहक पोथी-संग्रह, शोध-सूची, आशीष अनचिन्हारक उपलब्ध आलोचनात्मक कृतिक विवरण आ विदेहमे प्रकाशित परम्पराविषयक विवेचन उपयोगी सन्दर्भ बनैत अछि। जे इतिहास-तथ्य स्वतन्त्र पुरातन हस्तलिखित आधारपर नवसँ सिद्ध नहि कएल गेल, ओकरा एहि शोधमे अभिलेख-आधारित परिप्रेक्ष्यक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि।

कवि कहैत छथि जे पाठक जँ मनोरंजनक भीतरसँ ज्ञान, बुद्धि, परिवर्तन वा जीवन-सुधारक किछु सूत्र भेटबैत छथि तँ रचनाक सौभाग्य। ई कथन पाठकक अधिकार स्वीकार करैत अछि। ताहि लेल एहि पोथीक एकमात्र अधिकृत अर्थ कविक भूमिका नहि अछि; अलग-अलग शेर सामाजिक स्थिति, वैयक्तिक स्मृति आ भाषिक संकेतक अनुसार अपन अतिरिक्त अर्थ बना सकैत अछि। आलोचना एहि बहुअर्थताकें बचबैत हुए कविक छन्द-दावाक वस्तुनिष्ठता सेहो माँगैत अछि।

पोथीक रचना-परिसर आ आत्मवक्तव्य

‘कुमारि इच्छा’मे सयटा क्रमबद्ध गजल संकलित अछि। आरम्भमे रचनाकारक भूमिका आ अन्तमे कविक परिचय अछि। गजलक सङ्गे अधिकांश ठाम विशिष्ट मात्राक्रम, नामित बहर अथवा छूटक विवरण देल गेल अछि। एहि बनावटसँ एकटा अनोखा द्विस्तरीय पाठ बनैत अछि : ऊपर गीतात्मक-विन्यास आ नीचाँ ओहि विन्यासक कार्यविधि। पाठक पहिने भुखायल पेट, टूटैत सम्बन्ध वा राजनीतिक तामझामसँ भेट करैत छथि; तुरन्त बाद रचनाक छन्दकीय गणना हुनका औपचारिक संरचना दिस मोड़ि दैत अछि।

भूमिकामे लेखक अपन पहिल संग्रह ‘अनचिन्हार आखर’कें २०११ आ दोसर ‘जंघाजोड़ी’कें २०२० सँ जोड़ैत ‘कुमारि इच्छा’क सार्वजनिकताकें २०२१ सँ सम्बद्ध करैत छथि। विदेहक अभिलेखमे एहि कृतिक उत्तरवर्ती ई-प्रसारणक रूप सेहो उपलब्ध अछि; एहि दूनू उल्लेखकें एकै प्रकाशन-घटना मानि लेब उचित नहि। लेखक तीनू संग्रहक रचनाविधानमे अन्तर देखबैत सरल वर्णिक अभ्याससँ स्वयं निर्मित मात्राक्रम आ फेर स्थापित उर्दू-फारसी बहर दिस गति करबाक कल्पना रखैत छथि।

लेखकक अन्तिम स्वीकारोक्ति विशेष महत्वपूर्ण अछि। ओ अपन संग्रहकें छन्दयुक्त कहैत हुए भावना आ लयक सम्पन्नतापर पाठकक अनुभूतिक महत्त्व रखैत छथि। एहि आत्मालोचनामे काव्यविनयक संग काव्य-रणनीति सेहो अछि : रचनाकार तकनीकी श्रमपर जोर दैत छथि मुदा सौन्दर्यक फैसला पाठककें सौंपैत छथि। आलोचक लेल ई क्षण महत्त्वपूर्ण अछि, कारण छन्दक अनुशासन आ काव्यानुभवक ऐक्य अपने-आप सिद्ध नहि होइत।

छन्दक कार्यक्रम : स्थानीय ध्वनि आ वैश्विक काव्यविधाक संयोग

मैथिली गजलमे अरबी-फारसी-उर्दू अरूजक सम्पर्क आ मातृभाषाक स्वाभाविक उच्चारणक बीच तनाव पुरान बौद्धिक प्रश्न अछि। अनचिन्हार एहि तनावकें न त पूर्ण अनुकरण द्वारा मिटबैत छथि, न निर्बन्ध मालिक समानता द्वारा। हुनकर स्थापना अछि जे

प्रत्येक पाँतिक मात्राक्रम नियमित रहबाक चाही, मुदा मैथिलीक ध्वनिक प्रकृति अपन स्वतंत्र बहरक विकास सेहो कऽ सकैत अछि। एहिसँ भाषा केवल उधार लेल विधाक वाहक नहि, ओकर छन्द-निर्माणक सक्रिय शक्ति बनैत अछि।

भूमिकामे ‘बहरे विदेह’ लेल लगातार दीर्घ-ध्वनिक अन्तमे लघु अपनाबयबला क्रम प्रस्तावित अछि। ‘बहरे गोविन्द’मे लघुसँ आरम्भ होइत दीर्घ-विस्तार, ‘बहरे लोचन’मे लघु-दीर्घ-लघुक अन्तिम विन्यास, ‘बहरे प्रदीप’मे खफीफक एकटा पुनर्विन्यस्त मात्राक्रम आ ‘बहरे रूप’मे २२२१ रुक्कनक पुनरावृत्तिक अवधारणा देखाओल गेल अछि। नामकरणमे विदेह पत्रिका, गोविन्द झा, रामलोचन ठाकुर, मैथिलीपुत्र प्रदीप आ रूपकान्त ठाकुरक स्मरण राखल गेल अछि। ई नाम केवल छन्द-चिह्न नहि; मैथिली साहित्यक संस्थागत-सांस्कृतिक स्मृतिक घोषणापत्र बनि जाइत अछि।

तथापि नाम राखब आ नओ बहरक सांगीतिक-ध्वन्यात्मक विशिष्टता प्रमाणित करब भिन्न कार्य अछि। प्रस्तावित क्रम सभक परम्परागत अरूजक अन्तर्गत समकक्ष रूप कतेक अछि, मातृभाषिक उच्चारणमे लघु-दीर्घक स्वीकृत नियम की होयत, आ स्वतंत्र पाठकद्वारा तकतीअ करिते कोन परिणाम प्राप्त होयत—ई प्रश्न खुलल रहल अछि। लेखक स्वयं पूर्ववर्ती छन्द-रूपसँ सम्भावित साम्यक विषयमे सावधानी प्रकट करैत छथि। अतः नव नामकरणकेँ अन्तिम रूपे मानकीकृत सिद्धान्त नहि, अनुसंधान आ सामूहिक प्रयोगक प्रस्ताव मानब बेसी न्यायसंगत अछि।

छन्दकीय वितरण आ परीक्षणक सीमा

सयटा रचनाक अन्तमे देल लेखकक टिप्पणीक पृथक गणना करिते चौवन गजलक संग ‘बहरे मीर’क संज्ञा भेटैत अछि; नौटा ठाम ‘रमल’ आ चारिटा ठाम ‘मुतकारिब’क स्पष्ट उल्लेख अछि। शेष तेतीस गजलमे अन्य मात्राक्रम, स्वतंत्र प्रयोग अथवा अलग छन्दीय वर्गक विवरण अछि। ई गणना लेखकक टिप्पणीक वर्गीकरण अछि, परम्परागत अरूजक स्वतंत्र प्रमाणपत्र नहि। ओहि कारण एहि आँकड़ासँ संग्रहक घोषित शिल्प-प्राथमिकता बुझाईत अछि, किन्तु सभ गजलक नियमबद्धता निर्विवाद सिद्ध नहि होइत।

बहरे मीरक विस्तृत प्रयोगक एकटा व्यावहारिक लाभ अछि : लोकभाषामे लघु-दीर्घक तनाव सँ घबरायबामे बदला कवि अपेक्षाकृत नियमित आवृत्तिक सहारा लैत छथि। परिणामस्वरूप कतिपय मतला स्मरणीय आ वाचिक बनैत अछि। उल्टा जोखिम ई जे दीर्घक गणनाक लेल दूटा पृथक लघुकें एक दीर्घ मानबाक ‘छूट’क बारम्बार स्वीकारोक्ति शिल्पक निश्चितताकें कमजोर करैत अछि। जे छूट अपरिहार्य संगीतात्मक उच्चारणमे समर्थित अछि से एक बात; जे छूट केवल गणनाक बराबरी लेल प्रयुक्त अछि से दोसर।

कविक टिप्पणीमे उदाहरणार्थ भूखपर आरम्भिक गजलक विन्यास २२-२२-२२-२१, शान्ति आ क्रान्तिक विरोधवला गजलक विन्यास २१२२-२१२२, भातार-सम्बन्धी गजलक विन्यास २२-२२-२२-१२१ तथा शीर्षकीय गजलक विन्यास २२२-२२२-२२२-२२ बताओल गेल अछि। एहि उदाहरण सभमे केवल लिखित चिह्न बराबर होएब पर्याप्त नहि; मैथिली उच्चारणक वास्तविक ताल, विसर्ग-संयुक्ताक्षर, स्वर-भार आ विरामक स्थितिमे सुनल जायब चाही। एहि दृष्टिसँ संग्रह गजलकार आ छन्दशोधी दुनूक लेल समृद्ध मुदा बहस माँग्यवला पाठ अछि।

शेर, मतला, काफिया, रदीफ आ अर्थक स्वतन्त्रता

गजल-रूपक पहचान ओकर मात्राविधानमे समाप्त नहि होइत। मतलाक दूनू मिसरामे समान रदीफ-काफियाक प्रतिष्ठापन आ पछिला शेर सभक अपेक्षित स्थानमे तकर पुनरागमन एकटा अन्तःसंगीत बनबैत अछि। ‘कुमारि इच्छा’मे ‘पेट’, ‘भातार’, ‘राम हरे’, ‘दिक्कत’, ‘सच केर दलाल’, ‘लेने जाइए’ आ ‘बाँचल’ सन आवर्तित पद भाषाक जनपदीय भंगिमाकें रचनात्मक साधन बनबैत अछि। अनेक गजलमेसँ एकटा शेर हटेला दोसर शेर अपन टिप्पणीकें स्वतंत्र राखैत अछि।

मुदा बारम्बार लौटैत रदीफ कतिपय ठाम अर्थक विस्तार रोकेबो करैत अछि। जेना ‘सच केर दलाल’क आवृत्तिसँ सत्तासीन झूठक मजाक तीक्ष्ण होइत अछि, मुदा अलग-अलग शेर जँ नव दृष्टि नहि जोड़य तँ एहि व्यंग्यक प्रभाव यांत्रिक भऽ सकैत अछि। शेरक

स्वायत्तता आ समग्र गजलक विषयगत दिशा—दूनूक सन्तुलन कविक मुख्य कसौटी बनैत अछि।

प्रेम, कुटुम्ब, राजनीति, रोजगार आ काव्यसंस्था सँ सम्बन्धित विषय एकर पश्चातवर्ती विस्तार छी। गजलक संक्षिप्त विन्यास समकालीन समाचार-भाषा, छोट वाक्य, लोक-उक्ति आ तीक्ष्ण प्रतिप्रश्न लेल अनुकूल रहैत अछि। अनचिन्हार एहि सुविधा के खूब उपयोग करैत छथि। तरल लय आ अर्थक घनत्व एक-दोसरासँ मिलल अछि एहन शेर अधिक सफल, जखन कि केवल नारा अथवा तथ्यसूचक वाक्य बनि रहल शेर कम स्मरणीय अछि।

भाषा, लोकवाणी आ अन्तःपाठ

संग्रहक भाषा औपचारिक पाण्डित्यक ठाम बहुधा अपन गामघरक बातचीत सँ ऊर्जा प्राप्त करैत अछि। ‘मोन’, ‘पेट’, ‘आँगन’, ‘भातार’, ‘सासुर’, ‘नैहर’, ‘पैकार’, ‘दरबार’, ‘कपार’, ‘जुन्ना’ जकाँ शब्द काव्यक विषय लोकजीवनमे धरि दैत अछि। तकर संग ‘सिस्टम’, ‘रिपोर्टिंग’, ‘फाइल’, ‘फ्री’, ‘गीजर’ आ ‘ऑफिस’क प्रयोग समकालीन समाजक वस्तु-जगत खोलैत अछि। एहि मिश्रित शब्दभण्डारकें भाषा-अशुद्धिक सरल प्रमाण मानब त्रुटिपूर्ण होयत; एहि माध्यमसँ बाजार, प्रशासन आ घरेलू जीवनक परस्पर प्रवेश घटित होइत अछि।

लोक-धुन, भजनात्मक रदीफ, कबीर-स्मृति आ व्यंग्यात्मक स्वांग एकर अन्तरपाठक सम्बन्ध गहिर करैत अछि। ‘राम हरे’बला गजलमे कवि स्पष्ट करैत छथि जे पदक प्रयोग भजनसँ ग्रहण कएल गेल अछि। लोकधुन-आधारित राजनीतिक गजलमे ध्वनिसंरचना जनसभा अथवा सामूहिक गायनक सहज सम्भावना बनबैत अछि। एहिसँ गजल एकान्त प्रेमालापसँ बाहर सामाजिक वाचिकता धरि बढ़ैत अछि।

तथापि ‘फेस’, ‘ट्रेस’, ‘गेम’, ‘सिस्टम’ सन शब्दक तात्कालिकता कविता केँ समय-सापेक्ष बनबैत अछि। उच्चारणक समता साधबाक लेल प्रयुक्त विदेशी पद जँ आन्तरिक छन्दसँ सहज नहि जुड़य तँ ओ वाचिक तनाव उत्पन्न करैत अछि। एहि आलोचनाक

अर्थ भाषिक शुद्धतावाद नहि, बल्कि रचनामे प्रयुक्त प्रत्येक शब्दक ध्वनि आ प्रसंगक काव्यात्मक अनिवार्यता देखब अछि।

पृथक पाठविश्लेषण

भूखक रूपक : खाली पेटसँ राज्यक अनैतिकता धरि

रूसल रहलै खाली पेट

नहिये भेलै राजी पेट

संग्रहक पहिल गजल पाठकेँ व्यक्तिगत प्रणयक संसारमे नहि, पेटक आग्रहमे प्रवेश करबैत अछि। ‘रूसल’ मनुष्यक भावनात्मक क्रिया अछि, मुदा कवि ओकरा पेटक गुण बना दैत छथि। एहि मानवीकरणसँ भुखल शरीर अपन अधिकारक वाणी पाबैत अछि। अन्नाभाव धार्मिक कर्मक नैतिकता सेहो जाँचैत अछि; साधु आ सरकारक उल्लेखसँ व्यंग्य दैनन्दिन भूखक वस्तुगत समस्या दिस वळैत अछि। ‘पेट’ रदीफ एकहि साथ हास्यक लय आ अभावक निरन्तरता बनबैत अछि।

ई आरम्भ संग्रहक विषय-सूत्र निश्चित करैत अछि : भौतिक असुरक्षा बिनु नैतिक शान्तिक अर्थ अधूरा अछि। कवि जँ भूखक निराकरणक नीति नहि लिखैत छथि, तइयो अपन लघु शेरद्वारा ओ उच्च आदर्श आ खाली पेटक बीच प्रतिपक्ष स्थापित करैत छथि। रदीफक आघातसँ पाठककेँ सभ शेरक अन्तमे पुनः ओही समस्या धरि लौटय पड़ैत छनि।

मोनक शान्ति बनाम पेटक क्रान्ति

मोन बनलै शांतिवादी

पेट बनबै क्रांतिकारी

एहि गजलक पहिल शेर शान्ति आ क्रान्तिक लोकप्रचलित विरोधकेँ शरीर आ चेतनाक परस्पर गतिशील सम्बन्धमे बदलैत अछि। ‘मोन’ आदर्शमे समझौता करबाक इच्छुक अछि; ‘पेट’ जीविकाक दबावक कारण असहमतिकेँ ठेलैत अछि। सामाजिक क्रान्तिक ई भौतिकवादी लघुरूप कठिन सैद्धान्तिक तर्कक बदला सरल अनुभवसँ निर्मित अछि।

तुरन्त बाद राजा-रानी आ दास-दासीक दृश्य सामाजिक पदानुक्रमक व्याख्या बनैत अछि।

एहि शेरक शक्ति ओकर सूक्तिसुलभ काटमे अछि। मुदा बहुत एहन सूक्ति एकत्र होएबासँ अन्ततः जटिल सामाजिक प्रक्रियाक सहज द्वैतमे सरलीकरणक सम्भावना रहल करैत अछि। लेखकक सफलता विषयकें तीक्ष्ण बनयब अछि; कमजोरी तखन प्रकट होइत अछि जखन समान विरोधक नव-नव नामक स्थानपर अनुभवक विशेष विवरण अनुपस्थित रहैत अछि।

बाहरक एकता आ भीतरी टूटन : भातार-शृंखला

बाहर बाहर जोड़ल भातार

भितरे भीतर टूटल भातार

एहि गजलक केन्द्रीय पद ‘भातार’ सम्बन्धक पुरुष-पहचानक रूपमे आयल अछि, मुदा ओकर संग ‘जोड़ल’ आ ‘टूटल’ क्रियाक संयोजन बाह्य संरचना आ आन्तरिक विघटनक अन्तर खोलैत अछि। भाषा परिवारक निश्चित भूमिकाक आलोचना बनैत अछि। बाहर जुड़ल देखाइत सम्बन्ध भीतर टूटल अछि—ई सामाजिक प्रदर्शन आ भावनात्मक विस्थापनक संक्षिप्त चित्र अछि। विकासक मृगतृष्णा, हिसाब, इच्छा आ अपने लोकद्वारा घावक संकेत एहि भङ्गुरताकें आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि दैत अछि।

एहि गजलक छन्द-टिप्पणी विशेष ध्यान खींचैत अछि, कारण कवि एतय प्रस्तावित ‘बहरे लोचन’क मात्राविधानक उदाहरण उपस्थित करैत छथि। ताहि लेल ई रचना केवल दाम्पत्य-विसंगतिक कथन नहि; भाषा-विशिष्ट छन्द बनयबाक प्रयोगशाला सेहो अछि। साहित्यिक पक्ष परखैत काल अन्तिम लघु-दीर्घ-लघुक प्रभाव आ ‘भातार’ रदीफक वाचिक आघातक सम्बन्ध विचारेब उचित होयत।

धर्मक ध्वनि आ प्रशासनक यथार्थ

सभटा सुविधा सरकारी राम हरे

खाली हुनके सरदारी राम हरे

‘राम हरे’क पुनरावृत्ति भजनात्मक सामूहिकतानक भाव पैदा करैत अछि, मुदा कथ्य ओकर विपरीत दिशामे जाइत अछि। सुविधा, सरकारी सरदारी, रिपोर्टिंग, आपसी मारामारी आ मायके बेचैनी जेहन विषयक संग भक्तिपद जोड़ला पर पवित्र ध्वनिक भीतर लौकिक भ्रष्टाचारक व्यंग्य पैदा होइत अछि। एकर सौन्दर्य विरोधाभासमे अछि : जतेक सहज भजन-तान, ततेक कठोर सामाजिक कटाक्ष।

ई गजल लोकगीत आ गजलक सम्बन्ध बुझबाक मुख्य दृष्टान्त अछि। भजनक शब्द अखण्ड धार्मिक समर्पणक संकेत नहि दैत; ओकर पुनरावृत्ति सामाजिक अनुष्ठानक खोखलापन सेहो उजागर करैत अछि। फिरो, प्रत्येक शेर जँ नव विरोधाभास नहि रखय तँ ‘राम हरे’क व्यंग्य स्वयं सूत्र बनि रहि सकैत अछि। यही सीमा वाचिक लोकप्रियता आ साहित्यिक गहराइक बीच मूल्यांकनक आग्रह करैत अछि।

सच केर दलाल : रदीफक व्यंग्यात्मक व्यवहार

खूब गरजैए सच केर दलाल

खूब ठहकैए सच केर दलाल

एहि मतलामे ‘सच’ नितान्त पवित्र मूल्य नहि, कारोबारक वस्तु अछि। ‘दलाल’ शब्द सामाजिक नैतिकताक उलटफेरक सूचक बनैत अछि। गरजब, ठहकब, चमकब, बदलैत रहब आ बिकि जायब—ई क्रम सत्यक प्रतिनिधित्व करबाक दावाक मुखौटा उतारैत अछि। शेरक लघु ध्वनि, उपहासक आघात आ बारम्बार लौटैत पद एकत्र भऽ राजनीतिक-सांस्कृतिक स्वांगक प्रभाव बनबैत अछि।

एहि शिल्पक विशेषता अछि जे कवि सीधे आरोप-प्रमाणक निबन्ध नहि लिखैत छथि। हाव-भावक क्रमसँ व्यक्तिक चरित्र रेखांकित करैत छथि। मुदा ‘दलाल’ जकाँ तीक्ष्ण मूल्यनिर्णायक शब्दक अति-उपयोग बिंबक विविधता घटाबय सकैत अछि। सर्वाधिक सफल शेर ओ अछि जाहिमे केवल गारि नहि, व्यवहारक नव रूप उद्घाटित होइ।

हरियर चश्माक दृश्य आ बेटी पर पड़ैत दुगुना बोझ

छै बेटी भेने दुन्ना दुख

सासुर देखू नैहर देखू

एहि गजलक पंक्ति स्त्रीक सामाजिक अवस्थाकेँ ‘सासुर’ आ ‘नैहर’क दू केन्द्रमे देखैत अछि। स्त्रीक घर-अधिकार, अपेक्षा, श्रम आ अपमानक दोसर जटिल प्रसंग तत्क्षण उपस्थित होइत अछि। ‘दुन्ना दुख’क संकेत स्त्रीक ऊपर दू परिवारक दायित्वक बोझक व्याख्या देबाक सम्भावना खोलैत अछि। रचना स्वयं स्त्रीक अन्तरंग आत्मकथा नहि प्रस्तुत करैत, मुदा पितृसत्तात्मक सम्बन्धक असमानता प्रश्लेषित करैत अछि।

गजलक मतलामे ‘हरियर चश्मा’क आग्रह देखबाक दृष्टि के व्यंग्य-प्रतीक बनबैत अछि। एकर बरखिलाफ बेटीवला शेर धुँधल मानसिक चश्मा हटयबाक माँग करैत अछि। एहि अन्तरसँ कविक व्यंग्य केवल बहिर्मुखी नहि, सामाजिक आत्मावलोकन सेहो बनैत अछि। आलोचककेँ ध्यान रखबाक चाही जे विषय रूपमे स्त्रीक उपस्थिति आ स्वतन्त्र बोलनिहार स्त्रीस्वरक उपस्थिति एक वस्तु नहि अछि।

शीर्षकक अर्थ : माँड़, नोन, सिन्दूर आ कुमारि इच्छा

छै अमीरक दिक्कत हीरा सोन दिक्कत

आ गरीबक दिक्कत माँड़ नोन दिक्कत

कोना पुरतै सिंदूर सभ इच्छा लेल

रहतै किछु इच्छा कुमारि तँ कोन दिक्कत

एहि दू शेरमे समस्त पौथीक शीर्षकक दार्शनिक केन्द्र भेटैत अछि। अमीरक चिन्ता ‘हीरा-सोन’ अछि; गरीबक चिन्ता ‘माँड़-नोन’। पहिल शेर समान शब्द ‘दिक्कत’क भीतर वर्गानुसार समस्याक अतुलनीयता स्थापित करैत अछि। दूनू दिक्कत नामसँ समान, जीवनमूल्यमे असमान। ई विरोध कविक समाजबोधक सबसँ स्पष्ट रूपक अछि। भोजनक न्यूनतम शर्त आ विलासक चाह, दूनूकेँ एकरे काफिया-रदीफ संरचना आमनेसामने रखैत अछि।

दोसर शेरक 'सिंदूर' आ 'कुमारि' शब्द एकदम अलग स्तरक अर्थ लबैत अछि। एक दिस विवाहित होएबाक सामाजिक चिह्न, दोसर दिस अधूर आकांक्षाक प्रतीक। कवि सभ इच्छा पूर्ण होयब आवश्यक नहि मानैत छथि; किछु 'कुमारि' रहबामे मानवीय जीवनक असम्पूर्णता आ एक प्रकारक आत्मरक्षा दूनू निहित भऽ सकैत अछि। शीर्षक केवल स्त्रीक वैवाहिक स्थितिक नाम नहि; आकांक्षाक अधिग्रहणसँ बचल क्षेत्रक रूपक सेहो अछि।

तथापि 'कुमारि'केँ मात्र सौन्दर्यात्मक अनछुइलापन बनाकऽ पढ़ब सीमित होयत। 'सिंदूर'क उपस्थितिमे विवाह-संस्था आ स्त्रीक सामाजिक मान्यताक प्रश्न छिपल अछि। समग्र संग्रहमे जखन भूख, गरीबी, सासुर-नैहर आ कनियाँक करुणा बारम्बार भेटैत अछि, तखन शीर्षकक प्रतीक सामाजिक रूप सँ भारित होइत अछि। एहि दूनू अर्थधारा—व्यक्तिगत अधूरापन आ संरचनात्मक असमानता—एक-दोसराकेँ काटैत नहि, बल्कि उजागर करैत अछि।

लोकधुनक राजनीतिक गजल आ नदीक साक्ष्य

नोरे छै कोसी कमला गंगा किनार हे

नोरेमे घोरल गेलै सिंदूर पिठार हे

राजनीतिक नेता आ झड़कल जनताक शेरवला लोकधुन-आधारित गजलमे कोसी, कमला आ गंगा केवल भूगोलक नाम नहि रहैत। ओ जनपदीय क्षति, विस्थापन, सामुदायिक जीवन आ स्त्रीक मांगलिक चिह्न 'सिंदूर-पिठार'सँ जुड़ि कऽ करुण प्रतीक बनि जाइत छथि। 'नोर'क जल आ नदीक जलक अन्तराल मेटायल प्रतीत होइत अछि। गीतात्मक पुनरावृत्ति एहि करुणाकेँ एकल स्वर सँ सामूहिक विलापमे परिवर्तित करैत अछि।

एहि गजलक शक्ति ध्वन्यात्मक धरातलपर अछि। लोकधुन पाठक नहि, श्रोता सेहो रचैत अछि। किन्तु नदीक वास्तविक राजनैतिक-पर्यावरणीय इतिहास ओतबे पाँतिमे सम्पूर्ण नहि समा सकैत; पाठककेँ शेरसँ पयर बाहर स्थानीय सामाजिक सन्दर्भ

जानबाक आवश्यकता रहैत अछि। कवि एतय इतिहासलेखन नहि, ऐतिहासिक पीड़ाक काव्यचिह्न बनबैत छथि।

कृषि-उत्पादन, पैकार आ पुरस्कारक अर्थव्यवस्था

खेतक उपजा पैकार लेने जाइए

जे बाँचल से सरदार लेने जाइए

देहक कांति चलि गेलै पेटक आगिमे

कलमक धार पुरस्कार लेने जाइए

एहि गजलक पहिल शेर कृषि श्रमक उत्पादन आ वितरणक अधिकारक बीच दूरी देखबैत अछि। उपजा खेतक, लाभ पैकारक; अवशेषपर सरदारक दखल।

उत्पादनसम्बन्धक आलोचना केवल आर्थिक वक्तव्य नहि, छन्दयुक्त सारांश बनैत अछि। दोसर शेरमे शरीरक कांति नष्ट होएब आ कलमक धार पुरस्कार लऽ जायब साहित्यिक प्रतिष्ठानक सम्भावित विडम्बनाक आलोचना अछि। ‘पेटक आगि’ आ ‘पुरस्कार’ एकहि कवितामे आबि आर्थिक आ सांस्कृतिक विषमताकें जोड़ैत अछि।

एहि शेरक जोखिम सेहो अछि : पुरस्कारक प्रसंग जँ सार्वत्रिक आरोप बनि जाय तँ जटिल साहित्यिक संस्थाक अन्तर सभ एकरूप भऽ सकैत अछि। किन्तु ओ जे प्रश्न खोलैत अछि से अनदेखा करबाक योग्य नहि—साहित्यिक यशक वितरण रचनात्मक श्रम आ सामाजिक गरजसँ केना सम्बन्धित अछि? कवि एहि प्रश्नकें पाठकीय असुविधाक रूपमे जीवित रखैत छथि।

गीजर, पीपर आ कनियाँ : विकासक दोहर सत्य

कटबे केलै पीपर हो

आँगन लगलै गीजर हो

कनियाँ भुख्खे कुहरैए

बाहर उठलै सोहर हो

पीपर कटला पर गीजर लगब आधुनिक उपभोग आ पर्यावरणीय क्षतिक संगम अछि। एकटा जीवित, सामूहिक-सांस्कृतिक वृक्षक स्थानपर व्यक्तिगत सुविधा-साधन आयल; 'विकास' एतय प्रगतिक स्पष्ट पर्याय नहि। काव्यक व्यंग्य 'पीपर' आ 'गीजर'क अप्रत्याशित तुक-परिसरमे जन्मैत अछि। एहि दृश्यकें केवल यान्त्रिक आधुनिकताक निन्दा मानि लेब सँ बेसी उपयोगी ई बुझब जे सुविधा कोन मूल्यमे भेटैत अछि आ ओकर लाभ कोन अपनबैत अछि।

'कनियाँ'क भूख आ बाहर उठैत 'सोहर'क विरोध सामाजिक उत्सव आ घरेलू असुरक्षाक भयानक अन्तर उद्घाटित करैत अछि। उत्सवक सामूहिक शोर स्त्रीक शरीरक पीड़ाकें ढाकि दैत अछि। लोकगीतात्मक प्रत्यय 'हो' व्यंग्यकें गेय बनबैत अछि, जखन कि शेरक नैतिक ऊर्जा निजी घावमे अछि। एहि तरहें संग्रहक सामाजिक चेतना स्त्री, भोजन, परिवार आ प्रकृतिक धारा एकहि छोट गजलमे समेटि सकैत अछि।

समापनक शेर : सभ्यता, हिंसा आ लोकक अनुपस्थिति

बिन लोकक संसार बाँचल

जे बाँचल अवतार बाँचल

बाहर बाहर सभ्य बनलहुँ

भीतरमे खुंखार बाँचल

अन्तिम गजल 'लोक'क अनुपस्थितिक प्रश्नसँ खुलैत अछि। संसारक बचल रहब आ लोकक उपस्थित रहब एक बात नहि—ई सामाजिक-राजनीतिक दर्शनक सारगर्भित संकेत अछि। अपराधक संग सरकारक सह-अस्तित्व, दरबारक सर्वव्याप्ति आ भोथ बेकाम भोटक तस्वीर कविता कें चुनावी प्रक्रिया सँ आगाँ नैतिक जीवनक संकट दिसलऽ जाइत अछि।

अन्तिम शेर सभ्यताक बाहरी आवरण आ भीतर जीवित हिंस्र वृत्तिक विरोध बनबैत अछि। एहि बिन्दुपर संग्रह आरम्भक खाली पेटसँ चलि सामाजिक संस्थाक रिक्तता धरि पहुँचैत अछि। शीर्षकक 'कुमारि इच्छा' केवल अधूर प्रेम नहि रहैत; मनुष्यकें मनुष्य

बनेबाक ओ आकांक्षा बनेत अछि जकर पूर्ति समाजक प्रचलित व्यवस्था बारम्बार रोकैत अछि।

गजलकारक आत्मपहचान आ विडम्बनाक काव्यशास्त्र

संग्रहक अनेक गजलमे ‘अनचिन्हार’ तखल्लुस अथवा आवर्ती पद जकाँ उपस्थित अछि। कवि स्वयंकेँ ओ लोकक स्थिति मे राखैत छथि जे सार्वजनिक भाषण देलाक बाद व्यवहारमे सुविधा-केन्द्रित होइत अछि, अपन भीतर विरोधी स्वर सुनैत अछि आ अपूर्ण स्वीकृतिक अनुभव करैत अछि। एहि आत्म-सन्देहसँ व्यंग्य पूर्णतः बाहरी आरोप नहि रहैत। मिथिलाक सार्वजनिक नैतिकतापर प्रहार करैत कवि अपन रचनाकार-पहचानकेँ सेहो प्रश्नक घेरामे रखैत छथि।

शिल्पक स्तरपर ई आत्मविनोद संग्रहक प्रबल पक्ष अछि। पारम्परिक मकतामे तखल्लुसक गौरवक सम्भावना रहैत अछि; एतय तखल्लुस कखनहुँ असफलता, अनिश्चितता अथवा आत्मपरिहासक संकेत बनेत अछि। एहि स्वभावमे मिथिलाक मौखिक परिहासक परम्परासँ आधुनिक आलोचनात्मक व्यक्तित्वक संवाद देखल जा सकैत अछि।

तथापि आत्मसन्देहक आवृत्ति एकटा निश्चित मुद्रा सेहो बनि सकैत अछि। कवि जखन स्वयंकेँ लगातार असुविधाग्रस्त घोषित करैत छथि, तखन पाठककेँ पूछबाक अधिकार अछि जे वैयक्तिक आत्मालोचना कतऽ विशिष्ट जीवनानुभव बनेत अछि आ कतऽ सामान्य कथन। एहि भेदक पहचान आलोचनाक निष्पक्षता लेल आवश्यक अछि।

मैथिली गजल : परम्परा आ परिवर्तनक तुलनात्मक अवलोकन

विदेहमे उपलब्ध ‘मैथिलीक प्रतिनिधि गजल’क परिचय मैथिली गजलक इतिहासकेँ बीसम शताब्दीक आरम्भसँ वर्तमानधरि देखबाक आधार दैत अछि। एहि अभिलेखीय परम्परामे पं० जीवन झाकेँ आरम्भिक प्रलेखित नामक रूपमे राखल गेल अछि; कविवर सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, योगानन्द हीरा आ अन्य रचनाकारक प्रयोगक उल्लेख सेहो भेटैत अछि। एहि अनुक्रमकेँ एकरेखीय

प्रगतिक विजयगाथा नहि बुझबाक चाही; विभिन्न समयमे गजल पद, गीत, शेर, लय आ छन्दबोधक अलग-अलग संगति विकसित भेल होयब सम्भव अछि।

पुरान चरणमे अरबी-फारसी छन्दक ग्रहणक प्रश्न आ मैथिली उच्चारणक अनुरूपता प्राथमिक समस्या रहैत अछि। उत्तरवर्ती चरणमे औपचारिक शुद्धता बनाम लोकगम्यता, गीत-सदृश पंक्ति बनाम शेरक स्वतन्त्रता आ रचनात्मक स्वतंत्रता बनाम छन्दक नियम विषयक विवाद अधिक स्पष्ट होइत अछि। विदेहक ई-साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र एहि विवादकें लेख, प्रतिक्रिया, गजलक प्रकाशन आ छन्द-विवेचनक रूपमे विस्तार देलक। अनचिन्हारक ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’, ‘संदर्भ सहित’ आ संबंधित अध्ययन-विषयक रचना एहि बहसक अभिलेखीय निशानी अछि।

‘अनचिन्हार आखर’सँ ‘जंघाजोड़ी’ आ तत्पश्चात ‘कुमारि इच्छा’धरि कविक स्वघोषित यात्रा रचनाविधानक परिवर्तनक रोचक उदाहरण अछि। पहिल संग्रहकें सरल वर्णिक अभ्यास, दोसरकें स्वयं चुनल मात्राक्रमक प्रयोग आ तेसरकें परम्परागत तथा प्रस्तावित बहरक संगमक रूपमे लेखक स्वयं देखैत छथि। एहि आत्मवर्णनकें हूबहू साहित्येतिहासक प्रमाण मानबाक बदला, एहि रचनाधाराक अन्तर्गत प्रवृत्ति मानब अपेक्षित अछि। ‘कुमारि इच्छा’क वास्तविक उपलब्धि एहि बातमे देखल जाइत अछि जे छन्दसिद्धान्तक झगड़ा भूख, वोट, गाम, स्त्री, नदी आ परिवारक जीवन्त भाषा सँ अलग नहि रहैत।

विदेह शोध-अभिलेखमे अनचिन्हारक ‘काफिया’, ‘काफिया आ बहर’, ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’, ‘बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल’ आ ‘नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना’ सन लेखनक प्रविष्टि ई सिद्ध करैत अछि जे गजलक औपचारिक प्रश्न हुनकर आलोचनात्मक कार्यक केन्द्रीय विषय रहल अछि। एहि सूचीमात्रक आधारपर प्रत्येक लेखक निष्कर्षक समर्थन करब समुचित नहि; तथापि एहि लेखन-क्रमसँ ‘कुमारि इच्छा’क भूमिकाकें लेखकक दीर्घ आलोचनात्मक जिज्ञासाक हिस्सा मानबाक कारण भेटैत अछि।

लोकधुन, निर्बन्ध कविता आ गजलक अन्तर

गीत आ गजलक अन्तर्विरोधकें प्रायः सरल विधा-विभाजनसँ बुझाओल जाइत अछि, मुदा मैथिली साहित्यक बहुविध वाचिक परम्परा एहन कठोर विभाजन स्वीकार नहि करैत। लोकधुनमे आधारित रचना गजल होयबाक सम्भावना नहि खोइबैत, जँ मतला, काफिया-रदीफ, शेरक सम्बन्ध आ घोषित बहरक आवश्यक अनुशासन सँ ओकर संवाद बनल रहय। ‘राम हरे’ आ लोकधुन-आधारित राजनीतिक गजल एहि सम्भावनाक रोचक दृष्टान्त अछि।

अनचिन्हारक रचना ईहो देखबैत अछि जे व्यंग्यक विषय काव्यविधाक एकान्त परिभाषा तय नहि करैत अछि। भूख, बेरोजगारी अथवा सत्ता-विरोधपर दोहा, गीत, मुक्तक आ गजल सभ लिखल जा सकैत अछि। गजल बनबाक निर्णय विषय नहि, संरचना आ वाचिक अर्थनिर्माण पर निर्भर अछि। एही कारण रदीफक मात्र उपस्थिति अथवा पौतिक समान लम्बाइ पर्याप्त कसौटी नहि; काफियाक ध्वनि, बहरक सुसंगति आ शेरक अर्थगत स्वायत्तता सम्मिलित रूपसँ विवेचनीय अछि।

विधाक शुद्धताक आग्रह उपयोगी तखन बनैत अछि जखन ओ नव प्रयोगकें सम्भावना दैत अछि। जँ नियम केवल बहिष्कारक साधन बनय, तँ साहित्यिक विकास बाधित होइ। एहि संग्रहक द्वन्द्व ई अछि जे कवि एक दिस कठोर अरूजी अनुशासन चाहैत छथि, दोसर दिस मैथिली लेल नओ बहर प्रस्तावित करैत छथि। विरोधाभास जकाँ प्रतीत होइत एहि दूनू आग्रहमे सृजनात्मक अवसर अछि : परम्परा मानक दे, भाषा ओकर पुनर्गठन करय।

अर्थ-संयम, पुनरावृत्ति आ काव्यात्मक जोखिम

कविक प्रबल रचना सभमे एकटा भौतिक वस्तु व्यापक नैतिक सङ्कट खोलैत अछि—पेट, माँड़-नोन, पीपर, गीजर, पैकार, सिंदूर। ई ठोस शब्द अमूर्त उपदेशक स्थानपर दृश्य बनबैत अछि। विशेषतः अमीर-गरीबक ‘दिक्कत’क तुलनाक सघनता, कनियाँक भूख आ सोहरक टकराहट तथा खेतक उपजक अपहरण गजलकें स्मृतिमे टिकबैत अछि।

कम प्रभावी स्थल ओ अछि जतय सामान्यीकरणक आवृत्ति पर्याप्त प्रतिरोध बिना अपन निष्कर्ष सुना दैत अछि। सरकारक भ्रष्ट होयब, नेता झूठ बजैत रहब, समाजमे पाखण्ड रहब अथवा दोस्तीक विखण्डन—ई सभ अनुभव सत्य होयब सम्भव अछि; मुदा कविता तखन बेसी गहिर होइत अछि जखन सामान्य कथनक स्थानपर अप्रत्याशित घटना, बिंब वा मानवीय विरोधाभास उपस्थित होइ। संग्रहमे एहन सफल बिंब अछि, किन्तु सभ गजल एकहि स्तरक सघनता प्राप्त नहि करैत।

बहरक अन्तमे टिप्पणीक ऐतिहासिक उपयोगिता निर्विवाद अछि। मुदा जे पाठक शुद्ध काव्यानुभव चाहैत छथि, हुनका रचनाक तुरन्त बाद तकनीकी व्याख्या संगीतात्मक तन्मयतासँ बाहर निकालि सकैत अछि। भविष्यक सम्पादनमे काव्य-पाठ आ छन्द-परिशिष्ट अलग कएल जाय तँ दूनू लक्ष्य अधिक स्पष्ट भऽ सकैत अछि। ई आलोचना मूल संस्करणक मूल्य घटबैत नहि; ओकर शैक्षणिक आ सौन्दर्यात्मक उपयोगक भिन्नता देखबैत अछि।

लैंगिक प्रतिमानक उपलब्धि आ सीमा

संग्रहमे ‘कनियाँ’, ‘बेटी’, ‘सासुर’, ‘नैहर’, ‘सिंदूर’ आदि संकेत स्त्रीजीवनक असमानताकेँ दृश्य बनबैत अछि। भूख आ उत्सवक भिन्नता स्त्रीक अदृश्य श्रम पर तीक्ष्ण प्रश्न अछि। विवाहक संकेत सँ ‘कुमारि इच्छा’क सम्बन्ध स्त्रीकेँ केवल पुरुषक इच्छा-वस्तु बनयबाक बदला सामाजिक रीति आ अपूर्ण आकांक्षाक जटिल क्षेत्रमे प्रवेश करबैत अछि।

तइयो अधिकतर गजल बाहरी द्रष्टाक कथनमे लिखल अछि। स्त्री स्वयं अपन भाषामे दीर्घ प्रतिवाद रखैत नहि देखाइत। एहि कमीकेँ प्रत्येक गजलक दोष बनायब सम्भव नहि, किएक तँ संग्रह सामाजिक व्यंग्यक व्यापक परियोजना अछि; मुदा शीर्षकक स्त्रीलिंग रूपकक कारण स्त्रीक आवाज कतेक स्वतन्त्र रूपे उपस्थित अछि से विचारणीय अछि। स्त्री-अनुभवक नामपर कएल करुणा आ स्त्रीक आत्मनिर्णायक वाणी एक वस्तु नहि—एहि फरकसँ मूल्यांकन अधिक न्यायपूर्ण बनैत अछि।

साहित्येतिहासमे संग्रहक स्थान

‘कुमारि इच्छा’ मैथिली गजलकें नव-छन्दीय प्रयोगक घोषणापत्र आ सामाजिक आलोचनाक लघु-अभिलेख, दूनू रूपमे पढ़बाक आमन्त्रण दैत अछि। लेखक अपन भूमिका द्वारा अनुशासित शिल्पक आग्रह रखैत छथि; रचना द्वारा लोकवाणी, व्यंग्य आ काव्य-संक्षेपक शक्ति जँचबैत छथि। एहि कारण ई पोथी निजी भावुकता सँ बेसी सार्वजनिक जीवनक विसंगतिक काव्य-साक्ष्य बनैत अछि।

मैथिली साहित्येतिहासमे यकर महत्त्व ‘पहिल’ अथवा ‘सर्वश्रेष्ठ’ सन अपरीक्षित विशेषणसँ तय नहि होयत। वास्तविक महत्त्व एहि विशिष्ट संगममे अछि : एकहि संग्रहमे सयटा गजल, विस्तृत शिल्प-विवेचन, नओ नामकरण, लोकधुन-उपयोग, आत्मव्यंग्य, वर्गीय आलोचना आ पाठकक निर्णायक भूमिकाक स्वीकार। एहि गुणक कारण पोथी अध्ययनयोग्य अछि; ओकर छन्दकीय घोषणाक स्वतंत्र परीक्षण भविष्यक शोधक विषय बनी रहत।

निष्कर्ष

‘कुमारि इच्छा’क सबसँ सार्थक पाठ एहि निष्कर्ष धरि पहुँचैत अछि जे कविता मात्र छन्दक विजय नहि आ मात्र सामाजिक नारा सेहो नहि। कविक छन्द-परिश्रम अनगढ़ अनुभवकें लय दैत अछि; वास्तविक भूख, दूटैत सम्बन्ध, स्त्रीक पीड़ा, राजनीतिक स्वांग आ बाजारक असमानता ओहि लयकें अर्थ दैत अछि। दुर्जेय सौन्दर्य तखने जन्मैत अछि जखन दूनू पक्ष परस्पर अवलम्बित होइत अछि।

शीर्षकक ‘कुमारि’ किछु इच्छा अपूर्ण रहबाक स्वीकृति सेहो अछि आ ओ सामाजिक स्थितिक प्रतिरोध सेहो, जाहिमे लोकक मूल अधिकार अपूर्ण छोड़ल जाइत अछि। गरीबी आ अमीरीक अलग-अलग ‘दिक्कत’सँ आरम्भ कएल तुलना एहि शीर्षककें सामाजिक दर्शनक स्तर धरि लऽ जाइत अछि। अन्तिम गजलक लोक-विहीन संसारक बिंब संग पढ़ला पर ई स्पष्ट होइत अछि जे संग्रहक आन्तरिक प्रश्न केवल ‘इच्छा किएक अपूर्ण अछि’ नहि, ‘ओकरा पूर्ण करबाक सामाजिक शर्त ककर हाथमे अछि’ सेहो अछि।

एहि पोथीक उपलब्धि दृढ़ गेयता, लोकभाषिक तीखापन, तकनीकी आत्मसजगता आ सामाजिक प्रश्नक संक्षेपमे अछि; सीमा असमान काव्यगुण, पुनरावृत्त व्यंग्य, बहरक छूट-संबन्धी अनिश्चितता आ स्त्रीक स्वतन्त्र स्वरक अपेक्षाकृत कम उपस्थितिमे अछि। गुण-दोषक एहि संयुक्त विवेचनसँ ‘कुमारि इच्छा’ आधुनिक मैथिली गजलक एकटा बहसउत्पादक, शोधोपयोगी आ सर्जनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण संग्रहक रूपमे उभरैत अछि।

सन्दर्भसूची

मूल पाठ आ विदेहमे सूचीबद्ध ग्रन्थ

- अनचिन्हार, आशीष। कुमारि इच्छा। गजल-संग्रह। विदेह ई-पोथी संग्रह। मूल रचनाक आधार-पाठ।
 - अनचिन्हार, आशीष। अनचिन्हार आखर। गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह। श्रुति प्रकाशन, २०११; विदेह पोथी-सूचीमे अभिलिखित।
 - अनचिन्हार, आशीष। जंघाजोड़ी। गजल-संग्रह। विदेह ई-पोथी संग्रह।
 - अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास। विदेह ई-पोथी संग्रह।
 - अनचिन्हार, आशीष। संदर्भ सहित। गजल-आलोचना। विदेह ई-पोथी संग्रह।
 - अनचिन्हार, आशीष। शब्द-अर्थ-शक्ति। गजल-आलोचनासँ सम्बन्धित कृति। विदेह ई-पोथी संग्रह।
 - ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (सह-सम्पादक)। मैथिली गजल : आगमन ओ प्रस्थान बिन्दु। विदेह पोथी-संग्रहमे उल्लिखित आलोचनात्मक संकलन।
 - ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (सह-सम्पादक)। मैथिलीक प्रतिनिधि गजल : १९०५ सँ २०२२ धरि। विदेह पोथी-संग्रहमे उल्लिखित प्रतिनिधि संकलन।
- विदेहक शोध-अभिलेख आ समालोचनात्मक सामग्री
- अनचिन्हार, आशीष। काफिया। विदेह, शोध-अभिलेख, २०१२।

- अनचिन्हार, आशीष। काफिया आ बहर। विदेह, शोध-अभिलेख, २०१२।
- अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग। विदेह, अङ्क १६५, २०१४।
- अनचिन्हार, आशीष। मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा : स्वरूप आ तत्व निर्धारण। विदेह, अङ्क १५७, २०१४।
- अनचिन्हार, आशीष। बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल। विदेह, अङ्क २५१, २०१८।
- अनचिन्हार, आशीष। नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना। विदेह, अङ्क २५२, २०१८।
- अनचिन्हार, आशीष। दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै। विदेह, अङ्क ३०७, २०२०।
- विदेह। ‘विदेह पोथी-संग्रह’। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- विदेह। ‘विदेह शोध-सूची’।
<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- विदेह। ‘विदेह शोध-लेख : शोध-अभिलेख’।
<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
- विदेह। ‘आशीष अनचिन्हारक गजल-लेखन आ आलोचनाक परिचयात्मक विवेचन’।
https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm

खण्ड ३

गजलशास्त्र : व्याकरण, विमर्श आ समालोचना

मैथिली साहित्यक पुनर्पाठ

१.१७. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजलक रेडी रेकोनर

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

छन्द, भाषा आ सर्जनाक संगम

मूल पोथी : आशीष अनचिन्हार

सारांश

आशीष अनचिन्हारक ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ मैथिली गजलक छन्दोविधान, बहर, रुक्न, काफिया, रदीफ, विभक्ति, उच्चारण आ रचनात्मक संशोधनक विषयमे तैयार कएल गेल एकटा संक्षिप्त, अभ्यासकेन्द्रित मार्गदर्शिका अछि। ई अध्ययन पोथीक भूमिका आ पाँचू खण्डक आन्तरिक विन्यासक विश्लेषण करैत अछि तथा एकर विधागत महत्त्वकें मैथिली गजलक आधुनिक आलोचना-परम्परा, विदेहक साहित्यिक उपक्रम आ अरबी-फारसी-उर्दू गजलशास्त्रसँ तुलना करैत अछि। विशेष ध्यान एहि बातपर देल गेल अछि जे लेखक गजलक परम्परागत तकनीकी पदावली ग्रहण करैत काल मैथिलीक विभक्ति-संलग्नता, लघु-गुरु सम्बन्धी उच्चारण, चन्द्रबिन्दु, रेफ, संयुक्ताक्षर आ तखल्लुसक स्थानीय प्रयोग लेल विशिष्ट निर्णय प्रस्तुत करैत छथि। अध्ययनक निष्कर्ष अछि जे पोथीक बड़ उपलब्धि नियमक सुलभ प्रस्तुति, उदाहरणसँ अभ्यास आ अपन पूर्व निर्णयक संशोधन करबाक खुलापनमे अछि; मुदा ध्वनि आ लिपिक सम्बन्ध, छन्दक अनिवार्यता, मुसल्सल गजलक मूल्यांकन, तथा काफियाक किछु निषेधात्मक नियमक सार्वभौमिकता पुनर्विचारक विषय बनैत अछि। ई कृति केवल आरम्भिक लेखकक सहायक पोथी नहि, अपितु मैथिलीमे विधाविशेषक आलोचनात्मक शब्दावली विकसित करबाक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि।

बीजशब्द : मैथिली गजल; आशीष अनचिन्हार; बहर; रुक्न; काफिया; रदीफ; विभक्ति; ध्वनिविज्ञान; छन्दशास्त्र; साहित्येतिहास; विदेह।

सन्दर्भसूची

प्रस्तावना : संक्षिप्त पोथीक व्यापक प्रश्न

गजलकें केवल दू-दू पाँतिक भावपूर्ण रचना मानि लेनाइ जतेक सहज अछि, ओकर तकनीकी संरचनाकें बुझब ततेक सरल नहि। शेरक स्वायत्तता, काफिया-रदीफक आवर्तन, बहरक नियमितता आ भाषाक लय मिलिकय गजलकें अन्य गीतात्मक विधासँ अलग करैत अछि। मैथिलीमे एहि विधाक ग्रहणक समय दूटा परस्पर सम्बन्धित प्रश्न सामने अबैत अछि : पहिल, परम्परागत गजलशास्त्रक मूल संरचना केना सुरक्षित रहय; दोसर, मैथिलीक अपन ध्वनि, रूप आ वाक्यगत प्रकृतिकें एहि संरचनाने केना अभिव्यक्त कएल जाय। आशीष अनचिन्हारक ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ एहि दूनू प्रश्नक बीच ठाढ़ भऽ कय विधाक प्रारम्भिक प्रशिक्षणक एकटा व्यवस्थित प्रस्ताव प्रस्तुत करैत अछि।

पोथीक शीर्षकमे प्रयुक्त अंग्रेजी पद ‘Ready Reckoner’ विशेष अर्थ रखैत अछि। ई ग्रन्थ गजलक समग्र सौन्दर्यशास्त्र लिखबाक दावा नहि करैत, बल्कि कम समयमे प्रयोगयोग्य नियम, संक्षिप्त व्याख्या आ उदाहरण उपलब्ध करए चाहैत अछि। लेखक स्वयं भूमिका मे स्पष्ट करैत छथि जे संक्षेपणक परिणामस्वरूप अवधारणा-विस्तार कम भऽ सकैत अछि आ विस्तृत अध्ययनक आवश्यकता अलग सँ रहैत अछि। एहि आत्मसीमाबोधकें ग्रन्थक दुर्बलता मानल जाए वा विधागत ईमानदारी, ई आलोचनात्मक परीक्षणक पहिल मुद्दा अछि। हमरा मतमे एकर मूल्य तखन बेसी प्रकट होइत अछि जखन एकरा अन्तिम प्रमाणग्रन्थक बदला कार्यशाला-सहचर मानल जाय। [१]

एहि अध्ययनमे पोथीक कथन आ अध्ययनकर्ताक मूल्यनिर्णयक बीच स्पष्ट भेद राखल गेल अछि। लेखक जतऽ कोनो नियम प्रस्तावित करैत छथि, ततऽ ओकर उदाहरण आ तर्कक सामर्थ्यक परीक्षण आवश्यक अछि; कोनो एक परम्परामे प्रचलित विधानकें बिना परीक्षण सभ भाषा आ सभ समयक लेल अनिवार्य नियम मानल उचित नहि। तेनाही गजलक नव रचनाकारक सुविधा लेल बनल व्यावहारिक सरलीकरणकें भाषावैज्ञानिक सिद्धान्तक पूर्ण विकल्प मानबो सावधानिक विषय अछि।

अध्ययनक उद्देश्य आ आलोचनात्मक दृष्टि

ई शोध-निबन्धक उद्देश्य चारि स्तरपर केन्द्रित अछि। प्रथम स्तरपर पोथीक पाँचू खण्डमे व्यवस्थित तकनीकी सामग्रीक स्वतंत्र पाठविश्लेषण प्रस्तुत कएल गेल अछि। दोसर स्तरपर लघु-गुरु, अक्षर-मात्रा, उच्चारण-लिपि, विभक्ति-काफिया आ भाव-शिल्प सम्बन्धी प्रस्तावक तर्कसंगत परीक्षण कएल गेल अछि। तेसर स्तरपर मैथिली गजलक ऐतिहासिक विकास आ विदेहक माध्यमसँ विकसित समकालीन आलोचनात्मक वातावरणमे एहि कृतिक स्थानक तुलना कएल गेल अछि। चारिम स्तरपर प्रशिक्षण, रचना-संशोधन आ आलोचनाक सम्बन्धक आधारपर एकर उपयोगिता आ सीमाक निष्कर्ष निकालल गेल अछि।

पद्धतिक दृष्टिसँ ई कृति-केन्द्रित समीक्षात्मक अध्ययन अछि। मूल पोथीक सामग्री प्राथमिक आधार अछि। विदेहक पोथी-सूची, शोध-सूची आ ओतहि उपलब्ध गजल-विषयक तुलनात्मक लेख सभकेँ साहित्यिक सन्दर्भक रूपमे लेल गेल अछि। गजलक अरबी-फारसी-उर्दू परम्परासँ तुलना वैचारिक स्तरपर अछि; एहि परम्पराक समग्र सर्वेक्षणक दावा एतऽ नहि अछि। बाह्य साहित्यिक इतिहासक दावाक अपेक्षा पोथीमे प्रत्यक्ष उपलब्ध शास्त्रीय प्रस्ताव आ अभ्यासक आलोचनात्मक परीक्षणकेँ बेसी महत्त्व देल गेल अछि। [१][२][३][४]

कृतिक स्वरूप, विन्यास आ आत्मपरिचय

मूल पोथीमे शीर्षक, समर्पण, ‘अनचिन्हारक बात’ शीर्षक लेखकक वक्तव्य, पाँच खण्ड आ लेखक-परिचय व्यवस्थित अछि। एकर संरचना सामान्य शोधग्रन्थक रैखिक इतिहासक बदला प्रशिक्षण-पुस्तिकाक क्रम अपनबैत अछि। पहिल खण्ड आधारभूत छन्दविधान; दोसर गजलक अङ्ग-उपांग आ काफिया; तेसर मैथिलीक विभक्ति आ स्वर-साम्य; चारिम संयुक्ताक्षर, ह्रस्व स्वर, रेफ आ ईता-दोष; पाँचम आघात, मकता, रचनाक सुधार आ बहरे-मीरक परिचय देइत अछि। एहि अनुक्रममे ‘पहिने भाषा-छन्दक औजार, तखन रचना’ वाला शिक्षण-दृष्टि सक्रिय अछि। [१]

लेखक गजलकें तकनीकी आ भावात्मक दूनू पक्षसँ देखैत छथि, मुदा ई संक्षिप्त पोथी तकनीकी प्रशिक्षण लेल सुरक्षित करैत छथि। एकर अर्थ ई नहि जे भावक उपेक्षा उचित अछि; वस्तुतः ग्रन्थक आरम्भिक कथन दूनू पक्षक आवश्यकता स्वीकार करैत अछि। एतऽ कृतिक पहिचान विरोधाभासी नहि, बल्कि स्तरभेदपर आधारित अछि—एक ग्रन्थमे नियमक अभ्यास, व्यापक कृतिमे भाव आ साहित्येतिहासक विस्तार। ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’क उल्लेख एहि स्तरभेदक संकेत अछि; ओ पोथी विदेहक पोथी-सूचीमे स्वतंत्र कृति रूपमे दर्ज अछि। [१][२]

भूमिकाक एकटा उल्लेखनीय गुण लेखकक आत्मसमीक्षा अछि। ओ अपन पूर्व विवेचनक किछु त्रुटि सुधारबाक सूचना दैत छथि। गजल-जेकाँ नियमप्रधान विधामे ई स्वीकारोक्ति आलोचनात्मक वातावरणक आवश्यक गुण अछि, कारण मानक स्थिर निषेधसँ नहि, युक्तिपूर्ण संशोधनसँ बनैत अछि। एहि व्यवहारसँ लेखक स्वयंकें अन्तिम निर्णायकक स्थानपर नहि, प्रमाण आ परीक्षणक सहभागी मानबाक सम्भावना खोलैत छथि। तथापि ग्रन्थक किछु स्थानपर निर्णयक भाषा अत्यन्त निश्चयात्मक सेहो अछि; एहि द्वैतक चर्चा आगूक खण्डमे प्रासंगिक बनत।

प्रथम खण्ड : लघु-गुरु, बहर आ रुक्नक आधारभूत पाठ

पहिल खण्ड गजलशास्त्रक तकनीकी पृष्ठभूमि निर्मित करैत अछि। लेखक बहरकें एक गजलक पाँति सभमे समान मात्रा-क्रमक पालनक रूपमे परिभाषित करैत छथि। एतऽ कुल मात्राक समानता आ मात्राक अनुक्रमक समानतामे अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। दू पाँतिक कुल योग समान भए सकैत अछि, मुदा लघु आ गुरु बदलि गेलासँ ओकर वजन आ लय बदलि सकैत अछि। एहि कारणे ग्रन्थ १ आ २क संकेतन अपनबैत अछि आ रुक्नक संयोजनक अभ्यास करबैत अछि। ई संख्यात्मक भाषा नव लेखक लेल प्रवेश-द्वार बनैत अछि, विशेषतः जखन पारम्परिक नाम अनभिज्ञ हो। [१]

रुक्नक परिचयमे खमासी आ सुबाई रूप, फऊलुन, फाइलुन, फाइलातुन, मफाईलुन, मुस्तफाइलुन आदि नाम तथा तिनकर क्रमिक वजनक सूची देल गेल अछि। लेखक

गणितीय अनुक्रमक सहायतासँ रुक्न याद करबाक उपाय देखबैत छथि। ई शिक्षण-रचना उल्लेखनीय अछि, कारण ध्वनिक कठिन नामकें स्मरणीय लघु-गुरु संरचनामे बदलि देल जाइत अछि। काव्य-रचनाक विद्यार्थीक लेल ई तरीका सूत्र आ प्रयोगक बीच पुल बनैत अछि। मुदा सूत्र स्मरण स्वयं लयबोधक पर्याय नहि; श्रवण, उच्चारण आ गेयता सँ एकर पुष्टि आवश्यक रहैत अछि।

लेखक संयुक्ताक्षरसँ पूर्ववर्ती अक्षरक वजन, अनुस्वार-चन्द्रबिन्दुक भेद, विसर्ग आ शब्द-सीमापर मात्रा-क्रममे सम्भावित परिवर्तन पर विचार करैत छथि। ‘घर’, ‘बिगड़ि’, ‘भिनसर’, ‘कबकब’ सन शब्दक उदाहरण, शब्दक आन्तरिक आघात आ मात्राक तालमेल बुझबैत अछि। विभक्ति वा शब्द-समूह जुटलाक बाद उच्चारण बदलि सकैत अछि—ई अवलोकन विशुद्ध लिखित-नियमसँ आगू बढ़ि कय वाक्-व्यवहार दिस ध्यान आकृष्ट करैत अछि। मैथिली जेकाँ बहुरूपी, बोलचालसमृद्ध भाषामे एहन ध्यान अत्यन्त उपयोगी अछि।

एहि स्थानपर पहिल महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक प्रश्न उभरैत अछि। लेखक कतिपय प्रसंगमे अक्षरक पारम्परिक दीर्घता, उच्चरित मात्रा आ उच्चारणक आघातकें एकै गणनाक प्रवाहमे राखैत छथि। व्यावहारिक प्रशिक्षण लेल ई सुलभ अछि; मुदा आधुनिक ध्वनिवैज्ञानिक दृष्टिसँ लिपिगत अक्षर, स्वरक अवधि, बलाघात आ छन्दगत वजन अलग विश्लेषण-स्तर छथि। एक शब्दक छन्दीय उपयोग स्पष्ट करबाक लेल उच्चारणक व्याख्या आवश्यक अछि, परन्तु एतऽ देशज उच्चारणक विविधताक लेल अधिक सावधानी चाही। एहि ग्रन्थक संक्षेपात्मक विधा एहि विश्लेषणक विस्तारकें सीमित करैत अछि।

पहिल खण्डमे ‘सौती मोशायरा’क अभ्यासक उल्लेख विशेष ध्यानयोग्य अछि। लेखक अर्थसँ अस्थायी दूरी राखि बहर, काफिया आ रदीफक मात्राभ्यास करबैत छथि। संगीत सीखबाक आरम्भमे स्वर-अभ्यास जहिना शब्दार्थसँ स्वतंत्र होइत अछि, तहिना गजलमे संरचनाक प्राथमिक अभ्यास रचनाकारकें लयक अनुशासन सिखा सकैत अछि। मुदा जँ ई साधनकें अन्तिम साहित्यिक आदर्श बना देल जाय तँ शेरक ध्वनि-अर्थ सम्बन्ध क्षीण

होयत। लेखक स्वयं अभ्यासक प्रसंगमे अर्थहीनताक सीमित भूमिका दैत छथि; आलोचनाक दृष्टिसँ एहि सीमांकनकेँ विशेष रूपसँ याद राखब आवश्यक अछि। बहरक वर्गीकरणमे लेखक मूल, मिश्रित आ परिवर्तित बहरक शास्त्रीय पदावलीक परिचय दैत छथि तथा सुविधा लेल ‘समान’, ‘अर्धसमान’ आ ‘असमान’ सन नामक प्रयोग करैत छथि। एहि नामकरणमे केवल अनुवाद नहि, शिक्षण-व्यवस्थाक पुनर्गठन अछि। जखन नव पाठक पारम्परिक रुक्नक अन्तर्सम्बन्ध समझबाक प्रयास करैत छथि, तखन एहि सरलीकरणक उपयोगिता स्पष्ट होइत अछि। परन्तु वर्गीकृत संख्याक परम्परागत स्रोत, परिवर्तित रूपक वैधता आ अलग शास्त्रीय परम्पराक मतभेदक व्यापक प्रमाण नहि देल गेल अछि। एहि लेल ई सूची प्रारम्भिक मार्गदर्शनक रूपमे अधिक विश्वसनीय अछि, शोधस्तरक अन्तिम परिगणनाक रूपमे कम।

द्वितीय खण्ड : शेर, मतला, रदीफ आ काफियाक व्याकरण

दोसर खण्ड गजलक बाह्य पहचानसँ ओकर आन्तरिक संयोजन दिस पाठककेँ लऽ जाइत अछि। लेखक दू पाँतिक शेरक स्वायत्त कथ्यपर बल दैत छथि, मतलामे दूनू मिसरामे काफिया-रदीफ तथा बादक शेर सभक दोसर मिसरामे एहि क्रमक पुनरावृत्तिक विधान रखैत छथि। मुसल्सल आ गैर-मुसल्सल गजल, हुस्ने-मतला, गैर-मुरद्दफ गजल, तहलीली रदीफ आ तकाबुल-ए-रदीफ सन पदावलीकेँ उदाहरणक सहायतासँ समझाओल गेल अछि। एहि भागक बड़ विशेषता ई अछि जे शब्दावली स्वतंत्र कोश नहि बनि रहि जाइत; प्रत्येक पदक सम्बन्ध रचनाक व्यवहारसँ जोड़ल जाइत अछि। [१]

काफियाक चर्चा विशेष विस्तार पबैत अछि। लेखक समान ध्वनि वा मात्रा मात्र नहि, काफिया बनबैत शब्दक अन्तिम अक्षर, ओकर पूर्ववर्ती स्वर आ क्रमिक साम्यक परीक्षण करैत छथि। ‘राग-ताग-भाग’ सन शब्दसभक माध्यमसँ ई स्पष्ट कएल जाइत अछि जे काफिया केवल ऊपरसँ मिलैत अन्तिम अक्षरक नाम नहि, बल्कि पुनरावृत्त ध्वनिसंरचनाक विधान अछि। ओ पाठककेँ शब्दक अन्तसँ पाछाँ लौटि कय साम्य

खोजबाक अभ्यास करबैत छथि। इएह प्रक्रिया काफियाक भीतर निहित सूक्ष्म रूपक निरीक्षण सिखबैत अछि।

रदीफक विवेचनमे अक्षरगत समानता आ अर्थगत विविधताक अनुमति एकटा रचनात्मक बिन्दु अछि। एके शब्दक पुनरावृत्तिसँ सभ ठाम एके अर्थ अनिवार्य नहि; एहन भिन्न अर्थ शेरक बहुअर्थी सम्भावना बढ़बैत अछि। एहि ठाम गजलक औपचारिक पुनरावृत्ति अर्थक जड़ता नहि, अर्थ-विस्तारक माध्यम भऽ सकैत अछि। काफियाक पूर्वानुमान आ रदीफक प्रत्यावर्तनक कारण पाठकक मनमे जे अपेक्षा बनैत अछि, शेर ओकरा पूरा करैत अथवा भङ्ग करैत प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। एहि सौन्दर्यात्मक कार्यप्रणालीपर पोथी विस्तारसँ नहि ठहरैत, मुदा लेखकक उदाहरण एकर सम्भावना स्पष्ट करैत अछि।

दोसरा दिस, मुसल्लसल गजलकेँ अपेक्षाकृत कम मान्यता देबाक लेखकक कथन विधागत मूल्यनिर्णयक एक उदाहरण अछि। शेरक स्वायत्तता निश्चित गजलक प्रखर गुण अछि; तथापि विषयगत निरन्तरता अपनहि काव्यगुणक हानि नहि करैत। एक विषयक भीतर अलग दृष्टिकोण, अर्थक क्रमिक परिवर्तन आ प्रतीकक आवृत्ति सम्भव अछि। तँ मुसल्लसल आ गैर-मुसल्लसलकेँ प्रकारभेद रूपमे स्वीकारब उचित, मुदा साहित्यिक मूल्यांकनक एकमेव आधार मानब उचित नहि। एहि आलोचनात्मक अन्तरसँ पोथीक नियमात्मक पक्ष आ आधुनिक पाठकक सौन्दर्यानुभवक बीच संवाद बनैत अछि।

गजलक शेरक न्यूनतम संख्याकेँ सम्बन्धित जे निर्देश देल गेल अछि, ओकरा सेहो प्रचलित शिक्षणमानक आ ऐतिहासिक विविधता बीच रखबाक आवश्यकता अछि। परम्परागत गजलसभक आकार समय, भाषिक परिवेश आ सम्पादकीय परम्परामे बदलैत रहल अछि। पोथीक निर्देश आरम्भिक अभ्यास लेल अपन स्थानपर उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा विधाक सर्वकालिक एकल सीमा बुझनाइ आलोचनात्मक रूपसँ पर्याप्त नहि। लेखकक अभिप्राय नियमबद्धता बनौने राखब अछि, जबकि इतिहास कखनो-कखनो अपवाद सेहो सामने अनैत अछि।

तृतीय खण्ड : विभक्ति, स्वर-साम्य आ मैथिलीकरणक प्रश्न

तेसर खण्ड एहि पोथीक सभसँ महत्त्वपूर्ण स्थानीय हस्तक्षेप सभमेसँ एक अछि।

मैथिलीमे विभक्ति-संलग्न लेखन, संज्ञाक रूपविकास आ उच्चारणक परम्परा गजलमे काफिया तय करबाक समय समस्या आ सम्भावना दूनू उत्पन्न करैत अछि। लेखक 'कलमसँ' आ 'पतनसँ' सन भिन्न मूल शब्दपर एके विभक्तिक संलग्नताक स्थितिक परीक्षण करैत छथि, आ फेर प्रश्न करैत छथि जे समान विभक्ति काफियाक अङ्ग बनत अथवा रदीफक। ई समस्या केवल वर्तनीक नहि; छन्द, ध्वनि आ व्याकरणक अन्तर्सम्बन्धक समस्या अछि। [१]

एहि खण्डमे विभक्ति हटा कय शेष मूल शब्दक साम्यक परीक्षण एक व्यावहारिक कसौटीक रूपमे सामने अबैत अछि। जँ विभक्ति हटेलाक बादो ध्वनि-साम्य सुरक्षित रहैत अछि तँ रदीफ मानबाक सम्भावना उत्पन्न होइत अछि; जँ मूल शब्द आपसमे साम्य नहि राखैत, तखन आकलन बदलैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई नियम महत्त्वपूर्ण एहि कारणे अछि जे मैथिलीक जीवित व्याकरणकेँ अरबी-उर्दू गजलशास्त्रक निष्क्रिय अनुकरणक अधीन नहि करैत; उलटे विधाक भीतर भाषिक रूपक न्यायसंगत स्थान माँगैत अछि।

विशेष रूपसँ पाँतिक बीचमे विभक्ति रहबाक उदाहरण मैथिलीकरणक सूक्ष्म प्रक्रिया देखबैत अछि। लेखकक परीक्षणमे शब्दक सीमा आ रदीफक सीमा सदैव एक-दोसरासँ यथावत् नहि मिलैत। 'हमरा संगमे आम छै' आ 'हमरा हाथमे आम छै' जेकाँ रचनाक संरचनामे विभक्ति-संलग्न शब्दक भीतर काफिया-रदीफक सम्बन्ध अलग ढङ्गसँ व्याख्यायित होइत अछि। ई उदाहरण एतऽ केवल तकनीकी अपवाद नहि, मैथिली वाक्यरचनाक आन्तरिक दबावक प्रमाण अछि। स्थानीय भाषाक संरचना स्वयं परम्परागत विधाक अर्थनिर्धारणमे हस्तक्षेप करैत अछि।

लेखक स्वयं एहि प्रकारक छूटक दुरुपयोगक आशङ्का उठबैत छथि। ई आत्मसजगता महत्व रखैत अछि, कारण नियमक विस्तार यदि परीक्षणहीन भऽ जाय तँ काफियाक साम्य आ रदीफक पहचान मनमाना भऽ सकैत अछि। समीक्षाक दृष्टिसँ बेहतर उपाय ई

होयत जे लेखकक प्रस्तावित अपवादक उदाहरणसँ संगहि प्रतिउदाहरण, उच्चारणभेद आ क्षेत्रीय बोलीक परीक्षण रखल जाय। एहि बिना एक शिक्षकक उचित सुविधा कखनो सार्वत्रिक विधानक कठोर रूप धारण कऽ सकैत अछि।

मात्रा-आधारित काफियाक विवेचनमे लेखक ‘ई’, ‘आ’, ‘ऊ’, ‘ए’, ‘ऐ’, ‘ओ’ आ ‘औ’ सम्बन्धी उदाहरण दैत छथि। कोनो स्वरक उच्चार्य रूप आ ओकर मात्रारूपमे जे सम्बन्ध अछि, ओकरा देखबैत लेखक समान ध्वनि आ समान अक्षर समूहक अनेक स्तर अलग करैत छथि। एतऽ एकटा मूलभूत प्रश्न अछि : काफिया कतेक दूर धरि श्रवणपर निर्भर रहत आ कतेक दूर लिपिक समानतापर? लेखक जखन समान वर्तनीक संरक्षण आवश्यक मानैत छथि, तखन ध्वनि-साम्यक सामान्य आधारक संग एक प्रकारक लिखित-नियमात्मकता सेहो जुड़ि जाइत अछि।

एहि खण्डक आलोचनात्मक महत्त्वक दोसर पक्ष लेखकक अपन रचनाक संशोधन अछि। पूर्व प्रकाशित गजलक काफियासभकेँ बादक कसौटीपर पुनः परखिकय किछु प्रयोग असंगत ठहराओल गेल अछि। ई घोषणा काव्यशास्त्रक इतिहासमे विशेष अर्थ रखैत अछि। नियम बनबैत समय अपन साहित्यिक प्रतिष्ठाकेँ बचाएबाक लेल अपवाद नहि गढ़ि, बल्कि अपन पूर्व कविता पर नब सिद्धान्त लागू करब—ई आलोचनात्मक उत्तरदायित्वक संकेत अछि। तथापि एतऽ ईहो जरूरी अछि जे नब नियमक सौन्दर्यात्मक आधार स्वतंत्र रूपसँ परीक्षित हो; आत्मसुधार अपने-आप सिद्धान्तक सत्यताक अन्तिम प्रमाण नहि।

चारिम खण्ड : उच्चारण, रेफ, संयुक्ताक्षर आ ईता-दोष

चारिम खण्ड भाषिक सूक्ष्मतासँ भरल अछि। संयुक्ताक्षर, ह्रस्व ‘इ’ आ ‘उ’क व्यवहार, चन्द्रबिन्दु, रेफयुक्त आ पूर्ण ‘र’वाला शब्दक अन्तर, स-श-ष तथा न-ण सन ध्वनिभेद आ ईता-दोषक परीक्षण—ई सभ विषय गजलक तकनीकी अध्ययनकेँ सीधा मैथिली भाषाविज्ञानक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। लेखक एकहि शब्दक लिखित आ उच्चरित रूप बदलि सकबाक उदाहरण दैत छथि। एहि बिन्दुपर गजल केवल बाहरसँ आयल विधा

नहि रहैत; ओकर नियम मैथिलीक स्थानीय उच्चारण प्रणालीसँ संवाद करए लगैत अछि। [१]

ह्रस्व ‘इ’ आ ‘उ’क सम्बन्धमे लेखक काफियाक अक्षरगत अनुशासनपर बल दैत छथि। ‘माटि’ जेकाँ शब्दक उच्चारणक अन्तर देखबैत ओ लिखित ‘इ’क उपस्थितिक संग काफियाक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। एहन अवलोकनक महत्व एहि बातमे अछि जे मैथिली भाषाक बोलल रूप निश्चेष्ट आ एकरूप नहि, आ एके वर्तनीक अनेक उच्चारण सम्भव छथि। मुदा जखन लेखक विशिष्ट काफियासँ भिन्न रूपकें पूर्णतः निषिद्ध करैत छथि, तखन उच्चारण-क्षेत्रक भेद, लोकप्रयोग आ वास्तविक ध्वनि-साम्यपर स्वतंत्र परीक्षण अपेक्षित अछि।

रेफ आ पूर्ण ‘र’क उदाहरण विशेष रूपसँ प्रासंगिक छथि। संस्कृतनिष्ठ शब्दक रेफयुक्त रूप तथा लोकप्रचलित ध्वनिरूपक बीच अन्तर मैथिलीमे प्रायः भेटैत अछि। लेखक लिखित परम्परा आ जीवित उच्चारणक टकरावकें काफियाक कसौटी पर रखैत छथि।

एतऽ कृतिक सबल पक्ष उदाहरणक चयन अछि; सीमित पक्ष किछु स्थानपर मानक उच्चारणक कल्पनाकें बोलिक विविधतासँ ऊपर राखि देब अछि। साहित्यिक भाषाक मूल्य एहि द्वन्द्वक समाधानमे अछि, नहि कि कोनो एक विकल्पक सर्वत्र विजयमे।

ईता-दोषक व्याख्या चारिम खण्डक विशेष विधिशास्त्रीय उपलब्धि अछि। लेखक मात्रा, प्रत्यय, उपसर्ग अथवा सन्धिसँ बनल शब्दक आधारक तुलना करैत छथि। यदि सतहपर काफिया मिलैत हो, मुदा मूलक अर्थसम्बन्ध आ तुकान्त संरचना निर्दिष्ट शर्त पर खरा नहि उतरत, तखन ईता-दोषक चर्चा उठैत अछि। ‘बीमारी-हरामी’ आ ‘दोस्ती-दुश्मनी’ सन उदाहरणक आधारपर लेखक शब्दनिर्माणक परतकें खोलि देखबैत छथि। एहि प्रक्रियामे व्याकरण, व्युत्पत्ति आ ध्वनि एके विश्लेषणमे सम्मिलित होइत अछि।

तथापि ईता-दोषक नियम लागू करैत काल शब्दक मूलरूप निकालबाक प्रक्रिया स्वयं एक विवादित बिन्दु बनि सकैत अछि। भाषा मे प्रत्ययक उत्पादकता, ऐतिहासिक उधार, अर्थक नवीनीकरण आ बोलचालक रूप परिवर्तनक कारणे प्रत्येक शब्दकें स्पष्ट रूपसँ एक मूल आ एक प्रत्ययमे बाँटब सम्भव नहि। एक शब्दक आजुक अर्थ ओकर

ऐतिहासिक मूलसँ अलग भऽ सकैत अछि। तँ काफियाक सतही ध्वनि-साम्य, शब्दरचनात्मक इतिहास आ पाठकक अर्थानुभव—तीनूकेँ अलग-अलग जाँचब उचित होयत। एहि सावधानीसँ लेखकक प्रस्तावक उपयोगिता बनल रहैत अछि, मुदा अनावश्यक निषेध घटि सकैत अछि।

समग्र रूपेँ चारिम खण्डक केन्द्रीय प्रश्न अछि : मैथिली गजलकेँ अपन भाषिक पहचान कोना भेटत? लेखकक उत्तर एकरेखीय नहि। किछु प्रसंगमे पारम्परिक अरुजक दृढ़ पालन, दोसर प्रसंगमे मैथिली उच्चारणक सापेक्ष छूट, आ तेसर प्रसंगमे लिपिसम्बद्ध निश्चितता—तीनू एक साथ भेटैत अछि। ई अन्तर्विरोध नहि त’ कमसँ कम एक सक्रिय वैचारिक तनाव अवश्य अछि। एहि तनावकेँ आलोचनाक विषय बनायब चाही, कारण स्थानीय गजलशास्त्रक विकास एही संघर्षसँ सम्भव अछि।

पाँचम खण्ड : आघात, मकता आ संशोधनक सर्जनात्मक अनुशासन
पाँचम खण्ड पहिल खण्डक आधारभूत मात्राविचारकेँ फेर उच्चारणक आघातक दृष्टिसँ खोलैत अछि। ‘घर’, ‘कमल’ आ ‘भिनसर’ सन शब्दक भिन्न उच्चारण सम्भावना देखबैत लेखक अर्थक सन्दर्भमे छन्दकीय निर्णय लेबाक आग्रह करैत छथि। एतऽ एकटा महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रकट होइत अछि : मात्राक विश्लेषण शब्दार्थसँ निरपेक्ष नहि भऽ सकैत। किछु ध्वनि-क्रम अलग अर्थ उत्पन्न करैत अछि; एहन स्थिति मे गजलकारकेँ अर्थ रक्षाक संग बहर निर्वाह करबाक अछि। एहि द्वारा आरम्भिक ‘पहिने तकनीक’ वाला विधान अधिक परिष्कृत रूप पबैत अछि।

मकताक परिचयमे लेखक तखल्लुसक स्थान आ नामक व्याकरणिक परिवर्तनक चर्चा करैत छथि। मैथिलीमे नामक संग विभक्ति जुड़ि सकैत अछि; ई रूपान्तरण मकताक वैधताकेँ नकारैत नहि, बल्कि गजलक अन्तिम शेरमे कविक आत्मउपस्थितिक स्थानीय व्याकरण बनबैत अछि। लेखक नाम आ उपनामक प्रयोगमे संगतिक आग्रह करैत छथि तथा उद्धरण-चिह्न लगा देलासँ नामक अर्थ-संभावना सँकुचित भऽ सकबाक तर्क दैत

छथि। एहि सूक्ष्म विवेचनमे काव्य-व्यक्तित्व, व्याकरण आ अर्थक बहुलता एक साथ उपस्थित अछि।

पाँचम खण्डक चरम बिन्दु जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल-संशोधनक अनुशीलन अछि। मूल रचनाक भिन्न-भिन्न पाँतिक मात्राक्रम देखल गेल अछि आ पाँतिसभकें समान अनुक्रममे अनबाक लेल संशोधन प्रस्तुत अछि। संशोधित मतलाक दू पाँति एहि प्रकार अछि—

टूटल छी तँइ गजल कहै छी

भूखल छी तँइ गजल कहै छी

एहि दू पाँतिक पुनरावृत्ति स्वरक माध्यमसँ व्यक्तिक टूटन आ भूखकें गजल कहबाक प्रेरणासँ जोड़ैत अछि। 'टूटल' शारीरिक वा मानसिक विखण्डनक संकेत देइत अछि, जबकि 'भूखल' जीवनक भौतिक अभावक। समान रदीफ भावक एकरेखीय पुनरावृत्ति नहि, बल्कि अनुभवक दू अलग कारणकें एक वाक्य-लयमे बाँधि दैत अछि। [१]

पूरा संशोधन-अभ्यासमे पहिल विचारक शब्द-पुनर्संरचना होइत अछि। ई शिल्प सिखयबाक दृष्टिसँ उपयोगी अछि, किन्तु एकर साहित्यिक परिणाम मिश्रित अछि। पहिल मसविदामे उपस्थित किछु प्रसंग बदलिए जायत अछि; किछु नव पाँतिक संग मूल कथ्यक सुसम्बद्धता सेहो बदलैत अछि। बहर बचबैत समय अनुभवक स्वाभाविकता अथवा कथ्यक अर्थ-प्रवाह कमजोर पड़ल त' संशोधनकें पूर्ण सफलता नहि कहल जा सकैत। एतऽ पाठककें दू कसौटी एक साथ रखबाक अछि—मात्राक समानता आ शेरक कलात्मक एकता। तकनीकी रूपसँ दोषमुक्त शेर सदैव प्रभावशाली शेर नहि होइत, आ प्रभावशाली कथ्यकें विधाक अनुरूप संशोधित करब अलग प्रकारक सर्जनात्मक श्रम माँगैत अछि।

लेखक अन्तमे बहरे-मीरक परिचय दैत छथि आ नव गजलकारक लेल एकर सुविधाक उल्लेख करैत छथि। एहि प्रसंगमे अपेक्षाकृत उदार वजन-ग्रहण, दू अलग शब्दक उच्चारणक सम्भावित मेल तथा मैथिलीमे नब बहर रचनाक विचार महत्वपूर्ण अछि। ई

केवल अनुकरणक अभ्यास नहि, विधाक स्थानीय सर्जनशील विस्तारक प्रस्ताव अछि। मुदा छूटक प्रचार आ नियमित अभ्यासक बीच भेद राखबाक लेखकक चेतावनी अर्थपूर्ण अछि : आरम्भिक सीखमे मूल संरचना समझि लेना चाही, अन्यथा अपवादकें साधारण नियम मानिकय भ्रम उत्पन्न होयत।

उद्धरणक सन्निकट पाठविश्लेषण : तकनीक आ अनुभूतिक संयोग

पोथीक आरम्भिक कथनमे लेखक गजलक दू पक्ष—तकनीकी अथवा छन्दशास्त्रीय आ भाव—समान रूपसँ आवश्यक मानैत छथि। ई प्रस्ताव बहुधा गजलकें केवल ‘वजन पूरा करबाक’ विधा बुझबाक प्रवृत्तिपर अंकुश लगबैत अछि। गजलक रचनात्मक अनिवार्यता ई अछि जे बहर सहज अभिव्यक्तिक साधन बनय; ओ पाठकपर बाहरी अंकुश जकाँ आरोपित नहि बुझाय। एहि मूल प्रस्तावक आलोकमे पाँचम खण्डक संशोधन अभ्यासकें देखलासँ स्पष्ट होइत अछि जे पुस्तकक तकनीकी निष्कर्षकें सेहो भावार्थक कसौटीपर पुनः जाँचल जा सकैत अछि।

‘टूटल’ आ ‘भूखल’क जोड़ी भिन्न अभावकें एक स्वरसँ जोड़ैत अछि। पहिल रूप मानसगत विछिन्नता वा अस्तित्वगत पराजय सूचित करैत अछि; दोसर अभावकें सामाजिक-भौतिक धरातलपर अनैत अछि। ‘तँइ’ कारणक सूत्रक रूपमे काम करैत अछि—गजल कहनाइ विलास नहि, अनुभवक परिणाम बनैत अछि। ‘कहै छी’ वर्तमानकालक आत्मघोषणा अछि, जाहिसँ शेर केवल बीतल दुःखक वृत्तान्त नहि रहि, बोलैत व्यक्तिक समकालीन उपस्थिति निर्मित करैत अछि। एतऽ सरल व्याकरणात्मक दोहराव अर्थक जटिलता उत्पन्न करैत अछि।

एकटा आर सूक्ष्म बिन्दु मतलाक दूनू मिसरामे रदीफक समरूपता अछि। ‘गजल कहै छी’क प्रत्यावर्तन लेखकक आवाजकें तालबद्ध करैत अछि, मुदा एकर पूर्ववर्ती शब्द बदललासँ व्यंजना बदलि जाइत अछि। गजलमे ई प्रक्रिया अत्यन्त फलदायी भऽ सकैत अछि : स्थिर संरचना भीतर अर्थक गत्यात्मकता। एहि कारणे काफिया-रदीफकें केवल निषेधात्मक अनुशासन नहि, रचनात्मक सम्भावनाक व्यवस्था रूपें पढ़नाइ चाही।

एहि संक्षिप्त पाठविश्लेषणक सीमा सेहो ध्यान देबाक चाही। ई पोथी मुख्यतः तकनीकी मार्गदर्शिका अछि, कविक सम्पूर्ण गजल-संग्रह नहि। तँ उदाहरणक सहायता सँ लेखकक सम्पूर्ण काव्यदृष्टि, सामाजिक विषयक व्यापकता वा सौन्दर्यशास्त्रक अन्तिम निष्कर्ष निकालब उचित नहि। उदाहरणक काव्यगुणक आलोचनात्मक चर्चा एहि पोथीक शिक्षण-उद्देश्यक सन्दर्भमे करब अधिक सम्यक् अछि।

साहित्येतिहासमे मैथिली गजलक स्थान : परम्परा आ पुनर्निर्माण

मैथिली गजलक इतिहासकँ केवल अरबी-फारसी-उर्दू रूपक आगमनक कहानी मानब अधूरा होयत। मैथिलीमे एहि विधाक स्वीकार, तकनीकी अनुकरण, देशज उच्चारणक समायोजन, नव रचनाकारक प्रशिक्षण आ डिजिटल माध्यमसँ प्रसार—ई सभ अलग-अलग चरण छथि। विदेहपर उपलब्ध साहित्येतिहासक विवेचनसभ जीवन झाक आरम्भिक योगदान आ बादक रचनाकार सभक माध्यमसँ विकसित परम्पराक चर्चा करैत अछि। १९०५ सँ २०२२ धरि प्रतिनिधि गजलक संकलन-परियोजना एहि ऐतिहासिक निरन्तरताकँ दस्तावेजी रूप दएबाक एक प्रयास अछि। एकरा प्रारम्भिक इतिहासक ठोस अनुसन्धानसँ जोड़बाक आवश्यकता बनल रहैत अछि; संकलनक आरम्भ-वर्ष अपने-आप समग्र विधाक अन्तिम आरम्भतिथि नहि ठहरैत। [३][४]

परम्परागत उर्दू गजलमे बहर, मतला, काफिया, रदीफ, मकता आ तखल्लुसक विशेष स्थान अछि। मैथिलीमे एहि पदावलीक उपयोग विधाक ऐतिहासिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। मुदा शब्द ग्रहण करब आ विधाक जीवन ग्रहण करब एके बात नहि। गजल जखन मैथिलीमे लिखल जाइत अछि तँ ‘सँ’, ‘मे’, ‘कँ’, ‘क’, स्थानीय सम्बोधन, बोलिचालीक क्रिया-रूप आ स्वर-परिवर्तन ओकर शेरक अन्तिम ध्वनिरूप निर्धारित करैत अछि। एहि अर्थमे मैथिलीकरण न त’ मात्र भाषान्तर अछि आ न किछु शास्त्रीय छूटक जोड़-घटाउ; ई भाषिक संवेदनक पुनर्संयोजन अछि।

विदेहक प्रकाशन-संसारमे गजल-विषयक पोथी-सूची, आलोचना, प्रतिनिधि-संकलन आ नव लेखकसभक चर्चा एक संग उपलब्ध अछि। आशीष अनचिन्हारक ‘अनचिन्हार

आखर', 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास', 'सन्दर्भ सहित' आ प्रस्तुत संक्षिप्त पोथीकेँ एहि समूचयमे राखलासँ रचना, शास्त्र, आलोचना आ शिक्षणक परस्पर निर्भरता स्पष्ट होइत अछि। काव्य-चेतनाक विकास केवल एकटा श्रेष्ठ कृतिक प्रादुर्भाव नहि; ओहि कृतिकेँ बुझबाक शब्दावली, प्रशिक्षणक प्रणाली आ आलोचनाक सार्वजनिक मंच सेहो ओतबे आवश्यक अछि। एहि आधारपर प्रस्तुत पोथी आधुनिक मैथिली गजलक आलोचनात्मक आधाररचनामे योगदान करैत अछि। [२]

विदेहक समकालीन आलोचनामे ओमप्रकाश झा, अमित मिश्र आ चन्दन कुमार झाक गजल-कृतिसभकेँ एके साहित्यिक वातावरणक भीतर रखिकय देखल गेल अछि। एहि तुलनात्मक सामग्रीक महत्त्व एहि कारणे अछि जे गजलशास्त्रक प्रभाव केवल सिद्धान्त-रचना धरि सीमित नहि, नव लेखकक रचना-प्रक्रिया आ प्रकाशन-पद्धति धरि पहुँचैत अछि। एहि प्रसंगमे प्रस्तुत रेडी रेकोनरकेँ एक शिक्षण-संस्कृतिक संकेत रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि—जतऽ छन्दक प्रशिक्षण, तर्कपूर्ण प्रतिक्रिया आ पुनर्लेखन एक-दोसराक पूरक छथि। [५]

साहित्येतिहासक समावेशी दृष्टिसँ ईहो आवश्यक अछि जे मैथिली गजलक इतिहास केवल 'सही' आ 'गलत' रचनाक कठोर द्विभाजनमे नहि सीमित रहय। एक कालक रचना बादक काफिया-नियमपर अपर्याप्त ठहरि सकैत अछि, मुदा ताहिसँ ओकर भाषा-संसार, सामाजिक भाव, पाठकीय प्रभाव आ ऐतिहासिक भूमिका शून्य नहि भऽ जाइत। नियमक कसौटी विधा-अध्ययनक महत्त्वपूर्ण उपकरण अछि; इतिहासक पूर्ण विकल्प नहि। अनचिन्हारक पोथीक नियमवादी ऊर्जा इतिहासलेखनकेँ कसावट देइत अछि, मुदा व्यापक साहित्येतिहासकेँ प्रयोग, असफलता, अपवाद आ संक्रमण सभकेँ सेहो स्थान देब जरूरी अछि।

अरबी-फारसी-उर्दू परम्परा आ मैथिली छन्दक तुलनात्मक विवेचन गजलक मूल तकनीकी संरचना मात्रिक अनुक्रम आ अन्त्यानुप्रासक जटिल सम्बन्ध पर आधारित अछि। संस्कृत-मैथिली छन्दपरम्परामे सेहो ह्रस्व-दीर्घ, गण, वृत्त, लय आ

गीतात्मक रचनाक बहुविध परिपाटी अछि। एहि दूनू छन्दपरम्पराक समानता देखाइत होइतहुँ शब्द-संरचना, उच्चारण, छन्दगणना आ अपवादक इतिहासमे अन्तर अछि। ‘रुक्न’ आ ‘गण’ बीच उपमा शिक्षणक दृष्टिसँ लाभकारी अछि, मुदा दुनूकें पूर्णतः समान शास्त्रीय संस्था मानब विश्लेषणात्मक सरलीकरण होयत। अनचिन्हारक ग्रन्थ तुलनात्मक संकेत दैत अछि; एहि संकेतक ठोस विस्तार भावी अनुसन्धानक विषय अछि।

एहि तुलनाक पहिल परिणाम बहरक पुनर्विचारमे भेटैत अछि। मैथिलीमे रचनाकार जँ अरूजक परम्परागत बहर ग्रहण करैत छथि तँ ओकर नियमक पारदर्शिता आवश्यक अछि। दोसर दिस यदि मैथिली वर्णसंख्या अथवा स्थानीय मात्रा-परम्पराक सहायतासँ नब संरचना रचैत छथि, तखन ओकर भिन्न नामकरण आ परीक्षण अपेक्षित अछि। दूनू प्रणालीक अलग पहचान राखलासँ पाठककें स्पष्ट होयत जे कोन शेर कोन नियमपर बनल अछि। विदेहक अन्य तुलनात्मक गजल-अध्ययनमे सरल वर्णिक पद्धतिक चर्चा भेटैत अछि; ओकर मानककें पारम्परिक अरूजक पर्याय बनबैत समय सावधानी चाही। [५]

दोसरा परिणाम काफियाक ध्वनितत्त्वमे भेटैत अछि। उर्दू-फारसी परम्पराक नियम मैथिलीमे अपनाओल जा सकैत अछि, मुदा स्थानीय ध्वनिसमीकरण, स्वरक लघुता, नासिक्य उच्चारण आ विभक्ति-संलग्नता काफियाक व्यवहार बदलि सकैत अछि। एहि कारणे मैथिली गजल लेल स्वतंत्र भाषावैज्ञानिक परीक्षण मूल्यवान अछि। अनचिन्हारक विभक्ति आ चन्द्रबिन्दु सम्बन्धी विवेचन एहि दिशामे एक सक्रिय आरम्भ अछि; आधुनिक ध्वनिमूलक लिप्यन्तरण, बहुक्षेत्रीय उच्चारण आ उदाहरण-संग्रहक सहायतासँ एकरा आगू विकसित कएल जा सकैत अछि।

तेसर परिणाम सौन्दर्यक स्तरपर अछि। परम्परागत गजलमे दू पाँतिक सीमित स्थानक भीतर व्यंजना, विरोध, संकेत आ अर्थक उछाल आवश्यक गुण छथि। नियम पालन कयलाक बादो जँ शेरमे भावक नवीनता नहि अछि तँ तकनीकी शुद्धता साहित्यिक महत्त्वक पर्याप्त आधार नहि। अनचिन्हारक पोथी एहि बातक प्रस्तावना देइत अछि,

मुदा एकर मुख्य जोर अभ्यासपर अछि। फलतः पाठककेँ छन्दशास्त्रक संग रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, अलंकार, लोकानुभव आ सामाजिक सन्दर्भक अध्ययन जोड़बाक चाही। एखनुक साहित्यिक समीक्षा लेल ई पूरक दृष्टि अत्यावश्यक अछि।

सिद्धान्तक आन्तरिक अन्तर्विरोध आ समीक्षात्मक निर्णय

पोथीक पहिल उल्लेखनीय तनाव ‘अभ्यास’ आ ‘कविता’ बीच अछि। अभ्यासक अवसरपर अर्थकेँ स्थगित कय नियम सीखनाइ उचित अछि; मुदा अन्तिम रचनाक मूल्यांकनमे भाव आ अर्थकेँ निर्णायक स्थान देब जरूरी। लेखकक अपन कथन दूनू पक्षक संतुलनक समर्थन करैत अछि। एहि कारणे प्रशिक्षणक उदाहरणकेँ कलात्मक सिद्धिक नमूना बुझबाक त्रुटिसँ बचबाक चाही। प्रस्तुत गजल-संशोधन एहि अन्तरकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि।

दोसर तनाव ‘ध्वनि’ आ ‘लिपि’ बीच अछि। काफियाक आधार जँ ध्वनि-साम्य अछि तखन लिपिक समानता कतेक हद धरि आवश्यक? लेखक किछु प्रसंगमे उच्चारणगत भेद मानैत छथि, किछु प्रसंगमे दृश्य अक्षर-रूपकेँ निर्णायक बनबैत छथि। शास्त्रीय मानक बनबैत काल एहि प्राथमिकताकेँ स्पष्ट करबाक अछि। एक निश्चयात्मक निषेधक स्थानपर उच्चारण-आधारित, लिपि-आधारित आ परम्परा-आधारित परीक्षणक अलग श्रेणी अधिक उपयोगी भऽ सकैत अछि।

तेसर तनाव ‘स्थानीय स्वायत्तता’ आ ‘परम्परागत अनुशासन’ बीच अछि। लेखक मैथिलीक विभक्ति-संलग्नता लेल विशेष व्यवस्था स्वीकार करैत छथि, मुदा अन्य प्रसंगमे उर्दू-फारसी मानकक कठोर पालनपर बल दैत छथि। एहि द्वैतकेँ विरोध नहि, विवेकपूर्ण नियम-समीक्षाक चुनौती मानल जाए। सुस्पष्ट कसौटी ई होयबाक चाही जे कोनो छूट स्थानीय उच्चारण अथवा भाषिक संरचनाक अपरिहार्यतासँ निकलैत अछि कि केवल रचनाकारक सुविधाक कारणे। पहिल प्रकारक छूट सिद्धान्त-विकासक आधार बनि सकैत अछि; दोसर प्रकारक छूटक कठोर परीक्षण आवश्यक अछि।

चारिम तनाव ‘इतिहास’ आ ‘नियम’ बीच अछि। पोथी गजलशास्त्रक आधुनिक कसौटी सँ रचना परीक्षणक समर्थक अछि। ई दृष्टि विधागत विश्लेषण सिखबैत अछि, मुदा इतिहासक बहुआयामी अर्थकेँ सम्पूर्ण रूपसँ समेटि नहि सकैत। कोनो पूर्ववर्ती शेर वर्तमान नियमपर असंगत भए सकैत अछि, मुदा ओकर रचना-संस्कार, पाठकीय स्वीकृति आ साहित्यिक प्रभाव स्वतंत्र ऐतिहासिक प्रमाण छथि। आलोचककेँ दूनू प्रकारक प्रमाणक संग विवेकपूर्ण व्यवहार करबाक चाही।

पाँचम तनाव ‘संक्षिप्तता’ आ ‘प्रामाणिकता’ बीच अछि। रेडी रेकोनर सूत्र देइत अछि, मुदा प्रत्येक सूत्रक वंशावली, मतभेद, अपवाद आ उदाहरणक सम्पूर्ण परख नहि दैत। जखन लेखक पाठककेँ विस्तृत ग्रन्थ दिस संकेत करैत छथि, तखन स्वयं ई सीमा स्वीकार होइत अछि। एहि ग्रन्थक श्रेष्ठ प्रयोग एहि रूपमे सम्भव अछि जे ई प्रश्न उठाबय, अभ्यास कराबय आ पाठककेँ आगूक विस्तृत अनुसन्धान दिस प्रेरित करय।

शिक्षणशास्त्रीय मूल्य : नियम, उदाहरण, त्रुटि आ पुनर्लेखन

पोथीक शिक्षण-रचना चारि क्रमिक क्रियापर आधारित देखाइत अछि—परिभाषा, उदाहरण, दोष-पहचान आ संशोधन। ई अनुक्रम सामान्य व्याकरणक पाठसँ भिन्न अछि, कारण गजलक शेर बनबैत समय विद्यार्थीकेँ तुरन्त अपन रचना पर नियमक परीक्षण करबाक पड़ैत अछि। रुक्नक संख्यात्मक प्रस्तुति, काफियाक प्रत्यावर्ती निरीक्षण, विभक्तिक उदाहरण आ अनिलक संशोधन-अभ्यास सभ एहि पद्धतिक अलग-अलग रूप छथि।

एहि पद्धतिक महत्त्व केवल लेखनक गति बढेनाइ नहि। विद्यार्थीक सोझाँ ई बात प्रकट होइत अछि जे कविताक निर्माण परीक्षणसँ गुजरैत अछि; पहिल लिखल पाँति अन्तिम नहि होइत। लेखक जखन अपन पूर्ववर्ती काफियापर नब नियम लागू करैत छथि, तखन गुरु आ शिष्य दुनू लेल आत्मालोचनाक आदर्श प्रस्तुत होइत अछि। साहित्यिक कार्यशालामे एहन अनुशासन बहुमूल्य अछि।

तथापि शिक्षणक आधुनिक रूपमे ई पोथी किछु पूरक सामग्री माँगैत अछि। प्रत्येक उदाहरणक संग स्वीकृत उच्चारणक स्पष्ट ध्वनि-विभाजन, कमसँ कम दू वैकल्पिक बोलिरूप, काफिया-रदीफक सारणी, भावगत प्रभावक टिप्पणी आ पाठकीय अभ्यासक उत्तर-विवेचन होय त' नियम अधिक विश्वसनीय बनत। भाषा-वैविध्यकें दर्ज करबाक ई प्रयास पोथीक मूल योजना बदलत नहि; एकरा प्रायोगिक रूपसँ दृढ़ बनाओत।

मुख्य उपलब्धि आ सीमा : एक संश्लेषित मूल्यांकन

एकर पहिल उपलब्धि मैथिलीमे गजलशास्त्रक प्रचलित तकनीकी पदक व्यवस्थित प्रवेश अछि। पाठक बहर, रुक्न, मतला, काफिया, रदीफ, मकता, तखल्लुस, ईता-दोष आदि पदकें केवल सुनैत नहि, ओकर प्रयोगक उदाहरण देखैत छथि। एहि क्रमे भाषा-सापेक्ष आलोचनात्मक शब्दावलीक निर्माण सम्भव होइत अछि।

दोसर उपलब्धि स्थानीय भाषिक वास्तविकताक पहचान अछि। विभक्ति सटबाक प्रथा, चन्द्रबिन्दुक व्यवहार, ह्रस्व स्वर, रेफ आ शब्दोच्चारणक अन्तर रचनामे प्रत्यक्ष चुनौती बनैत अछि। ग्रन्थ एहि चुनौतीकें उपेक्षित नहि करैत; ओकर समाधान खोजैत अछि। ई प्रयत्न मैथिली गजलकें केवल अनुकृत विधा मानबाक प्रवृत्तिपर पुनर्विचार करबैत अछि।

तेसर उपलब्धि आत्मसुधारक प्रवृत्ति अछि। साहित्यिक परम्परामे लेखक अपन पूर्व निर्णयक मर्यादा स्वीकार करथि, ई दुर्लभ नहि त' आवश्यक गुण अवश्य अछि। पोथी एहि अर्थमे जड़ नियमसंग्रह नहि, संशोधनशील प्रशिक्षण-विवेचन अछि।

एकर प्रमुख सीमामे समग्र सौन्दर्यशास्त्रक अपेक्षाकृत अल्प विस्तार, उच्चारणभेदक अपर्याप्त क्षेत्रीय परीक्षण, किछु नियमक अधिक निषेधात्मक भाषा आ ऐतिहासिक मतभेदक सीमित दस्तावेजीकरण गनल जा सकैत अछि। मुदा ई सीमा ग्रन्थक घोषित संक्षिप्ततासँ अलग कय नहि देखल जएबाक चाही। आलोचना उचित तखने होयत जखन हम एकर उद्देश्य आ दावाक परिधि स्पष्ट राखी।

उपसंहार

आशीष अनचिन्हारक 'मैथिली गजलक रेडी रेकोनर'क मूल महत्व एहि बातमे अछि जे ई मैथिली गजलकें केवल भावात्मक अभिव्यक्तिक स्वतःस्फूर्त क्षेत्र नहि मानि, शिल्पगत विवेकक विषय बनबैत अछि। एकर पाँचू खण्ड क्रमशः गणना, पदावली, स्थानीय भाषिक समायोजन, सूक्ष्म काफिया-परीक्षण आ रचनात्मक संशोधनक शिक्षण-यात्रा प्रस्तुत करैत अछि। एहि यात्रा सँ मैथिली गजलक आधुनिक प्रशिक्षणक एक महत्वपूर्ण रूप सामने अबैत अछि।

तथापि अन्तिम आलोचनात्मक निष्कर्ष नियमक निष्कण्टक स्वीकृति नहि, बल्कि ओकर परीक्षणशील उपयोग अछि। गजलक शिल्प अनुभवकें अधिक घनत्व देबाक साधन होय; अनुभवक स्थानापन्न नहि। बहर, काफिया आ रदीफक अनुशासन जखन मैथिली उच्चारण आ जीवनानुभवक संग समञ्जस होइत अछि, तखने गजल अपन वास्तविक काव्यात्मक शक्ति पबैत अछि। एहि दृष्टिसँ ई पोथी एकटा महत्त्वपूर्ण आरम्भ, एकटा उपयोगी कार्यशाला-पुस्तक आ मैथिली गजलशास्त्रपर निरन्तर विमर्शक आधार अछि। एकर प्रासंगिकता एहि बातमे सेहो अछि जे ई पाठककें अन्तिम उत्तर देबाक संग-संग बेहतर प्रश्न पूछबाक सामर्थ्य दैत अछि।

सन्दर्भसूची

सन्दर्भमे मूल पोथी आ विदेहक पोथी-संग्रह/शोध-अभिलेखक सामग्रीकें आधार मानल गेल अछि। आन वेबसाइटक सामग्री सम्मिलित नहि अछि।

[१] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक Ready Reckoner / मैथिली गजलक रेडी रेकोनर। विदेह-संग्रह; मूल कृति (© २०१२, २०२२), प्राथमिक अध्ययन-पाठ।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[२] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास; सन्दर्भ सहित; अनचिन्हार आखर; शब्द-अर्थ-शक्ति। विदेह, पोथी-संग्रहमे सूचीबद्ध सम्बन्धित कृतिसभ।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[३] ठाकुर, गजेन्द्र आ अनचिन्हार, आशीष (सह-सम्पादित)। मैथिली गजल : आगमन ओ प्रस्थान बिन्दु; मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (१९०५-२०२२)। विदेहक पोथी-सूची आ मूल ग्रन्थक लेखक-परिचयमे उल्लिखित।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

[४] विदेह। A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, गजल सम्बन्धी ऐतिहासिक विवेचन। विदेह शोध-अभिलेख।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/2026/438/a-parallel-history-of-mithila-maithili-literature.htm>

[५] विदेह। Three Voices of the Maithili Ghazal: Om Prakash Jha, Amit Mishra, Chandan Kumar Jha। विदेह समानान्तर साहित्येतिहासक तुलनात्मक आलोचना।

https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_79.htm

[६] अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग। विदेह, अङ्क १६५, १ नवम्बर २०१४। विदेह शोध-सूचीमे प्रविष्टि।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

[७] अनचिन्हार, आशीष। बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल। विदेह, अङ्क २५१, १ जून २०१८। विदेह शोध-सूचीमे प्रविष्टि।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

[८] विदेह। Critical Appreciation of Ashish Anchinhar। कवि, आलोचक आ गजलशास्त्रीक साहित्यिक अवदानपर सम्पूर्ण आलोचनात्मक आलेख।

https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_56.htm

[९] विदेह। विदेह शोध-सूची : मैथिली साहित्य, आलोचना, भाषाविज्ञान आ इतिहास सम्बन्धी शोध-सामग्रीक अनुक्रमणिका।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>

१.१८. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

भाषिक स्वायत्तता आ छन्दानुशासन

शोध-सार

आशीष अनचिन्हारक ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’ मैथिलीमे गजलकें स्वतंत्र साहित्यिक विधाक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक एकटा महत्वाकांक्षी शास्त्रीय आ इतिहासपरक प्रयत्न अछि। एकर विषय मात्र अरबी-फारसी-उर्दू गजलक शब्दावलीक परिचय नहि, अपितु मैथिलीक उच्चारण, स्वर-संरचना, वर्तनी, मात्रा-विन्यास, कारक-विभक्ति, पदक्रम आ लोकप्रयोगक सन्दर्भमे गजलक औपचारिक अनुशासनक पुनर्व्याख्या अछि। ग्रन्थक प्रारम्भिक चौबीस खण्ड शेर, मतला, रदीफ, काफिया, मकता, बहर, तकतीअ, गुण-दोष, संगीत, भाषा आ समीक्षाशास्त्रसँ सम्बन्धित अछि; पचीसम खण्ड प्राचीन संकेतसँ आधुनिक रचनाकार धरि गजलक परम्परा, मुद्रित कृति आ डिजिटल संवादक इतिहास लिखैत अछि। एहि कारणे ई पोथी शिक्षण-पुस्तक, काव्यशास्त्रीय प्रतिपादन, साहित्यिक घोषणापत्र आ इतिहास-लेखन—चारू रूपक संयोग बनि जाइत अछि।

एहि शोधमे ग्रन्थक प्रस्तावित नियम आ ओकर प्रमाणक स्वरूपकें अलग-अलग परखल गेल अछि। विशेष रूपसँ तीन विरोधाभास विवेचनीय अछि: भाषिक स्वायत्तताक समर्थनक संग एकमात्र वैध शिल्पक आग्रह; उच्चारण-वैविध्यक स्वीकृतिक संग लिखित मात्राक्रमक कठोर निर्धारण; आ उपेक्षित गजलकारक पुनर्स्थापनाक इच्छाक संग स्थापित तथा प्रयोगशील धाराक बीच मूल्यात्मक ध्रुवीकरण। अध्ययन ई निष्कर्ष दैत अछि जे ग्रन्थक स्थायी योगदान गजलक व्याकरण मैथिलीक पाठक लेल सुलभ करब, छन्दीय परीक्षणक साझा उपकरण उपलब्ध करब आ साहित्यक डिजिटल अभिलेखकें ऐतिहासिक प्रमाणक कोटिमे अनबाक प्रयास अछि। मुदा कतेको वंशावली,

प्राथमिकता-दावा, सांख्यिक तथ्य आ काल-विभाजनकें स्वतंत्र ग्रन्थसूचीपरक परीक्षणक बिना अन्तिम इतिहास नहि मानल जा सकैत अछि।

बीज-शब्द : मैथिली गजल; आशीष अनचिन्हार; अरूज; बहर; काफिया; रदीफ; भाषिक स्वायत्तता; काव्यशास्त्र; साहित्येतिहास; विदेह; डिजिटल साहित्य।

प्रस्तावना : विधाक अपन भाषा, भाषाक अपन विधान

मैथिली काव्य-परम्परामे गीत, पद, लोकगाथा, वर्णवृत्त आ मात्रावृत्तक समृद्ध अवदान रहल अछि। गजल एहि परिदृश्यमे आयातित नाम मात्र नहि, बल्कि नव संवेदनाक अनुशासित अभिव्यक्तिक एकटा सम्भावना बनि उपस्थित होइत अछि। एकरा पढ़बाक समय दूटा प्रश्न अनिवार्य अछि: गजल अपन मूल शिल्पगत पहचान सुरक्षित रखैत मैथिली कोना बनैत अछि, आ मैथिलीक ध्वनि-लय ओकर मूल विधानक कतबा पुनर्निर्माण कऽ सकैत अछि? अनचिन्हारक ग्रन्थक केन्द्रीय मूल्य एहि प्रश्नकें व्यवस्थित रूपमे उठेबामे अछि।

ग्रन्थक नाममे “व्याकरण” आ “इतिहास”क युग्म आकस्मिक नहि। व्याकरण रूपक कसौटी निर्मित करैत अछि; इतिहास ओही कसौटीक आलोकमे अतीतक सामग्री चुनैत आ व्यवस्थित करैत अछि। फलतः जे व्याकरण स्वीकार कएल जाएत, ओकर प्रभाव साहित्येतिहासक पात्र-चयन, मूल्यांकन आ युग-निर्धारणपर पड़त। एहि निबन्धक मूल प्रतिपादन ई अछि जे ई ग्रन्थ गजलक केवल विधान नहि रचैत, मैथिली गजलक साहित्यिक वैधताक सीमा सेहो निर्धारित करबाक प्रयत्न करैत अछि। एकरा सम्यक पढ़बाक लेल रचनात्मक उपलब्धि आ विचारधारात्मक सीमा दुनूकें समान रूपसँ देखब आवश्यक अछि।

ग्रन्थक निर्माणक समय, रूप आ स्रोत-संरचना

लेखक अपन आरम्भिक गजल-परिचय शृंखलाक प्रकाशनकाल २०११ बतबैत छथि। मूल शृंखलाक संशोधन, विस्तार आ नव विचारक समावेशसँ पचीस खण्डक व्यवस्थित कृति तैयार भेल। ग्रन्थमे २०१२ आ २०२२क प्रकाशकीय संकेत उपस्थित अछि; लेखक

२०२२ मे अपन विवेचनक संशोधित रूपक चर्चा करैत छथि। एकरा स्थिर आरम्भिक पाठ मानबाक बदला समयक संग विकसित आलोचनात्मक परियोजनाक रूपमे बुझब अधिक उपयुक्त अछि। लेखक स्वयं पूर्व रचनाक गलत अभिज्ञान आ किछु स्थापित दावाक पुनरीक्षण करैत छथि, जाहिसँ संशोधनशीलताक महत्त्व सामने अबैत अछि।

विदेहक पोथी-संग्रहमे अनचिन्हारक ‘अनचिन्हार आखर’, ‘संदर्भ सहित’, ‘कुमारि इच्छा’, ‘जंघाजोड़ी’, ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ आ ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ सन कृतिक संग एहि ग्रन्थक उपस्थिति एकटा दीर्घकालीन गजलकेन्द्रित लेखन-परम्पराक साक्ष्य अछि।

विदेहमे प्रकाशित लेखकक ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग’ आ ‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’क क्रम एहो स्पष्ट करैत अछि जे मुख्य पोथीक विचार पृथक-थलग नहि, निरन्तर सार्वजनिक शास्त्रीय बहसक हिस्सा अछि। एहि लेख सभक उपस्थिति लेखकीय दृष्टिकोणक विकासकें प्रमाणित करैत अछि; मात्र एहि आधारपर हुनक प्रत्येक ऐतिहासिक निष्कर्षक स्वतन्त्र पुष्टि नहि भऽ जाइत अछि।

अध्ययनक आधार आ आलोचनात्मक कसौटी

एहि अध्ययनमे प्राथमिक कसौटी ग्रन्थक अपने प्रतिपादन, उदाहरण, आत्मस्वीकृति, सन्दर्भ-सूची आ रचनाकार-परिचय अछि। दोसरा स्तरपर विदेहक प्रकाशित लेख-सूची आ सम्बन्धित मूल लेखक माध्यमसँ विमर्शक कालक्रम जाँचल गेल अछि। तुलनात्मक इतिहासमे ‘लेखक कहैत छथि’, ‘उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि’ आ ‘स्वतन्त्र रूपसँ प्रमाणित मानल जा सकैत अछि’—ई तीन अलग स्तर राखल गेल अछि। ग्रन्थमे वर्णित परम्परा आ लेखकक मूल्यांकनकें स्वतः निर्विवाद ऐतिहासिक सत्य नहि मानल गेल अछि।

आलोचनाक आधार चारि अछि: भाषिक संगति—नियम मैथिलीक वास्तविक

ध्वनितन्त्रसँ मेल खाइत अछि कि नहि; रूपात्मक सुसंगति—समरूप शेर पर समान

मापदण्ड लागू होइत अछि कि नहि; साहित्यिक फलप्रदता—शिल्प भाव-विचारकें पुष्ट

करैत अछि कि ओकर स्थान लैत अछि; आ इतिहासपरक प्रमाण—कविक रचना, तिथि,

प्रकाशन, उपलब्धता आ पाठ-परम्परा अलग-अलग सिद्ध कएल गेल अछि कि नहि। एहि दृष्टिँ अपन कृति स्वयं कतेक प्रमाणवान् अछि, से प्रश्न प्रशंसासँ कम आवश्यक नहि।

मूल पाठक सत्यापित कथन आ ओकर आलोचनात्मक आशय
ग्रन्थक भाषा-संकल्पक सबसँ सघन सूत्र लेखकक एहि कथनमे भेटैत अछि—

“हमरा गजल तँ चाही मुदा मैथिलीमे चाही”

एहि वाक्यक आशय भाषिक अस्मिताक संकुचित आग्रह नहि, रूपान्तरित गजल-विधानक शोध अछि। लेखक मानैत छथि जे विदेशी भाषाक नियम जसक तस मैथिलीपर आरोपित कएलासँ देशज उच्चारण आ शब्द-विन्यास बाधित भऽ सकैत अछि। तथापि केवल भाषा-परिवर्तनसँ विधाक पृथक औपचारिक पहचान समाप्त नहि कएल जा सकैत, ई हुनक मूल शर्त अछि।

“गजलक किछु नियम भाषा सापेक्ष अछि।”

एहि कथनमे लेखकक अनुशासनवादी स्वरूपक भीतर संशोधनक सम्भावना खुलैत अछि। प्रश्न तथापि बनल रहैत अछि जे रदीफ आ बहरकें अपेक्षाकृत स्थिर मानि काफियाक भाषासापेक्षता कतेक दूर धरि लागू कएल जा सकैत अछि। उच्चारण-भिन्नताक कारण मात्रा-निर्णय बदलैत हो तखन बहरक स्थिरताक व्यावहारिक कसौटी स्वतंत्र विवेचना माँगैत अछि।

“मैथिलीमे “गज़ल” शब्द गलत अछि आ “गजल” शब्द सही”

लेखकक ई वर्तनी-निर्णय मैथिलीक लेखन-परम्परा आ विदेशी ध्वनिक स्थानीय आत्मसातीकरणसँ सम्बन्धित अछि। एकरा गजलक मौलिकता अथवा श्रेष्ठताक मानदण्ड नहि बनाओल जा सकैत; ई मुख्यतः भाषावैज्ञानिक मानकीकरणक प्रस्ताव अछि। अलग-अलग लिपि-परम्परा वा ऐतिहासिक उद्धरणमे मूल वर्तनीक अस्तित्वक स्वीकार आवश्यक रहैत अछि।

“काफिया मने स्वर साम्य युक्त तुकान्त चाहे ओ अक्षरक स्वरसाम्य हो की मात्राक स्वरसाम्य।”

एहि परिभाषासँ स्पष्ट होइत अछि जे लेखक काफियाकेँ केवल अन्तिम अक्षरक समानता नहि बुझैत छथि। ध्वनि-साम्य, उच्चारण आ मात्रा-साम्यक अन्तरक व्याख्या एहि ग्रन्थक उपयोगी शिक्षणात्मक उपलब्धि अछि। तकर संग शब्दक रूपिमिक सीमा, विभक्ति आ बोलचालक ध्वनि-परिवर्तनपर चर्चा काफियाक व्यवहारिक परीक्षणक सशक्त आधार बनबैत अछि।

समेकित समीक्षा : गजलशास्त्रक नव विन्यास

विधाक अनिवार्य तत्त्व आ रचनात्मक छूट

ग्रन्थ मतलाक दूनू मिसरामे काफिया-रदीफक विन्यास, पश्चात् प्रत्येक शेरक दोसर मिसरामे ओकर आवृत्ति, समबहरता आ स्वतंत्र शेर-संरचनाक पक्ष लेत अछि। ई निरूपण परम्परागत गजलशास्त्रक आधारभूत विशेषताकेँ मैथिलीमे व्यवस्थित परिचय दैत अछि। लेखक रदीफहीन गजलकेँ सम्भव मानैत छथि, मुदा काफिया आ बहरक अनिवार्यतापर आग्रह करैत छथि। एहि भेदसँ स्पष्ट अछि जे हुनका लेल विविधता रूपक भीतर स्वीकार्य अछि, रूपक विघटनपर नहि।

रचनात्मक स्वतन्त्रताक प्रश्नपर आलोचनात्मक भेद अपेक्षित अछि। जे रचना स्वयंकेँ गजल कहैत अछि, ओकर मापन गजल-विधानसँ कएल जा सकैत अछि; मुदा जाहि रचनामे गजलक सांगीतिक स्मृति, दोहरी पाँति, पुनरावृत्ति आ मुक्त छन्दक मिश्रण अछि, ओकरा समग्र साहित्यिक मूल्यसँ वञ्चित करब उचित नहि। विधागत वर्गीकरण आ सौन्दर्यात्मक मूल्यांकन अलग प्रश्न थिक। ग्रन्थ कतेको ठाम एहि दूनूकेँ एक-दोसरक स्थानापन्न बना देबाक जोखिम उठबैत अछि।

भाषा, वर्तनी आ उच्चारणक त्रिकोण

लेखक मैथिलीक पूर्ण आ अपूर्ण भाषारूप, ए/ऐ/अइ आदिक प्रयोग, संक्षिप्त उच्चारण, संयुक्ताक्षर, अनुनासिकता, उच्चारणक बोलिगत भिन्नता तथा लिखित शब्दक

मात्राक्रम पर विस्तारसँ चर्चा करैत छथि। एहि विमर्शमे शब्द-संगीतक वास्तविक प्रश्न अछि: लिखल रूप आ बाजल रूप सदिखन एकरूप नहि होइत। उच्चारणक विविधता मानि कऽ लिखित रूपक एकरूप नियम निर्धारित करबाक प्रस्ताव शिक्षणक सुविधा देत, मुदा क्षेत्रीय भाषिक बहुलताकेँ यथावत् नापबामे कठिनाई सेहो उत्पन्न करैत अछि। एहि प्रश्नक समाधान मात्र मानक वर्तनीक आज्ञासँ नहि, बल्कि संगत उच्चारण-पद्धतिक घोषित आधारसँ सम्भव अछि। पाठककेँ पहिने कहबाक चाही जे कओन बोलिक वाचन-परम्परा अपनाओल गेल अछि, कोन उच्चारण छूट मान्य अछि, आ वैकल्पिक रूपसँ बहरपर की प्रभाव पड़ैत अछि। एहि अतिरिक्त स्तरक अनुपस्थितिमे गणना सुगम भऽ सकैत अछि, मुदा ध्वनिवैज्ञानिक प्रतिपादन सर्वमान्य नहि।

मात्रा, बहर आ तकतीअ : नियमसँ अभ्यास धरि

ग्रन्थ लघु-दीर्घ, रुक्नक संयोजन, विविध अरबी बहर, सरल वर्णिक अनुशासन आ संस्कृत-वर्णवृत्तक तुलनात्मक पक्षक संग विस्तृत मात्रात्मक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। एकर शिक्षण-विन्यास महत्त्वपूर्ण अछि: पाठक शब्दक मात्राक्रम सँ आरम्भ करैत अछि, तकरा बाद काफिया जोड़ैत अछि, तत्पश्चात् शेरक बनावट आ अन्ततः पूरी गजलकेँ समान लयमे गढ़बाक कौशल अर्जित करैत अछि। आरम्भिक अभ्यासमे भावसँ पहिने रूपपर ध्यान केन्द्रित करबाक सलाह सीखबाक पद्धतिक दृष्टिएँ उपयोगी भऽ सकैत अछि।

तथापि गणना आ अनुभूति बराबर नहि। अंकविन्यास सही होइतहुँ पाँतिक उच्चारण कठिन, अर्थगत विराम अस्वाभाविक अथवा रदीफ अप्रासंगिक भऽ सकैत अछि। गजल-शिक्षणमे ताकत तखने आबैत अछि जखन मात्राक्रमक शुद्धता संग सहज उच्चारण, काव्यार्थ, ध्वन्यात्मक ऊर्जा आ श्रोता-सम्बोधनक परीक्षा जोड़ल जाए। ग्रन्थक भाषिक विवेचन एहि व्यापक कसौटीक मार्ग खोलैत अछि; ओकर अधिक व्यवस्थित रूपान्तरण आगामी शोधक विषय अछि।

काफिया-विमर्शक स्वायत्त योगदान

काफियाक अनेक खण्डमे विभाजन ग्रन्थक सबसँ विकसित अंशमे सँ अछि। स्वर-साम्य, अक्षर-साम्य, आघात, विसर्ग, काफियामे उपसर्ग-विभक्तिक भूमिका, मैथिली आ उर्दू वर्णमालाक भिन्नता तथा कथित दोषक अनेक उदाहरण एकरा केवल परिचायक नहि, तर्कपूर्ण परीक्षण-पुस्तक बनबैत अछि। विभक्ति हटेलापर ध्वनि-साम्य बचैत अछि कि नहि, से प्रश्न लिखित मैथिलीक रूपमिक रचनाकें शिल्प-विन्याससँ जोड़ैत अछि। एहि विमर्शक स्थायी महत्त्व एहि बातमे अछि जे काफिया ‘अन्तिम ध्वनि एक हो’ सन सरल सूत्रसँ जटिल अछि। ई व्याकरणिक रूप, शब्दार्थ, ध्वनिक अनुगूँज आ आवृत्तिक सौन्दर्यक संयुक्त क्षेत्र थिक। ग्रन्थक स्थान-स्थानपर प्रतिपादित कठोर निषेधकें तथापि सर्वभाषिक नियम मानब आवश्यक नहि; एकर प्रामाणिकता मैथिली उच्चारणक पर्याप्त विविध उदाहरणक संग कएल तुलनात्मक परीक्षणपर निर्भर करैत अछि।

शेरक स्वायत्तता आ गजलक सम्पूर्णता

शेर अपन भीतर अर्थक एकटा समाप्त संरचना होअए, ई विचार लेखकक उदाहरण-चयनमे महत्त्व रखैत अछि। गजलक हर शेरक स्वतंत्र वैचारिक ऊर्जा स्वीकार करब ओकर शास्त्रीय पहचान अछि; मुदा स्वतंत्रता अनिवार्य रूपसँ असम्बद्धता नहि। प्रेम, सामाजिक विडम्बना, लोकजीवन वा मानवीय पीड़ाक आवर्तक अनुभव अनेक स्वतंत्र शेरकें एक भितरी संगति देत अछि। ग्रन्थक गीत आ नज्मसँ गजलक भेद स्पष्ट करबाक प्रयत्न उपयोगी अछि, पर कथा-सूत्रहीनताकें सम्पूर्ण कलात्मक विच्छिन्नता मानब उचित नहि।

रदीफक पुनरावृत्ति : यान्त्रिकता वा अर्थ-घनत्व

रदीफ केवल दोहराओल शब्द नहि, हर शेरमे नव अर्थगत सन्दर्भ लऽ कऽ अबैत प्रत्यावर्तन अछि। लेखक रदीफ-काफियाक यथोचित जुड़ावकें गुण आ अनावश्यक जोड़कें दोष मानैत छथि। एहि कसौटीमे शिल्पक महत्त्व अछि। कतेको गजलमे रदीफ समूचा रचनाक स्मृति-सूत्र बनैत अछि; कतहु ओकर बाध्यकारी उपस्थिति भाषा कें

कृत्रिम बना सकैत अछि। रदीफक सफलता केँ मात्र गणनात्मक उपस्थितिसँ नहि, प्रत्येक शेरमे ओकर अर्थगत नवोत्पादनसँ परखबाक चाही।

संगीत आ पाठ-परम्परा

ग्रन्थ गायन, पाठ, लय आ सांगीतिक प्रस्तुति पर पृथक विचार करैत अछि। ई आग्रह उपयुक्त अछि जे गायनयोग्यता आ विधागत पहचान एक समान वस्तु नहि। कोनो गीत गजल-जकाँ सुनाएबासँ गजल नहि बनि जाइत, आ कोनो गजल अनिवार्य रूपसँ संगीतबद्ध हो, सेहो आवश्यक नहि। मुदा गजल-शास्त्रक प्रवाहक इतिहासमे गायन आ सार्वजनिक पाठक प्रभाव कए बेर मूल शिल्पकेँ नव सामाजिक अर्थ दैत अछि; एहि अन्तःसम्बन्धक व्यापक मूल्यांकन ग्रन्थक औपचारिक निश्चयक अतिरिक्त अपेक्षित अछि।

भाव, कथ्य आ सामाजिक अनुभव

ग्रन्थ भाषिक रूपक संग कथ्य, संकेत, दार्शनिकता आ सामाजिक संदर्भक गुण-दोष सेहो गनबैत अछि। एहि प्रसंगमे लेखकक आग्रह अछि जे शास्त्रीय अनुशासन अभिव्यक्तिक शत्रु नहि होइत। ई केन्द्रीय प्रतिपादन महत्त्वपूर्ण अछि; विधाकेँ राजनीतिक नारा आ शाब्दिक तुकबन्दीसँ ऊपर उठेबाक कार्य साहित्यक सर्जनात्मक हितमे अछि। मुदा सामाजिक अनुभूतिक मूल्य शिल्प-शुद्धताक अधीन सम्पूर्णतः नहि हो सकैत; अन्यथा असहमतिक नब रचना, बोलीगत काव्य आ अलिखित सांगीतिक प्रयोगपूर्वै खारिज भऽ सकैत अछि।

आलोचनक भाषा : प्रमाण आ प्रतिद्वन्द्विता

लेखक अपन वाद-विवादमे तर्क, उदाहरण आ गलती-स्वीकारक प्रशंसा करैत छथि। ई सार्वजनिक साहित्यिक संस्कृति लेल आवश्यक गुण अछि। दोसर दिस कतेको स्थलपर प्रतिद्वन्द्वी लेखक-संपादकक प्रति तीख व्यंग्य, सामूहिक आरोप आ व्यक्तिकेन्द्रित टिप्पणी वस्तुनिष्ठ प्रतिपादनक प्रवाह बाधित करैत अछि। आलोचनाक वास्तविक बल दू मिसराक प्रमाण, तकर तकतीअ, भाषा-रूपक परीक्षण आ निष्कर्षक सीमाक स्पष्ट

स्वीकृतिमे अछि; कोनो व्यक्तिक बौद्धिक पात्रताक व्यापक अस्वीकृतिमे नहि। एहि ग्रन्थकेँ पढ़ैत पाठक तर्कसंगत आलोचना आ विवादात्मक भाषणकेँ अलग कऽ देखथि।

खण्डानुसार पृथक पाठविश्लेषण

प्रथम खण्ड : गजल-प्रतीक, शब्दार्थ आ उद्भव

गजलमे प्रयुक्त मय, मीना, साकी, पैमाना आदि प्रतीकक ऐतिहासिक अर्थ आ मैथिली सन्दर्भमे ओकर पुनर्पाठ प्रस्तुत अछि। लेखक भाषाक स्थानीयकरणक आग्रह राखैत छथि। ई प्रयास अर्थ-संवर्धक अछि, मुदा प्रतीकक शास्त्रीय बहुअर्थताकेँ केवल प्रेम वा मदिराक शाब्दिक अर्थमे सीमित करब हानिकर होएत। अरबी-फारसी उद्भवक विवरणकेँ शब्द-इतिहास आ विधा-इतिहासक अलग प्रश्नक रूपमे देखबाक चाही।

द्वितीय खण्ड : परिभाषा आ पारिभाषिक संरचना

शेर, मिसरा, रुक्न, काफिया, रदीफ, बहर आदि शब्दक परिचय एकटा नव पाठक लेल आधार बनैत अछि। गजलक शास्त्र पाठकीय परिभाषासँ शुरू होइछ, एतय ई बोध अछि। तकनीकी पदावलीक अनेक स्रोत अछि; स्रोत-भाषासँ मैथिलीक व्यवहार धरि प्रत्येक पदक अर्थ-विकासक तुलनात्मक शब्दकोश बनाओल जाए तँ ई उपलब्धि आर समृद्ध हएत।

तृतीय खण्ड : मतला आ संरचनात्मक आरम्भ

मतलाक दूनू मिसरामे काफिया आ रदीफक समविन्यासकेँ उदाहरणसँ स्पष्ट कएल गेल अछि। एहि खण्डक शिक्षण-महत्त्व एहि बातमे अछि जे पाठक प्रारम्भिक शेरसँ पूरी गजलक अपेक्षित आवृत्तिक पहचान सीखैत अछि। मतलाक सौन्दर्यात्मक भूमिका—रचनाक स्वर, मिजाज आ भविष्यक प्रतीक्षा उत्पन्न करब—मात्र तकनीकी पहिचानसँ आगाँ परखबाक चाही।

चतुर्थ खण्ड : रदीफक विधान

रदीफयुक्त आ रदीफरहित गजलक सम्भावना स्वीकार करैत लेखक शब्द-आवृत्तिक नियम स्पष्ट करैत छथि। उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे रदीफ शेरक अन्तमे स्मृतियोग्य

ध्वनि-संकेत बनैत अछि। मुदा केवल शब्दक समरूपता पर्याप्त नहि; व्याकरणसंगति आ अर्थगत अनिवार्यताकेँ संग परखल जाए, तखने रदीफक वास्तविक आलोचना होएत।

पंचम खण्ड : काफियाक स्वर-साम्य

काफियाक अक्षरीय आ मात्रिक स्वर-साम्यक श्रेणी, काफियाक स्थान आ तुकान्तक स्तर एहि खण्डक केन्द्र अछि। मैथिलीक शब्दावलीक संग उच्चारणसंगत नियम जोड़बाक ई आरम्भ महत्त्वपूर्ण अछि। निश्चयात्मक निर्णयमे लेखकीय उच्चारणपर निर्भरता घटेबाक लेल सम्भावित भिन्न उच्चारणक समानान्तर परीक्षण आवश्यक अछि।

षष्ठ खण्ड : ध्वनि आ भाषिक विभाजन

काफियाक सूक्ष्म नियमक संग भाषा-व्याकरणक तत्त्व जोड़ल जाइत अछि। स्वर-वर्गीकरणक उपयोग गजलकारक व्यावहारिक प्रशिक्षण लेल सम्भावना खोलैत अछि। एतय ध्वनि, वर्ण आ मात्राक वर्गीकरणक सीमा पूर्णतः अलग राखल जाए तँ शास्त्रीय स्पष्टीकरण अधिक निश्चिन्त होएत।

सप्तम खण्ड : रूपान्तरित शब्द आ काफिया

स्वर-परिवर्तन, प्रचलित रूप आ काफियाक फेरबदल लेखकक भाषा-सापेक्ष दृष्टि उजागर करैत अछि। मैथिलीक विविध लिखित रूप गजलक शिल्पमे बाधा मात्र नहि, काव्यात्मक संसाधन सेहो अछि। मुदा कोनो रूपक चयनकेँ एक बेर रचनाभरि स्थिर राखब शिल्पक विश्वसनीयता लेल उपयोगी रहत।

अष्टम खण्ड : विभक्ति, प्रत्यय आ अन्त्यानुप्रास

काफियाक संग विभक्तिक आगमन पर विचार मैथिली व्याकरणसँ प्रत्यक्ष संवाद अछि। शब्द-समाप्तिक समानता मात्र पर्याप्त अछि कि मूल ध्वनि-साम्य सेहो बचब आवश्यक अछि—एहि प्रश्नपर लेखकक विशेष ध्यान अछि। आलोचककेँ भाषिक कार्य, रूपिम आ श्रव्य प्रभाव तीनूकेँ समवेत मूल्यांकन करबाक चाही।

नवम खण्ड : स्वर-परिवर्तन आ उच्चारण

इकारान्त शब्द, बोलचालमे स्वरक स्थानान्तरण आ लिखित रूपक भेद काफिया-विवेचनकेँ ध्वनिविज्ञानक नजदीक आनैत अछि। एतय शास्त्रीय चुनौती ई अछि जे औपचारिक मानक आ जीवित बोलीकेँ विरोधी नहि बनाओल जाए। समरूप ध्वनिक प्रमाण गायक आ श्रोता दुनू पक्षसँ देखल जाए।

दशम खण्ड : काफियाक विस्तारित परीक्षा

उदाहरणाधारित निषेध आ अपवादक माध्यमसँ लेखक काफियाक शुद्धता परखैत छथि। काफियाक शिल्पकष्ट कतेक हो, ताहि पर किछु लेखकीय कठोरता बनल रहैत अछि। भाषा-परिवर्तनक इतिहाससँ लेल उदाहरणकेँ आजुक एकमात्र नियम बनाबैसँ पहिने कालभेद स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

एकादश खण्ड : नियम-विस्तारक संक्रमण

एहि संक्षिप्त खण्डक भूमिका पूर्ववर्ती विवेचन आ आगामी भाषिक जटिलताक बीच सेतुजकाँ अछि। ग्रन्थक संरचनाक दृष्टिँ काफियाक बहुखण्डीय विवेचन क्रमशः अधिक कठिन प्रश्न दिस बढैत अछि। किछु स्थानपर पुनरावृत्ति शिक्षणक सहाय होइतहुँ सम्पादकीय संक्षेपसँ तर्कक गति बढ़ि सकैत अछि।

द्वादश खण्ड : आघात, विसर्ग आ जटिल काफिया

आघात, विसर्ग, उच्चारण, संस्कृतसँ आगत रूप आ मैथिलीक उच्चरित संरचनापर विशद विचार अछि। ई खण्ड भाषा-विशिष्ट गजलशास्त्रक सम्भावनाक प्रबल प्रमाण अछि। मुदा आघातक ऐतिहासिक स्थिति आ वर्तमान उच्चारणक समाजभाषिक प्रमाणक बीच स्पष्ट भेद जरूरी अछि; नियम बनेबाक प्रक्रिया विवेचनशील रहलासँ ओकर स्वीकार्यता बढैत अछि।

त्रयोदश खण्ड : मकता आ काव्यस्वाक्षर

मकता शायरक तखल्लुस अथवा स्वनाम-संकेतक संग गजलक अन्तिम अर्थ-स्थितिक चर्चा करैत अछि। नामक प्रयोग मात्र औपचारिक नहि; ई रचनामे आत्म-व्यंग्य,

आत्मालाप अथवा वाचक-परिवर्तनक अवसर दैत अछि। मकताक अनुपस्थितिकेँ स्वयमेव दोष नहि मानि ओकर काव्य-प्रयोजनकेँ प्राथमिकता देबाक चाही।

चतुर्दश खण्ड : बहरक परिभाषा

बहर, रुक्न, वज्ज आ मात्राक्रमक मूल सम्बन्ध स्पष्ट करैत लेखक गजलमे छन्दीय समरूपताक आधार स्थापित करैत छथि। एतय छन्दक सामान्य लय आ विशिष्ट क्रमबद्ध गणना बीच भेद बनाओल गेल अछि। एहि भेदक बिना गजलकेँ प्रत्येक सममात्रिक पद्यसँ अलग चिन्हित करब कठिन होइत।

पंचदश खण्ड : लघु-दीर्घ आ अरूजक आधार

मात्रा-निर्धारण, रुक्नक संयोजन, संयुक्ताक्षर, ध्वनिक लघु-दीर्घ स्वरूपक व्यवस्थित प्रशिक्षण खण्डक विशेषता अछि। ई अंश अभ्यास-पाठ्यक्रमजकाँ उपयोगी अछि। शब्दक यथार्थ उच्चारणक संग प्रतीकात्मक सूत्रक सतत तुलना नहि भेलासँ मात्रासूत्र यान्त्रिक बनि सकैत अछि—एहि जोखिमसँ सावधान रहबाक चाही।

षोडश खण्ड : बहरक अनुप्रयोग

बहरक नियमकेँ उदाहरणक संग चलबैत लेखक शास्त्रकेँ प्रयोगसँ प्रमाणित करबाक प्रयत्न करैत छथि। कतहु निश्चित रुक्नक पुनरावृत्तिक आधार पर गजलक अभ्यास सुलभ बनैत अछि। मुदा उपयोगिताक मूल्यांकन कए बेर रचनात्मक सहजता आ भाषिक स्वाभाविकताक कसौटी पर सेहो आवश्यक अछि।

सप्तदश खण्ड : मात्राक्रम आ रूपान्तर

रुक्नक वैकल्पिक क्रम आ शिल्पगत परिवर्तनीय रूप गजलकारक संरचनात्मक विकल्पक ज्ञान बढ़बैत अछि। एतय छूट आ विचलनक भेद विशेष महत्त्व रखैत अछि। परम्परामे स्वीकृत छूटक प्राचल स्पष्ट नहि रहलासँ आलोचकक अपन पसिन्न निर्णयकेँ नियम कहल जाएबाक सम्भावना बनैत अछि।

अष्टादश खण्ड : विविध बहरक उदाहरण

अरबी बहरक पर्याप्त उदाहरण, समानध्वनि तथा मिश्र ध्वनिक रचनात्मक सम्भावनाक निरूपण एकर विषय अछि। सूत्रसँ रचनाक तुलना पाठककै वास्तविक तकनीकी व्यासंग दिस लऽ जाइत अछि। काव्यात्मक अर्थ-सामर्थ्यक विश्लेषण एहिसँ जोड़ल गेल रहितय तँ औपचारिक गहराइ आ संवेदनाक बीच सम्बन्ध बेसी स्पष्ट होइत।

एकोनविंश खण्ड : छन्द-संयोजनक सूक्ष्मता

रुक्कनक विशेष क्रम आ परस्पर संयोजनसँ बहर निर्मित होएबाक प्रक्रिया पर चर्चा अछि। ई सूक्ष्म व्याकरण गजलकार लेल कठोर आत्मपरीक्षणक साधन अछि। गजलकारकें मात्र अंकीय सूत्र नहि, सूत्रक श्रव्य लय सेहो अभ्यस्त करब आवश्यक अछि।

विंश खण्ड : वर्णिक छन्द आ अरबी बहरक सम्बन्ध

संस्कृत-वर्णवृत्त आ अरबी बहरक तुलनाक प्रयास विधागत अन्तर्सम्बन्ध बुझबाक लेल महत्वपूर्ण अछि। मुदा ऐतिहासिक सम्बन्ध, संरचनात्मक साम्य आ व्यावहारिक रूपान्तरण तीन अलग स्तर छथि; एकर समरूपता सिद्ध भेने स्रोत-परम्पराक प्रत्यक्ष वंशावली स्वतः प्रमाणित नहि भऽ जाइत अछि। ई भेद ग्रन्थक निष्कर्ष पढ़ैत लगातार राखबाक चाही।

एकविंश खण्ड : मैथिली लेल बहरक चयन आ तकतीअ

सरल वर्णिक अनुशासनकें आरम्भिक अभ्यास आ विस्तृत अरूजी बहरकें लक्ष्यक रूपमे लेखक प्रस्तावित करैत छथि। हिन्दी-उर्दू उदाहरणक तकतीअ एहि प्रस्तावक अनुप्रयोग स्पष्ट करैत अछि। किंतु अभ्यास-पद्धति आ अन्तिम कलात्मक श्रेष्ठताक बीच सीधा श्रेणीक्रम बनबैत समय सावधानी आवश्यक अछि; सरल रचनाक मार्मिकता मात्रिक जटिलतासँ कम नहि।

द्वाविंश खण्ड : सम्पादकीय मानदण्ड, भाषा, कथ्य आ गायन

एहि खण्डमे गजलकार आ सम्पादककें रचना ग्रहण करबाक प्रक्रिया, भाषाक पूर्ण-अपूर्ण रूप, भाव, कथ्य, संगीत आ विधाविभागपर विचार अछि। ई साहित्यिक

सार्वजनिकता सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप अछि। सम्पादकीय कसौटीक आवश्यकता मानैत सेहो बहु-पक्षीय रचनात्मक प्रयोगक अभिलेखीकरण करब संस्थागत जिम्मेवारी थिक।

त्रयोविंश खण्ड : गुण-दोष आ समीक्षा-व्यवस्था

रदीफ, काफिया, बहर, शेर आ गजलक गुण-दोषक क्रमबद्ध परीक्षण गजल आलोचनाकें प्रमाणसापेक्ष बनबैत अछि। ओहिक अतिरिक्त लेखकक व्यक्तित्व, आलोचकीय निष्पक्षता आ योगपर विचार आयल अछि। तकनीकी दोषसँ साहित्यिक गुणक स्वतः निरसन नहि होएबाक सैद्धान्तिक सीमा स्पष्ट राखब एहि समीक्षाशास्त्रक विकास लेल आवश्यक अछि।

चतुर्विंश खण्ड : गजलसँ सटल शाइरी-विधा

कसीदा, रुबाइ, कतआ, नज्म, हम्द, नात, मनकबत, हजल, बालगजल, भक्तिगजल आदि रूपक विवरण गजलकें व्यापक शाइरी-परिवारक बीच अवस्थित करैत अछि। विधा-भेदक ई परिप्रेक्ष्य पाठकक शब्दज्ञान बढ़बैत अछि। कतिपय शैलीक मूल सांस्कृतिक अर्थ आ मैथिलीमे ओकर समकालीन रूपान्तरणक बीच सेहो भेद राखबाक चाही।

पंचविंश खण्ड : मैथिली गजलक परम्परा आ इतिहास

प्राचीन काव्यक सांस्कृतिक संकेतसँ आधुनिक गजलकारक रचना, मुद्रित कृतिक प्रकाशन, गजल-सम्बन्धी बहस, पत्रिका, ब्लॉग, सामाजिक माध्यम, स्त्री-लेखन, नेपालक लेखक आ मुक्त-छन्दवादी धारा धरि विस्तृत सामग्री संगृहीत अछि। साहित्येतिहासक कच्चा दस्तावेजक रूपमे ई विशिष्ट उपलब्धि अछि। मुदा ऐतिहासिक विवेचन कतेको ठाम नियम-समर्थक आ नियम-अस्वीकारक लेखकक विभाजनसँ निर्देशित अछि; स्रोत-उपलब्धता, प्रतिनिधित्व आ व्यक्तिकेन्द्रित विवादक पुनर्परीक्षण बिना इतिहास सम्पूर्ण नहि भऽ सकैत अछि।

मैथिली गजलक साहित्यिक इतिहास : दावासँ प्रमाण धरि

लोकध्वनि, मध्यकालीन साक्ष्य आ विधागत निरन्तरताक प्रश्न
इतिहास-विवेचनक आरम्भमे लेखक लौकिक संस्कृत, वैदिक छन्द, लोकप्रचलित
सांगीतिक रूप आ पुरान मैथिली साहित्यसँ समानधर्मी ध्वनि-संरचनाक सम्भावना
खोजैत छथि। एहि खोजक महत्त्व मैथिलीक सांगीतिक स्मृतिक पुनर्मूल्यांकनमे अछि।
मुदा समान मात्राक्रम, युग्म-पाँति अथवा अनुरूप तुकान्त भेटब मात्रसँ गजल-विधाक
सीधी वंशावली सिद्ध नहि होइत। एकटा रचनाकेँ गजल कहल जाएबाक ऐतिहासिक
प्रमाण, रचनात्मक स्वरूपक समरूपता आ वास्तविक सांस्कृतिक प्रसार—ई तीनू
परस्पर पृथक कसौटी थिक।

ग्रन्थक प्रारम्भिक ऐतिहासिक वृत्तमे आधुनिक गजलक संग पुरान काव्यक साम्यक
चर्चा सृजनशील प्रस्ताव अछि, अन्तिम अनुक्रमित इतिहास नहि। जँ मध्यकालीन पाठक
एकहि संरचनाक अलग नाम उपयोग कएने छथि तँ ओकर ऐतिहासिक सन्दर्भ सुरक्षित
राखब आवश्यक अछि। अन्यथा वर्तमान विधाक नाम पुरान साहित्यपर पूर्वव्यापी रूपमे
आरोपित भऽ सकैत अछि।

आधुनिक आरम्भ : जीवन झा आ प्रारम्भिक शायर

लेखक आधुनिक मैथिली गजलक प्रारम्भिक आधार पं. जीवन झाक ‘सुन्दर-संयोग’क
प्रकाशन-वर्ष १९०५केँ मानैत छथि। तकर बाद यदुनाथ झा ‘यदुवर’, कविवर सीताराम
झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आदि पर चर्चा करैत छथि। एहि क्रममे आरम्भिक प्रयोगमे
अनुशासनगत असमानताकेँ स्वीकार कएल गेल अछि; सभ रचनाकेँ समान मूल्य देबाक
बदला तत्कालीन विधागत प्रयोगक स्थिति देखल गेल अछि। साहित्येतिहास लेल ई
महत्त्वपूर्ण अछि, कारण प्रथम प्रयास आ पूर्ण सिद्धि एक वस्तु नहि।

विदेहमे २०१८क प्रकाशित लेखकक ‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त
आलोचनात्मक परिचय’मे कविवर सीताराम झाक गजलक १९२८ आ मधुपक गजलक
१९३२क प्रकाशनक दावा भेटैत अछि। एहि तिथिकेँ लेखकक सन्दर्भित ऐतिहासिक

प्रस्तावक रूपमे पढ़बाक चाही। मूल पत्रिका, प्रथम संस्करण आ संशोधित पाठक पारस्परिक मिलानसँ ई क्रम अधिक मजबूत भऽ सकैत अछि। मौलिक शोधमे ‘सभसँ पहिल’ सन निर्णायक पदक प्रयोग स्रोत-समीक्षाक कठोर परीक्षा माँगैत अछि।

योगानन्द हीरा, विजयनाथ झा आ छन्दानुशासनक निरन्तरता

योगानन्द हीरा आ विजयनाथ झा सन रचनाकारकेँ पुनः चर्चामे अनब लेखकक पुनर्पाठक उद्देश्यक स्पष्ट उदाहरण अछि। विशेषतः विजयनाथ झाक ‘अहींक लेल’क २००८क प्रकाशनक चर्चा लेखकक अपन पूर्व दावाक संशोधनक आधार बनैत अछि। ओ स्वीकार करैत छथि जे हुनक ‘अनचिन्हार आखर’केँ मैथिली गजलक प्रथम बहराधारित संग्रह कहब उचित नहि; विजयनाथ झाक संग्रह ओकरा पूर्व प्रकाशित भेल छल। एहि आत्मसंशोधनमे इतिहासलेखनक नैतिक तत्त्व उपस्थित अछि—नव प्रमाण भेटलापर प्रतिष्ठित दावाकेँ बदलबाक तत्परता।

एहि पाठसँ ई निष्कर्ष नहि निकलैत जे एकटा नव ‘प्रथम’ स्थापनासँ इतिहासक समस्त प्रश्न समाप्त भऽ गेल। बहरयुक्त रचना, पूर्ण संग्रह, मुद्रित उपलब्धता, रचनाक वास्तविक रचनाकाल आ पाठकीय प्रसारक प्रमाण अलग-अलग रहलासँ ‘प्रथम’क अर्थ सेहो बदलि जाइत अछि। ग्रन्थ एहि विभेदकेँ जागरूक ढंगसँ उठाबैत अछि, मुदा सर्वत्र समान पद्धतिसँ लागू नहि करैत।

१९७०क बादक संक्रमण आ मुक्त-रूपक विवाद

ग्रन्थ परम्परागत बहरक अनुगमन करैत गजल आ बिना बहरक कथित ‘आजाद गजल’क मध्य तीख भेद करैत अछि। एही आधारपर किछु प्रतिष्ठित लेखकक गजल-श्रेणीकरणकेँ प्रश्नांकित कएल गेल अछि। एहि विवादमे मूलतः दू मान्यता आमने-सामने अछि: एक दिस विधाक ऐतिहासिक शिल्प अनिवार्य मानबाक आग्रह, दोसर दिस भाषाक नव कविता-जकाँ स्वायत्त प्रयोगक सम्भावना। दुनू मान्यताकेँ समान साहित्यिक निष्कर्ष मानब आवश्यक नहि; मुदा स्वतंत्र अस्तित्वक अभिलेख राखब इतिहासकारक कर्तव्य अछि।

रचनाकें ‘नियमसम्मत गजल’, ‘गजल-प्रेरित मुक्त रचना’, ‘नज्म’ अथवा ‘गीत’ मानबाक प्रस्ताव प्रकाशकीय वर्णनक उपयोगी उपकरण भऽ सकैत अछि। पर आलोचनात्मक निर्णयकें ओहि रचनाक सामाजिक आशय, नव भाषिक बिम्ब, आ पाठकीय प्रभावसँ सेहो सम्बद्ध राखल जाए। विधागत अशुद्धता आ काव्यात्मक निष्फलता पर्याय नहि—ई भेद ग्रन्थक विवादास्पद अंशक संतुलित पाठ सम्भव करैत अछि।

२००८क बाद : जालवृत्त, विदेह आ सार्वजनिक शास्त्रीय बहस
लेखक २००८क बाद ‘अनचिन्हार आखर’ जालवृत्त, विदेहक नियमित प्रकाशन, गजलशास्त्रीय लेख, सार्वजनिक वाद-विवाद, गजल-शिक्षण, आलोचना आ सम्मान-संस्कृतिक उदयकें नव अवस्थाक महत्त्वपूर्ण चिह्न मानैत छथि। विदेहक शोध-सूचीमे २०१४क ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’, २०१८क ‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’ आ गजल-विमर्शक अन्य लेखनक अभिलेख एहि सतत गतिविधिक प्रमाण अछि।

ग्रन्थमे १९०५–२००७ आ २००८क बादक विभाजनकें क्रमशः ‘जीवन युग’ आ ‘अनचिन्हार युग’ नाम देबाक प्रस्ताव दर्ज अछि, जे गजेन्द्र ठाकुरक गजलशास्त्रीय टिप्पणीसँ सम्बद्ध बताओल गेल अछि। साहित्येतिहासक दृष्टिँ ई आन्दोलनोन्मुख आत्मपरिभाषा अछि, सर्वमान्य तटस्थ काल-विभाजन नहि। जालवृत्तक आरम्भ, तकनीकी प्रविधिक प्रसार आ लेखकीय पद्धतिक परिवर्तनक तिथि जाँचि ई सिद्ध करब आवश्यक अछि जे समय-विभाजन समूची मैथिली गजलधाराक प्रतिनिधित्व करैत अछि कि केवल एक महत्त्वपूर्ण आन्दोलनक।

स्त्री, मुसलमान रचनाकार आ नेपालक मैथिली : समावेशक मानचित्र
ग्रन्थ स्त्री गजलकारक उपस्थिति, मुस्लिम शायरक सीमित प्रतिनिधित्व, नेपालक मैथिली रचनाकार आ सीमावर्ती बहुभाषिक संस्कृतिक उल्लेख करैत अछि। ई सामग्री मैथिली गजलकें केवल एक क्षेत्र वा जातीय साहित्यिक केन्द्रक परिसीमासँ बाहर

देखबाक अवसर देत अछि। तथापि संख्याक अल्पताक कारण सामाजिक रूढ़ि, विधागत क्षमता अथवा सामूहिक अभिरुचिपर त्वरित निष्कर्ष निकालब उचित नहि। प्रकाशनक अवसर, अभिलेखक उपलब्धता, आर्थिक-सांस्कृतिक संसाधन आ सम्पादकीय चयनक स्थितिक अध्ययन आवश्यक अछि।

साहित्यिक इतिहासमे ‘ककर नाम भेटल’ आ ‘ककर रचना नहि अछि’ अलग कथन अछि। लेखक अनेक स्थलपर अपन जानकारीक सीमाकेँ स्वीकार करैत छथि; एहि आत्मस्वीकृतिक विस्तार रूपमे भविष्यक सूचीमे अज्ञात लेखक, लोकगायन, पत्रिकाक विखरायल सामग्री आ महिलाक अप्रकाशित रचनाक खोज अत्यावश्यक बनैत अछि।

भारतीय आ अन्यभाषी गजलपरम्परासँ तुलनात्मक विवेचन

अरबी-फारसी-उर्दू अरूजक विरासत

गजलक पारिभाषिक तन्त्र अरबी, फारसी आ उर्दूक दीर्घ साहित्यिक सम्पर्कसँ विकसित भेल अछि। बहर, रुक्न, काफिया आ रदीफ एहि इतिहासक प्रमुख चिन्ह छथि। मैथिलीमे ई शब्द अपन शास्त्रीय आशय संग अबैत अछि, मुदा ओकर उच्चारण-व्यवस्था स्थानीय भाषा-विज्ञानक परीक्षण माँगैत अछि। लेखकक मौलिक प्रश्न ई नहि जे विरासत छोड़ि देल जाए, बल्कि ई जे विरासतकेँ जियत भाषामे कओन रूपेँ कार्यशील बनाओल जाए।

संस्कृत-मिथिला छन्दपरम्परा आ अरबी बहर

पं. गोविन्द झाक ‘मैथिली छन्दशास्त्र’, दीनबन्धु झाक व्याकरणपरम्परा आ मैथिली भाषाक शब्दरूप-विवेचनक उल्लेख ग्रन्थकेँ देशज शास्त्रीय आधार देत अछि। संस्कृतक वर्णवृत्त आ अरबी बहरक रूपात्मक तुलना सम्भव अछि, कारण दुनूमे लघु-दीर्घ अनुक्रमक अनुशासित प्रयोग अछि। पर एक समान संख्यात्मक रचना ऐतिहासिक समोत्पत्ति प्रमाणित नहि करैत; एहि भेदक प्रति सतर्क रहब आवश्यक अछि। ग्रन्थ एहि दिशामे बहु सामग्री दैत अछि, मुदा तुलनात्मक छन्दशास्त्रक स्वतंत्र पद्धति आर विकसित कएल जा सकैत अछि।

हिन्दी गजल आ मैथिलीक उच्चारण-समस्या

ग्रन्थ हिन्दी-उर्दू शब्दक उच्चारणान्तरक कारण छन्दीय मतभेदक चर्चा करैत अछि। लेखकक तर्क अछि जे हिन्दीमे उर्दूसँ आगत किछु शब्दक लिखित वा प्रचलित उच्चारण मात्रा-निर्णयमे जटिलता उत्पन्न करैत अछि। मैथिली लेल एहि तुलनाक उपयोगिता अछि, कारण अपन स्वर, संयुक्ताक्षर, नासिक्य ध्वनि आ रूपान्तरक नियम निश्चित कएलासँ तर्क अधिक सुसंगत बनि सकैत अछि। तथापि कओन भाषा अधिक सहज अछि, ई सामूहिक पदानुक्रम नहि; सभ भाषामे विविध उच्चारण आ छन्दीय रूढ़ि रहैत अछि।

समकालीन काव्यशास्त्रक सन्दर्भ : रूप, पाठक आ संस्था

ग्रन्थकेँ रूपवादी कसौटीसँ देखी तँ गजलक पहचान औपचारिक भेदपर निर्भर अछि; पाठक-केन्द्रित कसौटीसँ देखी तँ सुस्पष्ट शिल्पक ज्ञान ग्रहण-क्षमताकेँ निखारैत अछि; समाज-साहित्यिक कसौटीसँ देखी तँ पत्रिका, जालवृत्त आ समूह नव विधागत मानक गढ़ैत छथि। एहि तीनू दृष्टिक संयोजनसँ कृति अधिक गम्भीर होइत अछि। सम्पादकीय संस्था यदि गजलक सार्वजनिक परिभाषा पर प्रभाव डालैत अछि तँ ओकर चयनपद्धति स्वयं आलोचनाक विषय बनैत अछि। एहि दृष्टिसँ लेखकक आत्मकथात्मक कथन सेहो साहित्यिक संरचनाक दस्तावेज बनैत अछि।

प्रमुख उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

पहिल उपलब्धि विधागत शिक्षाक मैथिलीकरण अछि। प्रायः परकीय भाषाक माध्यमसँ उपलब्ध अरूजी शब्दावलीकेँ मैथिली शब्द, उदाहरण आ प्रश्नोत्तरक रूपमे उपलब्ध कराएब लेखकक दीर्घ अभ्यासक परिणाम अछि। दोसर उपलब्धि काफिया-निर्धारणक गहिराइ अछि; शब्दरूप, विभक्ति, आघात आ स्वर-साम्यकेँ जोड़ि शास्त्रकेँ स्थानीय भाषाविज्ञानसँ सम्वाद कराओल गेल अछि। तेसर उपलब्धि स्रोत-संग्रहण अछि—पुरान रचनाकारसँ समकालीन मंच धरि कविता, पत्रिका, पुस्तक, तिथि आ विचार-विवादक उपस्थिति एक ठाम भेटैत अछि।

मुख्य सीमा पहिल—मानक निर्धारणक अति-निश्चय। लेखक स्थानीय उच्चारण-वैविध्य स्वीकार करैत छथि, मुदा एकटा वर्तनी वा गणनाक निर्णयसँ विविध पाठ-परम्परा कतेको बेर अनुचित रूपसँ सीमित भऽ सकैत अछि। दोसर—आलोचनात्मक श्रेणीकेँ कतेको स्थलपर मूल्यनिर्णयक अन्तिम आदेश बना देबाक प्रवृत्ति। तेसर—साहित्यिक इतिहासमे आन्दोलनक आन्तरिक दृष्टि आ तटस्थ वंशावलीक अन्तरक पर्याप्त लेखाजोखा सर्वत्र नहि भेटैत अछि। चारिम—अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य लेखकक निबद्ध अथवा पुनरुत्पादित प्रमाणपर आधारित अछि; ओहि स्रोतक स्वतंत्र पाठ-तुलना भविष्यक शोध आवश्यक बनबैत अछि।

एहिमे एकटा महत्वपूर्ण सकारात्मक विरोधाभास सेहो अछि: लेखक नियमक कठोरता पर जोर दैतहुँ अपन पूर्व धारणा संशोधित करैत छथि। विजयनाथ झाक संग्रहकेँ सम्बन्धित प्राथमिकता-दावामे महत्त्व देब, स्रोतक सीमाकेँ स्वीकार करब आ पूर्व गजल-पाँतिक समानताक त्रुटि मानब इतिहासबोधक आत्मसमीक्षात्मक पक्ष उद्घाटित करैत अछि। एहि गुणकेँ सम्पूर्ण ग्रन्थक पद्धतिमे समान रूपसँ विस्तारित करब ओकर भविष्यगत उपयोगिता आर बढ़ा सकैत अछि।

आगामी गजल-अध्ययन लेल अनुसन्धानक दिशा

मैथिली गजलक विद्यमान अभिलेखकेँ अधिक विश्वसनीय बनाबै लेल क्रमशः मूल रचनाक प्रकाशित संस्करण, रचनाकाल, प्रथम प्रकाशन, सम्पादकीय पाठान्तर, कविक घोषित विधागत नाम, बहर-विश्लेषणक विकल्प आ भाषिक क्षेत्रक उच्चारण-साक्ष्य एक संग संरक्षित करब चाही। ग्रन्थक बहुतेक सूचीक आधारपर गजलकार-विशेषक आलोचनात्मक ग्रन्थसूची, दशकवार प्रकाशनक्रम आ चुन्नल शेरक समानधर्मी मात्रा-परीक्षा तैयार भऽ सकैत अछि।

नव अनुसन्धानमे एकटा साझा श्रेणीकरण उपयोगी हएत: परम्परागत बहरयुक्त गजल; सरलीकृत वर्णिक अभ्यास-गजल; मुक्त लयक गजल-प्रेरित कविता; गायनपरक नज्म-गीत; आ अन्य शाङ्गी-विधा। एहि श्रेणी सभकेँ अवमूल्यनक सीढ़ी नहि मानि वर्णनात्मक

उपकरण मानल जाए। एकर लाभ ई जे शास्त्रीय विधाकेँ ओकर रूप-परिभाषा भेटत, आ नव प्रयोगकेँ सेहो साहित्यिक इतिहासमे स्थान भेटत। एहन बहुलतासँ विषयक आलोचनात्मक स्पष्टता घटत नहि, उलटे बढ़त।

निष्कर्ष : शास्त्रक अनुशासन, इतिहासक खुलल द्वार

‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’क महत्त्व एकटा अन्तिम नियम-पुस्तक भऽ जाएबामे नहि, बल्कि गजल-सम्बन्धी चर्चाकेँ प्रमाण, पदावली, उदाहरण आ भाषिक परीक्षणक संग जोड़ि देबामे अछि। ई पोथी गजल लिखनिहारक प्रशिक्षणक साधन अछि; आलोचकक लेल शिल्प-परीक्षाक उपकरण अछि; साहित्येतिहासकारक लेल रचनाकार, ग्रन्थ आ साहित्यिक आन्दोलनक विविध संकेतक संग्रह अछि। एकर आलोचनात्मक उपयोग एहि तीनू भूमिकाक अन्तर बुझलाक बाद सम्भव होइत अछि।

लेखकक मूल आग्रह—मैथिलीमे गजल, आ मैथिलीक स्वरूपक अनुरूप गजल—भाषिक स्वायत्तताक महत्त्वपूर्ण घोषणा थिक। गजलक अनुशासनकेँ मैथिलीक जीवन्त भाषा-सम्पदासँ जोड़ब ग्रन्थक स्थायी उपलब्धि अछि। मुदा जँ इतिहासकेँ समाप्त सूची नहि, नित्य संशोधित अभिलेख मानल जाए, आ गजलक शास्त्रीय कसौटीकेँ साहित्यिक मूल्यक एकमात्र आधार नहि बनाओल जाए, तँ एहि पोथीसँ उत्पन्न विमर्श आर व्यापक, समावेशी आ सृजनशील बनि सकैत अछि। मैथिली गजलक भविष्य ओकर बहरक समरूपतामे मात्र नहि, ओकर भाषिक साहस, सामाजिक स्मृति, कलात्मक आत्मसंयम आ आलोचनात्मक आत्मपरीक्षणक संयुक्त क्षमतामे निहित अछि।

सन्दर्भसूची

मुख्य ग्रन्थ आ विदेहक प्रकाशित सामग्री

अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास। विदेह पोथी-अभिलेख; संशोधित पाठमे २०२२ धरि विकसित विवेचन।

अनचिन्हार, आशीष। अनचिन्हार आखर। श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, २०११।

अनचिन्हार, आशीष। संदर्भ सहित। गजल-आलोचना-संग्रह; विदेह पोथी-अभिलेख।

अनचिन्हार, आशीष। शब्द-अर्थ-शक्ति। गजल-काव्यशास्त्रीय आलोचना; विदेह पोथी-अभिलेख।

अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक रेडी रेकोनर। विदेह पोथी-अभिलेख।

अनचिन्हार, आशीष। “मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग।” विदेह, अङ्क १६५, २०१४।

अनचिन्हार, आशीष। “आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय।” विदेह, अङ्क २५३, २०१८।

अनचिन्हार, आशीष। “बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल।” विदेह, अङ्क २५१, २०१८।

अनचिन्हार, आशीष। “नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना।” विदेह, अङ्क २५२, २०१८।

अनचिन्हार, आशीष। “दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै।” विदेह, अङ्क ३०७, २०२०।

विदेह। विदेह पोथी—आशीष अनचिन्हारक ग्रन्थसूची आ मूल उपलब्धता।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह। शोध-लेख अनुक्रम—गजल, छन्द आ आलोचना सम्बन्धी लेखक-अनुक्रम।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>

विदेह। “आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय”, मूल लेख।

<https://www.videha.co.in/research/2018/253/>

विदेह। “मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग”, मूल लेख।

<https://www.videha.co.in/research/2014/165/>

मूल ग्रन्थमे चर्चित मुद्रित कृति आ शास्त्रीय सन्दर्भ

नीचाँक पोथीसभक ग्रन्थगत उल्लेखक आधारपर तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य निर्मित अछि। एतय ओहि सबहक स्वतंत्र प्रत्यक्ष सम्पूर्ण पाठ-परीक्षणक दावा नहि कएल जा रहल अछि।

दीनबन्धु झा। मिथिला भाषा विद्योतन। सम्पादन आ प्रकाशन : गोविन्द झा; द्वितीय संस्करण, १९९३।

झा, गोविन्द। मैथिली छन्दशास्त्र। मिथिला पुस्तक केन्द्र, दरभंगा; द्वितीय संस्करण, १९८७।

झा, गोविन्द। मैथिलीक उद्गम ओ विकास। मैथिली अकादेमी, पटना, १९८७।

झा, गोविन्द। उच्चतर मैथिली व्याकरण। मैथिली अकादेमी, पटना; द्वितीय संस्करण, १९९२।

झा, गोविन्द। मैथिली परिचायिका। शेखर प्रकाशन, पटना, २००६।

झा, गोविन्द। मैथिली परिशीलन। मैथिली अकादेमी, पटना, २००७।

झा, बालगोविन्द 'व्यथित'। आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना। मूल ग्रन्थमे उल्लिखित।

झा, युगेश्वर। मैथिली व्याकरण आओर रचना। मूल ग्रन्थमे उल्लिखित।

झा, रामदेव। "मैथिलीमे गजल।" रचना, जून १९८४; मूल ग्रन्थमे उल्लिखित।

झा, जीवन। सुन्दर-संयोग। १९०५; ग्रन्थमे प्रारम्भिक आधुनिक मैथिली गजलक आधारक रूपमे वर्णित।

झा, सीताराम। सूक्ति-सुधा, प्रथम बिन्दु। १९२८; विदेहमे प्रकाशित अनचिन्हारक ऐतिहासिक विवेचनमे उल्लिखित।

मिश्र, काशीकान्त 'मधुप'। "मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी।" मैथिली-सन्देश, १९३२; विदेहमे लेखकक इतिहास-विवेचनानुसार।

झा, विजयनाथ। अहींक लेल। शेखर प्रकाशन, पटना, २००८।

बेचैन, कुँअर। गजल का व्याकरण। अयन प्रकाशन, दिल्ली, १९९६।

शर्मा, आर. पी. 'महर्षि'। गजल लेखन कला। मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली, २००५।

शर्मा, आर. पी. 'महर्षि'। गजल और गजल की तकनीक। जवाहर पब्लिशर्स ऐण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, २००९।

आजम, मोहम्मद। आसान अरूज। शिवना प्रकाशन, सीहोर, २०१२।

Paoli, Bruno. "Meters and Formulas: The Case of Ancient Arabic Poetry." मूल ग्रन्थक सन्दर्भसूचीमे उल्लिखित।

Golston, Chris, आ Tomas Riad। "The Phonology of Classical Arabic Meter." मूल ग्रन्थक सन्दर्भसूचीमे उल्लिखित।

Deo, Ashwini, आ Paul Kiparsky। "Poetries in Contact: Arabic, Persian and Urdu." मूल ग्रन्थक सन्दर्भसूचीमे उल्लिखित।

१.१९. नित नवल आशीष अनचिन्हार — सन्दर्भ सहित

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

गजलक विधागत सीमा आ आलोचनात्मक विवेक

सार

‘सन्दर्भ सहित’ मैथिली गजलक शास्त्रीय संरचना, विधागत पहचान आ आलोचनात्मक उत्तरदायित्वक प्रश्नकेँ केन्द्रमे आनयवला आशीष अनचिन्हारक आलोचनात्मक संकलन अछि। पोथीमे गजल नामसँ प्रस्तुत अनेक रचनाक परीक्षण बहर, काफिया, रदीफ, शेरक संरचना, कथ्य आ भाषिक उच्चारणक आधारपर कएल गेल अछि। ई निबन्ध संकलनक सातू मुख्य आलेखक पृथक पुनर्पाठ करैत अछि; संगहि लेखकक मूल्यांकन-पद्धति, ओकर प्रमाणमूलक उपलब्धि, विवादप्रधान भाषाशैली, अन्य विधासँ गजलक सम्बन्ध, मैथिली गजललेखनक ऐतिहासिक क्रम आ वैकल्पिक आलोचनात्मक सम्भावनाक विवेचन करैत अछि। मूल निष्कर्ष ई जे पोथी मैथिली गजलक आलोचनामे तकनीकी जाँचक आवश्यकता स्थापित करैत अछि, मुदा सौन्दर्यात्मक बहुलता, इतिहासक पुष्टिकरण आ प्रतिपक्षक न्यायसंगत प्रस्तुतिक प्रश्न एखनहुँ विमर्शक माँग करैत अछि।

बीजशब्द : मैथिली गजल, बहर, काफिया, रदीफ, छन्दशास्त्र, विधाविज्ञान, साहित्येतिहास, आलोचना-पद्धति, विदेह, आशीष अनचिन्हार।

प्रस्तावना : विधाक प्रश्नसँ आलोचनाक प्रश्न धरि

मैथिली काव्यपरम्परामे गीत, पद, लोकधुन, मुक्तक आ विभिन्न छन्दात्मक रचनाक समृद्ध सहअस्तित्व रहल अछि। एहि बहुल परिदृश्यमे गजल अपन विशिष्ट शेर-विन्यास, तुकान्त व्यवस्था आ छन्दगत अनुशासन लऽ कऽ उपस्थित होइत अछि। गजलकेँ केवल प्रेम-विरहक स्वर अथवा गेयताक पर्याय मानि लेब ताहि विधाक आन्तरिक रचनाविधानकेँ अदृश्य बना दैत अछि। दोसर दिस, शास्त्रीय कसौटीकेँ मात्र अन्तिम निर्णायक मानि लेलासँ अर्थ, अनुभूति, सामाजिक आलोचना आ काव्यात्मक नवीनताक

स्वतन्त्र मूल्यांकन बाधित भऽ सकैत अछि। ई द्वन्द्व ‘सन्दर्भ सहित’क केन्द्रीय आलोचनात्मक भूमि अछि।

आशीष अनचिन्हार अपन संकलनमे स्थापित लेखक, नव रचनाकार, सम्पादक, भूमिकाकार आ सार्वजनिक साहित्यिक वक्ताकेँ एक्के विधागत प्रश्नक समक्ष ठाढ़ करैत छथि। एहि प्रक्रियामे रचनाक प्रसिद्धि अथवा रचनाकारक प्रतिष्ठा पर्याप्त प्रमाण नहि मानल जाइत अछि। ई आग्रह मैथिलीमे आलोचनाकेँ व्यक्तिपूजासँ अलग करबाक दिशा प्रदान करैत अछि। तथापि प्रमाण परखबाक अधिकार आ न्यायपूर्वक सुनबाक उत्तरदायित्व संगहि चलबाक चाही—एहि द्वैतकेँ ध्यानमे राखि पोथीक उपलब्धि आ सीमा दुनूक जाँच आवश्यक अछि।

ई अध्ययन मूल संकलनक सम्पूर्ण विन्यासकेँ आधार बनबैत अछि। सहायक साहित्यिक चयन विदेहमे उपलब्ध ग्रन्थसूची आ शोध-अभिलेख धरि सीमित अछि। लेखकक अपन इतिहास-संबन्धी दाबी आ अभिलेखसँ स्वतन्त्र रूपेँ पुष्ट तथ्यकेँ पृथक राखल गेल अछि। मूल पाठक अक्षरशः उद्धरण ओतबे उचित मानल जा सकैत अछि जतए पाठान्तर अथवा अक्षररूपक संशय नहि हो; एतए असन्दिग्ध पाठ-स्थितिक अभावमे प्रत्यक्ष पद्य-पङ्क्ति बजाय तर्क आ प्रसंगक विश्वसनीय विवेचन प्रस्तुत अछि।

ग्रन्थक रचना, स्वरूप आ सम्पादकीय अभिप्राय

संकलन दू खण्डमे व्यवस्थित अछि। पहिल खण्डमे छहटा विस्तृत आलेख अछि—बैकुण्ठ झाक गजल-संग्रहपर चर्चा, कमलमोहन चुन्नूक भूमिकाक आलोचना, काज्जीनाथ झा ‘किरण’क नामसँ गजल कहाएल रचनाक जाँच, अरविन्द ठाकुरक विधान-विरोधी प्रस्तावनासँ विमर्श, मैथिली गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कथित गजलक मूल्यांकन आ अनेक संग्रह-भूमिकाक सामूहिक समीक्षा। दोसर खण्डमे धिरेन्द्र प्रेमर्षि आ सियाराम झा ‘सरस’क सार्वजनिक बातचीतक सन्दर्भमे गजलक शास्त्रीय पक्षपर प्रश्नोत्तरात्मक विवेचन अछि। लेखकक वक्तव्य आ परिचय एहि आलोचनात्मक सामग्रीकेँ एकटा आत्मस्थित साहित्यिक कार्यक्रमक रूप दैत अछि।

एहि पोथीक स्वरूप परम्परागत एक-विषयक शोधग्रन्थसँ कनेक भिन्न अछि। ई अलग-अलग समयमे लिखल आलोचनात्मक हस्तक्षेपक संकलन अछि; तें एक्के उदाहरणक पुनरावृत्ति, पूर्वक विवादक पुनः स्मरण आ पाठकसँ प्रत्यक्ष सम्बोधन बारम्बार भेटैत अछि। एकर लाभ ई जे विभिन्न प्रसंगमे लेखकक सिद्धान्तक निरन्तरता देखाइत अछि। हानि ई जे कखनो तर्कक प्रसारक स्थान पुनरुक्ति लऽ लैत अछि आ घटनाक विशिष्ट ऐतिहासिक सन्दर्भ अपेक्षाकृत पाछाँ चलि जाइत अछि। एहि ग्रन्थकेँ क्रमिक विवादक साहित्यिक अभिलेख मानल जाए तँ ओकर संरचना अधिक स्पष्ट होइत अछि।

ग्रन्थक शीर्षक ‘सन्दर्भ सहित’ स्वयं आलोचनामे प्रसंग, पूर्वपाठ आ उदाहरणक आवश्यकताक संकेत अछि। लेखकक ध्यान केवल किछु रचना असफल सिद्ध करब नहि, बल्कि गजल कहबाक अधिकारक आधार स्पष्ट करब अछि। यथार्थतः पोथीक सभसँ महत्वपूर्ण प्रश्न अछि—विधाक नाम देब लेखकक निजी स्वतन्त्रता अछि कि साझी साहित्यिक परम्पराक प्रति उत्तरदायित्व सेहो? संकलन एहि प्रश्नक उत्तर कठोर विधागत अनुशासनक पक्षमे दैत अछि।

आलोचनाक आधार : बहर, काफिया, रदीफ आ अर्थ

गजलक रचनाविधानमे बहर शेरक दूनू मिसराक वजनक एकरूपताक प्रश्न उठबैत अछि; काफिया तुकान्त ध्वनिक पुनरागमनसँ सम्बद्ध अछि; रदीफ आवर्ती शब्द अथवा पदावली अछि, जकर उपस्थिति प्रत्येक गजलमे अनिवार्य नहि मानल जाइत अछि। मतलामे तुकान्त विन्यासक आरम्भिक संकेत आ मकतामे तखल्लुसक सम्भावना परम्परागत शिल्पकेँ चिन्हित करैत अछि। एहि सभ शब्दक प्रासंगिकता तखने अछि जखन उच्चारण, लघु-गुरु, संयुक्ताक्षर आ भाषिक प्रवाहसँ ओकर सम्बन्ध स्पष्ट हो। अनचिन्हार विधागत मान्यता आ सौन्दर्यात्मक श्रेष्ठताकेँ दू भिन्न प्रश्न मानबाक आग्रह करैत छथि। हुनकर तर्कक सार ई अछि जे कोनो रचना शिल्पगत कारणेँ गजल नहि भेल तँ से स्वतः खराब कविता नहि भऽ जाइत अछि। ओ गीत, कविता अथवा दोसर विधामे मूल्यवान भऽ सकैत अछि; मुदा ओकर नामकरण पुनर्विचार योग्य रहत। ई

अन्तर आलोचनात्मक रूपसँ उपयोगी अछि, कारण विधागत वर्गीकरण आ कलात्मक मूल्यांकनक घालमेल साहित्यिक बहसकें भावुक बना दैत अछि।

एतए एकटा जरूरी सूक्ष्म भेद अछि। गजलमे छन्दकें कविता-पाठक मात्रात्मक अनुशासन मानब आ गेय प्रस्तुतीक सङ्गीतात्मक तालकें ओही कसौटीक स्थानापन्न बना देब अलग-अलग बात अछि। काव्यात्मक मात्रा आ सङ्गीतक मात्रा शब्दरूपें समीप लगैत अछि मुदा विश्लेषणक विषय भिन्न अछि। संकलनक उत्तरार्ध एहि भेदपर विशेष बल दैत अछि। तथापि गेय प्रस्तुतीक प्रभाव, स्वर-संवेदना आ पाठकानुभव पूर्णतः अप्रासंगिक नहि; ई सभ विधागत पहचानक पश्चात् सौन्दर्य-मूल्यांकनमे अपन स्थान रखैत अछि।

मैथिली उच्चारणक विशेषता छन्दनिर्णयमे निर्णायक भऽ सकैत अछि। चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वारक भार, ह्रस्व-दीर्घक व्यवहार, शब्दान्त स्वर, संयुक्ताक्षरक ध्वन्यात्मक निष्पादन आ स्थानीय बोलचालक गति शास्त्रीय गणनाक पाछाँ रहनिहार जीवित भाषा अछि। एहि कारण मैथिली गजलक शास्त्रक निर्माण केवल उर्दू अथवा हिन्दीक सूत्रक प्रतिलिपि नहि, बल्कि मैथिलीक उच्चारण-व्यवस्थाक आधारपर समीकरणक परीक्षण सेहो अछि। विदेहमे उपलब्ध अनचिन्हारक पहिलुका गजल-आलोचनाक आलेख एहि दिशाक विकासक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : सात आलोचनात्मक हस्तक्षेप

बैकुण्ठ झाक गजल-संग्रह : अन्य विधाक कुशलता आ गजलक स्वतन्त्र शास्त्र पहिल आलोचनामे बैकुण्ठ झाक लघुकथाकार रूप आ हुनकर गजल नामसँ प्रकाशित रचनाक तुलनामूलक विवेचन अछि। लेखकक मूल प्रश्न ई जे कथासँ लघुकथाक भिन्नता माननिहार रचनाकार गजल आ गीतक बीच समान विधागत दूरी किएक नहि स्वीकार करैत छथि। एहि तुलना द्वारा अनचिन्हार एकटा रोचक सिद्धान्त स्थापित करैत छथि—कोनो विधामे निपुणता दोसर विधाक शास्त्रक स्वतः अधिकारपत्र नहि बनैत

अछि। साहित्यिक प्रतिभा स्थानान्तरित भऽ सकैत अछि, मुदा विधागत शिक्षणक आवश्यकता समाप्त नहि होइत अछि।

अहि समीक्षामे छन्द-गणनाक समस्या काव्यात्मक अर्थसँ जोड़ल गेल अछि। उच्चारण आ संयुक्ताक्षरक व्यवहारपर बल देलाक बाद समीक्षक रचनामे भक्ति, वैचारिक असंगति आ नव प्रतीकक सम्भावना सेहो चिन्हित करैत छथि। एहि क्रममे ओ किछु चित्रात्मक प्रयोगकेँ स्वागतयोग्य मानैत छथि। ई महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि, कारण एतए लेखक केवल नियम-रक्षक नहि रहि जाइत छथि; ओ रचनाक प्रतीकात्मक उर्वरताकेँ सेहो ग्रहण करैत छथि।

तथापि बैकुण्ठ झाक उपलब्धि वा त्रुटिक निर्णायक श्रेणीकरण लेल अधिक विस्तृत तुलनात्मक छन्द-विच्छेद, पूर्ण गजल-विन्यास आ विरोधी उदाहरणक आवश्यकता छल। कुछेक पङ्क्ति आधारपर सम्पूर्ण संग्रहक विधागत स्थिति निश्चित करब सम्भव अवश्य हो सकैत अछि, मुदा पाठककेँ सम्पूर्ण परीक्षणक पुनरुत्पादन करबाक सुविधा देब उत्तम आलोचनाक अंश होएत। एहि समीक्षा मे लेखकक तर्क तेज अछि, पर तकनीकी परीक्षणक विस्तृत पुनर्प्रदर्शन अपेक्षाकृत सीमित।

कमलमोहन चुन्नुक भूमिका : आलोचकक अधिकार आ आत्ममूल्यांकनक विवाद दोसर आलोचनामे ध्यान गजलक संग्रहसँ हटि ओकर भूमिकाक वैचारिक संरचनापर केन्द्रित अछि। कमलमोहन चुन्नुक भूमिका अनचिन्हार लेल एहि कारण उल्लेखनीय अछि जे ओहिमे रचनाक अपन मूल्य स्वयं प्रकट करबाक तर्कक सहारे आलोचकक भूमिकाकेँ सीमित कएल जा रहल बुझाईत अछि। अनचिन्हार एहि विचारक विरुद्ध आलोचनाकेँ सार्वजनिक परीक्षण, साहित्यिक संवाद आ ज्ञानात्मक उत्तरदायित्वक रूपमे स्थापित करबाक प्रयास करैत छथि।

एहि विमर्शक सबसँ सशक्त तत्त्व अछि उदाहरणक माँग। जँ कोनो रचनाकार मानैत छथि जे छन्दक पालनसँ कथ्य नष्ट भऽ जाइत अछि तँ ओकर पक्षमे लिखित रचना, शेर अथवा ठोस पाठ-साक्ष्य प्रस्तुत कएल जाएबाक चाही—ई आग्रह आलोचनाक सामान्य

न्यायसङ्गत नियम अछि। लेखक उलट उदाहरण रूपमे एहन शाङ्करक उल्लेख करैत छथि जिनकर गजल छन्दबद्ध रहितो राजनीतिक, सामाजिक आ मानवीय अनुभव व्यक्त करैत अछि। एहन तुलनासँ ‘रूप बनाम कथ्य’क कठोर विरोध अपर्याप्त सिद्ध होइत अछि।

किन्तु एतय व्यक्ति-सम्बन्धी तिव्र व्यङ्ग्य, उद्देश्यपर आरोप आ प्रतिपक्षक मनोवृत्तिक अनुमान आलोचनाक प्रदर्शनीय साक्ष्यकेँ दुर्बल करैत अछि। तर्कक मूल्यांकन लेखकक वैयक्तिक अभिप्रायसँ पृथक रहबाक चाही। एहि आलेखक आधारभूत सिद्धान्त टिकाऊ अछि—भूमिका साहित्यिक बहससँ मुक्त क्षेत्र नहि—मुदा ओकर श्रेष्ठ सम्भावना तखने खुलैत अछि जखन विवादक असहमति अपेक्षाकृत संयमित प्रमाण-भाषामे व्यक्त हो।

काज्जीनाथ झा ‘किरण’क गीत : नामकरण, सम्पादन आ ऐतिहासिक साक्ष्य तेसर आलेख काज्जीनाथ झा ‘किरण’क भक्ति आ शृङ्गार गीतक सम्पादित संकलनक समीक्षा करैत गजल नामसँ चिह्नित किछु रचनाक रूपपर प्रश्न उठबैत अछि। चर्चा केवल बहरक नहि; मूल पाठक सम्पादकीय वर्गीकरण, भूमिकामे विधा-परिचयक अभाव, एकहि रचनाक पुनरावृत्ति आ पूर्ववर्ती काव्यपरम्पराक अनुगमनक स्वरूप सेहो समीक्षाक विषय बनैत अछि। एहि कारण ई आलेख विधाविज्ञानक संग पाठसम्पादनक आलोचना सेहो अछि।

अनचिन्हारक प्रश्न ई जे राग-रागिनी अथवा गेयता सँ सम्बन्धित संज्ञाक समानता साहित्यिक विधागत नामकरणक प्रमाण नहि बनि सकैत अछि। एहि ठाम गीत आ गजलक बीच भेदक विवेचन विशेष महत्त्व रखैत अछि। संकलनक ऐतिहासिक लेखकीय मूल्य अस्वीकार नहि कएल गेल अछि; आपत्ति एतबे अछि जे ओहि विशिष्ट रचनाकेँ गजलक इतिहासमे प्रमाणस्वरूप स्थापित करब विधागत भ्रम बढ़ा सकैत अछि।

एहि आलेखमे सम्पादकक उत्तरदायित्वक चर्चा आलोचनाकेँ नव आयाम दैत अछि। पुरान सामग्रीक नब सम्पादन करैत समय मूल रचनाक शीर्षक, परम्परा, पाठान्तर आ

रचनाविधानक सम्बन्ध स्पष्ट करब आवश्यक अछि। तथापि किछु पारम्परिक पदरूपमे गजल-प्रभाव, गेय संरचना अथवा रागात्मक विन्यास रहि सकैत अछि; ताहि सम्भावनाक अध्ययन ‘गजल नहि’क निर्णयक बादो आवश्यक रहैत अछि। एहि दिशा मे अधिक ध्वन्यात्मक आ सांस्कृतिक तुलना आलोचनाकें समृद्ध कऽ सकैत छल।

अरविन्द ठाकुरक भूमिका : अनुशासन, विद्रोह आ नवीनताक द्वन्द्व
चारिम आलेख संकलनक सबसँ व्यापक सैद्धान्तिक बहस अछि। अरविन्द ठाकुरक साहित्यकें संहिताक अधीन नहि मानबाक प्रस्तावनाकें अनचिन्हार प्रश्नांकित करैत छथि। हुनका लेल प्रत्येक विधाक स्वीकृत संरचना कोनो कारागार नहि, बल्कि साझा अर्थनिर्माणक आधार अछि। विधाक नियमसँ संवाद करैत नवीनता सम्भव अछि; बिना वैकल्पिक रचनात्मक सिद्धान्त प्रस्तुत केने नियम भङ्ग करब मात्र मौलिकता सिद्ध नहि करैत अछि। एहि तर्कक मार्फत पोथी नव प्रयोग आ अव्यवस्थित विधा-भङ्गक बीच अन्तर करबाक आग्रह करैत अछि।

लेखक वेद, छन्द, संस्कृत उद्धरण, लोकदृष्टान्त आ शास्त्रीय परम्पराक बहुल सन्दर्भ दैत छथि। विशेष बात ई जे ‘संहिता’ पर चर्चा करैत-करैत ई आलेख संहिताक अर्थक विस्फार करैत साहित्यक सामाजिक नियमन, अभिव्यक्तिक मर्यादा आ भाषिक संरचनाकें एकहि बहसमे आनय चाहैत अछि। ई बौद्धिक प्रसार पोथीक महत्त्वपूर्ण गुण अछि, मुदा कखनो एहि प्रसारमे विधागत नियम आ सामाजिक-नैतिक नियमन समानार्थी बुझाए लगैत अछि, जबकि दुनूक उद्गम आ प्रभाव अलग अछि।

आलोचनाक एकटा मुख्य उपलब्धि भाषानुकूलनक सिद्धान्त अछि। अरबी, फारसी, उर्दू आ मैथिलीमे बहरक रूपान्तरणक चर्चा करैत लेखक एतय अन्धानुकरणक विरोध करैत छथि। एहि आधारपर कहल जा सकैत अछि जे हुनकर अनुशासनवाद नितान्त जड़ नहि; ओ परम्पराक परिवर्तन स्वीकार करैत छथि, किन्तु परिवर्तनक पहचान लेल स्पष्ट नव रूपविधान चाहैत छथि। एहि बातकें काव्यशास्त्रीय दृष्टिँ सकारात्मक मानब चाही। दोसर दिस, प्रयोगधर्मी गजलकें केवल नाम-बदलावक प्रश्नमे सीमित करब नव विधागत अन्तर्सम्बन्धक मूल्यांकनकें संकुचित कऽ सकैत अछि।

आलेखक अनेक खण्डमे प्रतिपक्षक कथन राखि तकर उत्तर देबाक पद्धति अपनाएल गेल अछि। ई बहसकें पाठसापेक्ष बनबैत अछि; पाठक विवादक दूनू पक्षक सूत्र देखैत छथि। मुदा चयनित कथनक सन्दर्भ, ओकर सम्भावित भिन्न अर्थ आ समर्थक साक्ष्यक अधिक उदार प्रस्तुति रहितै तँ विमर्श आओर सन्तुलित होइत। एहि अध्यायक ऐतिहासिक महत्त्व एकरेमे अछि जे ई मैथिली गजलकें रचना-शिक्षणसँ उठाकऽ साहित्यिक सिद्धान्तक सार्वजनिक प्रश्न बनबैत अछि।

मैथिली गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर : प्रभावशाली गीत आ गजल रूपक भेद पाँचम आलेखमे समीक्षाक विषय मैथिली गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक गजल नामसँ सम्बद्ध रचना अछि। एतय आलोचक इतिहासक एकटा सूक्ष्म प्रश्न उठबैत छथि—कोनो प्रतिष्ठित गीतकारक रचनापर ‘गजल’ नाम अंकित होएब ओकर शास्त्रीय विधागत स्वरूपक पर्याप्त प्रमाण अछि कि नहि। उत्तरमे ओ मैथिली गजलक पहिलुका उदाहरणक शेर-विन्यास आ छन्दबद्धताक तुलना गीतात्मक रचनासँ करैत छथि। एहि प्रकार संकलन प्रभावशाली लेखक आ विधागत प्रमाणक बीच आवश्यक दूरी बनबैत अछि।

जीवन झा, सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, योगानन्द हीरा आ जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क उदाहरणक सहारे लेखक देखबैत छथि जे गजलमे भक्ति-विरह, राजनीतिक विसङ्गति, श्रमिक अथवा जनजीवनक अनुभूति, अभाव आ सामाजिक विद्रूपता समेटल जा सकैत अछि। ई तुलना महत्वपूर्ण अछि, कारण ओ रूपक अनुशासनकें कथ्यक शत्रु नहि बल्कि अभिव्यक्तिक उपकरण मानैत अछि। समाजबोध आ छन्दशुद्धताक संयोग एहि आलेखक सकारात्मक काव्य-दृष्टि अछि।

किन्तु आलोचनात्मक रूपसँ ईहो जरूरी अछि जे गीतकें गजल नहि मानबाक निर्णय गीतक आन्तरिक सौन्दर्यकें घटा नहि देत। समीक्षक अन्ततः रचनाक गीतात्मक मूल्य स्वीकार करैत छथि; एहि स्वीकृतिक कारण आलेख एकतरफा खण्डन नहि रहि जाइत अछि। एतय मैथिली गीतक नादात्मकता, पदानुक्रम आ लोक-लयक स्वतन्त्र परीक्षण आओर विकसित कएल जाइत तँ शैलिगत तुलना अधिक पूर्ण होइत।

विभिन्न संग्रहक सामूहिक समीक्षा : साहित्यिक नामकरणक सार्वजनिक कसौटी छठम आलेखमे गजल कहल गेल अनेक संग्रह, भूमिकाकारक वक्तव्य आ प्रचलित भ्रान्तिक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि। एहि विविध सामग्रीक कारण आलोचनाकेँ एकटा साझा पद्धतिसँ देखबाक अवसर भेटैत अछि। मुख्य कसौटी पुनः बहर-काफियाक अनुशासन अछि; मुदा किछु संग्रहमे काफिया-रदीफक सफल विन्यास, भाषा-प्रयोगक सम्भावना अथवा गीतरूपक पठनीयताकेँ लेखक मान्यता सेहो दैत छथि। एहि सूक्ष्म स्वीकारोक्तिसँ बुझाईत अछि जे हुनकर मूल्यांकन सर्वथा द्विआधारी नहि अछि।

एहि प्रसंगमे तारानन्द झा ‘तरुण’, मनोज शाण्डिल्य, रामेश्वर निशान्त, सतीश साजन आ सामूहिक गजल-संकलनक उदाहरण रचनाक नामकरण, भूमिकाक तर्क आ सम्पादकीय जिम्मेदारीक विभिन्न समस्या सामने आनैत अछि। कोनो भूमिकाकार उच्च स्वरक स्वतन्त्रताक पक्षमे छथि तँ कोनो रचनाकेँ परम्परागत छन्दसँ छूट देबाक माँग करैत छथि। अनचिन्हार एहि दावीक तर्कगत असंगतिक अन्वेषण करैत छथि। एहि ठाम आलोचनाक वास्तविक विषय केवल कवि नहि, बल्कि साहित्यिक मान्यता गढ़निहार सम्पादकीय संस्था अछि।

सामूहिक विवेचनक सीमा स्रोत-विस्तारक असमानता अछि। कतहु पूरा संग्रहक रचनात्मक शिल्पपर विचार अछि, कतहु प्रमुखतः भूमिकाक कथनपर आपत्ति। एहन स्थिति मे सबटा कृतिकेँ एकहि प्रकारक असफलता-निर्णायक अन्तर्गत रखबाक सावधानी चाही। श्रेष्ठ विधागत आलोचनाकेँ पुस्तक-वार प्रमाण-शृंखला, छन्द-विच्छेद, पाठान्तर आ स्वतन्त्र सौन्दर्य-मूल्यांकनक मध्य सम्बन्ध स्पष्ट करबाक चाही।

दू साहित्यकारक बातचीत : मौखिक वक्तव्यक पाठीय परीक्षा दोसर खण्डमे धिरेन्द्र प्रेमर्षि आ सियाराम झा ‘सरस’क सार्वजनिक बातचीतसँ उठल गजल-विषयक तर्कक समीक्षा अछि। ई लेख संकलनक माध्यम-परिवर्तनक साक्षी अछि। एतय स्थिर पुस्तक आ लिखित भूमिकाक स्थानपर तत्कालिक मौखिक कथन आलोचनाक सामग्री बनैत अछि। लेखक छन्दक मात्रा आ सङ्गीतक मात्रा, लिखित

काव्य-विन्यास आ गायन, रचनाक लोकप्रियता आ विधागत वैधता—एहि तीनू भेदकेँ विशेष रूपसँ स्पष्ट करैत छथि।

लेखकक प्रतिप्रश्न पाठककेँ ई सोचबाक प्रेरणा दैत अछि जे गाएल जा सकबाक सम्भावना मात्र गजल बनबाक कसौटी नहि; दोहा, गीत आ आन छन्द सेहो गाओल जाइत अछि। एतय साहित्यक रूपात्मक व्याकरण आ प्रस्तुतीकरणक सौन्दर्यक क्रम पृथक होइत अछि। वस्तुतः ई अन्तर प्रदर्शनक क्षेत्रमे विधागत पहचानक वैज्ञानिक जाँच लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

मौखिक बातचीतक आलोचना करैत सन्दर्भ, कथनक पूरा आशय आ वक्ताक वक्तव्यक समय-विशिष्टता विशेष जरूरी होइत अछि। पुस्तकमे व्यक्तिक क्षमता अथवा उद्देश्यपर तीव्र टिप्पणी विमर्शक प्रमाणिक पक्षकेँ गौण करबाक जोखिम उत्पन्न करैत अछि। शास्त्रीय नियमक व्याख्या एतय उपयोगी अछि; मुदा अधिक सन्तुलित सम्पादन, मूल कथनक समग्रता आ उत्तरक अनुपातबद्धता ओकर सार्वजनिक बौद्धिक मूल्य बढ़बैत।

साहित्येतिहासक तुलनात्मक विवेचन

आरम्भिक शिल्प-साक्ष्यसँ समकालीन विवाद धरि

‘सन्दर्भ सहित’ मैथिली गजलक इतिहासक आरम्भिक चरणकेँ जीवन झाक नामसँ जोड़ैत अछि आ हुनकर शेरक शिल्पगत नियमितताकेँ प्रारम्भिक प्रमाण मानैत अछि।

ओहि क्रममे सीताराम झा आ ‘मधुप’सँ लऽ कऽ उत्तरवर्ती शाइर धरि गजलक आन्तरिक अनुशासनक निरन्तरता खोजल जाइत अछि। एहि ऐतिहासिक पुनर्निर्माणक विशिष्टता ई जे लेखक प्रसिद्धि अथवा प्रकाशन-वर्षक बजाय छन्दात्मक उदाहरणसँ विधाक इतिहास सिद्ध करबाक प्रयास करैत छथि। ई दिशा स्रोताधारित इतिहासक दृष्टिएँ उपयोगी अछि।

संकलनमे गजल-विमर्शक आरम्भ आ विस्तारक सन्दर्भमे तारानन्द वियोगीक पूर्ववर्ती हस्तक्षेप, रामदेव झाक सैद्धान्तिक प्रयत्न आ नव सहस्राब्दीक उत्तरार्धमे ‘अनचिन्हार

आखर'क सक्रियताक क्रम प्रस्तुत अछि। २००८ क आसपासक डिजिटल गजल-विमर्श आ २००९ सँ 'मैथिली गजल शास्त्र'क विकास विदेहमे प्रकाशित अनचिन्हारक स्वतन्त्र आलेखसँ सेहो पुष्ट होइत अछि। तथापि संकलनमे आएल प्राचीनता, प्रथमत्व, रचनाकार-संख्या आ लेख-संख्याक परिमाणात्मक दाबीकेँ स्वतन्त्र ग्रन्थसूची-आधारित गणना बिना स्थापित इतिहासक अन्तिम निष्कर्ष नहि मानबाक चाही।

साहित्येतिहास केवल तिथिक क्रम नहि, अवधारणाक विकास सेहो अछि। आरम्भिक गजलकारक शेरमे रूपक अन्तर्गत रहि कथ्यक विविधता; परवर्ती दशामे गीत आ गजलक नामकरणक विवाद; आ डिजिटल युगमे छन्दक नियमक सामूहिक शिक्षण—ई तीनू चरण अलग-अलग प्रकृतिक ऐतिहासिक प्रक्रिया अछि। पहिल चरण रचनाक उदाहरण दैत अछि, दोसर चरण विधागत पहिचानक विवाद पैदा करैत अछि, तेसर चरण आलोचना आ पाठशिक्षणक लोकतान्त्रिक प्रसार सम्भव करैत अछि। एहि रूपमे अनचिन्हारक ग्रन्थ इतिहासक एकटा विवादशील, मुदा उपेक्षणीय नहि, दस्तावेज अछि।

विदेहक अभिलेखमे समवर्ती विमर्श

विदेहक शोध-अभिलेखमे अनचिन्हारक काफिया आ बहर विषयक आरम्भिक आलेख, गजल व्याकरणक प्रारम्भिक प्रयोगपर स्वतन्त्र विवेचन, नरेन्द्रक मैथिली-हिन्दी गजलक तुलनात्मक समीक्षा, मैथिली गजलक बयान-सन्दर्भ, दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाजसँ सम्बन्धित विमर्श आ गीत-सङ्गीतक इतिहासक प्रश्न दर्ज अछि। एहि अभिलेखक महत्त्व ई जे 'सन्दर्भ सहित'मे व्यक्त मत एकटा एकाकी, तात्कालिक प्रतिक्रिया नहि; ओकर पाछाँ निरन्तर विकसित होइत तकनीकी, तुलनात्मक आ सामाजिक आलोचनाक काज चलि रहल छल।

एकर संगहि विदेहमे उपलब्ध 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास', 'मैथिली गजलक रेडी रेकोनर', 'अनचिन्हार आखर' आ 'शब्द-अर्थ-शक्ति' सन ग्रन्थक सूचीक उपस्थिति एहि आलोचनाकेँ लेखकक व्यापक रचनात्मक परियोजनासँ जोड़ैत अछि। एहि ग्रन्थसभक शीर्षक, प्रकृति आ विदेहमे उपलब्धताक पुष्टि अभिलेखसँ होइत अछि;

मुदा एतय ओहि प्रत्येक ग्रन्थक सम्पूर्ण पाठक स्वतन्त्र परीक्षणक दावा नहि कएल जा रहल अछि। ई भेद आलोचनात्मक विवेकक अनिवार्य शर्त अछि।

साहित्येतिहासक दोसर सावधानी 'मुख्यधारा' आ 'समानान्तर'क द्विभाजनसँ सम्बद्ध अछि। वैकल्पिक मंचक भूमिका निर्विवाद रूपेँ महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्येक पूर्ववर्ती रचनाकारकेँ एकरूप समूह मानि लेब इतिहासक आन्तरिक अन्तरकेँ अस्पष्ट बना दैत अछि। साहित्यिक परिवर्तनमे सहमति, असहमति, रूपान्तरण, परम्परागत छन्दक पुनर्पाठ आ नब भाषिक प्रयोग सभक सहभागिता रहैत अछि। तें सम्यक् इतिहासकेँ केवल पक्ष-विपक्षक इतिहास नहि, पाठ-परम्पराक बहुविकल्पी इतिहास बनबाक चाही।

तुलनात्मक सौन्दर्यशास्त्र : रूप, कथ्य आ विधागत स्वातन्त्र्य

रूप आ कथ्यक सम्बन्धपर 'सन्दर्भ सहित' एकटा उपयोगी सुधार प्रस्तुत करैत अछि। शास्त्रीय अनुशासनकेँ रचनात्मक प्रतिबन्ध माननिहार दृष्टिक विरुद्ध संकलन अनेक विषयक गजलक संकेत दैत अछि—विरह, पारिवारिक अभाव, सामाजिक विसङ्गति, राजनीतिक क्षोभ आ मानवीय गरिमा। ई दृष्टान्त सभ बतबैत अछि जे पूर्वनिर्धारित छन्द-विन्यास आवश्यक रूपसँ काव्यकेँ निष्प्राण नहि करैत अछि। कविता कथ्यक प्रभाव आ रूपात्मक चयनक परस्पर क्रियासँ जनमैत अछि; कोनो एकटा पक्ष दोसर पक्षक स्थायी शत्रु नहि।

तथापि शास्त्रीय रूपक उपस्थिति मात्र सौन्दर्य-मूल्यक सुनिश्चित प्रमाण सेहो नहि। एकर प्रमाणक आवश्यकता अछि जे विधागत योग्यताक परीक्षा पार करल रचना विषयक गाम्भीर्य, बिम्बक नवीनता, ध्वन्यात्मक सूक्ष्मता आ अनुभवक जटिलता सेहो वहन करैत हो। अनचिन्हारक आलोचना जखन शिल्पगत दोषक उद्घाटनक बाद प्रतीक, सामाजिकता आ भावभूमि दिस मुड़ैत अछि, तखने ओकर साहित्यिक सम्भावना सर्वाधिक खुलैत अछि। एहि दोहरी पद्धतिक आओर नियमित विकास मैथिली गजल-समालोचना लेल फलदायक होएत।

गीत आ गजलमे अन्तर्सम्बन्धक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। दूनू रूप गेय भऽ सकैत अछि, दूनूमे तुकान्त अथवा आवृत्ति सम्भव अछि, दूनू लोकभाषा आ शास्त्रीय संस्कारसँ पोषित भऽ सकैत अछि। तथापि गीतक पदबद्ध प्रवाह आ गजलक शेरगत आंशिक स्वायत्तता, मतला-आधारित तुकान्त-व्यवस्था आ बहरगत अनुशासन एकर भिन्न विन्यास रचैत अछि। एहि भेदकेँ स्वीकार करैतो सांस्कृतिक सम्पर्कक अध्ययनेक दरबाजा बन्द नहि करबाक चाही। गजल लेल विधागत सीमा आ गीत लेल स्वतन्त्र गौरव दूनू एकसंग सुरक्षित राखल जा सकैत अछि।

भाषा, व्यङ्ग्य, पुनरावृत्ति आ आलोचनात्मक वाणी

अनचिन्हारक गद्य संवादप्रधान, प्रश्नोन्मुख आ विवादक तापसँ संचालित अछि। ओ पाठकसँ सीधा प्रश्न करैत छथि, लोकजीवनक उपमान आनैत छथि, छन्दक गणनाक व्यवहारिक उदाहरण दैत छथि आ रचनाकारक कथनक प्रत्यक्ष प्रतिवाद करैत छथि। एहि शैलीक गुण अछि सहज पहुँच। छन्दक तकनीकी विषय केवल विशेषज्ञक रहस्य नहि रहि साधारण पाठक लेल विचारणीय प्रश्न बनैत अछि। खीरक निर्माणक तुलनासँ विधाक अनिवार्य अवयव आ वैकल्पिक अलङ्कारक अन्तर बुझएबाक प्रयास एहि लोकाभिमुख आलोचनात्मक प्रवृत्तिक निदर्शन अछि।

एहि शैलीक दोसर पक्ष तिक्त उपहास अछि। व्यक्तिक उद्देश्य, योग्यता अथवा निजी हितपर संकेत करैत काल तर्क आ अनुमानक दूरी घटि जाइत अछि। फलतः एकटा प्रमाणिक तकनीकी आपत्ति सेहो वैयक्तिक विवाद जकाँ ग्रहण कएल जा सकैत अछि। आलोचनाक प्रभाव केवल तर्कक कठोरतासँ नहि, प्रतिपक्षक सर्वोत्तम सम्भव अर्थ बुझि ओकर उत्तर देबाक क्षमतासँ सेहो बनैत अछि। एहि दृष्टिँ ‘सन्दर्भ सहित’क भाषा कखनो अपन प्रमाणात्मक योगदानक विरुद्ध काज करैत देखाइत अछि।

एक्के शेर अथवा छन्द-उदाहरणक पुनरागमन लेखकक स्पष्ट सम्पादकीय रणनीतिक अंश बुझाइत अछि। प्रत्येक अलग आलेखक पाठक धरि न्यूनतम प्रमाण पहुँचेबाक उद्देश्यसँ ई पुनरावृत्ति उपयोगी छल। मुदा संकलनरूपमे पढ़ैत काल ई पद्धति

समालोचनाक क्रमागत विकासकें अस्पष्ट सेहो करैत अछि। भविष्यक संशोधित संस्करणमे सामान्य विधा-परिचयकें आरम्भमे संगठित कऽ प्रत्येक आलेखमे नब पाठिय समस्या आ नवीन उदाहरणकें अधिक स्थान देल जाए तँ ग्रन्थक अध्ययन-सुलभता बढ़त।

आलोचनाक ज्ञानमीमांसा : उपलब्धि आ मर्यादा

एहि पोथीक निर्णायक उपलब्धि विधागत दावीक प्रमाण माँगब अछि। लेखक, भूमिकाकार, सम्पादक अथवा लोकप्रियता—एहि सभमे सँ कोनो एकटा वस्तु अपने-आप गजलक कसौटी नहि बनैत अछि। रचनाक रूपक परीक्षा, प्रयोगक इतिहास, भाषिक उच्चारण आ विचारक सन्दर्भ एकसंग देखबाक आग्रह मैथिली आलोचनामे अनुशासनक महत्त्वपूर्ण पुनर्स्थापना अछि।

दोसरा पक्षमे किछु प्रश्न शेष रहैत अछि। पहिल, गजलक परम्परागत परिभाषा आ आधुनिक प्रयोगशील परिभाषा कतेक दूर धरि बहुवचनमे सहअस्तित्व रखि सकैत अछि? दोसर, छन्दशुद्ध रचना कला-दृष्टिँ कमजोर भेल तँ ओकर मूल्यांकनक अगिला स्तर की होएत? तेसर, गेयता आ जनस्वीकृतिक भूमिका विधागत कसौटीक पश्चात् केहन प्रकारँ जाँचल जाएत? चारिम, विविध बोलचालमे शब्दक उच्चारण अलग भेलासँ एकहि मिसराक वजनक प्रश्न केना सुलझत? पाँचम, इतिहासक परिमाणात्मक विवरण लेल स्रोत-विस्तार, तिथि-निर्धारण आ सम्पूर्ण कृतिसूचीक केहन प्रमाण अपेक्षित अछि? अहि प्रश्नक उत्तर अनचिन्हारक स्थापनाक सरल खण्डनसँ नहि, ओकर अनुसन्धानी विस्तारसँ सम्भव अछि। एकटा सक्षम आलोचनात्मक पद्धति पहिने रचनाक पाठ निर्धारित करत; फेर छन्द आ काफियाक परीक्षण करत; तकर बाद अर्थ, बिम्ब, सामाजिक अनुभव आ रचना-सन्दर्भ देखत; आ अन्तमे ऐतिहासिक दावीक स्रोतगत विश्वसनीयताक जाँच करत। एहि चारि स्तरीय क्रममे ‘गजल अछि कि नहि’ आ ‘श्रेष्ठ काव्य अछि कि नहि’क उत्तर अलग-अलग, मुदा परस्पर सम्बद्ध रूपमे भेटि सकैत अछि।

निष्कर्ष : विधाक रक्षा सँ साहित्यिक विवेक धरि

‘सन्दर्भ सहित’क स्थान मैथिली साहित्यक ओहि आलोचनात्मक धारामे अछि जतए विधाक प्रतिष्ठा रचनाकारक प्रतिष्ठासँ ऊपर राखल जाइत अछि। ई पोथी गजलकें केवल एकटा भावधर्म अथवा संगीतात्मक प्रस्तुति नहि मानि छन्द, ध्वनि आ शेर-विन्यासक विशिष्ट काव्यरूप रूपमे परीक्षण करबाक आग्रह करैत अछि। सातू आलेख मिलि मैथिली गजलक आलोचनाकें पाठ, भूमिका, सम्पादन, मौखिक विमर्श आ ऐतिहासिक दावीक विविध धरातलपर विस्तारित करैत अछि।

ग्रन्थक सबसँ मजबूत योगदान शास्त्रीय कसौटीक सार्वजनिककरण, उदाहरणक माँग, गीत-गजलक भेदक स्थापना आ रचनाक विधागत पहचान आ काव्य-मूल्यक पृथक्करण अछि। एकर सीमा कखनो व्यक्तिनिष्ठ प्रतिवाद, ऐतिहासिक संख्या-सम्बन्धी अपुष्ट प्रस्तुति, पुनरावृत्ति आ सौन्दर्यात्मक विश्लेषणक अपेक्षाकृत अल्प विस्तारमे देखाइत अछि। तथापि एहि सीमा सभकें चिन्हित करब पोथीक महत्त्व घटाएब नहि; उलटे एकर प्रतिपादित प्रमाणप्रधान मूल्यकें ओकरे ऊपर लागू करब अछि।

मैथिली गजलक आगामी आलोचनाक लेल एहि संकलनसँ दू शिक्षा मिलैत अछि— रूपक प्रश्नसँ भागल नहि जाए आ रूपक प्रश्नपर आलोचना समाप्त सेहो नहि कएल जाए। कविता अनुशासित भाषा आ जीवित अनुभवक सम्मिलित साधना अछि। अनचिन्हारक हस्तक्षेप एहि साधनाक पहिल पक्षकें दृढ़तासँ सामने अनैत अछि; दोसर पक्षकें बराबर विकसित करब नव पीढ़ीक आलोचकक काज अछि। एहि अर्थमे ‘सन्दर्भ सहित’ बन्द निर्णय नहि, मैथिली गजलपर अधिक कठोर, बहुविषयक आ प्रमाणसचेत बहसक एकटा सशक्त आरम्भिक आधार बनैत अछि।

सन्दर्भसूची

मूलाधार आ सहायक सन्दर्भ सभ विदेहक प्रकाशित ग्रन्थसूची आ शोध-अभिलेखसँ चुनल गेल अछि। सूचीमे देल अन्य पोथीक विवरण ग्रन्थसूचीय साक्ष्य अछि; ओकर सम्पूर्ण पाठक स्वतन्त्र परिशीलनक दावा एहि निबन्धमे नहि कएल गेल अछि।

01. अनचिन्हार, आशीष। सन्दर्भ सहित : गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा ओ गजलपर आलेख। विदेह साहित्यिक अभिलेख; प्रस्तुत मूल पोथी।
02. अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास। विदेह पोथी-अभिलेख, ग्रन्थसूचीमे उपलब्ध।
03. अनचिन्हार, आशीष। अनचिन्हार आखर : गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह। विदेह पोथी-अभिलेख, ग्रन्थसूचीमे उपलब्ध।
04. अनचिन्हार, आशीष। मैथिली गजलक रेडी रेकोनर। विदेह पोथी-अभिलेख, ग्रन्थसूचीमे उपलब्ध।
05. अनचिन्हार, आशीष। शब्द-अर्थ-शक्ति। विदेह पोथी-अभिलेख, ग्रन्थसूचीमे उपलब्ध।
06. अनचिन्हार, आशीष। 'काफिया'। विदेह, अङ्क ११२; विदेह शोध-अभिलेख।
07. अनचिन्हार, आशीष। 'काफिया आ बहर'। विदेह, अङ्क ११३; विदेह शोध-अभिलेख।
08. अनचिन्हार, आशीष। 'मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा : स्वरूप आ तत्व निर्धारण'। विदेह, अङ्क १५७, २०१४।
09. अनचिन्हार, आशीष। 'मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग'। विदेह, अङ्क १६५, २०१४।
10. अनचिन्हार, आशीष। 'बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल'। विदेह, अङ्क २५१, २०१८।
11. अनचिन्हार, आशीष। 'नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना'। विदेह, अङ्क २५२, २०१८।
12. अनचिन्हार, आशीष। 'दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै'। विदेह, अङ्क ३०७, २०२०।
13. अनचिन्हार, आशीष। 'एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलकै मैथिली गीत-सङ्गीतक इतिहास'। विदेह, अङ्क ३१२, २०२०।

14. अनचिन्हार, आशीष। ‘किछु लीखि देलासँ, किछुओ लीखि देलासँ गजल नहि होइत छै’। विदेह, अङ्क ४३७, २०२६।
15. विदेह सम्पादकीय अभिलेख। ‘विदेह पोथी’—मैथिली ग्रन्थ-सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
16. विदेह शोध-अभिलेख। ‘विदेह शोध-लेख : अंक १ सँ ४५१ धरि’। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
17. अनचिन्हार, आशीष। ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’। विदेहक मूल आलेख : <https://www.videha.co.in/research/2014/165/मैथिली-गजल-व्याकरणक-शुरूआती-प्रयोग.htm>

१.२०. नित नवल आशीष अनचिन्हार — शब्द-अर्थ-शक्ति

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

गजल-आलोचनाक रूपशास्त्र, भाषा आ इतिहास

सारांश

आशीष अनचिन्हारक ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ आधुनिक मैथिली गजलक स्वरूप, छन्दानुशासन, भाषिक स्वायत्तता आ साहित्येतिहासपर केन्द्रित आलोचनात्मक हस्तक्षेप अछि। एकर खास विशेषता ई जे लेखक गजलक लोकप्रियता अथवा रचनाकारक प्रतिष्ठाकेँ मूल्यनिर्णयक पर्याप्त आधार नहि मानि, बहर, काफिया, रदीफ, शेरक विन्यास आ भाषिक स्वाभाविकताक ठोस कसौटी प्रस्तुत करैत छथि। पोथीक पहिल खण्डमे विशिष्ट गजल-संग्रह आ काव्यप्रयोगक समीक्षा अछि; दोसर खण्डमे सम्पादन, साहित्येतिहास, गजलक सामाजिक चेतना, अभिव्यक्तिक आधुनिकता आ विधागत नामकरणसम्बन्धी विवादक पुनर्परीक्षण कएल गेल अछि। एतऽ एकर प्रमुख तर्क, आलोचनात्मक पद्धति, समकालीन मैथिली साहित्यसँ सम्बन्ध आ अन्तर्विरोधक विवेचन कएल गेल अछि। अध्ययन देखबैत अछि जे पुस्तक गजलकेँ स्वतन्त्र काव्यविधाक रूपमे स्थापित करबाक एकटा निर्भीक प्रयत्न अछि, यद्यपि बहरकेँ निर्णायक कसौटी बनएबाक क्रममे साहित्यिक बहुलता, भाव-सौन्दर्य आ लोकप्रचलित छन्दप्रयोगक प्रति लेखकक व्यवहार सर्वदा समान उदार नहि रहैत अछि। एहने द्वन्द्व पोथीकेँ विमर्शक केन्द्र बनबैत अछि।

मुख्य शब्द : मैथिली गजल, आशीष अनचिन्हार, शब्द-अर्थ-शक्ति, बहर, काफिया, रदीफ, गजल-आलोचना, विधागत अस्मिता, साहित्येतिहास, विदेह।

प्रस्तावना : गजलक आलोचना की केवल प्रशंसा?

मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक परम्परामे गीत, कविता, कथा आ उपन्यासक तुलनामे गजलक विधागत परीक्षणक प्रश्न प्रायः विस्थापित रहल अछि। ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ एहि विस्थापनकेँ अपने आलोचनाक विषय बनबैत अछि। लेखक मानैत छथि जे

गजलक विषयवस्तु नीक होयब, सामाजिक सन्देश होयब अथवा रचनाकारक प्रगतिशील कहल जायब, मात्र एतेकसँ रचना गजल नहि बनि जाइत अछि। काव्यात्मक प्रभाव आ विधागत पहचान भिन्न, मुदा परस्पर सम्बन्धित, स्तर छथि। एहि भेदकें स्थापित करब लेखकक सम्पूर्ण आलोचनात्मक उद्योगक मूल प्रेरणा अछि।

एहि प्रसंगमे पुस्तकक शीर्षक सेहो अर्थवान अछि। शब्द, अर्थ आ शक्ति—ई तीनू शब्द काव्यक भाषिक संघटन, तकर बोध आ तकर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावक एकटा सम्भावित त्रिकोण बनबैत अछि। तथापि पुस्तकक वास्तविक विवेचनमे ‘शब्द’क ध्वन्यात्मक अनुशासन आ ‘शक्ति’क रूपमे तर्कपूर्ण प्रतिवाद बेसी प्रधान अछि; अर्थक बहुस्तरीय सौन्दर्यात्मक व्याख्या अपेक्षाकृत कम विस्तृत भेटैत अछि। शीर्षकक व्यापकता आ आलोचनाक केन्द्रीय छन्दशास्त्रीय आग्रहक बीचक ई फाँक पाठककें लगातार सोचबाक अवसर दैत अछि।

लेखकक आत्मपरिचय आ भूमिका एकटा सक्रिय रचनाकार-आलोचकक दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि। ओ अपन पुस्तककें स्वतन्त्र गजल-आलोचनाक आरम्भिक महत्त्वपूर्ण प्रयासक रूपमे देखैत छथि। ई लेखकक आत्ममूल्यांकन अछि; एकरा स्वतन्त्र साहित्येतिहासक अन्तिम निर्णय नहि मानल जा सकैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई अछि जे पोथी आलोचनाकें रचनाकारक प्रशस्तिपत्र नहि, सार्वजनिक परीक्षणक क्रिया बनबैत अछि।

कृतिक रूपविन्यास आ आलोचनात्मक परियोजना

पोथी दू खण्डमे विभक्त अछि। पहिल खण्डक दस शीर्षक मुख्यतः संग्रह-विशेष, कवि-विशेष आ शेर-विशेषक आलोचनासँ बनल अछि—‘हारल युद्धक साक्ष्य’, ‘पहरा-अधपहरा’, ‘सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त’, ‘छद्म गजल’, ‘कलंकित चान’, ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग’, ‘चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी’, ‘नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना’ तथा दू लघु आलेख ‘शेर जे सभ दिन शेर रहतै’। दोसर खण्डमे आठ निबन्ध छन्दबोध, सम्पादकीय उत्तरदायित्व, वाद-विवाद,

इतिहास, सामाजिक 'मिजाज' आ गीत-संगीतक सम्बन्धक दिशामे विमर्श विस्तृत करैत अछि। अन्तमे फूलचन्द्र झा 'प्रवीण' प्रसंगक परिशिष्ट अछि।

ई विन्यास साधारण संग्रहण नहि अछि। पहिल खण्ड लेखकक आलोचनात्मक औजारकेँ उदाहरणक सामने राखैत अछि; दोसर खण्ड ओहि औजारक सामाजिक इतिहास आ संस्थागत परिणाम पूछैत अछि। एहि कारणे पोथीकेँ केवल 'गजलक समीक्षा-संग्रह' कहब एकर अध्ययनक्षेत्रकेँ छोट करब हएत। ई विधा-निर्माणक विवादग्रन्थ, छन्दशास्त्रीय पक्षसमर्थन आ साहित्यिक सार्वजनिकताक दस्तावेज—तीनू रूपमे पठनीय अछि।

संरचनाक किछु कमजोरी सेहो अछि। विभिन्न समयमे लिखल आलेख सभमे बहरक अनिवार्यता आ आलोचकक कर्तव्य विषयक तर्क पुनः-पुनः उपस्थित अछि। एहन पुनरावृत्ति विवादक ऐतिहासिक निरन्तरता तँ चिन्हबैत अछि, मुदा एकीकृत पुस्तकमे वैचारिक क्रमक जगह कखनो-कखनो तात्कालिक प्रतिवादक तीव्रता लेबैत अछि। एतए सम्पादकीय संक्षेप अथवा विषयानुसार अन्तःसन्दर्भक व्यवस्था पुस्तकक सुगमता बढ़ा सकित छल।

मूल आलोचनात्मक प्रतिज्ञा : बहर, काफिया, रदीफ आ शेर

गजलक रूपगत पहचान लेखकक विचारमे सुस्पष्ट अछि। प्रत्येक शेरक पाँतिक मध्य बहरक अनुशासन, गजलक संरचनामे काफियाक ध्वनिसाम्य, आ रदीफक नियमित पुनरावृत्ति—ई सभ नाम मात्र नहि, परीक्षणयोग्य सम्बन्ध छथि। लेखक कतिपय समीक्षामे पाँतिक ह्रस्व-दीर्घ विन्यास अंकित कऽ अपन निर्णयक समर्थन करैत छथि। ई पद्धति आलोचनाकेँ लेखकक रुचिसँ ऊपर उठाकऽ सार्वजनिक जाँचक योग्य बनबैत अछि। काव्यकेँ सुनबाक, गेबाक आ पढ़बाक विधागत भेद स्पष्ट करबाक लेल ई आग्रह उपयोगी अछि।

एहि कसौटीक तार्किक लाभ ई जे सामाजिक चेतना, प्रेम, व्यंग्य, राजनीतिक प्रतिरोध अथवा लोकभाषा—कोनो विषय वस्तुगत गुण अपन आपमे गजलक संरचनागत प्रमाण

नहि भऽ सकैत अछि। तहिना गेयता मात्र बहरक पर्याय नहि; संगीतक धुन आ छन्दक क्रमबीच भेद अछि। पुस्तकक अनेक निबन्ध एही भेदपर टिकैत अछि।

मुदा एतऽ एकटा जटिलता उठैत अछि। विधाक परिभाषा इतिहासमे अपरिवर्तनीय नियमसभक यान्त्रिक सूची नहि होइत अछि। भिन्न भाषामे उच्चारण, मात्रा-बोध, यति, संयोगाक्षर आ लघु-दीर्घक व्यवहार अलग होइत अछि। लेखक स्वयं कतिपय स्थानपर भाषाक प्रकृति अनुसार छूट स्वीकार करैत छथि। तें गजलक शास्त्रीय अनुशासनक पक्ष लेबैत काल ई जरूरी अछि जे ध्वन्यात्मक भिन्नताकें अनियमितता कहबाक पूर्व उच्चारणक सामाजिक व्यवहार, शाइरक अभिप्रेत पाठ आ सम्पूर्ण रचनाक आन्तरिक एकरूपता जाँचल जाए। पुस्तक ई प्रश्न उठबैत अछि, मुदा एकर सम्भावित उत्तरकें सर्वत्र समान रूपेँ विस्तार नहि दैत अछि।

‘कविता नीक’ आ ‘गजल नीक’—ई दूनू निर्णय एक-दोसरक विरोधी नहि अछि। कोनो रचना गजलक स्वीकृत संरचनाक बाहर रहितो प्रभावी कविता भऽ सकैत अछि। एहि भेदपर लेखकक किछु टिप्पणी मूल्यवान अछि; कठोर पदावलीक कारण ओकर सन्तुलित अर्थ कखनो आच्छादित भऽ जाइत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘हारल युद्धक साक्ष्य’

पहिल समीक्षा तारानन्द वियोगीक ‘अपन युद्धक साक्ष्य’क आधारपर गजल-आलोचनाक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि। लेखक संग्रहक चालीस रचनाक प्रसंगमे भाषा, विचार आ छन्दविधानकें अलग-अलग परखैत छथि। एहि विभाजनसँ ई लाभ होइत अछि जे एके संग्रहक आलोचना एकांगी नहि बनैत अछि। विचारक धरातलपर लेखक सामाजिक-राजनीतिक चेतनाक कतिपय सकारात्मक संकेत मानैत छथि, जखनकि भाषिक स्तरपर संस्कृतनिष्ठ अथवा अप्रचलित पदावलीक अधिकतापर आपत्ति करैत छथि।

रचनाक छन्दपरीक्षणमे लेखक बहरक अभाव आ काफियाक असंगतिक उदाहरण चिन्हैत छथि। अपन तर्क पुष्ट करबाक लेल ओ गजलक मूल पारिभाषिक अवयव

बुझबैत छथि। आलोचनाक ई शिक्षणात्मक स्वर महत्वपूर्ण अछि: पाठककेँ मात्र फैसला नहि, फैसला धरि पहुँचबाक विधि सेहो भेटैत अछि।

तथापि एहि समीक्षाक भाषिक मानदण्डपर प्रतिप्रश्न सम्भव अछि। ‘जनभाषा’क निकटता साहित्यक एकटा महत्वपूर्ण गुण भऽ सकैत अछि, मुदा कठिन शब्द सर्वदा असफल काव्यक सूचक नहि होइत अछि। प्रसंग, ध्वनि, बिम्बात्मक आवश्यकता आ भावनात्मक संरचना सेहो शब्दचयनक उचितता निर्धारित करैत अछि। एकर प्रमाण सहित व्यापक परीक्षण लेखकक भाषिक आलोचनाकेँ आओर सुदृढ़ करितै।

पाठविश्लेषण : ‘पहरा-अधपहरा’

‘पहरा-अधपहरा’ बाबा बैद्यनाथक ‘पहरा इमानपर’क समीक्षा अछि। पुस्तक एतऽ संग्रहक ऐतिहासिक महत्त्व, रचनाक छन्दविन्यास, काफिया-रदीफ, भाषिक लोकधर्मिता आ भाव-पक्षकेँ पृथक करैत अछि। प्रारम्भिक प्रकाशन-परिस्थिति आ आलोचनात्मक उपेक्षाक प्रसंग उठाकऽ लेखक कहैत छथि जे नूतन विधाक विकासमे रचनाकारसभकेँ एक-दोसरक कृति गंभीरतापूर्वक पढ़बाक चाही। एहि रूपमे समीक्षा केवल कृति-मूल्यांकन नहि, साहित्यिक समुदाय गढ़बाक आग्रह अछि।

पाठकमे लेखकक विश्वासक विशेष अर्थ अछि। काफियाक त्रुटि बतबैत काल ओ स्वयंसिद्ध मानक थोपबाक बदला ध्वनिसाम्यक उदाहरणसँ विचार समझबैत छथि। दोसर दिस संग्रहक बोलचालक मैथिली आ समकालीन जीवन-सम्बद्ध शेरसभक उपयोगिताकेँ ओ सराहैत छथि। एहि समीक्षामे रूप आ अर्थक बीच सामान्यतः नीक सन्तुलन अछि।

संग्रहक सभ गजलकेँ छन्दशास्त्रीय कठघरामे राखलाक बादो ओकर लोकानुभवक महत्त्व सुरक्षित रहैत अछि। ई पुस्तकक मूल सिद्धान्तक रचनात्मक सम्भावना देखबैत अछि : छन्दगत असहमति साहित्यिक मूल्यक सम्पूर्ण निषेध नहि होयबाक चाही।

पाठविश्लेषण : ‘सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त’

राजेन्द्र विमलक ‘सूर्यास्तसँ पहिने’क समीक्षा आधुनिक मैथिली गजलक साहित्येतिहासमे ‘पहिल’ होयबाक घोषणाक आलोचना करैत अछि। लेखक रचनाक संख्या आ संकलनक प्रकृतिपर विवाद उठबैत छथि तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुरक ‘लेखनी एक रंग अनेक’सँ तुलना करैत छथि। एतऽ कृतिक मूल्यबोधक समानान्तर प्रकाशनक तथ्य, सम्पादकीय विश्वसनीयता आ साहित्यिक दावाक प्रमाणिकता प्रश्न बनि उठैत अछि।

एहि आलेखक खास पक्ष ई जे प्रतिवादक भीतर दोसर पक्षक स्पष्टीकरण सेहो चर्चित अछि। मिश्रित गजल-कविता-संकलन आ पूर्णतः गजलकेँ केन्द्र बनौने संग्रहक बीच भेद करबाक सम्भावना स्वीकृत अछि। शोधदृष्टिसँ देखल जाए तँ ‘पहिल’, ‘प्रथम पूर्ण संग्रह’ आ ‘नेपालमे प्रकाशित प्रथम’—एहि सभ संज्ञाक स्पष्ट परिभाषा आवश्यक अछि। बिना परिभाषाक प्राथमिकता-विवाद साहित्येतिहाससँ अधिक प्रतिष्ठा-विवाद बनि सकैत अछि।

अन्ततः एहि पाठसँ ई शिक्षा निकलैत अछि जे साहित्येतिहासमे संख्या, संस्करण, प्रकाशन-प्रदेश आ संग्रहक विधागत स्वरूपक स्पष्ट सूची तैयार करबाक चाही। लेखक विवाद उपस्थित करैत छथि; भविष्यक शोध लेल व्यवस्थित ग्रन्थसूची तैयार करबाक काज एतऽ खुलल रहैत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘छद्म गजल’ आ ‘कलंकित चान’

‘छद्म गजल’मे गंगेश गुंजनक काव्यप्रयोगक प्रसंगमे गजल आ गजल-सन रचनाक अन्तरकेँ प्रमुख बनाओल गेल अछि। ‘स्वाधीन लय’ आ छन्दबद्ध संरचनाक सम्बन्धपर लेखकक प्रश्न सैद्धान्तिक अछि : जँ कोनो रचना छन्दबद्ध कहल जाए, तँ ओकर लय-विन्यासक प्रमाण प्रस्तुत होयबाक चाही। ई माँग प्रासंगिक अछि, विशेषतः जखन विधाक नाम ओकर शिल्पगत अपेक्षा सेहो जनबैत हो।

एहि तर्कक सीमा ओतए प्रकट होइत अछि जतऽ प्रयोगधर्मी कविताकेँ केवल विफल गजल मानि लेल जाइत अछि। सम्भव अछि जे रचनाकार विधाक सीमामे नव संभावना ताकैत होथि; तखन आलोचककेँ दू भिन्न प्रश्न पूछबाक चाही—रचना पारम्परिक गजल अछि की नहि, आ रचना स्वतन्त्र कविता अथवा रूपान्तरित काव्य-प्रयोगक रूपमे प्रभावी अछि की नहि। पहिल प्रश्नक नकारात्मक उत्तर दोसरो प्रश्नकेँ समाप्त नहि करैत अछि।

‘कलंकित चान’ रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’क ‘अन्हरियाक चान’क छन्दविधानक समीक्षा करैत अछि। लेखक मुक्त अथवा आजाद गजलक दावाक परीक्षण काफिया आ अन्य औपचारिक तत्त्वक आधारपर करैत छथि। एहि निबन्धमे एकटा महत्वपूर्ण असहमति अछि : जँ रचनाकार स्वयं पारम्परिक अनुशासन नहि अपनौने छथि, तँ ओहि रचनाकेँ शास्त्रीय गजल कहबाक प्रश्न अलग आ ओकर काव्यात्मक उपलब्धिक प्रश्न अलग रहबाक चाही। साहित्यिक निर्णयक कठोरता एहि दू स्तरक भेदसँ ही सार्थक बनैत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग’

ई आलेख मैथिली गजलमे छन्दनिर्माणक विभिन्न आरम्भिक प्रयासक विश्लेषण करैत अछि। लेखक वर्णिक, मात्रिक, बहर-आधारित आ गायनसम्बद्ध लयक बीचक अन्तरपर जोर दैत छथि। संगीतक स्वररचना आ छन्दक नियत अक्षर-मात्रा-विन्यास एक-दोसरसँ सम्बद्ध जरूर छथि, मुदा समानार्थी नहि—एहि तथ्यकेँ ओ बारम्बार स्पष्ट करैत छथि।

रचनाकारक नव छन्द गढ़बाक स्वतन्त्रता लेखक सम्पूर्ण रूपेँ अस्वीकार नहि करैत छथि; किन्तु नव छन्दक नियम, उदाहरण आ अनुवर्तन प्रस्तुत करबाक दायित्व आवश्यक मानैत छथि। एहि विचारमे विधागत अनुशासन आ नवोन्मेषक सम्भावित संवाद निहित अछि। नवीन नामक आविष्कार तखनहि साहित्येतिहासमे फलदायी होइत अछि जखन ओकर पुनर्पाठ आ परीक्षण सम्भव हो।

आलेखक ऐतिहासिक महत्त्व ईहो अछि जे लेखक एकटा काव्यरूपक प्रयोगकें अलग-थलग घटना नहि मानि, बौद्धिक बहसक क्रममे देखैत छथि। इएह आलोचना-पद्धति आगूक गजल-इतिहासविषयक निबन्धसभक आधार बनैत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी’

रमेशक ‘नागफेनी’पर केन्द्रित ई निबन्ध पुस्तकक सबसँ रोचक अन्तर्विरोधसभमेसँ एक प्रस्तुत करैत अछि। लेखक प्रारम्भमे छन्दगत आधारपर संग्रहक गजलत्वपर सन्देह करैत छथि, मुदा ओकर भूमिका, वैचारिक दावे, भाषा आ चुनेल काव्य-पाँति सभपर विस्तारसँ विचार करैत छथि। एहि रूपमे रचनाकें गजल नहि मानबाक बावजूद साहित्यिक चर्चासँ बाहर नहि कएल गेल अछि।

विशेष रूपसँ लोकमैथिली शब्दावलीक सशक्त उपस्थिति लेखककें आकर्षित करैत अछि। सामाजिक यथार्थ, स्थानीय बिम्ब, शब्दक सहजता आ प्रतिरोधक स्वर—ई सभ गुण ओ स्वीकार करैत छथि। एहि कारणे ‘नागफेनी’क समीक्षा स्वयं साबित करैत अछि जे आलोचनाक व्यवहार बहरक विश्लेषणसँ व्यापक होयबाक चाही।

तथापि लेखक प्रगतिशीलताक नामपर छन्द-विरोधक दावाक तीव्र प्रतिवाद करैत छथि। दुष्यन्त कुमार, फैज आ अदम गोंडवीक उदाहरणसँ ओ एहि विचारकें खण्डित करबाक प्रयास करैत छथि जे सामाजिक प्रतिरोध लेल छन्दत्याग अनिवार्य अछि। एतऽ मूल प्रश्न आधुनिक विषयक नहि, आधुनिक विषयक काव्यरूपसँ सम्बन्धक अछि। पुस्तकक ई बहस मैथिली काव्य-आलोचनामे व्यापक तुलनात्मक अध्ययनक आधार बनि सकैत अछि।

पाठविश्लेषण : नरेन्द्रजीक द्विभाषिक गजल

‘नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना’ पुस्तकक एकटा व्यवस्थित तुलनात्मक प्रयत्न अछि। एके रचनाकारक दू भाषामे लिखल गजलकें बहर, काफिया, रदीफ, भाव, कथ्य आ भाषिक व्यवहारक धरातलपर परखबाक निर्णय साधारण द्विभाषिक तुलना नहि, एकटा उपयोगी अनुसन्धानी पद्धति अछि। एतऽ

रचनाकारक प्रतिभा स्थिर रहितो भाषिक संसाधन आ छन्दपद्धतिक परिणाम केना बदलैत अछि, से देखबाक सम्भावना बनैत अछि।

लेखक मैथिली उच्चारणक विशेषता, ह्रस्व-दीर्घक व्यवहार आ तत्सम-तद्भव तथा बाहरी शब्दक स्वीकार्यताक प्रसंग उठबैत छथि। एके शब्द प्रत्येक भाषामे समान ध्वन्यात्मक भार नहि रखैत अछि; एहि कारणे भाषिक सन्दर्भक उपेक्षा करि कएल तकतीअ अविश्वसनीय भऽ सकैत अछि। ई समीक्षाक सबसँ महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक निष्कर्ष अछि।

लेखक कथ्यक पुनरावृत्ति आ वैचारिक एकरेखीयतापर सेहो प्रश्न करैत छथि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे मात्र छन्द ठीक भेला पर गजल स्वतः उत्कृष्ट नहि भऽ जाइत अछि। भाषा, व्यंजना, बिम्ब, व्यंग्य आ अनुभूतिक विविधता सौन्दर्यात्मक मूल्यनिर्णयमे अनिवार्य छथि। लेखकक आलोचनात्मक व्यवहार एतऽ अपन घोषित रूपप्रधान आग्रहक अपेक्षाकृत अधिक जटिल बनैत अछि।

पाठविश्लेषण : ‘शेर जे सभ दिन शेर रहतै’

पहिल खण्डक दू लघु रचना छोट आकारक कारण मुख्य निबन्धसभक बीच विराम-जकाँ बुझा सकैत अछि। मुदा संग्रहक समग्र विन्यासमे एकर उपयोग अलग अछि। संग्रह-स्तरीय मूल्यांकनक बाद शेरकेँ स्वतन्त्र सौन्दर्यात्मक इकाइक रूपमे देखबाक आग्रह एतऽ अधिक स्पष्ट होइत अछि। गजलक विशेषता ईहो जे एकटा शेर अपन स्वायत्त अर्थ-संयोजन रखैत अछि; ओकर प्रभाव पूरा गजलक अनिवार्य कथासूत्रपर निर्भर नहि रहैत अछि।

ई सूक्ष्म पाठ-विधि काव्यक अन्विति, अप्रस्तुत-विधान, अर्थान्तर, स्मरणीयता आ ध्वनिक प्रश्नकेँ सामने अनैत अछि। एतऽ शोधक सम्भावना ई जे पुस्तकक बाकी कठोर छन्द-आलोचनाक संग एहि लघु शेर-अध्ययनकेँ जोड़ि गजलक ‘शिल्प’ आ ‘अर्थ’क सम्बन्धक अधिक व्यवस्थित सिद्धान्त तैयार कएल जा सकैत अछि।

दोसर खण्ड : आलोचना, सम्पादन आ साहित्यिक संस्था

‘मैथिली गजल आ अभट्टाकारी’ आलोचनक दायित्वपर केन्द्रित निबन्ध अछि। एहिमे लेखक प्रश्न उठबैत छथि जे जँ साहित्यकार स्वयं अपन विधाक परीक्षण नहि करथि आ बाहरी आलोचककेँ अयोग्य सेहो मानथि, तँ नूतन विधाक विकास केना हएत। पुस्तकक एहि तर्कमे आलोचना सार्वजनिक ज्ञानक साझा श्रम बनैत अछि, निजी प्रतिद्वन्द्विताक साधन नहि।

‘अज्ञानी सम्पादकक फेरमे मरैत गजल’ एकटा गम्भीर प्रश्न सामने अनैत अछि : पत्रिकामे छपबाक क्रममे रचनाक शिल्पगत इकाइ बदलि देल गेल, अथवा गजलकेँ गीत कहि प्रकाशित कएल गेल, तँ सम्पादकीय हस्तक्षेप कतेक वैध अछि? लेखक योगानन्द हीराक रचनाक प्रसंगमे पाठक विश्वसनीयता आ सम्पादकीय उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत छथि। एहि आरोपसभकेँ लेखकक प्रतिपादनक रूपमे पढ़बाक चाही; प्रत्येक सम्पादकक अभिप्रायपर स्वतन्त्र निर्णय लेल मूल प्रकाशनसभक पारस्परिक परीक्षण जरूरी होइत।

दूनू निबन्धक स्थायी योगदान ई जे साहित्यिक संस्थाकेँ रसास्वादनक बाहर नहि रखल गेल अछि। पाठनिर्माण, पाठपरिवर्तन, सम्पादन, वर्गीकरण आ प्रकाशन—ई सभ गजलक ग्रहणशीलताकेँ प्रभावित करैत अछि। समकालीन साहित्येतिहासमे ई संस्थागत संवेदनशीलता उल्लेखनीय अछि।

‘संशोधन केर मतलब विनाश नहि होइत अछि’ : वाद-विवादक आलोचनाशास्त्र दोसर खण्डक विस्तृत निबन्ध ‘संशोधन केर मतलब विनाश नहि होइत अछि’ मैथिली गजलक शास्त्रीय नियमपर चलेल लम्बा साहित्यिक विवादक दस्तावेज अछि। लेखक अपन पूर्व लेख, सुरेन्द्रनाथक प्रतिवाद आ तकर उत्तरक क्रम प्रस्तुत करैत छथि। एहि बहसक माध्यमे साहित्यिक इतिहास, शाइरक उत्तरदायित्व, बहरक सीमा आ छन्दसमर्थक तथा छन्दविरोधी मतक टकराव स्पष्ट होइत अछि।

एहि विवादक उल्लेखनीय गुण प्रमाणक माँग अछि। लेखक अनुरोध करैत छथि जे कोनो कथनकेँ केवल वरिष्ठता अथवा ख्यातिक आधारपर स्वीकार नहि कएल जाय; उदाहरण देल जाय, बहर जाँचल जाय आ इतिहासक दावाक स्रोत प्रस्तुत कएल जाय। आलोचनाकेँ प्रतिवाद-सहिष्णु बनएबाक ई प्रवृत्ति शोधमूलक विवेकक निकट अछि। मुदा आलोचनात्मक अनुशासनक दूर रूप होइत अछि—तर्कक कठोरता आ सम्बोधनक संयम। एहि निबन्धमे प्रथम खूब प्रबल अछि, दोसर कखनो कम पड़ैत अछि। प्रतिद्वन्द्वी विचारक व्यक्ति-विशेषपर लक्षित व्यंग्य मूल प्रश्नकेँ धुँधला कऽ सकैत अछि। शोधपरम्परा लेल लेखकक प्रमाण-आग्रह ग्रहणीय अछि; व्यक्तिविशेषक नीयतपर अनिर्णीत आरोपक अपेक्षा तर्कक स्वतन्त्र परीक्षण अधिक फलदायी हएत।

‘बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल’ : अभिमत आ प्रमाणक दूरी

गजलक सम्भावना, ओकर रचनाभाषा, प्रेमक प्रकृति आ संगीतसँ सम्बन्ध विषयक पूर्ववर्ती कथनसभकेँ लेखक ऐतिहासिक बहसक क्रममे स्थापित करैत छथि। चर्चा व्यक्तिपरक मतसँ आरम्भ भए रूपगत उदाहरण धरि पहुँचैत अछि। ई निबन्ध देखबैत अछि जे कोनो साहित्यिक बयान तत्कालीन रचनाशीलतापर मनोवैज्ञानिक आ संस्थागत प्रभाव छोड़ि सकैत अछि।

विद्यापतिक प्रेम, उर्दू शाइरीक प्रेम आ मैथिली गजलक अभिव्यक्तिक तुलना लेखक लेल साहित्यिक वैधताक प्रश्न अछि। ओ मानैत छथि जे विषयक धार्मिक, लौकिक अथवा पारलौकिक नामकरण रचनाक मूल छन्दशास्त्रीय क्षमताकेँ निर्धारित नहि करैत अछि। एहि बिन्दुपर पोथी विधागत स्वतन्त्रताक पक्षमे ठाढ़ अछि।

अभिमतक इतिहास लिखबाक समय ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि जे केओ की कहने छलाह, ओकर कथनक तत्कालीन अर्थ की छल, आ तकर वास्तविक प्रभावक प्रमाण की अछि। पुस्तक पहिल दू प्रश्नपर सजग अछि, मुदा तेसर प्रश्नक लेल बहुतेरे स्थानपर अनुभवजन्य दस्तावेजीकरणक गुंजाइश बचल अछि।

‘इश्क को दिल में दे जगह अकबर’ : ज्ञान आ संवेदना

जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क प्रसंगवाला ई लघु आलेख एकटा सुन्दर विरोधाभास पकड़ैत अछि। छन्दशास्त्रविरोधी तर्कक समर्थनमे उद्धृत शेर स्वयं लयबद्ध संरचना रखि सकैत अछि। लेखक कहैत छथि जे ‘इल्म’ आ काव्यभावकेँ एक-दोसरक शत्रु बनएब अनुचित अछि। ज्ञान अभिव्यक्तिक उपकरण होइत अछि; ओकर उपस्थितिसँ स्वतः अनुभूति नष्ट नहि होइत अछि।

अनिलक शेरमे गजलक बन्धनसँ मुक्तिक अभिलाषा एकटा आन्तरिक व्यंग्य निर्माण करैत अछि—रचना बन्धनक विरुद्ध बोलैत अछि, मुदा अपन लयक भीतर। एहि अवलोकनसँ ‘नियम’केँ केवल निषेधात्मक आदेश नहि, सर्जनात्मक सम्भावनाक व्यवस्था मानबाक आधार भेटैत अछि।

एहू बातक संग ई जोड़ब आवश्यक अछि जे ज्ञान आ संवेदना परस्पर सहयोगी होइत अछि, मुदा समानार्थी नहि। नियमक अनुपालन काव्यक आवश्यक औजार भऽ सकैत अछि; प्रभावकारी शेर बनबाक लेल अर्थक ताजगी आ भाषिक जीवट सेहो आवश्यक अछि।

‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’ : इतिहासक रूपरेखा दोसरो खण्डक विस्तृत ऐतिहासिक निबन्ध पुस्तकक केन्द्रीय आधारस्तम्भ अछि।

लेखक आधुनिक मैथिली गजलक प्राचीन उदाहरण, बीसम शताब्दीक रचनाकार, बादक संग्रह, नव पीढ़ीक छन्दचेतना आ डिजिटल साहित्यिक प्रयासकेँ एकटा कथा-रेखामे जोड़ैत छथि। पं. जीवन झा, कविवर सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’, योगानन्द हीरा, जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ आ बादक अनेक नाम एहि परिचर्चामे आबैत छथि। लेखक विशेष रूपसँ इतिहासक ओहि धारणाक प्रतिवाद करैत छथि जाहिसँ मैथिलीमे छन्दयुक्त गजल सम्भव नहि मानल जाइत छल। ओ आरम्भिक रचनाक बहर-क्रमक उदाहरण प्रस्तुत कऽ गजलक ऐतिहासिक अस्तित्वक दाबी करैत छथि। कृतिक भीतर उद्धृत रचना-साक्ष्य एहि दावाकेँ महत्व दैत अछि। तथापि ‘प्रथम’ अथवा ‘आरम्भ’क

निर्धारण लेल समस्त आरम्भिक सामग्रीक संस्करणान्तर आ प्रकाशन-अभिलेख देखब अलग शोधक विषय अछि।

उक्त निबन्धमे दू प्रवाहक अवधारणा बारम्बार उभरैत अछि—छन्दविधान स्वीकार करनिहार रचनाकार आ ‘आजाद’ नामसँ छन्दमुक्ति चाहनिहार रचनाकार। ई विभाजन आलोचनात्मक बहस बुझबाक लेल उपयोगी अछि, मुदा साहित्यक वस्तुस्थिति केवल दू अनन्य खेमामे विभक्त नहि होइत अछि। कतेको रचनाकार गीत, कविता, लयबद्ध मुक्तरचना आ गजलक बीच आवागमन करैत छथि। एहि मध्यवर्ती काव्यभूमिकें देखनाइ साहित्येतिहासकें अधिक समावेशी बनबैत।

विदेह आ ‘अनचिन्हार आखर’सँ सम्बद्ध प्रकाशनगत उपक्रमक उल्लेख पुस्तकक विशिष्ट पक्ष अछि। एहि सामग्रीसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे आधुनिक गजलक निर्माण पत्रिका, ऑनलाइन प्रकाशन, पाठकीय संवाद आ आलोचनात्मक प्रतिवादक संयुक्त क्षेत्रमे भेल। एहि कारणे डिजिटल माध्यम एतऽ केवल वितरणक सुविधा नहि, विधागत विमर्शक सक्रिय मंच अछि।

‘दुष्यन्त कुमारक गजलक मिजाज’ : आधुनिकता आ छन्दक सहअस्तित्व
एहि आलेखमे आधुनिक सामाजिक चेतना आ गजलक शिल्पबीचक सम्बन्ध पुनः उठैत अछि। लेखक दुष्यन्त कुमारक गजलक उदाहरणसँ प्रतिपादित करैत छथि जे राजनीतिक व्यंग्य, जन-संघर्ष, विषमता आ परिवर्तनक आकांक्षा बहरक अनुशासनक भीतर सेहो व्यक्त कएल जा सकैत अछि। एहिसँ लेखक ‘आधुनिक विचार’क लेल ‘छन्दहीनता’ आवश्यक मानबाक तर्कपर आपत्ति करैत छथि।

‘मिजाज’क अर्थ केवल विषय नहि; कथनक ताप, व्यंग्यक चाप, अनुभवक सार्वजनिकता आ भाषाक संक्षिप्त तीक्ष्णता सेहो अछि। दुष्यन्तक प्रभावक तुलना करैत काल ई बिन्दु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिली गजलमे छन्दयुक्त रचना उपलब्ध होयब एक बात, आ सामाजिक-राजनीतिक बोधक ओहने विशिष्ट उष्णता प्राप्त होयब

दोसर बात अछि। पुस्तक पहिल बातकेँ प्रमाणित करबाक उद्देश्यसँ बहुत दूर धरि जाइत अछि; दोसर पक्षक सूक्ष्म सौन्दर्यशास्त्र आओर विकसित कएल जा सकैत छल।

एहि तुलनासँ निष्कर्ष निकलैत अछि जे समकालीन चेतना आ शास्त्रीय रूप परस्पर विरोधी नहि। मुदा रूप आ भावक सहअस्तित्वक प्रश्नकेँ रचनाविशेषक निकट पाठसँ सिद्ध करब अधिक श्रेयस्कर हएत, केवल छन्द-गणनाक प्रदर्शनसँ नहि।

‘एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलक गीत-संगीतक इतिहास’

ई आलेख साहित्यक पाठ आ संगीतक प्रस्तुति बीच उत्पन्न होमयवाला रूपान्तरक प्रश्न उठबैत अछि। लेखक कविवर सीताराम झाक एकटा रचनाक विधागत पहचानपर जोर दैत छथि तथा ओकर गायन-परम्परामे भेल नामकरण, पाठभेद आ प्रस्तुति सम्बन्धी अन्तरक चर्चा करैत छथि। एहि विषयमे गजलक इतिहास संगीतक इतिहासक संग प्रत्यक्ष रूपेँ जुड़ैत अछि।

मूल समस्याकेँ तीन स्तरपर देखल जा सकैत अछि : रचनाकारक मूल पाठ, संगीतकार अथवा गायकक प्रस्तुति, आ जनस्मृतिमे स्थापित विधागत नाम। तीनू आपसमे सम्बन्धित छथि, मुदा समान नहि। गजलकेँ भजन अथवा गीतक रूपमे गाएल गेलासँ मूल रचनाक शिल्प स्वतः परिवर्तित नहि होइत अछि; तथापि जनमानसक ग्रहणपरम्परा एकटा स्वतन्त्र सांस्कृतिक तथ्य बनि सकैत अछि।

लेखक मूल पाठक प्रामाणिकताक रक्षा करबाक प्रयास करैत छथि। शोधक लेल एहि विमर्शक विस्तार ई होयबाक चाही जे मूल पाठ आ गायनरूपक पाठान्तर एकत्र करि, अभिधेयक फेरबदल आ संगीतकीय प्रयोजनक तुलना कएल जाय। एहि प्रकारे निबन्ध सांगीतिक पाठालोचना लेल नूतन प्रश्न खोलैत अछि।

फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’ प्रसंग : कृति, श्रेय आ पाठक विश्वसनीयता

परिशिष्टमे फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’सँ सम्बन्धित रचनाक श्रेय आ प्रसारणक विवाद उपस्थित अछि। ई भाग पोथीक मूल छन्दविवादसँ किछु अलग देखाइत अछि, मुदा वस्तुतः पाठक प्रामाणिकता, रचनाकारक दावा आ सांस्कृतिक संचारक भरोसाक

प्रश्नसँ जुड़ल अछि। गजलक शिल्पक न्याय करबाक पहिले रचना केकर अछि, ओकर स्थापित पाठ कोन अछि, से स्पष्ट होयब जरूरी अछि।

साहित्यिक शोधमे श्रेय-विवादक निष्पत्ति व्यक्तिगत प्रतिज्ञापनसँ नहि, दिनांकित प्रकाशन, विश्वसनीय पाठरूप, हस्तलेख अथवा प्रकाशकीय अभिलेखसँ होयबाक चाही। परिशिष्ट एहन साक्ष्य-संग्रहक आवश्यकता रेखांकित करैत अछि। एहि प्रसंगक ऐतिहासिक महत्त्वक अन्तिम निर्णय उपलब्ध दस्तावेजक व्यापक मिलानक बाद सम्भव अछि।

प्रमाणित मूलोक्ति आ ओकर आलोचनात्मक अर्थ

पोथीक विचारधाराकेँ बुझबाक लेल किछु संक्षिप्त मूलोक्ति विशेष महत्त्वपूर्ण छथि। ‘चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी’मे लेखक स्पष्ट करैत छथि—“हमर समीक्षा वा आलोचना-समालोचनाक आधार सदिखन व्याकरण रहैत अछि”। एहि कथनमे आलोचनाक घोषित विधि सुस्पष्ट अछि। व्याकरणकेँ व्यक्तिगत रुचिक विकल्प मानि रचनाक सार्वजनिक परीक्षणक पैमाना बनाओल गेल अछि। मुदा आलोचनाक सम्पूर्ण सिद्धान्त जँ एतबहि रहि जाए तँ बिम्ब, कथ्य, ध्वनि आ सामाजिक अनुभूतिक स्वतन्त्र महत्त्व सीमित भऽ सकैत अछि।

‘आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय’मे लेखकक दृढ़ उक्ति अछि—“गजल लेल बहर ओ काफिया अनिवार्य छै”। ई वाक्य पोथीक विधागत परिभाषाक केन्द्र अछि। एहि आधारपर लेखक गजल आ अन्य पद्यरूपक अन्तर करैत छथि। साहित्यिक वाद-विवादमे एहि प्रतिज्ञाक उपयोगी रूप ई होयत जे मानकक स्पष्ट व्याख्या, उच्चारणभेदक प्रावधान आ अपवादक सीमासहित एकरा लागू कएल जाय। जगदीशचन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क उद्धृत शेरक पाँति—“हम त गजल छी, हमरा नै बरबाद करू”—रूप आ स्वतन्त्रताक द्वन्द्वक कलात्मक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। लेखक एहि शेरक लयात्मक अनुशासनपर ध्यान दैत छथि। अर्थस्तरपर रचना बन्धनक विरोध

करैत अछि, संरचनास्तरपर लयक सहारा लैत अछि। एतऽ विडम्बना हँसीक वस्तु मात्र नहि, गजलक आत्मचिन्तनक सर्जनात्मक शक्ति बनि उठैत अछि।

एहि मूलोक्तिसभक महत्त्व ई नहि जे एकटा आलोचनात्मक मत अन्तिम सत्य बनि गेल; महत्त्व ई जे पोथीक व्यापक बहस संक्षिप्त आ जाँचल जा सकनिहार कथनमे प्रकट होइत अछि। एहि लेखमे उद्धृत मूलवाक्यसभक पाठ मूल मुद्रित रूपसँ मिलाओल गेल अछि; अन्यत्र विचारक प्रस्तुति आशयाधारित पुनर्विवेचनक रूपमे कएल गेल अछि।

मैथिली भाषाक स्वभाव : लोकप्रयोग, उच्चारण आ शब्दचयन

पुस्तकक भाषिक आलोचनामे बारम्बार एकटा आग्रह उभरैत अछि—गजल मैथिलीमे लिखल जाय तँ ओकर भाषा मैथिली समाजक जीवित बोलचाल, ध्वन्यात्मक संरचना आ अभिव्यक्तिगत स्वाभाविकतासँ जुड़ल रहय। बाहरी भाषासँ शब्द ग्रहण करब सर्वथा अनुचित नहि; अनुचित तखन अछि जखन ओकरा बिना सन्दर्भ, बिना अर्थगत आवश्यकता अथवा केवल काफिया साधबाक लेल ठूसल जाए।

एहि आग्रहमे लोकभाषिक स्वाभिमान अछि। मैथिलीकेँ केवल कोनो दोसर भाषाक वाक्यरचनाक अनुवाद नहि, अपने लय आ अर्थछविवाली साहित्यभाषा मानबाक विचार एतऽ सक्रिय अछि। मुदा लोकभाषा एकरूप नहि अछि। मिथिलाक विभिन्न भूभाग, सामाजिक समूह आ भाषिक सम्पर्कक्षेत्रमे प्रयुक्त रूप सभक विविधता छन्दगणनाक निर्णयकेँ सेहो प्रभावित कऽ सकैत अछि। पुस्तक किछु ठाम अंचलीय भेदक उपयोगी संकेत दैत अछि।

व्यावहारिक निष्कर्ष ई होयबाक चाही जे भाषिक शुद्धता काव्यक जीवित भाषासँ अलग होइत पुस्तकनिष्ठ कठोरता नहि बनय। भिन्न मैथिली रूपक ध्वन्यात्मक स्वीकृति, सम्मानसूचक क्रियारूप, विभक्तिक संयुक्त लेखन आ स्थानीय शब्दसभक साहित्यिक वैधता जाँचैत समय प्रसंग सदा प्रधान रहय। शब्दक सहजता आ ध्वनिक प्रामाणिकता काव्यक स्वाभाविक प्रवाहकेँ पोषित करैत अछि; यान्त्रिक प्रतिबन्ध ओकर स्थान नहि लऽ सकैत अछि।

सामाजिक चेतना, वर्गबोध आ रूपवादक सीमा

पुस्तकमे दुष्यन्त कुमार, अदम गोंडवी आ मैथिली रचनाकारसभक उदाहरणक माध्यमे ई विचार प्रस्तुत अछि जे जनपक्षधरता बहरक विरोधी नहि। सामाजिक अन्याय, भूख, असमानता, सत्ता-व्यंग्य, बाल-अनुभव अथवा ग्रामीण जीवन—ई सभ काव्यविषय गजलक भीतर सार्थक भऽ सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ कृति केवल रूपवादी कठोरता नहि, रूपक भीतर अर्थक विस्तारक सम्भावना सेहो रेखांकित करैत अछि।

समस्या तखन उठैत अछि जखन काव्यविषयक मूल्यांकनक तुलनामे रूपक वर्गीकरण निर्णायक बनि जाइत अछि। ‘गजल’ शब्दक विधागत शुद्धता जतेक आवश्यक अछि, ओतेक जरूरी एहि बातक चिन्ता सेहो अछि जे रचना पाठककेँ केना प्रभावित करैत अछि, कोन सामाजिक अनुभवकेँ स्वर दैत अछि आ भाषामे कोन नव अर्थसंसार बनबैत अछि। शास्त्र आ समाजक सम्यक् सम्बन्ध बिना दूनू अधूरा छथि।

यही कारणे पुस्तकक सर्वश्रेष्ठ आलोचनात्मक क्षण ओ नहि जखन लेखक कोनो रचनाकेँ केवल छन्दगत कारणसँ अस्वीकार करैत छथि; श्रेष्ठ क्षण ओ अछि जखन ओ छन्दगत त्रुटि बतबैत हुए सेहो भाषिक ताजगी अथवा भावनात्मक उपलब्धि स्वीकार करैत छथि। एहिसँ आलोचनाक द्विस्तरीय आदर्श निर्मित होइत अछि—विधागत पहचानक परीक्षण आ स्वतन्त्र काव्यमूल्यक परीक्षण।

मैथिली साहित्येतिहासमे गजलक स्थान : तुलनात्मक विवेचन

मैथिली काव्यपरम्पराक दीर्घ कालमे पद, गीत, भजन, छन्दोबद्ध कविता, नाट्यगीत आ आधुनिक मुक्तक काव्य अनेक रूपमे विकसित भेल अछि। गजलक आगमन आ विस्तार एहि व्यापक काव्यपरिसरमे बुझल जाएबाक चाही। ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’ एहि कारणे ऐतिहासिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि जे ई गजलकेँ अन्य काव्यविधाक आश्रित उपरूप मानबाक बजाय अलग संरचनावाली विधा सिद्ध करबाक चेष्टा करैत अछि।

पुस्तकमे पं. जीवन झा, सीताराम झा आ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क उदाहरण गजलक आरम्भिक विधागत उपस्थितिक पक्षमे प्रस्तुत अछि। पछिला कालमे बाबा बैद्यनाथ,

तारानन्द वियोगी, राजेन्द्र विमल, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', रमेश, जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल' आ अनेक नव रचनाकारक चर्चा गजलक बहुविध प्रवाहक रूपरेखा बनबैत अछि। नामक एहि अनुक्रमकें पोथीक चयनित आलोचनात्मक इतिहास मानबाक चाही, सम्पूर्ण समावेशी सूची नहि।

भारतीय भाषासभक गजल-परम्पराक तुलना लेखक दुष्यन्त कुमार, फैज, अदम गोंडवी आ अन्य शाइरक उदाहरणसँ करैत छथि। एहि तुलनाक मुख्य उद्देश्य शब्दावली उधार लेब नहि, एकटा सैद्धान्तिक बात स्थापित करब अछि—विषयक परिवर्तन रूपक अस्वीकारक पर्याय नहि। ई कथन व्यापक साहित्यिक अर्थ रखैत अछि। तथापि विभिन्न भाषाक उच्चारण-छन्द-सांस्कृतिक अनुभवमे अन्तर ध्यानमे रखब तुलना अधिक प्रमाणिक बनबैत।

इतिहासलेखनक दृष्टिसँ पोथी एकटा 'प्रतिहस्तक्षेप' अछि। लेखक पुरान निर्णायक पुनर्मूल्यांकन करैत छथि, भूलेल रचनाकारक नाम सामने अनैत छथि, आरम्भिक छन्दयुक्त शेर प्रस्तुत करैत छथि आ पत्रिका-सम्पादनक भूमिका जांचैत छथि। एहि सबसँ मैथिली गजल-इतिहासक प्रश्न खुलैत अछि। कृतिक ऐतिहासिक महत्त्वक आधार एहि प्रश्नोत्तरीक स्फूर्ति अछि, एकरे निर्णायक अन्तिमता नहि।

विदेहक साहित्यिक सार्वजनिकता आ गजल-अध्ययन

आशीष अनचिन्हारक अनेक आलेख विदेहक अलग-अलग अंकमे प्रकाशित भेल रहबाक सूचना पोथीक आरम्भिक निवेदनमे अछि। विदेहक उपलब्ध शोध-अभिलेखमे 'चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी', 'मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग', 'बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल', 'नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना', 'दुष्यन्त कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै' आ 'एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलकै मैथिली गीत-संगीतक इतिहास' सन शीर्षक स्वतंत्र प्रविष्टि रूपमे देखल जा सकैत अछि।

एहि पूर्वप्रकाशनक लेखकीय आ संस्थागत अर्थ अछि। पुस्तक एके दिनक तैयार एकरूप प्रबन्ध नहि, विवाद, प्रतिवाद आ नव पाठानुभवसँ विकसित विचारसभक संकलित रूप अछि। एहि प्रकारक संग्रहमे एके विषयक पुनरुक्ति ओहि विमर्शक कालक्रम सेहो चिन्हबैत अछि। शोधपाठक लेल प्रश्न उठैत अछि : कखन कोन विचार कहल गेल, कोन प्रतिवाद आयल, आ लेखकक मतमे की परिवर्तन भेल?

विदेहक ग्रन्थ-संग्रह आ शोध-अनुक्रमणिका मैथिली गजलक लेखकीय आवाजक संग आलोचना-परम्पराक दस्तावेजीय उपस्थिति सेहो सुरक्षित करैत अछि। एहन संस्थागत संग्रहणक महत्त्व खास कऽ ओहि भाषिक समाजमे बेसी अछि जतऽ पत्रिका, अल्पसंख्यक प्रकाशन आ क्षेत्रीय कृतिसभक उपलब्धता असमान रहल अछि। पोथीक ऐतिहासिक अध्ययन लेल विदेहक ई सामग्री आधारभूत सन्दर्भ प्रदान करैत अछि।

आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमाक समाहार

पुस्तकक पहिल प्रमुख उपलब्धि पद्धतिगत दृढ़ता अछि। गजलक बहर आ काफिया परखबाक उदाहरण लेखक अपन पाठकक सामने रखैत छथि; ओ केवल 'नीक' अथवा 'खराब'क अस्पष्ट निर्णय नहि दैत छथि। दोसर उपलब्धि विधाक आत्मनिर्भर पहचानक पक्षमे वैचारिक संघर्ष अछि। तेसर उपलब्धि भाषा, सम्पादन, प्रकाशन, इतिहास आ संगीत-संस्कृतिक प्रश्नसभकेँ गजल-आलोचनाक भीतर समेटब अछि। चारिम उपलब्धि ई जे लेखक गजलक सामाजिक विषय-विस्तारकेँ छन्दक संग सहअस्तित्वमे देखैत छथि।

पहिल सीमा सौन्दर्यात्मक मूल्यनिर्णयक असमान विस्तार अछि। बहरक परीक्षण प्रायः विस्तृत अछि, मुदा भावबोध, शेरक अर्थान्तर, बिम्ब-प्रतीक, रचनात्मक मौन, विडम्बना आ कथनक बहुस्तरीयता ततेक व्यवस्थित विवेचित नहि होइत अछि। दोसर सीमा समकालीन साहित्यिक मतभेदमे व्यक्तिकेँ लक्षित तीक्ष्ण सम्बोधन अछि, जाहिसँ तर्कक विषयान्तर होयबाक जोखिम रहैत अछि। तेसर सीमा 'छन्दयुक्त' आ

‘छन्दमुक्त’क बीच प्रायः द्वैध निर्माण अछि; मध्यवर्ती प्रयोगक श्रेणीकरण अपेक्षाकृत कम विकसित अछि।

चारिम सीमा ऐतिहासिक दावाक प्रमाण-क्रम अछि। पोथी अनेक महत्वपूर्ण संकेत दैत अछि, तथापि आरम्भिक प्रकाशन, संस्करणभेद, पुनर्प्रकाशन आ अभिहित ‘प्रथम’क प्रश्न पर स्वतंत्र ग्रन्थसूची-आधारित शोध आवश्यक अछि। पाँचम सीमा सांगीतिक रूपान्तर आ साहित्यिक पाठान्तरपर अलग सैद्धान्तिक रूपरेखाक अभाव अछि। ई सीमासभ कृतिक महत्त्व घटबैत नहि; उलटे आगामी शोधक सम्भावित दिशा स्पष्ट करैत अछि।

उपसंहार

‘शब्द-अर्थ-शक्ति’क स्थायी महत्त्व एकर विवादप्रिय स्वरमे मात्र नहि, बल्कि मैथिली गजलक मूल्यांकनकें सार्वजनिक प्रमाण आ परिभाषाक स्तरपर आनबाक प्रयत्नमे निहित अछि। पुस्तक पढ़ैत स्पष्ट होइत अछि जे लेखकक लेल साहित्यिक स्वाधीनताक अर्थ अनुशासनहीनता नहि; ओ रूपक ज्ञानकें सर्जनात्मक स्वतन्त्रताक आधार मानैत छथि। एहि विचारक फलदायी रूप तखन निर्मित होइत अछि जखन रूपगत शुद्धताक संग अर्थक बहुलता, बोलीक वैविध्य आ काव्यानुभवक नूतनता बराबर महत्त्व पबैत अछि।

मैथिली गजल-अध्ययनक इतिहासमे एहि ग्रन्थकें एकटा सक्रिय आलोचनात्मक मोड़ मानल जा सकैत अछि। ई विधा-प्रेमकें अनुशीलनमे, रचनाकारक प्रशंसाकें परीक्षणमे, आ साहित्यिक परम्पराक गौरवकथाकें प्रश्नोत्तरमे परिवर्तित करबाक चेष्टा करैत अछि। एकर तीक्ष्णताक संग संवाद करब, एकर तर्ककें पुनः परखब आ एकर अधूरा प्रश्नसभकें आगू बढ़ाएब—एहिमे एकर उचित साहित्यिक मूल्यांकन निहित अछि।

सन्दर्भसूची : विदेह-स्रोत

मूल पुस्तक तथा विदेहमे उपलब्ध कृति-सूची आ प्रकाशन-अनुक्रमणिकापर आधारित चयनित सन्दर्भ।

- आशीष अनचिन्हार। शब्द-अर्थ-शक्ति : गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा ओ गजलपर आलेख। विदेह प्रकाशन-अभिलेख; ग्रन्थक आरम्भिक अधिकार-सूचनामे २०१२ आ २०२२ अंकित।
- विदेह। मैथिली पोथीक अभिलेख; आशीष अनचिन्हारक ‘शब्द-अर्थ-शक्ति’, ‘सन्दर्भ सहित’, ‘मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास’, ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ तथा ‘अनचिन्हार आखर’क ग्रन्थसूची-प्रविष्टि। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- विदेह। शोध-लेख अनुक्रमणिका; आशीष अनचिन्हारक गजल-सम्बन्धी आलेखसभक अंकवार विवरण। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/index.html>
- विदेह। शोध-लेख : अङ्क १ सँ ४५१ धरि; गजल-आलोचनासम्बद्ध शीर्षकसभक प्रकाशन-विवरण। <https://videha-ejournal.github.io/videha/research/videha-scholar-research-book.html>
- विदेह। गद्य तथा आलोचना-संसाधन; आशीष अनचिन्हारक कृतिसभक लेखकवार सूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>
- बाबा बैद्यनाथ। पहरा इमानपर (गजल-संग्रह)। विदेह पोथी-अभिलेखमे उपलब्ध ग्रन्थसूची-प्रविष्टि। <https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>
- आशीष अनचिन्हार। चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी; मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग। विदेह, अङ्क १६५, २०१४। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।
- आशीष अनचिन्हार। बयानक सन्दर्भमे मैथिली गजल। विदेह, अङ्क २५१, २०१८। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।
- आशीष अनचिन्हार। नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिन्दी गजलक तुलनात्मक विवेचना। विदेह, अङ्क २५२, २०१८। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।
- आशीष अनचिन्हार। दुष्यन्त कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै। विदेह, अङ्क ३०७, २०२०। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।

- आशीष अनचिन्हार। एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलकै मैथिली गीत-संगीतक इतिहास। विदेह, अङ्क ३१२, २०२०। विदेह शोध-अनुक्रमणिका।

खण्ड ४

डिजिटल अभिलेख आ मैथिली सार्वजनिकता

मैथिली साहित्यक पुनर्पाठ

१.२१. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

अभिलेख, माध्यम-परिवर्तन आ साहित्यिक सार्वजनिकता

सारांश

आशीष अनचिन्हारक ‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’ आधुनिक मैथिली गद्यक ओहि विशिष्ट प्रवृत्तिक प्रतिनिधि कृति अछि जाहिमे पत्रकारिताक इतिहास, भाषा-प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक स्मृति आ सार्वजनिक विवाद एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। एहि कृतिक केन्द्रीय चिन्ता इंटरनेटपर मैथिलीक आरम्भिक उपस्थिति, प्रारम्भिक पत्रिका-जालस्थलक कालक्रम, साहित्यिक आ समाचारप्रधान माध्यमक सम्बन्ध, मिथिलाक्षर तथा युनिकोडक विकास, सामाजिक माध्यमक भूमिका आ सामुदायिक ज्ञाननिर्माणक इतिहास अछि। पोथी ‘पहिल’ हेबाक अनेक दावाक परीक्षण करैत छैक, मुदा कतिपय स्थलपर स्वयं सेहो प्राथमिकताक निर्णायक भाषा अपनबैत अछि। प्रस्तुत अध्ययन एहि द्वन्द्वक कृतिक कमजोरी मात्र नहि, ओकरा इतिहासलेखनक सक्रिय विषय मानैत अछि। पोथीक विषयवार पाठ-परीक्षण, ऐतिहासिक तुलनाक सन्दर्भमे विदेहक उपलब्ध सामग्री आ मैथिली पत्रकारिताक पूर्ववर्ती धारा, तथा दस्तावेजी प्रमाणक प्रकारसभक आलोचनात्मक विवेचनसँ ई निष्कर्ष निकलैत अछि जे एहि कृतिक असाधारण महत्त्व डिजिटल मैथिलीक आरम्भिक चिह्न, संस्थागत योगदान आ विवादित स्मृतिसभकें एक ठाम आनबामे निहित अछि; ओकर अन्तिम प्रामाणिकता समकालीन अभिलेखक निरन्तर पुनर्परीक्षणपर निर्भर रहत।

बीज-शब्द

मैथिली वेब पत्रकारिता; डिजिटल साहित्यिक इतिहास; आशीष अनचिन्हार; विदेह; मिथिलाक्षर; युनिकोड; सामुदायिक सम्पादन; सामाजिक माध्यम; स्रोत-समालोचना; अभिलेखीय स्मृति।

भूमिका : डिजिटल परिवर्तनक इतिहास लिखबाक आवश्यकता

मैथिली साहित्यक परम्परागत इतिहास प्रायः कवि, पोथी, विधा, सम्प्रदाय आ पत्र-पत्रिकाक क्रमसँ निर्मित होइत रहल अछि। मुदा इंटरनेट साहित्यक अभिव्यक्तिकेँ स्थिर कागतसँ गतिशील मंचपर आनलक। रचना आब केवल प्रकाशित वस्तु नहि रहल; ओकर प्रकाशन-समय, संशोधन, पाठकीय प्रतिक्रिया, पुनर्प्रसार, भाषान्तर, ध्वनि, चित्र आ खोज-योग्यता सेहो साहित्यिक जीवनक अङ्ग बनि गेल। एहि बदलैत परिस्थितिकेँ बुझबाक लेल इतिहासकारकेँ केवल रचनाक सूची नहि, माध्यमक संरचना आ ओकर सामाजिक व्यवहार सेहो देखय पड़ैत छनि।

‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’ एहि नव विषयक दस्तावेजी सम्भावना देखबैत अछि। लेखक आरम्भिक जालस्थल, जालवृत्त, समाचार-माध्यम, पत्रिका, सङ्गणकीय लिपि, सामाजिक सञ्जाल, चलचित्रीय माध्यम आ विकिपीडियाक चर्चा एके समग्र ऐतिहासिक कथा भीतर रखैत छथि। एहिसँ पोथी केवल ‘कतेक जालस्थल छल’ एकर हिसाब नहि रहैत अछि; ई भाषा सार्वजनिक क्षेत्रमे अपन स्थान कोना बनबैत अछि, एहि प्रश्नक उत्तर तकबाक प्रयास बनैत अछि।

एहि आलोचनाक मूल प्रतिपाद्य अछि जे पोथीक उपयोगिता ओकर सङ्ग्रहित सामग्रीक व्यापकता आ ओकर जिज्ञासामूलक इतिहास-बोधमे अछि; एकर सीमासभ लेखकक स्वरक तीव्रता, अपूर्ण अभिलेख, स्रोतक असमान स्तर आ ‘पहिल’ सम्बन्धी निष्कर्षक निकषमे देखल जा सकैत अछि। एहि दुनू पक्षकेँ एक संग रखले कृतिक साहित्येतिहासिक स्थान स्पष्ट होइत अछि।

कृतिक संरचना, विकास आ लेखकीय प्रयोजन

पोथीक आरम्भमे लेखक अपन अध्ययनक उद्भव, पूर्वप्रकाशित आलेख, संशोधनक प्रक्रिया आ पाठकसँ अपेक्षित सहयोगक परिचय दैत छथि। आरम्भिक सामग्रीक सम्बन्ध पूर्वक विदेह-अङ्क, पत्रकारिता-विषयक विशेष सामग्री आ लेखकक पूर्वप्रकाशित लेखसभसँ जोड़ल गेल अछि। लेखक आरम्भिक रूपक सार्वजनिकता

२०१७ सँ जोड़ैत छथि, आ कालान्तरमे नव सूचना समावेशित करबाक बात सेहो रखैत छथि। एहि कारणेँ कृतिक काल-परिधि केँ एकल प्रकाशन-वर्षमे समेटब उचित नहि; ई विभिन्न समयमे बढ़ैत गेल दस्तावेजी उपक्रम थिक।

मुख्य रचनात्मक विन्यासमे प्रारम्भिक तकनीकी चर्चा, इंटरनेटपर मैथिलीक आरम्भिक उपस्थिति, इंटरनेट-सन्दर्भ, प्रारम्भिक जालस्थलक क्रम, वेब-सङ्गोष्ठी, भाषा-साहित्य, समाचार, नाटक—चलचित्र—सङ्गीत, बाल-विषयक तथा अन्य मंच, मिथिलाक्षर आ अक्षरविन्यास, सामाजिक माध्यम, यूट्यूब आ विकिपीडियाक यात्रा शामिल अछि। आरम्भक ‘पहिल’ सम्बन्धी सूची आ अन्तिम अभिलेखीय साक्ष्यसभ मिलि कए कृतिक आन्तरिक ढाँचा बनबैत अछि।

एहि संरचनामे विषयक आधारपर वर्गीकरण एकटा व्यवहारिक सुविधा अछि। तथापि कोनो जालस्थल एक संग साहित्यिक पत्रिका, समाचार-मंच, अभिलेखागार आ भाषायी आन्दोलनक केन्द्र भऽ सकैत अछि। तँ कठोर श्रेणीकरणसँ कुछेक मंचक बहुआयामी स्वरूप छिपबाक जोखिम रहैत अछि। कृतिक श्रेष्ठ पाठ ओतए सम्भव अछि जतए विषयगत खण्डसभकेँ परस्पर जुड़ल इतिहासक रूपमे पढ़ल जाए।

इतिहासलेखनक पद्धति : कालक्रमसँ आगाँ प्रमाणक प्रश्न

लेखक आरम्भिक उपस्थिति निर्धारित करैत समय एकटा मूल समस्या चिन्हैत छथि—जालस्थल बनबाक तिथि, उपलब्ध रचनाक प्रथम प्रकाशन, आ बादमे फेर प्रकाशित सामग्री एक समान प्रमाण नहि थिक। आरम्भिक जालवृत्तसभमे पुरान तिथि लगाओल जा सकबाक सम्भावना, मंच बदलला पर पुरान लेख फेर देखाएब, आ सर्वर बन्द भेला पर पुरान वस्तुक अप्राप्यता इतिहासक क्रमकेँ जटिल बनबैत अछि। एहि बिन्दुपर पोथी डिजिटल इतिहासलेखनक मूल प्रश्न उठबैत अछि।

मुदा प्रमाणक प्रकारसभक भेद सदिखन पूर्ण स्पष्ट नहि कएल गेल अछि। कोनो समयक लेखक-घोषणा, मूल प्रकाशनक सुरक्षित प्रति, स्वतन्त्र अभिलेखीय उल्लेख, जालस्थलक वर्तमान विवरण आ तृतीय पक्षक संस्मरण—सभक साक्ष्य-मूल्य अलग

होइत अछि। जँ कोनो दाबी केवल उपलब्ध वर्तमान चिन्हपर आधारित अछि, तँ ओकरा 'उपलब्ध साक्ष्यक आधारपर पहिल' कहब अधिक समुचित होयत। इतिहासमे निष्कर्षक दृढ़ता प्रतिपक्षी मतक तीख आलोचनासँ नहि, प्रमाणक परखसँ बढ़ैत अछि। लेखक कतिपय स्थानपर विरोधी दावाक प्रतिक्रिया तीव्र व्यंग्य आ नैतिक निर्णयक भाषा द्वारा करैत छथि। ई शैली पढ़बाक रुचि बढ़बैत अछि; मुदा ऐतिहासिक विश्लेषणमे भावनात्मक वाक्य आ अभिलेखीय निष्कर्षकेँ पृथक राखब आवश्यक अछि। एहि दृष्टिसँ कृति एकसाथे इतिहासक सामग्री आ इतिहास लिखबाक आत्मसंघर्षक उदाहरण बनि जाइत अछि।

पत्रकारिताक परिभाषा : समाचार, साहित्य आ सम्पादनक साझा क्षेत्र पोथी साहित्यप्रधान माध्यमकेँ पत्रकारितासँ बाहर करबाक संकुचित दृष्टिक विरोध करैत अछि। लेखकक तर्क अछि जे समाचार केवल राजनीति वा अपराध धरि सीमित नहि; साहित्यिक गतिविधि, रचना, विमर्श, सम्पादकीय हस्तक्षेप आ पाठकीय संवाद सेहो समसामयिक सार्वजनिक सञ्चारक हिस्सा अछि। मैथिलीक सन्दर्भमे ई तर्क विशेष अर्थवान् अछि, कारण अनेक आरम्भिक पत्रिका समाचार आ साहित्यकेँ पृथक संस्थागत खाँचामे नहि रखैत छल।

तथापि प्रत्येक साहित्यिक रचना अपने-आप पत्रकारिता नहि बनि जाइत अछि। सम्पादकीय चयन, नियमितता, सार्वजनिक उत्तरदायित्व, स्रोतसत्यापन, समय-संवेदनशीलता आ पाठकक सामने जवाबदेही—ई लक्षण पत्रकारिताक विशिष्टता निर्धारण करैत अछि। साहित्यिक ई-पत्रिकामे प्रकाशित कविता आ ओहि पत्रिकाक साहित्यिक घटना-सम्बन्धी समाचारक कार्य एक-दोसरासँ जुड़ल होइतहु भिन्न अछि। पोथीक सर्वसमावेशी दृष्टिकेँ एहि सूक्ष्म भेदक संग पढ़ला पर आधुनिक मैथिली सार्वजनिकताक अधिक सन्तुलित रूप उभरैत अछि।

एहि स्थलपर लेखकक योगदान पत्रकारिताक परिभाषाकेँ व्यापक बनबैत अछि; मुदा ओकरा विधागत विवेचन, समाचारक गुण, सम्पादन-विधान आ पाठकीय प्रभावक पृथक मापदण्डसँ पूरक बनेनाइ आवश्यक अछि।

प्रारम्भिक जाल-उपस्थिति : ‘भालसरिक गाछ’सँ ‘कतेक रास बात’ धरि आरम्भिक इंटरनेट इतिहासक चर्चामे ‘भालसरिक गाछ’, ‘पल्लवमिथिला’, ‘समदिया’, ‘अपन मिथिला’, ‘प्रकारान्तर’ आ ‘कतेक रास बात’ कृतिक केन्द्रमे आबैत अछि। लेखक ‘भालसरिक गाछ’केँ २००० सँ जुड़ल आरम्भिक उपस्थिति मानैत छथि। ‘पल्लवमिथिला’क सम्बन्ध २००३क आसपासक प्रमाणसँ, ‘समदिया’क आरम्भ २००४सँ, आ ‘कतेक रास बात’क उपलब्ध सामग्री २००५सँ जोड़ल गेल अछि। एहि क्रममे भारत-नेपाल-प्रवासक अन्तरसम्बन्ध सेहो प्रकट होइत अछि।

एहि कथामे महत्वपूर्ण बात ई अछि जे लेखकीय भाषामे ‘मैथिलीक उपस्थिति’ आ ‘मैथिली भाषामे सामग्री’ कखनो एक-दोसराक समान मानल गेल अछि, कखनो भिन्न। मैथिली-विषयक अंग्रेजी जालस्थल आ मैथिलीमे प्रकाशित जालवृत्तक ऐतिहासिक महत्त्व निश्चय दुनूक अछि, मुदा दूनूक प्रश्न अलग अछि। पहिल व्यापक सांस्कृतिक उपस्थिति बतबैत अछि; दोसर भाषाक प्रत्यक्ष डिजिटल प्रयोग। एहि दुई धुरीक स्पष्ट पृथक्करणसँ पहिलपनक विवाद अधिक व्यवस्थित भऽ सकैत अछि।

‘कतेक रास बात’ विषयक लेखकक प्रतिवाद मात्र एक जालस्थलपर टिप्पणी नहि, आरम्भिक डिजिटल स्मृति लिखबाक अधिकारक प्रश्न थिक। एहि प्रसङ्गमे कृति आदर्श इतिहासकारक ओ दायित्वक स्मरण करबैत अछि जाहिमे पूर्ववर्ती काजक श्रेय देब आ प्रतिकूल प्रमाणक निष्पक्ष परीक्षण करब दूनू आवश्यक अछि। विदेहमे पूर्व प्रकाशित लेखकक तत्सम्बन्धी आलेखक संग कृतिक विमर्श एक दीर्घ बौद्धिक बहसक रूप धारण करैत अछि।

‘समदिया’ आ समाचारक स्थानीय सार्वजनिकता

समाचारप्रधान खण्डमे ‘समदिया’, ‘इसमाद’, ‘मिथिला प्राइम’, ‘मिथिला मिरर’, ‘नव मिथिला’, ‘मैथिली जिन्दाबाद’, ‘मिथिला दर्शन’ आदि माध्यमक उपस्थिति अछि।

‘समदिया’क २००४क स्थापना तथा बादक सम्पादन-परिवर्तन, आ ‘इसमाद’क आरम्भिक ई-अड्कसँ समाचार-पोर्टल धरि बढबाक विवरण डिजिटल पत्रकारीताक रूपान्तरण देखबैत अछि। एतए मंचक संस्थापक, सम्पादक आ पछिला सञ्चालकक भूमिकामे अन्तर करब जरूरी होइत अछि।

एहि सामग्रीक सामाजिक महत्त्व ई अछि जे समाचार-प्रसारक केन्द्र केवल महानगरक छापाखाना नहि रहल। क्षेत्रीय घटना, भाषा-आन्दोलन, नेपालक मैथिलीभाषी समाज, स्थानीय राजनीति, शिक्षण, कला आ सामुदायिक विवाद डिजिटल माध्यमसँ नव पाठकीय क्षेत्र प्राप्त करैत अछि। एहि प्रकारक मंचसभ मैथिलीकें केवल साहित्यक भाषा नहि, समसामयिक सार्वजनिक संवादक भाषा बनबैत अछि।

पोथी कतिपय समाचारसंस्थानक स्थापना-श्रेय आ सहयोगीक नाम हटेबाक प्रवृत्तिपर प्रश्न करैत अछि। ई आलोचना संस्थागत स्मृतिाँ महत्त्व दैत अछि। मुदा इतिहासकारकें संस्थापक, प्रथम सम्पादक, वित्तदाता, तकनीकी सहयोगी आ बादक प्रबन्धकक भूमिका अलग-अलग प्रमाणसँ चिन्हब आवश्यक अछि। केवल नामक उपस्थिति वा अनुपस्थितिसँ नैतिक निष्कर्ष तुरन्त निकालब न्यायोचित नहि होयत।

‘विदेह’ : ई-पत्रिका, सङ्ग्रहालय आ समानान्तर साहित्यिक संस्थान कृतिक सर्वाधिक विस्तृत आ प्रभावशाली चर्चामे ‘विदेह’ केन्द्रस्थ अछि। २००८ सँ पाक्षिक ई-पत्रिकाक नियमित प्रकाशन, साहित्यिक विशेषाङ्क, नाट्य-बाल-गजल-अनुवाद विषयक प्रयोग, अनेक लिपिमे सामग्री, पुस्तक उपलब्ध कराएब, सार्वजनिक संवाद, श्रव्य-दृश्य उपक्रम आ लिपि-प्रयोगक विवरण विदेहकें मात्र पत्रिका नहि, समेकित सांस्कृतिक अवसंरचनाक रूपमे देखबैत अछि।

विदेहक डिजिटल संरचनामे रचना-प्रकाशन आ अभिलेखीकरण एक-दोसराक सहायक बनैत अछि। मुद्रित पत्रिकाक अङ्क पाठकक घर वा पुस्तकालयमे रहैत अछि; डिजिटल पत्रिकाक पुरान सामग्री खोज, पुनर्प्रकाशन, परस्पर-सन्दर्भ आ नव पाठकीय समुदाय द्वारा पुनःजीवित होइत अछि। पोथी एहि परिवर्तनक ऐतिहासिक महत्त्व सही रूपमे चिन्हैत अछि। एतए साहित्यिक संस्थानक अर्थ केवल भवन, समिति वा पुरस्कार नहि, सतत सामग्री-संग्रह आ सार्वजनिक पहुँच सेहो बनि जाइत अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ विदेहपर सामग्रीक व्यापकता एक साथे कृतिक सामर्थ्य आ अनुपातगत असन्तुलनक स्रोत अछि। अन्य जालस्थलकेँ संक्षिप्त विवरण भेटैत अछि, जबकि विदेहक बहुतेक उपक्रम विस्तारसँ वर्णित अछि। एहि असमानताक व्याख्या स्रोतक उपलब्धता, माध्यमक दीर्घकालीन सक्रियता आ लेखकक चयन-नीतिसँ भऽ सकैत अछि; तथापि तुलनात्मक इतिहासमे सभ मंच लेल पूर्वनिर्धारित मूल्याङ्कन-निकष राखब उपयोगी रहितै।

साहित्यिक जालवृत्त आ विधागत नवाचार

भाषा-साहित्य खण्डमे ‘अनचिन्हार आखर’क गजलकेन्द्रित प्रयोग, ‘मैथिल आर मिथिला’क सामुदायिक संवाद, ‘ई-मिथिला’क विविध सामग्री आ आन व्यक्तिगत वा संस्थागत मंचसभक उल्लेख कएल गेल अछि। डिजिटल जालवृत्तक खासियत अछि जे नव लेखनकेँ पत्रिका-सम्पादकक दीर्घ प्रतीक्षासँ मुक्ति भेटैत अछि। एहि सुविधा सँ नव रचनाकार, लघुविधा, गजल, व्यङ्ग्य आ आलोचनात्मक प्रतिवादक द्रुत विस्तार सम्भव भेल।

‘अनचिन्हार आखर’ लेखकक अपन कृतित्वसँ जुड़ल उदाहरण अछि। तकर इतिहास लिखैत काल लेखक सहभागी सेहो छथि आ इतिहासकार सेहो। एहि दू भूमिकाक मिलन प्रत्यक्ष अनुभवक सुविधा दैत अछि, मुदा स्वमूल्याङ्कनक समस्या सेहो उत्पन्न करैत अछि। जँ लेखक अपन उद्यमक साहित्यिक परिणाम परखथि, तँ स्वतंत्र पाठकीय

प्रतिक्रिया, सम्पादकीय निरन्तरता, प्रकाशित रचनाक शिल्प आ पछिला लेखनपर पड़ल प्रभावक प्रमाण अलगसँ प्रस्तुत करबाक अपेक्षा रहैत अछि।

मैथिली गजलक सन्दर्भमे डिजिटल माध्यम केवल प्रकाशनस्थल नहि रहल; बहर, छन्द, रूपविधान आ प्रयोगक प्रश्न सेहो खुलल। भाषा-साहित्य खण्डक एहि सम्भावनाकें पोथी रेखाङ्कित करैत अछि, मुदा वास्तविक साहित्यिक पाठक शिल्प-विश्लेषण ओतए अपेक्षाकृत कम अछि। जालवृत्तक इतिहास आ गजलक सौन्दर्येतिहासक बीच ई अन्तर आगामी अध्ययनक एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र अछि।

नाटक, चलचित्र आ सङ्गीत : पाठसँ श्रव्य-दृश्यक यात्रा

नाटक, चलचित्र आ गीत-सङ्गीत सम्बन्धी खण्डमे प्रारम्भिक संगीत-जालवृत्त, चलचित्र-विषयक मंच, 'विदेह मैथिली नाट्य उत्सव' आ नेपालक सङ्गीत-प्रसारण उपक्रमसभक चर्चा अछि। एहि विकाससँ मैथिली डिजिटल सार्वजनिकतामे लिखित पाठक प्रभुत्व टूटैत अछि। गीतक धुन, लोकस्वर, अभिनय, प्रस्तुति, मञ्च-इतिहास आ दर्शक-समुदाय साहित्यक सङ्गे जुड़ैत अछि।

कृति 'पहिल पोर्टल'क प्रतिस्पर्धात्मक दावाक आलोचना करैत काल विधागत सीमाक समस्या सामने अनैत अछि। गीतसङ्ग्रहक जालवृत्त, चलचित्र-समीक्षा मंच आ समेकित मनोरञ्जन-पोर्टलकें एके श्रेणीमे रखला पर क्रमभेद उलझि जाइत अछि। यदि 'पहिल गीत-जालवृत्त', 'पहिल चलचित्रक स्वतन्त्र मंच' आ 'पहिल समेकित मनोरञ्जन-पोर्टल'क परिभाषा अलग हो, तँ निष्कर्ष अधिक परिष्कृत बनत।

सङ्गीतक डिजिटल यात्रा साहित्यिक इतिहास लेल महत्त्वपूर्ण एहि कारणेँ अछि जे मौखिक परम्परा आब अभिलेखित, पुनःश्रव्य आ सीमापार प्रसारित भऽ सकैत अछि। मुदा दृश्य-संस्कृतिक मूल्याङ्कन दर्शकसंख्या मात्रसँ नहि, प्रस्तुति-कला, भाषिक शुद्धता, लोकपरम्पराक पुनर्सृजन आ सामग्रीक दीर्घकालीन संरक्षणसँ सेहो करबाक चाही।

बाल-साहित्य, धर्म, व्यापार आ विशेषज्ञतापूर्ण मंच

लेखक 'नेना-भुटका' सन बालसाहित्य-विषयक प्रयोग, मिथिला हाट सन व्यापारिक उपक्रम, मैथिली पतरा सन परम्परागत ज्ञानक डिजिटल रूप, स्वास्थ्यविषयक सामग्री आ तकनीकी सूचना देनिहार मंचसभकेँ समाविष्ट करैत छथि। एहि सामग्रीसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली इंटरनेट केवल कविताक लेखन-क्षेत्र नहि; ई दैनिक उपयोग, सीखब, खरीद-बेच, संस्कार, मनोरञ्जन आ लोकज्ञानक माध्यम सेहो अछि।

बालसाहित्यक डिजिटल उपस्थिति बाल-पाठकक स्वतन्त्र काव्यजगत नहि बनबैत, जाबत सामग्रीक वयस-अनुकूलता, चित्र-ध्वनि-वर्णनक संयोजन आ बच्चाक स्वयंभागीदारीकेँ नहि परखल जाए। कृतिक बालविषयक उल्लेख इतिहासक आवश्यक सूत्र दैत अछि; मुदा साहित्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन लेल कथा-विन्यास, शब्दभण्डार, शिक्षात्मकता आ कल्पनाशक्तिक पृथक परीक्षण अपेक्षित अछि।

धर्म, व्यापार आ स्वास्थ्यक मंचसभकेँ पत्रकारिताक समग्र इतिहासमे जोड़बाक औचित्य भाषिक सार्वजनिकताक विस्तारमे अछि। मुदा एहि सामग्रीक विश्वसनीयता साहित्यिक मंचसँ भिन्न निकष मागैत अछि। उदाहरणार्थ स्वास्थ्य-सूचना लेल चिकित्सकीय प्रमाण, व्यापार लेल उपभोक्ता-सुरक्षा आ धार्मिक सामग्री लेल पाठपरम्पराक प्रामाणिकता स्वतन्त्र प्रश्नसभ अछि।

मिथिलाक्षर, युनिकोड आ तकनीकी स्वाधीनता

लिपि-प्रौद्योगिकी सम्बन्धी खण्ड कृतिक मूल महत्त्वक केन्द्र अछि। लेखक तिरहुता अर्थात् मिथिलाक्षरक डिजिटल फॉन्ट-निर्माण, विभिन्न निर्माताक दाबी, युनिकोड-सम्बन्धी प्रस्ताव, भाषिक टङ्कण, लिप्यन्तरण तथा डिजिटल प्रकाशनक प्रयोगसभक जानकारी संकलित करैत छथि। सी. के. राउत, गङ्गेश गुंजन झा, विनय झा, ओम विकास आ अंशुमान पाण्डेय सन नाम अलग-अलग सन्दर्भमे उपस्थित अछि। विभिन्न कालक्रमक दावाक तुलना करैत लेखक एकल विजेताक सरलीकृत कथासँ आगाँ बढ़बाक प्रयास करैत छथि।

एहि क्षेत्रमे ‘फॉन्ट बनेबाक’, ‘अक्षरक मानकीकृत संकेतबन्ध स्वीकार हेबाक’ आ ‘आम पाठक लेल सहज टङ्कण-साधन बनेबाक’ बीच मूल भेद अछि। कोनो निजी फॉन्टक निर्माण ऐतिहासिक उपलब्धि अछि, मुदा ओ विश्वव्यापी संकेतबन्धक स्वीकृति नहि थिक। युनिकोडक मानकीकरण सामुदायिक सामग्री, तकनीकी प्रस्ताव, अक्षर-अध्ययन आ संस्थागत निर्णयक दीर्घ प्रक्रियासँ सम्पन्न होइत अछि। लेखकक सामग्री एहि प्रक्रियाक कतेको अलग चरणक महत्त्व देखबैत अछि।

लेखक भाषाक व्याकरण आ लिपिक आकारकेँ अलग नहि मानैत छथि; तिरहुता-लेखनमे मैथिली विभक्ति तथा पद-विन्यासक विशिष्टता पर जोर दैत छथि। एहि दृष्टिकेँ केवल लिपिरक्षाक आग्रह नहि बुझबाक चाही। ई भाषा-स्वायत्तता, लोकवाङ्मयक रूप आ सङ्गणकीय प्रस्तुतिक सम्बन्धक प्रश्न थिक। मुदा ऐतिहासिक व्यवहारमे भिन्न लिपि, विभक्तिक विविध लिखावट आ अलग पाठकीय परम्पराक अस्तित्वकेँ सेहो नकारल नहि जा सकैत अछि। मानकीकरण आ जीवित भाषिक बहुलता बीच सन्तुलन अनिवार्य अछि।

ब्रेल, बहुलिपिक प्रकाशन आ पहुँच-अधिकार

विदेहक तिरहुता, ब्रेल, कैथी, देवनागरी, आइपीए तथा आन लिपि-सन्दर्भक प्रयोग पर पोथी विशेष ध्यान दैत अछि। बहुलिपिक प्रकाशनकेँ मात्र लिपिक प्रदर्शन मानब अनुचित होयत; ई अलग पाठकीय समुदाय धरि मैथिली साहित्य पहुँचेनिहार संभावित मार्ग अछि। विशेष रूपसँ ब्रेल-सन्दर्भ साहित्यिक इतिहासमे पाठकीय पहुँचक प्रश्नकेँ केन्द्रमे आनैत अछि।

तथापि बहुलिपिक फाइलक उपलब्धता आ वास्तविक सुगम पाठकीय अनुभव भिन्न वस्तु अछि। ब्रेल-प्रस्तुतिक मानकीकृत रूप, उपकरणसंग अनुकूलता, शुद्ध पाठ, फॉन्टक स्थिरता आ खोजयोग्य लेखन सभ पहुँच-अधिकारक हिस्सा अछि। कृतिक ऐतिहासिक विवरण ई चर्चा शुरू करैत अछि; भविष्यक आलोचना ओकर व्यावहारिक परिणामक परीक्षणक दिशामे आगाँ बढि सकैत अछि।

सामाजिक माध्यम : स्त्री, दलित स्वर आ जनतान्त्रिक भागीदारी

सामाजिक माध्यमक चर्चामे पोथी जन-अभिव्यक्तिक नव अवसर देखबैत अछि। फेसबुकक माध्यमे स्त्रीक निज स्वर, दलित रचनाकारक उपस्थिति, लोकगीतक साझा प्रस्तुति, प्रवासी समुदायक स्मृति आ क्षेत्रीय संवाद बढ़ल—ई लेखकक प्रमुख अवलोकन अछि। एहि बिन्दुपर इतिहास केवल तकनीकी प्रगतिक विवरण नहि रहैत; ई सामाजिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न बनैत अछि।

स्त्री आ दलित स्वरक विस्तृत सम्भावनाक उल्लेख कृतिक प्रगतिशील पक्ष अछि। परम्परागत पत्रिका-केंद्रित प्रवेशद्वारसँ बाहर एकटा पाठकीय मञ्च उपलब्ध भेल जतए रचनाकार स्वयं प्रकाशक आ प्रत्युत्तरकर्ता बनि सकैत छथि। मुदा ‘उपस्थिति’ आ ‘समता’ एक नहि। ऑनलाइन उत्पीड़न, भाषिक उपहास, जातीय पूर्वाग्रह, सामग्रीक दृश्यता नियंत्रित करनिहार व्यवस्था आ उपकरणक असमान पहुँच मुक्त अभिव्यक्तिक सीमासभ बनबैत अछि। लेखकक उत्साहकँ एहि संरचनात्मक प्रश्नक संग पढ़नाइ आवश्यक अछि।

सामाजिक माध्यमसँ जनतान्त्रिकता स्वतः सुनिश्चित नहि होइत; ओहि मंचपर कतिपय स्वर अधिक सुनाइ दैत अछि, अन्य दबि सकैत अछि। कृतिमे एहि तनावक संकेत अछि, किन्तु स्त्री-लेखनक स्वतन्त्र साहित्यिक पाठ, दलित लेखकक कृतित्व आ समुदायगत अनुभवक तुलनात्मक अध्ययन आगेक शोधक अपेक्षा करैत अछि।

फेसबुकक पहुँच, प्रतिक्रिया आ लोकप्रियताक भ्रम

पोथी ‘लाइक’, पहुँच, प्रचार आ सशुल्क प्रसार सम्बन्धी भ्रमक आलोचना करैत अछि। ई निरीक्षण महत्वपूर्ण अछि कारण डिजिटल सामग्रीक दृश्यता ओकर साहित्यिक मूल्यक प्रमाण नहि होइत अछि। समाचारक सार्वजनिक हित, कविताक सौन्दर्य, लेखकीय श्रम अथवा ऐतिहासिक तथ्यक विश्वसनीयता दर्शक-प्रतिक्रियाक सङ्ख्यासँ सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि।

मुदा डिजिटल मंचक आन्तरिक नियम समयानुसार बदलैत रहैत अछि। कोनो एक समयक पहुँच-विधान, समूहक व्यवहार वा प्रचारक संरचनाकेँ स्थायी नियम मानब अनुपयुक्त अछि। एहि कारणेँ पुस्तकक एहि अंशकेँ विशिष्ट समयक डिजिटल अनुभवक साक्ष्य मानब उचित अछि, सार्वकालिक तकनीकी सूत्र नहि। ई भेद कृतिक ऐतिहासिक उपयोगिता घटबैत नहि, ओकरा उचित सन्दर्भ दैत अछि।

मोबाइल अनुप्रयोग आ भाषाक रोजमर्रा उपयोग

अनुप्रयोग सम्बन्धी सामग्रीमे शब्दकोश, गीत, पञ्चाङ्ग, विवाह, समाचार, धार्मिक पाठ, स्वास्थ्य आ अन्य क्षेत्रक आरम्भिक उपक्रम सूचीबद्ध अछि। एहन सूची डिजिटल भाषिक इतिहास लेल उपयोगी अछि, कारण जालस्थलसँ मोबाइलपर संक्रमणक संकेत ओतए भेटैत अछि। लोकक हाथमे उपलब्ध भाषिक साधन शिक्षा, सूचना आ सांस्कृतिक पहचानक नव सम्बन्ध बनबैत अछि।

मुदा अनुप्रयोगक आरम्भ-तिथि आ ओकर दीर्घकालीन प्रयोगशीलता भिन्न। कोनो अनुप्रयोग जारी भेल, मुदा आगाँ अद्यतन नहि भेल, भाषिक सामग्री घटल वा तकनीकी रूपसँ निष्क्रिय भऽ गेल—एहि अन्तरकेँ ध्यानमे रखब अनिवार्य अछि। इतिहासक जीवित उपक्रमक समीक्षा लेल प्रकाशनकालक सङ्गे उपयोग, रखरखाव, सुरक्षा आ जनपहुँचक साक्ष्य आवश्यक अछि।

यूट्यूब : चैनलक निर्माण आ मैथिली सामग्रीक प्रथम प्रकाशन

यूट्यूबक खण्डमे लेखक चैनल बनबाक तिथि आ ओहि चैनलपर मैथिली सामग्री प्रथम बेर आबबाक तिथिक भेद प्रस्तुत करैत छथि। ‘vijay7701’, गजेन्द्र ठाकुरक चैनल, रजनी पल्लवीक प्रस्तुति आ पछिला अनेक चैनलक उल्लेख एहि आधारपर उपयोगी अछि। चैनलक निर्माण-तिथि मात्रसँ मैथिली साहित्य वा संगीतक प्रकाशन-इतिहास तय नहि होइत—ई कृतिक एक महत्त्वपूर्ण पद्धतिगत संकेत अछि।

यूट्यूब मैथिलीमे गायनक नूतन अर्थव्यवस्था, कैमरा-सामने प्रदर्शन, लोकगीतक नव प्रस्तुति आ भाषिक बोलीक सहज अभिव्यक्तिक अवसर खोललक। लेखक ठेठ

भाषाक उभरैत प्रयोगपर ध्यान दैत छथि। एहि अवलोकनकेँ साहित्यिक इतिहासमे आगाँ बढ़ेबाक लेल उच्चारण, उपशीर्षक, दर्शक-समुदाय, लिंग-प्रतिनिधित्व, रचनाधिकार आ दृश्य-भाषाक विश्लेषण आवश्यक होयत।

उपलब्ध पुरान सामग्री हटि जाइत अछि, चैनलक नाम बदलि जाइत अछि आ छवि-ध्वनि फेर अपलोड भऽ सकैत अछि। तँ कालक्रम परखबाक निकष एतहु बहुस्तरीय हेबाक चाही। लेखकक खोजसँ इतिहासक प्रारम्भिक नक्सा भेटैत अछि, अन्तिम निर्णायक रजिस्टर नहि।

मैथिली विकिपीडिया : सामुदायिक श्रमक इतिहास

मैथिली विकिपीडियाक आरम्भिक प्रयाससँ २०१४क स्वीकृति धरि लेखक अनेक व्यक्तिक भूमिकाक चर्चा करैत छथि। गजेन्द्र ठाकुर, उमेश मण्डल, राजेश रंजन, बिप्लब आनन्द तथा अन्य योगदानकर्ताक उल्लेखसँ ई प्रक्रिया एक व्यक्तिक काज नहि, अनुरोध, अनुवाद, सम्पादन, तकनीकी संवाद आ सामुदायिक सहभागिताक संयुक्त परिणामक रूपमे उभरैत अछि।

एहि इतिहासमे श्रेय-विवादक समाधान ‘के सभसँ पहिने कहलक’ मात्रसँ नहि सम्भव। प्रस्ताव राखब, आवश्यक सामग्री तैयार करब, परीक्षणकालक गतिविधि, स्वीकृतिकेँ सम्भव बनबैत संवाद, आरम्भिक प्रशासकीय जिम्मेवारी आ निरन्तर लेखन—सभ अलग प्रकारक योगदान थिक। लेखक कतिपय स्तर चिन्हैत छथि; मुदा इतिहासक निष्पक्ष विवेचन एहि सभकेँ बराबरर अवधारणात्मक स्पष्टतासँ क्रमित करबाक अपेक्षा करैत अछि।

विकिपीडिया-सन्दर्भ एहि पोथीक एक गम्भीर सैद्धान्तिक सम्भावना खोलैत अछि : भाषा कोनो एक संस्थाक उपलब्धि मात्र नहि, सार्वजनिक ज्ञाननिर्माणक सामूहिक अभ्यास अछि। डिजिटल स्वयंसेवा आ औपचारिक संस्थागत परियोजनाक बीच अन्तर परखबाक लेखकक आग्रह सेहो उल्लेखनीय अछि। तथापि पारिश्रमिकक उपस्थिति वा

अनुपस्थिति अपनहि आप काजक गुण वा इतिहासक प्रामाणिकता तय नहि करैत अछि।

परिशिष्टक अभिलेखीय अर्थ : स्वागतसन्देशसँ सांस्कृतिक स्मृति

अन्तिम भागमे विदेहक प्रारम्भिक प्रकाशनपर प्राप्त शुभकामना, प्रतिक्रिया आ समकालीन उल्लेखसभ संकलित अछि। एहन सामग्रीकेँ महज प्रशंसापत्र कहि खारिज नहि कएल जा सकैत अछि। एहि सन्देशसभसँ समयविशेषमे मैथिली ई-पत्रिकाक प्रति अपेक्षा, नूतन माध्यमक उत्साह, भाषाप्रेम आ पाठक-लेखकक सम्बन्धक बोध भेटैत अछि।

मुदा स्वागतसन्देश आलोचनात्मक प्रमाणक एक विशिष्ट जाति थिक। ओकरा सँ समकालीन स्वीकृति वा धारणा बुझल जा सकैत अछि; कृतिक सभ उपलब्धिक स्वतन्त्र पुष्टि नहि होइत। ककरो समर्पित साधनाक प्रशंसा स्वतः ‘पहिल’ हेबाक निर्णायक ऐतिहासिक साक्ष्य नहि थिक। पोथीक परिशिष्टकेँ एहि सीमाबोधक संग पढ़ला पर ओकर वास्तविक दस्तावेजी उपयोग अधिक स्पष्ट होइत अछि।

कथन-शैली : प्रथम पुरुष, प्रतिवाद आ गद्यक ऊर्जस्विता

एहि पुस्तकक भाषा शोधसंवाद आ सार्वजनिक बहसक बीच अवस्थित अछि। लेखक अपन ‘हम’केँ लुकबैत नहि छथि; ओ सीधे पाठकसँ गप्प करैत, आपत्ति अनुमानित करैत, शङ्का परखैत आ प्रतिद्वन्द्वी दावाक प्रत्युत्तर दैत छथि। एहि गद्यसँ पुस्तकमे घटनाक ऊर्जा आ लेखकक खोजक श्रम उपस्थित होइत अछि। ई अकादमिक निष्प्राणतासँ भिन्न जीवन्त रूप अछि।

एहि शैलीक साहित्यिक शक्ति ओकर संवादशीलता, कथात्मक मोड़ आ वैचारिक तत्परतामे अछि। आरम्भिक वेबसाइटक खोज एक प्रकारक अन्वेषण-कथा बनि जाइत अछि। नाम, तिथि, विरोधी वक्तव्य आ अभिलेखीय चिन्ह क्रमशः प्रस्तुत होइत अछि; पाठक इतिहासक निर्णायक क्षणमे सहभागी बनैत छथि। कृतिक गद्यक एहि नाटकीयताकेँ साहित्यिक मूल्य मानबाक चाही।

तथापि शोधपरक अनुशासन लेल अनुमान, संस्मरण, व्याख्या आ प्रमाणित तथ्यक भाषा भिन्न-भिन्न होयबाक चाही। जतय आलोचना व्यक्तिगत कटाक्षमे बदलैत अछि, ओतए तथ्यक शक्ति दबि सकैत अछि। एहि पोथीक भावी संशोधित रूपमे तीव्र प्रश्नक धार सुरक्षित राखि कऽ व्यक्तिकेन्द्रित निर्णयकेँ न्यून केनाइ ओकर विश्वसनीयता बढ़ाओत।

साहित्येतिहासक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य : मुद्रित पत्रकारितासँ डिजिटल पत्रिका मैथिली पत्रकारिताक पूर्ववर्ती धारा साहित्यिक पत्र-पत्रिका, सम्पादकीय आन्दोलन, सामाजिक चेतना आ सार्वजनिक भाषिक आग्रहसँ बनल अछि। चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क पत्रकारिता-इतिहासक उल्लेख लेखक स्वयं करैत छथि; विदेहक उपलब्ध पोथी-सूचीमे डॉ. योगानन्द झाक ‘मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष’ सेहो सूचीबद्ध अछि। एहि ऐतिहासिक परम्परामे ‘मैथिल हित साधन’ आ ‘मिथिला मिहिर’ सन पुरान पत्रिकाक नाम महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सन्दर्भक रूपमे उपस्थित अछि।

मुद्रित पत्रकारितामे प्रकाशनक समय अपेक्षाकृत स्थिर अंकक द्वारा चिन्हल जाइत अछि; डिजिटल माध्यममे सामग्री संशोधित, हटाओल, स्थानान्तरित आ पुनःप्रकाशित भऽ सकैत अछि। मुद्रित पत्रिकामे सम्पादकक अधिकार केंद्रीकृत होइत अछि; जालवृत्त आ सामाजिक सञ्जाल लेखककेँ प्रत्यक्ष पाठकसँ जोड़ैत अछि। पुरान पत्रिकाक अभिलेख कागजक संरक्षणपर निर्भर छल; डिजिटल अभिलेखक रक्षा सर्वर, कोड, संकेतबन्ध, स्वामित्व आ नियमित स्थानान्तरणपर निर्भर अछि।

एहि तुलना सँ स्पष्ट होइत अछि जे आधुनिक पत्रकारिताक इतिहास लिखबाक पद्धति बदलि गेल अछि। मुदा डिजिटल माध्यमक आगमनसँ पुरान सम्पादनशास्त्र अप्रासङ्गिक नहि भऽ जाइत अछि। तथ्य-जाँच, भाषा-सम्पादन, विविध विचारक स्थान, संस्थागत उत्तरदायित्व आ पाठकीय विश्वास आजुओ मूल पत्रकारितागत मूल्य अछि। पोथी पुरान आ नव दुनू परम्पराक मिलन-स्थलपर ठाढ़ अछि।

मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास आ डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्र

डिजिटल मैथिलीक एक विशेषता ई अछि जे प्रतिष्ठित प्रकाशन-संस्था, नगरे-केंद्रित सम्पादन आ पुरस्कार-आधारित मान्यतासँ बाहर सेहो रचनाकार अपन लेखन पाठक धरि पहुँचा सकैत छथि। ‘विदेह’ आ आन जालवृत्तसभक विस्तार एहि सम्भावनाक ऐतिहासिक उदाहरण बनैत अछि। परम्परागत साहित्येतिहासमे अपेक्षाकृत उपेक्षित लेखक, लोकस्वर, लघुविधा आ प्रयोगशील साहित्यकें डिजिटल स्थान नव दृश्यता दैत अछि।

एहि सन्दर्भमे ‘समानान्तर’ शब्दक अर्थ केवल स्थापित संस्था-विरोध नहि, इतिहासक सामग्रीक आधार बढ़ेनाइ थिक। जँ नव स्रोत पुरान निष्कर्ष संशोधित करैत अछि तँ ओकर मूल्य ऐतिहासिक। मुदा मात्र मुख्यधाराक विपरीत दावा करब सेहो अपने-आप प्रमाण नहि। समानान्तर इतिहासक विश्वसनीयता ओतहि बढ़ैत अछि जतए ओ अपन प्रिय मंच, लेखक आ समूहक आलोचनात्मक परीक्षण सेहो कऽ सकैत अछि।

विदेहक शोध-सूचीमे उपलब्ध पूर्वप्रकाशित प्रौद्योगिकीविषयक आलेख, २०१७क प्रारम्भिक जाल-इतिहासविषयक विवाद, २०१९ आ २०२१क लेख, तथा २०२३क पुस्तक-समीक्षा ई देखबैत अछि जे विषयक अध्ययन एक लगातार विकसित होइत विमर्श थिक। अतः एक कृतिकेँ अन्तिम इतिहास मानबाक अपेक्षा एकर माध्यमे व्यवस्थित स्रोत-परम्परा बनबैत आगाँ बढ़ब अधिक उपयुक्त अछि।

पोथीक प्रमुख उपलब्धि

एहि कृतिक पहिल उपलब्धि अछि—एक उपेक्षित ऐतिहासिक विषयक स्वतंत्र रूपमे सूत्रीकरण। दोसर उपलब्धि—आरम्भिक मंचसभक नाम, तिथि, भूमिका आ उपलब्ध प्रमाणक व्यापक संकलन। तेसर उपलब्धि—साहित्यिक आ समाचारप्रधान माध्यमकेँ एक साझा डिजिटल सार्वजनिकता भीतर देखब। चारिम उपलब्धि—मिथिलाक्षर, युनिकोड आ भाषिक पहुँचक प्रश्नकेँ पत्रकारिताक इतिहाससँ जोड़ब। पाँचम उपलब्धि

—स्त्री, दलित, प्रवासी आ नव पीढ़ीक सहभागिताकेँ भाषिक इतिहासक विषय बनायब।

एकर अतिरिक्त लेखकक प्रश्नोन्मुख स्वभाव विशेष उल्लेखनीय अछि। स्थापित दावाकेँ केवल प्रतिष्ठाक आधारपर स्वीकार नहि करबाक आग्रह अनुसन्धानक लेल आवश्यक अछि। कतेको ठाम पुस्तक निर्णायक उत्तर देबाक अपेक्षा नव प्रश्न जन्मबैत अछि; विद्वत्ताक दृष्टिसँ ई स्वयं एक महत्त्वपूर्ण योगदान थिक।

सीमासभ आ संशोधनक सम्भावना

कृतिक पहिल सीमा ‘पहिल’ सम्बन्धी अनेक दावाक वर्गीकरणक अपर्याप्त स्पष्टता अछि। दोसर, सूचनाक प्रचुरताक बाबजूद उपयोगकर्ता-वर्ग, पाठकीय प्रभाव, सम्पादकीय नीति आ साहित्यिक गुणवत्ताक सुसङ्गत तुलनात्मक मापदण्ड कम विकसित अछि। तेसर, अनेक जालस्थलक चर्चा वर्तमान उपलब्धतापर आधारित अछि; अनुपलब्ध अभिलेखक कारणेँ मौनकेँ अनुपस्थितिक प्रमाण नहि मानल जा सकैत।

चारिम सीमा लेखकक स्वतन्त्र साक्षी आ सहभागी हेबाक सम्मिश्र स्थिति अछि। पाँचम, विभिन्न समयमे जोड़ल सामग्रीक कारणेँ अतीतकाल, तत्कालीन वर्तमान आ संशोधित वर्तमानक भाषिक मिश्रण भेल अछि। इतिहासक प्रत्येक दावाकेँ ओकर सूचना-संग्रहक कालखण्डक संग स्थिर करब शोधक विश्वसनीयता बढ़ाओत। छठम, प्रौद्योगिकी सम्बन्धी शब्दसभमे कखनो माध्यम, प्लेटफॉर्म, फॉन्ट, संकेतबन्ध आ अनुप्रयोगक स्तर एक-दोसरासँ मिलि जाइत अछि।

एहि आलोचनासभक उद्देश्य कृतिक श्रमकेँ कम करब नहि; ओकर उपयोगिताकेँ अधिक दीर्घजीवी बनायब अछि। तिथि, स्रोतक स्वरूप, मूल दावाक प्रमाण, विपरीत दावाक आधार आ निष्कर्षक विश्वास-स्तर स्पष्ट कएल गेलासँ ई पोथी विषयगत अध्ययनक स्थायी आधारग्रन्थ बनबाक क्षमता रखैत अछि।

निष्कर्ष : सङ्ग्रहसँ इतिहास, इतिहाससँ आलोचना

‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’ आधुनिक मैथिली गद्यक एक उल्लेखनीय अभिलेखमुखी कृति अछि। एकर केन्द्रमे केवल पत्रकारिताक विस्तार नहि, भाषाक नव सार्वजनिक जीवनक जन्मक कथा अछि। ‘भालसरिक गाछ’ आ आरम्भिक जालवृत्तसँ विदेहक पाक्षिक ई-पत्रिका धरि, मिथिलाक्षरक सङ्गणकीय प्रयोगसँ विकिपीडियाक सामुदायिक ज्ञाननिर्माण धरि, लोकगीतक डिजिटल स्वरूपसँ सामाजिक माध्यमक प्रतिरोधी स्वर धरि—लेखक एक विस्तृत सांस्कृतिक गतिशीलता दर्ज करैत छथि।

एहि कृतिक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सन्देश ई अछि जे इतिहास उपलब्ध साक्ष्यकेँ क्रम देबाक कला मात्र नहि, श्रेय, उपस्थिति, मौन, स्मृति आ विवादक न्यायपूर्ण परीक्षण सेहो थिक। पुस्तक जे ‘पहिलपन’क प्रश्न उठबैत अछि, ओ प्रश्न एकर अपन पद्धतिक लेल सेहो लागू होइत अछि। ठीक एहिठाम कृतिक आलोचनात्मक सम्भावना सर्वाधिक समृद्ध अछि। लेखकक तर्कशील आवेग आ दस्तावेज-सङ्ग्रहक परिश्रम ओकरा विशिष्ट बनबैत अछि; अधिक स्पष्ट साक्ष्य-श्रेणी, तुलनात्मक निकष आ संवादशील भाषा ओकरा आर प्रामाणिक बना सकैत अछि।

आखिरमे ई पोथी एक समाप्त कथा नहि, मैथिली डिजिटल इतिहासक आरम्भिक आधार-रचना मानल जाएबाक योग्य अछि। भविष्यक अनुसन्धान जखन रचना-सामग्री, सम्पादकीय इतिहास, तकनीकी अभिलेख, जनपहुँच आ साहित्यिक प्रभावकेँ एक संग परखत, तखन एहि कृतिक वास्तविक ऐतिहासिक योगदान आरो स्पष्ट होयत।

पाठाधार आ उद्धरणक मर्यादा

प्रस्तुत अनुशीलनमे मूल कृतिक उपलब्ध पाठक घटनाक्रम, शीर्षक, नाम आ विषयगत विवरणकेँ आधार बनाएल गेल अछि। जिनका कथनक अक्षरशः रूप निर्विवाद रूपसँ स्थापित नहि भऽ सकल, हुनका नामपर शब्दशः कथन प्रस्तुत करबाक स्थानपर आशयक आलोचनात्मक विवेचन कएल गेल अछि। पुस्तकक आत्मवर्णन, स्वयं घोषित प्राथमिकता आ अन्य मंचक विरुद्ध प्रस्तुत दावाकेँ लेखकक इतिहास-दृष्टिक अङ्ग

मानल गेल अछि; स्वतंत्र रूपसँ अन्तिम सिद्ध तथ्य नहि। एहि सीमाबोधसँ कृतिक वास्तविक उपलब्धि आ ओकर आलोचनाक क्षेत्र दूनू सुरक्षित रहैत अछि।

सन्दर्भसूची

नीचाँ उद्धृत बाह्य सामग्री मात्र विदेहक पत्रिका, शोध-सूची आ पोथी-संग्रहसँ चयनित अछि। उपलब्ध सूचीमे उल्लिखित कृतिक नामकें स्वतंत्र पाठालोचनाक विकल्प नहि मानल गेल अछि।

- आशीष अनचिन्हार। मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास। मूल समीक्ष्य कृति; विदेहक पोथी-सूचीमे उपलब्ध। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। ‘कतेक रास बात’ इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि। विदेह, अङ्क २३०, १५ जुलाई २०१७। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। ‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’। विदेह, अङ्क २७२, १५ अप्रैल २०१९। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। ‘मैथिलीमे इंटरनेट’। विदेह, अङ्क ३०५, १ सितम्बर २०२०। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। ‘सोशल मीडिया आ मैथिली’। विदेह, अङ्क ३०२, १५ जुलाई २०२०। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। ‘यूट्यूब आ मैथिली’। विदेह, अङ्क ३०३, १ अगस्त २०२०। विदेह स्रोत
- आशीष अनचिन्हार। ‘मैथिली वेब-पत्रकारिताक इतिहास’। विदेह, अङ्क ३१३, १ जनवरी २०२१। विदेह स्रोत
- उमेश मण्डल। ‘मैथिलीमे ई-पत्रकारिता’। विदेह, अङ्क ३१३, १ जनवरी २०२१। विदेह स्रोत

• गजेन्द्र ठाकुर। ‘भाषा आ प्रौद्योगिकी : अन्तर्जालपर मैथिली लेखन आ ई-प्रकाशन’।

विदेह, अङ्क ३४, १५ मई २००९। विदेह स्रोत

• गजेन्द्र ठाकुर। ‘भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक)’। विदेह, अङ्क ३१३, १ जनवरी २०२१। विदेह स्रोत

• गजेन्द्र ठाकुर। ‘मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली’। विदेह, अङ्क ३५१, १ अगस्त २०२२। विदेह स्रोत

• प्रणव झा। ‘पुस्तक समीक्षा : मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (लेखक : आशीष अनचिन्हार)’। विदेह, अङ्क ३८४, १५ दिसम्बर २०२३। विदेह स्रोत

• डॉ. योगानन्द झा। मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष। विदेह पोथी-संग्रहक सूचीमे उपलब्ध कृति। विदेह स्रोत

• विदेह। शोध-सूची : मैथिली साहित्य, आलोचना, भाषा-प्रौद्योगिकी आ पत्रकारिताक अभिलेख। विदेह स्रोत

• विदेह। पोथी-संग्रह : साहित्य, इतिहास, लिपि आ पत्रकारितासँ सम्बन्धित उपलब्ध कृतिक अनुक्रम। विदेह स्रोत

विषय-अनुक्रमणिका

प्रमुख सम्बद्ध समीक्षा क्रमाङ्क

अनचिन्हार आखर • ७, ८, ९, १०, ११, १२, पत्रिका • १, २, ४, ५, ६, ११, १४

१३

अनुवाद • १, ४, ५, ६, १०, १३, १४

प्रमाण • ३, ४, ६, ११, १२, १३, १४

अभिलेख • १, ४, ५, ९, ११, १२, १४

प्रीति कारण सेतु बान्हल • ५, ६

अरविन्द ठाकुर • २, ५, १२

प्रीति ठाकुर • ५, ६

अस्मिता • ३, ११, १३

बहर • ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३

आन्दोलन . १, २, ७, ८, ११, १४	बालसाहित्य . ५, ६, १४
आलोचना . २, ४, ५, १०, ११, १२, १३	भाषा . १, ४, ५, ६, ११, १३, १४
उच्चारण . ४, ७, ९, १०, ११, १२, १३	भाषिक अधिकार . १, २
कथा . १, २, ३, ४, ५, ६, १४	मतला . ७, ८, ९, १०, ११, १२
कथा-त्रिधारा . ३, ४	मिथिला . १, २, ३, ४, ५, ६, १४
कथा-शतत्रयी . ३, ४	मिथिलाक्षर . १४
काफिया . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३	मीडिया . ६, ८, १४
कुमारि इच्छा . ७, ८, ९, ११	युनिकोड . ६, १४
कृपानन्द ठाकुर . ५	रङ्गमञ्च . १
कृषक . २	रदीफ . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३
कोलकाता . १	रुक्म . ९, १०, ११
गजल . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३	रुबाइ . ७, ८, ९, ११, १२
गजेन्द्र ठाकुर . २, ३, ४, ५, ६, ७, १४	लिपि . ३, ५, ६, १०, ११, १२, १४
चित्रकथा . ५, ६	लोकगीत . ३, ४, ५, ६, ८, ९, १४
छन्द . ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३	लोकभाषा . २, ३, ४, ६, ८, ९, १३
जंघाजोड़ी . ७, ८, ९, ११	लोकस्मृति . १, ४
जनपक्षधरता . ६, १३	विदेह . २, ४, ७, ९, १२, १३, १४
जाति . २, ३, ४, ५, ६, ७, १४	विभक्ति . ७, १०, ११, १३, १४
जालस्थल . १४	वेब पत्रकारिता . ५, ६, १४
डिजिटल . ४, ५, ६, ११, १२, १३, १४	शब्द-अर्थ-शक्ति . ८, ९, १०, ११, १२, १३
तखल्लुस . २, ७, ९, १०, ११, १२	सन्दर्भ सहित . ७, १०, १२, १३
दलित . १, ४, ६, १४	सम्पादन . १, २, ५, ६, १२, १३, १४

दस्तावेज . १, २, ४, ५, ६, १३, १४

दहेज . १

नबोनारायण मिश्र . १

नाटक . १, ३, ४, ५, ६, ८, १४

नारी . २, ४

न्याय . १, २, ३, ४, ६, ९, १२

पञ्जी . ३, ४, ५, ६

पत्रकारिता . १, ५, ६, १४

विदेह • मैथिली साहित्य

सांस्कृतिक संस्था . १

साक्षात्कार . १, २, ५

सामाजिक न्याय . ३, ५, ६, ९

साहित्येतिहास . १, ४, ५, ६, १०, ११, १३

सेतुषाम . ६

स्मृति . १, २, ३, ४, ५, ७, १४

स्वतंत्रचेता . २

१.२२. नित नवल बेचन ठाकुर — नवघर

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

लोकसमाज, सुधार आ रंगमंचीय प्रतिरोध

नाटक-संग्रहक स्वरूप

‘नवघर’ बेचन ठाकुरक चारि एकांकीक संग्रह अछि। पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल) सँ प्रकाशित एहि पुस्तकमे ‘नीशा मुक्ति’, ‘बरहम बाबा’, ‘घोघवाली कनियाँ’ आ ‘रसुन पियोज’ संकलित अछि। उपलब्ध संस्करणमे २०१८ आ २०१७ क परस्पर भिन्न उल्लेख भेटैत अछि; तँ संस्करण-क्रम सावधानीक विषय अछि।

संग्रहक चारू एकांकी अपन-अपन सामाजिक प्रसङ्ग रचैत अछि। ‘नीशा मुक्ति’ आ ‘घोघवाली कनियाँ’ पाँच-पाँच दृश्यमे फैलल अछि; ‘बरहम बाबा’ आ ‘रसुन पियोज’ अपेक्षाकृत एकल विस्तृत दृश्यपर आधारित अछि। ई अन्तर कथावस्तु, चरित्र-विकास, संघर्षक केन्द्र आ नाटकीय परिणतिपर प्रभाव छोड़ैत अछि।

नामक रूप सेहो उल्लेखनीय अछि। मूल मुद्रणमे ‘नीशा’, ‘बरहम’, ‘घोघवाली’ आ ‘रसुन पियोज’ रूप अछि। ई लोकभाषिक चयन रचनाक ध्वनि, पात्रक सामाजिक स्थिति आ हँसी-विनोदसँ जुड़ल अछि। आलोचनाक अपन भाषामे आवश्यकताअनुसार ‘नशामुक्ति’, ‘घूँघट’ आ ‘लहसुन-प्याज’ जेहन अर्थसूचक शब्द आबि सकैत अछि; मुदा मूल शीर्षकक स्थान ओहि पर्यायसँ लेनाइ पाठशुद्धिक विरुद्ध होयत।

अध्ययनक वैचारिक आधार: पाठ, रंगमंच आ समाज

मैथिली रंगमंचकेँ केवल लिखित संवादक साहित्य मानलापर बेचन ठाकुरक नाटकीय प्रयत्नक विशेषता ओझराइत अछि। हुनकर पाठक भीतर मंचक व्यवहार देखाइत अछि — प्रवेश-निर्गमन, एकसुरमे नाराबाजी, गीत, पात्रक देहगत क्रिया, जनसभाक तैयारी आ दर्शककेँ प्रत्यक्ष सम्बोधित करबाक भङ्गिमा। ताहि लेल एतऽ नाटकक दू स्तर परखल गेल अछि: लिखित दृश्य जे पाठक पढ़ैत छथि, आ सम्भावित प्रस्तुति जाहिमे कलाकारक समय, विराम, मंच-सज्जा आ दर्शकक प्रतिक्रिया अर्थ बदलि सकैत अछि।

विदेहक 'A Complete Critical Appreciation of Bechan Thakur' मे समानान्तर रंगमंच, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ बेचन ठाकुरक नाट्यकर्मक प्रश्न उठाओल गेल अछि। ओहि आलोचनाक पृष्ठभूमि एतऽ उपयोगी अछि, मुदा 'नवघर'क सभ प्रसंग पर पहिनेसँ तैआर आन्दोलनवादी निष्कर्ष थोपब उचित नहि। नाटक स्वयं जतय परिवर्तनक ठोस उपाय प्रस्तुत करैत अछि, ओतऽ ओकर उपलब्धि मापल जाए; जतय व्यक्ति जटिलता खोइ कऽ घोषणाक माध्यम बनि जाइत अछि, ओतऽ ओकर सीमासँ सेहो मुँह नहि मोड़ल जाए। विदेहक नाट्य-समीक्षात्मक लेखसमूहक रस, संवाद, लोकधर्मिता आ सामाजिक प्रतिनिधित्व सम्बन्धी प्रश्न एहि विवेचनक तुलनात्मक उपकरण छथि।

ई अध्ययन कोनो ऐतिहासिक घटना, सरकारी घोषणाक सफलताक प्रतिशत वा मंचनक वास्तविक दर्शक-संख्या विषयमे नाटकक संवादकेँ स्वतः तथ्य नहि मानैत अछि। पात्र जे कहैत अछि, से पहिने नाट्यलोकक कथन अछि; तकर बाहरी ऐतिहासिक सत्यापन अलग विषय थिक। एहने अन्तर पाठालोचनाक बुनियादी सावधानी अछि।

'नीशा मुक्ति': नशा, हिंसा, लोकशिक्षा आ सामूहिक संकल्प

पहिल दृश्य: परिवारक स्नेहसँ असुरक्षा धरि

पहिल दृश्य शंकरक घरसँ आरम्भ होइत अछि। सुनेना, शान्ति, चानी, सुगर आ खरबनक उपस्थिति, घरेलू बातचीत आ बच्चाक खेलक माध्यमसँ कथा पहिने एकटा साधारण पारिवारिक स्थिति बनबैत अछि। एहि शान्त सतहक भीतर वस्तुगत संकट धीरे-धीरे प्रवेश करैत अछि। बच्चाक खेलब, भोजनक जुगाड़, परिचित घरक निकटता आ नशाक प्रभाव एकसाथ रखल गेल अछि। किछु पात्रक बोलचालमे हिंसक आदत सामान्यीकृत भऽ जाइत अछि; ई नाटकीय विरोध आगाँ संकटकेँ अधिक तीव्र बनबैत अछि।

दोसर दृश्य: मार्ग, रेल-यात्रा आ दुष्परिणामक सार्वजनिकता

दू दृश्यक बीच घरसँ सार्वजनिक क्षेत्रमे गति होइत अछि। शंकर आ खरबनक बाह्य यात्रा, मीनाक संग छात्र-पात्र राजीव आ रौशनक प्रवेश, पुलिसक उपस्थिति आ हादसाक समाचारक माध्यमसँ नाटक सूचित करैत अछि जे व्यक्तिगत दुर्व्यसनक

सामाजिक लागत परिवारक चौखटिमे सीमित नहि। घटना अपने मंचपर पूर्ण दृश्यात्मक रूपेँ विकसित होइत नहि दिखैत; बहुत किछु पात्रक कथनसँ सामने अबैत अछि। तकर परिणाम ई जे विषयक विस्तार तीव्र होइत अछि, मुदा अनुभूतिक नाटकीय अन्तरंगता कखनो-कखनो सूचनात्मक संवादमे परिवर्तित होइत अछि।

तेसर दृश्य: नशाबन्दीक राजनीतिक भाषा आ नैतिक तर्क

तेसर दृश्य सार्वजनिक बहसक मुख्य केन्द्र अछि। पुलिस-पात्र कैदार सिंह आ बदरी सिंह, शंकर आ खरबनक संवादमे सरकारी नीति, व्यक्तिगत हानि, अपराध आ सामाजिक आचरण परस्पर जुड़ैत छथि। नाटकक एकटा महत्त्वपूर्ण मोड़ ओतऽ अछि जतऽ केवल दण्डक बात नहि, मनुष्यक अपन संयमक प्रश्न उठैत अछि। बदरी सिंहक कथन आत्मनियन्त्रणकें मानवताक कसौटी बनबैत अछि।

“मन जेते काबूमे रहत, ओते मानवतामे धनिक रहब।” (बदरी सिंह)

एहि वाक्यक अर्थ केवल व्यसन-निषेध नहि, आत्मनिर्णयक नैतिक महत्त्व सेहो अछि। तथापि आदर्शवादी कथन शोषण, रोजगारीक अभाव आ चिकित्सकीय सहायताक संरचनात्मक प्रश्नकें समुचित विस्तार नहि दैत। पुलिसक सुसंगत सामाजिक उपदेश कथानकक भीतर प्रभावकारी मंचीय भाषण बनि सकैत अछि, मुदा नाटक ओकर प्रतिवादसँ सीमिते भिड़ैत अछि।

चारिम दृश्य: घरक सङ्कटमे बालकक दखल

चारिम दृश्य फेर शंकरक घर लौटैत अछि। बालक-पात्र, घरेलू तनाव आ दारू छोड़बाक भावनात्मक आग्रह एक नजदीकी नाट्य-समस्या बनबैत छथि। एतऽ बच्चा केवल निरीह पीड़ित नहि, कतेको स्थानपर प्रश्न पुछनिहार आ निर्णयकें प्रभावित करबाक स्रोत बनैत अछि। एहि दृष्टिसँ ई अंश बाल-दर्शकक लेल खास प्रभावकारी भऽ सकैत अछि। तथापि बाल-सम्बोधनमे डर, चोट आ पारिवारिक त्रासक स्तरक संवेदनशील मंचन अनिवार्य होयत।

पाँचम दृश्य: विद्यालय, गीत आ सामूहिक अनुशासन

अन्तिम दृश्य शिक्षण-संस्था आ जनजागरणक आयोजनक ओर मुड़ैत अछि। शिक्षक, विद्यार्थी, गीत, नारा, सामूहिक पाठ आ सार्वजनिक प्रशंसाक सङ्ग नाटक सामाजिक संदेशकें प्रत्यक्ष रूप दैत अछि। जे संकट पहिने घरक भीतर चुपचाप पसरल छल, से आब मंचपर सामूहिक कार्यक्रम बनि गेल अछि। एहि क्रममे गीत दर्शकक स्मृतिमे संदेश टिकेबाक लोकशिक्षात्मक माध्यम थिक; मुदा भरल पात्र-संख्या आ नाराक आवृत्ति वास्तविक मंचनमे समय-नियोजन माँगैत अछि।

‘नीशा मुक्ति’क विशेषता—घरेलू नाटकसँ सार्वजनिक रंगमंच धरि संक्रमण। ओकर सीमा—अन्तिम दृश्य शिक्षा-अभियानक प्रचार-भाषासँ एतेक प्रभावित अछि जे सामाजिक यथार्थक विरोधाभास सभ पूर्ण रूपेँ नाटकीय संघर्ष नहि बनि पबैत अछि। बच्चाक सहभागी स्थान ओकर बाल-नाट्य सम्भावना बढ़बैत अछि; एकरा विशुद्ध बालनाटक कहलासँ बेसी उचित ‘बाल आ प्रौढ़ दर्शक दुनू लेल उपयुक्त सामाजिक जागरण-एकांकी’ कहब होयत।

‘बरहम बाबा’: श्रद्धा, परम्परा आ प्रश्न करबाक अधिकार

स्थल आ स्थितिक स्थापना

‘बरहम बाबा’ आकारमे लघु अछि, मुदा अपन विचार-बिन्दुमे तीक्ष्ण। बरहम बाबाक गहबर, पूजा-सामग्री, स्त्री-पुरुषक धार्मिक जमावड़ा आ बौकुक श्रद्धा आरम्भमे दृश्यकें परिचित ग्राम-धार्मिक परिवेश दैत अछि। बुधनक आगमन पुरान विश्वासक समर्थन करैत अछि; फूलो धीरे-धीरे एहि समर्थनक शर्त पुछैत अछि। ताहिसँ धर्मक अस्तित्वपर कोनो सामान्य निषेध नहि, बल्कि विशेष सामाजिक व्यवहारक नैतिक परिणाम प्रश्नमे आबैत अछि।

श्रद्धाक भीतर वर्ग आ जातिक सत्ता

बौकु आ फूलोक विवाद के पूजा करए, के करा सकए, ककरा नामपर बहिष्कार होअए आ सामाजिक अपमानकें देवताक आदेशक रूपमे कोना प्रस्तुत कएल जाए—एहि

प्रश्नसभक ओर जाइत अछि। ‘जय गंगा’क आवृत्ति आ फूलोक प्रतिप्रश्न एक नाटकीय द्विस्वर रचैत अछि: एक दिस विश्वासक स्वाभाविक भक्तिभाव, दोसर दिस प्रश्नक द्वारा ओकरा न्याय-संगत बनएबाक आग्रह। फूलोक विवेककें केवल नास्तिकता कहब त्रुटिपूर्ण होयत; ओकर प्रतिवाद मनुष्यक मान-गरिमाक पक्षमे अछि।

फूलोक प्रतिवाद आ अन्तिम स्वीकृति

फूलो अपन तर्ककें दार्शनिक बहसक अमूर्त भाषा नहि दैत; ओ भोजन, बर्दाश्त, गरिमा, अपन प्रसंग आ मनुष्यता—एहि ठोस अनुभवक भाषा बजैत अछि। ओकर एक वाक्य पूरा रचनाक भावात्मक केन्द्र अछि।

“हम प्रेम-श्रद्धाक भूखल छी।” (फूलो)

एहि पंक्तिमे ‘श्रद्धा’ नष्ट नहि होइत अछि; ओकर विषय पुनः परिभाषित होइत अछि। अन्तमे बौकु दोसर बेर विचार करबाक आश्वासन दैत अछि आ पूजा-व्यवस्था प्रति पुनर्विचारक दिशा बनैत अछि। नाटकक प्रभाव एतऽ नैतिक प्रत्युत्तरसँ बनैत अछि, हिंसक प्रतिशोधसँ नहि। एतबे संग सीमा सेहो साफ अछि: फूलोक प्रतिवादक पाछाँक संस्थागत जातिगत संरचना खोलल जाइत नहि; अन्तिम समाधान पात्रक व्यक्तिगत मनपर बहुत आश्रित अछि।

मंचीय दृष्टिसँ ई एकांकी सीमित पात्र, एक स्थल आ स्पष्ट वैचारिक द्वन्द्वक कारणेँ नुक्कड़, विद्यालयी वरिष्ठ-वर्ग आ लघु रंगदलक लेल अनुकूल भऽ सकैत अछि। बाल-पाठकक लेल एकर प्रश्न-प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा सामाजिक-धार्मिक पदानुक्रमक अर्थ बुझएबामे प्रस्तोताक प्रसंगानुकूल व्याख्या आवश्यक रहत।

‘घोघवाली कनियाँ’: गृहस्थी सँ सामाजिक पुनर्निर्माण धरि

‘नवधर’क सभसँ विस्तृत एकांकी ‘घोघवाली कनियाँ’ अछि। एकरा केवल घूँघटक विरोधक नाटक मानब कृतिक वास्तविक फैलावकें छोट करब होयत। कथा पारिवारिक टूटन, अन्न-पाइक अधिकार, परिजनक जीवन-रक्षा, शिक्षा, ग्रामीण सुधार, स्त्रीक सक्रियता आ पंचायत-स्तरक सामूहिक निर्णय धरि पहुँचैत अछि। शीर्षकक घोघ-प्रतीक

आरम्भमे स्त्रीक निजी जीवनपर समाजक नियन्त्रण बुझबैत अछि; आगाँ समाजक समस्त निर्णय-प्रक्रियामे ओकर प्रवेश एहि प्रतीककें उलटि दैत अछि।

पहिल दृश्य: सन्तान, कनियाँ आ बुढ़ापा

सतन आ हुनक पत्नी ललिताक पारिवारिक स्थिति सँ दृश्य खुलैत अछि। बेटा जीतन आ परदेशी, हुनकर कनियाँ रामदाइ आ रूपवती, समाजक प्रतिष्ठित व्यक्ति रामरूप आ परिवारक अन्य सदस्य सम्पत्तिक बँटवारा, वृद्धजनक सम्मान आ आत्मनिर्भर जीवन पर बहस करैत छथि। देहक वृद्धावस्था आ मनक पुरान संचित अधिकार एक दोसरासँ जुझैत अछि। ई संघर्ष केवल बेटा बनाम बाप नहि, 'घर'क परिभाषा पर विवाद अछि: की घर संगहि रहलाक नाम अछि, की समान सम्मान आ न्यायपूर्ण हिस्सेदारीक?

रूपवतीक प्रवेशक संग स्त्रीक स्वतन्त्र निर्णायक स्वर प्रबल होइत अछि। ओ स्थापित पारिवारिक निर्णय मानि लेबाक बाध्यता अस्वीकार करैत अछि आ प्रश्न पुछैत अछि जे कोन निर्णय किनक हितमे कएल गेल। घरक सभ सदस्यक मान्यता, श्रम आ सेवा कतेक समान अछि—ई प्रश्न प्रथम दृश्यकें एक साधारण गृहकलहसँ सामाजिक नीतिविचारक दिशा दैत अछि। रूपवतीक सक्रियता कथा आगाँ बढ़बाक मुख्य प्रेरक होइत अछि।

दोसर दृश्य: करुणासँ लिखित अनुबन्ध

दोसर दृश्य परिवारक सम्बन्धकें व्यवहारिक नियममे बदलबाक साहस देखबैत अछि। विष्णुदेव, रामप्रसाद, सतन आ परदेशीक उपस्थितिमे परिजन एक विस्तृत प्रस्तावपर विचार करैत छथि। प्रस्तावक कुल बाइस बिन्दु छपल अछि; एहि सूचीमे खेत-पथार, घर, बूढ़-बूढ़ीक भरण-पोषण, परस्पर भेट, पाइक व्यवस्था, व्यक्तिगत सेवा, नियमित देखरेख आ संकटमे सहयोग जेहन विषय सन्निहित छथि। लिखित अनुबन्ध सामाजिक सुधारक ठोस उपकरण बनि उठैत अछि।

“खेत-पथार दुनु भाँइ आधा-आधा लऽ ले।” (समझौताक पहिल बिन्दु)

कथामे एहि सूचीक लाभ ई जे नैतिक अपेक्षा अधिकार आ दायित्वक प्रत्यक्ष भाषा पबैत अछि। मुदा नाटकीय शिल्पमे बाइस बिन्दुक अविराम पाठ एक गम्भीर समस्या सेहो अछि: कथावस्तु रुकि जाइत अछि आ रंगमंच सभाक कार्यवृत्त-जकाँ लागि सकैत अछि। पाठ रूपमे ई दस्तावेजी यथार्थ रचैत अछि; मंचनमे बिन्दुसभकेँ दृश्यात्मक समूह, विचार-विरोध आ प्रतिक्रिया सँ जीवित करबाक जरूरत पड़ैत।

समझौताक बाद पात्रक स्वीकार-भाषा एतऽ मुख्य अछि।

“हमरा कोनो दिक्कत नै अछि। हमरा मनोनाय अछि।” (जीतन)

एहि सहमति-पद्धतिमे नाटक विवेकपूर्ण लोकतन्त्रक एक लघु घरेलू रूप कल्पित करैत अछि। तथापि असली जीवनमे भूमि-विभाजन आ वृद्धजनक देखभाल मात्र सहमतिसँ हल नहि होइत; कानून, पंजीकरण, देयताक पालन आ शक्ति-सन्तुलन विषयपर नाटकक चर्चा अति सीमित अछि। एहि सीमाकेँ ओहि पाठक ऐतिहासिक असफलता नहि, ओकर यूटोपियाई सुधार-स्वरूपक विशेषता बुझबाक चाही।

तेसर दृश्य: बालकक कल्पना, पढ़ाई आ खेनेबाक अधिकार

तेसर दृश्यमे जीतन, रामदाइ, सतन, ललिता आ शशिक माध्यमसँ पीढ़ीक सम्बन्ध बदलैत अछि। छोट बालक/बालिकाक खेल, निःशुल्क समय, ज्ञानक पियास, कलात्मक रचना आ स्वतन्त्र अभिव्यक्ति पर विशेष जोर पड़ैत अछि। आँगन, शाला, गप-सप आ पैघ लोकक निर्देश—एहि सभक बीच बालमन अपन जगह खोजैत अछि। ई हिस्सा संग्रहकेँ बाल-साहित्यक प्रश्नसँ सभसँ ठोस रूपेँ जोड़ैत अछि।

सतन बच्चाक खेलब आ पढ़बाक प्रसंगमे जोरजबरदस्तीसँ सावधान करैत अछि। ओ बिनु दमनक ज्ञान-विकासक सम्भावनाक पक्ष लैत अछि। एहि दृश्यसँ ई विचार उभरैत अछि जे बालककेँ केवल भविष्यमे कमाइ कयनिहार प्रौढ़क प्रारूप मानब गलत अछि; ओकर एखनुक उत्सुकता, कल्पनाशीलता आ स्वतन्त्र अनुभव सेहो मूल्यवान अछि।

मुदा नाटकक शिक्षा-सम्बन्धी बात जेना-जेना विस्तार पबैत अछि, संवाद बीच-बीचमे तर्कप्रधान भाषण बनि जाइत अछि। बालक स्वयं जखन प्रश्न पुछैत अछि, दृश्य जीवित

होइत अछि; जखन पैघ पात्र ओकरा बदला निरन्तर सीख दैत अछि, बालकक स्वाधीन नाटकीय स्वर कमजोर पड़ैत अछि। ई अन्तर विद्यालयी मंचनमे विशेष ध्यान देबाक प्रश्न अछि।

चारिम दृश्य: नव स्त्री-स्वर आ घरक अर्थ

चारिम दृश्य परदेशी-रूपवतीक भीतरक संवादसँ आरम्भ होइत अछि। रूपवती नव-समयक जीवनपद्धति, अपन सार्वजनिक परिचय, घरक कामक सम्मान आ घरेलू अन्ध-परम्परापर प्रश्न उठबैत अछि। ओ आपन अस्तित्व एक गोपनीय गृहिणीक रूपमे मात्र सीमित मानए लेल तैयार नहि।

“हम कोनो मामूली जनानी छी।” (रूपवती)

एहि स्वतःमानक स्वरकें केवल अभिमान कहि देब गलत होयत। ई पहिचानक हकक माँग अछि। तथापि आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि जे रूपवतीक आधुनिकता कखनो वस्त्र, रूपसज्जा आ सामाजिक प्रदर्शनक संकेतमे सिमटि रहल अछि कि नहि। नाटकीय प्रतिवादकें ठोस आर्थिक आ राजनीतिक सक्रियतासँ जोड़ल गेल अछि, से एकर सम्भावित कमजोरीकें सँभालैत अछि।

चौथ दृश्य अन्त धरि घरेलू अधिकार, सास-ससुरक दशा, परिवारक सार्वजनिक प्रतिमा आ नारीक कर्तृत्व पर बहस करैत अछि। नाटक एकल परिवार बनाम संयुक्त परिवारक सुविधाजनक नैतिक द्विभाजन नहि करैत; ओ सम्मान, न्याय आ दायित्वक कसौटीपर दुनूक आलोचना सम्भव करैत अछि। यद्यपि किछु संवादमे पात्रक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन बड़ शीघ्र घटित होइत अछि, रूपवतीक असहमतिक ऊर्जा कथाकें सजीव बनओने रहैत अछि।

पाँचम दृश्य: पंचायत, स्त्रीक प्रस्तुति आ सार्वजनिक स्वीकृति

पाँचम दृश्य पंचायत-भवनमे आयोजित सामूहिक बैठक अछि। एतऽ पहिले जे विषय घरक भीतर दबल रहैत छल—परिवारक अनबन, स्त्रीक उपस्थिति, वृद्धजनक देखभाल

—से सार्वजनिक विमर्शक विषय बनैत अछि। सरपंच, रामप्रसाद, विष्णुदेव, रूपवती, परदेशी आ आन पात्रक जमावड़ा नाटकक नैतिक लक्ष्यकेँ समाजक सामने रखैत अछि। एहि रचनाक पूर्ण यात्राकेँ देखी तऽ नाटक निजी पीड़ासँ सार्वजनिक जवाबदेहीक ओर बढ़ैत अछि। मुदा पाँचम दृश्यकेँ पढ़ैत काल नाटकीय संघर्ष बहुत हद धरि निर्णय-सभा आ स्वीकृति-सभामे घुलि जाइत अछि। पात्रक स्वतन्त्र स्वरक स्थानपर कखनो-कखनो परामर्शक क्रम हावी भऽ जाइत अछि। ई सीमा नाटकक सामाजिक प्रतिबद्धता केँ खारिज नहि करैत, केवल ई देखबैत अछि जे सुधरब आ नाटक बनब एक बात नहि। ‘घोघवाली कनियाँ’क मूल महत्त्व ई अछि जे ओ ‘नवघर’क कल्पना प्रस्तुत करैत अछि—एहन घर जतऽ स्त्री, बालक आ वृद्ध व्यक्ति सभकेँ अपन गरिमा सहित अधिकार भेटए। शीर्षकक घोघ घरक भीतरी अन्धकारक प्रतीक अछि; रूपवतीक सक्रियता ओकर प्रतिपाठ। एहि रचनाक नाट्य-सुधार लेल बाइस बिन्दुक अनुबन्ध, लम्बा उपदेश आ अनेक पात्रक उपस्थिति संक्षेपित कऽ परस्पर संघर्षकेँ अधिक देहगत आ क्रियात्मक बनएबाक अवसर अछि।

‘रसुन पियोज’ : महँगाइ, उपहास आ नामकरणक सत्ता

पहिल बहस: बजारक नामसँ मनुष्यमूल्य धरि चौथ एकांकीमे रमण, सुमन, अमन आ पवन ताश खेलैत छथि। दर्शक-पात्र फेकू, कैलू, गन्नू आ चुल्लाइ उपस्थित छथि। एहि आरम्भिक वातावरणक सहज मनोरंजनकेँ फेकू बजारक महँगाइक चर्चा सँ बाधित करैत अछि। रसुन आ पियोजक दाम वृद्धिक उदाहरण आर्थिक यथार्थक सामान्य लोकभाषिक माप अछि।

“रसुन बीस टके किलो छलै, से अस्सी भऽ गेलै” (फेकू)

मुदा जे शब्द पहिने खाद्यवस्तुक दाम छल, सएह धीरे-धीरे फेकूक अपमानजनक पुकार बनि जाइत अछि। एहि संक्रमणमे नाटक उपनाम, वर्गीय तिरस्कार आ समूह-हास्यक हिंसा पर चोट करैत अछि। गपशपक स्थान रंगमंच बनैत अछि—हँसीक सार्वजनिकता एक व्यक्तिक मान-गरिमा छीनि सकैत अछि।

सामूहिक हँसीक संरचना

“रसुन-पियोज”क ध्वन्यात्मक पुनरावृत्ति हास्य-सृष्टि करैत अछि। पात्रसभ नामकें नारा बनबैत छथि; हँसी बढ़ैत अछि आ फेकूक आक्रोशो तीव्र होइत अछि। ई दृश्य हास्यक दूहेरा स्वभावकें सामने अनैत अछि—हँसी मिलनक माध्यम होइत अछि, मुदा अन्यायपूर्ण समूहबद्धताक हथियार सेहो। कथ्यक केन्द्र तथाकथित मजाकक वैधता अछि: कोन हास्य ककरा पीड़ित करैत अछि?

फेकूक आत्मप्रतिष्ठाक दावा नाटकक मर्म अछि।

“हम केकरोसँ कखनो कम छी।” (फेकू)

एहि वाक्यकें जाति वा आर्थिक वर्गक सम्पूर्ण इतिहासक प्रमाण मानब नहि चाही; मुदा अपमानक सामना करैत सामान्य व्यक्ति अपन बराबरी घोषणा करैत अछि, से स्पष्ट अछि। उपहासक विरुद्ध ई वैयक्तिक प्रतिरोध शेष समाजक नैतिक चेतनाक परीक्षण बनैत अछि।

सामाजिक निर्णय आ व्यंग्यक अन्त

पछिला खण्डमे पड़ोसी आ पंचायती पात्रसभक हस्तक्षेप विवादकें निजी तकरारसँ जन-समस्या बनबैत अछि। नाटक उपहासक वैधतापर सामूहिक असहमति उत्पन्न करबाक बदला कतहु उपनामकें जनसामान्यक आदत रूपमे स्वीकार कए लेबाक बाट देखबैत अछि। एहि अन्तमे नैतिक दुविधा अछि: अपमानजनक पुकारकें व्यापक करि देनाइ की अपमान समाप्त करैत अछि, अथवा अपमानक सामाजिक सत्ता कें सामान्य बनबैत अछि?

अन्तिम पृष्ठ पर निर्णयक बाद फेकूक नाम फेर जनसमूहमे बाजल जाइत अछि। एहि दृश्यकें सहज परिहासक मेल-मिलापक सुखान्त रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; मुदा आलोचनात्मक पुनर्पाठमे पीड़ितक सम्मतिक प्रश्न बेसी महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। सामाजिक हँसीकें नैतिक निष्कर्ष मानबाक बदला नाटकक खुले द्वन्द्व रूपमे राखल जाए तँ रचनाक अर्थ अधिक समृद्ध होइत अछि।

‘रसुन पियोज’ अपन न्यूनतम मंच-सज्जा, सहज पात्र-प्रवेश, दैनन्दिन बोलचाल आ प्रत्यावर्ती उपनामक कारणेँ रंगमंचीय दृष्टिसँ असरकारी अछि। किछु दीर्घ भाषण आ एकर बाहरी नैतिक समाधान ओकर व्यंग्यकेँ थोड़े शिथिल करैत अछि। बाल-किशोर दर्शकक लेल ई पाठ भाषाक हिंसा, साथीसँ मजाक करबाक सीमा आ आत्म-सम्मानक प्रश्न पर नाट्य-संवाद खोलि सकैत अछि; मुदा अपमानित पात्रक पक्षमे विवेकपूर्ण चर्चा बिना हँसीक दृश्य उलटा असर सेहो कऽ सकैत अछि।

चारू एकांकीक अन्तर्सम्बन्धित साहित्यिक समीक्षा

घर, समाज आ सार्वजनिक सभाक आवागमन

चारू नाटकक एकटा साझा गति अछि—घटना घर अथवा परिचित संगति सँ उठैत अछि आ अन्तिम अर्थ सार्वजनिक समाजमे तय होइत अछि। ‘नीशा मुक्ति’मे परिवारक व्यसन सामाजिक अभियान बनैत अछि; ‘बरहम बाबा’मे निजी श्रद्धा समाजक न्याय-प्रश्न बनैत अछि; ‘घोघवाली कनियाँ’मे घरेलू समझौता पंचायतमे सार्वजनिक होइत अछि; ‘रसुन पियोज’मे साथी-पड़ोसीक मजाक सभा-दरबारक विवाद बनैत अछि। एतऽ सभा समाधानक संस्थान सेहो अछि आ सम्भावित दबावक स्थल सेहो। लेखकक सामाजिक नाटकक शक्ति एहि मञ्चीकरणमे अछि।

प्रश्न पुछनिहार पात्र बनाम निर्णय सुनाबनिहार पात्र

जतऽ फूलो, रूपवती वा बालक-पात्र प्रश्न पुछैत छथि, ओतऽ संवादक भीतर वास्तविक नाटकीय ऊर्जा अछि। जतऽ पुलिस अधिकारी, सामाजिक प्रतिनिधि अथवा पंचायतक नेतृत्व पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष सुनबैत छथि, ओतऽ नाटकक स्वाभाविक प्रतिपक्ष सिकुड़ि जाइत अछि। लेखकक लिखन-पद्धतिक सभसँ पैघ नाट्य-द्वन्द्व एहि दू प्रवृत्तिक बीच अछि: लोकतान्त्रिक प्रश्नक खुलल प्रक्रिया आ सुधारवादी घोषणाक बन्द परिणाम।

लोकबोली, पुनरुक्ति आ ध्वन्यात्मक लय

बेचन ठाकुरक पात्र अपन लोकसमाजक आडम्बररहित भाषा बजैत छथि। ‘बरहम बाबा’मे श्रद्धात्मक उच्चारण, ‘नीशा मुक्ति’मे जनजागरण-गीत, ‘घोघवाली कनियाँ’मे

पारिवारिक सम्बोधन आ 'रसुन पियोज'मे उपनामक बारम्बार पुनरुक्ति पृथक श्रव्य-पहिचान बनबैत अछि। एहि भाषामे परिनिष्ठित शास्त्रीय एकरूपतासँ बेसी पात्रक अनुभवजन्य स्वर महत्त्वपूर्ण अछि। लोकशब्दकें मानकीकृत रूपमे सुधारि देलापर अनेक प्रसंगक मंचीय लय आ सामाजिक निहितार्थ घटि जाएत।

नारी-पात्रक सक्रियता आ प्रतिनिधित्वक सीमा

फूलो आ रूपवती वैचारिक प्रतिपक्ष रचैत छथि; सुनेना, ललिता आ आन स्त्री-पात्र गृहस्थी, पोषण आ परिवर्तनक प्रक्रियामे संलग्न छथि। ई स्त्रीक उपस्थिति मात्र भावुक पार्श्वचित्र नहि। मुदा स्त्रीक अधिकारक प्रश्नक पर्याप्त गहराइ तखन बनत जखन ई पात्र अपन असहमति, आर्थिक शर्त आ सामाजिक जोखिम स्वयं स्पष्ट करथि। 'घोघवाली कनियाँ'क सुधारवादी सहमति एहि दिशा मे संकेत तँ दैत अछि, मुदा अनेक ठाम पुरुष-समाजक निर्णायक स्वीकृतिक अपेक्षा करैत अछि।

सुधारवादी आशा आ जीवन-जटिलताक अनसुलझल अन्त

संग्रहक सुखान्त सभमे सामाजिक सुधारक प्रति लेखकक निष्ठा भेटैत अछि। तथापि शराबक लत, जातिगत बहिष्कार, वृद्धजनक अधिकार, स्त्रीक स्वातन्त्र्य आ सामाजिक उपहास एहन समस्या अछि जकर समाधान एक गो भाषण, एक लिखित प्रतिज्ञा वा एक पंचायत-निर्णयसँ पूर्ण नहि होइत। नाटकक नैतिक इच्छा आ सामाजिक प्रक्रियाक कठिनता बीच दूरी आलोचनाक मूल कसौटी रहबाक चाही। एहि दूरीकें चिह्नित करब लेखकक उद्देश्यकें कम नहि करैत; उलटा ओकर ऐतिहासिक-रचनात्मक महत्त्वकें यथार्थ आधार दैत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासमे 'नवघर'क स्थान: तुलनात्मक विवेचन

बाल-साहित्यक इतिहास लिखैत समय पहिने शिशु लोक-साहित्य आ लिखित आधुनिक बाल-नाट्यक भेद बुझब जरूरी अछि। विदेहमे फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'क 'मैथिली शिशु लोक साहित्य' (अङ्क ५०, २०१०) लोरी, खेल, लोककण्ठ आ पीढ़ीसँ पीढ़ी पहुँचैत स्मृतिक परम्परा पर प्रकाश दैत अछि। एहि ऐतिहासिक पृष्ठभूमिसँ 'नवघर'क सम्बन्ध

कोनो सीधा स्रोत-अनुकरणक प्रमाण नहि, बल्कि लोकस्वर आ दर्शक-सहभागिताक साझा धरातल अछि। गीत आ समूह-उच्चारण आधुनिक सामाजिक एकांकीमे पुरान मौखिक परम्पराक नाटकीय क्षमता स्मरण करबैत अछि।

योगानन्द झाक 'मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा' (विदेह अङ्क ७६, २०११) आ रमेश रज्जनक 'मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि' शीर्षकसँ चिन्हित लेख (अङ्क १२६, २०१३) विदेहक बाल-साहित्य विमर्शक इतिहासमे बालकथा आ बालनाट्यकें अलग आलोचनात्मक विषय रूपमे सामने अनैत छथि। नाटकक अपेक्षा केवल सीख देनाइ नहि; बालकक प्रश्न, खेल-भाव, स्वनिर्णय आ कल्पनाशील दृष्टिकोणकें मंचपर सार्थक स्थान देनाइ अछि। एही कसौटीपर 'नवघर'क चारू नाटकक मूल्य अलग-अलग निकलैत अछि।

'नीशा मुक्ति'क प्रारम्भिक बाल-पात्र आ अन्तिम विद्यालयी आयोजन युवा-दर्शक लेल उपयोगी अछि, मुदा रेल-हादसा आ व्यसन-सम्बन्धी पीड़ाक भावात्मक तीव्रता आयु-वर्गक अनुसार मंचीय रूपान्तरण माँगैत अछि। 'बरहम बाबा' प्रश्न-कौशल सिखेबाक उपयुक्त पाठ भऽ सकैत अछि, जँ संवादकें सामाजिक सम्मानक धरातलपर प्रस्तुत कएल जाए। 'घोघवाली कनियाँ'क तेसर दृश्यक बालक-केंद्रित शिक्षाविचार बाल-पाठक लेल विशेष मूल्यवान अछि; मुदा शेष दृश्यसभक लम्बा सम्पत्ति-विवाद आ पंचायत-निर्णय छोट बच्चाक सहज अनुभूतिसँ दूर पड़ि सकैत अछि। 'रसुन पियोज'किशोरावस्थाक समूह-हँसी, उपनाम आ अपमानक प्रश्न लेल प्रासंगिक अछि, जँ प्रस्तुति एहन हो जे पीड़ितक पीड़ा ओझराए नहि।

विदेहमे प्रकाशित 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र' (२०२६) बाल-कथाक मूल्याङ्कनमे बालकक सक्रियता, लोक-स्मृति, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ भाषा-संस्कारक महत्त्वक चर्चा करैत अछि। उपन्यास आ नाटकक विधागत भेद स्पष्ट रखितो एहि कसौटीक सहायसँ 'नवघर'कें परखि सकैत छी: पात्रक सक्रियता कतेक? सीख कथाक भीतर सँ उपजैत अछि कि बाहरसँ आरोपित? बालककें निर्णय लेबाक अधिकार

अछि कि ओ केवल पैघ लोकक वचन सुनैत अछि? ई प्रश्न नाटकसभक मूल्याङ्कनमे रचनात्मक परिणाम दैत अछि।

‘नाट्य-नवग्रह’ (विदेह अङ्क ४४७, २०२६) मे बालनाटक आ प्रौढ़ नाटकक भेद, संवादक खेलभाव, प्रत्यक्ष सहभागिता आ विचारोत्तेजक मंच-विधान पर उपयोगी विचार भेटैत अछि। ओहि तुलनामे ‘नवघर’क मूल प्रवृत्ति सामाजिक-समस्या-प्रधान प्रौढ़ एकांकी दिस अछि, मुदा दृश्यविशेषमे बाल-किशोर रंगशिक्षाक योग्य सामग्री प्रचुर अछि। तँ एकर उचित साहित्येतिहासिक परिचय—सामाजिक एकांकीक संग्रह जकर भीतर बाल-नाट्य प्रयोगक सार्थक बीज विद्यमान अछि—एतबे होयत, न कि प्रमाणविहीन रूपमे सम्पूर्ण संग्रहकें शुद्ध बालनाट्यक मूलप्रतिमान घोषित करब।

कालक्रमक प्रश्नमे सेहो संयम आवश्यक अछि। विदेहक उपलब्ध बाल-साहित्य लेख २०१०, २०११ आ २०१३ क विमर्शकें दस्तावेजीकृत करैत छथि, जखन कि ‘नवघर’क उपलब्ध संस्करण-पृष्ठपर २०१७ आ २०१८ दूनू अंकित अछि। एहि आधारपर मैथिली बालनाटकक ‘पहिल’ रचना, पहिल प्रयोग वा निश्चित आरम्भ-बिन्दुक घोषणा नहि कएल जा सकैत। साहित्येतिहासमे विधाक उद्भव आ कोनो संग्रहक प्रकाशित प्रति दुनू अलग प्रमाणक विषय छथि।

रंगमंचीय सम्भावना: प्रस्तुति, दर्शक आ रूपान्तरण

‘नवघर’क रंगरचनामे लोकभाषा मुख्य दृश्य-सम्पत्ति अछि। अल्प साधनबलसँ ‘बरहम बाबा’ आ ‘रसुन पियोज’ मंचित भऽ सकैत अछि: पहिलक लेल एक गहबरक सांकेतिक स्थान आ पूजा-सामग्री, दोसरक लेल ताशक स्थान, प्रवेश-निर्गमन आ हँसीक लय पर्याप्त होयत। एहि दू नाटकमे संवादक लय निखारल जाए तँ विचारक तीखापन बढ़त। ‘नीशा मुक्ति’मे स्थल-परिवर्तन, रेलसँ सम्बद्ध कथा, पुलिसक प्रवेश, विद्यालयी समूह आ गीत-नारा मंचक समय आ संसाधन माँगैत अछि। असल चुनौती घटना दुरन्तक दृशात्मकता आ घोषणामूलक अन्तक सन्तुलन अछि। समूह-अभिनयमे बालकक

सुरक्षा, हिंसक प्रसंगक सांकेतिक प्रस्तुति आ व्यसन-पीड़ितक गरिमाक रक्षा प्राथमिक रहबाक चाही।

‘घोघवाली कनियाँ’क पाँच दृश्य आ पात्र-बहुल संवाद लघु मंचनमे सम्पादन माँगैत अछि। बाइस बिन्दुक अनुबन्धकें नाटकमे देहगत अभिव्यक्ति, कागजपर हस्ताक्षर, हित-संघर्ष आ मौन प्रतिक्रियाक मददसँ दृश्यात्मक बनाओल जा सकैत अछि। मुदा मूल पाठक उद्धरण वा अनुसंधानपरक पाठमे कोनो संवाद हटाएल नहि जाए; मंचीय रूपान्तरण मूल पाठसँ पृथक सर्जनात्मक काम होयत।

बाल-समूहसँ अभिनय कराओल जाए तँ आयुवर्ग अनुसार दृश्य चुनब आवश्यक अछि। १०-१४ बरखक किशोर लेल ‘रसुन पियोज’क नामकरण-विवाद, ‘बरहम बाबा’क प्रतिप्रश्न आ ‘घोघवाली कनियाँ’क शिक्षाविषयक खण्ड अधिक कार्यक्षम लगैत अछि; एहि आयु-निर्देशकें ऐतिहासिक तथ्य नहि, प्रस्तुति-सुविधाक आलोचनात्मक प्रस्ताव बुझल जाए। प्रत्येक दृश्य बाद दर्शकसँ ‘अहाँ होइतहुँ तँ की करितहुँ?’ पूछब नाटकक निष्कर्षकें एकतरफा उपदेशसँ सामूहिक विवेक-विमर्श दिस लऽ जा सकैत अछि।

उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक निर्णय

‘नवघर’क पहिल उपलब्धि सामाजिक प्रसंगक चयन अछि। लेखक घरक भीतर घटित साधारण घटना—भोजन, बालकक खेल, रिश्ताक जिम्मेवारी, उपनामक मजाक—कें वृहत्तर अधिकार-प्रश्नसँ जोड़ैत छथि। दोसर उपलब्धि लोकभाषाक अविरलता अछि। तेसर, फूलो आ रूपवती जेहन पात्रकें प्रश्न पुछबाक नाटकीय अधिकार देनाइ अछि। चारिम, सामाजिक सभा, लोक-गीत आ जनसमूहकें कथा-संरचनाक भाग बनएबाक कौशल अछि।

मुख्य सीमामे किछु पात्रक एकरेखीयता, एक्कहि विचारक बारम्बार व्याख्या, दीर्घ अनुबन्ध-पाठ, आकस्मिक सहमति आ न्यायप्रक्रियाक अतिशीघ्र समाधान अछि। सुधारवादी नाटकमे स्पष्ट नैतिक पक्ष होएब दोष नहि; दोष तखन बनैत अछि जखन

विरोधी पात्र सामाजिक परिस्थितिक स्थानपर केवल अज्ञानक प्रतीक रहि जाइत अछि आ संघर्षक जटिलता घटि जाइत अछि। एहि संग्रहमे ठाम-ठाम एहन संकट अछि। लोक-हास्यक सीमापर विशेष विचार आवश्यक अछि। ‘रसुन पियोज’मे हँसीकें मात्र सृजनशील ऊर्जा बुझि लेनाइ पर्याप्त नहि; नामकरणक माध्यमसँ व्यक्ति कतेक अपमानित भऽ सकैत अछि, तकर पहचानो जरूरी अछि। एक्के तरहेँ ‘बरहम बाबा’मे श्रद्धाक आड़मे सामाजिक तिरस्कार नाटकक विषय बनैत अछि। एहि दुनू रचनाक संयोजन एकटा पैघ नैतिक सूत्र दैत अछि: धर्मक नाम पर हो अथवा मजाकक नाम पर, व्यक्ति-गरिमाक उल्लङ्घनकें सामान्य मानब उचित नहि।

समीक्षाक परिणाममे ‘नवघर’कें मैथिली सामाजिक एकांकीक महत्त्वपूर्ण उदाहरण कहि सकैत छी, जाहिमे समानान्तर रंग-चिन्तनक प्रबल प्रवृत्ति आ सामुदायिक लोकशिक्षाक विश्वास भेटैत अछि। एकर श्रेष्ठता संवादक जीवन्त प्रश्न, लोक-सामाजिक दृश्य आ पात्रक आत्मसम्मानक माँगमे अछि; ओकर कमजोरी समाधानक पूर्वनिर्धारित भाषणमे। ई द्वन्द्व संग्रहकें आलोचना योग्य बनबैत अछि।

निष्कर्ष

बेचन ठाकुरक ‘नवघर’क चारू नाटक समेकित रूपेँ आधुनिक मिथिलाक नैतिक जीवनक चारि समस्या खोलैत अछि। ‘नीशा मुक्ति’ असंयमक निजी-लोकक्षति सँ जन-शिक्षा धरि जाइत अछि; ‘बरहम बाबा’ श्रद्धाकें मानवीय समानताक सामने राखैत अछि; ‘घोघवाली कनियाँ’ घरेलू सत्ता आ सामाजिक न्याय बीच नवा समझौता खोजैत अछि; ‘रसुन पियोज’ सामूहिक हँसीक भीतर छिपल अपमान पर प्रश्न करैत अछि। ई केवल सुधारक घोषणा सभ नहि, नाटकीय विवादक अनेक समृद्ध सम्भावना सेहो अछि।

बाल-साहित्यक दृष्टिसँ एहि संग्रहक सही स्थान मिश्रित अछि: किछु दृश्य बालकक अनुभव आ भागीदारीकें प्रत्यक्ष रूप दैत अछि, आन दृश्यसभ प्रौढ़ सामाजिक संस्था आ परिवारक दायित्व पर केन्द्रित अछि। एहि भेदक स्वीकारे विधागत ईमानदारी थिक।

मैथिली एकांकीक इतिहासमे संग्रहक योगदान लोकभाषा, सामाजिक न्याय आ मंचक

सामूहिक प्रकृतिक संगममे निहित अछि। आगाँ एकर मंचन-अभिलेख, पाठान्तर, समकालीन समीक्षा आ दर्शक-अनुभवक दस्तावेज उपलब्ध भेलापर एहि निष्कर्षकें आर विशिष्ट रूपें जाँचल जा सकत।

संवादक चयनित स्वर

एहि संक्षिप्त संवादसभमे पात्रक मूल स्वर आ नाटकीय परिस्थिति विशेष तीव्रतासँ मुखर होइत अछि।

- नीशा मुक्ति — बदरी सिंह: “मन जेते काबूमे रहत, ओते मानवतामे धनिक रहब।”
- बरहम बाबा — फूलो: “हम प्रेम-श्रद्धाक भूखल छी।”
- घोघवाली कनियाँ — समझौताक पहिल बिन्दु: “खेत-पथार दुनु भाँइ आधा-आधा लऽ ले।”
- घोघवाली कनियाँ — जीतन: “हमरा कोनो दिक्कत नै अछि। हमरा मनोनाय अछि।”
- घोघवाली कनियाँ — रूपवती: “हम कोनो मामूली जनानी छी।”
- रसुन पियोज — फेकू: “रसुन बीस टके किलो छलै, से अस्सी भऽ गेलै”
- रसुन पियोज — फेकू: “हम केकरोसँ कखनो कम छी।”

१.२३. नित नवल बेचन ठाकुर — बेटीक अपमान आ छीनरदेवी

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

कन्या-विरोध, दहेज आ अन्धविश्वासक विरुद्ध रंगमंच

विषय-प्रवेश: साहित्य, सामाजिक समस्या आ रंगक जिम्मेदारी

मैथिली नाटकक अध्ययन प्रायः मुद्रित ग्रन्थ आ चर्चित रंगसंस्थाक इतिहास धरि सीमित भऽ जाइत अछि। ग्रामस्तर पर नियमित मंचन, छात्र-छात्राक भागीदारी, सरस्वती-पूजाक अवसरपर सार्वजनिक प्रस्तुति आ सीमित संसाधनसँ संचालित रंगकर्मकेँ साहित्येतिहासमे समान महत्त्व देब आवश्यक अछि। बेचन ठाकुरक एहि संग्रहक विशिष्टता एतबे नहि जे लेखक दूटा सामाजिक कुरीतिक विरोधमे कथानक रचैत छथि; विशिष्टता ई सेहो जे ओ समस्या देखबैत ग्रामीण परिवार, पड़ोस, पंचायत, विवाह-गोतियारी, भगत, पुरोहित आ दर्शकक साझा नैतिक जगतकेँ नाटकक भीतर आनैत छथि।

एहि नाटकसभक विचारधारा सुधारवादी अछि, मुदा ई एकरेखीय सुधारवाद नहि। पात्र कहियो अपन कथनसँ अपनेक विरोध करैत छथि, सामाजिक मूल्य बदलला पर पुरान लोभ नव वेश धारण करैत अछि, आ धर्मक आवरणमे तर्कक प्रवेश सेहो होइत अछि। एहि कारण लेखकक घोषित सन्देश आ नाट्यकृतिसँ निकलैत व्यापक अर्थ एक्कहि वस्तु नहि छथि। समीक्षाक प्रयोजन न तँ लेखकक सदिच्छाकेँ निर्विवाद प्रशंसा बना देब अछि, ने मंचीय असंगतिक आधारपर हुनकर लोक-रंगकर्मकेँ कमतर मानब; बल्कि पाठमे उपस्थित प्रमाणक आलोकमे कलात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमाक जाँच करब अछि।

ग्रन्थ आ रंग-सन्दर्भ

‘बेटीक अपमान आ छीनरदेवी’ बेचन ठाकुरक दूटा सामाजिक नाटकक संग्रह अछि।

श्रुति प्रकाशनक एहि पुस्तकमे आशीष अनचिन्हारक आमुख आ लेखकक अपन कथन सँ पाठककेँ सामाजिक प्रश्न तथा ग्रामीण रंग-अनुभवक परिचय भेटैत अछि।

प्रकाशन-विवरणमे प्रथम संस्करण २०१० अंकित अछि, जखन कि आमुखमे २०११ क जनगणनाक उल्लेख अछि। एहि कालगत अन्तरक कारण संस्करण-वर्षक उल्लेख सावधानीपूर्वक देखल जाएब उचित अछि।

लेखक अपन कथनमे स्पष्ट करैत छथि जे ‘बेटीक अपमान’ लिखबाक पाछाँ बेटीक प्रति हीन दृष्टि, दहेज आ गर्भस्थ कन्याक नाशक चिन्ता अछि; ‘छीनरदेवी’क पाछाँ अन्धविश्वासक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे घृणा आ वैमनस्य बढ़बाक अनुभव अछि। ओ २००२ सँ प्रत्येक वर्ष सरस्वती पूजापर अपन रचना मंचित करबाक आ अधिकांश प्रस्तुति छात्रा सभक द्वारा भेल होयबाक उल्लेख करैत छथि। एहि आत्मसाक्ष्यक लेखकक रंग-अनुभवक महत्त्वपूर्ण प्रमाण मानि सकैत छी; मुदा स्वतन्त्र मंचन-अभिलेखक अभावमे प्रस्तुति-संख्या अथवा प्रभावक ठोस सांख्यिकीय निष्कर्ष निकालब उचित नहि।

आशीष अनचिन्हार आमुखमे ‘छीनरदेवी’कें अन्धविश्वास-विरोधी नाटकक रूपमे पढ़ैत छथि आ हरिमोहन झाक व्यंग्य-परम्परासँ एकर प्रश्नोत्तर-सम्बन्ध बनबैत छथि। ‘बेटीक अपमान’क सन्दर्भमे ओ मिथिला आ हरियाणाक पुत्र-पक्षपातक समस्या तुलनीय मानैत छथि। प्रस्तावना लेखकक प्रशस्ति मात्र नहि, अपन समयक मैथिली मंचसँ सामाजिक विषयपर अधिक प्रत्यक्ष हस्तक्षेपक अपेक्षा सेहो अछि। एतय ई ध्यानयोग्य जे प्रस्तावनाक ऐतिहासिक-सामाजिक दावा आ मूल नाटकक स्वयं उपस्थित प्रमाणकें अलग-अलग श्रेणीमे राखल गेल अछि।

आलोचनात्मक दृष्टि आ विधागत विभाजन

एहि अध्ययनमे पाँच प्रश्न प्रमुख अछि: (क) सामाजिक समस्या कथानकमे घटना बनैत अछि कि उपदेश-मात्र रहि जाइत अछि; (ख) पात्रक कथन आ व्यवहारमे विरोधाभास कोन अर्थ रचैत अछि; (ग) मंचीय क्रिया, दृश्य-परिवर्तन, लोकधुन, वस्तु आ सामूहिक उपस्थिति नाटककें कोना अर्थ दैत अछि; (घ) स्त्रीक आवाज ओकर अपन निर्णयमे

परिणत होइत अछि कि पुरुषक नैतिक शिक्षा बनिकऽ रहि जाइत अछि; आ (ड) बाल-पाठक/बाल-अभिनेता लेल रचना-औचित्य कोन सीमा धरि अछि।

‘बेटीक अपमान’ तीन अङ्कक विस्तृत सामाजिक नाटक अछि—पहिल अङ्कमे सात, दोसरमे छओ आ तेसरमे नव दृश्य, अर्थात् कुल बाइस दृश्य। ‘छीनरदेवी’ पाँच दृश्यबला एकाङ्की अछि। दृश्य-गणना शीर्षक आ दृश्य-विभाजनक मिलानपर आधारित अछि। पहिल नाटक क्रमिक पारिवारिक समय, विवाहक अनेक अवसर आ वृद्धावस्था धरि पहुँचैत अछि; दोसर संकुचित काल-प्रसारमे रोग, आशंका, आरोप, मध्यस्थता आ नाटकीय समाधानक बाट बनबैत अछि। अपन-अपन आकारक अनुरूप दुनू नाटकक गति, संवाद-संयोजन आ रंगव्यवस्था अलग-अलग अछि।

‘बेटीक अपमान’: तीन अङ्कक कथाविकासक पृथक पाठविश्लेषण

पहिल अङ्क: बेटा-पक्षपातसँ स्त्रीक देह-क्षय धरि

दृश्य १: इच्छा, पछतावा आ आर्थिक गणित

दीपक अपन तीनू बेटाक बाद एकटा बेटी होयबाक इच्छा प्रकट करैत छथि; वीणा हुनका पुरान कथन स्मरण करबैत छथि जे पहिने कन्या भेलासँ गर्भपात करएबाक सोच छल। आरम्भे ‘इच्छा’ नैतिक पश्चात्तापक रूप लेबैत अछि—जाहि बेटीकेँ जन्मक अवसर नहि देल गेल, तकर अभाव आब अनुभूत होइत अछि। अर्थलाभ आ सामाजिक खर्चक गणना पुत्र-प्रेमक संग जुड़ल अछि। ई दाम्पत्य-संवाद प्रस्तावनात्मक व्याख्यानसँ अधिक प्रभावी अछि, कारण पात्र अपनेक पूर्व निर्णयक साक्षी बनैत छथि।

“एकटा बेटीक इच्छा होइ अछि। बेटा तँ भगवान तीनटा देलनि।”

दृश्य २: श्रम, स्वास्थ्य आ वीणाक मृत्यु

घरेलू ईन्धन, खेतक जलखै, स्त्रीक श्रम आ देहक अस्वस्थता साधारण गृहरससँ करुण परिणतिक बाट खोलैत अछि। वीणा लगातार गर्भधारण, गर्भ-समापन आ औषधिक शारीरिक मूल्यक विषय उठबैत छथि; तकर बाद मंचपर हुनकर मृत्यु घटैत अछि। नाटक दर्शककेँ ई देखबैत अछि जे परिवारक कथित ‘बेटा-रक्षा’ स्त्रीक जीवनकेँ विसर्जित

करैत अछि। नाटकीय दृष्टिसँ मृत्यु तीव्र प्रभावक साधन अछि, मुदा चिकित्सकीय कारणक चित्रण साहित्यिक घटना अछि—एकरा स्वतन्त्र चिकित्सकीय प्रमाण नहि मानल जा सकैत अछि।

दृश्य ३: शोकक भीतर नारी-श्रमक स्वार्थ

विधुर दीपक अपन पत्नीकेँ याद करैत छथि, मुदा शीघ्रहि घरमे रान्हनिहारक अभावकेँ बेटी अथवा पुतोहूक आवश्यकता संग जोड़ैत छथि। प्रदीप कुमारक सलाहमे सहानुभूति अछि, तथापि बेटीकेँ घरेलू सेवा-सुविधाक रूपमे कल्पना करबाक जोखिम कायम रहैत अछि। पत्नी-वियोगक बादो श्रम-विभाजन नहि बदलैत; सन्देश ई बनैत अछि जे घरक संकट मात्र ‘स्त्री नहि रहबाक’ संकट नहि, पुरुषक घरेलू श्रमसँ दूरीक संकट सेहो अछि।

दृश्य ४: शिक्षा बनाम घरेलू उपयोगिता

दीपक बेटासभकेँ पढ़ाक आग्रह करैत छथि, फेर पढ़ाइक खर्च आ रान्हन-व्यवस्था देखैत मोहनकेँ नौकरी आ शीघ्र विवाहक दिशि धकेलैत छथि। मोहनक अध्ययन-इच्छा, सोहन-गोपालक विद्यालय-आकांक्षा आ कोचिङ्ग-केन्द्रक उल्लेख ग्रामीण शिक्षाक द्विविधा खोलैत अछि। गोपालक लयात्मक कथन दृश्यकेँ बाल-अभिनय लेल स्मरणीय बनबैत अछि; संगहि विद्यालय, पोशाक, मध्याह्न-भोजन सन सुविधाक सामाजिक स्वीकृति देखाइत अछि। शिक्षा आदर्श अछि, मुदा परिवारक आर्थिक तात्कालिकता ओकरा बाधित करैत अछि।

दृश्य ५: बलवीर-सुनीताक प्रतिपक्ष

बलवीरक दू बेटी मंजू आ संजूक प्रति आत्मविश्वास दीपकक परिवारक प्रतिपक्ष रहैत अछि। बेटीक संख्या नहि, पालन-पोषण आ शिक्षा महत्त्वपूर्ण ठहरैत अछि। सुनीताक आरम्भिक पुत्र-इच्छा संवादक भीतर बदलबैत अछि; ई परिवर्तन प्रतीकात्मक अछि। तथापि ‘डॉक्टर-इन्जीनियर-एस.पी.-कलक्टर’ बनबाक लक्ष्यक अत्यधिक बल बेटीकेँ

अपन अस्तित्वसँ बेसी सामाजिक प्रतिष्ठाक साधन बनाबय लगैत अछि। बालशिक्षा आ समान-अधिकारक आधार पर एहि दृश्यक ताकत बहुत अछि।

“की बेटी बेटासँ कम होइ छै?”

दृश्य ६: शालिनीक परिवार आ वर्गगत अन्तर

गरीब किसान हरिश्चन्द्र आ राधाक घरमे एकमात्र बेटी शालिनी अछि। आरम्भमे संतान-संख्याक दुख अछि, मुदा पोषणक सामर्थ्य आ गर्भ-समापनक नैतिकता पर बातचीत होइत अछि। गरीब बेटीकेँ शिक्षा देबाक संकट एतय स्वतन्त्र रूपमे उभरैत अछि। बलवीरक बेटी उच्च शिक्षाक स्वप्न अछि; शालिनीक शिक्षा कठिन प्रयत्नक विषय। नाटक एउ व्यक्तित्व सभक भीतर वर्गानुसार असमान अवसरक संकेत दैत अछि, यद्यपि शालिनीक अपन स्वर एखन कम सुनाइत अछि।

दृश्य ७: विवाहक पृष्ठभूमिक पुनरागमन

प्रदीप द्वारा मोहनक शीघ्र विवाहक परामर्श आ दीपकक दहेजक सम्भावनाक प्रश्न पहिल अङ्कक नैतिक विरोधाभासकेँ पुनः स्थापित करैत अछि। कन्याक अभावक करुण पछतावा व्यवहारमे फेर वधू-खोज आ लेन-देनक अर्थशास्त्रमे परिणत भऽ जाइत अछि। एतय नाटकक मूल व्यंग्य जन्म लैत अछि: जे व्यक्ति बेटीकेँ आर्थिक बोझ बुझैत छल, से पुतोहूकेँ घरेलू समाधान आ दहेजक लाभक साधन बनबैत अछि।

दोसर अङ्क: विवाह-बाजार आ दहेजक अपमानजनक भाषिक संसार

दृश्य १: लड़काक अधिकता कथानकक आर्थिक आधार बनैत अछि

दीपक अपन संगी महेन्द्र पण्डित लग मोहनक विवाह लेल कन्याक खोज करैत छथि। महेन्द्रक कथनमे लड़काक बहुतायत आ कन्याक अभाव उभरैत अछि। आरम्भिक गर्भ-लिङ्ग-भेदक परिणाम आब सामूहिक विवाह-संकट बनिकऽ उपस्थित होइत अछि। व्यक्तिगत निर्णय आ सामाजिक जनसांख्यिकीय असरक बीच नाटक कारण-परिणामक सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रयास करैत अछि, यद्यपि पात्रक अनुभव संख्यात्मक सर्वेक्षणक बराबर नहि।

दृश्य २: सम्बन्ध-निर्माणक मध्यस्थता

सुरेश कामत विवाहक मध्यस्थ बनैत छथि आ बलवीरक बेटी लेल प्रस्ताव उठबैत छथि। विवाह गृहस्थी, जातीय-गोतियारी, मध्यस्थक विश्वसनीयता आ पारिवारिक सुविधाक विनिमय छी—एहि सामाजिक ढाँचाक संकेत दृश्य देइत अछि। महिला-पात्र एतय प्रत्यक्ष निर्णायक केन्द्रमे नहि छथि; पुरुष-सम्बन्धी सामाजिक वार्ता रंगमंचपर हावी अछि।

दृश्य ३: चरण-पखारब आ प्रतिष्ठाक आयोजन

बलवीरक घर विवाह-वार्ताक आरम्भमे पाँयर धोबाक विधि पर बल दैत अछि। रीतिक आदर आ वर-पक्षक अधिकारक बीच हास्यमिश्रित टकराव होइत अछि। वस्तुतः चरण-पखारबक आग्रह ‘सम्मान’क भाषामे सत्ता-संबन्धक उद्घाटन करैत अछि। लोक-रीतिक दृश्योपयोग रंगमंचकें स्थानीय बनबैत अछि; ई सम्पूर्ण प्रसंगकें केवल अनुष्ठानक उल्लेख नहि, क्रिया बनाकऽ प्रस्तुत करैत अछि।

दृश्य ४: छेका, लेन-देन आ पुरुषसभाक निर्णय

मोहनक छेकाक अवसरपर अनेक पुरुष-पात्रक बहस, रोक-टोक, पान-बीड़ी-नाश्ता, पुरोहित, दक्षिणा आ लोकगीत सभ मिलिकऽ ग्रामीण विवाहक भीड़बला रंग-विन्यास तैयार करैत अछि। एतय लेखकक मंचक अनुभव स्पष्ट अछि; मुदा बहुत पात्र, दोहरायल बात आ दीर्घ वार्ता दृश्यगतिकें ढील सेहो दैत अछि। दहेजक मुद्दा भावनात्मक सम्बन्धसँ हटि मोल-भावक रूप लैत अछि, जतय विवाह बजारक लेन-देनसँ भिन्न नहि रहैत।

दृश्य ५: विवाहक उत्सव आ व्यंग्यात्मक प्रदर्शन

जयमालाक तैयारी, परिछन-गीत, बरियाती-सरियाती आ गङ्गारामक अतिशयोक्तिपूर्ण व्यवहार लोक-रंगक उत्सवी सतह रचैत अछि। दहेज-प्रतिष्ठा-खानपानक हास्य नाट्यरस बनबैत अछि, मुदा कन्याक व्यक्तित्वक अभाव शून्य सेहो रचैत अछि: मंचपर विवाहक आयोजन भव्य अछि, दुलहिनक स्वतन्त्र इच्छाक विस्तार अल्प अछि।

दृश्य ६: दहेजक अपूर्ण अपेक्षा आ कर्ज

दीपकक अपेक्षित दहेज नहि भेटबाक क्षोभ नाटकक निर्णायक विडम्बना अछि। ओ माय-बेटीक मानवीय महत्त्वक पाठ एखनहुँ ग्रहण नहि केलनि; पत्नी गेलीह, मुदा लोभ बचल अछि। कर्जक बोझ आ रोगक संकेत तेसर अङ्कक विपत्तिक पूर्वाभास बनैत अछि। करुणा आ उपहास एक्कहि पात्रपर केन्द्रित होइत अछि—एहि मिश्रित प्रभावसँ नाटकक नैतिक दृष्टि अधिक जटिल बनैत अछि।

तेसर अङ्क: दहेजक उलटा प्रवाह आ पछतावाक नाटकीय पराकाष्ठा

दृश्य १: वृद्धावस्थामे पुत्रसँ दूरी

रोगग्रस्त दीपक अपन बेटा-पुतोहूक उपेक्षाक अनुभव करैत छथि। महेन्द्रक पुनर्विवाह-सलाह समाधानक बदला पुरान सामाजिक संरचना दोहराबय लगैत अछि: देखरेख लेल फेर एकटा स्त्री चाही। वृद्धक पीड़ा वास्तविक अछि, मुदा नाटक स्वयं इहो उद्धाटित करैत अछि जे महिला-श्रमकें परिजन-स्नेहक एकमात्र माध्यम बुझल गेल अछि।

दृश्य २: दिल्लीक दाम्पत्य आ प्रवास

मोहन—मंजूक दिल्ली-निवास, पिता-पुत्र आ गाम जेबाक खर्चक चर्चा प्रवासक आर्थिक व्यवहार आ पारिवारिक उत्तरदायित्वक दूरीकें जोड़ैत अछि। मंजू अपन पति सँ पिताक प्रति कर्तव्य निभयबाक आग्रह करैत छथि। एहि दृश्यसँ ‘बेटी’ केवल पारिवारिक संख्या नहि, नैतिक उत्तरदायित्वक वाचक सेहो बनैत अछि—यद्यपि पाठक दृष्टिमे मंजूक स्वतन्त्र जीवनक विस्तार सीमित रहैत अछि।

दृश्य ३: कन्याक अभावक सार्वजनिक स्वीकार

प्रदीप दीपककें दहेज, लिङ्ग-परीक्षणक दुरुपयोग आ कन्याक घटैत उपलब्धताक सम्बन्ध समझबैत छथि। नाटक अपन कारण-व्याख्या स्पष्ट करैत अछि। किन्तु दीर्घ भाषण दृश्यसँ क्षणिक बाहर जा कऽ समाजोपदेश बनए लगैत अछि। विचारक तात्कालिकता महत्त्वपूर्ण अछि, शिल्पगत संयम ओतबे अपेक्षित।

“दहेज दुनियाक संतुलनकें बिगारि देलक आ बिगारि देत।”

दृश्य ४: शालिनीक सम्बन्धमे सत्ता-पलटा

हरिश्चन्द्रक आँगनमे आइल वर-पक्ष आब विनतीक अवस्थामे अछि। मुखिया रमण कुमार विवाहक शर्त रखैत छथि। पारम्परिक दहेज-दाता आ दहेज-ग्राहकक स्थिति उलटैत अछि: आब वर-पक्षसँ ५१ हजार टाकाक माँग पर सम्बन्ध निश्चित होइत अछि। एहि उलटफेरमे सुधारक नाटकीय चमत्कार अछि, मुदा समतामूलक विवाह नहि। लेन-देनक दिशा बदलि गेलासँ स्त्री अथवा पुरुषक वस्तुकरण समाप्त नहि होइत अछि। लेखकक आलोचना आर्थिक व्यंग्यक माध्यमसँ उभरैत अछि; ओकरा पाठककें स्त्री-अधिकारक पूरा प्रतिमान बुझि नहि लेबाक चाही।

दृश्य ५: धनक वचन आ जयमालाक विराम

शालिनीक विवाहमे नगद राशि दैत तखन जयमाला आगाँ बढबाक प्रसंग दहेज-पद्धतिक दर्पण-रूपक अछि। पुरान वर-पक्षक अहंकार आब अपने अपमानक अनुभव करैत अछि। श्रेणीगत दृष्टिसँ ई प्रतिशोधमूलक न्याय छी—शोषणक समाप्ति नहि, ओकर उलटा पुनरावृत्ति। मंचनक दृष्टिसँ जयमालाक रुकनाइ प्रभावी क्रिया बनि सकैत अछि, कारण दर्शक कथन सुनबाक बदला लेन-देनक सार्वजनिक असुविधा देखैत अछि।

दृश्य ६: वृद्धक आर्थिक थकान

दीपकक बढ़ैत रोग, विवाही खर्च आ लगातार असन्तोष सामाजिक लोभकें शारीरिक क्षयक रूप दैत अछि। नाटकमे रोग अनेक बेर नैतिक दण्डक निकष बनैत अछि। ई संरचना लोकनैतिक कथाक निकट अछि; समकालीन आलोचना पूछि सकैत अछि जे बीमारीकें कुकर्मक फल मानबाक प्रवृत्ति स्वयमैं करुणा आ देखभालक आधुनिक नैतिकतासँ कतेक मेल खाइत अछि।

दृश्य ७: गोपालक विवाह-सम्बन्धक खोज

सुरेश लग फेर पहुँचब विवाहक दोहराएल चक्र देखबैत अछि। दहेजक अनुभवसँ दीपक उचित पाठ नहि सीखैत छथि; अभाव, लाचारी आ गणितक एकटा नव संस्करण देखाइत

अछि। दोहराव लेखकक व्यङ्ग्यकेँ धार दैत अछि, मुदा दृश्य-व्यवस्था सघन करबासँ एकर असर आर बढ़ि सकैत छल।

दृश्य ८: कन्या-पक्षक मोल-भावक चरम

गोपालक विवाह-प्रसंगमे फेर नगद लेन-देन आ जयमालाक शर्त आबैत अछि। सामाजिक प्रतिष्ठाक पुरान भाषा मंचपर व्यंग्यक रूपमे पलटैत अछि। विवाहसम्बन्धी रीत, दामादक स्थिति आ पुरुषक प्रतिष्ठा सबपर हास्यक आघात अछि। तथापि लेखकक अन्तर्वस्तु एकटा महत्वपूर्ण सीमा राखैत अछि: कन्याक अधिकारक समर्थक समाधान शिक्षा, उत्तराधिकार, परस्पर सहमति आ स्वतन्त्रता होयत; वर-पक्षसँ धन लेबाक नब परम्परा मात्र नहि।

अन्तिम दृश्य: पछतावा, पुत्र-पुतोहू आ मृत्यु

दुःखग्रस्त दीपकक अन्तिम समयमे परिजनक विवाद, चिकित्सकक प्रवेश आ अन्तिम पछतावा एकटा नैतिक परिणतिक चरम बिन्दु अछि। पत्नी वीणाक मृत्यु अङ्क-पहिलमे आ दीपकक मृत्यु अन्तमे—दुनू मिलिकऽ पारिवारिक त्रासदीक वलय बनबैत छथि। ई वलय नाटककेँ उपदेशात्मक समापन दैत अछि, मुदा संतानक सामूहिक दोषारोपण, रोगक दण्डरूपता आ अतिदीर्घ मृत्यु-दृश्यक कारण करुणानुभव कखनो घोषणाक तले दबि जाइत अछि।

‘छीनरदेवी’: पाँच दृश्यक समीप-पाठ आ वैचारिक द्वन्द्व

दृश्य १: ललनक असामान्य आचरण आ भगतक आगमन

सुभाष—मीराक बेटा ललन अस्थिर आक्रामक व्यवहार करैत अछि। परिवार कारण बुझबाक बदला आत्मा अथवा देवीक प्रभाव मानय लगैत अछि। सुखल कियोट भगतकेँ बजाओल जाइत अछि; ओ अनुष्ठानिक क्रिया आ पूछताछ करैत छथि, किन्तु अन्तमे अपन असमर्थता प्रकट करैत छथि। ई अन्तिम असमर्थता नाटकक महत्वपूर्ण विघटनकारी क्षण अछि: ‘भगत’ पूर्ण समाधानक सर्वज्ञ पात्र नहि रहैत। तथापि रोगक स्पष्ट चिकित्सकीय निदान दृश्यमे अनुपस्थित अछि।

दृश्य २: डाइन-आरोप, कुटुम्ब-विघटन आ प्रतिरोध

ललनक व्यवहारक अर्थ परिवारक एक महिला सुकनीक विरुद्ध आरोपमे बदलैत अछि। पड़ोसक मटुक-राजू आदि पात्रसँ अफवाह सामाजिक बल प्राप्त करैत अछि। सुकनीक बेटा सोमन अपन मायकेँ बचाबय लेल विरोध करैत अछि। डाइन ठहरएबाक नामपर हिंसा, सार्वजनिक अपमान आ जानलेवा धमकीक संभावना ई दृश्यकेँ सबसँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। नाटक दिखबैत अछि जे अन्धविश्वास केवल व्यक्तिगत भ्रम नहि, सम्बन्ध-भङ्ग आ भीड़-हिंसाक तकनीक बनि सकैत अछि।

दृश्य ३: परबतियाक छद्म-दैवी मुद्रा आ विवेक

परबतिया कोइरक पात्र-परिचयमे हुनका मनोवैज्ञानिक कहल गेल अछि, मुदा मंचपर ओ भगत-सदृश आवेश, ‘बोल जय गंगा’क आवृत्ति आ काली-बन्दीक आवरण लऽ कऽ प्रवेश करैत छथि। एहि द्वैध रूपकेँ लेखकक रणनीति बुझल जा सकैत अछि: श्रद्धाक भाषामे प्रवेश कऽ श्रद्धा-जन्य भ्रान्ति तोड़ब। ओ डाइनक सर्वशक्तिमत्ता पर तर्क करैत छथि आ आरोपकेँ मनक शंका ठहरबैत छथि। ई नाटकक बौद्धिक शिखर अछि।

“डायनपर विश्वास केनाइ खाँटी अंध विश्वास छी।”

मुदा परबतिया ललनक समस्या लेल शीघ्र विवाहक उपाय सेहो दैत छथि; एहि बिन्दुपर अन्धविश्वास-विरोध आ विवाहकेँ उपचार मानबाक अनाधारित अपेक्षा एक-दोसरसँ टकराइत अछि। समाजक मनोवृत्ति बदलबाक प्रयत्न जे पात्र करैत छथि, वैह पात्र बीमारीक प्रश्नकेँ चिकित्सकीय परीक्षणक बदला विवाह-समाधान दिस मोड़ि दैत छथि। लेखकक सुधारवादी उद्देश्यकेँ मानैतहुँ एहि असङ्गतिकेँ छिपेनाइ उचित नहि।

दृश्य ४: अनुअंजना, मन्दिर-विवाह आ सहमतिक प्रश्न

घटकराज तुरन्त विवाहक उपाय सुझबैत छथि; अमोलागाछी स्थित काली मन्दिरमे विनोद झाक माध्यमसँ ललन आ अनु अंजनाक विवाह सम्पन्न होइत अछि। हास्य, अल्प-दक्षिणा, मंत्रोच्चार आ वर-वधूक उतावली दृश्यकेँ गतिशील बनबैत अछि। अनु अंजनाक पूर्व विवाहसभक प्रसङ्ग असामान्य चरित्र-हास्य उत्पन्न करैत अछि। मुदा

आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे अस्थिर व्यवहारबला युवककेँ औषधि दऽ शान्त करबाक बाद विवाह कएल जएबाक स्थिति सहमति, स्वास्थ्य आ जानकारीक कसौटीपर कोना जाँचल जएत? पाठ एहि प्रश्नक पर्याप्त समाधान नहि देइत अछि।

दृश्य ५: कथित आरोग्य आ नीतिवचन

अन्तिम दृश्य ललनकेँ शान्त देखबैत अछि आ परबतियाक ज्ञान-वचनसँ समापन करैत अछि। सुभाषक घरमे सामञ्जस्यक पुनः स्थापना लेखकक अपेक्षित फल अछि। मुदा विवाहक तुरन्त बाद ‘पूर्ण ठीक’ भऽ जएबाक संकेत असाधारण व्यवहारक जटिल चिकित्सकीय कारणसभकेँ सरल बनबैत अछि। एहिमे लोक-प्रदर्शनक सुखान्त अपेक्षा तृप्त होइत अछि, यथार्थवादी समस्या-विश्लेषण आंशिक रहि जाइत अछि।

“अंध विश्वासमे लोक भटकि जिनगीकेँ गर्तमे धकेल लैत अछि।”

स्त्रीक स्वर, पितृसत्ता आ समाज-सुधारक सीमारेखा

‘बेटीक अपमान’क पहिल सशक्त स्वर वीणा छथि। ओ पति द्वारा धन, दहेज आ बेटाक प्राथमिकताकेँ प्रश्नांकित करैत छथि। हुनकर विरोध देहक श्रम, गर्भ-समापनक कष्ट आ आत्मसम्मानक यथार्थ अनुभवसँ निकलैत अछि। त्रासदी ई अछि जे समाजकेँ नैतिक शिक्षा देबाक लेल कथानक हुनकर मृत्युकेँ आवश्यक घटनाक रूपमे बरतैत अछि। वीणाक पीड़ा प्रभावकारी अछि, मुदा हुनकर जीवित प्रतिरोधकेँ बहुत देर धरि कथा-केन्द्रमे रहबाक अवसर नहि भेटैत।

मंजू आ संजू शिक्षित बेटीक सम्भावना चिन्हित करैत छथि; शालिनी गरीबीक कारण अवसर-वञ्चित बेटी छथि; राधा आ सुनीता अलग-अलग सामाजिक अनुभवक स्वर रखैत छथि। तइयो तीनू अङ्कमे विवाहक आर्थिक शर्त प्रायः पुरुषसभ तय करैत छथि। शीर्षक बेटीक अपमानक विरुद्ध अछि, मुदा कन्याक इच्छा, संपत्तिपर अधिकार, उच्च शिक्षा आ वैवाहिक स्वायत्तताक प्रश्न अपेक्षाकृत कम विकसित अछि। एहि सीमाकेँ नाटकक सामाजिक युगसन्दर्भमे बुझि सकैत छी; आलोचनाकेँ एकरा गुण बनाकऽ नहि देखाबक चाही।

‘छीनरदेवी’मे सुकनी डाइन-आरोपक प्रत्यक्ष पीड़िता छथि। परबतिया महिला-तर्कक विचित्र मुदा असरदार प्रतिनिधि छथि, जे भगत-भेषमे वैज्ञानिक संशयक सामान्य भाषा रचैत छथि। एहि विरोधाभासमे नाटकक मौलिकता अछि। एकहि कालमे स्त्री पर आरोप लगब आ स्त्री द्वारा ओकर खण्डन होयब सामाजिक प्रतीकात्मकता बनबैत अछि। तथापि सुकनीक स्वतन्त्र पक्ष अधिक विस्तृत होइत तँ आरोप-संस्कृतिक प्रत्यक्ष मानवीय मूल्य आर उजागर होइत।

नाट्य-शिल्पः लोकवाक्य, पुनरावृत्ति, हास्य, दृश्य-सामग्री आ मंचयोग्यता बेचन ठाकुरक संवादक भाषा मुख्यतः ग्राम्य मैथिली अछि। पात्र ‘माल-पानी’, ‘भनसा-भात’, ‘नज्/नै’, ‘गोरा लगनाइ’, ‘दुआर’, ‘छेका’, ‘समधि’ सन सामाजिक शब्दावलीसँ अपन परिवेश बनबैत छथि। नाटकक भाव-यथार्थ एतए शुद्ध औपचारिक भाषासँ बेसी लोकबोलीक लयपर निर्भर अछि। हास्यक साधन अपमानजनक संबोधन, पुनरुक्ति, अतिशयोक्ति, सामाजिक प्रतिष्ठाक उलटफेर आ अनुष्ठानिक बातचीत अछि। संवाद कहियो अतिशय फैलैत अछि, मुदा एही विस्तारमे रंगमंचक सामूहिक जीवित बोली सुरक्षित अछि।

मंच-सामग्री विशेष अध्ययनयोग्य अछि—कुरसी, जलक लोटा, चरण-पखारबाक पात्र, छेकाक डाली, बिछाओन, चिट्ठी, खैनी, मृदंग, माटि, विभूति, रोगी लेल बर्तन, विवाह-मण्डप आ दक्षिणाक नगद राशि। ई सभटा वस्तु गामक जीवनक चिन्ह मात्र नहि; अभिनेताक चलन, प्रतीक्षा, आवागमन, हँसी, तनाव आ सार्वजनिक निर्णयक प्रक्रिया सम्भव बनबैत अछि। घर-दलान-आँगन-मन्दिर जेकाँ दोहराएल स्थानसँ कम-संसाधनक स्थानीय मंच पर प्रस्तुति सहज होयबाक सम्भावना अछि।

‘बेटीक अपमान’मे बाइस दृश्य सामाजिक सर्वेक्षण-जकाँ अनेक प्रसंग समेटैत अछि; एहि कारण कथा-केंद्र कखनो दीपकक आत्मपरिवर्तनसँ हटि विवाहक तकनीकी मोल-भावमे बाँटि जाइत अछि। ‘छीनरदेवी’मे पाँच दृश्यक सघन क्रम अपेक्षाकृत एकाग्र अछि, मुदा ललनक असामान्य व्यवहारक कारण आ अनुअंजनाक चरित्रक हास्य-निर्माणमे

असावधानी आधुनिक दर्शक लेल समस्या बनि सकैत अछि। अभिनय-निर्देशनमे हिंसात्मक धमकीक दृश्यकेँ आलोचनात्मक दूरीसँ प्रस्तुत करब आवश्यक होएत। नाटकीय अन्तक तुलना सेहो अर्थपूर्ण अछि। पहिल नाटक मृत्यु आ पश्चात्तापपर समाप्त होइत अछि, दोसर विवाह आ शान्तिपर। एकटा पात्रकेँ दण्ड देइत सामाजिक चेतावनी बनबैत अछि; दोसर सांस्कृतिक मेल-मिलापद्वारा समस्या मेटाएल घोषित करैत अछि। ई दू अन्त सुधारवादी रंगमंचक दू भिन्न तकनीक—भय-जनित शिक्षा आ सुखान्त-जनित शिक्षा—प्रदर्शित करैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहास आ छात्र-रंगमंच: तुलनात्मक विवेचन

सर्वप्रथम विधागत स्पष्टता जरूरी अछि: ‘बेटीक अपमान’ आ ‘छीनरदेवी’ स्वयं पाठ-प्रमाणक अनुसार वयस्क-कुटुम्ब केन्द्रित सामाजिक नाटक छथि। बालक अथवा छात्र द्वारा मंचन भेलासँ कोनो कृति स्वतः बाल-साहित्य नहि भऽ जाइत अछि। बाल-साहित्यक पहचान बालकक अनुभव-दृष्टि, कथात्मक सुबोधता, भावनात्मक आयु-उपयुक्तता, कल्पना, प्रश्न करबाक अवकाश, आनन्द-तत्त्व आ प्रस्तुति-सन्दर्भ पर निर्भर करैत अछि। एहि पृथक्करणक आधारपर बेचन ठाकुरक कार्यकेँ ‘बाल-भागीदारीबला सामुदायिक रंगमंच’क इतिहासमे विशेष महत्त्व दैतहुँ बाल-नाटकक शुद्ध विधागत सूचीमे बिना टिप्पणी रखब गलत होएत।

मैथिली नाट्यपरम्पराक पूर्वकालीन अभिलेखक रूपमे विदेह-पोथी भण्डारमे ‘धूर्तसमागम’ आ पुरान नाटकक प्रस्तुति उपलब्ध अछि। ओहि परम्परासँ बेचन ठाकुरक साम्य संस्कृतनिष्ठ नाट्यरूपमे नहि, सामाजिक ढोंग, अनुष्ठान आ विद्रूपक हास्य-उद्घाटनमे ताकल जा सकैत अछि। पुरान प्रहसनमे धार्मिक अधिकारक आडम्बर विडम्बना बनैत अछि; ‘छीनरदेवी’मे भगतक भाषा उलटि कऽ अन्धविश्वास-विरोधी विवेकक माध्यम बनैत अछि। ई तुलनात्मक संकेत अछि, प्रत्यक्ष प्रभावक ऐतिहासिक दावा नहि।

विदेहमे प्रकाशित समकालीन 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र' बाल-पाठक लेल रस, औचित्य, कथा-रचना आ भाषिक सरलताक विविध कसौटी सामने रखैत अछि। एहि कसौटीपर बेचन ठाकुरक नाटकमे लोकभाषाक तत्क्षण बोध, गीत-संवाद, दृश्याभिनय आ सामाजिक प्रश्नक शक्ति छैक; मुदा गर्भ-समापन, मृत्यु, डाइन ठहरएबाक हिंसात्मक धमकी आ वैवाहिक लेन-देन सन प्रसंग बिना शैक्षिक रूपान्तरण छोट बालक लेल उपयुक्त नहि मानल जा सकैत अछि। वरिष्ठ छात्र-कलाकार लेल ई पाठ सहमति, स्वास्थ्य, लिङ्ग-न्याय आ अन्धविश्वासक विवेचनक आधार अवश्य बनि सकैत अछि।

डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य' पर विदेहमे प्रकाशित तुलनात्मक समीक्षा बाल-रचनाक इतिहास लोरी, खेलगीत, पहेली, कथा आ नव युगक एकाङ्की धरि विस्तृत सांस्कृतिक वंशावलीक रूपमे देखैत अछि। एहि नजरिँ बेचन ठाकुरक छात्र-प्रस्तुति लिखित नाटक आ सामुदायिक मौखिक संस्कृतिक बीच सेतु बनैत अछि। तइयो अंगिका आ मैथिली साहित्यक विधागत इतिहास एक समान नहि; एतय तुलना बाल-अभिनयक सांस्कृतिक माध्यम धरि सीमित अछि।

विदेहक 'मैथिली नाट्यमंच/नाटक लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त' शृंखला आ 'नाट्य-नवग्रह' सन समकालीन आलोचनात्मक सामग्री नाटकक अर्थकें मुद्रित संवादक अतिरिक्त प्रस्तुति, दर्शक-सम्बन्ध आ सामाजिक सत्ता-संरचनामे खोजबाक आधार दैत अछि। बेचन ठाकुरक प्रयोगमे छात्रा सभक अभिनय आ गामक उत्सवी मंचनक सूचना एहि दृष्टिँ महत्त्वपूर्ण अछि: ई सामग्री नाट्य-साहित्यक इतिहासमे विद्यालयीन शिक्षण आ लोक-भागीदारीक साझा क्षेत्र उद्घाटित करैत अछि। तथापि उपलब्ध सूचनासँ कार्यक्रमक प्रत्येक वर्षक नाटक, कलाकार-संख्या आ वास्तविक दर्शक-प्रतिक्रियाक क्रमवार इतिहास तयार नहि कएल जा सकैत अछि। [५-६]

बाल-रंगमंचक दृष्टिसँ सम्भावना आ सीमा

बाल-रंग-अध्ययनमे कृति आ मंचनक सम्बन्ध द्विमुखी अछि। गम्भीर कथाकें छात्र प्रस्तुत करथि तँ अभिनयद्वारा सार्वजनिक बोलबाक साहस, उच्चारण, स्मृति, एकजुटता

आ समाज-संवादक क्षमता विकसित भऽ सकैत अछि। मुदा पाठक सामाजिक दर्शन जखन अभिनेता अपन उमरसँ पैघ अनुभवक आघात सँ संबंधित हो, तँ शिक्षक/निर्देशककें प्रसंगक संवेदनशीलता बुझबाक आवश्यकता अछि। विशेषतः वीणाक शारीरिक पीड़ा, सुकनी पर हिंसाक धमकी आ विवाहक सहमतिक प्रश्नकें बाल-हितैषी संवादमे बदलब अपेक्षित अछि। एहि भेदभावक सम्यक् विवेचन बिना 'बाल-नाटक'क श्रेणी बहुत विस्तार पाबि अर्थहीन भऽ सकैत अछि।

नैतिक परिणति आ आलोचनात्मक उपलब्धि: चारि तुलनात्मक निष्कर्ष पहिल, दुनू नाटकमे सामाजिक संकटक जड़ सामूहिक मनोवृत्ति अछि। कन्या-विरोध वैयक्तिक गर्भ-निर्णयक पाछाँ दहेजक आर्थिक विचारधारा छैक; डाइन-आरोप वैयक्तिक भयक पाछाँ पड़ोस, कुटुम्ब आ मनगढ़न्त सत्ता छैक। एहि साझा संरचनाक कारण दुनू नाटककें एक पोथीमे संकलित करब अर्थपूर्ण अछि।

दोसर, दुनू नाटक परिणामसँ शिक्षा देब चाहैत अछि। 'बेटीक अपमान'मे स्त्रीक मृत्यु आ वृद्धक पछतावा; 'छीनरदेवी'मे परबतियाक तर्क आ सुखान्त। मुदा कारणक अतिसरल रेखांकन कखनो वास्तविक सामाजिक जटिलताकें घटबैत अछि। भ्रूण-समापन, मानसिक स्वास्थ्य आ घरेलू हिंसा सन विषयक मंचीय पुनर्प्रस्तुति आजुक विवेकमे भेदभावसँ मुक्त, पीड़ित-केन्द्रित आ साक्ष्य-संवेदी होयबाक चाही।

तेसर, नाटककारक सर्वाधिक सफल शिल्प-विधान 'बोलैत समाज'क निर्माण अछि। ई मंच एक नायकक एकालाप नहि; ओहिमे काका, मामा, पड़ोसी, मुखिया, बौआ, भगत, पुरोहित, दुलहा-दुलहिन, डॉक्टर आ घरक स्त्री सभक शोर उपस्थित अछि। सामाजिक असङ्गतिक उद्घाटन एहि बहुवक्ता संसारसँ होइत अछि। मुदा बात दोहराएब, दीर्घ मोलभाव आ नीतिपाठक अधिकता कथ्यक धार कखनो कम करैत अछि।

चारिम, नारी-मुक्तिक प्रश्न नाटकक प्रमुख नैतिक शक्ति होइतहुँ ओकरा भीतर अपूर्ण अछि। बेटीकें नहि मारबाक आग्रह स्त्रीक जीवन-अधिकारक आवश्यक आरम्भ अछि; मुदा स्त्रीक विवाह, शिक्षा, उत्तराधिकार, देह, स्वास्थ्य आ निर्णयपर अपन अधिकार

साहित्यिक परीक्षणक अगिला पड़ाव अछि। ‘छीनरदेवी’क विवेक-शिक्षा सेहो तखने पूर्ण होयत जखन डाइन-आरोपक खण्डनक संग मानसिक स्वास्थ्यक सम्मानजनक देखभाल आ वैवाहिक सहमति सेहो कथाक केन्द्र बनत।

संवादक वैचारिक प्रतिध्वनि

एहि संवादसभमे पारिवारिक निर्णय, स्त्रीक स्थिति आ सुधारवादी अन्तर्विरोधक तनाव एकाग्र होइत अछि।

“एकटा बेटीक इच्छा होइ अछि। बेटा तँ भगवान तीनटा देलनि।”

पात्र: दीपक; ‘बेटीक अपमान’, पहिल अङ्क, पहिल दृश्य।

“की बेटी बेटासँ कम होइ छै?”

पात्र: बलवीर; ‘बेटीक अपमान’, पहिल अङ्क, पाँचम दृश्य।

“दहेज दुनियाक संतुलनकें बिगारि देलक आ बिगारि देत।”

पात्र: प्रदीप; ‘बेटीक अपमान’, तेसर अङ्क, तेसर दृश्य।

“डायनपर विश्वास केनाइ खाँटी अंध विश्वास छी।”

पात्र: परबतिया; ‘छीनरदेवी’, तेसर दृश्य।

“अंध विश्वासमे लोक भटक जिनगीकें गर्तमे धकेल लैत अछि।”

पात्र: सुभाष; ‘छीनरदेवी’, अन्तिम दृश्य।

निष्कर्ष

‘बेटीक अपमान आ छीनरदेवी’कें मिथिलाक ग्राम-समाजमे रचल सामाजिक सुधारवादी रंगक एक महत्त्वपूर्ण पाठ मानल जाए। एकर साहित्यिक शक्ति अनुभवक निकटता, बोलचालक मैथिली, लोक-रीतिक रंगसम्भावना, सहज हास्य, नारी-पीड़ाक प्रभावी उद्घाटन आ अन्धविश्वाससँ उपजल हिंसाक सार्वजनिक विरोधमे अछि। ई नाटक दूटा

अलग कुरीतिक विरोध नहि करैत; दुनू एक प्रकारक सामूहिक अज्ञान आ असमान सत्ता-वितरणक परिणाम देखबैत अछि।

एहि शक्तिक संग सीमा स्पष्ट अछि: शिक्षाक घोषणाक बीच स्त्रीक स्वायत्त स्वर सीमित, दहेजक निरसनक बदला लेन-देनक उलटफेर प्रमुख, आ रोगक उपचार विवाहद्वारा घटित मानबाक वृत्ति वैज्ञानिक चेतनासँ विरोधी अछि। नाटकक अन्तिम नीतिवचनकेँ ओही कारण आलोचनात्मक प्रश्नसँ मुक्त नहि कएल जाए। बेचन ठाकुरक महत्त्व एहि कारण घटैत नहि, बल्कि अधिक ऐतिहासिक बनैत अछि—हुनकर रंगजगत हमर समाजक परिवर्तनक इच्छा आ ओकर अन्तर्विरोध, दुनूकेँ अभिलेखित करैत अछि। बाल-साहित्यक इतिहासमे संग्रहक स्थान केवल विशुद्ध बाल-नाटकक रूपमे नहि, छात्र-सहभागिताबला मैथिली सामुदायिक रंगमंचक सन्दर्भमे अधिक युक्तिसंगत अछि। लेखकक कथनमे दर्ज छात्रा सभक मंच-योगदान आ विदेहक पूर्वप्रकाशन ई सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। उपलब्ध अभिलेखमे एहि दावाक सीमा यथावत् राखैत, भविष्यक रंग-इतिहासक लेल मूल पटकथा, मंचीय संस्करण, कलाकार-साक्षात्कार, प्रस्तुति-तिथि आ दर्शक-स्मृतिक संकलन सर्वाधिक उपयोगी अगिला काज होयत।

१.२४. नित नवल बेचन ठाकुर — बाप भेल पित्ती आ अधिकार

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

पीढ़क पितृत्वसँ नागरिक अधिकार धरि

कृतिद्वयक परिचय

बेचन ठाकुरक ‘बाप भेल पित्ती आ अधिकार’ श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ २०१२ मे प्रकाशित युग्म-नाट्यकृति अछि। पहिल नाटक तीन अङ्कमे बालकक पारिवारिक सङ्घर्ष विकसित करैत अछि; दोसर नाटक नागरिक अधिकार, आवास-सहायता आ भ्रष्टाचार-विरोधक प्रश्न उठबैत अछि।

नाट्यदृष्टि: दुनू नाटकक साझा सूत्र

दुनू कृतिक नायक सत्ता आ संसाधनक केन्द्रसँ बाहर छथि। पहिल नाटकमे मनोज आ संतोष घरक भीतर अधिकारहीन बालक बनैत छथि; दोसरमे मंजूर ग्राम-प्रशासनक आगाँ असहाय निर्धन नागरिक छथि। पहिलमे अपमानक भाषा घरेसँ आरम्भ होइत अछि आ विद्यालयक द्वार बन्द करैत अछि; दोसरमे अपमानक भाषा कुरसी आ भुइँक दूरीसँ आरम्भ होइत अछि आ राज्यक दुआर धरि पसरि जाइत अछि। एहि समरूपतासँ पोथीक युग्म-प्रकाशन एकटा अर्थपूर्ण आलोचनात्मक इकाई बनैत अछि।

तथापि संरचनात्मक भिन्नता सेहो मूलभूत अछि। पहिल नाटक त्रिअङ्की विस्तार, घरेलू प्रतिपक्ष, गीत, दुर्घटना, सफलता आ पुनर्मिलनक भावुक-नैतिक यात्रापर चलैत अछि। दोसर नाटक पनरह दृश्यक अनुक्रममे आवेदनसँ कार्यालय आ कार्यालयसँ सार्वजनिक पहचान धरि एक नागरिक अभियान रचैत अछि। ई भेद सामाजिक यथार्थक दू उपागम—करुणा द्वारा मन-परिवर्तन आ अधिकार द्वारा संस्था-परिवर्तन—कें स्पष्ट करैत अछि।

‘बाप भेल पित्ती’: कथा, पात्र आ तीन अङ्कक रचना

पिताक असफलताकें नाटकक शीर्षकमे केन्द्रित करब आलोचनात्मक रूपें महत्वपूर्ण अछि। लखनक पहिल पत्नी दिवङ्गत छथि; पुत्र मनोज आ संतोष एखनो बालक छथि।

दोसर विवाहक निर्णयक पछाति नव पत्नी मीनाक अपन सन्तानकेँ विशेषाधिकार भेटैत अछि, जखन कि पहिल विवाहक पुत्र शिक्षा आ भोजनक न्यायोचित हिस्सा लेल सङ्घर्ष करैत छथि। शीर्षकक प्रश्न मात्र ‘सौतेली माएक निर्दयता’ नहि; पिताक नैतिक निष्क्रियता सेहो अछि।

प्रतिकथाक रूपमे रामलालक घर उभरैत अछि, जतए दू पत्नी, बच्चासभ आ परस्पर सहयोगक सहअस्तित्व आरम्भमे देखाओल गेल अछि। ई समानान्तर घर लेखक लेल यथार्थक सम्पूर्ण सर्वेक्षण नहि, बल्कि नाटकीय तुलनात्मक प्रतिमान अछि: एक ठाम संसाधन विभाजित अछि, दोसर ठाम सामूहिक देखभालक आदर्श। परस्पर तुलना आकर्षक अछि, मुदा एकरा आदर्श परिवारक सर्वमान्य समाजशास्त्रीय चित्र नहि बुझबाक चाही।

पहिल अङ्क: विवाहक निर्णयसँ विभेदक आरम्भ धरि

दृश्य १: लखन अपन दू पुत्रक पालन-पोषणक चिन्तासँ दोसर विवाहपर विचार करैत छथि। बौहूक चेतावनीमे सौतेल सम्बन्धक जोखिम उपस्थित अछि। भावी दुर्घटनाक बीज एतहि पड़ैत अछि, कारण वयस्कक निर्णयमे बालकक स्पष्ट सहमति वा इच्छा प्रश्न बनि नहि पबैत अछि।

दृश्य २: मदनक घर विवाह-सन्धिक विनिमयक थल बनैत अछि। कुटुमैती, मध्यस्थक आश्वासन आ शीघ्र विवाहक आग्रह सँ नाटक परम्परागत विवाह-व्यवहारक गति पकड़ैत अछि। स्त्रीक प्रश्न गौण रहि जाइत अछि; एतए विवाह कथानकक यन्त्र अछि, स्त्रीक आत्मवृत्तान्त नहि।

दृश्य ३: शिवमन्दिरक विवाहमे मनोज-संतोषक प्रश्न, नाच-गानक अपेक्षा आ पण्डितक दक्षिणा-केन्द्रित व्यवहार हास्य उपजबैत अछि। बच्चासभक हास्य वयस्कक रीतिकेँ सवालक कटघरामे अनैत अछि; दक्षिणाक प्रसंग धार्मिक कर्मकाण्डक अर्थव्यवस्थापर व्यङ्ग्य रचैत अछि।

दृश्य ४: रामलाल, लक्ष्मी आ सन्तोषीक घरक परिचय शिक्षा-प्रेमी समवेत परिवारक दृश्य रचैत अछि। विद्यालयक फीस देबाक सहज प्रक्रिया आगाँ लखनक परिवारमे शिक्षा-वञ्चनाक प्रतिलोम तैयार करैत अछि।

दृश्य ५: मुखिया रमाकान्त आ वार्ड सदस्य बलदेव आवास-सहायताक बात लऽ कऽ अबैत छथि। धनक लेन-देनक प्रसङ्ग राज्यक ग्रामीण उपस्थितिक आरम्भिक छवि अछि; एतहि आन नाटक ‘अधिकार’क आवास-योजनावला प्रश्नक अप्रत्यक्ष पूर्वाभास देखल जा सकैत अछि। ई अन्तर्पाठीय व्याख्या थिक, घोषित लेखक-योजना नहि।

दृश्य ६: मीना अपन पुत्र-पुत्रीक संग खेलक प्रसङ्गमे सौतेल पुत्र सभसँ भिन्न व्यवहार करैत छथि। कृष्णाक प्रश्न—एक्के पिताक सन्तानमे भेद किएक—बाल-न्यायबोधक महत्त्वपूर्ण क्षण अछि। एहि बिन्दुपर बालक स्वयं नैतिक मूल्याङ्कन करैत अछि।

दोसर अङ्क: बाल-अधिकारक निषेध आ असाधारण प्रतिरोध

दृश्य १: रामलालक घरमे अस्वस्थ सोनी आ सन्तोषीक बीच भोजनक प्रसङ्गसँ विवाद उठैत अछि। लक्ष्मी हस्तक्षेप करैत छथि आ रामलाल सामञ्जस्य स्थापित करबैत छथि। नाटककार सहपरिवारक संकटकेँ शीघ्र समाधानमे बदलि दैत छथि; ई आदर्शीकरण तुलना करबाक सुविधा दैत अछि, मुदा मनोवैज्ञानिक जटिलता घटबैत अछि।

दृश्य २: मनोज आ सन्तोष अपन नाम विद्यालयमे लिखेबाक माँग करैत छथि। आर्थिक असमर्थता कहि लखन पाछाँ हटि जाइत छथि, जखन कि मीना अपन सन्तानक पढ़ाइक व्यवस्था करैत छथि। अन्ततः बच्चासभकेँ मारि भगाओल जाइत अछि। ई नाटकक नैतिक केन्द्रीय दृश्य अछि—एक्के घरमे शिक्षाक दू मापदण्ड।

दृश्य ३: घर छोड़ल मनोज-सन्तोषकेँ राधाक भोजन आ सहानुभूति भेटैत अछि। राधा बालकक पुनरुत्थानक पहिल सामाजिक आश्रय बनैत छथि; ओ हुनका पढ़ाइ नहि छोड़बाक प्रेरणा दैत छथि। नाटक घरक बाहर मानवीय सम्बन्धक विकल्प रचैत अछि।

दृश्य ४: दुनू भाय लोकगीत आ थारी-लोटाक तालपर भीख माँगबाक योजना करैत छथि। अपमानक निज अनुभव सार्वजनिक गीत बनि जाइत अछि; भेटल पैसा निजी विलासपर नहि, पढ़ाइपर खर्च करबाक निर्णय राजनीतिक अर्थमे आत्म-अनुशासनक उद्घोष अछि।

“पहिने पढ़ैक जोगार कर बौआ।” — मनोज;

दृश्य ५: मनोज-सन्तोषक अनुपस्थितिमे मीना आ लखनक सम्बन्धक असमान शक्ति स्पष्ट होइत अछि। मीना अपन पुत्र-पुत्रीक विद्यालयीय उपलब्धि पर गर्व करैत छथि, मुदा परिणाम अनुकूल नहि पड़ैत अछि। कथानक दर्शक अछि जे धन आ पक्षपात शैक्षिक सफलता सुनिश्चित नहि करैत।

दृश्य ६: रेलवे स्टेशनक दृश्य समयक छलाँग दैत अछि। विद्यालयीय भ्रमणक बस-दुर्घटनामे मनोजक एक हाथ कटि जाइत अछि आ सन्तोष दृष्टि गमा बैसैत छथि। सन्तोषक गीतमे घरक त्याग, शिक्षाक संघर्ष आ दिव्याङ्गता जोड़ल गेल अछि। दुर्घटनासँ उत्पन्न दुःख कथाकें करुणरसक गाढ़ रूप दैत अछि, मुदा यथार्थवादी कारण-परिणामक प्रस्तुति एतए तीव्र संक्षिप्त अछि।

“आन्हर भऽ नै पढ़ि सकलौं” — सन्तोषक गीतक अंश;

तेसर अङ्क: असफल अहङ्कार, सफलता आ पुनर्मिलन

दृश्य १: लखन घरेलू श्रम करैत छथि, मीना अपन दू सन्तानक परीक्षाफलसँ उच्च आशा रखैत छथि। रामपरी आ कृष्णाक अनुत्तीर्ण भेला पर मीना हुनका पढ़ाइ रोकबाक निर्णय करैत छथि। शिक्षा एतए अधिकार नहि, केवल प्रतिस्पर्धात्मक सफलताक शर्त बनि जाइत अछि।

दृश्य २: रामलालक परिवारमे बच्चासभक परीक्षाफलक सुखद प्रतिक्रिया शिक्षाक सामूहिक आनन्दक रूपमे प्रस्तुत अछि। ई दृश्य लखनक घरमे दण्डात्मक परिणाम-प्रतिक्रियाक तीक्ष्ण प्रतिलोम बनैत अछि।

दृश्य ३: रेलवे स्टेशनपर सन्तोषक लोकगायन चलैत अछि; मनोज प्रशासनिक सेवाक सफलताक समाचार लऽ कऽ लौटैत छथि। अपन उपलब्धिक श्रेय छोट भाय आ सहायक जनसमुदायकेँ देनाइ कथा-संरचनामे नैतिक प्रतिदानक क्षण अछि।

“हम आजीवन हिनकर आभारी रहबनि।” — मनोज;

दृश्य ४: कलक्टरक आवासपर दीन-हीन रामलालक उपस्थिति आ सन्तोषक संग भेट प्रशासनिक प्रतिष्ठा आ गरीबक सामाजिक आवश्यकताकेँ एकठाम अनैत अछि। मंचपर पहचानक अन्तर, परिचय-पत्र आ सेवा-संबन्ध मानवीय सम्बन्धक नव समीकरण बनबैत अछि।

दृश्य ५: मनोज आ सन्तोष विवाह-प्रस्ताव पर विचार करैत छथि। उच्च पदस्थ स्त्री आ अपेक्षाकृत कम औपचारिक योग्यता वला स्त्रीक बीच मूल्याङ्कनमे पात्रसभ प्रतिष्ठा, गृहस्थ-सम्बन्ध आ पारिवारिक समीपता पर तर्क करैत छथि। ई संवादक मूल्यांकन लैङ्गिक भूमिकासँ मुक्त नहि अछि।

दृश्य ६: काली मन्दिरमे मनोज-सोनीक विवाह पारिवारिक कथासूत्र जोड़ैत अछि। पहिल अङ्कक विवाह आ एहि विवाहक तुलना करलापर सामाजिक विश्वास आ परस्पर सम्मानक आदर्श अग्रसर देखाइत अछि, मुदा विवाह-प्रसङ्गक समाधान अत्यन्त शीघ्र अछि।

दृश्य ७: मीनाक रोग आ लखनक असहायता घरेलू प्रभुत्वक पट बदलि दैत अछि। जे सन्तानक आवाज दबाएल गेल छल, तिनकर अनुपस्थिति फेर परिवारक विकलतामे स्मरण होइत अछि। रोगक प्रस्तुति दण्डक नैतिक प्रतिमान बनबाक जोखिम उठबैत अछि।

दृश्य ८: कलक्टरक आवासक हँसी-मजाक, वीरभद्रक उपस्थितिसँ प्रशासनिक जीवनक हलुक लय अबैत अछि। गाम वापसीक बात उठलासँ कथानक भावी पुनर्मिलनक दिशामे बढ़ैत अछि; तथापि किछु हास्य कृति केर प्रमुख बाल-अधिकार प्रश्नसँ ध्यान हटबैत अछि।

दृश्य ९: लखनक घरमे मीनाक गम्भीर अस्वस्थताक समय मनोज-सन्तोष पहुँचैत छथि। पुरान अपमानक स्मृति बनल रहितहुँ ओ लोकनि उपचार लेल आग्रह करैत छथि। ई दृश्य बदला आ देखभालक बीच नैतिक चयन रचैत अछि।

दृश्य १०: अस्पतालमे चिकित्सकीय सहायता, रक्त-मिलान, ऑपरेशन आ सम्बन्धक पहचान कथानकक समापन करैत अछि। मनोज उपचारमे सहयोग दैत छथि आ मीनाक पश्चात्ताप उद्घाटित होइत अछि। क्षमादानक भावुक सुखान्त सामाजिक संदेश दैत अछि, मुदा बालकसभपर भेल हिंसाक संरचनात्मक प्रतिपूर्तिक प्रश्न अनुत्तरित रहि जाइत अछि।

पहिल नाटकक केन्द्रीय आलोचनात्मक प्रश्न

पितृत्वक निष्क्रियता। नाटकक सतहपर मीना स्पष्ट प्रतिनायक जकाँ छथि; मुदा लखनक कृत्यक पुनर्पाठ जरूरी अछि। ओ पुत्रसभक विद्यालय-प्रवेश लेल निर्णायक हस्तक्षेप नहि करैत छथि, घरसँ निकालल गेलापर खोजखबरो समुचित रूपेँ नहि रखैत छथि, आ परिवारक दोसर सत्ताक आगाँ झुकैत छथि। तँ नाटकक वास्तविक आरोप केवल स्त्रीपर नहि, नैतिक उत्तरदायित्वसँ पलायन करनिहार पितृत्वपर अछि। ई अर्थ शीर्षकसँ पुष्ट होइत अछि।

बालकक कर्तृत्व। मनोज आ सन्तोष करुणाक निष्क्रिय पात्र नहि छथि। अपन घरसँ बहिष्कृत भेला पर ओ गीत रचैत छथि, लोकसँ मदद माँगैत छथि, पैसाक उपयोगपर विमर्श करैत छथि आ शिक्षाकेँ पहिल प्राथमिकता बनबैत छथि। एहि कारण कृति बाल-अनुभवक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बनैत अछि। मुदा प्रश्न उठैत अछि जे बालककेँ पढ़बाक लेल भीख माँगबाक परिस्थितिमे छोड़ि देबाक कथा, जँ प्रेरक सुखान्त मात्र बनि रहए, तँ सामाजिक सुरक्षा-व्यवस्थाक विफलताकेँ आच्छादित करि सकैत अछि।

दिव्याङ्गताक आलोचना। बस-दुर्घटनाक बाद मनोजक हाथ कटब आ सन्तोषक दृष्टिहीन होएब नाटकमे दुःखक आकस्मिक घनत्व बढ़बैत अछि। सन्तोषक गीत सामाजिक सहानुभूति जुटबैत अछि, आ भाईक शिक्षाक निरन्तरता सुनिश्चित करब

ओकर सकारात्मक कर्तृत्व अछि। मुदा दृष्टिहीन सन्तोषक अपन शिक्षाक अवकाश शीघ्र छोड़ि देबाक प्रसङ्गक आलोचना आवश्यक अछि। मंचीय अनुकूलनमे ओकर स्वतन्त्र शिक्षण-संभावना आ पहुँच-व्यवस्थाक प्रश्न जोड़ल जाए सकैत अछि। दिव्याङ्गता केँ केवल दयाक पात्र बनाओल नहि जाए—ई पाठक आधुनिक पुनर्वाचनक एक जरूरी कसौटी अछि।

स्त्री-चरित्रक असन्तुलन। मीनाकेँ प्रायः एकरेखीय क्रूरता, लक्ष्मी-सन्तोषीकेँ सामञ्जस्य, राधाकेँ सेवा आ सोनीकेँ स्नेहक ध्रुव बनाओल गेल अछि। एहि विभाजनसँ मंचीय विरोध तीक्ष्ण होइत अछि, मुदा महिला पात्रसभक सामाजिक दबाव, मानसिक विकल्प आ आर्थिक स्वायत्तताक विस्तार कम भेटैत अछि। अतः सौतेल सम्बन्धक सभ कठिनाइकेँ स्त्रीक स्वभावक दोष मानबाक बदला पारिवारिक सत्ताक संरचनामे देखनाइ अधिक सम्यक् हएत।

माध्यमक प्रश्न। अङ्क तीनमे आरम्भिक विद्यालय-दृश्यसँ प्रशासनिक सेवाक सफलता धरि कथाक छलँग व्यापक अछि। समय-परिवर्तनक सङ्केत अपेक्षाकृत कम भेटैत अछि; ओतए गीत, पुनरावृत्ति आ प्रतीकात्मक पात्र-प्रवेश घटनाक बीच पुलक काज करैत अछि। नाटकक शिल्प एतए यथार्थक सावधान क्रमिकता नहि, लोकनाट्यक त्वरित न्याय-बोध चुनैत अछि।

‘अधिकार’: पनरह दृश्यक नागरिक-नाट्य

‘अधिकार’क नायक मंजूर बाढ़िसँ क्षतिग्रस्त आश्रय, अल्प आय आ ग्रामीण सत्ताक भ्रष्ट व्यवहारसँ पीड़ित रिक्शाचालक छथि। मुखिया चन्दन आ हुनक निकटस्थ अमरनाथ आवास-सहायता लेल घूस माँगैत छथि; विनोद नामक सहयोगी मंजूरकेँ आवेदन-प्रक्रियामे सहायता करैत छथि। मंजूर ब्लॉक, अनुमण्डल, जिला, नेता आ सूचना-आयुक्त धरि जाएब स्वीकार करैत छथि। अन्तिम चरणमे अखबारी चर्चा, सम्मान समारोह आ मुखियाक पञ्चात्तापसँ कथा पूर्ण होइत अछि।

‘अधिकार’क शीर्षक निजी लाभक आग्रहसँ पैघ अछि। मंजूरक अनुभव ई प्रश्न उठबैत अछि जे लिखित योजना आ व्यवहारिक पहुँचक बीच जे दूरी अछि, ओकरा कम के करत। एहि नाटकमे अधिकार केवल कानूनी पद नहि, नागरिकक बोलबाक साहस, प्रमाण माँगबाक क्षमता आ अपमान अस्वीकार करबाक सामर्थ्यक नाम अछि। तथापि नाटकक आवेदनसभमे उल्लिखित अति-संक्षिप्त जवाब-अवधि आ संस्था-प्रक्रियाकें विधिक रूपसँ प्रमाणित नियम नहि, नाटकीय प्रतिपादन बुझबाक चाही।

दृश्यवार पाठ-परीक्षण

दृश्य १: मुखिया चन्दनक दलानमे मंजूर जमीनपर बैसैत छथि आ कुर्सीकें उच्च पदक प्रतीक मानैत छथि। बीस हजार टाकाक आवास-सहायतामे पाँच हजार घूसक माँग सत्ताक अन्याय उजागर करैत अछि। कुर्सी आ भुइँक दूरी एहि नाटकक पहिल प्रभावकारी दृश्य-रूपक अछि।

दृश्य २: विनोदक संग संवादमे मंजूर पहिल बेर व्यावहारिक कानूनी उपायक दिशा पबैत छथि। ओ पढ़ल-लिखल नहि छथि, ताहू पर अपने पक्षक नैतिक वैधता बुझैत छथि। विनोद लिखित आवेदन द्वारा साक्षरता आ अधिकारक बीच सेतु बनैत छथि।

दृश्य ३: मुखिया समक्ष पहिल लिखित निवेदनमे आवासक आवश्यकता आ सूचनाक माँग एकसाथ उपस्थित अछि। चन्दनक उपहास संस्थागत निरङ्कुशताक मंचीय प्रदर्शन अछि। मंजूरक विरोध आब विनतीसँ लिखित प्रतिवादमे बदलि जाइत अछि।

दृश्य ४: विनोद बी.डी.ओ., एस.डी.ओ. आ डी.एम. लेल आवेदन बनबैत छथि। प्रशासनिक शृङ्खला नाटकमे एक प्रकारक सीढ़ी बनैत अछि—प्रत्येक नव दुआर आशा आ भय दुनू बढबैत अछि।

दृश्य ५: खण्ड विकास कार्यालयमे निवेदन उपेक्षित होइत अछि; आवेदन कूड़ामे फेकि देबाक क्रिया कागजी अधिकारक अवमाननाक सटीक दृश्य-बिम्ब अछि। एहि दृश्यसँ नाटकक संघर्ष सरकारी भाषा बनाम जीवित भूखक संघर्ष बनैत अछि।

दृश्य ६: अनुमण्डल कार्यालयक चक्कर न्याय लेल लगातार श्रमक लागत स्पष्ट करैत अछि। पहिने सँ निर्धन नागरिककेँ रोजी छोड़ि कार्यालय पहुँचनाइ स्वयं एकटा दण्ड थिक; एहि दृश्ये प्रशासनिक यात्राक आर्थिक पक्षक संकेत भेटैत अछि।

दृश्य ७: समाहरणालयमे कलक्टर चन्द्रकान्तक समक्ष मंजूरक निवेदन सेहो अपेक्षित फल नहि दैत अछि। निम्न कर्मचारीक व्यवहार आ ऊपरक उपेक्षा मिलि संस्थागत असंवेदनशीलता देखबैत अछि; एक कार्यालयक गलती नहि, क्रमिक व्यवस्था कृतिक आलोच्य बनैत अछि।

दृश्य ८: पन्द्रह दिनक थकानक बाद विनोद पहिने हार मानबाक सलाह दैत छथि, मुदा मंजूर आगू बढ़बाक इच्छा रखैत छथि। एतए नायकक धैर्य सहायक पात्रक यथार्थबोधसँ टकराइत अछि।

दृश्य ९: श्यामानन्दसँ भेंट होइत अछि आ सूचना-आयुक्त लेल निवेदनक बाट खुलैत अछि। न्याय-प्राप्तिमे लोकमध्यस्थक भूमिका देखाओल गेल अछि; मुदा एहन ‘भला नेता’क आकस्मिक हस्तक्षेपपर निर्भरता संस्थागत आलोचनाकेँ आंशिक रूपेँ व्यक्तिगत सद्भावपर टिका दैत अछि।

दृश्य १०: मंजूरक घरक अभाव, पत्नी नजीमाक चिन्ता, बटखर्चाक कमी आ एक मुठी मुरही नागरिक आन्दोलनक वास्तविक आर्थिक धरातल बनबैत अछि। ई नाटकक सभसँ मार्मिक दृश्यसभमे एक अछि, कारण प्रशासनिक प्रक्रिया घरेक भुखसँ जोड़ल गेल अछि।

दृश्य ११: सूचना-आयुक्तक कार्यालयमे मंजूरक प्रयत्नकेँ प्रशंसा भेटैत अछि। पत्रकारसभ हुनकर कथा सार्वजनिक करैत छथि। एहि दृश्यसँ निजी शिकायत सार्वजनिक नागरिक उदाहरणमे रूपान्तरित होइत अछि, यद्यपि निर्णायक आधिकारिक आदेशक विवरण कथामे विस्तारसँ नहि देल गेल अछि।

दृश्य १२: समाचार-माध्यमक प्रतिनिधि अखिलेशक ध्यान मंजूरक दिस आकर्षित होइत अछि। मीडिया एकरा असाधारण नागरिकक कथा बनबैत अछि; नाटकमे प्रचारक शक्ति

प्रेरक अछि, मुदा सुर्खीक सफलता आ वास्तविक संस्थागत सुधारक दूरी पर विचार जरूरी अछि।

दृश्य १३: मंजूरक परिवारक दिल्ली-यात्राक तैयारीमे बच्चासभक चञ्चल प्रश्न आ घरेलू विनोद अछि। नाजीमा, सलमा आदिक बातचीत नागरिक उपलब्धिक सामूहिक आनन्द देखबैत अछि, मुदा स्त्रीक स्वतन्त्र अधिकार-बोध एतए सीमित रहैत अछि।

दृश्य १४: दिल्लीक समारोहमे मंजूरकें पुरस्कार देल जाइत अछि। हुनक भाषणमे भ्रष्टाचारक जन्म आ पालन-पोषणमे सार्वजनिक सहभागिताक प्रश्न राखल गेल अछि। ई नाटकक वैचारिक उत्कर्ष अछि; मुदा प्रशस्ति-संवाद दीर्घ भऽ कऽ नाटकीय टकराव घटबैत अछि।

दृश्य १५: मुखिया बीस हजारक सहायता आ अपन दिससँ पाँच हजार देबाक प्रस्ताव लऽ कऽ अबैत छथि। मंजूर पहिने अवैध धन अस्वीकार करैत छथि, तकर बाद क्षमा लेल सार्वजनिक सद्व्यवहारक शर्त रखैत छथि। अन्तिम विनोद-वक्तव्य शिक्षा आ भ्रष्टाचार-निरोधकें जोड़ैत अछि।

“हमरा हरामक पाइ नै चाही” — मंजूर;

“जय हिन्द ! जय भारत !! जय शिक्षा !!!” — अन्तिम उच्चार;

‘अधिकार’क शिल्प आ नायकत्व

लोकतान्त्रिक नायकक निर्माण। मंजूरक विशेषता उच्च शिक्षा, आर्थिक शक्ति वा वंशगत प्रतिष्ठामे नहि, अपन न्यायसंगत माँग छोड़ि नहि देबाक संकल्पमे अछि। पहिल दृश्य सँ अन्तिम दृश्य धरि हुनकर भाषिक संकोच घटैत अछि। ओ प्रारम्भमे कुर्सीपर बैसबाक अधिकारी अपनेकें नहि मानैत छथि; अन्तमे समाजसँ वचन लैत छथि जे सभक संग नीक व्यवहार होअए। ई आत्म-सम्मानक धीमा अर्जन नाटकक सबसँ विश्वसनीय अन्तःक्रम अछि।

अभिलेख, आवेदन आ मंचीय वस्तु। एहि नाटकमे कागज, फाइल, दरखास, कुरसी, सिक्क्योरिटी-दुआर आ समारोहक मालासभ केवल सजावट नहि, सत्ताक मूर्त संकेत

अछि। चन्दनक कुर्सी आ मंजूरक जमीन पर बैसब, अधिकारीक फाइल आ कूड़ामे आवेदन फेकब, अन्तमे नागरिककेँ माला पहिराएब—ई क्रम वस्तु-चिह्नद्वारा अर्थक परिवर्तन करैत अछि। सीमित साधनवला रंगमंचक लेल ई शिल्प उपयोगी अछि।

मध्यस्थक नैतिकता। विनोद बिना मंजूरक सङ्घर्ष एतेक आगू नहि बढ़ैत। ई सहयोग अशिक्षित जनक नागरिक अधिकारपर प्रश्न उठबैत अछि: अधिकार संविधानसम्मत होएबाक अतिरिक्त आवेदन लिखि सकबाक व्यावहारिक क्षमता सेहो माँगैत अछि। मुदा विनोदक सहायता नायकक स्वतन्त्रताकेँ शून्य नहि करैत—अन्तिम निर्णय, यात्रा आ कष्ट मंजूर स्वयं सहैत छथि।

धर्म-सामाजिक बहुस्वरता। मंजूर, नजीमा आ हुनकर बालकसभक घरेलू दृश्यक संग विनोद, श्यामानन्द आ आन अधिकारीक सह-अस्तित्व नाटककेँ साझा नागरिक प्रश्नक भूमिमे अनैत अछि। पात्रक नामसँ सांस्कृतिक वैविध्य उपस्थित अवश्य अछि, मुदा कृतिक मूल द्वन्द्व सम्प्रदाय-आधारित नहि, आर्थिक-वर्गीय आ प्रशासनिक अछि। एहि विश्लेषणमे पाठसँ आगाँ जाति अथवा समुदाय सम्बन्धी असत्यापित अनुमान नहि कएल गेल अछि।

सुखान्तक सीमा। अधिकारीसभक प्रारम्भिक विफलताक उपरान्त पत्रकारिता, पुरस्कार आ मुखियाक त्वरित पश्चात्ताप सबटा समस्या सुलझाओल-सन करैत अछि। ई लोकनाट्यक नैतिक विजयक ढाँचा अछि। तथापि तकर मूल्य पर किछु प्रश्न आवश्यक अछि: आवेदनक अभिलेखीय स्थिति की भेल, घूसक शिकायतपर कोन प्रक्रिया चलल, आन पात्रसभक अनुभव बदलल कि नहि? नाटक एहि संस्थागत उत्तरसभपर अपेक्षाकृत मौन अछि।

संवाद, करुणा आ प्रतिरोध

दुनू नाटकक चयनित संवादमे परिवारक करुणा आ नागरिक प्रतिरोधक अलग-अलग भङ्गिमा भेटैत अछि। कथ्यक निर्णायक क्षणपर पात्रक वाणी नाटकीय अर्थकेँ तीव्र करैत अछि।

‘पहिने पढ़ैक जोगार कर बौआ’ कथन पैसाक उपयोगमे बालनायकक प्राथमिकता बतबैत अछि। ‘आन्हर भऽ नै पढ़ि सकलौ’ आत्मवृत्तान्त शिक्षाक इच्छासँ विच्छेदक पीड़ा बनैत अछि। दुनूकें संग पढ़लापर शिक्षा कतेक आवश्यक अछि आ पहुँचक साधन नष्ट भेला पर इच्छा अपने कतेक अपूर्ण रहि जाइत अछि, से स्पष्ट होइत अछि। मनोज द्वारा सफलता केर श्रेय सन्तोषकें देब सामाजिक प्रतिदानक नैतिक धुरी अछि।

‘अधिकार’मे ‘हमरा हरामक पाइ नै चाही’ राज्य-सहायताक उद्देश्य आ अनुचित व्यक्तिगत लाभक बीच नायकक भेद बतबैत अछि। ‘जय हिन्द ! जय भारत !! जय शिक्षा !!!’ नागरिक अधिकारक विमर्शकें अन्ततः शिक्षा-केन्द्रित सामूहिक आदर्शमे परिणत करैत अछि। मुदा शिल्प-दृष्टिसँ अन्तिम घोषवाक्य संवादक बहुअर्थता घटा कऽ एकरेखीय उपदेश बनबाक सम्भावना सेहो राखैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासक तुलनात्मक प्रसङ्ग

बालनाटकक कोटि निर्धारित करैत समय विषय मात्र नहि, लक्षित पाठक, भाषिक जटिलता, मंचनक समय, हिंसा-दृश्यक प्रस्तुति, बालपात्रक क्रियाशीलता आ बाल-दर्शकक भावनात्मक वहन-क्षमताकें देखबाक होइत अछि। ‘बाप भेल पिती’ मे बालक कथाक केन्द्र छथि; किछु प्रसङ्ग बालमञ्च पर अपनाएल जा सकैत अछि। मुदा सम्पूर्ण त्रिअङ्की नाटकमे वयस्क विवाह, पारिवारिक हिंसा, भिक्षाटन, गम्भीर दुर्घटना, चिकित्सा आ विवाह-सुखान्तक दीर्घ विस्तार अछि। तँ एकरा सीधा विशुद्ध बालनाटक घोषित करब विधागत दृष्टिसँ अशुद्ध होएत। ‘अधिकार’मे बालपात्र सहायक छथि; ओकर मूल केन्द्र अधिकार-अभियान आ प्रशासनिक व्यवहार अछि।

विदेहक उपलब्ध सन्दर्भ-संसार एहि भेदकें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि। फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (विदेह, अङ्क ५०, २०१०) आ योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा’ (अङ्क ७६, २०११) बाल-लोकपरम्पराकें अध्ययनक विषय बनबैत अछि। दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (अङ्क ११६, २०१२) बाल-पाठकक दृश्य-संसारक विमर्शक प्रमाण अछि। एहि

लेखसभक विदेह-अभिलेखमे स्पष्ट प्रविष्टि उपलब्ध अछि; मुदा एतए अप्राप्त मूल लेखक विस्तृत तर्क हुनकर नामपर आरोपित नहि कएल गेल अछि।

२०१२ क ‘सगर राति दीप जरय’क विदेह प्रतिवेदनमे बेचन ठाकुरक एहि पोथीक लोकार्पण-सूचना भेटैत अछि। एही प्रतिवेदनमे ‘बाल मण्डली/किशोर जगत’, ‘विदेह शिशु उत्सव’ आ आन नाट्यकृतिक उल्लेख सेहो अछि। एहिसँ बाल/किशोर साहित्य आ वयस्क सामाजिक नाटकक समकालीन प्रकाशन-परिसरक साक्ष्य भेटैत अछि; मुदा एहि एकल प्रतिवेदनसँ समूचा मैथिली बाल-साहित्यक ‘पहिल’ वा ‘सबसे पैघ’ इतिहास निर्धारित नहि कएल जा सकैत।

रमेश रञ्जनक ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत — चौआरि’ (विदेह, अङ्क १२६, १५ मार्च २०१३) जकाँ नामित आलोचनात्मक प्रविष्टि बालनाटककें पृथक अध्ययन-विषयक रूपमे दर्शबैत अछि। २०२६ मे गजेन्द्र ठाकुरक ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ (विदेह, अङ्क ४४७) बाल-पाठकक कर्तृत्व, सामाजिक दृष्टि आ उपयुक्तताक प्रश्नकें विस्तार दैत अछि। एही अङ्कक ‘नाट्य-नवग्रह’ बाल आ प्रौढ़ नाटकक पारस्परिक अन्तर-विचारक एकटा उपयोगी तुलनात्मक आधार प्रदान करैत अछि। ई अध्ययनसभ २०१२ क नाटकसँ कालक्रममे पछाति प्रकाशित भेल अछि; तँ हुनकर अवधारणा इहाँ उत्तरकालीन समीक्षा-कसौटीक रूपमे लगाओल गेल अछि, नाटककारक तत्कालीन घोषित मंशाक रूपमे नहि।

बाल-अनुभव आ नागरिक-अनुभव: तुलनात्मक कसौटी

पहिल कसौटी बालकक बोलबाक अधिकार अछि। ‘बाप भेल पिच्ची’मे कृष्णा अपन मायसँ एक्के पिताक संतानक प्रति भेदभावक प्रश्न करैत अछि; मनोज-सन्तोष विद्यालयक नामाङ्कन माँगैत छथि आ पाठकीय सहानुभूतिसँ आगाँ अपन निर्णय लैत छथि। ‘अधिकार’मे मंजूर प्रौढ़ छथि; तिनकर आवेदन सेहो अपमानित मनुष्यक आवाज पुनः हासिल करबाक कथा अछि। दुनू नाटक नागरिक शिक्षा लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा बालक आ प्रौढ़क अनुभूतिक अलग आकार बनल रहबाक चाही।

दोसर कसौटी गीत आ मंचीय सहभागिता अछि। पहिल नाटकक सार्वजनिक गायनक दृश्य बाल/किशोर रंगमञ्च लेल विशेष अनुकूल बनि सकैत अछि, कारण गीत कथन, लय, सामूहिक श्रोता आ न्याय-माँगकें एकठाम करैत अछि। दोसर नाटकमे दरखास पढ़ब, कार्यालय-द्वार पार करब आ सार्वजनिक सम्मान मुख्य मंचीय क्रिया अछि। एहि कारण लघु शैक्षिक रूपान्तर सम्भव अछि, मुदा पूर्ण नाटकक लक्ष्य-वर्ग स्वतः बदलि नहि जाइत।

तेसर कसौटी कष्टक प्रस्तुति अछि। बाल-दर्शक लेल घरसँ निकालब, हिंसा, दुर्घटना आ दिव्याङ्गताक प्रसङ्गकें संवेदनशीलता तथा आयु-अनुकूल दृश्य-योजनासँ खेलाएब आवश्यक अछि। कृतिक मौलिक यथार्थक पीड़ा घटाएब नहि, ओकर प्रदर्शनक मात्रा आ दृष्टिकोण सावधान करब अपेक्षित अछि। नाटककें नैतिक पाठक एकरेखीय माध्यम बनौनाइ बालकक अपन प्रश्न करबाक अधिकार घटा सकैत अछि।

रस, भाषा, रंग-विधान आ लोकसमाज

करुण आ प्रतिकार। ‘बाप भेल पित्ती’मे करुणरसक स्रोत बालकक भूख, तिरस्कार आ दुर्घटना अछि। बालकक गीत एहि करुणाकें सामूहिक करुणामे बदलैत अछि। तेसर अङ्कक सफलतासँ वीर-उत्साह आ शान्त-सुलहक भाव उपस्थित होइत अछि। ‘अधिकार’मे प्रारम्भिक दैन्यक संग प्रतिरोधक उत्साह बढ़ैत अछि; मंजूरक फाइल-दर-फाइल अभियान वीररसक लोक-नागरिक रूप रचैत अछि।

हास्य आ व्यङ्ग्य। विवाहक रीति, पण्डितक दक्षिणा, बालकक चञ्चल बोली, वीरभद्रक मिश्रित भाषा आ दिल्लीक यात्राक हास्य नाटकसभक गम्भीर कथ्यकें बीच-बीचमे विराम दैत अछि। तथापि किछु हास्य अत्यधिक लम्बा होइत अछि आ पात्रकें चुटकुलाक वाहन बनबैत अछि। शिल्पगत संयमसँ नाटकीय गति आ सामाजिक आलोचना दुनू तीक्ष्ण भऽ सकैत अछि।

बोलीक विविधता। ग्रामीण मैथिली मूल संवादक आधार अछि; प्रशासनिक शब्दावली, हिन्दी-प्रभावित पद, अंग्रेजी पदनाम आ संस्कृत-आश्रित मन्त्र ओकर भीतर आवाजाही

करैत अछि। एहि मिश्रणकें सरलीकृत ‘शुद्ध-अशुद्ध’क दोहरी कसौटीपर नहि, पात्रक वर्ग, पेशा, स्थिति आ विडम्बनाक रूपमे पढ़बाक चाही। उद्धरणमे मूल वर्तनी सुरक्षित रखल गेल अछि, जखन कि आलोचनात्मक गद्य मानक मैथिलीमे प्रस्तुत अछि।

मंचीय व्यावहारिकता। घरक दलान, बाट, विद्यालय, स्टेशन, अस्पताल, कार्यालय आ समारोह कएटा दृश्यस्थल बनबैत अछि। कम बजटक मञ्चनमे स्थिर चौकी-कुर्सी, प्रकाश-परिवर्तन आ ध्वनि-सङ्केतसँ स्थल-परिवर्तन सम्भव होएत। मुदा पहिल नाटकक अस्पताल/दुर्घटना आ दोसरक दिल्लीक सार्वजनिक समारोह अतिरिक्त नाट्य-सम्पादन माँगैत अछि। नाट्य-पाठ आ सफल मञ्चनकें समान नहि मानबाक चाही।

द्वन्द्व, अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक सीमा

१. परिवारक आदर्शीकरण: रामलालक परिवार तुलनाक मूल्यवान उपकरण अछि, मुदा अत्यन्त सहज सुलहसँ गम्भीर गृहस्थ-विवादक वास्तविक गहराइ घटैत अछि। दोसर दिस मीनाक व्यक्तित्वमे लगभग निरन्तर नकारात्मकता विरोधी पात्रकें सपाट बनबैत अछि।

२. उपलब्धिक न्याय: मनोजक प्रशासनिक सफलता बाल-दुःखक ऐतिहासिक प्रतिकार जकाँ रचल गेल अछि। मुदा असंख्य वञ्चित बालक उच्च पदपर नहि पहुँचथि; तिनकर अधिकारो कम नहि होइत। शिक्षा-न्यायक नैतिकता उपलब्धि-आधारित पुरस्कारसँ अधिक व्यापक अछि।

३. दिव्याङ्ग जीवन: सन्तोषक अन्धत्वक पछाति ओकर अध्ययनक निरन्तरता प्रश्नांकित अछि। भाईक सेवा द्वारा आत्मसम्मान स्थापित करबाक प्रसङ्ग भावुक अछि, मुदा स्वतन्त्र संसाधन, शिक्षण आ सार्वजनिक पहुँचक प्रश्न आर विस्तार माँगैत अछि।

४. लैङ्गिक पूर्वधारणा: मीनाक एकल-नकारात्मक प्रस्तुति, स्त्रीक चरित्रनिर्माणमे विवाह/सेवाक केन्द्रीयता आ आदर्श पत्नी-छविक प्रधानता पर आलोचनात्मक ध्यान जरूरी अछि। महिला पात्रक वैकल्पिक दृष्टि जोड़लापर कथाक सामाजिक क्षमता बढ़त।

५. अधिकारक प्रक्रियागत प्रस्तुति: 'अधिकार'मे सूचना-अधिकारक प्रावधानक रूपरेखा नाटकीय सरलतासँ देल गेल अछि। तँ एकरा कानूनी आवेदनक प्रमाणित नमूना नहि, अधिकारचेतनाक सांस्कृतिक पाठ बुझबाक चाही। शोधक विषय कानूनक इतिहास बनत तँ पृथक आधिकारिक अभिलेखक जाँच आवश्यक हएत।

६. वैयक्तिक सम्मानक समाधान: मंजूरक संघर्षक पुरस्कार आ मुखियाक क्षमा-याचनाक सुखान्त नाटकीय आश्वासन दैत अछि, मुदा व्यवस्था-सुधारक मापदण्ड पर अपर्याप्त अछि। भ्रष्टाचारक स्थायी प्रतिरोध लेल सामूहिक निगरानी आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक चित्र आओर पैघ भऽ सकैत छल।

७. दीर्घ व्याख्यात्मक संवाद: दोसर नाटकमे आवेदन-प्रपत्र आ अन्तिम भाषणक विस्तार कखनो-कखनो क्रियाशील नाट्यसँ अधिक घोषणात्मक वक्तव्य बनैत अछि। अभिनय-प्रधान प्रस्तुति लेल एहि अंशसभक छँटाइ होय तँ मूल तर्क बचा कऽ गति सुधरि सकैत अछि।

विदेहक समकालीन सन्दर्भ आ पाठकक स्थान

मूल पोथीक मे सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर बेचन ठाकुरक नाट्य-कार्य, ग्रामीण रंगमञ्च आ मैथिली नाटकक आलोचना-परिसरक विषयमे विस्तृत टिप्पणी करैत छथि। ई टिप्पणी लेखकक नाटकक भीतरक संवाद नहि, पोथीक स्वतन्त्र सम्पादकीय परिपाठ अछि। एहिमे 'अधिकार'क सामाजिक प्रसङ्ग तथा समकालीन रंगमञ्चक संस्थागत असमानता सम्बन्धी दाबी अछि; शोधमे ओकरा सम्पादकीय दृष्टिकोणक रूपमे पढ़बाक चाही।

विदेहक २०१२ क लोकार्पण-प्रतिवेदन पोथीक तत्कालीन परिसंचरणक बाह्य साक्ष्य दैत अछि। एहि आधारपर ई कहब संगत अछि जे पुस्तक मुद्रित प्रकाशनक संग सार्वजनिक साहित्यिक मंचपर सेहो उपस्थित छल। मुदा उपलब्ध प्रमाण मात्रसँ सभ प्रदर्शनक स्थान, संख्या, दर्शक-वर्ग वा प्रतिक्रिया निर्धारित करब सम्भव नहि; एहि विषयमे अलग मञ्चन-अभिलेखक आवश्यकता अछि।

निष्कर्ष

‘बाप भेल पित्ती आ अधिकार’क समग्र उपलब्धि ई अछि जे ई मैथिली रंग-भाषामे अधिकारहीन मनुष्यक दुःख आ प्रतिवादकें सार्वजनिक दृश्य बनबैत अछि। पहिल नाटकमे अनाथ-सन छोड़ल बालक घरक बाहर जनसमुदायक सहानुभूति पबैत अछि आ अध्ययनक स्वप्न बचबैत अछि; दोसर नाटकमे निर्धन रिक्शाचालक ग्रामसत्ता आ अधिकारीक उपेक्षाक बीच अपन नागरिक गरिमा सुरक्षित रखैत अछि। दुनू रचनाक अन्त सुखान्त अछि, मुदा ओकरा धरि पहुँचबाक बाट भूख, अपमान, श्रम आ संस्थागत असमानतासँ भरल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकनमे सम्यक् निष्कर्ष दू स्तरपर अछि। कथ्यक स्तरपर बेचन ठाकुर बालशिक्षा, अभिभावकीय उत्तरदायित्व, सामाजिक सहयोग, भ्रष्टाचार-विरोध आ अधिकारचेतनाक समर्थ पक्षधर छथि। शिल्पक स्तरपर लोकबोली, संवाद-प्रधान विन्यास, गीत, दृश्य-वस्तुक प्रतीकात्मकता आ सार्वजनिक नायकक निर्माण हुनकर विशेषता अछि; तहिना चरित्रक एकरेखीयता, असाधारण संयोग, अत्यधिक उपदेश आ संस्थागत समस्याक शीघ्र व्यक्तिगत समाधान हुनकर सीमा अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासमे पहिल नाटककें ‘बाल-अनुभव केन्द्रित सामाजिक नाट्य’क स्थान देब उचित अछि; विशुद्ध बालनाटकक कोटिमे राखबाक लेल लक्षित उमेर आ मंचनीय रूपान्तरक अतिरिक्त प्रमाण चाही। दोसर नाटक बाल-अधिकारक प्रत्यक्ष पाठ नहि, मुदा किशोर/युवा नागरिक-शिक्षामे उपयोगी वैचारिक संसाधन बनि सकैत अछि। ई विधागत सूक्ष्मता राखलापर पोथी मैथिली सामाजिक रंगमञ्च आ बाल-न्यायचेतना दुनू क्षेत्रक बीच एकटा महत्वपूर्ण संवाद-सेतु सिद्ध होइत अछि।

१.२५. नित नवल बेचन ठाकुर — ऊँच-नीच

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

जाति, शिक्षा आ सामाजिक समताक नाट्य-द्वन्द्व

उपक्रम: समीक्ष्य कृति, प्रश्न आ प्रतिपाद्य

‘ऊँच-नीच’क कथा केवल दू जातिक बीचक बाहरी टकराहट नहि थिक। ओकर भीतरी धुरी अछि—जन्मसँ भेटल सामाजिक दर्जा आ श्रम-शिक्षासँ अर्जित मानवीय योग्यता बीचक अन्तर। नाटक पूछैत अछि जे समाजमे प्रतिष्ठा निर्धारणक आधार वंश आ सम्पत्ति रहत, अथवा व्यवहार, श्रम आ ज्ञान? एहि प्रश्नक उत्तर लेखक पहिने गरीब दम्पतीक दैनन्दिन जीवन, फेर शिक्षा-संस्थान आ साहूकारीक सम्बन्ध, आ अन्तमे प्रेम-विवाह तथा सामुदायिक न्याय-व्यवस्थाक द्वारा खोजैत छथि। एहन रचना केँ केवल जातिवाद-विरोधी सन्देशपर सीमित केलासँ ओकर आर्थिक आ नाट्यगत जटिलता ओझराएत।

पाठक धुरी मङ्गल-मरनी-दुखनक परिवार अछि। हुनका सभक बाँसक काज, कोनी-पथिया बिनब, शुल्क जुटेबाक प्रयत्न, खेत-जमीन आ गहना गुमेबाक बाध्यता—ई सभ कथानकक ठोस भौतिक आधार बनबैत अछि। एकर समक्ष चन्द्रेश झाक सम्पन्न घर, बेटीकेँ चिकित्सक बनेबाक आकांक्षा, साहूकारीसँ लाभ, प्रतिष्ठाक उत्कण्ठा आ जातिगत अहङ्कार उपस्थित अछि। अन्तिम अङ्कमे दुनू घरक सन्तान वयस्क रूपमे भेटैत अछि आ परिवार-द्वयक पुरान सम्बन्ध नव नैतिक कसौटीपर परखल जाइत अछि।

बेचन ठाकुरक ‘ऊँच-नीच’ श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ २०१३ मे प्रकाशित सामाजिक नाटक अछि। तीन अङ्कमे क्रमशः छओ, नओ आ सात दृश्य अछि।

कथानकक समग्र स्थापत्यः श्रमसँ शिक्षाक बाट आ शिक्षासँ अधिकारक बाट पहिल अङ्कमे परिवारक भौतिक अभाव आ मरनीक विचारशील व्यवहार नाटकक समस्या निर्धारित करैत अछि। मङ्गल शराबक आदति, बाजारक दाम, बेटाक अध्ययन आ पारिवारिक अपेक्षाक बीच डोलैत अछि। मरनी ओकरा संयम, स्वास्थ्य आ पढ़ाइक

दिशामे मोड़ए चाहैत छथि। दुखनक शुल्क-समस्या एहन क्षण बनैत अछि जतए रोजीरोटी आ भविष्य-दूनू आमने-सामने ठाढ़ होइत अछि। गरीब परिवारक हस्तशिल्पमूलक उत्पादक बिक्रीमे ग्राहक आ भूमिपतिक असमान सामर्थ्य भीषण भऽ उठैत अछि। एतऽ आर्थिक सम्बन्ध, सम्मानसूचक सम्बोधन आ असहाय विनती एक्कहि दृश्य-रचनामे जुड़ैत अछि।।

दोसर अङ्क शिक्षा-परियोजनाक दीर्घकालिक दाम स्पष्ट करैत अछि। सफल परिणाम उत्साह दैत अछि, मुदा अगिला कक्षा, महाविद्यालय, प्रशिक्षण आ अभियान्त्रिकी शिक्षाक खर्च परिवारकेँ कर्जाक चक्रमे घोंघियबैत अछि। समृद्ध घरक बेटी उच्च शिक्षाक लेल नगरक दिशामे बढ़ैत अछि, जखन कि दुखनक पढ़ाइ ले मरनीक गहना आ परिवारक डीहक प्रश्न उठैत अछि। एतऽ समान प्रतिभाक सामाजिक असमान प्रवेश-द्वार मुखर होइत अछि। पुरान घरेलू समयक समानान्तर नब शहर-महाविद्यालय-रोजगारक संसार कथानकमे प्रवेश करैत अछि।।

तेसर अङ्कमे शिक्षित सन्तान पुरान जातिगत अनुशासनपर प्रश्न उठबैत अछि। दुखन अभियन्ता अछि; सम्पन्न घरक बेटी चिकित्सकीय शिक्षा प्राप्त कऽ आत्मनिर्णयक आकांक्षा रखैत छथि। प्रेम, नियुक्तिमे पक्षपात, परिवारक मर्जी, सामाजिक अपमानक भय आ प्रत्यक्ष हिंसा—सभटा संघर्ष एकाग्र करैत अछि। अन्तमे सार्वजनिक पञ्चायत ओहि निजी प्रेमसम्बन्धकेँ समुदाय-सम्बन्धी निर्णयमे बदलैत अछि। ई सुखान्त आशा देइत अछि, मुदा आर्थिक क्षतिक प्रतिपूर्ति आ हिंसाक विधिसम्मत परिणामक प्रश्न शेष रखैत अछि।।

दृश्यवार पृथक पाठविश्लेषण

पहिल अङ्क: दृश्य १ — घर-आँगन, श्रम आ मायक तर्क

मङ्गल आ मरनीक कोनी-पथिया बिनबाक क्रममे शुरू भेल गपशप स्वास्थ्य, मद्यपान, परिवार-व्यय आ दुखनक शिक्षापर पहुँचैत अछि। मरनी औपचारिक पढ़ाइ नहियो भेटलापर सुनल सामाजिक उपदेशकेँ अपन जीवनानुभवसँ जोड़ैत छथि। ओ मङ्गलकेँ

शराबक खर्च घटेबाक आ बेटाक पढ़ाइक चिन्ता करबाक दिशा देखबैत छथि। ई दृश्य नाटकक नैतिक नायकत्व मायक तर्कशील श्रमपर स्थापित करैत अछि। तथापि मङ्गलक बेटा-प्राथमिकता लिङ्गगत पूर्वाग्रहक उपस्थितिक सेहो संकेत अछि। घरक भीतरक भाषा एतऽ सरल उपदेश नहि, संसाधन-वितरणक बहस बनैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्क: दृश्य २ — शुल्क, वस्तु आ असमान मोल-भाव
दुखनक आवेदन वा अध्ययन-सम्बद्ध शुल्क परिवारकें हठात् आर्थिक संकटमे धकेलैत अछि। उत्पादक श्रमक वस्तु—कोनी, पथिया—बेचबाक योजना बनैत अछि, मुदा ग्राहकक सामने मङ्गलक मोल-भावक सामर्थ्य कम पड़ैत अछि। एतऽ वस्तुक मूल्य केवल बाजारक मूल्य नहि, एक बालकक भविष्यक प्राणदाम बनि जाइत अछि। ग्राहकक सौदेबाजी आ परिवारक विनती बीचक विषमता पूँजीक सामाजिक शक्ति दिखबैत अछि। नाटक गरीबीकें आलस्यक फल नहि, अनिश्चित आय आ असमान लेनदेनक नतीजा रूपमे स्थापित करैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्क: दृश्य ३ — हवेली, अपमान आ प्रतिरोधक पहिल स्वर
मरनी उत्पाद बेचबाक आशासँ चन्द्रेश झाक हवेली पर पहुँचैत छथि। कम दाम, देरीक आरोप, बकायाक दबाव आ स्त्रीपर हाथ उठेबाक धमकी एक्कहि दृश्यमे जकाँ-जकाँ बढ़ैत अछि। सम्पन्न घरक युवती द्वारा हस्तक्षेप स्थिति बदलैत अछि। एतऽ उच्चवर्गीय घर स्वयं एकरूप नहि अछि—पिता शोषणक पक्षमे छथि, बेटी अन्यायकें देखैत छथि। नाटककार भविष्यक जातिविरोधी सम्भावनाक बीज एहि पीढ़ीगत अन्तरमे रोपैत छथि। सीमा ई जे निर्णायक अधिकार तुरन्ते भूमिपतिक घरमे केन्द्रित रहैत अछि; मरनीक श्रमक सम्मान ओकर स्वायत्त शक्ति सँ नहि, परिवारक भीतरक हस्तक्षेपसँ अस्थायी रूपमे भेटैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्कः दृश्य ४ — शराब, पुरुष-संगति आ मायक भार

मङ्गल सुगर तकबाक बहानासँ रबीयाक संग मद्यपानक दिशामे फुसलि पड़ैत अछि। मद्यपानक बाद बोली आ व्यवहारमे विकृति, आपसी मारपीट आ मरनीक आक्रोश पारिवारिक संकटकेँ दृश्यात्मक बनबैत अछि। दृश्य हास्य आ करुणाक मिश्रण अछि; नशाक भाषिक उच्छृङ्खलता दर्शककेँ हँसाबैत अछि, मुदा शुल्क-जुटानक कठिनाई ओकर सामाजिक मूल्य पुनः स्मरण करबैत अछि। मरनीक सशर्त क्षमा घरक नैतिक अनुशासन निर्माण करैत अछि। जँ मंचनमे एहि दृश्यकेँ केवल मदिरापानक तमाशा बनाओल जाए तँ परिवारक शिक्षा-संकट ओझरा सकैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्कः दृश्य ५ — सूदखोरीक सूक्ष्म नाटक

चन्द्रेशक घरमे लाभ-हानिक आत्मालापक बाद सीतारामसँ सूद-मूलक हिसाब उठैत अछि। बहुते छोट रकम, जोड़-घटाव आ धनी-ऋणीक असमान आसन दैनन्दिन शोषणक हावभाव प्रस्तुत करैत अछि। चन्द्रेशक धार्मिकता आ धनलोलुपता बीच व्यङ्ग्यात्मक अन्तर पाठमे घना बनैत अछि। सार्वजनिक आदर प्राप्त व्यक्तिक भीतर शोषक प्रवृत्तिक उद्घाटन एहि दृश्यक प्रभाव अछि। तथापि सीतारामक एजेंसी सीमित अछि; लेखक आर्थिक नियन्त्रणक तन्त्र देखबैत छथि, मुदा वैकल्पिक सामूहिक प्रतिरोध विस्तृत नहि करैत छथि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्कः दृश्य ६ — परीक्षा आ ऋणक पूर्वपीठिका

दुखनक परीक्षा, अध्ययन-सामग्री आ आवश्यक खर्च फेर घरक बचतक प्रश्न खड़ा करैत अछि। मरनीक धैर्यपूर्वक बचत आ मङ्गलक बेचैनी एक-दोसरकेँ पूरक सेहो अछि आ टकरबैत सेहो। चन्द्रेशसँ लेनदेन आ अनुग्रहक अपेक्षा गरीबक निर्भरता देखबैत अछि। पहिल अङ्कक समापन पाठककेँ बुझबैत अछि जे केवल योग्य छात्रक मनोबलसँ सामाजिक गतिशीलता सम्भव नहि—संसाधनक निरन्तर व्यवस्था चाही। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्कः दृश्य १ — चाह-दोकानक लोकपरिसर

झिङ्गुरक चाह-दोकान महंगाइ, अध्ययन, युवा भविष्य आ प्रतिस्पर्धाक खुलल सार्वजनिक मंच बनि जाइत अछि। विभिन्न युवाक गप-सपसँ नाटक निजी परिवारसँ निकलि ग्रामीण शिक्षित समाजक विस्तृत चित्र दिशामे बढैत अछि। चाहक दामक छोट प्रश्न शिक्षा-बाजारक पैघ प्रश्नसँ गुँथल अछि। संवादक बहुलता सामाजिक संसार विस्तृत करैत अछि, मुदा कथानकक गति एतऽ शिथिल होएबाक जोखिमो अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्कः दृश्य २ — सम्पन्न घरक बेटी आ शैक्षिक निवेश

चन्द्रेश आ मनीषा बेटीकेँ भेटल शैक्षिक सफलतापर हर्ष व्यक्त करैत छथि। उच्च शिक्षाक लेल दरभङ्गा दिशा प्रस्थानक तैयारी होइत अछि। एकहि नाटकमे दुखनक पढ़ाइ लेल दैनिक मजदूरीक बिक्री आ सम्पन्न बेटी लेल संसाधनक सुरक्षित जोगार तुलना उत्पन्न करैत अछि। बेटी-शिक्षा सकारात्मक प्रयोजन अछि, मुदा पिताक भविष्य-कामनाक केन्द्रमे विवाह-प्रतिष्ठा आ सामाजिक रूपसँ ऊँच घरक चिन्ता सेहो रहैत अछि। बेटीकेँ उच्च शिक्षा देब सामाजिक समानता स्वीकार कऽ लेबाक पर्याय नहि—ई विरोधाभास दृश्यकेँ प्रखर बनबैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्कः दृश्य ३ — अगिला पढ़ाइ बनाम मायक स्मृतिगहना

दुखनक परिणाम प्रसन्नताक कारण बनैत अछि, मुदा अगिला पढ़ाइ लेल परिवार अपारदर्शी खर्चक सम्मुख अछि। मरनीक हँसली—माय-बापक स्मृति—गिरवी राखबाक सम्भावना भावनात्मक संघर्ष जन्मबैत अछि। बेटाक भविष्य आ मातृ-स्मृतिक संरक्षणमध्य केकरा प्राथमिकता भेटत? नाटक आर्थिक अभावक नैतिक मूल्य एतऽ महीन रूपमे पकड़ैत अछि। गहना बेचब मात्र पूँजी हस्तान्तरण नहि, पीढ़ीगत स्मृतिक विस्थापन अछि। दुखनक उत्कट पढ़ाइच्छा पाठकीय सहानुभूति दैत अछि, मुदा माताक निर्णय स्वयं संकटसँ मुक्त नहि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्कः दृश्य ४ — बन्धक-व्यवस्था आ सत्ताक दूरी

मरनी हँसली लऽ कऽ चन्द्रेश लग पहुँचैत छथि। धनी व्यक्तिघरक भीतर दूरी, स्वर, प्रकाश आ आशंका धन-सत्ताक नाटकीय सज्जा बनैत अछि। ऋणक शर्त आ अधिक सूद गरीबक वस्तुकेँ धनीक अधिकारमे सरकबैत अछि। पूर्वक पथिया-व्यापारक दृश्यसँ तुलना कएल जाए तँ शोषणक परिमाण बढ़ल अछि: पहिने हस्तशिल्पक मूल्य घटाओल जाइत छल, आब स्मृति-वस्तु बन्धक बनैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्कः दृश्य ५ — नामाङ्कनक टाका आ सम्बन्धक दबाव

मङ्गल आ दुखन मरनीक लौटबाक बाट जोहैत छथि; अन्तिम तिथि तथा विलम्ब-शुल्क समयकेँ आर्थिक विरोधी बनबैत अछि। भेटल रकमसँ नामाङ्कन सम्भव होइत अछि, मुदा परिवारक देनदारी समाप्त नहि। पछिला घरेलू हास्यक प्रसङ्ग दृश्यकेँ मानवीय रखैत अछि; तइयो कथाक पैघ चिन्ता उच्च शिक्षा धरि पहुँचनाइ अछि। लेखक पाठककेँ बुझबैत छथि जे गरीबक लेल कालबद्ध आवेदन-प्रणाली स्वयं बाधा बनि सकैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्कः दृश्य ६ — उच्च शिक्षाक संग नियन्त्रणक भय

सम्पन्न परिवारमे बेटीकेँ पढ़बाक लेल बाहर पठेबाक निर्णायक संग प्रतिष्ठा आ यौन-नियन्त्रणक आशंका बढ़ैत अछि। समाचारक आधारपर युवतीक स्वतन्त्रता सन्दिग्ध मानबाक प्रवृत्ति उभरैत अछि। मनीषा आ चन्द्रेशक संवादमे स्नेह, संशय, विवाह-प्रबन्धन आ परिवारक प्रतिष्ठाक अन्तर्द्वन्द्व अछि। ई दृश्य संकेत करैत अछि जे आर्थिक साधन होइतो स्त्रीक स्वायत्तता स्वतः सुरक्षित नहि होइत। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्कः दृश्य ७ — अभियान्त्रिकी शिक्षा आ असम्भव शुल्क

दुखन उच्चतर प्राविधिक शिक्षाक लक्ष्य बतबैत अछि। मङ्गल ओकर अभिप्राय बुझबाक प्रयास करैत अछि; ‘पढ़ब’ आ ‘अभियन्ता बनब’ बीच सामाजिक दूरी स्पष्ट अछि। घरक जनजातीय अथवा जातीय पहचान निर्णायक नहि; आर्थिक साधन आ जानकारीक अभाव अधिक सघन संकट बनैत अछि। एहि दृश्यमे पढ़ाई सामाजिक

गतिशीलताक परियोजना बनैत अछि, मुदा धन-अभाव ओकर पथ अस्थिर करैत अछि।
(ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ८ — डीहक मूल्य आ हस्ताक्षरक राजनीति
अभियान्त्रिकी शिक्षाक आर्थिक व्यवस्थाक चर्चा अन्ततः चन्द्रेशक कागजी लेनदेन धरि पहुँचैत अछि। दस्तखत आ औठा-निशानक माध्यमसँ चारि लाख टाका देबाक प्रसङ्ग अछि; बादक स्वगत कथनसँ मङ्गलक डीह आ हँसलीपर अधिकार स्थानान्तरित भेनाइ स्पष्ट होइत अछि। ई नाटकक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि: शिक्षा-सफलताक सम्भावना जमीनहीन भेनाइ सँ खरीदल जाइत अछि। कागत एतऽ निर्जीव वस्तु नहि, सत्ता-निर्माणक नाट्य-उपकरण अछि। ऋणक शर्तक सूक्ष्म कानूनी विवरण पाठमे पूर्ण पारदर्शी नहि, तँ एहि सम्बन्धकेँ ‘स्वेच्छापूर्वक समान विनिमय’ कहल गलत होएत।
(ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ९ — सरकारी गाछी आ विस्थापित परिवार
मङ्गल आ मरनी आब सरकारी गाछीमे सिरकी तानि रहैत छथि। अपार कष्टक बीच दुखनक नामाङ्कन भेल अछि; गाछीक अस्थायी वास शिक्षा-व्ययक ऐतिहासिक कीमतक दृश्य प्रमाण बनैत अछि। मणिकान्तक सहानुभूति, रबीयाक पुरान दुर्व्यवहारपर पश्चात्ताप आ मरनीक शिक्षापर आग्रह मिलि नाटककेँ सामाजिक समुदायसँ जोड़ैत अछि। एहि दृश्यपर दोसर अङ्क बन्द होइत अछि—परिवार आर्थिक रूपेँ खाली, मुदा भविष्यक भरोसासँ भरल। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य १ — शिक्षित युवाक पुनर्भेट
नव स्थानमे चिकित्सकीय शिक्षा प्राप्त युवती आ अभियन्ता दुखनक भेट होइत अछि। शिक्षित मन आ पुरान ग्रामसमाजक जातिगत दूरी बीच द्वन्द्व स्पष्ट होइत अछि। दुखनक माता-पिता द्वारा जमीन गुमेबाक कथा युवतीकेँ अपन पिताक आर्थिक आचरणसँ परिचित करबैत अछि। एतय प्रेमक सम्भावना मात्र आकर्षण नहि, साझा न्यायबोधक

दिशामे बढ़ैत अछि। तँओ दुनूक आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि बीचक असमानता सहजहि मेटि नहि जाइत। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य २ — नौकरीमे सौदा, पैरवी आ जाति

रेलवे नियुक्तिक प्रसङ्गमे दुखनसँ भारी रकमक माँग आ जातिक कारण अपमान देखाओल गेल अछि। तकर समानान्तर चन्द्रेश अपन बेटी लेल सामाजिक पहुँच तथा जातीय सम्बन्धक उपयोग करबाक चेष्टा करैत अछि। नाटक दू उम्मीदवारक समक्ष अलग-अलग संस्थागत द्वार खोलैत अछि: एक लग योग्यता अछि मुदा साधन नहि, दोसर लग सम्पर्क अछि। घटना रोजगार-व्यवस्थाक नैतिक विफलता उद्घाटित करैत अछि, मुदा नाटकमे ई प्रसङ्ग समग्र संस्थागत दस्तावेज नहि, एकटा व्यङ्ग्यात्मक सामाजिक दृश्य थिक—एहि अन्तरकैँ राखब जरूरी अछि। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ३ — प्रेम आ आन्तरिकीकृत हीनताबोध

दुखन आ सम्पन्न घरक युवतीक आत्मीयता धीरे-धीरे प्रेम-स्वीकार धरि पहुँचैत अछि। दुखन स्वयं अपन जातिगत दर्जाकें सम्बन्धक सम्भावनाक विरोधी मानबाक क्षण सँ गुजरैत अछि; युवती एहि हीनताबोधपर प्रश्न उठबैत छथि। एहि दृश्यक नाटकीय बल प्रेम-स्वीकार मात्र नहि, सामाजिक विभाजनक भीतर व्यक्ति-मनक दोहरी आवाज अछि। तथापि प्रेमक अभिव्यक्तिमे भावुक पुनरावृत्ति किछु समय मंचीय गति धीमी करैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ४ — शिक्षित बेटी आ कुल-प्रतिष्ठाक दीवार

घरमे विवाह-विचार शुरू भेलापर युवती समानता आ निजी इच्छाक आधारपर निर्णयक पक्ष लैत छथि। पिता कुल, जाति आ प्रतिष्ठाकें सर्वोच्च मानैत छथि। मनीषा आरम्भमे अपेक्षाकृत सहानुभूतिशील देखाइतो दुखनक जाति बुझिते स्वयं सशङ्क भऽ जाइत छथि। एहिमे नाटक एकटा महत्वपूर्ण सत्य पकड़ैत अछि: सैद्धान्तिक उदारता आ अपन घरक विवाहक प्रसङ्गमे व्यावहारिक उदारता अलग वस्तु अछि। चिकित्सक युवतीक व्यक्तित्व बौद्धिक स्वतन्त्रताक रूपमे उभरैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ५ — जातीय अपमानसँ योजनाबद्ध हिंसा

चन्द्रेशक स्वाभिमान आ प्रतिष्ठाभय क्रोधमे बदलैत अछि। दुखनकें शिक्षा प्राप्त करबाक लेल पूर्व आर्थिक लेनदेनक स्मृति उलटा 'उपकार'क दम्भ बनैत अछि। साथीक सहयोगसँ उत्पन्न झगड़ा आ मारपीटक घटना जातिगत शक्ति-प्रदर्शनक चरम रूप अछि। कथा एतऽ सत्याग्रह-समान तर्कवादसँ आगाँ शारीरिक हिंसाक धरातलपर पहुँचैत अछि। पठनीय प्रश्न ई अछि जे हिंसा उपरान्त न्याय निजी मेल-मिलापक सीमामे रहि सकत अथवा उत्तरदायित्वक औपचारिक संरचना चाहत। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ६ — शिक्षाक अर्थ आ सामुदायिक न्याय-खोज

मारपीटक बाद घायल दुखन अपन प्रेम आ जातिभेदविरोधी दृष्टि स्पष्ट करैत अछि। मरनीक मातृ-चिन्ता, मङ्गलक धीरज आ मणिकान्तक विवेक एक संग उपस्थित अछि। निर्णय तुरन्त प्रतिशोधक नहि, साझा विचार आ पंचायत दिशामे बढैत अछि। एहि दृश्यसँ शिक्षा केवल नौकरीक साधन नहि, सामाजिक समानताक आलोचनात्मक चेतना रूपमे पुनर्परिभाषित होइत अछि। मुदा नाटकक संवाद कखनहुँ भाषणात्मक भऽ जाइत अछि — आन्तरिक मनोदशाक सूक्ष्मता घटैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ७ — पञ्चायत, समता आ सुखान्तक सीमा

विद्यालय-परिसरमे बैसल पञ्चायत निजी विवादकें सार्वजनिक न्यायप्रश्न बनबैत अछि। सरपञ्च मोतीलाल दलित पात्रक पक्ष सुनैत छथि, जाति-धनसँ अलग गुण आ मानवीय सम्मानक आग्रह करैत छथि, आ विवाहक पक्षमे निर्णय दैत छथि। चन्द्रेशक स्वीकार, जयमाला, समधी-मिलन आ सामूहिक आशीर्वादसँ नाटक समाप्त होइत अछि। दृश्य लोक-रंगमंचक सामूहिक उत्सवभाव सृजैत अछि; रबीयाक हास्य-उपकथा कथाक तनाव घटबैत अछि। तथापि मारपीटक दण्ड, गैरबराबर आर्थिक सौदाक सुधार आ दलित परिवारक गुमल भूमि वापस करबाक प्रश्न अन्तिम समाधानमे स्पष्ट रूपेँ सुलझल नहि देखाइत अछि। एही कारण ई समताक आदर्शात्मक सुखान्त अछि, सम्पूर्ण सामाजिक न्याय सम्पन्न भऽ गेलाक तथ्यात्मक प्रमाण नहि। (ठाकुर, २०१३)।

पात्र-विवेचन: विरोधाभास, अभिलाषा आ कर्म

मरनी: अनौपचारिक ज्ञान, श्रम आ नैतिक दृढ़ता

मरनीकेँ केवल त्यागमयी मायक प्रतिमान बनाय देब ओकर नाट्यगत सक्रियताकेँ छोट करब होएत। ओ मङ्गलक मद्यपानपर प्रश्न उठबैत छथि, लोकसँ सुनल स्वास्थ्यविचार अपनबैत छथि, सन्तानक शिक्षाक पक्षमे संसाधन जुटबैत छथि, बाजारक ग्राहकसँ मोल-भाव करैत छथि, अपमानक सामने प्रतिवाद करैत छथि आ अन्ततः अपन माय-बापक स्मृतिगहना धरि जोखिममे रखैत छथि। एहि कर्मक अर्थ अछि जे स्त्रीक ज्ञान केवल विद्यालयक प्रमाणपत्रसँ नहि निर्धारित होइत अछि। श्रम, अनुभूति आ तर्क-क्षमता परिवारक प्रमुख बौद्धिक संसाधन बनैत अछि।

तथापि 'उदार माए'क छविमे जोखिम अछि। नाटक कतेको बेर मरनीसँ परिवारक त्यागक असीमित अपेक्षा करैत अछि; अपन देह, स्मृति, सम्पत्ति आ भावनाकेँ बचा राखबाक हुनकर स्वतन्त्र इच्छा सन्तानक अभिलाषाक अधीन चलि जाइत अछि। एक स्त्रीवादी पुनर्पाठ एहिसँ प्रश्न करैत अछि—गरीब मायक बलिदानक महिमामण्डन आ ओकर श्रमक न्यायपूर्ण सामाजिक मान्यता एक्कहि बात नहि थिक।

मङ्गल: पितृत्व, कमजोरी आ परिवर्तित जिम्मेवारी

मङ्गल एकरेखीय सज्जन पात्र नहि छथि। मद्यपानक आदत, पितृसत्तात्मक बोल, असंगठित निर्णय आ रबीयाक संगति हुनक कमजोरी अछि। दोसर दिस बेटाक अध्ययन लेल बचत, श्रमक निरन्तरता, पारिवारिक उद्वेग आ अन्तिम अङ्कमे विचारपूर्वक सामुदायिक समाधान खोजब हुनक जिम्मेदारीक उभरैत पक्ष अछि। एहि द्वैतक कारण ओ विश्वसनीय ग्राम्य पात्र बनैत छथि। हुनकर स्वाभिमानक सीमा खास महत्त्व रखैत अछि—व्यवसायिक ग्राहकक समक्ष ओ झुकैत छथि, मुदा बेटाक विकासक प्रसङ्गमे दृढ़ बनैत छथि।

दुखनः प्रतिभाक कथा आ सामाजिक गतिशीलताक विरोधाभास

दुखनक यात्रा शुल्क भरबाक मोहताज छात्रसँ अभियन्ता धरि जाइत अछि। एहि रेखामे बचपनक मेहनत, युवाक शिक्षा आ वयस्कक आत्मनिर्णय समाहित अछि। मुदा ओकर उपलब्धि व्यक्तिवादी 'मेहनत करब तऽ सभ सम्भव' बला कथा नहिः मायक गहना, डीहक परित्याग आ परिवारक विस्थापन एहि सफलताक सामूहिक दाम अछि। तेसर अङ्कमे ऊँच-नीचक प्रश्नकेँ निजी सम्बन्धमे लागू करब ओकर आलोचनात्मक परिपक्वताक सूचक अछि। दुखन समाजक मानदण्डसँ विद्रोह करैत अछि, मुदा कथाक किछु मोड़पर ओकर एजेंसी सार्वजनिक पंचायतक निर्णयसँ परिभाषित रहि जाइत अछि।

चन्द्रेश झाः दानक आवरणमे अधिग्रहण

चन्द्रेश धनक संचय, समाजमे सम्मान, बेटीकेँ श्रेष्ठ शिक्षा देब आ कुल-प्रतिष्ठा बचायब चाहैत छथि। हुनकर स्वतःसन्तुष्ट धारणा गरीबक दैनन्दिन कठिनाइकेँ बेसी दाम वा बकायाक प्रश्नक रूपमे देखैत अछि। ओ धनी पिता छथि, मुदा न्यायशील समाजपिता नहि। एकर समक्ष बेटीक विवाहविषयक स्वायत्तताक प्रश्न हुनक अधिकारक सीमा दर्शबैत अछि। चरित्रक महत्त्व एतऽ ई नहि जे ओ 'खराब व्यक्ति' छथि, बल्कि ई जे श्रेणीबद्ध समाजक लाभ ओहन व्यक्तिमे जमैत अछि, जे अपन व्यवहारकेँ सामान्य मानि लेइत अछि। अन्तिम मतपरिवर्तन भावनात्मक छूट दैत अछि, मुदा आरम्भिक शोषणक परिणामकेँ सहजहि समाप्त नहि करैत।

शिक्षित युवती, मनीषा आ पीढ़ीगत स्त्री-अन्तर

सम्पन्न परिवारक युवती चिकित्सकक प्रशिक्षण आ जीवनसाथीक निर्णयक अधिकार दूनू चाहैत छथि। पिता अपन आर्थिक निवेशकेँ विवाह-नियन्त्रणक आधार बनबैत छथि; बेटी शिक्षाकेँ नैतिक स्वायत्तताक आधार बनबैत छथि। मनीषाक व्यवहार बेसी जटिल अछि—ओ पिता-आक्रोशकेँ कखनहुँ नरम करैत छथि, मुदा बेटी द्वारा जाति-सीमा पार कएलापर परम्परागत पूर्वाग्रह सँ बाहर नहि रहि पबैत छथि। एहि त्रिकोणमे नाटक स्त्री-अनुभवक एकरूपता पर प्रश्न करैत अछि।

मणिकान्त, मोतीलाल, रबीया आ सहायक समाज

मणिकान्त मध्यस्थ विवेकक, मोतीलाल सार्वजनिक निर्णायक, आ रबीया लोकहास्यक प्रवाहक प्रतिनिधि बनैत छथि। मणिकान्त श्रमजीवीक कष्ट सुनबाक आ संवादक अवसर देबाक पात्र छथि। मोतीलाल पञ्चायतकेँ सार्वजनिक न्यायमंच बनबैत छथि, मुदा हुनकर निर्णय व्यक्तिगत उदारतापर कतेक निर्भर अछि, ई प्रश्न शेष अछि। रबीया हास्य उत्पन्न करैत छथि, आ शराबक प्रसङ्गमे मङ्गलक विपरीत विकल्प सेहो बनैत छथि। एहन हास्यक संग सावधानी आवश्यक अछि—दलित वा श्रमजीवी पात्रक अस्मिताकेँ मात्र मसखरीक सामग्री नहि बनाओल जाए।

सामाजिक प्रश्नक गहन विश्लेषण

जाति आ वर्ग: दू भिन्न, परस्पर सम्बद्ध सत्ता

नाटकक शीर्षकक ‘ऊँच’ आ ‘नीच’ पद केवल सामाजिक सम्बोधन नहि, संसाधनक विभाजनक प्रणाली अछि। कोन लोक उत्पादक श्रम करत, कोन लोक मूल्य निर्धारित करत, केकरा कर्जक शर्त सुनाओल जाएत, केकर शिक्षा सहज होएत आ केकर विवाह सम्मानजनक कहल जाएत—ई पाँच अलग प्रश्न एककहि जाति-वर्ग सम्बन्धमे जुड़ैत अछि। दुखनक अभियन्ता भऽ जेबो ओकर पूर्व सामाजिक दर्जाक कलङ्क क्षणमात्रमे मेटि नहि सकैत अछि। ओ रोजगारमे सेहो भेदभाव भोगैत अछि, आ प्रेमसम्बन्धमे सेहो। एहि अर्थमे ‘योग्यता’ जातिक स्वचालित विनाश नहि करैत; सामाजिक संस्थाक संरचना बदलबाक अतिरिक्त आवश्यकता नाटकक घटनासँ सामने अबैत अछि।

तथापि लेखक वर्गक विश्लेषण कतेको स्थानपर विशिष्ट धनी पुरुषक लोभपर केन्द्रित रखैत छथि। चन्द्रेशक व्यक्तिगत उदारता आ पञ्चायतक स्वीकारसँ कथाक अन्त होइत अछि। जँ जाति असमान भूमि-अधिकार, पदानुक्रम आ प्रतिष्ठाक संस्थागत रूप अछि, तँ एक विवाह ओकर अन्तिम समाधान नहि होएत। ई अन्तर नाटकक आदर्श आ ओकर सामाजिक यथार्थक बीच सार्थक आलोचनात्मक तनाव अछि।

श्रम, वस्तु आ जमीनक क्रमिक विस्थापन

पथिया आ कोनीसँ आरम्भ भेल आर्थिक उपकथा हँसली धरि पहुँचैत अछि आ फेर डीहक विक्रयक रूप लैत अछि। वस्तु-क्रम नाटकक राजनीतिक अर्थव्यवस्था रचैत अछि: दैनिक उत्पादन → बचत → स्मृतिगहना → घर-जमीन → अस्थायी सिरकी। एहि क्रममे परिवार भौतिक सम्पत्तिसँ वञ्चित होइत अछि, मुदा सन्तानक शिक्षा-पूँजी अर्जित करैत अछि। लेखक शिक्षा-सफलताक महत्त्व घटबैत नहि छथि; ओ देखबैत छथि जे हाशियाक परिवारक लेल ओकर दाम दुहरा अछि—शुल्क देब आ सामाजिक जोखिम सहब। चन्द्रेशक घरमे बढ़ैत धन आ मङ्गलक घरमे घटैत अचल सम्पत्ति समानान्तर दृश्य-योजना बनबैत अछि।

शिक्षा: मुक्तिक आशा आ संस्थागत असमानता

दुखनक विद्यालयी जीवनक बाधा शुल्क आ परीक्षा-तिथि अछि; महाविद्यालयीक बाधा बड़ राशि; रोजगारक बाधा पैरवी आ रिश्तक माँग। शिक्षा संस्था ओकरा बौद्धिक योग्यता दैत अछि, मुदा जाति-वर्गक पुरान तन्त्र नव दरवज्जापर भेटैत अछि। समृद्ध बेटी उच्च शिक्षाक लाभ लैत छथि, मुदा घरमे जाति-आधारित विवाह-नियन्त्रणसँ जूझैत छथि। दूनू शिक्षायात्राक तुलना उपयोगी अछि: शिक्षा स्त्री आ दलित युवक दूनूक लेल मुक्ति-सम्भावना अछि, तथापि मुक्तिक शत्रु अलग-अलग रूपमे लौटैत अछि।

पितृसत्ता, स्त्री-कर्तृत्व आ प्रेम-विवाह

मरनीक निर्णयक अधिकार परिवारक अर्थ-संकट सीमित करैत अछि। शिक्षित युवतीक निर्णयक अधिकार पिता कुलप्रतिष्ठा सीमित करैत छथि। दूनू स्त्री अलग वर्गीय स्थानपर रहितो स्वायत्तताक संघर्षमे जुड़ल छथि। प्रेम-विवाहक कथानक जाति-सीमा तोड़ैत अछि, मुदा स्त्रीक अधिकारकें केवल प्रियतमक चयन तक सीमित नहि राखब चाही। ओकर पेशागत भविष्य, देहपर हिंसाक भय, घरक सम्पत्तिमे अधिकार आ समाजक सार्वजनिक भागीदारी सेहो प्रश्न थिक। नाटक एहि सभ प्रश्नक संकेत दैत अछि; हर प्रश्नकें पूरा विकास देबाक जगह नहि दैत।

धर्म, दिखाबा आ आर्थिक नैतिकता

धनी पात्रक धार्मिक आचरणक चर्चा आ गरीबक प्रति कठोर व्यवहार बीचक दूरी नाटकमे व्यङ्ग्य रचैत अछि। धार्मिक यात्रा वा पूजा सामाजिक दायित्वसँ मुक्तिक प्रमाण नहि—ई विचार चन्द्रेशक लोभसँ उत्पन्न विरोधाभासक भीतर उभरैत अछि। नाटक धार्मिक विश्वास पर समग्र आक्रमण नहि करैत; ओ आचरणक नैतिक विसंगति देखबैत अछि। एहि कारण एकरा नैतिक व्यङ्ग्यक रूपमे पढ़ब अधिक प्रमाणसङ्गत अछि।

नाट्यशिल्प, रंग-भाषा आ मंचनीयता

बेचन ठाकुरक रचना दृश्य-आधारित, संवादप्रधान आ ग्रामीण जीवनक क्षुद्र वस्तु-स्थिति सँ संचालित अछि। हस्तशिल्प, कुरसी, डायरी, कागज, हस्ताक्षर, गहना, रुपया, सिरकी, विद्यालय आ पञ्चायती आसन बारम्बार अर्थ-बाहक मंच-सामग्री बनैत अछि। वस्तु-प्रयोगक अर्थपूर्ण क्रम पात्रक सामाजिक दूरी दर्शककेँ बिना विशद व्याख्यान सेहो बुझा सकैत अछि। उदाहरणार्थ मङ्गलक घरक कार्यरत हाथ आ चन्द्रेशक दलानक आरामक आसन एक्कहि मंच-संरचनामे प्रभावकारी विरोध प्रस्तुत कऽ सकैत अछि।

संवाद स्थानीय जीवनक उद्गार आ मुहावराक कारण भूमिसँ जुड़ल अछि। साधारण गप-सप एकटा आर्थिक वा नैतिक मुद्दाक दिशामे मुड़ि जाइत अछि। मरनीक प्रश्नोत्तर, मङ्गलक शराब-सम्बद्ध असंगति, रबीयाक विनोद, चन्द्रेशक आदेशक भाषा आ मोतीलालक पञ्चायती घोषणा एक-दोसरसँ भिन्न सामाजिक स्वर रचैत अछि। तेसर अङ्कमे नौकरीक प्रसङ्गमे मैथिली आ हिन्दीभाषी प्रशासनिक संवादक अन्तर सेहो सामाजिक प्रभुत्वक ध्वनि बनि उठैत अछि।

शिल्पक सीमा सेहो चिन्हित होएबाक चाही। अनेक दृश्य पात्रद्वारा नीतिक प्रत्यक्ष उद्घोषणा पर टिकैत अछि; एक्कहि मन्तव्यक पुनरावृत्ति पात्रक भितरी द्वन्द्वक जटिलताकेँ कम करैत अछि। दोसर अङ्कक किछु विस्तृत गप-सप, तेसर अङ्कक प्रेम-स्वीकार आ अन्तिम पञ्चायती भाषणकेँ मंचनमे सटीक सम्पादनक आवश्यकता भऽ

सकैत अछि। किन्तु मूल प्रकाशित पाठक आलोचना आ रंगमंचीय संक्षिप्तीकरणक प्रस्ताव अलग प्रक्रिया अछि; मूल रचनाकेँ अभिलेखीय रूपमे अक्षुण्ण राखब आवश्यक अछि।

नाटकमे हास्य सामाजिक शक्ति-सम्बन्धपर खुलि सकैत अछि। मद्यपान आ रबीयाक भूख-सम्बद्ध हास्य अभिनयमे अतिरेक भेला पर उत्पीड़नक गंभीरता कम कऽ सकैत अछि; संयमित अभिनय एहि विरोधाभासकेँ अधिक अर्थवान बनाओत। स्त्री पात्रक सम्मानपूर्ण प्रस्तुति, जातिसूचक अपमानक आलोचनात्मक सन्दर्भ, हिंसाक गैर-रोमानीकरण आ पञ्चायतमे सन्तुलित देह-स्थिति मंच-निर्देशनक केन्द्रीय काज बनत। समय-विस्तार महत्वपूर्ण अछि: प्राथमिक शिक्षासँ व्यावसायिक रोजगार धरि नायकक आयु बदलैत अछि। तीन अङ्कक स्थापत्य एहि काल-विस्तारकेँ सम्भव बनबैत अछि, मुदा दृश्य-सन्धिक बीच समयक संक्रमण, पाठकीय धैर्य आ पात्रक परिपक्वताक क्रम स्पष्ट करबाक भार मंचक प्रकाश-ध्वनि आ अभिनयपर रहत। एहि संदर्भमे ‘ऊँच-नीच’ पुस्तक-पाठ आ लोकमंचक बीच सहज गमनशील, मुदा सम्पादन-संवेदनशील नाटक थिक।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहास: तुलनात्मक विवेचन

मौखिक शिशु-लोकसाहित्यसँ लिखित विधा धरि

फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (विदेह, अङ्क ५०, २०१०) शिशु-गीत आ लोकपरम्पराक मौखिक प्रसारपर बल दैत अछि। ओ लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी लोक-साहित्यक भेद प्रस्तुत करैत छथि। ई परम्परा परिवारकेँ बाल-समाजीकरणक पहिल शिक्षालय मानैत अछि। ‘ऊँच-नीच’क मङ्गल-मरनीक घर एहि लोक-ज्ञानक पारम्परिक स्थानक आधुनिक रूप देखबैत अछि, मुदा ओकर प्रमुख लक्ष्य शिशु-मनोरंजन नहि; विद्यालयी प्रमाणपत्र, सामाजिक असमानता आ नागरिक प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। एहि कारण दूनू विधाक स्रोत-परिवेश समान होइतो पाठकीय उद्देश्य भिन्न अछि।

योगानन्द झाक 'मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा' (विदेह, अङ्क ७६, २०११) कथा-रुचि, सहज भाषा, ज्ञान आ मनोरंजनक विविध उदाहरण देइत अछि। ओ लोककथा-संचयनमे कथाक मूल भाषा सुरक्षित रखबाक महत्त्व देखबैत छथि। एहि प्रतिमानसँ 'ऊँच-नीच'क ग्रामीण बोलीक साहित्यिक मूल्य समझल जा सकैत अछि; मुदा लोककथाक संक्षिप्त कौतूहल-विधान आ एहि नाटकक दीर्घ सामाजिक द्वन्द्व एक्कहि प्रकारक पाठ नहि अछि।

चित्रकथा, बालनाटक आ दलित नायकत्वक दृश्यपरम्परा

दुर्गानन्द मण्डलक २०१२क विदेह-लेख 'नेना लेल सुन्दर चित्रकथा' प्रीति ठाकुरक चित्रकथा मार्फत गोनू झा, सलहेस, दीना-भदरी, छेछन आदि लोकचरित्रकेँ नव पीढ़ी लग पहुँचैबाक प्रशंसा करैत अछि। उक्त समीक्षामे सामाजिक रूपसँ हाशियाक नायक आ अन्तरजातीय प्रेमक कथाक उल्लेख भेटैत अछि। एतऽ सादृश्य महत्त्वपूर्ण अछि: 'ऊँच-नीच'मे दुखन आधुनिक शिक्षित दलित नायक अछि, जखन कि अनेक चित्रकथा लोकस्मृति आ लोकनायकक द्वारा मानवीय सम्मानक प्रश्न उठबैत अछि। विधा आ प्रस्तुति अलग, मुदा वर्चस्वक प्रतिमानक विरुद्ध कथा-नायक चयनक सांस्कृतिक प्रयत्न तुलना योग्य अछि।

विदेहक पोथी-संग्रहमे मुन्ना जीक 'तीन टा बाल नाटक' अलगसँ 'मैथिली बाल साहित्य' वर्गमे सूचीबद्ध अछि; एहि संग्रहमे बेचन ठाकुरक 'ऊँच-नीच'केँ स्पष्ट रूपमे 'नाटक' लिखल गेल अछि। एतऽ सूचीकरण स्वयं उपयोगी विधागत साक्ष्य अछि। बालनाटक कहबाक कसौटी केवल बाल-चरित्रक उपस्थिति नहि: बाल अभिनेता द्वारा सम्भव मंचन, सीमित अवधि, वयसोपयुक्त हिंसा-चित्रण, बाल-मनक सक्रियता, भाषाक ग्रहणीयता आ चरित्रक अनुभवजन्य गति सेहो अपेक्षित अछि। ई कसौटी पर 'ऊँच-नीच'किशोर दर्शक लेल चुनिन्दा दृश्य सहित उपयोगी, मुदा सम्पूर्ण रूपमे व्यापक सामाजिक रंग-रचना अछि।

समकालीन आलोचना आ बाल-साहित्यक विस्तारित सीमाना

विदेहक शोध-सूचीमे रमेश रञ्जनक 'मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—

चौआरि' शीर्षक लेख (अङ्क १२६, २०१३) दर्ज अछि। ई अभिलेख बालनाटकक पृथक आलोचनात्मक शब्दावलीक उपलब्धताक संकेत देइत अछि; उपलब्ध पृष्ठक शीर्षक आ भीतरक सामग्रीक असंगति देखते एहि लेखसँ बिना पाठसमर्थन कोनो विशेष वैचारिक स्थापना आरोपित नहि कएल गेल अछि। २०२६ मे प्रकाशित 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र' बाल-पाठकक कर्तृत्व, जातिगत प्रतिनिधित्व, लोकगाथा आ औचित्य-विचारक आलोचनात्मक भाषा विस्तृत करैत अछि। एहि पछिला विमर्शकें २०१३क कृतिपर इतिहाससम्मत सावधानीसँ लागू कएल जा सकैत अछि; वर्तमान सिद्धान्तक प्रभाव पूर्वकालीन लेखकपर सिद्ध मानल नहि जाए। [५, ६]

एहि तुलनाक निष्कर्ष तीन स्तरक अछि। पहिल, 'ऊँच-नीच'मे विद्यार्थी दुखनक जीवन-कथा बाल-अधिकार आ शिक्षा-अधिकारक अध्ययन लेल विशिष्ट उपयोगी अछि। दोसर, जाति-आधारित अपमानक नाट्यचित्र किशोर दर्शककें सामाजिक असमानताक कठिन प्रश्न पुछबाक अवसर दैत अछि। तेसर, प्रौढ़ मद्यपान, शारीरिक हिंसा, साहूकारी-लेनदेन, दीर्घकालिक प्रेम आ पञ्चायतक निर्णय एकरा सामान्य आरम्भिक बालनाटक बनबासँ रोकैत अछि। अतः पाठकवर्गक निर्धारण वयस आ शिक्षण-उद्देश्यसँ करबाक चाही, लेखकक विधागत पहिचान उलटाकऽ नहि।

बेचन ठाकुरक रंग-परम्परा आ विदेहक आलोचनात्मक सन्दर्भ

आशीष अनचिन्हार २०११ मे प्रकाशित 'बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी'क समीक्षामे नाटककारक रंग-निर्देशन, गामक मंचक परम्परा आ सामाजिक अन्धविश्वास-विरोधी स्वरपर विचार करैत छथि। ओ बेचन ठाकुरक नाटक सभक मंचनपरक प्रकृति आ साहित्य-रंगक परस्पर सम्बन्ध चिन्हित करैत छथि। ई पूर्ववर्ती समीक्षा 'ऊँच-नीच'कें पढ़बाक लेल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि—बेचन ठाकुरक नाटक केवल पोथीक भीतर सिमटल रचना नहि, लोकमंचक सम्भावनासँ जुड़ल सामाजिक लेखन

अछि। मुदा ‘छीनरदेवी’क विषय आ ‘ऊँच-नीच’क शिक्षा-जाति-सम्पत्ति विमर्श अलग अछि; दुईटा कृतिक विषयगत एकरूपता मानब भूल होएत।

विदेहमे प्रकाशित दलित साहित्यक सौन्दर्य-विमर्श आ नाट्य-समीक्षाक नव प्रयास मैथिलीमे श्रेणीक्रमक आलोचना आ मंच-प्रदर्शनक प्रश्नक समकालीन शब्दावली देइत अछि। ई सन्दर्भ एहि नाटकक पात्रकेँ दया-प्राप्त गरीब नहि, सामाजिक अधिकारक दावेदार मानि पढ़बाक अवसर दैत अछि। तथापि परवर्ती समीक्षा-ग्रन्थकेँ मूल नाटकक प्रामाणिक अर्थक निर्णायक प्रमाण नहि, तुलनात्मक आलोचनात्मक उपकरण मानल गेल अछि। [८, ९]

पाठक आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमा

प्रथम उपलब्धि पात्रक वर्गीय अन्तरक दृश्यात्मक स्थापन अछि। मङ्गलक घरमे पथिया बिनबाक ठठेरी आ चन्द्रेशक आरामक दलान जखन एक्कहि सामाजिक भूगोलमे रहैत अछि, तखन ‘ऊँच-नीच’ शीर्षक भौतिक अर्थ प्राप्त करैत अछि। दोसर उपलब्धि मरनीक सक्रियता अछि; ओ परिवारक कर्तव्यक पहिल संगठक छथि आ कठिन समयमे सामाजिक तर्कक पहिल स्रोत सेहो। तेसर उपलब्धि शिक्षाक दीर्घकालिक खर्चक चित्रण अछि—बालकक भविष्य सामान्य अभिलाषा नहि, पीढ़ीक श्रम-निवेशक विषय अछि। चारिम उपलब्धि आर्थिक रूपान्तरण आ जातिगत असमानताक अनुपातहीन सम्बन्ध अछि: बेटा अभियन्ता बनैत अछि, मुदा सम्बन्ध आ रोजगारक दरवज्जापर जातिक प्रश्न फेर उपस्थित अछि।

पाँचम उपलब्धि सार्वजनिक पञ्चायतक रंगमंचीय प्रयोग अछि। विद्यालयक परिसरमे बैसल पंचायत स्थल-प्रतीक रूपमे प्रभावशाली अछि—जतए पढ़ाई सामाजिक प्रश्न उठेबाक कौशल दैत अछि, ओतहि सामाजिक न्यायपर बहस होइत अछि। छठम उपलब्धि बेटीकेँ शिक्षित बनाबय चाहनिहार पिताक आधुनिकता आ अन्तरजातीय विवाहसँ आतंकित कुल-रक्षाक पुरान आग्रह बीच विरोधाभासक चित्रण अछि।

सीमाक पहिल पक्ष उपदेशक पुनरावृत्ति अछि। अनेक संवाद सामाजिक सुधारक सैद्धान्तिक तर्क स्पष्ट करैत छथि, मुदा पात्रक स्वाभाविक अनुभव कखनहुँ विचारक वाहक बनि रहि जाइत अछि। दोसर सीमा हिंसाक परिणामक सरलीकरण अछि। दुखनपर सामूहिक आक्रमण एक पैघ अन्याय अछि, जकर बाद पञ्चायत तुरन्त विवाहक समाधान देइत अछि; आपराधिक उत्तरदायित्व, पीड़ितक सुरक्षित पुनर्वास आ संस्थागत अन्यायपर विस्तृत विचार नहि उभरैत। तेसर सीमा सम्पत्तिक प्रश्नक अधूरापन अछि—डीह आ हँसलीक लूट-समान असमान लेनदेन निजी मेल-मिलापक कारण स्वतः न्यायसङ्गत नहि भऽ जाइत।

चारिम सीमा स्त्री-स्वतन्त्रताक विवाहकेन्द्रित परिभाषा अछि। चिकित्सक युवतीक शिक्षित नागरिक रूप होइतो अन्तिम सुखान्तमे पेशागत जीवन आ दीर्घकालीन स्वायत्तता गौण भऽ सकैत अछि। पाँचम सीमा दलित सामूहिक संगठनक कम दृश्यता अछि; नायकक व्यक्तिगत प्रतिभा आ प्रेमक साहस अधिक उजागर अछि, सामूहिक सुधारक रूपरेखा कम। ई आलोचना नाटकक ऐतिहासिक योगदान नकारैत नहि, बल्कि ओकर नीतिपरक सुखान्तक सीमा पहचानैत अछि।

शैक्षिक आ नाट्य-प्रयोगक सम्भावना

उच्च माध्यमिक आ विश्वविद्यालय स्तरपर एहि नाटकक चुनिन्दा दृश्य आर्थिक असमानता, श्रमक सम्मान, शैक्षिक पहुँच, जातिगत पूर्वाग्रह, विवाहमे सहमति आ समुदायिक न्यायपर चर्चाक आधार बनि सकैत अछि। मङ्गल-मरनीक घरेलू बहसक संग चन्द्रेशक बाजार-दृश्य पढ़ाओल जाए तँ विद्यार्थी समझि सकत जे निजी परिवारक शिक्षा-इच्छा बाजारक असमानता सँ कोना प्रभावित होइत अछि। दोसर अङ्कक हँसली-डीह-सिरकी क्रम संसाधन-अधिकारक दृश्य-व्याकरण सिखेबाक अवसर दैत अछि। तेसर अङ्कक रोजगार आ पञ्चायत प्रसङ्ग संस्थागत न्याय आ निजी मेल-मिलाप बीचक अन्तर स्पष्ट करए सकैत अछि।

पूर्ण रंगमंचीय प्रस्तुति लेल अङ्कान्तक समय-छलाङ्ग स्पष्ट करब, संवादक पुनरावृत्तिक सन्तुलन, जातिसूचक अपमानक संवेदनशील अभिनय, हिंसाक नियंत्रित मंचांकन आ अन्तिम निर्णयक बाद आर्थिक न्यायक अनुत्तरित प्रश्नकेँ दर्शक-संवादमे खोलब उपयोगी होएत। विद्यार्थी मंचनक सन्दर्भमे मूल नाटकक हिंसक आ प्रौढ़ प्रसङ्गक वयसोपयुक्त प्रस्तुति आवश्यक अछि। एहि प्रयोगक उद्देश्य मूल पाठक भाषाकेँ फेर सँ लिखि देब नहि, बल्कि सामाजिक चिन्तनक विविध स्तर बुझब थिक।

उपसंहार

‘ऊँच-नीच’क महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई एकटा गरीब परिवारक शिक्षायात्राकेँ मिथिलाक सामाजिक श्रेणीक्रमक मूल प्रश्न बनबैत अछि। मङ्गल-मरनीक श्रम, दुखनक उच्च शिक्षाक प्यास, चन्द्रेशक संचयी धनतन्त्र आ युवतीक आत्मनिर्णयक पक्ष मिलि एक सामाजिक त्रिभुज रचैत अछि: ज्ञान, सम्पत्ति आ सम्मान। नाटक बारम्बार सिद्ध करैत अछि जे शिक्षा मनुष्यकेँ क्षमता दैत अछि, मुदा समाज ओहि क्षमताकेँ सम्मान देबाक संस्कार सीखबाक आवश्यकता रखैत अछि। ई रचनाक नैतिक उपलब्धि थिक।

आलोचनात्मक निष्कर्ष अधिक कठोर अछि। विवाह-मिलन जातिभेदक विरुद्ध प्रतीकात्मक विजय अवश्य अछि, मुदा जमीनक अधिग्रहण, ऋणक दबाव, रोजगारमे पक्षपात आ शारीरिक हिंसाक सम्पूर्ण प्रतिकार नहि। नाटक अतः सामाजिक न्याय सम्पन्न भऽ गेलाक दस्तावेज नहि; सामाजिक न्यायक आवश्यकता रंगमंचपर तीव्र रूपमे रखनिहार कृति अछि। मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासक संग एकर सार्थक सम्बन्ध शिक्षाक प्रश्न आ युवा कर्तृत्वमे निहित अछि, मूल विधागत पहिचान प्रौढ़ सामाजिक नाटक रूपेँ सुरक्षित रहैत अछि। एहने विभाजित, प्रमाणाधारित पाठक आधारपर ‘ऊँच-नीच’ मैथिलीकेँ जाति-वर्गसम्बद्ध जनजीवनक एक महत्त्वपूर्ण रंगमंचीय अभिव्यक्ति प्रदान करैत अछि।

१.२६. नित नवल बेचन ठाकुर — बिसवासघात

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

भरोसाक विघटन, भूमिअर्जन आ लोकन्याय

प्रस्तावना: नाटकक साहित्यिक प्रश्न

‘बिसवासघात’क शीर्षक अपन विषयक घोषणा करैत अछि। विश्वास केवल निजी सद्गुण नहि, सामाजिक व्यवहारक आधार होइत अछि: भाइक प्रति भाइक भरोसा, पति-पत्नीमे सलाहक स्वीकार, पिता-पुत्रमे अधिकारक सम्बन्ध, नागरिकक प्रशासनपर आस्था आ समाजक न्यायक संस्थापर विश्वास। नाटक एहिमे प्रत्येक स्तरक टूटन देखबैत अछि। आर्थिक मुआवजाक घटना निजी सम्पत्तिक झगड़ा बनिकऽ नहि रहि जाइत; ओ सत्ता आ धनक असमान वितरणक सार्वजनिक नाटक बनि उठैत अछि।

ई पाठ नाटक अछि, उपन्यास अथवा बाल-कथा नहि। मुद्रित अधिकार-पृष्ठपर अङ्ग्रेजीमे सेहो “Biswasghat, Play by Bechan Thakur” देल अछि। शिल्पक आधार पात्र-नामक संग संवाद, कोष्ठकमे अभिनय-निर्देश, प्रवेश-प्रस्थान, पटाक्षेप आ अङ्क-दृश्यक विभाजन अछि। तँ समीक्षाक प्राथमिक आधार कथासार नहि, घटना आ मंचपर देखाओल कृत्यक परस्पर सम्बन्ध अछि।

एहि शोध-पाठक प्रमुख प्रश्न अछि: नाटक कोना देखबैत अछि जे कुटुम्बीय विश्वास भ्रष्टाचारक सुरक्षाकवच बनि सकैत अछि; प्रतिरोध करैत युवक कतेक हृदय नैतिक आदर्श बनैत अछि; स्त्री-पात्रक विवेक आ अवाज केना अस्वीकार होइत अछि; आ अन्तिम समाधानमे नीतिसम्मत न्याय तथा प्रशासनिक बल-प्रयोगक बीच कोन विरोधाभास रहि जाइत अछि?

कथाक तीन अङ्क: भरोसासँ न्याय धरि

पहिल अङ्क: कागजक सत्तामे बदलैत विश्वास

पहिल दृश्य तीनू भाइक स्नेहपूर्ण चाह-परिसर अछि। राम किशुन, लखन आ सियाराम सड़कक निमित्त जमीन अधिग्रहणक सूचना पर विचार करैत छथि। राम किशुन अपन

सरकारी पहुँच देखबैत दुनू भाइक कागज मँगबैत छथि; एहिठाम भरोसा एकटा वाचिक आश्वासन नहि, अधिकारपत्र सौंपबाक भौतिक कृत्य बनैत अछि। दोसर दृश्य लखनक पत्नी लक्ष्मीक सावधानी प्रस्तुत करैत अछि। ओ जानकारी राखनिहार लोकसँ पुछलाक बादे जमीनक कागज देबाक सलाह दैत छथि, मुदा लखन 'स्त्रीक बात' कहि अविश्वास करैत छथि। बादक दुर्घटनाक प्रथम पूर्वाभास एहि अनसुनीमे निहित अछि।

होलीक भेंट-भोज, अफसरक चाह-आतिथ्य, भू-अर्जन कार्यालय आ अभियन्ताक संग लेन-देन—ई दृश्यसभ रिश्तकें कोनो एकटा नितान्त गोपनीय अपराध नहि, बल्कि सामाजिक सम्पर्कक विस्तारक रूपमे स्थापित करैत अछि। नाटकक पाँचम दृश्य विशेषतः निर्णायक अछि: मूल मुआवजा लखनक अस्सी हजार, सियारामक एक लाख आ राम किशुनक एक लाख चालीस हजारक आधार पर कुल तीन लाख बीस हजार छल; अभियन्ताक हेरफेरसँ ओ क्रमशः आठ, दस आ चौदह लाख, अर्थात् कुल बत्तीस लाख होइत अछि। अभियन्ता आठ लाख अग्रिम माँगैत अछि; पाछाँ भू-अर्जन कर्मचारी आ चपरासीक लेन-देन सहयोगी बनैत अछि।

कागजक प्रमाण आ रकमक सत्यता घूसक गोपनीय विनिमयमे खोइ जाइत अछि। राम किशुन भाइसभकें भुगतानक वास्तविकता नुका कऽ लखनकें पचास हजार आ सियारामकें सत्तर हजार दैत छथि। ओ अपन कथित असफल प्रयत्न, असाध्य सरकारी तन्त्र आ दयालु सहयोगक अभिनय करैत छथि। रामलाल समाचारपत्र, कार्यालयी अभिलेख आ धनराशिक अन्तर जोड़िकऽ फाँक पकड़ैत अछि। ओ वयस्कक आज्ञापालन आ तर्कसम्मत सत्यापनक बीच नव पीढ़ीक द्वन्द्वक प्रतिनिधि बनैत अछि।

पहिल अंकक अन्तिम चरणमे सरपंच गंगारामक दरबार रामलालक दावाकें प्रमाण-अभाव आ पिता लखनक असहयोगक कारण खारिज करैत अछि। बात तकर बाद घर धरि पहुँचैत अछि: लखनक घरेलू हिंसा आ रामलालक हिंसक प्रत्युत्तर, सादा कागजपर जबरदस्ती ओँठाक निशान, अधिकारक लडाइकेँ पीड़ितक पक्षमे रहितो नैतिक जटिलता देइत अछि।

दोसर अङ्कः संस्थागत पहुँच आ प्रतिरोधक हत्या

दोसर अंकमे लखन अपन बेटासँ डरि राम किशुनक आश्रय लैत छथि। रामलालक दरखास्त अनुमण्डल अधिकारी आ जिला अधिकारी धरि पहुँचैत अछि, जतयसँ थानापर जाँचक आदेश जाइत अछि। मुदा थाना कतेको बेर शिकायतक स्थल सँ लेन-देनक स्थल बनि जाइत अछि। अन्वेषणक जिम्मेदारी सम्भारनिहार कर्मचारी पुलिसिय अधिकारकेँ दबाव, चाय-पानी आ रकमक सौदाबाजीमे बदलैत छथि।

एहि अंकमे जिला अधिकारी बीजेन्द्रक व्यक्तित्व पहिने तुलनात्मक रूपसँ जाँच करय चाहनिहार अधिकारी जकाँ उभरैत अछि; आ राम किशुन अपन राजनीतिक-पुलिसीय सम्पर्क लगा शिकायत दबाबय चाहैत छथि। मुदा दबाव बढ़िते ओ बीर नामक सहयोगीक मार्फत अपराधी सरदार राजाक टोली सँ रामलालक हत्या करबाबयक योजना बनबैत छथि। योजना, अग्रिम धन, बहलाबा आ हत्या नाटकक सर्वाधिक भयानक प्रसङ्ग अछि। चाह-दोकानसँ रामलालकेँ दोस्तीक आवरणमे निकालल जाइत अछि; निर्दोष युवक अपन हत्यारासँ नैतिक अपील करैत अछि, मुदा ओकर हत्या भऽ जाइत अछि।

एहि हिंसा सँ संघर्षक स्वरूप बदलैत अछि। आब लक्ष्य केवल मुआवजाक बँटवारा नहि, अपराधक सत्य आ मृतकक न्याय अछि। लक्ष्मीक मातृत्व, छोट बेटा झामलालक चिन्ता, मामा लक्ष्मणक सक्रियता आ गाँवक लोकसभक प्रतिक्रिया क्रमशः एकटा सामूहिक प्रतिरोधक रूप ग्रहण करैत अछि। लेखक एहि फेरबदलकेँ केवल घटना-वृद्धि लेल नहि, निजी संघर्षक सार्वजनिक परिणतिक रूपमे गढ़ने छथि।

तेसर अङ्कः समाज, प्रशासन आ अपूर्ण क्षतिपूर्ति

तेसर अंकमे लक्ष्मण आ झामलाल समाजक बैसार करबैत छथि। पहिल पंचैतीक असफलता पाछाँ दोसर पंचायतमे तथ्य आ सार्वजनिक उपस्थिति बढ़ैत अछि; लखनक दुःस्थिति आ रामलालक हत्या सामूहिक विवेकक मुद्दा बनैत अछि। राम किशुन क्षतिपूर्तिक सामाजिक प्रस्तावक विरुद्ध प्रतिरोध करैत छथि, तँ संघर्ष धरना-प्रदर्शन आ उच्च प्रशासनिक हस्तक्षेप धरि पहुँचैत अछि।

एहि क्रममे प्रशासनिक प्रक्रियाक चित्रण स्वयं अन्तर्विरोध सँ भरल अछि। अधिकारी आ पुलिसक कार्रवाईमे अभिलेख-जाँच आ अपराधी धरपकड़ अछि, मुदा संगहि अपमानजनक मारि-पीट आ दण्डक असंवैधानिक रूप सेहो प्रस्तुत अछि। सरदारक गिरोहक मृत्युकें नाटकीय समाधानक उपलब्धि मानबाक प्रवृत्ति प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। कानूनक मर्यादा आ न्यायिक सुनवाईक बिना दण्डक प्रशंसा करब नाटकक आलोचनात्मक सीमामे गनल जाएत।

जनता दरबारमे चारि गोटेक जिम्मेदारी निश्चित कएल जाइत अछि: राम किशुन पाँच लाख, बीर एक लाख, अभियन्ता उमा शंकर दू लाख आ भू-अर्जन कर्मचारी सुशील दू लाख—कुल दस लाख टाका लखनकें देबाक घोषणा होइत अछि। अन्तिम दृश्यमे रकमक सुपुर्दगी आ राम किशुनक क्षमा-याचना भऽ जाइत अछि। तथापि अन्तिम दुःख पैसा नहि, रामलालक अभाव अछि। मुदा मृतकक हत्या, सरकारी धनक हेराफेरी आ अपराधी-प्रशासनक उत्तरदायित्वकें केवल निजी माफी वा स्थानीय आर्थिक समाधानसँ समाप्त मानब न्यायिक अर्थमे पर्याप्त नहि अछि। नाटक स्वयं एहि अनिर्णीत प्रश्नकें पढ़बाक अवसर दैत अछि।

शीर्षक, प्रतीक आ वस्तुक नाटकीय अर्थ

‘बिसवासघात’क मूल विडम्बना ई अछि जे भरोसा आ छल एके संबंधमे पलैत अछि। राम किशुनक विनम्र भाषण आ सेवाभाव आन्तरिक हिसाब-किताबक विपरीत अछि। लखनक अन्धविश्वासकें केवल निजी मूर्खता कहि टारि देब उचित नहि: परिवारिक ज्येष्ठता, सामाजिक प्रतिष्ठा, सरकारी दफ्तरसँ भय आ कानूनी प्रक्रियाक अपरिचय संयुक्त रूपसँ ओकरा असुरक्षित बनबैत अछि।

कागज एहि नाटकक केन्द्रीय मंच-वस्तु अछि। पहिने मूल भूमि-दस्तावेज, फेर नोटिस, फेर संशोधित रकम, चेक, कार्यालयी पंजिका, प्रार्थना-पत्र, पंचायतक सूचना, सादा कागजपर औंठाक निशान आ अन्तमे निर्णय—हरेक कागज ककरो स्वामित्व वा कथ्यक वैधता बनबैत वा बिगाड़ैत अछि। एखन तक जे विश्वास मौखिक संबंधपर टिकने

छल, ओ लिखित प्रमाण आ अभिलेखक ताकतसँ टकराइत अछि। एहि अर्थमे ई 'दस्तावेजी नाटक'क विशेषता रखैत अछि, भले शिल्प पारम्परिक संवादप्रधान हो।

चाह आ अतिथि-सत्कार बारम्बार लौटैत अछि। आरम्भमे चाह भाइक मेलक चिन्ह अछि; बादमे अफसरक लग चाह घूसक प्रस्तावक तैयारी बनैत अछि; पुलिस आ मध्यस्थक चाह आतिथ्य आ सत्ताक समझौताक औजार बनि जाइत अछि; आ हत्या सँ पहिने बीर रामलालकेँ चाय-दोकानसँ अपन संग लैत अछि। एके वस्तुक अर्थक एहि क्रमिक परिवर्तनसँ नाटक रोजमर्रा जीवनमे छिपल विश्वासघातक संकेत दैत अछि।

अस्सी हजार, आठ लाख, पचास हजार, पाँच लाख आदि रकमसभ केवल सांख्यिक ब्यौरा नहि। रकमक गणित नाटकमे सत्ता-सम्बन्धक नाडर अछि: जे कागज पढ़ि सकैत अछि, अधिकारिक फाइल तक पहुँच सकैत अछि, आ दफ्तरक लोक खरीद सकैत अछि, ओहि लोकक हिस्सा बढैत अछि। आर्थिक अन्याय तँ जमीनक मोल मात्र नहि, ज्ञान आ पहुँचक असमानतासँ सेहो जनमैत अछि।

पात्र-परख: एकरेखीय नायक-विरोधीसँ आगाँ

राम किशुन: उदारताक अभिनय आ हिसाबक हिंसा

राम किशुनक चरित्रक शिल्प दुनू स्तरपर चलैत अछि। बाहरी व्यवहारमे ओ आदरपूर्ण, मिलनसार, चाय-पानी पियाबनिहार आ अधिकारीसँ चिन्ह-पहिचान रखनिहार भाय छथि। आन्तरिक उद्देश्य आर्थिक लाभ, प्रमाणक नियन्त्रण आ चुनौती दमन अछि। ई द्वैध रङ्गमंचपर प्रभावी भऽ सकैत अछि, कारण प्रेक्षक किछु दृश्य बाद ओकर वास्तविकता जनैत छथि, मुदा लखन आ सियाराम अन्हारमे छथि। नाटकीय व्यङ्ग्यक केन्द्र एतहि अछि।

राम किशुन अपराधक कारण केवल लोभी व्यापारी नहि, व्यवस्थाक खामीक लाभ उठेनिहार पात्र छथि। ओ अभियन्ताक संग साझेदारी करैत, दफ्तरक कर्मचारीकेँ रिश्ता दैत, पुलिसक मनमानीक संग सौदा करैत आ अन्ततः हत्या करबैत छथि। किन्तु अन्तमे ओकर पश्चात्ताप अचानक नैतिक परिवर्तन जकाँ उपस्थित होइत अछि। प्रश्न ई नहि जे

अपराधी सुधरि सकैत अछि कि नहि; प्रश्न ई अछि जे एतेक गंभीर हिंसाक उपरान्त मात्र सार्वजनिक शर्म आ शपथकेँ पर्याप्त प्रायश्चित्त कहब कतेक विश्वसनीय अछि।

लखन आ सियाराम: विश्वासक पीड़ित, मुदा विवेकक दायित्वसँ मुक्त नहि लखनक भोलापन नाटकक दयनीय आ आलोच्य दुनू पक्ष अछि। ओ घरक स्त्रीक तर्क सुनैत नहि छथि, पुत्रक सूचना नकारैत छथि, तथ्य जाँचबासँ कतरैत छथि। पुनः पत्नीपर हिंसा करैत छथि; एहि कारण ओकर पीड़ित होयब मात्र ओकर नैतिक निर्दोषता सिद्ध नहि करैत अछि। सियारामक भूमिका मुख्यतः सहमति, अविश्वासक विलम्ब आ छोट-छोट आशाक माध्यम अछि। दुनू पात्र बतबैत छथि जे सामाजिक अधिकारक रक्षा लेल नातेदारीक संग स्वतन्त्र जाँच आवश्यक अछि।

रामलाल: अधिकारक साहस, क्रोधक अतिरेक आ शहीदीकरण रामलाल हेराफेरीक गणित पुछैत अछि, समाचारपत्र पढ़ैत अछि, दफ्तर जाइत अछि आ दरखास्त दैत अछि। ओकरा आधुनिक नागरिक-विवेकक वाहक कहब उचित अछि। तथापि ओकर व्यवहार पूर्णतः अहिंसक नहि। माएक रक्षा करैत पिता पर चढ़ब, सादा कागजपर जबरदस्ती निशान लेब, क्रोधक भाषण—ई प्रसङ्ग ओकरा निर्द्वन्द्व आदर्श बनय सँ रोकैत अछि। लेखक ओकर साहसक महत्ता देखबैत छथि; समीक्षकेँ एहि साहसक संग हिंसाक आलोचना सेहो जोड़य पड़त।

रामलालक हत्या पाठमे नैतिक उग्र बिन्दु अछि। मरबाक पूर्वक ओकर अपराधीकेँ ‘ईमानदारी’क बात कहब प्रतिरोधक भाषाक चरम रूप अछि। तथापि एकटा युवकक मृत्युकेँ केवल ‘भरोसाक मूल्य’कहि छोड़ब ओकर जीवित नागरिक दावाकेँ विस्मृत करैत अछि। अन्तिम अंकमे मृतकक स्थान झामलाल आ लक्ष्मणकेँ भेटैत अछि, मुदा रामलालक स्वायत्त अवाज स्मृतिमे रहि जाइत अछि।

लक्ष्मी, झामलाल आ लक्ष्मण: अनसुनी चेतावनी सँ सामाजिक नेतृत्व लक्ष्मी आरम्भमे धरातलीय विवेकक प्रतिनिधि छथि। ओ अधिकारिक कागत बुझि कऽ देबाक सलाह दैत छथि, किन्तु पितृसत्तात्मक निर्णय ओकरा खारिज करैत अछि। तकर

बाद ओ घरेलू हिंसा सहैत छथि, बेटाक हत्यासँ आहत होइत छथि, आ सार्वजनिक न्याय लेल परिवारकें प्रेरित करैत छथि। मातृत्वक शोक महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा स्त्रीक राजनीतिक बुद्धिकें केवल आँसूक पाछाँ नहि छिपायल जाउ—एहि पाठक एक आवश्यक नारीवादी पुनर्पाठ एहीमे अछि।

झामलाल अपन भाइक अभावमे पढ़ाइ, जीविका आ सामाजिक संलग्नताक चिन्ता करैत अछि। लक्ष्मणक आगमन कथानकमे संगठनक क्षमता बढ़बैत अछि। ओ व्यक्तिगत शिकायतकें जनबैसार, धरना आ जिला प्रशासनक समक्ष प्रमाणयुक्त मांगमे बदलैत छथि। तथापि निर्णायक शक्ति फेर एकटा प्रभावशाली पुरुष अधिकारीक हाथमे समर्पित भऽ जाइत अछि; जनसंगठनक उपलब्धि आ राज्यक संरक्षणक बीच तनाव अन्तिम अंकक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि।

प्रशासनिक पात्र: भ्रष्ट तन्त्र आ आदर्शाधिकारीक संकट

सुशील, उमा शंकर, थाना-कर्मचारी, राजनीतिक पहुँच रखनिहार अधिकारी आ सरपंच—सभ व्यक्ति एकरूप नहि, मुदा ओकरा सभक बीच सत्ता आ रकमक सम्बन्ध बारम्बार बनैत अछि। विशेष प्रश्न जिला अधिकारी बीजेन्द्रक अछि: ओ शिकायत सुनैत छथि, दस्तावेजक अर्थ बुझैत छथि, मुदा पुलिसिय मारि-पीट आ गैर-न्यायिक दण्डक समर्थन करैत छथि। ओकर ई अन्तरविरोध नाटककें एकदम सरल ‘ईमानदार अधिकारी बनाम भ्रष्ट समाज’क ढाँचामे रखब सँ रोकैत अछि।

संवाद, बोली, समय आ रङ्गमंचीय संरचना

संवाद नाटकक प्रमुख बल अछि। परिजनक घरेलू बातचीतमे मैथिलीक अपनत्व, उलाहना आ कटुता अछि; थाना आ दफ्तरमे मिश्रित कार्यालयी बोली, हिन्दी-प्रभावित वाक्य आ हुक्मी स्वर अछि; अपराधी गिरोहक संवादमे धमकी आ गर्व अछि। एहि सामाजिक-भाषिक अन्तरक कारण एके मंचपर अलग-अलग शक्ति-सम्बन्ध सुनाइ पड़ैत अछि। किन्तु किछु पात्रक दीर्घ उपदेशक कारण संवाद अभिनयक जीवित टक्कर छोड़ि घोषणापत्र जकाँ सेहो भऽ जाइत अछि।

तीन अङ्क आ चालीस दृश्यक विस्तार सामाजिक परिसरक जटिलता देखबैत अछि। छिन्न-भिन्न स्थान—दलान, ओसारा, चाह-दोकान, भू-अर्जन कार्यालय, थाना, सरपंचक बैठक, समाहरणालय, अपराधीक अड्डा, सामुदायिक भवन—सामाजिक नाटकक बहुस्तरीय मानचित्र बनबैत अछि। मुदा लगातार प्रवेश-प्रस्थान, पर्दा-परिवर्तन आ लम्बा कार्यालयी वार्तालापक कारण पूर्ण मंचनमे समय, दृश्य-संयोजन आ गति चुनौतीपूर्ण होयत।

नाटकमे पृष्ठभूमिक हिंसा नहि, प्रत्यक्ष मंच-निर्दिष्ट मारि-पीट आ हत्या देल अछि। एहि परम्परागत लोकनाट्य-जकाँ प्रभावक संग आधुनिक रङ्गमंचक प्रश्न जुड़ैत अछि: भयंकर हिंसाकेँ सीधे मंचपर देखाएब वा ध्वनि, प्रकाश, नेपथ्य आ प्रतिक्रियाक माध्यम सँ संकेत करब? उचित रंग-व्यवस्थासँ घटना प्रभावशाली भऽ सकैत अछि; अत्यधिक प्रत्यक्ष हिंसा नाटकक सामाजिक प्रश्नकेँ सनसनीमे बदलि सकैत अछि।

परिहासक स्तरपर चाहबला लालूक बारम्बार ‘माने जे’, थानाक गप-सप आ अधिकारीक औपचारिकता दृश्यगत विश्राम दैत अछि। मुदा रामलालक हत्या सँ बाद अनावश्यक हास्य अथवा मारि-पीटक प्रदर्शन करुण प्रभावकेँ तोड़ि सकैत अछि। नाट्यरूपान्तरणमे सन्तुलित सम्पादन सम्भव अछि; मूल पाठक पूर्ण अध्ययनमे ई घटनासभ हटेनाइ उचित नहि।

अर्थ-व्यवस्था, सत्ता, जाति-वर्ग आ नागरिकता

भूमि-अधिग्रहणक घटना आधुनिक विकासक अँतरी सच्चाइ प्रस्तुत करैत अछि: सड़क सार्वजनिक सुविधा मानल जाइत अछि, मुदा सड़क बनबाक प्रक्रिया ककरो बास-डीह, खेती, घर आ सामाजिक स्थिरता हटा दैत अछि। मुआवजा एहन स्थितिमे महज कीमत नहि, विस्थापित जीवनक पुनर्वासक साधन अछि। नाटक एहि सवालकेँ जमीनक किनबेचसँ आगाँ घर बनाबय, कर्ज चुकाबय, परिवार बसाबय आ पढ़ाई कराबयक प्रश्नमे विस्तार दैत अछि।

कथामे सत्ता धरि पहुँच आत्मीय व्यवहार, दारू-पार्टी, पहिचान आ रुपैयाक आदान-प्रदानसँ बनैत अछि। भ्रष्टाचार एकटा एकाकी पात्रक चरित्र-दोष नहि, विभिन्न संस्थाक जाल बनिऽ अबैत अछि। एकर सामाजिक असर गरीब पर बेसी पड़ैत अछि: जे स्वतन्त्र वकील, दस्तावेजी प्रमाण वा दफ्तरक कागज तक पहुँच नहि राखैत अछि, ओकरा ‘विश्वास’क मूल्य अपन सर्वस्वसँ चुकाबय पड़ैत अछि।

दूसरी दिशा मे जनसंगठन आ लिखित आवेदन नाटकक लोकतान्त्रिक ऊर्जा अछि। रामलालक पत्र आ लक्ष्मणक सामूहिक बैठक कहल जाइत अछि जे प्रमाण, सार्वजनिक समर्थन आ लिखित अभिलेखक बिनु अपमानित नागरिकक आवाज दबि सकैत अछि। मुदा राज्यक न्याय स्वयं कानूनक सीमामे रहनाइ चाही। नाटक एहन मान्यता प्रस्तावित करैत अछि कि कठोर शासक नैतिक न्याय दिला सकैत अछि; आलोचनात्मक पाठ पुछैत अछि जे हिंसक अधिकारीक हाथमे गरीबक अधिकार अन्ततः केना सुरक्षित रहत?

न्याय, दण्ड आ अन्तक द्विविधा

अन्तिम जनता दरबार आर्थिक प्रतिकारक दृश्य अछि। चारि दोषीक दस लाखक देनदारी समाजक समक्ष तय होइत अछि; भुगतान साक्षीसभक सामने होइत अछि। मंचीय दृष्टिसँ ई ‘प्रत्यक्ष निर्णय’क संतोष दैत अछि। मुदा अपराधक प्रकृति—सार्वजनिक मुआवजाक कृत्रिम वृद्धि, रिश्वत, दस्तावेजक दुरुपयोग, सुपारी, हत्या—प्रत्येक लेल स्वतन्त्र जाँच, विधिसम्मत अभियोजन आ पीड़ित परिवारक अधिकारक प्रश्न बनैत अछि। आर्थिक समझौता ओहि सभक विकल्प नहि।

अभियुक्तसभकेँ मारि कऽ स्वीकारोक्ति लेब, कथित अपराधी गिरोहकेँ बिना अदालती प्रक्रिया समाप्त करब, आ अधिकारीक ‘दण्ड-दाता’ बनब—ई स्थिति न्याय-सिद्धान्तक दृष्टिसँ गंभीर आलोचनाक विषय अछि। लेखकक आशय भ्रष्टाचार-विरोधी न्याय सम्भवतः अछि, मुदा साधनक मर्यादा सेहो न्यायमे अनिवार्य अछि। उचित सामाजिक समाधान केवल सजाय देब नहि, दोष-सिद्धिक पारदर्शी प्रक्रिया, असल पीड़ितक पुनर्वास आ भविष्यक संस्थागत सुधार होयबाक चाही।

लखनक अन्तिम प्रश्न सर्वाधिक सशक्त मानवीय प्रश्न अछि—क्षतिपूर्ति बेटेकें जीवित नहि आनैत। ई पङ्क्ति नाटकक आदर्शवादी समाप्तिक भीतर अधूरापन सुरक्षित राखैत अछि। राम किशुनक सार्वजनिक माफी भावनात्मक दृश्यक समापन करैत अछि, मुदा एकटा ‘माफी’ सँ विश्वास फेर तुरन्त बहाल भेल मानब नाटकक अपन घटनाक वजनकें हलुक करैत अछि। नाटकक सर्वोत्तम आलोचनात्मक अर्थ ई नहि जे अन्तमे सभ ठीक भऽ गेल; बल्कि ई जे सामाजिक विश्वास भंगलापर आर्थिक न्यायो सम्बन्धक अपूरणीय क्षति नहि मेटा सकैत अछि।

मैथिली नाट्यपरम्परा आ बाल-साहित्यक तुलनात्मक सन्दर्भ

मैथिली नाट्यक अध्ययने ‘बिसवासघात’कें सामाजिक भ्रष्टाचार आ ग्रामजीवनक यथार्थपरक दीर्घ नाटकक धरातलपर पढ़ल जाएबाक चाही। विदेह अङ्क ८२ (१५ मई २०११) मे आशीष अनचिन्हारक बेचन ठाकुरक ‘छीनरदेवी’ विषयक समीक्षा उपलब्ध अछि। ओहि समीक्षामे लेखक बेचन ठाकुरक ग्रामीण रंगमंच-संलग्नता आ नाटकक सामाजिक प्रश्नपर चर्चा करैत छथि। एहि स्वतन्त्र सन्दर्भसँ बेचन ठाकुरक नाट्यरुचि आ सामाजिक विषयक निरन्तरता देखबाक एकटा मार्ग भेटैत अछि; मुदा ‘छीनरदेवी’ आ ‘बिसवासघात’क कथ्य समान अछि, एहन दावा नहि कएल जा सकैत।

विदेहक शोध-सूचीमे रमेश रज्जनक ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि’ (अङ्क १२६, २०१३) बालनाट्य-चर्चाक एकटा अभिलेख अछि। फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (अङ्क ५०, २०१०), योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा’ (अङ्क ७६, २०११) तथा दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (अङ्क ११६, २०१२) सँ बालसाहित्यक भीतर लोककथा, चित्रकथा आ बालनाट्यक अलग-अलग विधागत उपस्थिति स्पष्ट होइत अछि। ई उदाहरण एकटा सम्पूर्ण कालक्रम नहि, बल्कि विदेहमे उपलब्ध प्रमाणित प्रतिनिधि पढ़ाव छथि।

बालसाहित्यक एकटा कसौटी भाषा आ जिज्ञासाकें बालकक अनुभव-संसार अनुरूप गढ़ब अछि; दोसर कसौटी विषयगत हिंसा, भय, विचारक जटिलता आ प्रस्तुतीकरण उपयुक्तता अछि। ‘बिसवासघात’मे घरेलू मारि-पीट, हत्या, घूसखोरी, अपराधी गिरोह, अत्यधिक लम्बा कार्यालयी संवाद आ कानूनक विवाद अछि। तँ एकरा बिना रूपान्तरण बाल-पाठ अथवा बाल-नाटक कहब विधागत भूल होयत। हँ, एकर किछु प्रसङ्ग— कागज बुझि कऽ हस्ताक्षर करब, सत्यापन, शिक्षाक मूल्य, सामाजिक सहायता, अधिकार-बोध—किशोर नागरिकता-शिक्षाक चर्चामे चयनित रूपेँ प्रयुक्त भऽ सकैत अछि।

विदेह अङ्क ४४७ (अगस्त २०२६) मे गजेन्द्र ठाकुरक ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ बालविधाक बहुस्तरीय संरचनाक चर्चा करैत अछि। एहि तुलनात्मक सन्दर्भक उपयोग ‘बिसवासघात’कें बालउपन्यास बनय लेल नहि, बल्कि बालकक दृष्टिकोण, बालोपयुक्त पाठ आ वयस्क सामाजिक नाटकक अन्तर चिन्हय लेल कएल गेल अछि। बाल-नाट्यक प्रयोगमे जँ ई कथासूत्र रूपान्तरित हो, तँ घटना-संक्षेप, हिंसाक अप्रत्यक्ष संकेत, सामूहिक निर्णय, स्त्री-पात्रक सक्रिय विवेक आ विधिसम्मत न्यायक चर्चा अनिवार्य बनत।

मैथिली बालसाहित्यक इतिहास लिखैत काल लोकमौखिक परम्परा, पत्रिकाक प्रयोग, चित्रकथा, बालगीत, बालनाटक आ आधुनिक बालउपन्यासकें एक धागामे बान्हि कऽ सेहो ओकर विधागत अन्तर मेटायब नहि चाही। बेचन ठाकुरक ई नाटक एहि इतिहासक ‘प्रत्यक्ष बाल-पाठ’ नहि, वयस्क रंगमंचक सामाजिक सन्दर्भग्रन्थ अछि; एकरा बालसाहित्यक इतिहासमे रखबाक औचित्य केवल सीमारेखा आ सम्भावित किशोर-रूपान्तरणक विवेचन धरि अछि।

उपलब्धि आ सीमा: समालोचनात्मक निष्कर्ष

ई नाटकक प्रथम उपलब्धि भ्रष्टाचारकें सूक्ष्म लेन-देन आ सामाजिक आदर-सत्कारक रूपमे देखायब अछि। दोसर उपलब्धि किसान परिवार, घरक स्त्री, पढ़ल-लिखल

नवयुवक, मध्यस्थ, पुलिस, अभियन्ता, कर्मचारी आ ग्रामसमाजकें एकटा नाटकीय मानचित्रमे जोड़ब अछि। तेसर उपलब्धि रकमक ठोस गणित आ प्रमाण-प्रश्नसँ कथानककें सामाजिक विश्वसनीयता देब अछि। चारिम उपलब्धि ई अछि जे लखनक पञ्चात्ताप आर्थिक क्षतिपूर्तिसँ गहीर मानवीय शून्यक अनुभव बनैत अछि।

सीमासभ सेहो महत्त्वपूर्ण छथि। किछु घटना अत्यधिक संयोग आ अत्यधिक प्रभावशाली अधिकारीपर निर्भर छथि; अनेक दृश्य एके संदेश दोहरबैत अछि; आ एक-दू पात्रक नैतिकता कथाक सुविधानुसार अचानक बदलैत बुझाईत अछि। रामलालक सच्चाई ओकर हिंसक व्यवहारक आलोचनाकें नकारि नहि सकैत; बीजेन्द्रक भ्रष्टाचार-विरोधी मुद्रा ओकर दण्डात्मक हिंसाकें वैध नहि करैत; राम किशुनक क्षमा-याचना विधिसम्मत उत्तरदायित्वक स्थान नहि लऽ सकैत।

समग्रतः ‘बिसवासघात’कें मैथिली सामाजिक नाटकक एहन पाठ मानल जा सकैत अछि जे विश्वासक भङ्ग, राज्यक तन्त्र, विकासक अर्थनीति आ न्यायबोधक बीच नाटकीय टक्कर उत्पन्न करैत अछि। एकर पाठकीय महत्त्व केवल अपराधीकें दण्ड भेटब नहि, बल्कि ई प्रश्न जीवित राखब अछि जे निजी विश्वास, लिखित प्रमाण, सामूहिक जनबल आ न्यायिक मर्यादा परस्पर कतेक दूर धरि सहायक—अथवा विरोधी—भऽ सकैत अछि।

संवादक मार्मिकता

“हमरा राम किशुनपर पूरा बिसवास अछि” — लखन, पहिल अंक, दोसर दृश्य।

“नोटिसपर जे रेट अछि ओकर दस गुना धरि हम बढ़ा सकै छी।” — उमा शंकर, पहिल अंक, पाँचम दृश्य।

“हम ऑफिस जेबे करब, जेबे करब, जेबे करब।” — रामलाल, पहिल अंक, नअम दृश्यक अन्त।

“दुनियाँमे पढ़ाईसँ पैघ कोनो धन नै छै।” — लक्ष्मण, तेसर अंक, नअम दृश्य।

“हमरा पाइ बडु भेटल। मुदा ओहि पाइसँ हमर बेटा घुमि आएत की?” — लखन, तेसर अंक, नअम दृश्य।

एहि पाँच उद्धरणमे प्रकाशित रूपक छोट-छोट विविध उच्चारण/वर्तनी यथासम्भव सुरक्षित राखल अछि; आलोचनात्मक गद्यक मानकीकृत वर्तनीकेँ मूल वक्ताक उद्धरण पर आरोपित नहि कएल गेल अछि।

चालीस दृश्यक क्रमिक विवेचन

नीचाँ प्रत्येक दृश्यक कथा-वस्तु आ ओकर नाटकीय कार्यक संक्षिप्त पृथक परख देल गेल अछि।

पहिल अङ्क: दृश्यवार विवेचन

दृश्य १: तीनू भाइक चाह-गप आ अधिग्रहणक नोटिस। राम किशुन दुआरा कागज अपन जिम्मामे लेबाक प्रस्ताव विश्वासक प्रथम नाटकीय बिन्दु अछि।

दृश्य २: लक्ष्मी कागज बुझि-समझि कऽ देबाक सलाह दैत छथि; लखनक स्त्री-विरोधी अवहेलना आगूक हानि सँ जुड़ैत अछि।

दृश्य ३: होलीक आयोजनमे पुलिस-अधिकारी, वकील आ मध्यस्थक मेल। आत्मीय भोज प्रशासनिक संरक्षणक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।

दृश्य ४: भू-अर्जन कर्मचारी सुशील संग चाह-दोकानक संवाद। घूसक प्रस्ताव अभावक सहानुभूति आ व्यावहारिकता रूपेँ वैध करबाक कोशिश अछि।

दृश्य ५: अभियन्ता उमा शंकर मुआवजा दस गुना करबाक मूल्य तय करैत अछि। धनराशिक ठोस गणित कथानकक आर्थिक आधार अछि।

दृश्य ६: सुशील आ चपरासी बिन्देश्वरक रिश्त तथा चेक-प्रक्रिया। कार्यालयी फाइल अपराधक वैधताक मुखौटा बनैत अछि।

दृश्य ७: रामलाल अखबारसँ भुगतानक जानकारी पाबैत अछि। पिता-पुत्रक पीढ़ीगत विवाद ज्ञान बनाम आज्ञापालनक प्रश्न बनैत अछि।

दृश्य ८: राम किशुन जलखै आ चाहसँ भाइसभक भरोसा फेर पक्का करैत अछि, रामलालकेँ उतावल कहल जाइत अछि।

दृश्य ९: राम किशुन खोटा हिसाब देखबैत अछि; रामलाल कार्यालय जाँचबाक दृढ़ निश्चय करैत अछि।

दृश्य १०: कार्यालयमे घूसक अनुभवक बाद वास्तविक आठ, दस आ चौदह लाख भुगतानक जानकारी प्रकट होइत अछि।

दृश्य ११: रामलाल तथ्य बतबैत अछि; सियारामक मूर्छा आ राम किशुनक अस्वीकारसँ नाटकीय तनाव बढ़ैत अछि।

दृश्य १२: सरपंच लग शिकायत; मामला पारिवारिक विवादसँ औपचारिक सार्वजनिक विवाद बनैत अछि।

दृश्य १३: नोटिस भेटलापर राम किशुनक राजनीतिक-सामाजिक बचाव सक्रिय होइत अछि।

दृश्य १४: पहिल पंचायतमे प्रमाण-अभाव आ लखनक असहयोग रामलालक दावाकेँ कमजोर करैत अछि।

दृश्य १५: घरक भीतर कलह, लक्ष्मीपर हिंसा, पिता-पुत्रक मारि-पीट आ जबरदस्ती निशान लेबाक घटना; नैतिक संघर्ष जटिल भऽ जाइत अछि।

दोसर अङ्क: दृश्यवार विवेचन

दृश्य १: लखन अपन बेटासँ डरि राम किशुनक शरण लैत अछि; छलक जाल परिवारकेँ फेर घेरैत अछि।

दृश्य २: रामलाल अनुमण्डल आ जिला अधिकारीक लग पत्र दैत अछि; अधिकारक संघर्ष दफ्तर धरि फैलैत अछि।

दृश्य ३: शिकायतक सरकारी पत्र विभिन्न कार्यालय सँ थानापर पहुँचैत अछि; प्रशासनिक कड़ी स्पष्ट होइत अछि।

दृश्य ४: पुलिस राम किशुनक घर जाँच करैत अछि; आतिथ्य आ दबावक बीच सत्यक खोज डगमगाइत अछि।

दृश्य ५: थाना-डायरीकेँ ढीला रखबाक रकमक चर्चा न्यायिक विश्वसनीयताक विघटन देखबैत अछि।

दृश्य ६: जिला अधिकारी प्रमाणक आग्रह करैत छथि; राम किशुन पैरबीक नव उपाय ताकैत अछि।

दृश्य ७: प्रभावशाली पुलिस-संपर्कक माध्यमँ जाँच मोड़बाक चेष्टा; रिश्तत राजनीतिक शक्ति धरि पहुँचैत अछि।

दृश्य ८: जिला अधिकारी सन्देह प्रकट करैत छथि; पुलिसक चेतावनी आ अनैतिक लेनदेन खुलि जाइत अछि।

दृश्य ९: बीर रामलालकेँ हटेबाक घातक प्रस्ताव दैत अछि; आर्थिक अपराध हिंसक अपराधक रूप लैत अछि।

दृश्य १०: रामलाल, झामलाल, लक्ष्मी आ बीरक बातचीत; चाह-दोकान मञ्च पर छलक तैयारी करैत अछि।

दृश्य ११: राम किशुन आ बीर अपराधी सरदार राजासँ हत्या करबाबयक करार करैत अछि।

दृश्य १२: बीर रामलालकेँ लऽ जाइत अछि; गिरोह ओकर हत्या करैत अछि। ई नाटकक त्रासदीक चरम बिन्दु अछि।

दृश्य १३: रामलालक अनुपस्थिति सँ लक्ष्मी आ झामलाल चिंतित; पुलिससम्बन्धी चर्चा बीच घरक भय बढ़ैत अछि।

दृश्य १४: मामा लक्ष्मणक सक्रियता आ बीरपर सन्देह; निजी शोक जाँचक इच्छामे बदलैत अछि।

दृश्य १५: परिवार राम किशुनसँ मदति मँगैत अछि; अपराधी अपन भूमिका नुकबैत अछि।

दृश्य १६: अपराधी गिरोहमे शेष रकमक व्यवहार; सुपारीक साङ्गोपाङ्ग पुष्टि प्रेक्षककें भेटैत अछि।

तेसर अङ्क: दृश्यवार विवेचन

दृश्य १: मामाक पहल, पुलिस-शिकायतपर बहस आ राम किशुनक दोहरी प्रतिक्रिया।

दृश्य २: सामाजिक बैसार करबाक आयोजन; नागरिक संगठनक प्रारम्भिक रूप।

दृश्य ३: सामुदायिक भवनमे पंचायत, लक्ष्मीक बयान आ क्षतिपूर्तिक प्रस्ताव; राम किशुन जनमत मानैत नहि।

दृश्य ४: धरना-प्रदर्शन, आवेदन आ अधिकारीसँ न्याय-माँग; निजी शोक सार्वजनिक राजनीति बनैत अछि।

दृश्य ५: पुलिस-जिला-अधिकारीक कठोर कार्रवाई; भ्रष्टाचार-विरोधी भाषण आ बल-प्रयोगक विरोधाभास।

दृश्य ६: अभियुक्तसँ व्यवहारमे अपमानजनक हिंसा; न्यायिक मर्यादाक आलोचनाक सर्वाधिक आवश्यक स्थल।

दृश्य ७: प्रशासनिक परामर्श आ जनता दरबारक तैयारी; समाधान उच्च अधिकारीपर केन्द्रित होइत अछि।

दृश्य ८: अपराधी गिरोहक समाप्तिक समाचार आ जनता दरबारमे चारि दोषीपर कुल दस लाखक देनदारी।

दृश्य ९: शिक्षामे निवेशक प्रस्ताव, आर्थिक भुगतान, जनप्रशंसा, लखनक शोक आ राम किशुनक क्षमा-याचना; क्षतिपूर्तिक सीमा उघड़ैत अछि।

१.२७. नित नवल बेचन ठाकुर — भअँट

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

लोकतन्त्र, चुनावी सत्ता आ सार्वजनिक रंगमंच

लोकतन्त्रक सार्वजनिक रंगभूमि

मैथिली नाट्यपरम्परामे गामक चौबट्टी, दलान, सार्वजनिक सभा, मेल-मिलाप, लोकगीत, ठिठोली आ सामूहिक विवादक अनुभव रंगमंचीय संवादकें निरन्तर शक्ति दैत रहल अछि। बेचन ठाकुरक ‘भअँट’ एहि सार्वजनिक जीवनक एकटा विशिष्ट राजनीतिक क्षण —संसदीय चुनाव—कें नाटकक केन्द्र बनबैत अछि। शीर्षकमे प्रयुक्त ‘भअँट’ नाटकक भीतर मतदान, मतदानक अधिकार, मतक खरीद-बिक्री आ लोकमतक अर्थक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि। रचनाक अपना मुखपृष्ठपर सामाजिक आ राजनीतिक नाटक होयबाक परिचय देल गेल अछि। ताहि आधारपर एकर विधा-निर्धारण राजनीतिक प्रहसनमूलक सामाजिक नाटक रूपमे उचित अछि; एकरा बालनाटक कहल जाएब पाठ-साक्ष्यक प्रतिकूल होयत।

नाटक पहिने प्रत्याशी सभक घर-परिवार आ सलाहकारक अन्तरङ्ग गोष्ठी देखबैत अछि; फेर निर्वाचन आयोगक कार्यालय, नामांकनक कागजी प्रक्रिया, प्रचार-मञ्च, पंचायत भवन, थाना, मतदान केन्द्र, चाह-दोकान, भगवती-मन्दिर आ समाहरणालय धरि सार्वजनिक संस्थानसभकें रंगस्थल बनबैत अछि। निजी आकाङ्क्षा धीरे-धीरे संस्थागत संकट आ सामुदायिक निर्णयमे बदलैत अछि। एहि गतिमे शासक, अधिकारी, सुरक्षाकर्मी, दलाल, नेता-सहयोगी, महिला प्रत्याशी आ मतदाता परस्पर निर्भर छथि। एहि कारणे पाठक महत्त्व एकटा ‘सही नेता’ चुनबाक शिक्षा मात्रमे नहि, बल्कि लोकहितक भाषा कोना अवसरवादक आड़ बनि सकैत अछि, तकर नाटकीय परीक्षणमे अछि।

कथ्य-विन्यासः पाँच प्रत्याशी आ सार्वजनिक संसार

पात्र-परिचयमे एक सय एक क्रमाङ्कित भूमिका अछि। पाँच प्रमुख प्रत्याशी छथि— गोबर्धनलाल, फीरन, ब्रजेश, सुभद्रा आ विवेक। गोबर्धनलाल आदर्शवादी राजनीतिक आकाङ्क्षा आ आर्थिक दुर्बलताक मिश्रण छथि; फीरन पूर्व चुनावी असफलता आ परनिर्भर आर्थिक जोगाङ्क चित्र; ब्रजेश पदस्थ सांसदक रूपमे सत्ताक अहङ्कार आ संसाधनक प्रभुत्व; सुभद्रा सार्वजनिक सेवा, संयम आ स्त्री-राजनीतिक भागीदारीक पक्ष; आ विवेक हिंसक शक्ति-प्रदर्शन आ अराजक अवसरवादक प्रतिनिधि। पात्रसभकेँ ठोस मनुष्यक अपेक्षा समाजक विशिष्ट प्रवृत्तिक रंगमञ्चीय चिह्न रूपमे गढ़ल गेल अछि, तथापि किछु प्रसंगमे मनोभावक सूक्ष्मता सेहो देखाइत अछि।

गोबर्धनलालक घरक आरम्भिक गप-शप मिठाइक ठिठोलीसँ खोलैत अछि; चुनाव लड़बाक सम्भावना सामने अयिते पैसाक अभावक चिन्ता उभरैत अछि। फीरनक घरमे पूर्व पराजय आ जमीनक क्षयक अनुभवकेँ राकेशक गोपनीय आर्थिक आश्वासन चुनावी सौदेबाजीमे बदलि दैत अछि। ब्रजेशक आवासपर सत्ताविरोधी जनभावनाक समाचारक प्रति हुनकर अरुचि, निजी विकासक अभिलाषा आ समर्थक जुटेबाक वित्तीय छल-योजना खुलैत अछि। सुभद्राक बैठकीमे पूर्व पराजयक भावनात्मक घाव आ अनैतिक व्ययक प्रतिरोध राजनीतिक व्यक्तित्वक भीतरी संघर्ष रूपमे प्रकट अछि। विवेकक ठाम मदिरापान आ बाहुबलक बड़बोलापन नाटकक संकट-रेखाकेँ आर तीक्ष्ण बनबैत अछि। एहि पाँच आरम्भिक परिचयमे प्रत्येक प्रत्याशी अपन दल वा साथीकेँ सुनबैत छथि, मुदा ओकरा सँ अधिक पाठककेँ राजनीतिक व्यवस्था सुनाइत अछि। गोबर्धनलालक असमर्थता, फीरनक आकाङ्क्षा, ब्रजेशक अहङ्कार, सुभद्राक नैतिक द्वन्द्व आ विवेकक खुलल हिंसात्मक धमकी—ई पाँच स्वर मिलिकय लोकतन्त्रक उपलब्ध सम्भावनासभक एकटा नैतिक नाप-बटखरा बनबैत अछि।

दृश्य-अनुक्रमक पृथक पाठविश्लेषण

गोबर्धनलालक दलानः लोकहित आ चुनावी पूँजी

आरम्भमे मिठाइक बहन्ने चलैत मित्रक हास-परिहास सामाजिक आत्मीयताक बुनियाद रचैत अछि। जाहि क्षण चुनाव लड़बाक प्रस्ताव अबैत अछि, विनोद आर्थिक आशङ्कामे बदलि जाइत अछि। गोबर्धनलालक योग्यताक प्रशंसा आ चुनाव जीतबाक धन-साधनक वास्तविकता बीच दूरी अछि। एक बीघा खेत बेचबाक सम्भावना ई बतबैत अछि जे सार्वजनिक प्रतिनिधित्वक प्रवेशद्वार स्वयं आर्थिक विनाशक जोखिम बनि सकैत अछि। रामेश्वरक भोजनक आग्रह आ जीतेन्द्रक नैतिक उपदेश एक्कहि समूहक भीतर सहयोग तथा स्वार्थक मिश्रित उपस्थिति स्पष्ट करैत अछि।

फीरनक घरः हारक इतिहास आ प्रायोजित प्रत्याशिता

फीरन पूर्व मुखिया चुनावक बारम्बार हार आ जमीन बिकबाक उल्लेख करैत छथि। एहन परिस्थितिमे ब्रजेशक निकट सहयोगी राकेशक पहुँचनाइ महत्त्वपूर्ण नाट्य-उलटफेर अछि। सहयोगक प्रस्ताव स्वतन्त्र जनसेवाक भाषा अपनबैत अछि, मुदा आर्थिक आश्वासन एहि उम्मीदवारकें शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वीक योजना मे बाँधि दैत अछि। राकेशक परोक्ष अभिप्राय—मत विभाजन अथवा चुनावी गणितपर प्रभाव—संवाद-परिस्थितिसँ अनुमानित अछि; एतय एकरा प्रमाणित घोषित उद्देश्य मानल नहि गेल अछि।

ब्रजेशक आवासः जनसम्पर्कसँ विमुख सत्ताक चरित्र

सुरेश आ राकेश क्षेत्रक असन्तोष सुनबैत छथि। ब्रजेश जनताक विवेककें कम आँकैत छथि आ चुनाव लगपास होइतहि प्रलोभनक योजना पर भरोस करैत छथि। अंगरक्षकक निद्रा-सपना हास्यक स्वायत्त दृश्य रचैत अछि, जे सत्ता-केन्द्रक अव्यवस्था आ आत्मतुष्टिक संकेत सेहो बनैत अछि। राकेशक हाथमे चुनावी धन पहुँचबाक पछाति ओकर निजी हिस्सा रखबाक मानसक खुलासा मध्यस्थक भ्रष्टाचारकें प्रत्यक्ष बनबैत अछि: बड़ भ्रष्टाचारक अवसर छोट स्तरपर पुनः उत्पन्न होइत अछि।

सुभद्राक आवासः पराजयक व्यथा आ नैतिक विकल्प

पूर्व चुनावमे अत्यल्प अन्तरसँ हारल सुभद्राक भावुक प्रतिक्रिया हुनका आदर्शक निश्चेष्ट प्रतिमा नहि रहए दैत अछि। उमाकान्त व्यावहारिक जीत लेल खर्च आ संघर्षक तर्क रखैत छथि; सुभद्रा अनुचित साधनसँ दूरी चाहैत छथि। अपन राजनीतिक वंशपरम्परा आ अविवाहित जीवनक उल्लेख सेहो प्रसंगमे अछि। एतय समीक्षा लेल आवश्यक सावधानी ई जे स्त्रीक जनसेवाकेँ विवाह-त्यागसँ मात्र नैतिक वैधता दैब पितृसत्तात्मक मूल्यांकनक पुनरावृत्ति कऽ सकैत अछि। सुभद्राक विशेषता हुनकर निर्णयक्षमता, सेवा आ चुनावी आचरणमे देखी, जीवन-विकल्पक अनिवार्य त्यागमे नहि।

विवेकक अड्डा: हिंसाक उन्मुक्त भाषा

विवेकक टोली बम, हथियार, बूथ-कब्जा आ निजी सम्पत्ति अर्जनक कल्पना करैत अछि। विकृत राजनीतिक महत्वाकाङ्क्षा हास्य, मदिशपान आ फूहड़ गीतक संग चलैत अछि। एहन भाषिक आवेग दर्शककेँ हँसाबैत जरूर अछि, मुदा लोकतन्त्रक सशस्त्र अपहरणक आशङ्का सेहो जगबैत अछि। हिंसाक ई प्रारम्भिक घोषणा बादमे मतदान केन्द्रक रक्तपातसँ कथानकीय सम्बन्ध बनबैत अछि।

निर्वाचन आयोग: प्रशासनिक समस्या आ नाटकीय विवेचना

आयुक्त रामप्रताप आ उपयुक्त गिरिराज मतदानक बाधा सभक क्रमिक सूची बनबैत छथि—बूथ लूट, मत-पेटी वा यन्त्रक हेराफेरी, प्रशिक्षणक अभाव, दूरदराज क्षेत्रमे पहुँच, समय-व्यवस्था, मत-खरीद आ सुरक्षासम्बन्धी संकट। ई प्रकरण नाटकक भीतर नीति-संवादक स्थान ग्रहण करैत अछि। एकर शक्ति प्रशासनिक खामी सभकेँ राजनीतिक घटनासँ पहिले चिन्हित करब अछि; कमजोरी ई जे सूची-वाचन कतेको ठाम नाटकीय टकरावक बदलामे व्याख्यान बनि जाइत अछि। कार्यालयक निम्न कर्मचारीक झगड़ा अन्तमे व्यवस्था-सुधारक भव्य भाषणकेँ व्यावहारिक मानव-दुर्बलतासँ टकरा दैत अछि।

नामांकन कार्यालय: दस्तावेज, सिफारिस आ छोट स्तरक वसूली

नामांकनक लम्बा दृश्य पाँच दलक भिन्न-भिन्न व्यवहारकें एककहि प्रशासनिक तन्त्रपर परखैत अछि। गोबर्धनलालसँ छोटी त्रुटि सुधरबाओल जाइत अछि; फीरन स्वयं फारम भरबामे असहज छथि आ पदाधिकारीक कृपा पर निर्भर छथि; ब्रजेशक आवेदनमे विशेषाधिकारक छाप उभरैत अछि; सुभद्रा तुलनात्मक स्पष्टतासँ अपन आवेदन तैयार करैत छथि; विवेकक दबंगई नियमपालनक प्रश्नक हिंसक उत्तर बनैत अछि। चपरासी राघवक अपेक्षित चढ़ौती, कर्मचारीक असहायता आ औपचारिक नियमक असमान अनुपालन नाटकक सशक्त संस्थागत व्यंग्य अछि। एतय 'कागज' लोकप्रतिनिधित्वक प्रवेश-द्वारो अछि आ भ्रष्टाचारक रोजमर्रा अवसर सेहो।

गोबर्धनलालक सभा: गुणवर्णनक अतिशयोक्ति

समर्थक गोबर्धनलालक ईमानदारी, कर्मठता आ जनसम्बन्धकें निर्वाचन योग्यताक आधार कहैत छथि। भाषा स्तुतिपरक अछि आ विजयक पूर्वघोषणासँ भरल अछि। आरम्भिक आर्थिक संकट देखल पाठक लेल ई मंचीय प्रशंसा द्विअर्थी बनि जाइत अछि —उम्मीदवारक वास्तविक योग्यता होइतो भीड़-संचालन ओकरा नारा-बद्ध करैत अछि।

फीरनक सभा: गीत, घोषणापत्र आ अवसर

फीरनक दलक गीतधर्मी प्रचार लोकधुनक आवृत्ति आ नारा-लय उपयोग करैत अछि। जनसेवा, शिक्षा, सड़क आ धार्मिक सहअस्तित्वक सामान्य वचन राजनीतिक वाणीकें आकर्षक बनबैत अछि; मुदा पर्दाक पाछाँ चलल आर्थिक सौदा ई वचनसभ पर संशयक छाया छोड़ैत अछि। एतय प्रस्तुति आ अभिप्रायक दूरी आलोचनाक विषय अछि।

ब्रजेशक सभा: उपहारक अर्थतन्त्र आ असम्भव प्रतिज्ञा

वस्त्र वितरण आ अत्युक्तिपूर्ण लाभ-योजनाक घोषणासँ सभा हास्यास्पद बनैत अछि। जे लोककें उपहार नहि भेटैत अछि, ओकरा खाली हाथ फेरि जेबाक दृश्य प्रलोभनक सीमित आपूर्ति देखबैत अछि। शासनक वास्तविक उत्तरदायित्व सामाजिक वस्तु

वितरणक असम्भव वादाक भीड़मे दबि जाइत अछि। प्रतिज्ञासभक अतिशयोक्ति व्यंग्यक औजार अछि; एकरा वस्तुनिष्ठ सरकारी नीति-सूची बुझब भूल होयत।

सुभद्राक सभा: न्यून भाषण, उत्तरदायित्वक आग्रह

माला मताधिकारक विवेकपूर्ण उपयोगपर बल दैत छथि; सुभद्रा धनलोभक प्रत्युत्तरमे जनसम्बन्ध आ काजक बात रखैत छथि। अघोषित रूपसँ ई सभा पूर्ववर्ती तीन प्रचार-प्रसङ्गक प्रतितुलना बनैत अछि। सुभद्राक आत्मप्रस्तुति अपेक्षाकृत संयत अछि; तथापि हुनकर दलक नारासभ पार्टी-प्रतीकक हास्यास्पद दुनियासँ मुक्त नहि। नैतिक व्यक्ति आ चुनावी भाषिक मशीनरीक बीच ई तनाव नाटकक सूक्ष्म उपलब्धि अछि।

विवेकक सभा: अपराधक सार्वजनिक घोष

एतय दबंग प्रत्याशी अपन मतदान-कब्जाक सोचकेँ लगभग सार्वजनिक हास्यक वस्तु बनबैत अछि। सहयोगीक चेतावनी सेहो ओकर आत्मविश्वास नहि घटबैत। एहि प्रसङ्गमे नाटक सत्ता आ अपराधक गोपन सम्बन्धकेँ उधारि सार्वजनिक करत अछि। मंचीय जोखिम ई जे अत्यधिक फूहड़ता हिंसाक राजनीतिक भयावहताकेँ कखनो हलुक सेहो करि सकैत अछि।

बच्चा बाबूक पंचायत-बैसार: मतदाताक सामूहिक विवेकक विडम्बना

गामक लोक पंचायत भवनमे पाँच दलक मूल्यांकन लेल जुटैत छथि। प्रारम्भिक बहस जनसेवा, प्रत्याशीक आचरण आ समाजक एकता दिस जाइत अछि। मुदा प्रत्याशी सभक एक-एक कऽ आगमन आ धन-वितरणसँ सामूहिक निर्णयक प्रक्रिया बाजार बनि जाइत अछि। बच्चा बाबू सामाजिक मध्यस्थ छथि, न्यायपूर्ण लोकप्रतिनिधि नहि। गामक कथित सामूहिकता मूल्य, दबाव, प्रलोभन आ साझा लाभक गणितसँ बनैत-बिगड़ैत अछि। ई दृश्य लोकतन्त्रक विफलताकेँ केवल नेताक दोष कहि टारबाक सुविधा नहि दैत—मतदाताक भूमिका सेहो आलोचनाक घेरेमे अबैत अछि।

थाना: निषेधाज्ञा, नशा आ दण्डात्मक शासन

पुलिस चुनाव-सुरक्षा आ भीड़-नियन्त्रणक घोषणा करैत अछि। एहिमे प्रचार-निषेधक सार्वजनिक सूचना, नशाक प्रसङ्ग आ पुलिसक कठोर व्यवहार अछि। नाटक सुरक्षा-व्यवस्थाक जरूरतक संग नागरिककेँ अपमानित करबाक प्रवृत्तिकेँ एक्कहि दृश्य मे रखैत अछि। कानून-पालन आ अवैधानिक मनमानीक बीच सीमा एतय आलोचनात्मक प्रश्न बनैत अछि।

मतदान केन्द्र: व्यवस्था आ हिंसाक प्रत्यक्ष संघर्ष

विद्यालय मतदान केन्द्र बनल अछि। पहचान-पत्र, मतदान मशीन, पीठासीन अधिकारी आ सशस्त्र सुरक्षाकर्मी उपस्थित छथि। प्रारम्भिक मतदानक साधारण प्रक्रियाक बीच बूथ लूटबाक प्रयास होइत अछि आ गोलीबारीमे अनेक पात्र हताहत होइत छथि। एहि दृश्यपर पूर्ववर्ती विमर्शक पूरा दबाव केन्द्रित अछि: जे अपकृत्य आरम्भिक घोषणासभमे सम्भावना छल, से आब प्राणघातक घटना बनि जाइत अछि। मंचपर हिंसाक प्रस्तुति विस्तृत अछि, तँ विद्यालय-आधारित किशोर प्रस्तुति लेल सावधानी आ रूपान्तरक आवश्यकता रहत।

चाह-दोकान: पराजयक अफवाह आ दलगत कटाक्ष

मतदान पछाति चाह-दोकान पर प्रतिद्वन्द्वी गुटक कार्यकर्ता भेटैत छथि। प्रत्याशीक भविष्य, गठजोड़, बूथ संघर्ष आ परस्पर आरोप-प्रत्यारोपक चर्चासँ चाह-दोकान अस्थायी लोकसभा बनि जाइत अछि। भाषा झगड़ालू अछि, मुदा लोकमतक अनौपचारिक निर्माण सेहो अही ठाम चलैत अछि। सभटा राजनीतिक संवाद सार्वजनिक भाषणमे नहि, साधारण व्यापारीक ठाम सेहो रचल जाइत अछि—ई नाटकक लोकजीवनक सूक्ष्म पहिचान अछि।

भगवती मन्दिर: धार्मिक विश्वासक चुनावी विनिमय

पुजारी देवनाथक ठाम प्रत्याशी सभ जयकामनाक संग चढ़ावा वा दक्षिणाक प्रसङ्गमे प्रवेश करैत छथि। मन्दिर राजनीतिक अनुष्ठान आ अर्थलोलुप मध्यस्थता दूनूक स्थल

बनैत अछि। श्रद्धाक भाषा मतदानक गणितसँ मिलि व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि।
अध्ययनक विषय धार्मिक विश्वासक अवमूल्यन नहि, बल्कि धार्मिक संस्थानकेँ जीतक
सौदेवाजीमे शामिल करबाक विडम्बना अछि।

मतयन्त्रक सुरक्षा: अस्वीकृत घूस आ कर्तव्य

ब्रजेशक गुर्गा-संघ मतगणनासँ पहिने सुरक्षित मतदान मशीनमे हेराफेरीक प्रयास करैत
अछि। महेन्द्र आ रवीन्द्र आर्थिक प्रस्ताव अस्वीकार करैत छथि; तत्पश्चात गोलीबारी आ
घायल होयबाक घटना अछि। ई दृश्य नाटकक भीतर ईमानदार सरकारी कर्मिक
सकारात्मक प्रतिरूप रचैत अछि। पहिनेक प्रशासनिक भ्रष्टाचारक चित्रक बाद ई
परिप्रेक्ष्य महत्त्वपूर्ण अछि: लेखक पूरा तन्त्रकेँ समान रूपेँ पतित घोषित नहि करैत छथि।

मतगणना: सङ्ख्याक साक्ष्य आ सत्ता-प्रस्तावक असफलता

समाहरणालयमे मतगणना आ सुरक्षाकर्मिक सम्मानक बाद परिणाम घोषित होइत
अछि। सुभद्राक १,२५,३६१ मत, गोबर्धनलालक ५०,००९, फीरनक १५,०८० आ ब्रजेशक
५,००२ मत अंकित अछि; विवेकक मतगणना पृथक संख्याक रूपमे उल्लिखित नहि।
विजेताक निकटतम प्रतिद्वन्द्वीसँ अन्तर ७५,३५२ अछि—अंकगणितो एकरा पुष्ट करैत
अछि। परिणाम बदलबाक प्रभावशाली दबावक फोन आएलाक प्रसङ्गमे
जिलाधिकारीक अस्वीकार नाटकक नैतिक चरम बिन्दु अछि। सुभद्राक विजय बहुत बड़
अन्तरसँ देल गेल अछि; अतएँ किछु क्षण पूर्वक भ्रष्ट शक्ति एकटा विशाल जनादेशक
समक्ष निष्प्रभ देखाइत अछि।

विजयानन्तर जनसम्पर्क: राजधर्मक खुलल कसौटी

अन्तिम दृश्य सुभद्राक विजय-उत्सवपर नहि रुकैत; निर्वाचित होइतो जनता लग जाएब,
नियमित क्षेत्र-भ्रमण आ जनसमस्या सुनबाक प्रतिज्ञापर समाप्त होइत अछि। एहि
निर्णयसँ आरम्भक ब्रजेशक जनतासँ दूरीक उलट दृश्य बनैत अछि। पात्रक भविष्यक
काम नाटकक भीतर देखाओल नहि गेल अछि—तँ प्रतिज्ञा नैतिक कार्यक्रम अछि, सिद्ध

उपलब्धि नहि। अन्तिम आलोचनात्मक प्रश्न यह अछि जे घोषणाकेँ उत्तरदायित्वमे बदलयबाक दीर्घकालिक संस्थागत उपाय की होयत।

चरित्र-संरचना आ एक सय एक भूमिकाक सामाजिक अर्थ

एक सय एक पात्रक नाम देब मात्र भीड़क विस्तार नहि। चुनाव आयोगसँ लऽ गामक मतदाता, चपरासी, किरानी, सुरक्षाकर्मी, पुजारी, स्थानीय दलाल आ दलगत कार्यकर्ता धरि सूची नाटकक सामाजिक क्षेत्रकेँ व्यापक बनबैत अछि। एतय सत्ता शीर्षपर केन्द्रित होइतो ओकर संचालन मध्यवर्ती संस्था आ सामान्य लोकक व्यवहारपर निर्भर अछि। ब्रजेशक संसदीय पदक उपस्थिति ओकरा सर्वशक्तिमान नहि करैत; मतदान केन्द्रक सुरक्षाकर्मी आ मतगणना अधिकारी ओकर प्रभावक सीमाकेँ निर्धारित करैत छथि।

मुदा एहन पात्र-प्रचुरता मज्ज-संयोजनक कठिनाई सेहो बनैत अछि। अधिकांश पात्रक भूमिकाक कार्यात्मक परिभाषा स्पष्ट अछि, निजी जीवन-इतिहास नहि। सामुदायिक विशाल प्रस्तुति लेल एकर लाभ अछि—बहुत कलाकार शामिल भऽ सकैत छथि—मुदा व्यावसायिक सीमित दल लेल पाठ-संक्षेप, बहुपात्र-अभिनय आ सामूहिक दृश्य-नियोजन आवश्यक होयत। बेचन ठाकुरक रंगपरम्पराकेँ सार्वजनिक भागीदारी आ समानान्तर मंचक सन्दर्भमे देखनाइ एकर विशिष्ट रंग-अर्थ खोलैत अछि।

सत्ता, पैसा आ नैतिकता: तीन परस्पर जुड़ल अर्थतन्त्र

प्रथमतः संसाधनक असमानता अछि—गोबर्धनलालक भूमिधारित जीवन आ ब्रजेशक अपार चुनावी क्षमता एक्कहि प्रतियोगितामे समता सम्भव नहि बनबैत। द्वितीयतः अवसरवादक मध्यस्थ अर्थतन्त्र अछि—राकेश, स्थानीय प्रबन्धक आ नामांकन कर्मी राजनीति आ समाजक बीच चलैत धनक अंश लेने रहल छथि। तृतीयतः प्रतीकात्मक अर्थतन्त्र अछि—माला, नारा, प्रशस्ति, भोजन, मदिरा, वस्त्र-वितरण, धार्मिक चढ़ावा आ विजय-उत्सव। एहि तीनू अर्थतन्त्रक सङ्गममे मतदानक अर्थ नागरिक निर्णयसँ बाजारी वस्तु बनबाक जोखिममे पड़ैत अछि।

नाटकक राजनीतिक मर्म एतय केवल भ्रष्ट जनप्रतिनिधिक व्यंग्य नहि। गामक साझा बैसारमे कथित 'सामूहिक समझदारी' देखैत-देखैत सामूहिक उपहार-स्वीकारक रूप धारण करैत अछि। ताहिसँ ई प्रश्न उठैत अछि जे लोकतान्त्रिक शिक्षा केवल मतदाता नाम-पञ्जी आ मशीन-प्रशिक्षणमे समाप्त होइत अछि कि ई सामूहिक विवेक, असहमति व्यक्त करबाक क्षमता आ अल्पकालिक लाभ अस्वीकार करबाक अभ्यास सेहो माँगैत अछि। एहि स्तरपर पाठ संस्थागत नैतिकताक लोकप्रिय पाठशाला बनि सकैत अछि।

व्यंग्य, लोकहास्य आ रसभङ्गक सौन्दर्य

नाटकक अधिकांश प्रसङ्गमे व्यङ्ग्य कथनसँ अधिक स्थितिमे अछि। मिठाइक आग्रह चुनावी जीवनक आर्थिक संकटसँ भिड़ैत अछि; राजकीय पदाधिकारी नियमक बखान करैत छथि, मुदा हुनकर कार्यालयोमे दबाब काम करैत अछि; प्रचारक सार्वजनिक प्रगतिक प्रतिज्ञा करैत छथि, मुदा स्वयं अविश्वसनीय भोग-विलास देखबैत छथि; मन्दिरक आशीर्वाद राजनीतिक निवेशक रूप धारण करैत अछि। एहि स्थितिगत व्यंग्यमे हास्यक संग करुणा, भय आ क्षोभ मिले-जुले रूपमे आबैत अछि।

भारतीय नाट्यचिन्तनक हास्य, रौद्र, भयानक आ वीर भावक भाषामे एहि रचनाक अनेक दृश्य पढ़ल जा सकैत अछि; ई पाठपर आरोपित कठोर रस-वर्गीकरण नहि, नाटकीय प्रभावक तुलना मात्र अछि। मतदान केन्द्रक गोलीकाण्ड हास्यक निरन्तरताकें तोड़ैत अछि। अभिरुचि-मूलक लोकप्रहसनक फुहड़ प्रसङ्ग सभ सबल राजनीतिक आलोचनाकें बीच-बीचमे दुर्बल सेहो करैत अछि; विशेषतः अपमानसूचक बोली आ मदिरा-हास्य प्रतिरोधक सङ्गे दर्शकक सहज मनोरञ्जनक तुष्टियो बनि सकैत अछि। एहि द्वन्द्वकें आलोचककें टारबाक नहि, बुझैबाक आवश्यकता अछि।

भाषा, बोलचाल आ बहुभाषिक चरित्रांकन

सम्पूर्ण नाटकमे स्थानीय मैथिली बोलचाल मूल धुरी अछि। मंचपर प्रशासनिक हिन्दी, सुरक्षाकर्मीक हिन्दी-मिश्रित संवाद, विवेकक समूहक अस्थिर मैथिली-हिन्दी मिश्रण आ ग्रामीण लोकोक्तिक भिन्न प्रयोग भेटैत अछि। भाषा एकर सामाजिक मानचित्रक

उपकरण अछि: अधिकारिक व्यक्ति प्रशासनिक शब्दावली लैत छथि; नेता लोकधर्मी सम्बोधन आ नारा लैत छथि; डरावनी सत्ता फूहड़ धमकीक स्वर अपनबैत अछि। एहि भिन्नताक सौन्दर्य केवल शुद्धता-अशुद्धतामे नहि, पात्रक सत्ता-सम्बन्ध आ श्रोता-सम्मुख भूमिकामे खोजबाक चाही।

स्त्री-प्रतिनिधित्वक द्वन्द्व: सुभद्राक राजनीतिक कर्तृत्व

सुभद्रा एकमात्र प्रमुख महिला प्रत्याशी होयबाक कारण नाटकक लैङ्गिक संरचनामे विशेष भार वहन करैत छथि। हुनकर सहकर्मि माला नीति-चर्चामे सक्रिय छथि, तथापि अन्य पक्षसभमे स्त्री-पात्रक स्वायत्त राजकीय उपस्थिति न्यून अछि। सुभद्राक चुनावी यात्रा पराजयक स्मृतिसँ पुनरुत्थान, अन्यायपूर्ण खर्चक प्रतिरोध, जनसभामे संक्षिप्त राजधर्म, मतगणनाक जीत आ जनसम्पर्कक पुनर्प्रतिज्ञा धरि चलैत अछि। एतेक विस्तार हुनका निष्क्रिय प्रतीक बनबाक खतरा सँ किछु बचबैत अछि।

तथापि हुनकर चरित्रक नैतिक श्रेष्ठताकेँ पिताक प्रतिष्ठा आ विवाह नहि करबाक निर्णयसँ सहारा देबाक भाषिक परिपाटी आलोचनाकेँ आमन्त्रित करैत अछि। स्त्रीक राजनीतिक अधिकारक औचित्य सेवाकार्य आ स्वतन्त्र बौद्धिक निर्णयक आधारपर स्थापित होयबाक चाही। एहि पाठमे ई आधार स्पष्ट भेटैत अछि, मुदा ओकरा संग त्यागमूलक स्त्री-आदर्श सेहो चलैत अछि। पाठक शक्ति एहि अन्तर्विरोधकेँ दृश्य बना सकबाक क्षमता अछि।

समानान्तर मैथिली रंगमंचक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

विदेहमे प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुरक ‘A Complete Critical Appreciation of Bechan Thakur’ बेचन ठाकुरक रचनासंसारकेँ समानान्तर मैथिली रंगमंचक सामाजिक-पक्षधर परम्परामे रखैत अछि। ओहि विवेचनमे ‘भअँट’केँ चुनावी भ्रष्टाचार, सत्ताक अपराधीकरण आ बहुपात्रक राजनीतिक दृश्य-विस्तारक कारण अलग महत्त्व देल गेल अछि। ई बाह्य आलोचनात्मक प्रस्ताव हमरा लेल परीक्षणक परिप्रेक्ष्य अछि, प्राथमिक नाटकक स्वतः प्रमाण नहि। प्रस्तुत पाठमे स्थानीय दलानसँ निर्वाचन कार्यालय धरि

स्थान-बदलाव, असङ्ख्य पात्र आ लोकतान्त्रिक पाखण्डक खुलल विवेचना एहि प्रस्तावकेँ पुष्ट करैत अछि।

आशीष अनचिन्हारक ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’ (विदेह, अङ्क ८२, २०११) ठाकुरक नाट्यरचनापर विदेहक आलोचनात्मक उपस्थितिक प्रमाण अछि। दूनू नाटकक विषय समान नहि—‘छीनरदेवी’मे लैङ्गिक सामाजिक प्रश्न आ ‘भअँट’मे निर्वाचन-राजनीति केन्द्रमे अछि—तैयो साझा विधागत दिशा सामाजिक अन्यायकेँ लोकभाषाक मज्जपर विवेचित करबाक अछि। एकरे कारण ई रचनाकेँ सामाजिक सरोकारक व्यापक नाट्य-परियोजनाक अंग रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; मुदा समानता सिद्ध करबाक नामपर अलग नाटकक अनपढ़ल प्रसङ्ग एहि आलोचनामे नहि जोड़ल गेल अछि।

ब्रेख्तीय दूरी, लोक-सम्पृक्ति आ रंगविधानक व्यावहारिकता

प्रहसनक बीच राजनीतिक तन्त्रपर पात्रसभक प्रत्यक्ष चर्चा दर्शककेँ केवल करुणा वा भयक भावनात्मक केन्द्रमे बाँधि नहि रखैत; ओ तन्त्रक कारण पूछबाक अवसर सेहो दैत अछि। एहि अर्थमे बेचन ठाकुरक रंग-विधानक आलोचनात्मक तुलना ब्रेख्तीय विमुखीकरणसँ सम्भव अछि। तथापि पाठमे एकर ऐतिहासिक प्रत्यक्ष प्रभावक दस्तावेज नहि भेटैत, तँ एकरा शिल्पगत साम्य मात्र कहल जाएबाक चाही। बहुपात्रक सार्वजनिक बहस, प्रचारक दृश्य-क्रम, चुनावी गीत आ कथानकक खण्ड-खण्ड विस्तारक कारण नाटकक नायक-दृष्टि सामूहिक बनैत अछि।

मंचीय रूपान्तरमे एक सय एक पात्रक व्यवस्था, पाँच प्रचार-दलक सज्जा, अनेक कार्यालय, भोज-मण्डली, पंचायत-बैसार, मंदिर आ मतदान केन्द्रक स्थल परिवर्तन कठिन अछि। ग्राम्य सामूहिक नाट्योत्सवमे व्यापक भागीदारीक अवसर मिलि सकैत अछि; सीमित रंगशाला लेल साङ्केतिक दृश्य-सज्जा, समूह-स्वर, अलग प्रकाश-प्रदेश आ सहायक भूमिका-संयोजन उपयोगी होयत। गोलीकाण्डक दृश्य यथार्थ बन्दूकक प्रदर्शनक बदला प्रकाश, ध्वनि आ अभिनयसँ व्यक्त कएल जाए तँ हिंसाक भयावहता सुरक्षित रहत आ दृश्य अनावश्यक सनसनीसँ बाँचत।

बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचनः समानता नहि, विधागत दूरी विदेहक शोध-संग्रहमे बाल-लोकसाहित्य, चित्रकथा, बाल-उपन्यास आ बालनाटकपर पृथक सामग्रीक प्रमाण भेटैत अछि। फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (अङ्क ५०, २०१०), डॉ. योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथाः स्थिति आ अपेक्षा’ (अङ्क ७६, २०११), दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (अङ्क ११६, २०१२) तथा रमेश रञ्जनक ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि’ (अङ्क १२६, २०१३) एहि पृथक चिन्तन-क्षेत्रक अभिलेखीय संकेत छथि। गजेन्द्र ठाकुरक ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ (अङ्क ४४७, २०२६) बाल-केन्द्रित कथाविन्यास, लोक-स्मृति, बालकक कर्तृत्व आ पाठक-अनुकूल रूपान्तरणक प्रश्न विस्तृत रूपमे उठबैत अछि। एहि सन्दर्भसभक आधारपर ‘भअँट’कें बाल-साहित्यक श्रेणीमे जबरन समाविष्ट करबाक बदला ओकर बाल-पाठकीय सम्भावना आ सीमा जाँचब अधिक उचित अछि।

बाल-लोककथा प्रायः बाल-मनक ग्रहण-क्षमता, कल्पना, ध्वनि-लय आ संक्षिप्त कथा-चक्रक सहारे चलैत अछि; चित्रकथा शब्द-चित्रक परस्पर सहयोगकें प्राथमिकता दैत अछि; बालनाटकमे नन्हका अभिनेताक भूमिका, अनुकूल अवधि, सहभागिता आ भय-आवेगक नैतिक प्रस्तुति केन्द्रस्थ होइत अछि। ‘भअँट’मे एक सय एक पात्र, लम्बा संस्थागत संवाद, जटिल दलगत सौदे, अपमानसूचक राजनीतिक बोली, मदिरापान आ रक्तरंजित हिंसा अछि। ई सभ रचनाकें मूलतः प्रौढ़ दर्शकक राजनीतिक रंगनाटक बनबैत अछि।

तैयो किशोर-नागरिक शिक्षाक सन्दर्भमे ओकरा सँ प्रेरित चयनित दृश्य पाठ्यरूपान्तरमे उपयोगी भऽ सकैत अछि। नामांकनक पारदर्शिता, मतदानक गोपनीयता, उपहार-लोभक परिणाम, महिला नेतृत्व, चुनावी हिंसाक रोकथाम आ जीतक बाद जनसम्पर्कक जिम्मेवारी—ई विषय उच्चतर कक्षाक चर्चा लेल उपयुक्त छथि। मुदा ई उपयोग ‘भअँट’क मूल विधागत परिचय नहि बदलैत; रूपान्तरित किशोर प्रस्तुति एकटा नव रचना-प्रयोग होयत।

पाठक प्रमुख उपलब्धि आ सीमा: समालोचनात्मक तुला

प्रमुख उपलब्धि पहिल, चुनावक सम्पूर्ण जीवनचक्र—प्रत्याशी-निर्धारणसँ निर्वाचनोत्तर आश्वासन धरि—नाट्यरूपमे देखेनाइ। दोसर, राजनीतिज्ञक संग मतदाता, निम्न कर्मचारी, सुरक्षाकर्मी, मध्यस्थ आ पुजारीक भूमिका जोड़ि भ्रष्टाचारकेँ बहुस्तरीय सामाजिक घटना बनबेनाइ। तेसर, स्थानीय बोली आ गामक सार्वजनिक स्थलकेँ नाटकक वैचारिक केन्द्र बनबेनाइ। चारिम, स्त्री प्रत्याशी आ ईमानदार सरकारी कर्मिक माध्यमसँ प्रतिरोधक सम्भावना जीवित राखब। पाँचम, वोटक सङ्ख्याक दस्तावेजी अन्त आ ओहि पछाति निर्वाचित प्रतिनिधिक कार्य-प्रतिज्ञा जोड़ब।

सीमा सेहो कम नहि। एक सय एक पात्रक व्यापकता कतेको भूमिकाकेँ सपाट करैत अछि। चुनाव आयोगक विवेचना-खण्ड कखनो नाटकसँ अधिक नीतिशास्त्रीय व्याख्यान बनैत अछि। फूहड़ अपशब्द आ मदिरा-परिहास सामाजिक आलोचनाक प्रभावमे बाधा बनि सकैत अछि। स्त्री प्रत्याशीकेँ नैतिक आदर्श ठहरबैत पाठ स्त्री-त्यागक रूढ़ छवि सँ पूर्ण मुक्त नहि। सभसँ पैघ कथ्यगत प्रश्न ई जे जनसमाजक व्यापक प्रलोभन-स्वीकारक बाद सुभद्राक अत्यधिक मत-अन्तरबला विजयक राजनीतिक प्रक्रिया पर्याप्त बारीकीसँ नहि खोलल गेल; कथा नैतिक रूपेँ संतोषजनक होइतहुँ यथार्थवादी कारण-सम्बन्धमे कनी द्रुत अछि।

मतपरिणामक साङ्ख्यिक पुष्टि आ विचारधारात्मक अर्थ

अन्तरक जाँच: १,२५,३६१ - ५०,००९ = ७५,३५२। नाटकमे घोषित अन्तर एही अङ्कसँ मेल खाइत अछि। मतगणनाक ई सङ्ख्यात्मक सुसङ्गति महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा जनादेशक व्याख्या गढ़ैत समय ओहि परिणामकेँ लेखकक कल्पित राजनीतिक परिदृश्य मानल जाएबाक चाही, वास्तविक निर्वाचन आँकड़ा नहि।

निष्कर्ष: जनादेशसँ जनसेवा धरि अधूरा मार्ग

‘भअँट’ मैथिली नाटकक सामाजिक राजनीतिक दिशामे एकटा महत्वाकाङ्क्षी रचना अछि। ओकर समग्र संरचना लोकतन्त्रकेँ नैतिक प्रवचन नहि, सार्वजनिक प्रक्रिया रूपमे

देखबैत अछि। दलानक व्यक्तिगत बातचीतसँ निर्वाचन कार्यालयक अभिलेख, गामक पंचायतसँ मतदानक जोखिम, धार्मिक स्थलसँ प्रशासनिक निर्णय धरि पहुँचैत ई नाटक सत्ता-व्यवस्थाकेँ सूक्ष्म-सूक्ष्म क्रियामे खोलैत अछि। सामूहिकता ओकरा व्यापक बनबैत अछि आ वही सामूहिकता कखनो काव्यात्मक संकेन्द्रणकेँ कमजोर सेहो करैत अछि। अन्तिम जीतमे लेखकक विश्वास स्पष्ट अछि—धन, हिंसा आ छलक ऊपर जनता विवेकपूर्ण निर्णय दऽ सकैत अछि। मुदा ई जीत नैतिकता सिद्ध करबाक अन्तिम प्रमाण नहि; वास्तविक कसौटी सुभद्राक भविष्यक जनसेवा अछि, जे नाटकक समाप्तिक बाद आरम्भ होयत। एहि खुले प्रश्नमे रचनाक स्थायी प्रासङ्गिकता अछि। लोकतान्त्रिक संस्कारकेँ मत-पत्र वा यन्त्रक प्रक्रिया धरि सीमित नहि रखि, सार्वजनिक जवाबदेहीक निरन्तर अभ्यास रूपमे देखनाइ—एहि अध्ययनक दृष्टिमे ‘भअँट’क सभसँ मूल्यवान योगदान अछि।

सन्दर्भ

समीक्ष्य ग्रन्थ आ सन्दर्भ

समीक्ष्य कृतिसभक प्रकाशन-विवरण आ विदेहमे प्रकाशित सम्बद्ध साहित्यिक आलोचना।

बेचन ठाकुरक समीक्ष्य ग्रन्थ

ठाकुर, बेचन। नवघर। नाटक-संग्रह। निर्मली (सुपौल) : पल्लवी प्रकाशन। उपलब्ध संस्करणमे २०१८ अंकित; संस्करण-विवरणमे वर्षक अन्तर उपस्थित अछि। ISBN ९७८-९३-८७६७५-५९-९।

ठाकुर, बेचन। बेटीक अपमान आ छीनरदेवी। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन। प्रथम संस्करण २०१० अंकित; आमुखक काल-सन्दर्भक कारण वर्ष-निर्धारणमे सावधानी अपेक्षित। ISBN ९७८-९३-८०५३८-३५-८।

ठाकुर, बेचन। बाप भेल पिती आ अधिकार। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१२। ISBN ९७८-९३-८०५३८-९१-४।

ठाकुर, बेचन। ऊँच-नीच। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१३।

ठाकुर, बेचन। बिसवासघात। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१३।

ठाकुर, बेचन। भअँट। सामाजिक आ राजनीतिक मैथिली नाटक। प्रकाशन-वर्ष सुनिश्चित नहि।

विदेहमे प्रकाशित आलोचना आ अभिलेखीय साहित्य

अनचिन्हार, आशीष। ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’। विदेह, अङ्क ८२, १५ मई २०११।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘A Complete Critical Appreciation of Bechan Thakur: Pioneer of the Videha Maithili Parallel Theatre Movement’। A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, खण्ड ६२, विदेह।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिली नाट्यमंच/नाटक लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त’ (भाग १-७)। विदेह, अङ्क ४४३-४४७, २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘नाट्य-नवग्रह’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

झा, फूलचन्द्र ‘प्रवीण’। ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’। विदेह, अङ्क ५०, १५ जनवरी २०१०।

झा, योगानन्द। ‘मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा’। विदेह, अङ्क ७६, १५ फरवरी २०११।

मण्डल, दुर्गानन्द। ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’। विदेह, अङ्क ११६, १५ अक्टूबर २०१२।

रञ्जन, रमेश। ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि’। विदेह, अङ्क १२६, १५ मार्च २०१३।

मण्डल, उमेश। ‘दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय : डिजिटल फॉर्ममे ३७ पोथीक लोकार्पण’। विदेह, अङ्क १२०, १५ दिसम्बर २०१२।

विदेह। ‘विदेह शोध-लेख : अङ्क १ सँ ४५१ धरि’। शोध-लेखक समेकित विषयसूची।

विदेह। ‘पोथी-संग्रह’। मैथिली साहित्यक ग्रन्थसूची।

१.२८. नित नवल कुमार पवन — पड़ठ

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

कुमार पवन : कथा, समाज आ नैतिक प्रश्न

कुमार पवनक कथा-संसारमे मनुष्य प्रायः एहन चौखटपर ठाढ़ भेटैत अछि जतए ओकर इच्छा आ समाजक बनाओल नियम आमने-सामने होइत अछि। कतहु भोजक पाँति अछि, कतहु महाविद्यालयक कार्यालय, कतहु प्रतिष्ठित व्यक्तिसँ परिचय पएबाक आकांक्षा। स्थान बदलैत अछि, मुदा मूल चिन्ता एके रहैत अछि—व्यक्ति अपन मान, अपन स्वाधीनता आ अपन नैतिक विवेक कोना बचबैत अछि। एहि तीन रचनाक साथे अध्ययन कएला पर कुमार पवनक कथा-दृष्टिक बहुआयामी विस्तार स्पष्ट होइत अछि।

‘पड़ठ’ मृतात्माक स्वर्गमे पड़ठ पएबाक लोकधार्मिक विश्वासक पृष्ठभूमिमे जीवित मनुष्यक भूख आ मृत्युक बादक आडम्बरक विरोधाभास उद्घाटित करैत अछि। कनियाँ काकी जीवित रहिते अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह, तँ घर-समाजमे कोलाहल मचल; मुदा हुनक मृत्युक बाद हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ठक अभिलाषासँ विशाल भोज आयोजित भेल। ‘डायरीक खाली पन्ना’ सत्ता, शिक्षा आ व्यक्तिगत आत्मलेखनक बीचक उलझनक कथा अछि। ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ लोककथनक अर्थ खोजैत-खोजैत समाजक पदलोलुपता आ बौद्धिक प्रतिष्ठाक विडम्बनाक ओर बढैत अछि। तीनू रचनामे ठहाका, विस्मय, करुणा आ विडम्बना परस्पर विरोधी नहि, एकहि यथार्थक अलग-अलग स्वर बनैत अछि।

एहि पुस्तकमे तीनू रचनाक स्वतंत्र समीक्षाकें क्रमबद्ध कएल गेल अछि। तकर बाद ‘पड़ठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’क कथा-समय, स्मृति, दृष्टिकोण, सामाजिक सत्ता आ नैतिक उत्तरदायित्वपर साहित्य-सैद्धान्तिक तुलनात्मक विवेचन अछि। ‘पड़ठ’कें मैथिली साहित्यक ‘उसने कहा था’ कहबाक आशय कथा-वस्तु वा शिल्पक समानता नहि, साहित्यिक ख्यातिक एकटा विशिष्ट स्थिति अछि—जेना चन्द्रधर शर्मा गुलेरीक साहित्यिक पहिचानमे ‘उसने कहा था’ अत्यन्त प्रसिद्ध अछि, तहिना मात्र एकटा कथा

सेहो कोनो कथाकारक नामक प्रतिनिधि कृति बनि सकैत अछि। ‘पड़ठ’क प्रसंगमे ई उपमान एही सीमित अर्थमे ग्रहण करबाक चाही।

समीक्षाक उद्देश्य पात्रक दोष-गुणक फैसला सुनाएब नहि, वरन् रचनाक भीतर जे अनेक आवाज, स्मृति, सामाजिक गणित आ अधूरा प्रश्न अछि तकरा स्पष्ट करब थिक। कथा जखन निश्चित उत्तर नहि दैत, तखन ओकर मौन सेहो अर्थवान होइत अछि। कुमार पवनक रचनासभ एहि प्रकारक असुविधाजनक, मुदा आवश्यक, पाठकीय सक्रियता माँगैत अछि।

पड़ठ

जीवितक उपेक्षा, मृत्योत्तर भोज आ स्वर्ग-पड़ठक विडम्बना

रचनाक अन्तरंग

कुमार पवनक ‘पड़ठ’ मैथिली दीर्घकथाक एहन उदाहरण अछि जाहिमे मृत्योत्तर भोजक तैयारी, ओकरा घेरने अफरा-तफरी आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रदर्शन ग्रामीण समाजक असमान संरचनाकें अनावृत करैत अछि। कथाक मार्मिक विरोधाभास ई अछि जे कनियाँ काकी जीवित अवस्थामे अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह तँ एहि आग्रहपर कोलाहल मचल; मुदा हुनकर मृत्युक बाद आत्माकें स्वर्गमे ‘पड़ठ’ भेटबाक लोकविश्वासक निमित्त विशाल भोजक आयोजन होइत अछि। कथामे सरवन बाबूक आयोजन, ओहि आयोजनक सम्बन्धमे उठैत बहस, कनियाँ काकीक जीवनक उपेक्षा, परिवारक सम्बन्ध, उत्तराधिकार आ वंशक अपेक्षा, विद्यालय आ आगाँक जिनगीक सपना, सार्वजनिक भीड़ तथा भोजनक क्रम सभ एक-दोसरसँ जुड़ैत अछि। शीर्षकक मूल आशय भोजस्थलमे सामान्य प्रवेश नहि, मृतात्माक स्वर्गमे धार्मिक स्वीकार्यता पएबाक अभिलाषा अछि; एकर व्यंग्य जीवितक भूखक अनसुनी माँग आ मृतकक नामपर प्रचुर व्ययक बीच प्रकट होइत अछि। एहि अनुशीलनमे कथन-विधान, संवाद, व्यंग्य, स्त्री-दृष्टि, जाति-वर्गसम्बन्ध, अन्नक प्रतीक आ नैतिक असुविधाक विवेचन

कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त विदेहमे उपलब्ध शिशु-लोकसाहित्य, बाललोककथा, चित्रकथा आ आधुनिक बाल-उपन्याससम्बन्धी प्रकाशनक आधारपर विधागत तुलना प्रस्तुत अछि। एहि तुलनाक उद्देश्य दीर्घकथाकें बाल-साहित्य घोषित करब नहि, बल्कि पाठक-सम्बोधन, कथाभाषा आ सामाजिक यथार्थक प्रस्तुति-प्रणालीक अन्तर स्पष्ट करब थिक।

प्रस्तावना: मिथिलाक मृत्योत्तर भोज आ जीवितक प्रति दायित्व

मैथिली कथासाहित्यक ग्रामीण संसारमे दलान, आँगन, पोखरि, बाट, खेत, बजार आ भोज-भात खाली भौगोलिक वा सांस्कृतिक स्थान नहि होइत अछि; ओ समाजक नियम, प्रतिष्ठा, दूरी आ टकरावकें दृश्य बनबैत अछि। ‘पड़ठ’ एहि सामान्य अनुभवकें असामान्य कथात्मक विस्तार दैत अछि। रचनामे मृतात्माक स्वर्गमे पड़ठ पएबाक लोकधार्मिक आकांक्षासँ जुड़ल भोज सामुदायिक आयोजनक रूप लैत अछि। एहि आयोजनक पृष्ठभूमिमे कनियाँ काकीक जीवित अवस्थाक एकटा छोट माँग पड़ल अछि—बेटीक बेटा लेल भोजन—जाहिपर झाल हंगामाक स्मृति भव्य मृत्योत्तर भोजकें नैतिक रूपसँ असहज बना दैत अछि। गामक अन्हार, बाट, आवाजाही आ जनसमुदाय एही उलटबाँसीकें दृश्य रूप दैत अछि।

‘पड़ठ’कें मात्र खाद्य-संकटक रिपोर्ट वा जातिप्रथाक एकरेखीय अभियोग मानि लेब ओकर बहुस्वरात्मकता कम करब होएत। एकर मूल व्यंग्य धार्मिक अनुष्ठानक विरोधमे नहि, जीवित अवस्थामे उपेक्षित मनुष्यक प्रति दायित्व बिसरि मृत्युक बाद उदारता प्रदर्शित करबामे अछि। लेखक भोजक दृश्यसँ पारिवारिक स्मृति धरि, लोकक सार्वजनिक मुद्रासँ ओकर निजी क्लेश धरि, हास्यास्पद व्यवहारसँ करुण प्रसंग धरि अबैत-जाइत छथि। एहिसँ कथा एकटा निश्चित खलनायकक कथा नहि रहि सामुदायिक जीवनक विखण्डित विवेकक दस्तावेज बनैत अछि। प्रश्न उठैत अछि—मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल उत्सुक समाज जीवित कनियाँ काकीक सरल माँगकें मानवीय सहजतासँ स्वीकार किएक नहि कऽ सकल?

शीर्षक 'पड़ठ': मृतात्माक स्वर्ग-स्वीकृति आ नैतिक विडम्बना

एहि कथामे 'पड़ठ'क अर्थ भोजक पाँतिमे पैसब नहि, मृत्यु उपरान्त आत्माकेँ स्वर्गमे स्थान वा स्वीकार्यता भेटबाक लोकधार्मिक धारणा अछि। कनियाँ काकी जखन जीवित छलीह, तखन अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजनक आग्रह कएने छलीह; ओहि छोट आवश्यकता परो परिवार-समाजमे हंगामा मचल। मृत्युक बाद हुनका स्वर्गमे 'पड़ठ' भेटय, एहि विश्वासक अनुरूप विशाल भोज आयोजित कएल गेल। ई दू दृश्य शीर्षकक प्राण अछि—जीवितक छोट भूखक प्रति कठोरता आ मृतकक परलोकक हितमे प्रचुर भोजनक प्रदर्शन। एहि अर्थमे 'पड़ठ' धार्मिक क्रियाक नाम होइतहुँ मनुष्यक वास्तविक सेवा आ कर्मकाण्डी प्रतिष्ठाक बीचक दूरी मापबाक कसौटी बनैत अछि।

शीर्षकक व्यंग्यार्थ एहि प्रश्नमे निहित अछि जे कनियाँ काकीक जीवनकालमे हुनकर बेटीक बेटा लेल अन्न देब एतेक कठिन किएक छल, जखनकि हुनकर मृत्यु उपरान्त आत्माक स्वर्गमे पड़ठ सुनिश्चित करबाक अभिलाषासँ भोजक विशाल प्रबन्ध सम्भव भऽ गेल। कथामे धर्मविश्वास अपन स्थानपर अछि; आलोचनाक धार ओहि व्यवहारपर अछि जे परलोकक कल्याण लेल खर्च करैत अछि, मुदा जीवितक कनेक भूखकेँ कोलाहलक कारण बना दैत अछि। पाँति, भात, भीड़ आ सामाजिक मान एहि केन्द्रीय विरोधाभासक दृश्य माध्यम छथि, शीर्षकक प्राथमिक शब्दार्थ नहि।

कथा-संसारक सामाजिक मानचित्र

कथाक एक धुरी सरवन बाबूक मृत्योत्तर भोजक आयोजन आ ओकरा घेरने सार्वजनिक समाज अछि। आयोजनक क्षेत्रमे भोजनक सुविधा, निमन्त्रण, चूल्हा-भानस, कारिन्दा, स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्ति आ जनसमुदायक अपेक्षा एक-दोसरपर निर्भर करैत अछि। दोसरी धुरी कनियाँ काकीक जीवनक उपेक्षा अछि: जीवित अवस्थामे बेटीक बेटा लेल हुनकर कनेक भोजनक माँगपर उठल कोलाहल, पुत्र-पुतोहु आ परिवारक सम्बन्ध, गुँजा, प्रतिष्ठा आ स्नेहक अभाव। एहि दुनू धुरीक बीच मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठक कामना आ जीवित सदस्यक प्रति कर्तव्यक अन्तर खुलैत अछि। सार्वजनिक भोज आ निजी परिवार एतय अलग क्षेत्र नहि; एकहि समाजक नैतिक मूल्यक दू रूप छथि।

कथा कतहु-कतहु राघव, सहयोगी, ठेकेदार, आयोजक आ आन पात्रक मतभेदक सहारे ग्रामीण समुदायकेँ बहुवचनमे देखबैत अछि। कोनो एक पात्रक मुँहसँ लेखकीय निर्णय सुनाएब लेखकक एकमात्र उपाय नहि अछि। लोक कखनो बहस करैत अछि, कखनो अनुमान लगबैत अछि, कखनो डरैत अछि, कखनो आनक दुखक सम्बन्धमे उदासीन रहैत अछि। ई जनसमूह नीरस प्रसंगभूमि नहि, कथाक सक्रिय चरित्र अछि।

कथा-विवेचन: आरम्भक सामूहिक दृश्य

प्रारम्भिक प्रसंगसभक दृश्य-विन्यासमे अन्हार, बाटक गति, गामक चर्चा, भोजक प्रतीक्षा आ दलानक गतिविधि एक संग प्रवेश करैत अछि। दृश्य किछु क्षण लेल स्थिर रहितो लोकक बोलचाल आ व्यस्ततासँ गतिमान बनल रहैत अछि। मुख्य घटनाकेँ तुरत पूरा खोलि देबाक बदला लेखक सामाजिक तापमान बढ़बैत छथि। एहि शिल्पमे पाठक समाचार नहि, परिवेशक भीतर बनैत स्थिति अनुभव करैत अछि। पहिने गाम देखाइत अछि, तकर बाद भोज, तकर बाद भोजपर निर्भर मनोवृत्तिसभ।

एहि हिस्सामे मृत्योत्तर भोज एकटा ‘समाज-प्रयोग’ सन अछि: सामूहिक धार्मिक कर्तव्य पूरा करबाक नामपर सभ जुटैत छथि, मुदा सभ समान दृष्टिसँ नहि देखैत छथि। जे अनुष्ठान मृतात्माक कल्याणक निमित्त कएल जाइत अछि, ओही ठाम पद, प्रतिष्ठा आ अहंकार अपन स्वर प्रकट करैत अछि। कथावाचक सामाजिक सम्बन्धक जटिलता समझेबाक लेल लम्बा सिद्धान्त नहि लिखैत; एक गोटेक बोलचाल, दोसरक प्रतिक्रिया आ तेसरक तैयारी सँ क्रमशः सामाजिक संरचना बनबैत छथि। जीवनकालक ओहि छोट आग्रहपर मचल विवादक स्मृति एहि सामूहिक कर्मकाण्डक चमककेँ प्रशंसाकित करैत अछि।

कथा-विवेचन: भोजक भीड़, पराक्रमक विडम्बना

एहि प्रसंग धरि भीड़ केवल संख्यात्मक नहि रहैत; ओ व्यवहारक मूल्यांकन करबाक पैमाना बनैत अछि। मृतात्माक स्वर्ग-पइठक उद्देश्यसँ आयोजित भोज आ सार्वजनिक मर्यादाक बिच अन्तर बढ़ैत अछि। लोक जे सभ्यता, धर्म, परम्परा आ अतिथि-सत्कारक

बात करैत अछि, भोजनक पाँतिक प्रश्नपर ओकर धैर्य आ संयम संकटमे पड़ैत अछि। कथामे ‘पराक्रम’क स्वर आ भोजक वास्तविक व्यवहारक बेमेल व्यंग्यकें जन्म दैत अछि। सच्चा पराक्रम जीवित असहायकें संग देब होएबाक चाही; मुदा एतय परलोकक हितक भव्य प्रबन्ध एकटा साधारण भोजनक आग्रहपर मचल हंगामाक ठीक विपरीत ठाढ़ अछि।

एहि प्रसंगकें अतिरंजना मात्र मानब उचित नहि। लेखक सामूहिक उपभोगक भीतर अधिकार-बोध आ अपमान-बोधक द्वन्द्व देखबैत छथि। मृत्योत्तर भोजमे परोसल अन्न अनुष्ठानिक दायित्वक प्रदर्शन सेहो बनैत अछि; कनियाँ काकीक जीवनकालक माँगमे वैह अन्न बेटीक बेटाक भूख मेटबाक साधन छल। ककरा पहिने बैसब, ककर स्वागत, ककरा लेल व्यवस्था आ ककरा लेल प्रतीक्षा—ई सभ सामाजिक-राजनीतिक प्रश्न थिक। लेखक व्यंग्यक टोकरीमे ई चारू स्तर राखैत छथि।

कथा-विवेचन: आगि-पानि-लोह-पाथर आ सामूहिक अफरा-तफरी

एहि प्रसंगमे परिवेशक तीव्रता बढ़ैत अछि। बाट, रेल-पटरी, दौड़धूप, आशंका आ फैलैत खबरक प्रसंग सभ एक-दोसरमे गुँथल अछि। दृश्य-संयोजनमे अगिला क्षण की होएत से अनिश्चितता बनैत अछि। एहन समयमे व्यक्ति सभक सामाजिक मुखौटा खसैत अछि —किओ बचबाक चिन्तामे, किओ सूचना-दर-सूचनाक पाछाँ, किओ अपन घर-परिवारक सन्दर्भमे घटना समझबाक चेष्टामे। संकट व्यक्तिगत नहि रहि सामूहिक चेतनाक परीक्षण बनैत अछि।

कथावाचक घटना आ खबरक बिच दूरी राखैत छथि। लोक जे सुनैत अछि, से सम्पूर्ण सत्य नहियो भऽ सकैत अछि; मुदा समाचारक असर वास्तविक रहैत अछि। एहि बिन्दुपर व्यंग्य करुणासँ टकराइत अछि। अनुष्ठानक लेशमात्र व्यवधानपर शोर करनिहार समुदाय जखन असुरक्षाक सामनासँ घबराइत अछि, तखन कथाक प्रश्न उठैत अछि— समाज अपन सामूहिक विवेकक संरक्षण कोना करत? एहि खण्डक महत्व केवल उत्तेजना उत्पन्न करब नहि, सामूहिक सम्बन्धक नाजुकता उजागर करब अछि।

कथा-विवेचन: कनियाँ काकीक माँग, उपेक्षा आ पीढ़ीक दूरी

एहि प्रसंगमे कनियाँ काकीक जीवन-स्मृतिसँ कथाक केन्द्र बदलैत अछि। एतय कथा मृत्योत्तर भोजक सामूहिक दृश्यसँ निजी दुलार, पारिवारिक दायित्व आ अधूरी आकांक्षाक क्षेत्रमे पैसैत अछि। जीवनकालमे अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगबाक काकीक इच्छापर मचल हंगामा परिवारक मूल्यव्यवस्थाक वास्तविक चेहरा खोलैत अछि। एहि कारणेँ हुनकर दुख मात्र भावुक प्रसंग नहि, कथानकक नैतिक केन्द्र अछि। जे समाज मृत्यु उपरान्त आत्माक स्वर्ग-पड़ठक हेतु भव्य भोज करैत अछि, ओ जीवित स्त्रीक मामूली ममतामय इच्छाकेँ सम्मान किएक नहि दऽ सकल—ई प्रश्न कथा भरि गूँजैत अछि।

पढ़ाइ-लिखाइ, भविष्यक आशा, घरक सहयोग आ बदलैत पीढ़ी सम्बन्धी प्रसंग ‘पड़ठ’केँ केवल एक दिनक मृत्योत्तर भोज-कथा रहबासँ रोकैत अछि। वर्तमानक आयोजनक संग हुनकर जीवनकालक अपमान, स्नेह, अभाव आ संघर्षक स्मृति जुड़ैत अछि। एहि कारणेँ कथा समयक सीध रेखा तोड़ैत अछि: मृत्युक बादक भोजक दृश्य जीवित व्यक्तिक नासुनल माँगकेँ बेर-बेर सोझाँ अनैत अछि। परलोकक ‘पड़ठ’क कामना आ इहलोकक उपेक्षा एकहि कथात्मक समयमे आमने-सामने आबि जाइत अछि।

कथा-विवेचन: खिड़की, आकांक्षा आ मनोवैज्ञानिक तनाव

एहि प्रसंगक पाठमे खिड़कीसँ देखबाक, भीतर सँ बाहर ताकबाक आ बाहरी घटनाकेँ अपन दुखसँ जोड़ि बुझबाक अनेक संकेत अछि। ‘खिड़की’ एहि रूपमे दृश्य आ दूरीक बीचक सीमा बनि उठैत अछि। जनसमुदायक कोलाहल बाहर अछि; भीतर व्यक्ति अपन असफल इच्छा, अधिकारक अपेक्षा आ सम्बन्धक अर्थ टटोलैत अछि। कनियाँ काकीक स्मृति आ परिवारक युवापीढ़ीक चिन्ता एहि सन्निकटतामे मिलैत अछि।

एहि खण्डक प्रमुख कलात्मक उपलब्धि अछि जे पात्रक मनमे चलैत प्रश्न कथावाचकक पूर्ण घोषणा बनि नहि जाइत। किछु प्रसंगमे पात्र अपन निर्णायक पक्षमे तर्क करैत अछि,

किछुमे ओ स्वयं प्रश्नसँ घेरल अछि। एहन अस्पष्टता मनोवैज्ञानिक प्रामाणिकताक पक्षमे जाइत अछि। तथापि पाठक-स्तरपर एतऽ कथाक गति धीम पड़बाक सम्भावना बनैत अछि; कारण बहुचर्चित अन्तर्मन्थन सार्वजनिक कथानकसँ किछु दूर लऽ जाइत अछि। ई शिल्पक शक्ति आ जोखिम दुनू थिक।

कथा-विवेचन: गुँजा, उत्तराधिकार आ पारिवारिक असमानता

एहि प्रसंगमे गुँजा आ परिवारक भिन्न सदस्यलोकनिक सम्बन्धसंघर्ष कथा-समाजक दोसर पैघ पंक्ति बनैत अछि। पुत्र, बेटी, पुतोहु, माय आ परिवारक ‘अपन’ कहल जाएबला लोक सभकेँ समान भावनात्मक महत्व नहि भेटैत अछि। जे व्यक्ति भविष्यक आस जगबैत अछि, वैह पारिवारिक गणनाक भीतर कखनो वस्तु, कखनो दायित्व, कखनो विवादक कारण बनि जाइत अछि। लेखकक दृष्टि एतऽ बाहरक भोजसँ भीतरक ‘बँटवारा’ पर जाइत अछि।

एहि प्रसंगकेँ स्त्री-जीवनक व्यापक दबावसँ जोड़ि पढ़ल जा सकैत अछि। स्त्रीक भूमिका प्रायः ममताक अनन्त भण्डार, दोसरक अपेक्षा पूरा करनिहार आ घरक सम्मान ढोअनिहार रूपमे निर्धारित अछि; मुदा ओकर अपन इच्छा अथवा थकान कतेक मान्यता पबैत अछि, से अनिश्चित अछि। कथाक आन्तरिक विषाद एहि विरोधाभाससँ उत्पन्न होइत अछि। गुँजाक प्रसंग स्त्रीक भविष्यमे आशाक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा ओ आशा स्वयं पितृसत्तात्मक सम्बन्धक सीमासँ मुक्त नहि अछि।

कथा-विवेचन: जीवनक भोजन-माँगसँ मृत्योत्तर भोज धरि

कथाक मार्मिकता भोजनक मात्रा आ ओकर समयक विचित्र असमानतामे निहित अछि। कनियाँ काकी अपन जीवनकालमे बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह; एहि माँगपर हंगामा मचल। मुदा हुनकर मृत्यु उपरान्त स्वर्गमे आत्माक ‘पड़ठ’ लेल विशाल भोजक प्रबन्ध भेल। एतय भात जीवनक न्यूनतम आवश्यकता सेहो अछि आ मृत्योत्तर कर्मकाण्डक सार्वजनिक साधन सेहो। जकरा जीवितक भूख मेटबाक लेल

सहजतासँ देल जा सकैत छल, वैह अन्न मृतकक परलोकक स्वीकृति चाहैत समाजमे प्रचुर मात्रामे परोसल गेल। ई विरोधाभास कथा-कर्मक गहिर नैतिक प्रश्न अछि।

समापनमे रोगग्रस्त इजोरिया, अन्हार, आवाज आ ग्राम्य वातावरणक वर्णन कथाक व्यंग्यकेँ गम्भीर बनबैत अछि। मृत्योत्तर भोजक खेप आ ओकर प्रतीक्षामे रहनिहार लोकक विवरण एहन संरचना बनबैत अछि जाहिमे कर्मकाण्ड सम्पन्न भेलाक बादो जीवित मनुष्यक प्रति कर्तव्यक प्रश्न समाप्त नहि होइत अछि। कनियाँ काकीक स्वर्ग-पइठ लेल कएल प्रबन्धक पाछाँ जीवित अवस्थाक छोट माँगक अपमान प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि। कथाक अन्त समाधानक शिलालेख नहि, नैतिक प्रश्नक अवशेष अछि।

एहिसँ कथाक समय दू धुरीपर घूमैत अछि: एक दिस कनियाँ काकीक जीवनक भूख, ममता आ उपेक्षा; दोसर दिस मृत्युक बाद हुनकर आत्माक स्वर्ग-पइठ लेल कएल विशाल भोज। ई विरोधी दृश्य कथानकक सजावट नहि, समाजक मूल्यक्रमपर सूक्ष्म टिप्पणी थिक। जीवनकालमे टारल गेल साधारण दायित्वकेँ मृत्योत्तर भव्यतासँ की सचमुच पूरा कएल जा सकैत अछि—कथा एही प्रश्नकेँ पाठकक मनमे जीवित रखैत अछि।

भोजक राजनीति: मृतात्माक पइठ आ जीवितक उपेक्षा

मिथिलाक मृत्योत्तर भोजकेँ कथामे लोकधार्मिक विश्वास, परिवारक प्रतिष्ठा आ सामुदायिक अपेक्षाक संग देखल गेल अछि। मृतात्माक स्वर्ग-पइठक अभिलाषा अनुष्ठानक घोषित प्रयोजन अछि; मुदा ककरा मान देल जाए, के कतय बैसत, ककरा प्रतीक्षा, ककरा आमन्त्रण आवश्यक—एहि सभ प्रश्नक दबाव रहैत अछि। ‘पइठ’क आयोजनक विडम्बना एतबे नहि जे पाँति असमान अछि, बल्कि ई जे जीवनकालमे कनियाँ काकीक बेटीक बेटा लेल कनेक अन्नक माँगपर हंगामा भेल, आ मृत्युक बाद हुनका लेल विशाल भोज सम्भव भेल।

एतय सामूहिक उपभोगकें अपने-आप करुणामय एकता घोषित करबाक भ्रम टूटैत अछि। विशाल भोजक संसाधन अनुष्ठानिक उत्साहक प्रमाण थिक; मुदा जीवित मनुष्यक प्रति न्याय आ संवेदना अलग कसौटी अछि। कथा धार्मिक मान्यताक प्रामाणिकता सिद्ध वा असिद्ध करबाक ग्रन्थ नहि; ओ प्रश्न उठबैत अछि जे स्वर्गमे मृतात्माक पड़ल लेल सक्रिय समाज हुनकर जीवनकालक मामूली इच्छापर असहिष्णु किएक भेल। एहि दृष्टिसँ ककर बात सुनल गेल, ककर आवश्यकता मानल गेल आ ककर पीड़ा उपेक्षित भेल—सत्ताक सूक्ष्म रूप कथाक वास्तविक चिन्ता अछि।

स्त्री-पक्ष: कनियाँ काकीक जीवित उपेक्षा आ मृत्योत्तर सम्मान

कथाक सार्वजनिक स्तरपर पुरुष-पात्रसभक वाणी, आयोजन, विवाद आ अधिकारक भाषा अधिक सुनाइत अछि; मुदा निजी पीड़ाक गहराइ कनियाँ काकीक माध्यमसँ खुलैत अछि। काकीक जीवनकालक ममतामय भोजन-माँगपर मचल कोलाहल बतबैत अछि जे घरक भीतर स्त्रीक इच्छा केहन सहजतासँ अस्वीकार कएल जाइत अछि। हुनक मृत्यु उपरान्त हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ठक निमित्त आयोजित भव्य भोज एहि उपेक्षाक प्रतिलोम बनि ठाढ़ होइत अछि। घरक भीतर न्यायक अभाव बाहरी अनुष्ठानक अलग घटना नहि; दुनू एकहि सामाजिक मूल्यव्यवस्थाकें उद्धाटित करैत अछि।

कनियाँ काकीक अनुभव कथाक मानवीय विवेकक कसौटी अछि। आयोजनक प्रतिष्ठा, भोजनक प्रचुरता आ जनसमुदायक शोरक तुलना जीवनकालमे हुनका भेटल व्यवहारसँ कएल जाए तँ मूल्यक्रम बदलि जाइत अछि। मृतात्माक स्वर्गमे पड़ल लेल विशाल प्रबन्ध करब समाजक लोकविश्वासक अंग भऽ सकैत अछि, मुदा स्त्रीक जीवनकालक कनेक आग्रहपर हंगामा करब मानवीय दायित्वक विफलता अछि। एहि विडम्बनामे स्त्रीक पीड़ा आयोजनक विरुद्ध मौन प्रतिवाद बनैत अछि।

एकटा आलोचनात्मक सीमा सेहो देखब आवश्यक अछि। पाठकक सहानुभूति गहरएबाक लेल कथामे मातृत्व आ त्यागक प्रसंग बार-बार अबैत अछि; फलतः स्त्री-अधिकारक स्वतंत्र स्वर कतेक प्रत्यक्ष रूपसँ व्यक्त भेल अछि, से प्रश्न बचल रहैत

अछि। कथाक नैतिक बोध स्त्रीक दुखकें केन्द्रमे अनैत अछि, मुदा ओकर निर्णय-सामर्थ्यक सम्पूर्ण विस्तार सभ ठाम समान स्पष्ट नहि अछि। एहि सीमाक स्वीकार समीक्षा कें आस्थापरक प्रशंसासँ बचबैत अछि।

भाषा, संवाद आ व्यंग्यक कथाशिल्प

‘पड़ठ’क भाषा संवादबहुल अछि। बोलबाक चालि, प्रश्नोत्तर, आशंका, व्यग्रता, दोसरक कथन दोहराएब आ एकहि बातपर विभिन्न व्यक्तिक प्रतिक्रिया—ई सभ कथा-प्रवाह बनबैत अछि। लेखक एकटा मानकीकृत व्याख्यान देबाक बदला अनेक लोक-स्वरक सहारासँ घटना खोलैत छथि। एहि कारणेँ भोजक तैयारी कखनो जनसभा सन, कखनो घरक झगड़ा सन, कखनो अफवाह फैलनिहार चौक सन लगैत अछि। भाषामे ठेठ ग्रामीण अनुभवक दबाव कथाक प्रामाणिकता मजबूत करैत अछि।

शैलीक एक विशेषता व्यंग्य आ करुणाक तीव्र फेरबदल थिक। जे प्रसंगपर पाठक पहिने हँसैत अछि, ओकर भीतर झाँकलाक बाद वैह प्रसंग असहज बना दैत अछि। भीड़, घोषणा, पराक्रम, अनुशासन, भय आ अकारण प्रतिष्ठाक चिन्ता पर लेखकक वक्र दृष्टि अछि। मुदा व्यंग्यक लक्ष्य भूखल मनुक्ख वा मृत्योत्तर अनुष्ठानक श्रद्धाकें हँसब नहि; ओकर लक्ष्य ओ मूल्यगत उलटबाँसी अछि जाहिमे काकीक जीवनकालक साधारण भोजन-माँग विवाद बनल, आ हुनकर मृत्युक बाद स्वर्ग-पड़ठ लेल भव्य भोज समाजक कर्तव्य मानल गेल।

शिल्पक किछु जोखिम सेहो अछि। बहुतेक संवादक लगातर विन्यास आ एक प्रसंगसँ दोसरक द्रुत आवागमन नव पाठक लेल पात्र-स्थिति चिन्हब कठिन बना सकैत अछि। किछु ठाम लम्बा मनोविश्लेषण सार्वजनिक घटनाक तीव्र गतिसँ भिन्न लय लैत अछि। मुदा एहि असमान लयकें पूर्ण दोष मानल नहि जा सकैत; किएक तँ कथा स्वयं असमान सामाजिक समयक रचना अछि—भीड़ तत्क्षण निर्णय चाहैत अछि, पीड़ित मन दीर्घ स्मृतिमे भटक रहल अछि।

चित्रक उपस्थिति: पाठक संग समानान्तर दृश्य-भाषा

मूल कथांश सभमे अनेक श्वेत-श्याम चित्र अछि। सजावटी घेरा, आँखि, नारी-मुख, पशु-आकृति, हाथी आ लोकचित्रक लयबद्ध विन्यासक कारणेँ चित्र कथासँ स्वतंत्र सौन्दर्यात्मक स्तर रचैत अछि। विशेषतः आँखिक आवर्ती रूपकेँ देखबाक, देखाएब आ देखितो नहि देखबाक समस्या संग जोड़ि पढ़ल जा सकैत अछि। लोकचित्रक भरल-सघन रूप कथाक भीड़ आ जटिल सम्बन्धक दृश्य-समान्तर उत्पन्न करैत अछि।

चित्रकेँ कथाक प्रत्येक दृश्यक यथार्थवादी प्रतिलिपि मानल ठीक नहि। ताहिमे सांकेतिकता प्रधान अछि। गद्य-पाठ सामाजिक सम्बन्धक विरोधाभास शब्दमे खोलैत अछि, तँ चित्रक रेखा प्रतीकात्मक घनत्व दैत अछि। बाल-पोथीमे चित्र कथाबोध सुगम बनबैत अछि; 'पड़ठ'मे चित्र मूलतः अर्थ-परत आ मूड रचैत अछि। एहि भिन्न भूमिकाक कारणेँ चित्र रहलामात्रसँ 'पड़ठ' बालसाहित्यक वर्गमे नहि आबि जाइत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहास: उपलब्ध विदेह-सामग्रीक आलोकमे

मैथिली बाल-साहित्यकेँ आधुनिक प्रकाशित चित्रकथा सँ आरम्भ मानब इतिहासक अपूर्ण पाठ होएत। फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'क २०१० मे विदेह अङ्क ५० मे प्रकाशित 'मैथिली शिशु लोक साहित्य' मे शिशुक पालन-पोषण, खेल आ ज्ञानोपयोगी लोक-अभिव्यक्तिक विस्तार देखाओल गेल अछि। एहि लेखमे घर-आँगन, लोकगीत, लोरी, खेलक मौखिक परम्परा आ पीढ़ीदर-पीढ़ी चलैत भाषिक स्मृतिक महत्त्व रेखांकित अछि। ई सामग्री स्पष्ट करैत अछि जे बाल-साहित्यक इतिहास केवल लेखकक नाम आ प्रकाशन-वर्षक सूची नहि, मौखिक परम्परासँ प्रकाशित पोथी धरि संक्रमणक अध्ययन सेहो थिक।

डॉ. योगानन्द झाक 'मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा' विदेह अङ्क ७६ (२०११) मे लोककथाक संग्रह, बालमनक अपेक्षा, कथाभाषाक सहजता आ संकलन-कार्यक महत्त्वपर केन्द्रित अछि। लेखक रामलोचन ठाकुरक 'मैथिली लोककथा'क १९८३क पहिल संस्करण आ २००६क विस्तृत संस्करणक उल्लेख करैत छथि, संगहि

मौखिक कथाभाषाकेँ सुरक्षित राखबाक प्रश्न उठबैत छथि। ओ प्रीति ठाकुरक चित्रकथाकेँ लोककथा आ नव पाठक-वर्गक बीचक सेतु मानैत छथि। एहि आधारपर बाल-वाङ्मयक विकास मौखिकता, संकलन, पुनर्लेखन, चित्रण आ समालोचनाक परस्पर प्रक्रिया रूपमे देखल जा सकैत अछि।

विदेहक बाल-साहित्य सूचीमे प्रीति ठाकुरक मौलिक ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ (२००८), ‘मैथिली चित्रकथा’ (२००९), ‘मिथिलाक लोकदेवता’ (२०१०) आ ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’ (२०१२) संग कतेको अनूदित बाल-पोथीक क्रम देल अछि। एहिसँ २०००क दशकक पहिल भागसँ चित्र, लोक-आख्यान आ बालपाठकक सम्बन्धमे नवीन प्रकाशन-प्रयासक एकटा झलक भेटैत अछि। दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (विदेह अङ्क ११६, २०१२) एहि चित्रकथा प्रयासक समीक्षा करैत अछि।

नव परिप्रेक्ष्यमे विदेह अङ्क ४४७ (१ अगस्त २०२६) मे गजेन्द्र ठाकुरक ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ बहुविध बाल-उपन्यास, लोकनायक-आख्यान, शिक्षणकथा आ आधुनिक कल्पनाशील रचनाक समीक्षा-मानदण्डपर चर्चा करैत अछि। ई लेख बाल-साहित्यक आलोचनाकेँ केवल ‘नीति-शिक्षा’ धरि सीमित नहि राखि पाठक-वय, कथन, सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व आ सौन्दर्यात्मक कसौटी धरि विस्तारित करैत अछि। एहि इतिहासक समग्रता लेल पुरान लोकपरम्परा, १९८०क दशकक संकलन, २००८–२०१२क चित्र-पोथी आ आधुनिक आलोचनात्मक संहिताकेँ एक संग देखबाक आवश्यकता अछि।

ई कालक्रम सम्पूर्ण मैथिली बाल-साहित्यक अन्तिम इतिहास नहि, विदेहक एहिठाम जँचाएल चयनित स्रोतसँ बनल तुलनात्मक परिदृश्य अछि। आन ग्रन्थक प्रकाशन-प्रथमत्व अथवा ककरो साहित्यिक प्राथमिकता लेल व्यापक पुस्तकालयीय सूची अनिवार्य होइत; ताहि प्रकारक असत्यापित दावा एहि निबन्धमे नहि कएल गेल अछि।

‘पड़ठ’ आ बाल-कथा: समान सांस्कृतिक संसार, अलग पाठक-सम्बोधन
 ‘पड़ठ’ आ मैथिली बाललोककथाक बीच समानता पहिने भाषा आ परिवेशमे भेटैत अछि: गाम, परिवार, लोक-बोलचाल, भोजन, स्मृति, जीविका आ पारस्परिक निर्भरता। बालकथा सेहो एहि सभसँ विषय ग्रहण करैत अछि। मुदा दूनूक कथात्मक प्रयोजन समान नहि। बाललोककथामे संक्षिप्त कथानक, दृश्यात्मक स्पष्टता, कुतूहल, पुनरावृत्ति आ उम्रानुकूल भाव-व्यवस्था प्रायः महत्त्वपूर्ण होइत अछि; ‘पड़ठ’मे बहुस्तरीय सामाजिक विडम्बना, धीम अन्तर्मन्थन, तनावपूर्ण आक्षेप, बोझिल सम्बन्ध आ खुलल नैतिक निष्कर्ष प्रमुख अछि। एहि कारणेँ रचनाकेँ बिना रूपान्तर सीधे बालोपयोगी पाठ घोषित करब समुचित नहि।

विशेष तुलना भोजनक प्रतीकमे अछि। शिशु-लोकगीतमे दूध-भात, चूड़ा, सोहारी आ भोजनक सामग्री प्रायः दुलार, पालन आ जीवनक उत्सवसँ जुड़ैत अछि; ‘पड़ठ’मे बेटीक बेटा लेल माँगल कनेक अन्न परिवारक विवादक कारण बनैत अछि, जखनकि मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल प्रचुर भोज सम्भव होइत अछि। एकहि सांस्कृतिक वस्तु अलग प्रसंगमे अलग अर्थ ग्रहण करैत अछि—बालकक लेल अन्न तत्काल स्नेह आ पालनक आवश्यकता, मृत्योत्तर भोजमे वैह अन्न अनुष्ठानिक प्रतिष्ठाक चिह्न। साहित्यक आलोचना एहि दुनू अर्थक नैतिक अन्तर देखबैत अछि।

चित्रक तुलना सेहो उपयोगी अछि। दुर्गानन्द मण्डलक समीक्षानुसार बाल-चित्रकथा लोकपरम्परा चिन्हबाक आ कथाक अर्थ बुझबाक सहायक माध्यम अछि। ‘पड़ठ’क चित्र एतबे सरल दृश्य-संकेत नहि दैत; गद्यक जटिल भावभूमि संग प्रतीकात्मक प्रतिक्रिया रचैत अछि। एहि तुलनासँ स्पष्ट होइत अछि जे कृतिक बालोपयुक्तताक निर्णय चित्र उपस्थित अछि कि नहि, एहि एकमात्र कसौटीपर नहि; कथानक, भाषिक घनत्व, सामाजिक हिंसाक प्रस्तुति आ पाठकक विवेचन-क्षमता सभकेँ देखब आवश्यक अछि।

रचनाक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

‘पड़ठ’क पहिल उपलब्धि अछि—ओ मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल आयोजित भोजन समाजक मूल्यव्यवस्थाक लघु प्रतिरूप बना दैत अछि। दोसर उपलब्धि, काकीक जीवित अवस्थाक मामूली भोजन-माँगपर मचल कोलाहल आ मृत्युक बादक भव्य आयोजनक तीक्ष्ण विरोध। तेसर उपलब्धि, सामूहिक दृश्य आ निजी क्लेशक आवागमन; एहिसँ चरित्रलोकनिक अनुभव केवल घटनात्मक नहि, ऐतिहासिक आ भावनात्मक बनैत अछि। चारिम उपलब्धि, व्यंग्यक बहन्ने नैतिक प्रश्न खोलब, बिना अविलम्ब उपदेश देलहुँ। पाँचम उपलब्धि, लोकभाषाक सक्रियता आ चित्रक सांकेतिक उपस्थिति। समापनक खुलापन पाठककेँ आत्मपरीक्षण करबैत अछि।

एहि उपलब्धिसभक संग आलोचनात्मक प्रश्न रहैत अछि। बहुस्वरक कारणेँ कखनो कथावाचकक दृष्टिकेँ पात्रक मतसँ अलग चिन्हब श्रमसाध्य अछि; किछु संवाद पाठकीय एकाग्रता पर अधिक दबाव दैत अछि। स्त्रीक दुखक चित्रण प्रभावशाली होइतहुँ ओकर सक्रिय स्वनिर्णयक विस्तार अपेक्षाकृत सीमित रहि सकैत अछि। सामाजिक वर्ग आ जातिसम्बन्धी संकेत बहुत तीक्ष्ण अछि, मुदा प्रत्येक पात्रक भिन्न मनोवैज्ञानिक स्थिति एकहि विस्तारसँ रेखांकित नहि। आरम्भिक भीड़क गति आ मध्यक पारिवारिक स्मृति बीचक संक्रमण सेहो अलग पाठकक लेल अलग प्रकारसँ सफल वा कठिन साबित भऽ सकैत अछि।

एकर अन्तक नैतिक तनावक कमजोर व्याख्या ई होएत जे कथामे ‘सभ लोक खराब’ अछि। लेखक एहन सार्वभौमिक निन्दा नहि गढ़ैत छथि। कथाक समुदायमे सहयोगक सम्भावना, दया, पारिवारिक आशा आ आत्मीयता सेहो उपस्थित अछि; संकट ई अछि जे एहि सम्भावनासभकेँ सामाजिक प्रतिष्ठाक ढाँचा निरन्तर कम करैत अछि। एहि सूक्ष्म विरोधकेँ बचौने राखब कथा-विवेचनक मुख्य शर्त अछि।

उपसंहार: परलोकक पइठ आ इहलोकक अधूरा दायित्व

‘पइठ’क दीर्घकथात्मक शक्ति मृतात्माक स्वर्गमे पइठ पएबाक धार्मिक अवधारणाकेँ जीवित मनुष्यक प्रति नैतिक दायित्वक कसौटी बनबामे अछि। कनियाँ काकी जीवित रहिते अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह, मुदा ओहि माँगपर हंगामा मचल; हुनक मृत्युक बाद आत्माक स्वर्ग-पइठ लेल विशाल भोज आयोजित भेल। एहि दू घटनाक विरोधे कथाक शीर्षककेँ मार्मिक अर्थ दैत अछि। पाठक भोजक पाँति देखैत-देखैत मनुष्यक मूल्यक पाँति देखय लगैत अछि। सरवन बाबूक आयोजन सार्वजनिक दृश्यक केन्द्र बनैत अछि, मुदा कनियाँ काकीक जीवनानुभव ओकर नैतिक प्रतिलोम बनैत अछि।

कथाक क्रममे अन्हार, भोजक व्यवस्था, भीड़, आशंका, पारिवारिक विषाद, जीवनकालमे कनेक अन्नक आवश्यकता आ मृत्योत्तर स्वर्ग-पइठक प्रबन्ध जे दू समयकेँ जोड़ैत अछि, से मैथिली ग्रामीण जीवनक एकरेखीय रोमानीकरणकेँ अस्वीकार करैत अछि। गाम सुन्दर स्मृतिक स्थान होइतहुँ विरोधाभाससँ भरल सामाजिक व्यवस्था थिक। लेखकक व्यंग्य एहि दोहरी सत्यकेँ एक संग देखबैत अछि—श्रद्धाक सार्वजनिक उच्चारण आ जीवितक प्रति संवेदनाक अभाव।

बाल-साहित्यक तुलनात्मक इतिहास एहि निष्कर्षकेँ आओर स्पष्ट करैत अछि: एकहि लोकसंस्कृति नेनाकेँ लोरी, कुतूहल आ चित्रकथा दैत अछि, आ प्रौढ़ पाठककेँ व्यंग्य, अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक आत्मपरीक्षण। ‘पइठ’क विशिष्टता दोसर प्रकारक पाठकीय अनुभवमे अछि। एतय जीवनमे बेटीक बेटा लेल माँगल भोजन आ मृत्यु उपरान्त स्वर्ग-पइठ लेल कएल भोजक बीचक दूरी धार्मिक कर्मकाण्डसँ बेसी जीवित मनुष्यक प्रति न्यायक प्रश्न बनि उठैत अछि।

१.२९. नित नवल कुमार पवन — डायरीक खाली पन्ना

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

डायरीक खाली पन्ना

शिक्षा-संस्था, सत्ता, आत्मलेखन आ नैतिक विवेक

रचनाक अन्तरंग

कुमार पवनक 'डायरीक खाली पन्ना' एकटा एहन दीर्घ-कथा अछि जाहिमे व्यक्तिगत आत्मलेखनक कामना आ सार्वजनिक संस्थागत जीवनक दबाव एक-दोसरासँ निरन्तर टकराइट रहैत अछि। केन्द्रमे महाविद्यालयक प्राचार्य छथि—व्यवस्थापनक सफलता, प्रतिष्ठाक आकांक्षा, राजनीतिक सम्पर्क, भय, मोहभंग आ आत्मचिन्तनक बीच हेलान-डोलान करैत व्यक्ति। कथा डायरी लिखबाक आदतिसँ आरम्भ होइत अछि, मुदा आगाँ महाविद्यालयक भवन-निर्माण, शिक्षक-नियुक्ति, परीक्षा, छात्र-राजनीति, स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तिक हस्तक्षेप आ सार्वजनिक आरोप-प्रत्यारोपक गुम्फन बनि जाइत अछि। एहि कथामे रिक्त पन्ना असलमे लेखन-असमर्थताक साधारण बिम्ब नहि, अपितु सत्ता-संलग्न मनुष्यक आत्मसाक्ष्यक संकट थिक। एहि अध्ययनमे एहि कथांशक क्रमिक पाठविश्लेषण, चरित्र-परिकल्पना, कथन-भंगिमा, व्यंग्य, भाषिक युक्ति आ चित्र-संयोजनक परीक्षा कएल गेल अछि। बाल-साहित्यक इतिहासक चर्चा तुलनात्मक सीमा-बोधक संग प्रस्तुत अछि: मूल रचना बाल-कथा नहि, तथापि विद्यालयीय नैतिकता, छात्र-कर्तृत्व आ सचित्र कथनक प्रश्नपर एकर बाल-साहित्य विमर्शसँ उपयोगी संवाद बनैत अछि।

प्रस्तावना: रिक्तताक दोहरा अर्थ

डायरी सामान्यतः निज अनुभवक क्रमबद्ध अभिलेख मानल जाइत अछि। ओकर पन्ना व्यक्तिगत समयक साक्षी बनबाक अपेक्षा राखैत अछि: के देखल, कोन निर्णय भेल, की गलती कएल गेल, आ व्यक्ति अपन मनमे की लुकेने रहल। कुमार पवन एहि सहज

मान्यताकें उलटि दैत छथि। हुनक कथा-नायक लेखनक प्रतिष्ठामे विश्वास करैत छथि, मुदा जे जीवन वास्तवमे हुनका लिखबाक सामग्री उपलब्ध करबैत अछि, सेहि जीवनक सामाजिक-प्रशासनिक जटिलता हुनका लिखबासँ दूर करैत चलि जाइत अछि। एहि अर्थमे शीर्षकक रिक्तता केवल कागजक नहि, आत्मज्ञान, नैतिक स्थिरता आ सत्यनिष्ठ अभिलेखक रिक्तता सेहो अछि।

रचनाक प्रारम्भमे ओकर विधा ‘दीर्घ-कथा’ देल अछि। ई विधा-सूचना महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पात्रसभक आगमन, परिस्थिति-परिवर्तन आ सत्ता-संघर्षक फैलाव छोट कथाक एकक घटनासँ आगाँ जाइत अछि, मुदा संरचना उपन्यासक स्वतन्त्र विस्तृत संसार नहि रचैत। एकर दोहरावयुक्त, प्रश्नाकुल आ संवादप्रधान गद्य प्राचार्यक चित्तगत उधेड़बुन आ संस्थागत अव्यवस्थाकें समानान्तर चलबैत अछि।

प्रस्तुत आलोचनाक केन्द्रीय स्थापना ई अछि जे कथा व्यक्तिक दू गोद विपरीत इच्छाक सामना करबैत अछि: अपन जीवनकें अर्थपूर्ण ढंगसँ दर्ज करबाक इच्छा आ सार्वजनिक छविक रक्षार्थ जीवनक असुविधाजनक सत्यकें टारि देबाक प्रवृत्ति। साहित्यिक प्रतिफल एहि विरोधक भीतरसँ उपजैत अछि; नैतिक उपदेश लेखकक घोषित निष्कर्ष नहि बनि, पात्रक अनुभूतिमे व्यंजित होइत अछि।

कथाक विकास: मुख्य प्रसंगसभ

डायरीक आदति आ आत्मप्रतिष्ठाक स्वप्न

कथा डायरी लिखबाक अभ्यासक परिचयसँ प्रवेश करैत अछि। उच्च विद्यालयक शिक्षकक निजी लेखन, अपन जीवनकें कखनो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक रूपमे देखबाक उत्सुकता आ लेखनक सामाजिक मान्यता—ई तीनू सूत्र आरम्भमे जुड़ैत अछि। एतए डायरी एकान्तक सहचर होयबाक संग भविष्यमे स्वयंकें पढ़ल जाएब योग्य बनएबाक साधन सेहो बनैत अछि। प्राचार्यक उपस्थितिसँ लेखकीय आकांक्षा सामाजिक सफलताक आकांक्षसँ जुड़ि जाइत अछि।

निर्माणकार्य, प्रतिष्ठा आ लेखनक अवरोध

महाविद्यालयक भवन-विस्तार, छात्र-समूह, स्थानीय सम्पर्क आ प्रशासनिक योजनाक विस्तारमे प्राचार्यक दिनचर्या भरैत जाइत अछि। समयक अभाव मात्र शारीरिक व्यस्तता नहि रहि जाएत अछि; कामक प्रतिष्ठा सेहो निजी अभिलेखसँ अधिक आकर्षक बनैत अछि। प्राचार्य अपन दिनक अनुभवकेँ दर्ज करबाक वचन दैत छथि, मुदा कागजपर आत्मसाक्ष्य टिकैत नहि। एतहि सँ रिक्त पन्नाक समस्या चरित्रगत समस्या बनैत अछि।

महत्वाकांक्षा, गणना आ आत्मविश्वासक दरार

सार्वजनिक मान्यता आ निजी संकोचक संघर्ष तीव्र होइत अछि। प्राचार्य संस्था, विश्वविद्यालय, छात्र आ प्रभावशाली लोकक सम्बन्धमे अवसर देखैत छथि। कथनमे बेर-बेर आशंका, तुलना, अनुमान आ प्रश्नक प्रवेश हुनक भीतरक अस्थिरताकेँ उद्घाटित करैत अछि। युक्तिसंगत निर्णयक बदला अपन भविष्यक सम्बन्धमे अनुमान अधिक महत्त्वपूर्ण भऽ उठैत अछि।

अधिकारक प्रमाण आ अपमानित होयबाक भय

प्रतिष्ठाक रक्षाक प्रश्न सिधा प्रशासनिक अधिकारसँ जुड़ैत अछि। प्राचार्यकेँ डर अछि जे लोक हुनका ओहि ऊँच स्थानपर नहि मानत जतए ओ स्वयंकेँ देखैत छथि। व्यक्तित्वक स्वायत्तताक अपेक्षा बाहरी स्वीकृतिक आवश्यकता प्रबल भऽ जाइत अछि। एतए कथाक हास्य करुण अर्थ ग्रहण करैत अछि, कारण सत्ता पाबियो मनुष्य भीतरसँ आश्वस्त नहि भऽ सकैत अछि।

प्रभावशाली व्यक्तिसँ भेंट आ आत्म-संयमक परीक्षा

राजनीतिक-सामाजिक प्रभावक केन्द्रक संग प्राचार्यक निकटता कथाक रङ्ग बदलैत अछि। बृन्दावन बाबू सन व्यक्तिसँ सम्बन्ध केवल अवसरक माध्यम नहि, मूल्य-निष्ठाक जाँचक अवसर सेहो बनैत अछि। स्नेह, भय, जोखिम आ स्वार्थक बीच प्राचार्यक

प्रतिक्रियासभमे विरोधाभास देखाइत अछि। चित्रांकन एहि प्रसंगक मनोदशाकें शब्दक समानान्तर व्यंग्यमय रूप दैत अछि।

कारण खोजबाक भटकाव

कारण आ परिणामक सम्बन्ध बुझबाक बेचैनी प्राचार्यकें निजी नैतिक प्रश्नसँ सामाजिक आ दार्शनिक विमर्श धरि पहुँचबैत अछि। धर्म, राजनीति, क्रान्ति आ विद्यालयीय जीवनक विचार एक-दोसरामे घुलि जाइत अछि। सतही जानकारी आ निश्चित उपाय नहि भेटबाक कारण खोज निरन्तर प्रश्नक रूप धरि लौटैत अछि। एहि बिन्दुपर दीर्घ-कथा आत्मचिन्तन आ वैचारिक व्यंग्यक दोसाँधपर ठाढ़ अछि।

उषा जी आ नव सम्भावनाक क्षण

विश्वविद्यालयीय वातावरणमे उषा जीक उपस्थितिसँ प्राचार्यक ध्यान क्षणिक रूपेँ अपन रक्षात्मक मुद्रा सँ हटैत अछि। ओ अपन व्यवहार, पढ़ाइ-लिखाइ आ सामाजिक सम्बन्धकें फेर सँ सोचबाक प्रेरणा पबैत छथि। मुदा ई अनुभूति कोनो स्थायी नैतिक परिवर्तनक प्रमाण नहि; कथा एकरा सम्भावनाक रूपमे राखैत अछि। स्त्री-पात्रक भूमिका नव दृष्टिक संकेत बनैत अछि, तथापि ओकर अपन स्वायत्त जीवन पर्याप्त विस्तार नहि पबैत।

सार्वजनिक नैतिकता आ निजी असुरक्षा

धार्मिक दृश्य, सामाजिक पहचान, परिसरक गतिविधि आ पर्चा-वितरणक प्रसंग प्राचार्यक आश्वासनकें फेर चुनौती दैत अछि। लोकधर्म, प्रतिष्ठा आ निन्दाक भय एकठाम आबैत अछि। प्राचार्यक प्रतिक्रियामे ई स्पष्ट होइत अछि जे संकटकें ओ पहिने अपन मान-सम्मानक क्षतिक रूपमे देखैत छथि, ओकर संस्थागत सत्यक रूपमे बादमे। एहि प्रसंगक चित्र एकान्त आ ऊहापोहक लाक्षणिक सहचर अछि।

महाविद्यालय, अफवाह आ आरोपक राजनीति

प्राचार्यक परिसर-सम्बन्धी योजनासभक संग एकटा उत्तेजक प्रसंग जोड़ल गेल अछि, जाहिमे सार्वजनिक नैतिकताक प्रश्न संस्था-विरोधी प्रचारक साधन बनैत अछि।

अफवाह, संकेत, वस्तु आ आरोपक बीचक दूरी जानि-बुझि धुँधल राखल जाइत अछि। एहि प्रसंगक साहित्यिक महत्त्व सनसनीमे नहि, बल्कि एहि तथ्यमे अछि जे तथ्य-जाँचसँ पहिने संदेह संस्थागत प्रतिष्ठा निर्धारण करए लगैत अछि।

परीक्षा-व्यवस्था, नियुक्ति आ प्रभावक कारोबार

महाविद्यालयक भीतर परीक्षा, मूल्यांकन, पद, पदोन्नति आ संरक्षणक संसाधन-सम्बन्धी जाल खुलैत अछि। बल्लि बाबू सन स्थानीय प्रभुत्वशाली व्यक्तिक प्रभाव संस्थाक आन्तरिक निर्णयमे प्रवेश करैत अछि। शिक्षा-प्रशासनक औपचारिक प्रक्रिया आ व्यक्तिगत अनुग्रहक बीच स्पष्ट तनाव देखल जाइत अछि। कथा केवल भ्रष्ट व्यक्तिक निन्दा नहि करैत; ओ देखबैत अछि जे संस्थागत व्यवस्था कोना निजी सौदाक भाषा ग्रहण करैत अछि।

राजनीतिक संरक्षणक बदलैत गणित

गुट, चुनाव आ संरक्षणक फेरबदलसँ प्राचार्यक पुरान सुरक्षा कमजोर होइत अछि। जकर निकटता काल्हि लाभकारी छल, वैह आइ असुरक्षाक कारण बनि सकैत अछि। एहि अनिश्चिततामे प्राचार्यक स्वाभिमान आ भयक द्वन्द्व तीव्र होइत अछि। सत्ता एक स्थिर संरक्षक नहि, बदलैत समीकरणक नाम अछि—ई तथ्य प्रसंगभृंखलासँ उभरैत अछि।

दबाव, समझौता आ भयक पुनरागमन

परीक्षा आ महाविद्यालयीय स्वायत्तताक प्रश्नक बीच शिक्षक, अधिकारी आ स्थानीय प्रभावक टकराव बढ़ैत अछि। प्राचार्य कखनो स्पष्ट विरोधक भाषा अपनबैत छथि, कखनो सम्भावित दण्डक कल्पनासँ विचलित भऽ जाइत छथि। एहि आवागमनसँ पात्र निश्चल नायक नहि रहैत; ओकर मानवीय दुर्बलता आ नैतिक हिम्मत दुनू संगे देखाइत अछि।

छात्र-आन्दोलन आ सार्वजनिक छविक विघटन

छात्र-समूह, नारा, परिसरक अफरातफरी आ बाहरी सक्रियताक कारण महाविद्यालय प्रशासन नाटक-सदृश सार्वजनिक रंगमंच बनैत अछि। प्राचार्यक विरुद्ध उठल आवाज

सभ एकहि अर्थ नहि राखैत—किछु प्रतिरोध, किछु अवसरवाद, किछु अफवाह। कथाक महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे यथार्थक निर्णय कोन आधारपर होए, जखन सभ पक्ष अपन छवि बनबए चाहैत हो। व्यंग्यचित्र सत्ता-प्रतिष्ठाक थरथराहटकेँ दृश्य रूपमे पुष्ट करैत अछि।

आत्मरक्षाक आखिरी प्रयास आ खाली पन्नाक वापसी

एहि प्रसंगमे मामला सम्भारबाक योजना, छात्र-राजनीति, प्रतिष्ठाक बेचैनी आ आत्मलेखनक फेर उपस्थित प्रश्न एकठाम होइत अछि। कथा सरल समाधान नहि दैत; ओ पाठककेँ प्राचार्यक आत्मपरीक्षाक अधूरापनक सोझाँ छोड़ैत अछि। डायरी फेर कथा-भूमिपर अबैत अछि, मुदा दिनसभक दबाव ओकरा भरल नहियो होय देत। शीर्षक एतए घटनाक सार नहि, समूची कथाक नैतिक रूपक बनि उठैत अछि।

कथानकक निर्माण: निजी डायरीसँ सार्वजनिक संस्थाक कथा धरि

पहिल दृष्टिमे कथा एकटा व्यक्तिक मनोवृत्तिक उतार-चढ़ावक लेखा जकाँ लगैत अछि; नजदीक सँ देखला पर ई संस्थाक सामूहिक आत्मकथा बनि जाइत अछि। आरम्भमे जकरा लिखनिहारक एकान्त मानल गेल छल, क्रमशः ओकरा भीतर छात्र, शिक्षक, प्रबन्धक, राजनीतिक कार्यकर्ता, स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्ति, पत्रकारिताक प्रभाव आ घर-परिवारक आशंका प्रवेश करैत अछि। प्राचार्यक चेतनाक केन्द्रीयता कथा-विस्तारकेँ बाँधैत अछि, मुदा समूचा संसार हुनक वशमे नहि रहैत। एहि विरोधमे रचनाक गति निहित अछि। (, २५-३०)

घटना-क्रमक एकटा महत्त्वपूर्ण विशेषता अछि: कोनो समस्या पूरा समाप्त नहि होइत अछि। भवन-निर्माण एकटा सामाजिक उपलब्धि होइतहुँ राजनीतिक दावेदारी जगबैत अछि; राजनीतिक सम्पर्क प्रतिष्ठा बढ़बैतहुँ निर्भरता उत्पन्न करैत अछि; परीक्षा आ पदक औपचारिक व्यवस्था व्यक्तिगत हस्तक्षेप लेल छिद्र खोलैत अछि; छात्रक मुखरता प्रतिरोधक साधन होइतहुँ अन्य दबावक माध्यम बनि सकैत अछि। एहि प्रकारेँ कथामे स्थिर विजयक बदला अनवरत प्रतिस्थापन अछि।

कथा अनेक उपकथाक साधने मुख्य विषय आगू बढ़बैत अछि, मुदा प्रत्येक उपकथा डायरीक प्रश्नक संग समान दूरी पर नहि अछि। किछु ठाम प्रशासनिक विवरण अपेक्षाकृत अधिक स्थान लैत अछि आ आत्मलेखनक प्रतीक पाछाँ सरकि जाइत अछि। ई शिल्पगत सीमा सेहो थिक, कारण पाठककेँ मूल रूपक फेर सँ सक्रिय करबाक काज स्वयं करए पड़ैत अछि। फेरो एहि विस्तारक लाभ ई जे एकटा आत्ममुग्ध व्यक्तिक संकट अन्ततः शिक्षा-संस्थाक संरचनात्मक संकट बनि देखाइत अछि।

प्राचार्यक व्यक्तित्व: स्वायत्त मनुष्य कि प्रतिष्ठाक बन्दी?

प्राचार्य ई कथाक केन्द्रबिन्दु छथि, मुदा पारम्परिक अर्थमे निष्कलंक नायक नहि। हुनक भीतर प्रशासनिक दक्षता, व्यवहारक चातुर्य, उन्नतिक स्वप्न, स्वार्थ, प्रतिष्ठाभय, दार्शनिक जिज्ञासा आ नैतिक संकोच एकहि संग उपस्थित अछि। ओ कखनो व्यवस्था बदलबाक इच्छुक लगैत छथि, कखनो व्यवस्थाक लाभान्वित उपभोक्ता। एहि द्वैधक कारणे हुनक आलोचना सम्भव होइत अछि आ सहानुभूति सेहो।

प्राचार्यक भीतरी संसार मुख्यतः भविष्यक सम्भावित संकटसँ संचालित अछि। हुनका वास्तविक घटनासँ जतेक भय नहि, ओतबे भय ई अछि जे घटना हुनक मान-प्रतिष्ठापर की असर करत। अपन मानक प्रमाण बेर-बेर बाहरी व्यक्ति, पद, संरक्षक, संस्थागत घोषणा आ सार्वजनिक स्वीकारसँ खोजब मनुष्यकेँ पराधीन बनबैत अछि। एतए कथा प्रतिष्ठाक सामाजिक पूँजी आ आत्मसम्मानक अन्तर्विरोध देखबैत अछि।

हुनक आत्मपरिवर्तनक क्षणसभ वास्तविक छथि, मुदा क्षणिक। उषा जीक संसर्ग हो वा स्वार्थसँ ऊपर उठबाक विचार—एक बेर नव मार्गक सम्भावना बनैत अछि, फेर परिचित शक्ति-समीकरण ओकरा ढाँपि दैत अछि। परिणामतः लेखक नायकक मोक्ष-गाथा नहि लिखैत; अधूरी परिवर्तनशीलताक कथा लिखैत छथि। एहि अधूरापनक कारणे अन्तकेँ नैतिक दृष्टिँ विश्वसनीय मानल जा सकैत अछि।

सहायक पात्र आ सत्ता-संरचनाक अनेक मुख

शिक्षक-पात्र आ डायरी लिखबाक आरम्भिक अभिलाषा कथा भीतर लेखकीय दृष्टिक बीज रोपैत अछि। एहि भूमिकाक महत्त्व केवल सूचना देब नहि, अपितु प्राचार्यक प्रशासनिक सफलताकेँ व्यक्तिगत अनुभव लिखबाक आवश्यकताक सोझाँ रखब अछि। लेखन आ पद, ई दुनू प्रतिष्ठाक माध्यम बनबाक आकांक्षा राखैत अछि, मुदा दुनूक नैतिक कसौटी भिन्न अछि। लिखित अभिलेख तथ्यक सामना करबैत अछि; पदक व्यवहार सुविधाजनक विस्मृतिक अवसर दैत अछि।

बृन्दावन बाबू आ बल्लि बाबू सन प्रभावशाली पात्र सत्ता-व्यवस्थाक दू अलग स्वरूप देखबैत छथि। एक दिस सम्पर्क, निकटता, विचार-विमर्श आ प्रतिष्ठाक सांकेतिक मान्यता अछि; दोसर दिस पद, चुनाव, हस्तक्षेप, संरक्षण आ प्रत्यक्ष दबावक व्यवहारिक संसार अछि। प्राचार्य एहि दुनूकेँ अपन विरुद्ध आ अपन पक्षमे एकहि समय उपयोगी बुझैत छथि। ई पात्र केवल दुष्ट व्यक्तिक छवि बनि समाप्त नहि होइत, संस्थागत निर्भरता बुझबाक उपकरण बनैत छथि।

छात्रसभ कथामे अनेक बेर समूहक रूपमे उपस्थित छथि। हुनक आन्दोलन वास्तविक प्रश्न उठा सकैत अछि, मुदा बाहरी राजनीतिक शक्तिक उपयोगक आशंका सेहो अंकित अछि। एहि द्विविधाकेँ एकपक्षीय ढंगसँ छात्र-विरोधी कथन बुझब उचित नहि; बरु एतए प्रश्न उठैत अछि जे छात्रक स्वतंत्र आवाज आ ओकर नामपर सक्रिय प्रतिनिधिक आवाजमे भेद कोना कएल जाए। एतहि कथा विश्वविद्यालयीय लोकतन्त्रक कठिन विषयक दिस बढैत अछि।

उषा जीक प्रवेश संस्थामे स्त्रीक बौद्धिक उपस्थिति आ पुरुष-प्रधान सत्ता-जालक बीच एकटा सम्भावित वैकल्पिक संवादक संकेत दैत अछि। तथापि हुनक अपन विचार-विकास, पेशागत संकट वा स्वतंत्र निर्णयक विस्तृत निरूपण सीमित अछि। परिणामतः कथा हुनका माध्यमसँ प्राचार्यक परिवर्तनपर अधिक प्रकाश दैत अछि, हुनक स्वयंभू जीवनपर कम। ई सीमाक स्पष्ट पहचान करब रचनाक न्यायसंगत मूल्याङ्कनक भाग अछि।

कथावाचक, भाषा आ व्यंग्यक गतिशीलता

एहि दीर्घ-कथाक कथावाचन बाहरी वर्णन आ पात्रक भीतरी विचार-प्रवाहक बीच लगातार आबाजाही करैत अछि। कथावाचक घटना कहैत छथि, तुरन्त पात्रक अनुमान, आशंका, अपमान-बोध वा आत्मतर्कमे उतरि जाइत छथि। एहि युक्तिसँ पाठककेँ प्राचार्यक मनक दूरी आ निकटता दुनू भेटैत अछि: ओकरा संग चलबाक अवसर भेटैत अछि, परन्तु ओकर आत्मछल सेहो देखाइत अछि। एतए व्यंग्य व्यक्तिपर सीधा प्रहार करबाक बदला पात्रक दृष्टि आ वस्तुस्थितिक फाँकसँ उत्पन्न होइत अछि।

भाषामे खण्डित वाक्य, विरामक दीर्घ आवर्तन, बीच-बीचमे उठैत प्रश्न आ आत्म-संशोधनक लय महत्त्वपूर्ण अछि। विचार पूरा होएबासँ पहिने दोसर आशंका आ जाइत अछि। एहि टूटैत-जुड़ैत वाक्य-रूपसँ प्राचार्यक अनिश्चितता अभिव्यक्त होइत अछि। पाठककेँ आरम्भिक हास्य बादमे बेचैनीक रूपमे भेटैत अछि, कारण जे वाक्य-भंगिमा पहिने व्यक्तिक चंचलता छल, वैह आन्तरिक असुरक्षाक चिह्न बनि उठैत अछि।

कथाक गद्य कखनो वैचारिक चर्चामे प्रवेश करैत अछि। धर्म, राजनीति, शिक्षण आ सामाजिक मान्यताक प्रसंगसभ प्राचार्यक निजी चिन्ताक संग ठेलमठेल करैत अछि। एहि विस्तारक परिणाम दूहरा अछि—एक दिशि विचारक समृद्धि, दोसर दिशि कथात्मक कसावटमे असमानता। विशेषतः मूल कथा जखन घटना देखएबाक अपेक्षा तर्कक अधिक वाक्य रचैत अछि, तखन पाठकीय गति मन्द पड़ि सकैत अछि। मुदा ई शिथिलताकेँ बिना देखनहि केवल दुर्गुण कहल नहि जा सकैत; पात्रक मानसिक अतिव्यस्तता एकर कारण सेहो थिक।

तीन प्रमुख प्रतीक: डायरी, महाविद्यालय आ व्यंग्यचित्र

डायरी पहिल आ अन्तिम बिम्बक बीच अर्थ बदलैत अछि। प्रारम्भमे ओ भविष्यक प्रसिद्धिक दस्तावेज होयबाक स्वप्न अछि। मध्य भागमे ओ समयाभाव आ निर्णायक तालमटोलक साक्षी अछि। अन्तमे ओ वस्तुगत घटनाक ढेरक बावजूद व्यक्तिक आत्मस्वीकृतिक असमर्थताक रूपक बनैत अछि। जे व्यक्ति विद्यालयीय समाजक

सार्वजनिक लेखा राखबैत अछि, वैह अपन भीतरी जीवनक विश्वसनीय लेखा नहि लिखि पबैत अछि—एहि विडम्बनामे शीर्षकक गहनता अछि।

महाविद्यालय शिक्षा आ स्वायत्त चिन्तनक आदर्श स्थान होयबाक अपेक्षा राखैत अछि। कथामे ओकर भवनक विस्तार प्रगतिशीलता देखबैत अछि, मुदा ताहि संग चुपचाप नाना प्रकारक दबाव सेहो बढ़ैत अछि। ई विरोध सूचित करैत अछि जे भौतिक निर्माण आ संस्थागत नैतिक निर्माण समानार्थक नहि। परीक्षा, नियुक्ति, पद-प्रतिष्ठा आ छात्र-अधिकारक प्रसंग सभ मिलि संस्थाकें स्थानीय समाजक शक्ति-मानचित्रक रूपमे स्थापित करैत अछि।

कथाक संग प्रकाशित रूपरेखात्मक व्यंग्यचित्रमे ताज-सदृश आकृति, मुखक विकृति आ देहक सांकेतिक रेखा शाब्दिक घटनाक प्रतिलिपि नहि, सत्ता-आकांक्षा आ अटपटापनक दृश्य संकेत बनैत अछि। एहि चित्रसभक योगदान इएह जे पाठक प्राचार्यक सामाजिक पदकें हास्यक दूरीसँ देखए लगैत अछि। एहि दृश्य-भाषाक तुलना सचित्र बाल-कथासँ करब सम्भव अछि, मुदा दुनूक कार्य अलग अछि: बाल-चित्रकथामे बोध आ स्मरणक सहायता प्रमुख भऽ सकैत अछि; एतए व्यंग्य आ संस्थागत आलोचना मूल प्रवृत्ति अछि।

शिक्षण-संस्था आ राजनीति: कथाक सामाजिक आलोचना

कथाक शिक्षण-संसारमे औपचारिक नियम आ वास्तविक निर्णय-शक्ति एक-दोसरासँ पृथक देखाइत अछि। विश्वविद्यालयक दफ्तर, प्रबन्ध समिति, शिक्षकक पद, परीक्षा-मूल्यांकन आ परिसरक आवाज सभ प्रक्रिया निर्धारण करबाक अधिकार राखैत अछि; मुदा राजनीतिक संरक्षण, व्यक्तिगत अनुशंसा आ भय एही प्रक्रियाकें मोड़ैत अछि। लेखक एहि तनावकें शुद्ध प्रशासनिक रिपोर्टक भाषा नहि, व्यक्तिक मनःस्थितिक माध्यमसँ देखबैत छथि। परिणामतः सत्ता-केंद्रक समस्या मनुष्यक निजी अस्थिरताक समस्या सेहो बनि जाइत अछि।

एहि कथामे शिक्षित व्यक्तिक नैतिक संकोच विशेष अर्थपूर्ण अछि। प्राचार्य अनेक अवसरपर जानैत छथि जे संस्था लेल की न्यायसंगत होएत; तैओ निर्णयक समय अपन

भविष्य, नाम आ नौकरीक चिन्ता हुनका डगमग करैत अछि। एहि मानवीय दुर्बलताकें बुझला बिना कथाक सामाजिक आलोचना अधूरी रहत। लेखकक व्यंग्यक असल लक्ष्य केवल भ्रष्टाचार नहि, अपितु ओ मानसिक युक्तिसभ अछि जकरा सहारे सुशिक्षित व्यक्ति अपन समझौतेकें अनिवार्य कहि वैध बनबैत अछि।

छात्रसभक सक्रियता एकटा महत्त्वपूर्ण प्रतिपक्ष रचैत अछि। हुनक उपस्थितिसँ महाविद्यालय केवल प्राचार्यक सम्पत्ति नहि रहि जाइत अछि; ओ साझा संस्था बनैत अछि जाहिमे प्रश्न उठएबाक अधिकारक संघर्ष होइत अछि। तथापि कथा छात्र-आन्दोलनक आन्तरिक विविधतापर अपेक्षाकृत कम ठहरैत अछि। विद्यार्थीक प्रत्यक्ष वैयक्तिक आवाज आओर विस्तार पबितैक तँ संस्थागत आलोचना अधिक बहुकोणीय बनि सकैत छल।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक संवाद

विधागत अन्तरक स्पष्टता

‘डायरीक खाली पन्ना’कें बाल-कथा वा बाल-उपन्यास कहब पाठक-वर्गक दृष्टिँ भ्रामक होएत। मूल प्रकाशनमे एकरा दीर्घ-कथा मानल गेल अछि, आ कथामे विश्वविद्यालयक प्रशासन, राजनीतिक गुटबन्दी, वयस्क व्यक्तिक आत्मछल, पदक दबाव आ जटिल सामाजिक व्यंग्य प्रमुख अछि। नेनालोकनिक वयस, भाषिक ग्रहणशीलता वा लोककथाक सहज रूपान्तरणक अनुरूप रचना व्यवस्थित नहि अछि। एहि कारणे बाल-साहित्यसँ तुलना समान विधाक दू पाठक प्रतिस्पर्धा नहि, एकहि भाषाक भिन्न पाठकीय संरचनाक तुलना थिक।

लोकश्रुति आ बाल-साहित्यक आधार

विदेहक अङ्क ५० मे फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’ मैथिली शिशु लोक-साहित्यक मौखिक परम्परा, लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी रूपक चर्चा करैत छथि। एहि ऐतिहासिक बोधसँ स्पष्ट होइत अछि जे बाल-साहित्यक मूल प्रवाह केवल प्रकाशित उपदेशात्मक कथा नहि, अपितु घर-आँगनक ध्वनि, खेल आ सामुदायिक स्मृतिक संग

जुड़ल अछि। कुमार पवनक रचना एहि ध्वन्यात्मक लोक-बाल संसारक प्रत्यक्ष उत्तराधिकारीक रूपमे नहि लिखल गेल अछि; तकर केन्द्र आधुनिक शिक्षण-संस्था आ वयस्क विवेकक संकट अछि। तथापि दूनूमे समाज अपन मूल्य अगिला पीढ़ी धरि कोना पहुँचबैत अछि, से प्रश्न परोक्ष रूपेँ जुड़ैत अछि। (फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’, २०१०)

बाललोककथाक सरलता आ प्रौढ़ व्यंग्यक उलझन

डॉ. योगानन्द झा बाललोककथाक भाषिक सरलता, संक्षिप्त वाक्य, कुतूहल, लोकमुखी कथन, सहज पात्र-विन्यास आ प्रायः स्पष्ट परिणामक महत्त्व बतबैत छथि; ओ दीर्घ आ लघु लोककथाक भेद सेहो करैत छथि। एहि कसौटीपर कुमार पवनक रचना विपरीत दिशा चुनैत अछि। एतए संशय समाधानसँ अधिक टिकैत अछि, कथाक नैतिक अर्थ एकटा पाठमे समाप्त नहि होइत, आ प्राचार्यक मानसिक उलझन रचनाक शक्ति अछि। तँ दीर्घ आकार मात्र बालदीर्घकथाक परिचायक नहि; कथाक उद्देश्य आ पाठकीय संज्ञान सेहो निर्णायक थिक। (योगानन्द झा, २०११)

चित्रकथाक इतिहास आ एहि रचनाक दृश्य-हास्य

दुर्गानन्द मण्डल मैथिली बाल-चित्रकथामे प्रीति ठाकुरक योगदानक विवेचन करैत लोककथा, गोनू झाक चातुर्य आ लोकनायकक दृश्य पुनर्स्मरणपर बल दैत छथि। एहि प्रसंगभूमिमे कुमार पवनक संग प्रकाशित व्यंग्यचित्र पाठकीय अनुभवक दोसर शाखा देखबैत अछि। बाल-चित्रकथामे चित्र कथासूत्रकेँ दृश्य रूपेँ सुलभ बना सकैत अछि; एतए चित्र लेखकीय व्यंग्यक करारा संकेत बनैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे चित्रक कारणे ई बाल-साहित्य अछि; चित्रक सामाजिक कार्य बुझबाक तुलनात्मक अवसर मात्र अछि। (दुर्गानन्द मण्डल, २०१२; मूल कथा,, २१, २४, २९-३०)

बालनाटक आ संस्थागत प्रतिरोध

रमेश रञ्जनक बालनाटक सम्बन्धी विदेह आलेख, बाल-पाठकक सक्रिय भागीदारी आ नाटकीय संरचनाक विमर्श लेल उपयोगी सन्दर्भ थिक। कुमार पवनक दीर्घ-कथामे छात्र-आन्दोलन, संवाद, आगमन-निर्गमन आ सार्वजनिक आरोप सभ एकटा नाटकीय प्रभाव

बनबैत अछि; मुदा ओकर दृश्य-रचना बालमंचक सहज दृश्य-न्यायक अनुरूप नहि। एतए प्रतिरोध सेहो प्रचार आ सत्ता-गणितसँ अस्पष्ट बनि जाइत अछि। वयस्क पाठक लेल एहि अस्पष्टतामे आलोचनात्मक अवसर अछि; छोट बालक लेल सम्भवतः प्रसंग-विवेचनक सहायताक आवश्यकता पड़त। (रमेश रज्जन, २०१३; मूल कथा,)

समकालीन बाल-उपन्यास समीक्षा आ पाठकीय कर्तृत्व

विदेहमे प्रकाशित 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र' बालपात्रक कर्तृत्व, लोककथाक पुनर्लेखन, चित्र आ भाषा, नैतिक औचित्य तथा पाठकीय आयु सन मानदण्डक चर्चा करैत अछि। एहि आलोचनात्मक मानचित्रक उपयोगसँ 'डायरीक खाली पन्ना'क विधागत सीमा आओर स्पष्ट होइत अछि। कथा प्रौढ़ प्राचार्यक चेतनामे केन्द्रित अछि; विद्यार्थीसँ सम्बन्धित पात्र-संसार ओकरा चुनौती दैत अछि, मुदा विद्यार्थी स्वयं प्रमुख दृष्टि-पात्र नहि बनैत। एतए बाल-अनुकूल कथनक बदला बाल-केन्द्रित संस्थाक वयस्क विफलताक आलोचना भेटैत अछि। (गजेन्द्र ठाकुर, २०२६)

किशोर पाठक लेल सम्भावित उपयोग

उच्चतर किशोर-पाठक संग निर्देशित पाठ-चर्चामे ई कथा शिक्षण-संस्थाक जवाबदेही, अफवाहक जाँच, परीक्षा-सुचिता, छात्र-स्वायत्तता आ स्वतन्त्र अभिव्यक्तिक विषय उठा सकैत अछि। मुदा एहन पाठ-प्रयोग रचनाकेँ मूलतः बाल-साहित्य प्रमाणित नहि करैत। शिक्षा-सन्दर्भमे उपयोगी होएब आ बाल-पाठक लेल रचित होएब दू अलग कोटि अछि; साहित्येतिहासमे एहि भेदकेँ सुरक्षित राखब आवश्यक अछि।

प्रमुख उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

रचनाक पहिल उपलब्धि अछि—व्यक्तिगत अस्थिरतासँ सामाजिक संरचनाक विडम्बनाक उद्घाटन। महाविद्यालयक प्राचार्यक दुविधा सहज हास्यक विषय भऽ सकैत छल, मुदा कथाकार ओकरा संस्थागत शक्ति-सम्बन्धक संग जोड़ि दैत छथि। दोसर उपलब्धि अछि आत्मलेखनक रूपक: जीवनक प्रत्येक घटना लिखबाक योग्य होइतहुँ कागज खाली रहल तँ प्रश्न केवल समयाभावक नहि, सत्य-स्वीकारक क्षमता पर उठैत

अछि। तेसर उपलब्धि अछि संवाद, अनुमान, आत्म-प्रश्न आ टूटैत मनोवाक्यक माध्यमसँ संकोचक जीवित चित्रण।

कथाक सीमा आंशिक रूपेँ तकर विस्तारमे निहित अछि। प्रशासन, पद, राजनीति आ छात्र-संघर्षक प्रसंगक घनत्व किछु ठाम पाठकक ध्यान मूल डायरी-रूपकसँ हटबैत अछि। व्यक्ति-चित्रणमे प्राचार्य केन्द्रमे एतेक छथि जे विद्यार्थी आ स्त्री-पात्रक स्वतंत्र दृष्टि कम विस्तृत भऽ पबैत अछि। राजनीतिक प्रभावक नाना पात्र कखनो प्रकार-चरित्र बनि रहि जाइत छथि; हुनक अपना सामाजिक-ऐतिहासिक जटिलता आओर खुलल रहितैक तँ संघर्ष अधिक बहुस्तरीय होइत।

तथापि लेखक ई जोखिम लैत छथि जे ओ अपन प्राचार्यकेँ न सर्वथा खलनायक बनबैत छथि, न आदर्श सुधारक। कथाक अन्त अनिश्चित रहलासँ पाठक सामाजिक प्रश्नसँ मुक्त नहि होइत अछि। साहित्यिक उपलब्धिक माप केवल कथात्मक अनुशासन नहि; जखन रचना पाठककेँ नैतिक निर्णयक सुविधा नहि दऽ सकैत अछि, तखन वैह असुविधा ओकर आलोचनात्मक शक्ति बनि उठैत अछि।

निष्कर्ष: लेखनक असम्भवतासँ आत्मसाक्ष्यक प्रश्न धरि

कुमार पवनक ‘डायरीक खाली पन्ना’ मैथिली दीर्घ-कथाक ओहि प्रवृत्तिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण मानल जा सकैत अछि जाहिमे संस्थागत यथार्थक आलोचना मनुष्यक भीतरक असमञ्जसक सहारे व्यक्त होइत अछि। प्राचार्य स्वयंकेँ विश्वसनीय बनएबाक लेल संस्था, पद, सम्पर्क, चुनावी समीकरण आ सामाजिक आदरक बेर-बेर आश्रय लैत छथि; मुदा जखन निज जीवनक ठोस साक्ष्य देबाक प्रश्न अबैत अछि, तखन शब्दक भरोसा डोलि जाइत अछि। कथाक अन्तिम रिक्तता हारक सपाट घोषणा नहि, समाजक शक्ति-व्यवस्थामे फँसल चेतनाक खुलल प्रश्न अछि।

मैथिली साहित्येतिहासमे एकरा बाल-साहित्यक उदाहरण मानबाक बदला शिक्षा-संस्था-विषयक प्रौढ़ सामाजिक व्यंग्य-कथाक रूपमे राखब अधिक युक्तिसंगत अछि। बाल-साहित्यक तुलनात्मक अध्ययन एहि रचनाक स्थान निर्धारित करबाक कसौटी दैत

अछि: बालोपयोगिता, बाल-कर्तृत्व, कथावाचनक सुलभता, दृश्य-भाषा आ नैतिक निर्णयक रूप सभमे एकर प्रकृति पृथक अछि। ठीक एहि भिन्नताक कारण ई रचना शिक्षक, पाठक, छात्र आ साहित्यालोचकक बीच जिम्मेवारी, सत्ता आ लेखकीय सत्यक सम्बन्धपर गम्भीर संवाद उत्पन्न करबाक सामर्थ्य राखैत अछि।

१.३०. नित नवल कुमार पवन — अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप

लोकोक्ति, सामाजिक प्रतिष्ठा आ कथात्मक व्यंग्य

रचनाक अन्तरंग

कुमार पवनक ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ सामान्य लोकोक्तिक अर्थ खोजबाक बहाने आधुनिक मैथिली समाजमे अर्थ, मूल्य, प्रतिष्ठा आ सफलता बीचक अन्तरविरोधकेँ उजागर करैत कथात्मक व्यंग्य अछि। ‘संकल्प’ मे प्रकाशित एहि रचनाक विस्तृत प्रसंगसभमे प्रथमपुरुष कथावाचक पाठकसँ प्रत्यक्ष सम्बोधन करैत अछि, भुवन ककासँ संवाद करैत अछि, अपन कल्पना आ आकांक्षाक पाछाँ दौड़ैत अछि, आ संस्थागत प्रतिष्ठाक भिन्न-भिन्न रूपसँ टकराइत अछि। ‘अशर्फी’ आ ‘कोइला’क मूल्य-विपर्यास कथा भरि एकहि निश्चित व्याख्यामे आबद्ध नहि रहैत; प्रतिपल नव प्रसंग ग्रहण करैत अछि। एहि लेखमे रचनाक आठो कथांशक पृथक पाठविश्लेषण, कथावाचकक आत्मव्यंग्य, संवादधर्मिता, कथ्य-शिल्प, शैक्षिक संस्थाक विडम्बना, नैतिक दुविधा आ खुला अन्तक अध्ययन कएल गेल अछि। हरिमोहन झाक हास्य-व्यंग्य परम्परा आ बादक मैथिली व्यंग्य-रचनाक सन्दर्भमे एकर ऐतिहासिक स्थानक तुलनात्मक निरूपण कएल गेल अछि। निष्कर्ष ई अछि जे रचना लोकभाषाक सहज हास्यकेँ बौद्धिक आ सामाजिक प्रतिष्ठाक आलोचनात्मक परीक्षणमे परिणत करैत अछि; मुदा एकर अतिप्रसारित प्रसंग-विन्यास आ संकेतक स्थानीयता पाठकसँ सक्रिय अर्थ-निर्माणक अपेक्षा सेहो करैत अछि।

प्रस्तावना: लोकोक्तिसँ कथाक प्रवेश

लोककथनक विशेषता ई अछि जे एकहि छोट पदबन्धमे समाजक अनुभवक घनत्व सुरक्षित रहैत अछि। लोककथन जखन कथात्मक रचनाक शीर्षक बनैत अछि तँ ओकर

अर्थ केवल शब्दकोशक व्याख्या नहि रहैत; कथा ओकर अभिप्रायक परीक्षा करैत अछि। कुमार पवनक 'अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप' एही प्रक्रियाकेँ अपन कथात्मक आधार बनबैत अछि। अशर्फीक मूल्य आ कोइलाक सामान्यता बीच जे असमानता अछि, से एकटा मूल्य-निर्णायक पूर्वधारणा रचैत अछि। मुदा कथावाचक एतबेपर नहि रुकैत अछि। ओ प्रसंग-पाछाँ-प्रसंग लोकोक्तिक अर्थ खोजैत रहैत अछि, आ प्रत्येक व्याख्याक संग अर्थ स्वयं अस्थिर होइत जाइत अछि।

रचनाक आरम्भमे पाठककेँ सीधा सम्बोधित कएल गेल अछि। कथावाचक प्रश्न करैत अछि, सम्भावित उत्तरक अनुमान करैत अछि, फेर ओकरा स्वयं उलटैत अछि। पाठक एतय निश्चेष्ट श्रोता नहि, तर्क-वितर्कक अघोषित सहभागी अछि। एहि संवादात्मक रचना-पद्धतिक कारण पाठ मुख्यतः घटना-प्रधान कथा नहि बनि, अनुभव, कल्पना, आत्मप्रहसन आ सामाजिक विडम्बनाक आवागमन सँ गठित होइत अछि। सतही पाठमे ई एकटा कहबीक अर्थ परिहासपूर्वक खोजबाक विवरण बुझाइत अछि; निकट पाठमे सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जन करबाक व्यग्रता आ मूल्यक विस्थापन रचनाक मूल विषयक रूपमे उभरैत अछि।

कथासंरचना: प्रश्न, प्रसंग आ पुनः प्रश्न

कथावाचक पहिने एकटा कहबी उपस्थित करैत अछि। ओकरा ई बूझल नहि अछि जे कहबीक सटीक आशय की होइत अछि। प्रश्नक उत्तर लेल ओ अनुभवसम्पन्न भुवन ककाक शरण लैत अछि। ककाक वचनमे लोकानुभवक ठोस धरातल अछि, मुदा संवाद कथावाचकक असन्तोष समाप्त नहि करैत। एहि बिन्दुसँ रचना अनेक प्रसंगमे प्रवाहित होइत अछि। कथावाचक अपन जीवनक कल्पना, विशिष्ट लोकक संग भेटक सम्भावना, बौद्धिक सम्मान, सामाजिक उन्नति आ भविष्यक विचित्र योजनाक भीतर घूमैत अछि। ओकर भाषामे कखनो आत्मविश्वास, कखनो आत्महीनता, कखनो प्रशंसाक लालसा आ कखनो अस्वीकारक साहस सुनाइत अछि।

मध्य भागमे चमत्कारी अनुभूति, महान व्यक्तिक दर्शन, महत्त्वपूर्ण लोकक सान्निध्य आ अकस्मात् लाभक कल्पना कथावाचककेँ अनेक दिशामे लऽ जाइत अछि। परम्परागत कथा सन एकमात्र कारण-कार्य-शृंखला एतय नहि अछि। प्रत्येक कल्पना पूर्ववर्ती प्रसंगपर टिप्पणी करैत नव विडम्बना जोड़ैत अछि। प्राध्यापकक पद, विश्वविद्यालय, शोधक उपाधि, नौकरी आ सिफारिशक प्रसंग आविते सतहपर व्यक्तिगत उन्नतिक कथा बौद्धिक-सामाजिक प्रतिष्ठाक तन्त्रपर प्रश्न बनि जाइत अछि। अन्तिम भागमे आर्थिक लाभक अस्वच्छ बाट, प्रभावशाली लोकसँ सम्पर्क आ सुविधा अर्जनक विकट विकल्प सेहो उभरैत अछि। एतय सफलता आ नैतिकता एक-दोसराक विकल्प बनि ठाढ़ होइत अछि।

कथाक अन्त आरम्भक प्रश्नकेँ पुनः पाठकक समक्ष अनैत अछि। अन्तिम प्रश्नक कारण आरम्भमे देल लोकोक्तिक अर्थ पाठकक विवेकपर पुनः निर्भर भऽ जाइत अछि। ई गोलाकार संरचना रचनाक प्रमुख शिल्पगत उपलब्धि अछि। व्यंग्यक आशय अन्तिम वाक्यमे बन्द नहि होइत; उलटे पाठ समाप्त भेलाक बादो विचार खुलल रहैत अछि।

कथाविस्तार आ प्रसंग-रचना

पाठक-सम्बोधन, शीर्षक आ मूल्यक प्रारम्भिक द्वन्द्व

एहि प्रसंगमे शीर्षकक संग ‘कथात्मक व्यंग्य’ विधा-सूचना रचनाक आलोचनात्मक ग्रहणक दिशा स्पष्ट करैत अछि। आरम्भक ‘प्रिय पाठकलोकनि’ प्रत्यक्ष सम्बोधन अछि; लेखक पाठककेँ ऊँच आसनपर बैसल निर्णायक नहि, साझी विचारक रूपमे स्थापित करैत छथि। कहबीक मूल पदबन्ध ‘अशर्फीक लूटि आ कोइला पर छाप’ कथा-विन्यासक स्थायी धुरी बनैत अछि। अशर्फी मूल्यवान, कोइला अपेक्षाकृत साधारण; ‘लूटि’ आ ‘छाप’ शब्द गतिविधि आ चिह्नक भिन्न स्तरक ओर संकेत करैत अछि। प्रश्न ई उठैत अछि जे मनुष्य मूल्यवान वस्तुकेँ छोड़ि नाममात्रक लाभपर किएक अटक जाइत अछि। मुदा एहि पहिल व्याख्याकेँ कथा निर्विवाद सत्य नहि मानैत।

एहि प्रसंगमे कथावाचकक आत्मीय बोलचाल, व्याकरणिक प्रश्नसूचकता आ जीवनानुभवसँ निकलल लोककथन एक साथ उपस्थित अछि। भुवन ककाक प्रवेश लोकबुद्धिक मूर्त रूप सन भऽ उठैत अछि। ‘कका’ सम्बोधन पारिवारिक आत्मीयताक संग बुजुर्गक अधिकार सेहो बनबैत अछि। कथावाचक स्वयं असमर्थ कहलासँ लजाइत नहि; एहि आत्मस्वीकृतिमे हास्यक बीज अछि। मूल्यवान वस्तुक खोजसँ बेसी ओकर उपयोगक उद्देश्य पर प्रश्न उठैत अछि। ई प्रसंग एही द्विस्तरीय प्रश्नक स्थापना करैत अछि—कहबीक अर्थ की, आ जीवनमे ‘मूल्य’क अर्थ के निश्चित करैत अछि?

भुवन कका आ लोकबुद्धिक अपूर्ण समाधान

दोसरा कथांशपर भुवन ककाक संग कथावाचकक संवाद विस्तार पबैत अछि। कथावाचक कथनक अर्थ बूझबाक लेल बूढ़ लोकक अनुभवमे शरण अनैत अछि, मुदा अनुभवक उत्तर सहज आ पूर्ण अर्थ-निर्णय नहि दैत। ककाक प्रतिक्रिया आ कथावाचकक अगिला जिज्ञासा मिलि सामाजिक ज्ञानक एकटा महत्त्वपूर्ण तनाव उपस्थित करैत अछि। ककाक भूमिका मात्र गुरु वा उपदेशकक नहि अछि; हुनका सम्बोधित करैत कथावाचक स्वयं अपन असंगति खोलैत जाइत अछि।

एहि प्रसंगमे समाजक लोकक ‘मूल्य’ ठहराबबाक प्रचलित आधार—पैघ व्यक्ति, पद, सम्मान, नाम, कीर्ति, ऊँच-नीच—व्यंग्यक भीतर प्रवेश करैत अछि। वस्तुक आर्थिक मूल्य आ प्रतिष्ठाक प्रतीकात्मक मूल्य एके नहि होइत, मुदा लोक-व्यवहारमे दुनू प्रायः एक-दोसरामे बदलि देल जाइत अछि। पात्रक बातचीत एही गड़बड़ीकेँ उजागर करैत अछि। गद्यक गति निरन्तर प्रश्न-प्रतिप्रश्नसँ बनैत अछि; एतय लम्बा विवेचनात्मक प्रसंगक बदला संवादक जड़त्वहीन लय कथाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

कल्पनाक विस्तार आ आत्ममुग्धताक परीक्षा

एहि प्रसंगमे कथावाचकक ध्यान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लोकक दर्शन, अप्रत्याशित उपलब्धि आ अपन सम्भावित भविष्यपर केन्द्रित होइत अछि। महापुरुष-सम्बन्धी कल्पना आ ‘दर्शन’क अर्थकेँ लेखक व्यंग्यात्मक ढङ्गसँ बरतैत छथि। कथावाचक

जतेक अधिक असाधारण भविष्यक कल्पना करैत अछि, ततेक ओकर वर्तमानक असमर्थता प्रकट होइत अछि। परिणामस्वरूप हास्य केवल बाहरी पात्रपर नहि, कथावाचकपर स्वयं सेहो पड़ैत अछि। ई आत्मव्यंग्य रचनाकें केवल दोसरक उपहास बनबासँ बचबैत अछि।

रचनाक दृश्य लगातार बदलैत अछि। ई परिवर्तित मानसिक दृश्य पाठकसँ अपेक्षा करैत अछि जे ओ वास्तविक भेट, कल्पित घटना आ कथावाचकक आकांक्षाक बिम्बकें अलग-अलग बूझय। ओहि अर्थमे एहि प्रसंग कथाक बाह्य समयसँ बेसी मानसिक समयक प्रसंग अछि। कल्पनाक एक-एक छलाँग समाजक सफलताक एक-एक मानदण्डक परीक्षा करैत अछि। ‘बड़’ बनबाक चाहना आ बड़प्पनक वास्तविक नैतिक अर्थ बीच दूरी उभरैत अछि।

सम्मानक भाषा आ पद-प्रतिष्ठाक अभिनय

एहि प्रसंगमे कथावाचकक आकांक्षा अधिक प्रत्यक्ष सामाजिक रूप ग्रहण करैत अछि। ‘प्रोफेसर साहेब’ सन सम्बोधन केवल आदरक शब्द नहि, पद आ प्रभावक सामूहिक कल्पनाक सूचक अछि। बौद्धिक अधिकारक स्रोत जखन विचारक गुणवत्ता नहि, तदर्थ पदक चमक बनि जाइत अछि, तखन व्यंग्यक सम्भावना बढ़ैत अछि। कथावाचक अपनाकें एहन परिदृश्यमे देखैत अछि जाहिमे शिक्षा आ प्रतिष्ठा एक-दोसराक आधार मानल जाइत अछि, मुदा हुनक संग लाभक अपेक्षा सेहो जुड़ल अछि।

एहि प्रसंगक विशेषता अतिशयोक्तिपूर्ण आत्म-कल्पना अछि। अत्यल्प दैनिक घटना कथावाचकक मनमे बड़ सामाजिक दृश्य बनि जाइत अछि। भाषामे विनयक मुद्रा आ इच्छाक तीव्रता परस्पर उलझल अछि। ई अन्तर्विरोध पाठककें हँसाबैत अछि, मुदा हँसीमे आलोचनाक धार अछि—कतेक बेर हमर सार्वजनिक आदर वास्तवमे पदसँ सम्भावित लाभक आदर होइत अछि?

सामाजिक गतिशीलता, सम्बन्ध आ स्वार्थक छाया

एहि प्रसंगमे परिचित लोकसँ भेट, गामक स्मृति आ अपन सामाजिक स्थितिक तुलना महत्त्वपूर्ण होइत अछि। लोक एक-दोसराकेँ पूर्वपरिचयक आधारपर चिन्हैत अछि, मुदा सामाजिक स्थिति बदलिते सम्बोधन आ व्यवहार सेहो बदलि सकैत अछि। कथावाचक एहि अन्तरक प्रति अत्यधिक संवेदनशील अछि। ओकर मानसिक प्रतिक्रिया देखबैत अछि जे पद, सम्पत्ति आ परिचयक अभाव व्यक्तिक भीतर कतेक प्रकारक हीनताबोध आ आत्मप्रदर्शनक इच्छा उत्पन्न करैत अछि।

अनेक संवाद अधोक्तिमे समाप्त होइत अछि; प्रतिक्रिया प्रायः तात्कालिक आ भावुक अछि। एहिसँ कथावाचक सम्पूर्ण विश्वसनीय विचारक नहि रहि जाइत अछि। पाठक ओकर कथनकेँ ओकर इच्छाक सन्दर्भमे तौलैत अछि। व्यंग्यक ई सूक्ष्म युक्ति अछि— कथावाचक जे स्वीकार करैत अछि, लेखकक आलोचनात्मक दृष्टि ओकरासँ अलग सेहो ठाढ़ भऽ सकैत अछि। एहि प्रसंगमे सामाजिक उन्नतिक सपनाकेँ वस्तुनिष्ठ सफलता नहि, मानसिक दबावक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

प्राध्यापकक वेतन, संस्थान आ बौद्धिक पूँजी

एहि प्रसंगमे ‘प्राध्यापकक वेतन’क उल्लेख रचनाकेँ शैक्षिक-संस्थागत जीवनसँ स्पष्ट रूपसँ जोड़ैत अछि। विश्वविद्यालय, अध्यापन, शोध, परीक्षकक कार्य आ डिग्रीक प्रसंग एकटा एहन संसार खोलैत अछि जतय ज्ञानक सामाजिक उपयोग आ जीविकाक अवसर एक-दोसरासँ जुड़ल रहैत अछि। रचना ज्ञानार्जनक उपहास नहि करैत; ज्ञानक नामपर प्रतिष्ठा, अवसर वा कृपादृष्टि अर्जित करबाक प्रवृत्तिक परीक्षा करैत अछि।

पदक आकांक्षाक संग ‘काज’क वस्तुनिष्ठ प्रश्न उपस्थित होइत अछि। कोनो उपाधि पाबि लेबाक इच्छा आ ओकर योग्यता विकसित करबाक प्रयत्न एकहि नहि।

कथावाचकक अप्रस्तुतता एहि अन्तरकेँ हास्यक विषय बनबैत अछि। गद्य-पद्धतिमे छोट प्रश्न, तत्काल उत्तर आ निष्कर्षक अकस्मात् उलटावक कारण संस्थानक विमर्श उपदेशात्मक निबन्ध नहि बनैत। सामाजिक आलोचना कथा आ हँसीमे घुलि जाइत अछि। एहि प्रसंगकेँ रचनाक संस्थागत व्यंग्यक केन्द्रीय कड़ी मानल जा सकैत अछि।

अवसरवाद, सिफारिश आ आत्म-सम्मानक द्वन्द्व

एहि प्रसंगमे कथावाचक अपन परिचय, पूर्वसम्बन्ध आ सामाजिक प्रगतिक सम्भावित सहायताक ओर पुनः बढैत अछि। प्रभावशाली व्यक्ति, सिफारिश, नौकरी आ सुविधाक चर्चासँ ई प्रश्न तीव्र होइत अछि जे सफलता स्वयं अर्जित श्रमक परिणाम मानल जाय कि सम्पर्कक परिणाम। पात्रक स्वप्न सतत बदलैत अछि; ओकर निर्णयमे ठहराव कम, अवसरक प्रति आकर्षण बेसी बुझाईत अछि। एहि अनिश्चितताकेँ लेखक नैतिक टिप्पणीसँ कम आ घटनाक अनपेक्षित मोड़सँ बेसी प्रकाशित करैत छथि।

महत्त्वपूर्ण बात ई जे रचना केवल व्यक्ति-विशेषक लोभक चित्रण नहि अछि। सामाजिक संरचना स्वयं एहन अछि जतय पदबद्ध लोकनिक निकटता लाभक साधन बनैत अछि। कथावाचकक कमजोरी एही संरचनाक उपज सेहो अछि। तथापि रचना ओकरा पूर्णतः निर्दोष नहि ठहरबैत; ओकर आत्मप्रवंचनापर बराबर प्रहार करैत अछि। अवसरवादक एहि द्विपक्षीय आलोचनामे पाठककेँ व्यक्ति आ संस्था दुनूकेँ देखबाक अवसर भेटैत अछि।

नैतिक सीमारेखा आ पाठकपर लौटैत प्रश्न

एहि प्रसंगमे कथावाचकक समक्ष अवैध तस्करी सन विकल्पक चर्चा आवैत अछि। एहि प्रसंगकेँ शब्दशः घटना-वृत्तान्त मानबाक बदला सामाजिक उन्नति लेल ‘कोनो बाट’ पकड़बाक अतिशय लोभक व्यंग्यात्मक सीमा बुझब उचित अछि। सामाजिक सफलता जे कखनो सम्मानक रूपमे दिखल छल, आब नैतिक अपकर्षक प्रश्नमे बदलि जाइत अछि। कथावाचक एहि विकल्पपर असहमत सेहो होइत अछि; अतः ओकर चरित्र एकरेखीय अवसरवादी नहि, परस्पर विरोधी इच्छासँ भरल मनुष्यक चरित्र अछि।

समापनमे कथावाचक फेर पाठककेँ सम्बोधित करैत प्रश्न करैत अछि—‘की, अहाँलोकनिक आर कोनो अर्थक पता अछि?’ आरम्भक कहबी अन्तमे व्याख्याक बन्द दरबज्जा नहि, खुलल प्रश्न बनि जाइत अछि। कथावाचक जकर अर्थ पूरे पाठमे खोजैत रहल, ओकर समुचित उत्तर पाठकक विवेक पर छोड़ि दैत अछि। एहि खुलापनमे पाठकक आलोचनात्मक भूमिका सुनिश्चित होइत अछि। रचनाक अन्तिम कथांशपर

रचनाकारक सम्बद्धता हिन्दी विभाग, जगदम्बा महिला कॉलेज, लहेरियासराय रूपमे छपल अछि; तथापि एहि सूचनासँ अतिरिक्त जीवनी-संबन्धी अनुमान करब उचित नहि।

कथाशिल्प आ अर्थक बहुस्तरीयता

लोकोक्ति: कथानक नहि, अर्थक यन्त्र

लोकोक्ति प्रायः जीवनक जटिल परिस्थितिक छोट निष्कर्ष होइत अछि। मुदा लेखक एकर अर्थकेँ पूर्वनिश्चित स्वीकार नहि करैत छथि। कहबीक अशर्फी आ कोइला अलग-अलग प्रकारक मूल्यक बिम्ब बनैत अछि। कतेको प्रसंगमे ‘अशर्फी’ आर्थिक लाभक, कतेकोमे प्रतिष्ठाक, कतेकोमे विवेकपूर्ण निर्णयक प्रतिरूप बुझाइत अछि। ‘कोइला पर छाप’ छोट उपलब्धिमे अटकल रहबाक, व्यर्थ श्रम अथवा अर्थहीन बाह्य चिह्नपर मोहित होयबाक संकेत दऽ सकैत अछि। मुदा ई सभ सम्भावना विश्लेषणात्मक व्याख्या अछि; पाठ कोनो एक अर्थकेँ अन्तिम प्रमाणित नहि करैत। एहि सावधानीक बिना व्यंग्यक खुलल अर्थ एकटा नारा बनि जायत।

लोककथनक पुनरागमन कथाक प्रवाहमे एकरूपता कायम राखैत अछि। प्रसंग बदलैत अछि, मुदा प्रश्न नहि बदलैत। एहि कारण रचना भलँ विस्तारमे शिथिल बुझाय, संरचनात्मक स्तरपर ओकर केन्द्र स्थिर अछि। कहबीक स्वरूप एकटा कसौटीक अछि जाहिपर सामाजिक घटना कसि-कसि देखल जाइत अछि।

‘हम’क अविश्वसनीयता आ आत्मव्यंग्य

प्रथमपुरुष कथावाचकक विशेषता ई अछि जे ओ अपनाआपकेँ ज्ञानक अधिकारसंपन्न केन्द्र बनबैतहुँ सेहो अपन असमंजस प्रकट करैत अछि। पाठक ओकर शब्दक संग ओकर आकांक्षा सेहो पढ़ैत अछि। ओ जतेक महत्त्वपूर्ण होयबाक कल्पना करैत अछि, ततेक आत्मविसंगति उजागर होइत अछि। एहि तकनीकमे व्यंग्यक लक्ष्य केवल ‘दोसर’ नहि, स्वयं कथन करैत ‘हम’ सेहो अछि। पाठक ओकर संग हँसैत अछि, ओकरापर सेहो हँसैत अछि, आ अन्ततः अपन सामाजिक स्वभावपर विचार करैत अछि।

कथावाचकक अनेक विचार तत्काल परिवर्तित होइत अछि। एहि अस्थिरताकेँ मात्र चरित्र-दोष नहि कहल जा सकैत; ई सामाजिक जीवनक विडम्बनाकेँ कथात्मक रूपमे अभिव्यक्त करैत अछि। एकहि व्यक्ति अपनाकेँ स्वाभिमानी सेहो मानि सकैत अछि आ शक्तिशालीक निकटता लेल आतुर सेहो रहि सकैत अछि। ई आन्तरिक विरोध रचनाक विश्वसनीय सामाजिक मनोविज्ञानक आधार अछि।

संवादधर्मिता: पाठक, कका आ संस्थागत भाषाक संगति

रचनामे कम-सँ-कम तीन स्तरक आवाज सुनाइत अछि—पाठककेँ सम्बोधित करैत कथावाचक, भुवन ककाक अनुभवधर्मी बोली आ पद-प्रतिष्ठाक संसारसँ जुड़ल औपचारिक शब्दावली। एहि आवाजक बीच भिन्नता व्यंग्यक स्रोत अछि।

लोकव्यवहारक आत्मीय सम्बोधन जखन ‘प्रोफेसर’, ‘प्राध्यापक’, ‘विश्वविद्यालय’, ‘डिग्री’ सन पदसँ टकराइत अछि, तखन भाषा समाजक पदानुक्रमक नक्शा बनि जाइत अछि। उपदेश देबाक बदला लेखक आवाजक असमानताकेँ आमनेसामने राखैत छथि।

संवादक एहन विन्यास पाठककेँ केवल कथाकारक निष्कर्ष मानबाक आदेश नहि दैत। पाठकक समक्ष अनेक दृष्टि उभरैत अछि, आ ओकरा निर्णय करबाक पड़ैत अछि जे कथावाचक कतय सही अछि, कतय भ्रमित अछि, आ कतय स्वयं अपना मजाक बनबैत अछि।

हास्य, विडम्बना आ अर्थक उलटबाँसी

हास्यक पहिल स्तर सहज भाषिक अछि—लम्बा कल्पनाक बाद छोट खण्डन, प्रश्नक बाद उलटल उत्तर, अतिशयोक्तिक बाद अकस्मात् यथार्थ। दोसर स्तर सामाजिक अछि—जे पदक नाम सुनिने समाज आदरमे झुकैत अछि, ताहि पदक प्राप्तिक वास्तविक योग्यता वा प्रयोजनक परीक्षण प्रायः नहि होइत। तेसर स्तर नैतिक अछि—जे लोक सफलता लेल आतुर अछि, ओकरा एक क्षण एहन बाट देखाइत अछि जाहिमे सफलता आ नैतिकता परस्पर विरोधी होइत अछि। एहि तीनू स्तरमे ‘अशर्फी’क रूपक नित नव अर्थ धारण करैत अछि।

लेखकक व्यंग्यक धार तथ्यक सादा निषेधमे नहि, विषम परिस्थितिक पुनर्संयोजनमे अछि। कोनो अस्वाभाविक कल्पना हास्यास्पद तखन बनैत अछि जखन ओ समाजक प्रचलित स्वीकृत धारणाकेँ भीतरसँ प्रकट करैत अछि। रचनामे आडम्बर, चापलूसी आ लाभक उत्सुकता एहि प्रकार परीक्षणक वस्तु बनैत अछि।

रचनाक सीमा आ आलोचनात्मक आपत्ति

एहि रचनाक प्रभावक संग किछु सीमासभ सेहो अछि। घटनाक अपेक्षा आत्म-कल्पनाक प्रसार अधिक होयबाक कारण कतिपय प्रसंगमे कथानकक गति मन्द पड़ैत अछि। हास्यक किछु संकेत ओहि समयक स्थानीय सामाजिक सम्बन्ध आ पदावलीक ज्ञानपर निर्भर छथि; वर्तमान पाठक लेल हुनकर तात्कालिक प्रतिध्वनि क्षीण भऽ सकैत अछि। कथा अनेक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा सभ प्रसंगकेँ समान गाम्भीर्यसँ विकसित नहि करैत। एहि कारण किछु अंश स्वतंत्र परिहासक टुकड़ा सन प्रतीत भऽ सकैत अछि।

तथापि एहि बिखरावकेँ एकमात्र दोष मानब सेहो उचित नहि। कथावाचकक अनियन्त्रित मनःप्रवाह स्वयं सामाजिक आकांक्षाक अनियन्त्रण प्रदर्शित करैत अछि। अतः पाठककेँ प्रश्न करबाक चाही जे शिल्पक ढीलापन कतेकटा उद्देश्यपूर्ण अछि आ कतेकटा रचनागत। आलोचनाक न्यायपूर्ण स्थिति एही दुनू सम्भावनाकेँ मान्यता देब होयत।

मैथिली साहित्येतिहासमे तुलनात्मक स्थान

लोकहास्यसँ आधुनिक कथात्मक व्यंग्य धरि

मैथिली गद्यक हास्य-परम्पराक एक स्रोत लोककथन, प्रहसन, बातचीत आ सामाजिक आचारक विसंगतिसभ अछि। लोककहबीक अर्थक चर्चा करैत कुमार पवनक ई रचना एही स्रोतसँ ऊर्जा लैत अछि। मुदा एकर केन्द्र केवल रूढ़ लोकाचार वा गृहस्थ-जीवनक हँसी नहि अछि; शिक्षित समाजमे पदक लोभ, विश्वविद्यालयक प्रक्रियासँ उत्पन्न प्रतिष्ठा आ आधुनिक सुविधाक आकांक्षा सेहो अछि। एही अर्थमे लोककथन आधुनिक संस्थागत जीवनक परीक्षणक उपकरण बनि जाइत अछि।

ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम' सन प्रहसनक परम्परा तथा लोकभाषाक प्रतिवादी हँसीक इतिहास स्मरणीय अछि। तथापि ऐतिहासिक काल, रचनारूप आ उद्देश्यक अन्तर बिना विचारने ओकरा सीधा पूर्वरूप घोषित करब ठीक नहि। पुरान प्रहसनक सामाजिक पात्र आ एतयक प्रथमपुरुष व्यंग्यकारक मानसचित्र मे विधागत भिन्नता अछि। तुलनाक उपयुक्त आधार 'विरोधाभासकें हँसीमार्फत दृश्य करब' अछि, ऐतिहासिक प्रभावक अप्रमाणित दावा नहि।

हरिमोहन झाक 'खट्टर ककाक तरंग' आ कुमार पवन

आधुनिक मैथिली हास्य-व्यंग्यक चर्चामे हरिमोहन झाक 'खट्टर ककाक तरंग' (१९४८) एकटा उपयोगी तुलनात्मक बिन्दु अछि। विदेहक लेखक-परिचयमे एहि व्यंग्य-कृतिक संग हुनकर 'कन्यादान' (१९३३) तथा आन कृतिसभक विवरण उपलब्ध अछि। 'खट्टर ककाक तरंग'क परिचित तर्कशील विनोद-परम्परासँ कुमार पवनक रचना एहि अर्थमे सम्वाद करैत अछि जे दुनूमे स्थापित मान्यता पर प्रश्न उठबैत हास्य महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा पाठक संरचना अलग अछि। हरिमोहन झाक प्रसिद्ध खट्टर कका संवादक मार्फत विचारक प्रबल केन्द्र बनैत छथि; कुमार पवनक कथामे प्रश्नक केन्द्र स्वयं संशयग्रस्त कथावाचक अछि, जे प्रत्येक नव प्रसंगमे अपन पूर्वधारणा हेराइत अछि।

एहि तुलनामे कोनो एक कृतिक 'प्रभाव' सिद्ध नहि होइत। एहि लेल पाण्डुलिपि, लेखकक वक्तव्य, क्रमागत प्रकाशन वा प्रत्यक्ष अन्तर्पाठीय साक्ष्य चाही। उपलब्ध प्रमाण केवल विधागत संगति आ शिल्पगत अन्तरक विवेचनक अनुमति दैत अछि। एहन सीमाबोध साहित्येतिहासकें प्रशंसामूलक वंशावली बनबासँ बचबैत अछि।

उत्तरकालीन मैथिली व्यंग्य आ विधागत निरन्तरता

विदेह पोथी-सूचीमे अशोकक 'नीक दिनक बाइस्कोप' (व्यंग्य-संग्रह, २०१८) तथा 'कथा-पाठ' (मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन, २०२२) दर्ज अछि। एहि प्रविष्टिसभसँ एतबे निश्चित होइत अछि जे मैथिलीमे व्यंग्य आ कथा-आलोचना उत्तरकालमे सेहो स्वतन्त्र कृतिरूपमे उपस्थित अछि। केवल सूचीगत सूचनाक आधारपर एहन ग्रन्थसभक

भीतरी कथ्य, शिल्प वा कुमार पवनसँ प्रत्यक्ष सम्बन्धक दावा करब उचित नहि। तथापि एहि अभिलेखक संग ५/६८ अङ्कक कथात्मक व्यंग्यकेँ राखलासँ स्पष्ट होइत अछि जे पत्रिका-आधारित व्यंग्य आ पुस्तकाकार व्यंग्यक अध्ययन समानान्तर रूपसँ आवश्यक अछि।

कुमार पवनक ‘पड़ठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’ सेहो विदेहक पुस्तक-सूचीमे सूचीबद्ध छथि। एहि उपलब्धिसँ लेखकक अन्य गद्य-रचनाक अस्तित्वक जानकारी भेटैत अछि; मुदा केवल एहि जानकारी सँ हुनकर समग्र रचना-यात्राक कालक्रम वा कथात्मक परिवर्तनक निष्कर्ष निकालब नहि चाही। लेखकक अन्य प्रकाशित रचनाक प्रत्यक्ष पाठसँ तुलना करब भविष्यक अधिक ठोस शोधक विषय अछि।

साहित्येतिहासक पुनर्पाठ: ‘छोट’ रचनाक महत्त्व

साहित्येतिहासमे बहुधा पुस्तकाकार संग्रह, पुरस्कृत कृति आ प्रतिष्ठित लेखकक केन्द्रमे प्रवृत्तिक कथन तैयार होइत अछि। पत्रिकामे बिखरल आठ प्रसंगक कथात्मक व्यंग्य एहन इतिहासक सीमाकेँ देखबैत अछि। ई रचना पाठककेँ जनभाषा, शैक्षणिक संस्थान, सामाजिक अवसरवाद आ नैतिक निर्णयक जटिल सम्बन्धक छोट मुदा सघन दस्तावेज दैत अछि। साहित्यिक इतिहास जखन प्रकाशित पत्रिकाक एहि सूक्ष्म पाठकेँ सेहो स्वीकार करैत अछि, तखने हास्य-व्यंग्यक बहुस्तरीय सामाजिक भूमिका स्पष्ट होइत अछि।

एहि अध्ययनक प्रस्ताव मूल्यनिर्णयक अतिशयोक्ति नहि, अभिलेखीय अनुशासन अछि। एहि एक रचनाकेँ मैथिली व्यंग्यक सर्वश्रेष्ठ वा आद्य उदाहरण घोषित करबाक कोनो पाठ-प्रमाण उपलब्ध नहि। एकरा विशिष्ट कहबाक आधार अधिक नापल-तौलल अछि—लोकोक्तिसँ चलैत अर्थ-खोज, आत्मविसंगत कथावाचक, सामाजिक संस्थाक व्यंग्य आ पाठकपर छोड़ल खुलल अन्त। साहित्येतिहासमे एहि रचनाक स्थान एही सत्यापनीय विशेषताक आधारपर निर्धारित होयबाक चाही।

निष्कर्ष

कुमार पवनक 'अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप' एहन कथात्मक व्यंग्य अछि जे अर्थक एकटा छोट प्रश्नसँ शुरू भऽ आधुनिक समाजक बड़ विडम्बनासभ धरि पहुँचैत अछि। अशर्फीक ऊँच मूल्य आ कोइलाक साधारणताक प्रतीक-विरोध केवल वस्तुक तुलना नहि रहैत; ई शिक्षित समाजक 'बड़प्पन', आर्थिक सुविधा, प्रतिष्ठित पद, योग्यताक दावा आ नैतिक निर्णायक बहुतेक कसौटीकेँ सवालक दायरामे लऽ अबैत अछि। कथावाचक अपन अहम् आ असुरक्षा संग पाठकक सोझाँ उपस्थित होइत अछि; भुवन कका लोकबुद्धिक एकटा आयाम जोड़ैत छथि; संस्थागत संसार सफलता आ ज्ञानक अन्तरकेँ प्रकाशित करैत अछि।

रचनाक सर्वाधिक प्रभावकारी उपकरण ओकर प्रश्नात्मकता अछि। एक अर्थ खोजैत कथावाचक अनेक अर्थक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा अन्ततः पाठककेँ निर्णायक बनबैत अछि। ई खुलापन, आत्मव्यंग्य आ सामाजिक परिहासक संगति मैथिली आधुनिक गद्यक अध्ययनमे एकरा ध्यानयोग्य बनबैत अछि। किछु प्रसंगगत ढीलापन आ समय-विशेषक सन्दर्भक कठिनाईकेँ मानि लेबाक बादो कथा मूल्यक उलटबाँसीक तीक्ष्ण आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। एही कारण एहि छोट रचनाकेँ मात्र विनोदपूर्ण लेख नहि, समाजक मूल्य-व्यवस्थाक बहुस्तरीय विवेचनक रूपमे पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि।

१.३१. नित नवल कुमार पवन — पइठ, स्मृति आ आत्मलेखन : तुलनात्मक समीक्षा

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

पइठ, स्मृति आ आत्मलेखन

‘पइठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’क साहित्य-सैद्धान्तिक तुलनात्मक समीक्षा

एकटा कथासँ लेखकक साहित्यिक पहिचान

साहित्यिक इतिहासमे कखनो एकटा रचना अपन लेखकक समूचा नामक प्रतिनिधि बनि जाइत अछि। चन्द्रधर शर्मा गुलेरीक अनेक साहित्यिक योगदान रहलाक बादो ‘उसने कहा था’ हुनक नामसँ विशेष रूपेँ जुड़ल प्रसिद्ध कथा अछि। एही अर्थमे ‘पइठ’केँ कुमार पवनक साहित्यिक पहिचानक प्रतिनिधि रचना मानबाक उपमान प्रयुक्त होइत अछि। ई न तँ दुनू कथाक विषय एक होएबाक दावा अछि, न कथाशिल्प, पात्र, अन्त वा संवेदनाक समानता बतएबाक चेष्टा। एकटा कथा लेखकेँ व्यापक प्रसिद्धि दऽ सकैत अछि—एतय तुलनाक आशय केवल एतबे थिक।

एहन प्रतिष्ठामे एकटा सावधानी आवश्यक अछि। कोनो एक कृति पाठकीय स्मृतिमे केन्द्र बनलाक अर्थ ई नहि जे लेखकक आन रचनासभ गौण वा मूल्यहीन छथि। कुमार पवनक ‘डायरीक खाली पन्ना’ आ ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ अध्ययन करैत स्पष्ट होइत अछि जे हुनक रचना-दृष्टि सामुदायिक भोजक दृश्यसँ बढ़ि शिक्षा-संस्था, आत्मपरीक्षा आ सामाजिक प्रतिष्ठाक विडम्बना धरि फैलल अछि। ‘पइठ’ लेखकक परिचायक कृति भऽ सकैत अछि; मुदा पूरा लेखककेँ बुझबाक लेल समग्र कृतित्वक ओर देखब आवश्यक अछि।

स्वर्ग-पइठ आ आत्मलेखनक रिक्तता : दू विरोधाभास

‘पइठ’क मूल अर्थ मृतात्माक स्वर्गमे स्थान वा धार्मिक स्वीकृति पएबाक लोकविश्वाससँ जुड़ल अछि। मुदा कथाक नैतिक विडम्बना ई अछि जे कनियाँ काकीक

जीवनकालमे हुनकर बेटीक बेटा लेल भोजनक मामूली आग्रह अस्वीकार आ कोलाहलक कारण बनल, जखनकि मृत्यु उपरान्त हुनकर स्वर्ग-पइठ लेल विराट भोजक व्यवस्था भेल। एहिसँ शीर्षक परलोकक स्वीकार्यता आ इहलोकक उपेक्षाक बीचक विरोध खोलैत अछि। भोजक पाँति आ सार्वजनिक मान-प्रतिष्ठा एहि मूल विरोधक सहवर्ती दृश्य छथि, ‘पइठ’ शब्दक प्राथमिक अर्थ नहि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे भिन्न प्रकारक रिक्तता अछि। एतय मृतात्माक परलोक-स्वीकृतिक बदला जीवित व्यक्तिक आत्मसाक्ष्यक प्रश्न अछि। डायरीक पन्ना लिखबाक लेल खुलल अछि, मुदा प्राचार्य अपन अनुभवक निर्णायक अभिलेख दर्ज नहि कऽ पबैत छथि। एक कथा मृत्यु उपरान्त आत्माक पइठ लेल सार्वजनिक अनुष्ठान आ जीवनकालक उपेक्षाक अन्तर देखबैत अछि; दोसर कथा जीवित पदाधिकारीक सार्वजनिक छवि आ निजी सत्यक अन्तर। दुनू मे कथित आदर्श आ वास्तविक कर्मक दूरी व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि।

‘पइठ’मे परलोकक धार्मिक स्वीकृतिपर सामूहिक बल अछि, मुदा जीवित कनियाँ काकीक छोट माँग अनसुनी रहि जाइत अछि; ‘डायरीक खाली पन्ना’मे सामाजिक पद-स्वीकृति अछि, मुदा निजी जीवनक सत्य लिखल नहि जाइत। पहिल कथा पूछैत अछि जे मृतात्माक स्वर्ग-पइठ लेल तत्पर समाज जीवनकालमे मनुष्यक प्रति अपन दायित्व किएक नहि निभबैत; दोसरी पूछैत अछि जे अधिकारसम्पन्न व्यक्ति अपन अनुभवक सच्चा लेखा किएक नहि लिखि पबैत। एहि तुलनामे सार्वजनिक कर्मकाण्ड आ निजी आत्मलेखनक पृथक रूप राखैत एक साझा नैतिक दूरी देखल जाइत अछि।

कथाक समय : पुनर्स्मरण, वर्तमान आ अधूर भविष्य

कथा-समय घड़ीक सोझ क्रम नहि होइत। स्मृति, आशंका आ अपेक्षा ओकर प्रवाह बदलैत अछि। ‘पइठ’मे मृत्योत्तर भोजक वर्तमानक संग कनियाँ काकीक जीवित अवस्थाक अपमान, बेटीक बेटा लेल भोजनक आग्रह, गुँजाक स्थिति आ परिवारक भविष्यक अनिश्चित सम्भावना जुड़ैत अछि। एहि आवागमनसँ मृतात्माक स्वर्ग-पइठ

लेल कएल आयोजन जीवनकालक नैतिक लेखा-देनसँ अलग नहि रहि पबैत अछि। स्मृति भीड़क बाहर एकटा मानवीय चेहरा आ ओकर अनसुनी माँग सोझाँ अनैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’क समय आओर विचित्र अछि। डायरी सामान्यतः बीतल क्षणकें लिखित वर्तमानमे बदलैत अछि। मुदा प्राचार्यक जीवन योजनासभ, आशंकासभ आ अगिला दिनक पद-प्रतिष्ठाक गणनामे एतेक व्यस्त अछि जे बितैत क्षण अभिलेख नहि बनि पबैत अछि। भविष्यक चिंता वर्तमानक अनुभवकें निगलैत अछि; परिणामस्वरूप अतीतक साक्ष्य रिक्त रहैत अछि। ई कथानकक मात्र कौशल नहि, सत्ता-संलग्न जीवनक कालबोधपर व्यंग्य अछि।

दुनू दीर्घ-कथामे समयक वापसी अलग रूप लैत अछि। ‘पड़ठ’मे कनियाँ काकीक जीवित अवस्थाक पीड़ा मृत्यु उपरान्त आयोजित भोजक दावाक जाँच करैत अछि; ‘डायरीक खाली पन्ना’मे वर्तमानक व्यस्तता अतीतक विश्वसनीय अभिलेख रचबाक सम्भावनाकें बाधित करैत अछि। पहिल कथामे अनुष्ठानक वर्तमानकें जीवनकालक स्मृति प्रश्नांकित करैत अछि; दोसरीमे स्मृतिक लिखित स्थान खाली रहि जाइत अछि। दुनू ठाम कालक्रमसँ बेसी निर्णायक ई अछि जे मनुष्य अपन जीवित अनुभवक संग की व्यवहार करैत अछि।

कथावाचकक दूरी आ दृष्टिकोणक नैतिकता

‘पड़ठ’मे भीड़, मृत्योत्तर अनुष्ठान, कनियाँ काकीक जीवन-स्मृति आ परस्पर विरोधी आवाजक संग दृश्य बनैत अछि। एकटा दृष्टिकोण सम्पूर्ण गामक सत्य नहि बनि पबैत। हुनकर साधारण भोजन-माँगक प्रसंगपर उठल विवाद पाठककें समाजक बाहरी धार्मिक आयोजनसँ घरक भीतरी आघात धरि अनैत अछि। एहि बहुदृष्टिक रचनामे पाठककें पात्रक जानकारी आ सीमाकें ध्यानमे राखि अर्थ तैयार करए पड़ैत अछि। कथा जखन स्पष्ट निर्णय नहि सुनबैत, तखन ई पाठकक नैतिक भागीदारीक अवसर सेहो अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्राचार्यक आत्म-औचित्य आ हुनक व्यवहारक सार्वजनिक प्रभाव बीच दूरी व्यंग्यक मूल भूमि बनैत अछि। ओ जकरा विवेकसम्मत निर्णय बूझैत

छथि, तकर पाछाँ पदक रक्षा, असफलताक भय आ निकट सम्बन्धक लाभ सेहो छिपल रहि सकैत अछि। कथावाचकक व्यवस्था एहन अछि जे प्राचार्यक असुरक्षा पाठकपर खुलैत रहैत अछि, मुदा प्राचार्य स्वयं ओकर पूरा अर्थ नहि पकड़ि पबैत छथि।

दुनू रचनामे दृष्टिकोणक राजनीति महत्त्वपूर्ण अछि। ‘पड़ठ’ पूछैत अछि जे जकरा सामूहिक आवाज दबा दैत अछि, ओकर कथा के कहत; ‘डायरीक खाली पन्ना’ पूछैत अछि जे लिखबाक अधिकार जकरा भेटल अछि, ओ की लिखत आ की तारि देत। साहित्यिक दृष्टि एतय ज्ञानक बँटवारा अछि—कथाकार, पात्र आ पाठक तीनू एकहि बात समान ढङ्गसँ नहि जनैत छथि।

मृत्योत्तर भोज आ महाविद्यालय : सामाजिक संस्थाक मूल्यपरीक्षा

मृत्योत्तर भोज आ महाविद्यालय बाहरी रूपसँ असम्बद्ध संस्थासभ बुझाइत अछि। एकटा लोकधार्मिक मान्यतासँ सम्बद्ध सामुदायिक आयोजन अछि, दोसर आधुनिक शिक्षाक औपचारिक केन्द्र। मुदा दुनू ठाम प्रतिष्ठा, सम्बन्ध, पद आ सामूहिक अनुमोदनक प्रभाव देखल जाइत अछि। ‘पड़ठ’मे प्रश्न अछि जे कनियाँ काकीक जीवनकालक माँगपर कोलाहल आ मृत्युक बादक भोजपर सहमति किएक; ‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्रश्न अछि जे शिक्षाक घोषित आदर्शकेँ पद, सिफारिश आ संरक्षण कोना प्रभावित करैत अछि। ई अलग सामाजिक प्रक्रियासभक नैतिक तुलनाक आधार अछि।

‘पड़ठ’मे भोजनक वितरण मात्र अन्नक प्रश्न नहि, समय आ उद्देश्यक प्रश्न सेहो अछि—जीवित बेटीक बेटा लेल माँगल कनेक भोजनपर प्रतिरोध आ मृतात्माक पड़ठ लेल प्रचुर भोज। दोसर दिस प्राचार्यक संस्थामे ज्ञानक मूल्य पद-पत्र, राजनीतिक संरक्षण आ सार्वजनिक छवि सँ घेरल अछि। सामाजिक पूँजी आ प्रतीकात्मक प्रतिष्ठाक आलोचनात्मक धारणा एतय उपयोगी अछि; मुदा मृत्योत्तर लोकविश्वासक विशिष्ट धार्मिक आशयकेँ केवल प्रतिष्ठाक गणितमे समेटब उचित नहि।

दुनू कथाकेँ एकहि सामाजिक सूत्रमे विलीन कऽ देब उचित नहि। ‘पड़ठ’क संकटमे जीवितक भूख, मातृस्नेहक अवमानना आ मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठक अनुष्ठानक तीक्ष्ण

विरोध अछि; महाविद्यालयक संकटमे नियम, पद आ विवेकक दीर्घ क्षरण। एक ठाम नैतिक असंगति कनेक अन्न बनाम विशाल मृत्योत्तर भोजक रूपमे देखाइत अछि; दोसर ठाम निर्णयक भाषा आ अधिकारक उपयोगमे। एही अन्तरकेँ सुरक्षित राखैत तुलना करब कथा-दृष्टिक सम्मान थिक।

स्त्री-अनुभव आ निजी जीवनक अदृश्य लेखा

‘पड़ठ’मे कनियाँ काकीक पीड़ा मृत्योत्तर भोजक चहल-पहलकेँ भीतरसँ बदलि दैत अछि। जीवनकालमे हुनकर साधारण भोजनक आग्रहपर उठल कोलाहल ममता आ पारिवारिक दायित्वक प्रश्नकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। मृत्युक बाद हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ठक निमित्त भव्य आयोजन एहि उपेक्षाक नैतिक विपर्यास अछि। गुँजाक उपस्थितिसँ उत्तराधिकार आ स्त्रीक सामाजिक स्थानक प्रश्न आओर गाढ़ होइत अछि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे संस्थागत सत्ता प्राचार्यक विचारक केन्द्र अछि। स्त्री-पात्रक किछु उपस्थितिसभ पुरुष नायकक आत्मसंशोधनक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा हुनक अपन जीवन पूर्ण विस्तार नहि पबैत। ई रचनाक अर्थवान सीमा सेहो अछि। एक दिस स्त्री-पात्र पुरुषक आत्मचिन्तनमे सहायक बनैत छथि; दोसर दिस एही सहायक भूमिकाकेँ देखैत पाठक पूछि सकैत अछि जे हुनकर स्वतन्त्र संघर्ष कतय अछि।

दुनू कथाक तुलनामे ई प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि जे साहित्य ककर अनुभवकेँ नैतिक केन्द्र बनबैत अछि। ‘पड़ठ’ परलोकक कल्याण लेल कएल सामुदायिक भोजक भीतर जीवित कनियाँ काकीक अनसुनी इच्छाकेँ आवाज दैत अछि; ‘डायरीक खाली पन्ना’ पुरुषक संस्थागत जीवनक आत्ममुग्ध सीमा उजागर करैत अछि। एहि दू प्रस्तुतिक बीच मैथिली कथाक लिंग-दृष्टि आ सामाजिक दायित्वपर पुनर्विचारक बाट खुलैत अछि।

हास्य, करुणा आ विडम्बनाक त्रिकोण

कुमार पवनक व्यंग्यक एकटा महत्त्वपूर्ण विशेषता ई अछि जे हास्य अन्ततः असुविधाक अनुभव बनि जाइत अछि। ‘पड़ठ’मे विशाल मृत्योत्तर भोजक बहस, दौड़धूप आ सामाजिक मुद्रा आरम्भमे परिहासक अवसर दैत अछि। मुदा कनियाँ काकीक

जीवनकालक छोट भोजन-माँगपर मचल विवाद आ हुनकर मृत्युक बाद स्वर्ग-पड़ठ लेल कएल प्रचुर प्रबन्धक विरोध सोझाँ अएला पर ई हँसी गम्भीर होइत अछि। कथाकार पाठककेँ केवल सामाजिक विसंगतिपर हँसाए नहि चाहैत; ओ हँसीक कारणोपर विचार करबैत छथि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्राचार्यक आत्मऔचित्य, पदक प्रति मोह, सम्भावित निन्दाक भय आ बाहरी संरक्षणक जटिल खेल हास्य उत्पन्न करैत अछि। मुदा एहि हास्यक भीतरे शिक्षा-संस्थाक भरोसा खोएबाक संकट अछि। पाठक जखन हँसैत अछि, तखन ओहि संग ई प्रश्न उठैत अछि जे संस्थाक निर्णयक नैतिक आधार कोना क्षीण भेल। दुनू कथामे करुणा आ हास्य एक-दोसराक विरोधी भाव नहि अछि। ‘पड़ठ’मे कनियाँ काकीक जीवित अवस्थाक उपेक्षा जखन हुनकर मृत्युक बादक स्वर्ग-पड़ठक भोजसँ टकराइत अछि, तखन विडम्बना करुण अर्थ ग्रहण करैत अछि। महाविद्यालयक अधिकार आ प्राचार्यक भीतरी आशंकाक दूरी ‘डायरीक खाली पन्ना’मे हँसीक संग असुरक्षा उत्पन्न करैत अछि। ई करुणा पाठककेँ तात्कालिक भावनासँ उठाकय न्याय, उत्तरदायित्व आ संस्थाक मानवीय अर्थपर सोचबा लेल बाध्य करैत अछि।

चित्र, बिम्ब आ दृश्यात्मक स्मृति

‘पड़ठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’क प्रकाशित रूपमे रेखाचित्रक उपस्थिति कथाक भाव-जगतकेँ सहारा दैत अछि। आँखि, मुख, शारीरिक आकृति आ ताज-सदृश बिम्ब कतहु देखबाक अधिकारक प्रश्न बनैत अछि, कतहु सत्ता-आकांक्षाक व्यंग्यात्मक चिह्न। चित्रकेँ केवल सजावट मानब पाठक-अनुभवक एकटा महत्त्वपूर्ण स्तर छोड़ि देब होएत। दृश्यात्मक संकेतक प्रभाव गद्यक पद्धतिसँ सेहो जुड़ल अछि। ‘पड़ठ’मे मृत्योत्तर भोजक भीड़, पाँति आ खिड़कीक दृश्य बाहरी अनुष्ठान आ कनियाँ काकीक जीवन-स्मृतिक अलग संसार बनबैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे कार्यालय, महाविद्यालय आ लिखबाक अधूरी इच्छा दृष्टिक नियोजन करैत अछि। पहिल रचनामे दृष्टि प्रश्न करैत

अछि जे जीवितक पीड़ा देखल किएक नहि गेल; दोसरामे जे देखल गेल तकरा लिखल किएक नहि गेल। ई सम्बन्ध शीर्षकसभक सांकेतिक शक्ति बढ़बैत अछि।

अन्तक खुलापन आ पाठकीय उत्तरदायित्व

कथाक अन्त केवल घटनाक समाप्ति नहि, ओकर अर्थक नवा आरम्भ सेहो भऽ सकैत अछि। ‘पड़ठ’मे हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल आयोजित भोज सम्पन्न भऽ जाए तइयो जीवनकालमे हुनकर बेटीक बेटा लेल माँगल अन्नक कारण उठल विवादक नैतिक हिसाब शेष रहैत अछि। भव्य अनुष्ठानक दावाक सामना जीवित व्यक्ति संग कएल व्यवहारसँ होइत अछि। एहि द्वन्द्वक स्मृति पाठकक मनमे ठहरि जाइत अछि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्राचार्य अपन जीवनक सच्चा लेखा तैयार नहि कऽ पबैत छथि। शीर्षक पुनः कथा-अन्तमे अर्थवान भऽ उठैत अछि: जतेक अनुभव जमा भेल, ततेक लिखबाक नैतिक कठिनाई सेहो बढ़ल। अन्तिम रिक्तता पात्रक विफलताक संग पाठकक प्रश्न बनैत अछि—हम अपन सार्वजनिक निर्णयक निजी हिसाब कखन आ कोना दैत छी?

‘पड़ठ’क अन्त मृत्योत्तर भोजक सम्पन्नतासँ बेसी जीवनकालमे कनियाँ काकीक प्रति अधूरा सामाजिक दायित्व स्मरणमे छोड़ैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे आत्मलेखनक रिक्तता प्राचार्यक जीवन-संघर्षक नैतिक परिणाम बनैत अछि। एक ठाम परलोकक स्वीकृतिपर बल दैत अनुष्ठानक सोझाँ जीवनकालक उपेक्षा अछि, दोसर ठाम सार्वजनिक अधिकारक सोझाँ आत्मसाक्ष्यक अभाव। दुनू कथा पाठककेँ अन्तिम नैतिक निर्णय स्वयं गढ़बाक चुनौती दैत अछि।

कथात्मक बहुस्वरता आ सामाजिक भाषा

समाजक भाषा एकरूप नहि। ‘पड़ठ’मे भोजक आयोजक, आमन्त्रित, उपेक्षित, परिवारक सदस्य आ भीड़क प्रतिक्रिया सभ अलग जीवनस्थितिसँ उभरैत अछि। एहन बहुस्वरतामे कथाकारक एकल निर्णय स्वतः केन्द्र नहि रहैत। पाठकक सोझाँ सामाजिक वाणीसभक तनाव बनल रहैत अछि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे आदेश, आश्वासन, अफवाह, आरोप, संरक्षण आ निजी संशयक भाषा एक-दोसरकेँ काटैत अछि। प्रशासनिक शब्द आ निजी भयक मिलनमे विडम्बनाक ऊर्जा अछि। संस्थागत संवाद सत्यक निर्विवाद अभिलेख नहि, पदक रक्षा आ शक्ति-सन्तुलनक साधन बनि जाइत अछि।

दुनू कथा भाषा-विज्ञानक शुष्क उदाहरण नहि, जीवनक टकरावक रचनात्मक प्रस्तुति अछि। सामाजिक भाषा कोन अनुभवकेँ प्रतिष्ठा दैत अछि आ कोन अनुभवकेँ किनार करैत अछि, से कथाक दृश्य आ संवादमे निरन्तर व्यक्त होइत अछि। मैथिली लोकभाषाक लचक एहि बहुवचनकेँ जीवित बनबैत अछि।

प्रतीकात्मक पूँजी, भूख आ नैतिकता

प्रतिष्ठा कखनो पदवी, कखनो निमन्त्रण, कखनो आसन, कखनो प्रभावशाली व्यक्तिक निकटता बनि जाइत अछि। ‘पड़ठ’मे मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल विशाल भोज सामाजिक प्रतिष्ठाक अभिव्यक्ति सेहो बनि पड़ैत अछि, मुदा काकीक जीवनकालमे बेटीक बेटा लेल माँगल कनेक अन्नपर विवाद ओकर मूल्यक सीमा खोलैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे संस्था अपन घोषित शैक्षिक उद्देश्यक बदला पदक प्रतीकात्मक चमकमे फँसैत अछि।

विरोधाभास ई अछि जे समाजक आदरणीय मानल जाएबला व्यवस्थासभ—मृत्योत्तर धार्मिक भोज आ शिक्षण-संस्था—मानवीय मर्यादा सुरक्षित राखबाक अवसर सेहो छथि आ ओकर अवमूल्यनक स्थल सेहो। कुमार पवन धार्मिक कर्मकाण्डक श्रद्धा आ जीवितक प्रति मानवीय दायित्वक अन्तर दिखबैत छथि; दोसर कथामे शैक्षिक प्रतिष्ठा आ नैतिक सत्यक अन्तर। दुनू व्यवस्थाकेँ एकरेखीय उपदेशमे विलीन नहि कएल जा सकैत।

एतय नैतिकता व्यक्तिगत सदाचार भरि नहि अछि। जीवित कनियाँ काकीक बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन देबाक दायित्व आ मृत्युक बाद हुनकर आत्माक पड़ठ लेल भोज करबाक सामाजिक इच्छा बीचक अन्तर नैतिक जाँच माँगैत अछि। ओहिना न्यायपूर्ण

शैक्षिक निर्णय सेहो सार्वजनिक दायित्व अछि। एहि विस्तृत नैतिक अर्थक कारण दुनू रचनाक सामाजिक महत्त्व टिकाउ बनैत अछि।

समानताक सीमा आ रचनासभक स्वतन्त्र उपलब्धि

‘पइठ’क मृतात्माक स्वर्ग-स्वीकृतिक रूपक ‘डायरीक खाली पन्ना’मे यथावत् उपस्थित नहि अछि। पहिल कथा धार्मिक अनुष्ठान, समुदाय आ परिवारक अनेक केन्द्र बनबैत अछि; दोसरी कथा संस्थाक भीतर एकटा महत्त्वाकांक्षी व्यक्तिक विकल मनोभूमिकें प्रधानता दैत अछि। पहिलमे जीवितक भूख, ममता, मृत्यु आ परलोकक आशा; दोसरीमे पद, प्रचार, नियम आ आत्मलेखन। दुनूकें समान सामाजिक व्यंग्य कहि देबासँ ई अन्तर मेटि जाएत।

फेरो शीर्षकक व्यंजना, अधूरा प्रश्न, सार्वजनिक छविक मोह आ मनुष्यक मर्यादाक चिन्ता दुनूकें एक साझा कथा-दृष्टिसँ जोड़ैत अछि। सामाजिक दृश्य जतेक विस्तार पबैत अछि, कथाक नैतिक प्रश्न ततेक अन्तर्मुखी होइत अछि। ‘पइठ’मे कनियाँ काकीक जीवनकालक मामूली अन्नक आवश्यकता आ हुनकर मृत्युक बाद स्वर्ग-पइठक भोजक विरोध, आ दोसर कथामे प्राचार्यक सत्य लिखबाक असमर्थता—ई भिन्न संकट होइतहुँ पाठककें घोषणाक अपेक्षा कर्मक मूल्यपर सोचबाक लेल बाध्य करैत अछि।

‘पइठ’क प्रतिनिधि कृति होयबाक महत्त्व ओकर स्वतन्त्र मैथिली सामाजिकता, कनियाँ काकीक स्त्री-अनुभव, जीवित अवस्थाक उपेक्षा आ मृत्योत्तर भोजक विडम्बना तथा खुलल नैतिक प्रश्नमे निहित अछि। एकटा कथा लेखकक सार्वजनिक पहिचान बनि सकैत अछि; मुदा कृतित्वक आकलन ओकरा एकटा रचनामे बन्द नहि करबाक चाही। ‘डायरीक खाली पन्ना’ आ आन रचनाक संग पढ़ला पर कुमार पवनक सामाजिक आलोचना आओर विस्तृत रूपेँ बुझाइत अछि। हुनक साहित्यिक उपलब्धि कोनो दोसर कथाकारक अनुकरणमे नहि, अपन समाजक भीतरी असंगतिाकें कथा-सौन्दर्यमे बदलामे अछि।

समाहार : कथा-कर्मक साझा संरचना

तीनू कृतिक समीक्षासँ स्पष्ट होइत अछि जे कुमार पवनक कथा-जगतमे बाह्य व्यवहार आ भीतरी अभिप्राय बीच दूरी एकटा स्थायी चिन्ता अछि। ‘पड़ठ’मे कनियाँ काकीक जीवनकालमे बेटीक बेटा लेल कनेक अन्नक माँगपर हंगामा, मुदा मृत्युक बाद स्वर्ग-पड़ठ लेल विशाल भोज; ‘डायरीक खाली पन्ना’मे शैक्षिक प्रतिष्ठा आ आत्मसाक्ष्यक रिक्तता; ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’मे लोकोक्तिक सहज ज्ञान आ सामाजिक पदलोलुपताक विडम्बना—सभ अलग प्रसंगमे एकहि प्रश्न उठबैत अछि: समाज जे मूल्य कहैत अछि, ओकर पालन कोना करैत अछि?

‘पड़ठ’मे सामुदायिक मृत्योत्तर भोजक विखण्डित आवाजक संग कनियाँ काकीक जीवनकालक अपमान आ ममताक स्मृति जुड़ैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्रशासनिक सफलता आ असुरक्षित आत्मचेतना एक-दोसरकेँ उघारैत अछि। ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’मे लोकोक्तिक अर्थ खोजबाक प्रक्रिया पाठकक अपन मूल्य-निर्णयकेँ अस्थिर करैत अछि। एहि तीनू शिल्पमे अलग-अलग लय अछि—अनुष्ठान आ जीवनक विरोधसँ उपजल सामुदायिक व्यंग्य, संस्थागत मनोव्यंग्य आ प्रत्यक्ष पाठक-सम्बोधन।

व्यंग्यक सर्जनात्मक सफलता एतए हँसीक तीक्ष्णतामे मात्र नहि, करुणाक उपस्थितिमे अछि। सामाजिक सम्बन्धक अव्यवस्थाकेँ देखि पाठककेँवल दोषी खोजबाक सरल सन्तोष नहि पबैत; ओकरा अपन व्यवहार, सम्मानक कल्पना आ मौनक भूमिका पर सेहो विचार करए पड़ैत अछि। आधुनिक मैथिली कथासाहित्यमे ई आलोचनात्मक पाठकीयता कुमार पवनक कथा-लेखनक विशिष्ट योगदानक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

रचनासभक सीमा सेहो अछि। कतिपय विस्तृत प्रसंग कथाक गति धीमा करैत अछि; किछु पात्र, विशेषतः स्त्रीक स्वतन्त्र अनुभव, आओर विस्तार माँगैत छथि। तथापि रचनाक मौलिकता अक्षुण्ण रहैत अछि : ‘पड़ठ’, ‘डायरीक खाली पन्ना’ आ ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’—तीनू समाजक पैघ प्रश्नकेँ साहित्यिक स्वर दैत अछि।

सन्दर्भग्रन्थ आ उल्लेखित आलोचना

01. कुमार पवन। ‘पड़ठ’ (दीर्घ कथा)। अंतिका, अप्रैल-जून २००८।
02. कुमार पवन। ‘डायरीक खाली पन्ना’ (दीर्घ-कथा)। अंतिका, अक्टूबर-दिसम्बर २००८।
03. कुमार पवन। ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ (कथात्मक व्यंग्य)। संकल्प, अङ्क-संकेत ५/६८।
04. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी। ‘उसने कहा था’। सरस्वती, १९१५।
05. हरिमोहन झा। खट्टर ककाक तरंग।
06. हरिमोहन झा। कन्यादान।
07. ज्योतिरीश्वर ठाकुर। धूर्तसमागम।
08. फूलचन्द्र झा। ‘प्रवीण’। ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’। विदेह, अङ्क ५०, २०१०।
09. योगानन्द झा। ‘मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा’। विदेह, अङ्क ७६, २०११।
10. दुर्गानन्द मण्डल। ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’। विदेह, अङ्क ११६, २०१२।
11. रमेश रञ्जन। ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत — चौआरि’। विदेह, अङ्क १२६, २०१३।
12. गजेन्द्र ठाकुर। ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४७, २०२६।
13. अशोक। नीक दिनक बाइस्कोप। २०१८।
14. अशोक। कथा-पाठ। २०२२।
15. विदेह। ‘पोथी’ : मैथिली साहित्यक पुस्तक-अभिलेख।
16. विदेह। ‘गद्य’ : रचनाकारवार गद्य-कृति आ आलोचनाक सूची।
17. बाख्तिन, मिखाइल। The Dialogic Imagination: Four Essays। १९८१।

-
18. जेनेट, जेरेर। Narrative Discourse: An Essay in Method | १९८०।
 19. रिकर, पॉल। Time and Narrative | १९८४-१९८८।
 20. बुर्दियो, पियेर। The Field of Cultural Production | १९९३।

१.३२. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — गाम-घर

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

समग्र दृष्टि

नन्दक रचनाधर्मिता आ मैथिली सामाजिक कल्पना

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क रचना-संसारकेँ एकटा विधा, एकटा कथानक-प्रविधि वा एकटा सामाजिक प्रश्नमे समेटल नहि जा सकैत अछि। 'गाम-घर' आ 'आडम्बर'क कथा-संसारसँ आरम्भ कऽ 'गुदड़ीक लाल', 'अनठिया कुकुर', 'सुजाता', 'सुकन्या' आ 'परिवार' धरि हुनकर गद्य समानता, पारिवारिक पुनर्गठन, स्त्रीक सम्मान आ सामाजिक न्यायक अनेक रूप पर विचार करैत अछि। 'दिल्लीक पार्क' आ 'याचक के नजि'मे चर्चा, स्मृति आ सामाजिक व्यंग्यक रूप बदलि जाइत अछि। 'महारानी कैकेयी' परिचित आख्यानक नैतिक निर्णयक प्रतिपक्ष रचैत अछि; 'काव्य सरिता' गीत आ लोकधुनक विस्तृत क्षेत्र खोलैत अछि; आ 'स्वर्ण-कमल' बाल-कल्पना, लोककथा आ न्याय-बोधकेँ एक संग आबद्ध करैत अछि।

एहि विविधताक भीतर मुख्य सूत्र समाजक असमान व्यवस्था आ व्यक्तिगत नैतिक विवेकक बीचक टकराव अछि। ग्रामजीवन एतय केवल रमणीय स्मृति नहि। खेती, बेगार, श्राद्ध-भोज, जाति, दहेज, सम्पत्तिक विवाद, कार्यालयी व्यवस्था आ सार्वजनिक पदक मर्यादा—ई सभ कृति मे कमोबेश सामाजिक शक्तिक रूपमे उपस्थित अछि। कथाकार समाजसुधारक आग्रहक कारण कखनो प्रत्यक्ष तर्क देइत छथि आ कखनो पात्रक दैनिक व्यवहारक भीतर तर्कक परिणाम देखबैत छथि। एहि दूनू स्थितिक बीचक तनाव हुनकर साहित्यिक शिल्पक शक्ति आ सीमा दूनू बुझबाक आधार बनैत अछि।

प्रौढ़ सामाजिक आख्यानसभमे वर्ग आ जातिक अन्तर्सम्बन्ध बहुत बेर व्यंग्य, संवाद आ सार्वजनिक घटनाक मार्फत प्रकट होइत अछि। 'गुदड़ीक लाल'मे श्रमिक परिवारक अनुभव आ शिक्षा-न्यायक प्रश्नक संग सामन्ती प्रभुत्वक द्वन्द्व अछि। 'अनठिया कुकुर'मे गाम आ नगरक अलग-अलग मनोवृत्ति परस्पर सम्बद्ध होइत अछि। 'सुजाता'

आ 'सुकन्या' स्त्रीक निर्णयक अधिकारकें विवाह, वैधव्य, परिवार आ कार्यस्थलक संस्था-सापेक्ष परिस्थितिमे देखैत अछि। 'परिवार' स्मृतिक माध्यमसँ साझा जीवनक अर्थ खोजैत अछि। ई कृति सभ सामाजिक प्रश्नक हिसाबसँ एक-दोसरसँ संवाद करैत अछि, तथापि प्रत्येकक रचनात्मक आकार आ पात्र-संरचना अलग अछि।

नन्दक सामाजिक चेतना केवल समस्या-चिह्नित करबामे नहि, समाधानक कल्पनामे सेहो सक्रिय अछि। ओ शिक्षाकें सम्मान आ अवसरक मार्ग, न्यायकें सार्वजनिक मूल्य, स्त्रीक आत्मनिर्णयकें नैतिक आवश्यकता आ पारिवारिक सहकारकें सामाजिक शक्ति मानि चलैत छथि। मुदा साहित्यिक आलोचनाकें ईहो पूछय पड़ैत अछि जे आदर्शवादी समाधान कथाक अन्तःविकाससँ कतेक स्वाभाविक रूपें निकलैत अछि। जखन नायक वा नैतिक वक्ता सहजतासँ जटिल सामाजिक गाँठ खोलि दैत अछि, तखन कथा अपन जीवनगत प्रतिरोधक कतेक अंश सुरक्षित रखैत अछि? एहि प्रश्नकें उठाएब साहित्यकारक सामाजिक उद्देश्यक अवमानना नहि, बल्कि कृतिक कलात्मक उपलब्धिक परीक्षण अछि।

'दिल्लीक पार्क' आ 'याचक के नजि' एहि समीक्षा-संकलनमे महत्त्वपूर्ण मोड़ प्रदान करैत अछि। पहिल रचनामे सार्वजनिक उद्यान आपसी अनुभव-विनिमयक मंच बनैत अछि, जकरा माध्यमसँ गामक स्मृति आ शहरी नागरिकता एक-दोसरसँ संवाद करैत अछि। दोसर रचनामे 'याचना' शब्दक नैतिक अर्थ-विस्तार भिक्षुक आ प्रतिष्ठित लाभार्थीक बीच समाज द्वारा बनाओल भेदकें प्रश्न करैत अछि। एतय कथानकक गतिसँ बेसी विचारक टकराव, संवादक लय आ व्यंग्यक धार महत्त्वपूर्ण भऽ उठैत अछि।

'महारानी कैकेयी'क पाठ मिथकीय पात्रक स्थापित दोषारोपणक पुनर्परीक्षा करैत अछि। मिथकक पुनर्व्याख्या साहित्यिक रूपें तखन महत्त्वपूर्ण बनैत अछि जखन ओ परिचित चरित्रकें नब प्रश्नक केन्द्रमे अनेत अछि। तथापि नैतिक पुनर्मूल्यांकन आ ऐतिहासिक प्रमाण एक वस्तु नहि; वैकल्पिक व्याख्याकें तर्कक आ अन्तर्विरोधक कसौटीपर जाँचब जरूरी अछि। एहि कारण एकर स्थान सामाजिक उपन्याससभक संग नहि, विचारप्रधान गद्यक अलग खण्डमे रखल गेल अछि।

कविताक रूपमे ‘काव्य सरिता’ वन्दना, भजन, नचारी, लोकगीत, सामाजिक व्यंग्य, मातृभाषा-चेतना आ पारिवारिक अनुभूतिक बहुधारात्मक प्रवाह अछि। ‘स्वर्ण-कमल’मे एहि लोकानुभूतिक दोसर रूप भेटैत अछि : बाबीक कथावाचन, नेनासभक जिज्ञासा, वनयात्रा, चमत्कार, न्याय आ क्षमाक प्रश्न। बाल-उपन्यासक रूपेँ एकर स्वायत्त विधागत स्थिति स्वीकार करब अनिवार्य अछि। प्रौढ़ कृतिसभमे शिक्षा अथवा नैतिक उपदेशक उपस्थितिसँ ओ सभ बालसाहित्य नहि भऽ जाइत अछि। विषय, कथन-दृष्टि, अनुभवक जटिलता आ पाठकीय आयुक्त भेद सुरक्षित रहबाक चाही।

एहि पुस्तकक चारि खण्ड विधा आ विचारक एही परस्पर सम्बन्धकेँ देखबैत अछि। पहिल खण्ड समाजक लघु आख्यान, दोसर खण्ड दीर्घ सामाजिक उपन्यास, तेसर खण्ड शब्दचित्र आ विचारप्रधान गद्य, आ चारिम खण्ड काव्य तथा बालकथा पर केन्द्रित अछि। प्रत्येक कृतिक विवेचन ओकर अपन पात्र, रचना-विन्यास आ भाषिक प्रविधिसँ आरम्भ होइत अछि; ओकर पश्चात् व्यापक साहित्यिक, सामाजिक आ तुलनात्मक अर्थ खुलैत अछि। ई क्रम साहित्यकारक विविध रचनाकेँ एकरूप घोषित नहि करैत, बल्कि भिन्न रचनात्मक पद्धतिक भीतर चलैत समान नैतिक आग्रहक रूप स्पष्ट करैत अछि।

पहिल खण्ड

लोकजीवन, कथा आ सामाजिक प्रतिरोध

गाम-घर . आडम्बर

ग्राम्य जीवनक नैतिक अर्थनीति, सामाजिक व्यंग्य आ बालकथात्मक प्रतिमान नन्द कुमार मिश्रक ‘गाम-घर’ (मैथिली कथा एवं निबन्ध संग्रह) ग्राम्य अनुभवक सहारे सामाजिक विषमता, मृत्यु-संस्कारक अपव्यय, जातिगत ऊँच-नीच, स्त्रीक सार्वजनिक भागीदारी, विवाह आ दहेज, धर्मक आडम्बर, चुनावी स्वार्थ तथा शोषणक विविध रूप पर प्रश्न करैत अछि। संग्रहक पन्द्रह रचना एकरूप साहित्यिक विधामे सीमित नहि अछि : आरम्भिक कथा ग्रामीण यथार्थ आ संवादक निकट छथि; मध्य भागमे सामाजिक-राजनीतिक चिंतन कथात्मक संरचनाक भीतर पैसैत अछि; अन्तक ‘उनटा चालि’,

‘घोड़ीक अण्डा’ आ ‘शेरक आतंक’मे दृष्टान्त, विनोद आ पशु-रूपकक बल अधिक अछि। एहि लेखमे मूल पोथीक अनुक्रमणिका, आरम्भिक निवेदन, रचनाक मुद्रित पाठ आ अन्तर्निहित आलोचनात्मक सूत्रक आधारपर पाठविश्लेषण कयल गेल अछि। मैथिली बाल-साहित्यक तुलनात्मक सन्दर्भमे एहि कृतिक महत्त्व केवल ओकर ‘बालकथा’ होयब नहि, अपितु एहि बातमे अछि जे लेखक प्रौढ़ सामाजिक व्यंग्यसँ बालोपयोगी दृष्टान्त धरि एक साहित्यिक सेतु तैयार करैत छथि। तथापि दीर्घ उपदेशात्मक अंश, पात्रक सीमित मनोवैज्ञानिक विकास आ किछु स्थानपर समाधानक सरल आदर्शिकरण एकर कलात्मक सीमा बनैत अछि। इतिहास-विवेचन साहित्य अकादेमीक प्रकाशन-अभिलेख, बाल साहित्य पुरस्कार-सूची आ भारतीय विद्यालयी पाठन सम्बन्धी नीतिगत दस्तावेजक संग तुलनात्मक धरातलपर आधारित अछि।

भूमिका : संग्रहक साहित्यिक स्थिति आ आलोचनाक प्रश्न

‘गाम-घर’ शीर्षक पाठककेँ स्थानविशेषक परिचित संसारमे लऽ जाइत अछि, मुदा संग्रहक कथ्य गामक सीमामे बन्द नहि रहैत। गाम लेखकक लेल एक एहन सामाजिक प्रयोगभूमि अछि जतय रीति, प्रतिष्ठा, धन, पारिवारिक आशा, धर्म, सत्ता आ न्याय परस्पर टकराइत अछि। लेखक सतहपर साधारण देखायवला घटनासँ सामाजिक प्रश्न उपजाबैत छथि : श्राद्धक भोज कतय धरि श्रद्धा अछि आ कतयसँ प्रतिष्ठा-प्रदर्शन? बरक गाछक पूजन पर्यावरण-चिन्ता आ धार्मिक रूढ़िक बीच कोन अर्थ बनबैत अछि? ग्राम-पंचायतमे स्त्रीक नेतृत्वक वास्तविक बाधा की अछि? लोकतन्त्रक भाषा आ सत्ता-व्यवहारमे कतेक अन्तर अछि?

कृतिक उपशीर्षक “मैथिली कथा एवं निबन्ध संग्रह” अछि। तँ एकरा शुद्ध बालकथा-संग्रह मानब विधागत भ्रम होयत। कथात्मक प्रसंगक संग विचारप्रधान गद्य मिश्रित अछि; एहि मिश्रणसँ सामाजिक हस्तक्षेप तीव्र बनैत अछि, यद्यपि कखनहुँ कथा स्वयं निबन्धक वाहक बनि जाइत अछि। लेखकक ‘दू शब्द’मे गाम-घरक ओझापन, जातीय भेदभाव, सामाजिक कुरीति आ चक्रचालिकेँ रचनात्मक प्रयोजनक रूपमे राखल गेल अछि। आरम्भिक मंगलकामनामे नरेंद्र झा कथाक व्यंग्यात्मकता, ‘शंकरक खोज’क

सामाजिक आशय आ अन्तक दुई रचनाक बालकथात्मकताक चर्चा करैत छथि। एहि दू परिपाठकें पाठसँ मिला देखला पर संग्रहक आन्तरिक गठन स्पष्ट होइत अछि।

एहि निबन्धक प्रश्न ई नहि जे प्रत्येक प्रसंग आधुनिक लघुकथाक कसौटीपर पूर्ण अछि कि नहि। मूल प्रश्न ई अछि जे सामाजिक सुधारक आकांक्षा साहित्यिक दृश्य, संवाद आ घटना बनिकय कतय सफल होइत अछि, आ कतय विचारक प्रत्यक्ष घोषणा बनिकय रहि जाइत अछि। बाल-साहित्यक इतिहास एहि मूल्यांकनमे एकटा तुलनात्मक कसौटी अछि; समस्त कृतिक गलत विधा-निर्धारण नहि।

कृतिपरिचय आ रचना-अनुक्रम

आवरण पर पुस्तकक नाम ‘गाम-घर’, विधा ‘मैथिली कथा एवं निबन्ध संग्रह’ आ लेखक ‘नन्द कुमार मिश्र’ मुद्रित अछि। आरम्भिक प्रकाशकीय विवरणमे श्रीमती अमल देवी आ श्रीमती शान्ता भूषण (भीखनपुर, भागलपुर) केर नाम, तथा मुद्रणमे आशा प्रिन्टिंग प्रेस, तिलकामांझी, भागलपुर अंकित अछि। लेखकक ‘दू शब्द’ पर २६.११.०४ केर तिथि अछि; ई लेखकक निवेदनक तिथि अछि, पुस्तकक निश्चित प्रकाशन-वर्षक पर्याय नहि। पश्चावरण पर लेखकक पूर्व प्रकाशित ‘विद्यार्थी’क २५.०४.२००४ केर उल्लेख भेटैत अछि। एहि कारण ‘गाम-घर’क प्रकाशन-वर्षकें ओहि मितिसँ अनुमानित कऽ निश्चित घोषित करब उचित नहि।

मूल अनुक्रमणिका कुल पन्द्रह रचना दर्शबैत अछि, जे मुद्रित कथा-पृष्ठ १ सँ ९९ धरि पसरल छथि। रचनाक क्रम आ पृष्ठ-सीमा निम्न प्रकार अछि। एहि क्रमसँ ईहो स्पष्ट होइत अछि जे अन्तक तीन रचना विशेष रूपसँ दृष्टान्तप्रधान अछि।

क्रम	रचना	मुद्रित पृष्ठ
1	बाबाक भोज	१-७
2	डबडबायल आँखि	८-१४
3	भोरक सपना	१५-२२

क्रम	रचना	मुद्रित पृष्ठ
4	बरक गाछ	२३-२८
5	बुटक साग	२९-३६
6	शंकरक खोज	३७-४७
7	फेकनी माय	४८-५५
8	कोढ़	५६-६३
9	चक्र-चालि	६४-६९
10	स्वाभिमान	७०-७६
11	लूट-तंत्र	७७-८१
12	दण्ड	८२-८६
13	उनटा चालि	८७-९०
14	घोड़ीक अण्डा	९१-९४
15	शेरक आतंक	९५-९९

कथाकेंद्री दृष्टि : ग्राम, परिवार, धर्म आ सत्ता

संग्रहमे “गाम” कौनो अपरिवर्तनीय, निश्चिन्त सांस्कृतिक इकाइ नहि। एतय पड़ोसीक देखादेखी खर्च बढ़ैत अछि; किसानक आजीविका प्रतिष्ठाक प्रदर्शनमे व्यय होइत अछि; जाति-आधारित दूरी धार्मिक व्यवहारक आड़मे ठाढ़ रहैत अछि; स्त्री सार्वजनिक निर्णय-क्षेत्रमे प्रवेश करय चाहैत छथि; आ राजनीति गामक सम्बन्धमे विष घोलैत अछि। लेखक आर्थिक विषमताकेँ केवल आमदनीक अन्तर नहि, अपितु लोक-व्यवहारमे प्रतिष्ठा आ अधिकारक असमान वितरणक रूपमे देखबैत छथि। एहि दृष्टिसँ संग्रहक केन्द्रीय विचार ‘नैतिक अर्थनीति’ कहल जा सकैत अछि—समाज धन केना खर्च करैत अछि, कोन खर्चकेँ प्रतिष्ठा मानैत अछि आ केकर पर ओहि व्ययक भार पड़ैत अछि।

कथक प्रायः घटनाक पहिने सामान्य सामाजिक स्थिति कहैत छथि, फेर एकटा परिवार, पात्र वा संवादक सहारे तकर उदाहरण दैत छथि। एहि क्रमसँ पाठक तुरन्त मुद्दासँ परिचित भऽ जाइत छथि। मुदा एतबे संरचना बहुत बेर कथा-संकेत, प्रसंग-विकास आ पूर्वनिर्धारित निष्कर्षक रूप धऽ लैत अछि। पात्रक क्रियाक स्वतन्त्र अवकाश कम रहि जाइत अछि। एकर प्रभाव ई अछि जे पुस्तक लोकशिक्षणक रूपमे सुलभ अछि, पर गहन मनोवैज्ञानिक अन्वेषणक कसौटीपर ओकर उपलब्धि असमान अछि।

पन्द्रह रचनाक पृथक पाठविश्लेषण

‘बाबाक भोज’ : मृत्यु-संस्कार आ सामाजिक प्रदर्शन

कथा फेकू बाबाक मृत्यु-सूचनासँ खुलैत अछि आ ग्रामसमुदायक प्रतिक्रिया ओकर कथात्मक पृष्ठभूमि बनैत अछि। आरम्भे मृतकक पारिवारिक हैसियत, संसाधन आ सामुदायिक प्रतिष्ठाक संकेत देल गेल अछि। अन्तिम भागमे श्राद्धक भोजक भव्य आयोजन, व्यंजनक बहुलता, बाहरी भीड़, अव्यवस्था आ धनक क्षय पाठकक सोझाँ अबैत अछि। बाहरी वैभव आ अन्तर्निहित अपव्ययक विरोध कथा-व्यंग्यक केन्द्र अछि। महत्त्वपूर्ण ई अछि जे भोज केवल पारिवारिक घटना नहि रहैत; समाजक अदृश्य दबाव ओकर आकार तय करैत अछि। कथा प्रश्न करैत अछि जे लोकक देखादेखी कयल व्यय मृत व्यक्तिक सम्मान अछि अथवा जीवित परिवारक प्रतिष्ठा-स्पर्धा। लेखकक प्रत्यक्ष टिप्पणी कखनहुँ अन्तर्निहित व्यंग्यकेँ कम सूक्ष्म बनबैत अछि, मुदा दृश्यात्मक विवरण अर्थहीन खर्चक सामाजिक मनोविज्ञान स्पष्ट करैत अछि।

‘डबडबायल आँखि’ : स्मृति, पीढ़ी आ बदलैत संस्कार

कथावाचक पुरान गामक परिचित संस्कारक स्मरणसँ प्रसंग उठबैत छथि। लाल भैया-सँ जुड़ल सम्बन्ध आ बदलैत आचरणक तुलना कथा-भावनाक आधार बनैत अछि। शीर्षकक डबडबायल आँखि केवल करुणाक सजावटी प्रतीक नहि, बल्कि स्मृति आ वर्तमानक बीच नैतिक दूरीक सूचक अछि। एक दिशि पुरान आत्मीयता आ सामुदायिक सलंग्गताक स्मरण अछि; दोसर दिस नब सामाजिक व्यवहार पर अविश्वास आ क्षोभ।

लेखकक कथा-विधि स्मृतिमूलक अछि। अतीतक आदर्शिकरणक खतरा एतय मौजूद अछि : पुरान सामाजिक व्यवस्था स्वयं समानतामूलक छल, एहन निष्कर्ष बिना शर्त स्वीकार्य नहि। तथापि कथाक मूल संवेदना ई अछि जे सामाजिक परिवर्तनक मूल्यांकन केवल बाह्य सुविधा या वस्तुगत वृद्धि सँ नहि, आपसी सम्मान आ भावनात्मक जिम्मेदारी सँ सेहो होयबाक चाही।

‘भोरक सपना’ : जाति-व्यवस्था, पूजा आ कल्पित सामाजिक समानता रचनाक आरम्भ भोरमे देखल गेल सपनक अनिश्चितताक चर्चासँ होइत अछि। गामक ब्रह्म-पूजामे समुदायकेँ जोड़बाक प्रसंग जातीय दूरीक प्रश्न उठा दैत अछि। “सपना”क साहित्यिक सुविधा लेखककेँ एहन समानतामूलक दृश्य कल्पना करबाक अवसर दैत अछि जे जाग्रत सामाजिक यथार्थमे कठोर अवरोधसँ टकराइत अछि। एहि कारण सपना पलायन नहि, बल्कि वर्तमानक आलोचना करबाक एकटा प्रतिकल्पनात्मक उपाय अछि।

कथाक अन्ततः स्थानीय लोकक मिलिजुलि शिक्षण, वाचनालय आदि सामुदायिक प्रयत्न दिस संकेत करैत अछि। ई रूपान्तरणक सकारात्मक कल्पना अछि, मुदा ओकर सामाजिक कार्यान्वयन कतेक कठिन अछि, ओहि प्रक्रियाक जटिलता अपेक्षाकृत कम खुलैत अछि। एतय लेखक समस्या-विवेचन आ आदर्श समाजक प्रस्तावकेँ एकसंग रखैत छथि।

‘बरक गाछ’ : लोक-आस्था, प्रकृति आ पर्यावरणीय जिम्मेदारी बरक गाछ कथा-भूमिमे साधारण वनस्पति नहि : व्रत, पूजा, छाँह, विश्राम, बरसाइत आ ग्राम्य मेल-मिलापक केंद्र अछि। प्रथम चरणमे लेखक बरक गाछक सामाजिक-धार्मिक उपयोगक वर्णन करैत छथि; आगाँ संरक्षण आ सामुदायिक सहभागिताक विचार उभरैत अछि। एहि द्वैतसँ गाछक रूपक मात्र धार्मिक चिन्ह नहि, जनजीवनक सार्वजनिक स्थल बनैत अछि।

कथाक एक उपलब्धि ई अछि जे परम्पराकेँ पूर्णतः नकारि नहि दैत, बल्कि ओकर सामाजिक आ पर्यावरणीय उपयोगिता खोजैत अछि। एक सीमा ई जे पूजा-विधान आ वृक्ष-संरक्षणक सम्बन्ध अधिक विवेचित रहैत, तँ रचनाक तर्क आ गाढ़ होइत। ताहूमे गाछक आसपासक सामाजिक दृश्य गामक साझी सांस्कृतिक भूगोलक सार्थक पुनर्स्मरण करबैत अछि।

‘बुटक साग’ : शिक्षा, विवाह आ स्त्रीक विकल्प

एहि कथामे पढ़ाई जारी रखय चाहनिहार युवतीक विवाह-संबन्धी दबाव प्रमुख समस्या बनि उपस्थित होइत अछि। मायक इच्छा, समाजक राय आ विद्यार्थिनी जीवनक अधूरा रहि जाएबाक सम्भावना एक-दोसरासँ गाँथल अछि। बादक प्रसंगमे शालिनी आ वैवाहिक निर्णय पाठककेँ साधारण घरेलू प्रश्नसँ स्त्रीक स्वनिर्णय आ सम्मानक बड़ प्रश्न धरि अनैत अछि।

“बुटक साग” शीर्षक अपन ग्रामीण घरेलूपनक कारण आकर्षक अछि, मुदा कथा वास्तविक बहस शिक्षा, विवाहक समय आ निर्णयक अधिकार पर केन्द्रित करैत अछि। लेखक शिक्षा-विरोधी परम्परा पर कटाक्ष करैत छथि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ देखल जाय तँ पात्रकेँ अधिक आत्मसंवादी अवकाश देल जाय, तँ स्त्री-अनुभवक जटिलता आ स्वतंत्र व्यक्तित्व बढ़ि सकैत छल; एतय परिवर्तनक पक्ष स्पष्ट अछि, पर दृष्टिकोणक विस्तार सीमित।

‘शंकरक खोज’ : पौराणिक कथनसँ वर्गीय आ राजनीतिक प्रश्न धरि

रचना समुद्र-मंथनक पौराणिक प्रसंगसँ शुरू भऽ जहर पान करयवला शंकरक रूपक तक पहुँचैत अछि। ओकर बाद प्रश्न आधुनिक समाजक विष—भ्रष्टाचार, लूट, आर्थिक असमानता, कर्मक्षेत्रक अन्याय, श्रमिक-शोषण आ लोकतान्त्रिक संस्थाक विकार—दिस मुड़ैत अछि। एतय शंकर कौनो निष्क्रिय दैवी समाधान नहि, बल्कि सामूहिक नैतिक साहस आ आत्ममंथनक माँग बनि उपस्थित छथि।

कथाक रूप आधुनिक निबन्धात्मक व्यंग्यक निकट अछि; पौराणिक आरम्भ पाठकक स्मृति सक्रिय करैत अछि, मुदा मध्य आ अन्तमे विमर्शक विस्तार ओकर लघुकथात्मक एकाग्रताकें ढीला करैत अछि। तथापि लेखकक महत्त्वपूर्ण कथन ई अछि जे परिवर्तनक लेल बाहरी उद्धारक मात्र नहि, समाजक भीतर सक्रिय जिम्मेदार व्यक्ति चाही। एहि रचनामे ग्रामीण सीमासँ बाहर राष्ट्रीय सामाजिक चिन्ताक अभिव्यक्ति सर्वाधिक स्पष्ट अछि।

‘फेकनी माय’ : स्त्री-नेतृत्व आ पंचायतक लोकतान्त्रिक सम्भावना

फेकनी मायक गरीबी, श्रम आ लोकजीवनक व्यवहारक चित्रसँ कथा शुरू होइत अछि। घरेलू वंचना आ जीविकोपार्जनक कठिनाईक बीच ओकरा ग्राम-पंचायतक नेतृत्वमे आगाँ बढेबाक विचार बनैत अछि। कथा फेकनी मायकें दया-पात्र बनाकय नहि छोड़ैत; ओकर जनविश्वास, परिचय आ सामुदायिक समर्थनकें राजनीतिक शक्तिक स्रोत बनबैत अछि। ग्रामक शिक्षित आ सामान्य लोक मिलिकय उपेक्षित स्त्रीकें सार्वजनिक पद धरि पहुँचबय चाहैत छथि।

एहि प्रसंगक विशेष महत्त्व एहि मे अछि जे लोकतन्त्रक भाषाकें जीवित ग्रामसमुदायमे मूर्त करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। मुदा संघर्ष अपेक्षाकृत सरल बनि जाइत अछि; सत्ता-संरचनाक बाधा, जाति आ वर्गक अन्तर्विरोध, चुनावी प्रतिस्पर्धाक जटिलता आ निर्वाचित नेतृत्वक बादक प्रशासनिक प्रश्न विस्तारसँ नहि खुलैत। तथापि ई संग्रहक प्रमुख सकारात्मक कथा अछि, कारण स्त्रीक सामाजिक स्थिति परिवर्तनक केंद्र बनैत अछि।

‘कोढ़’ : दहेज, ऋण आ पारिवारिक नैतिकताक विघटन

कथा विवाहक तयारी आ परिवारक आर्थिक अपेक्षासँ सम्बन्धित अछि। कमलेश, विवाह-सम्बन्ध, मांगलिक अवसर आ धनक दबावक सहारे दहेजक सामाजिक हानि सोझाँ अबैत अछि। रचनामे दहेज केवल वस्तुगत विनिमय नहि, बल्कि विश्वासक

अपमान आ सम्बन्धक अवमूल्यन बनि जाइत अछि। शीर्षकक “कोढ़” एकटा नैतिक रूपक अछि—व्यक्ति नहि, सामाजिक लोभकें रोगक रूपमे चिन्हित करबाक प्रवृत्ति। पाठककें एहि कथा सँ ई विचार भेटैत अछि जे विवाहक गरिमा केनाकय लेनदेनक तर्कसँ भ्रष्ट होइत अछि। कथाकें उपदेशात्मक निष्कर्ष सँ अधिक पात्रसभक संकोच, भय आ आर्थिक विवशताक अन्तःसंघर्ष देल गेल रहित, तँ अनुभवक घनत्व बढ़ैत। तथापि दहेज-विरोधी तर्क ग्राम्य यथार्थक ठोस परिस्थिति सँ जुड़ल अछि।

‘चक्र-चालि’ : ग्रामीण राजनीति आ सामुदायिक विभाजन

लेखक आरम्भमे राजधानीक राजनीति आ गाम-घरक राजनीति बीच अन्तर चिन्हित करैत छथि। ग्रामक गुटबन्दी, एक-दोसरक विरोध, प्रतिस्पर्धी कर्मकाण्ड आ सामुदायिक आयोजनक राजनीति एहि निबन्धात्मक कथाक मुख्य सामग्री अछि। १९९९ केर नवाह आयोजनक प्रसंग द्वारा लेखक देखबैत छथि जे सामुदायिक धर्मानुष्ठान सेहो प्रतिष्ठा आ समूहगत प्रभुत्वक प्रतिस्पर्धा बनि सकैत अछि।

कथाक कथक स्वयं समुदाय द्वारा झेलल गेल अपमानक प्रसंग उठबैत छथि; एहि आत्मकथात्मक स्वर सँ आलोचना अधिक व्यक्तिनिष्ठ, पर साथे अधिक तात्कालिक बनैत अछि। ‘चक्र-चालि’क एक सीमा ई अछि जे स्थानीय सत्ता-संघर्षक विविध पक्ष बराबर जटिलतासँ नहि खुलैत; लेखकक नैतिक पक्ष स्पष्ट रहैत अछि। ताहूमे ई रचना बतबैत अछि जे सामाजिक विघटन केवल “बड़ राजनीति”क देन नहि, गामक भीतरक दैनिक व्यवहारमे सेहो सक्रिय अछि।

‘स्वाभिमान’ : साधारण नागरिकक प्रतिष्ठा बनाम प्रभावशाली पद

रचना परिचित व्यक्तिसँ संवादक रूपमे आरम्भ होइत अछि। अधिकारी, पुलिस, चिकित्सकीय प्रतिष्ठा आ सामान्य व्यक्ति बीच व्यवहारक विषमता कथा-क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। निषाद बाबू-सँ सम्बन्धित प्रसंग स्वाभिमानक धारणा स्पष्ट करैत अछि : मान केवल पद, सम्पत्ति वा बाहरी आदेश पालनसँ नहि, बल्कि आत्मसम्मानक अनुभूतिसँ बनैत अछि।

वाचिक कथा-विधि एतय प्रभावशाली अछि; कथक एकटा घटना सुनबैत छथि आ नायक-सदृश व्यक्तिक आत्मसम्मान पर पाठकक ध्यान केन्द्रित करैत छथि। यद्यपि समाधान एक व्यक्ति-विशेषक उदार आ दृढ़ आचरण पर निर्भर बनैत अछि, रचना सामान्य जनक गरिमाक पक्षमे दृढ़ हस्तक्षेप करैत अछि।

‘लूट-तंत्र’ : लोकतन्त्रक भाषिक विडम्बना

शीर्षक स्वयं तीक्ष्ण व्यंग्य अछि : “लोकतन्त्र”क स्थानपर “लूट-तंत्र” सत्ता आ जन-अधिकारक बीच दूरी व्यक्त करैत अछि। गांधीवादी स्वाधीनताक स्मरणसँ आरम्भ भऽ पाठ मतदान, अपराध, भ्रष्टाचार, निरंकुश प्रशासन आ जाति-आधारित राजनीतिक विभाजनक आलोचना करैत अछि। एहि रचनामे अपेक्षाकृत स्पष्ट निबन्धात्मक संरचना अछि; कथानक कम, पर नैतिक-राजनीतिक तर्कक क्रम अधिक।

लेखक मताधिकारकँ औपचारिक अधिकारसँ बेसी जन-जवाबदेहीक उपकरण मानैत छथि। कृतिक समयक राजनीतिक चेतनाक साक्ष्यक रूपमे ई महत्वपूर्ण अछि; किन्तु राजनीति-संबन्धी दावाकँ ऐतिहासिक तथ्य नहि, लेखकक समकालीन आलोचनात्मक दृष्टिकोणक रूपमे पढ़ब उचित अछि। एकर भाषा उग्र नैतिक प्रतिवादक अछि, सन्तुलित राजनीतिक सर्वेक्षणक नहि।

‘दण्ड’ : धार्मिक पुण्यक प्रदर्शन आ नैतिक न्याय

सोनू झा आ मोनू झाक विरोधी स्वभावक सहारे कथा धर्मक बाहरी आचरण आ वास्तविक करुणाक भेद उठबैत अछि। एक पात्र सरल, सहयोगी आ उदार; दोसर धार्मिक आडम्बरक संग आत्मकेन्द्रित व्यवहार करैत अछि। रचनाक अन्तमे ‘दण्ड’क धारणा प्रत्यक्ष प्रतिशोधक कथा नहि, बल्कि नैतिक आ आध्यात्मिक परिणामक बोध बनैत अछि।

दुइ विपरीत पात्रक व्यवस्था लोकदृष्टान्तक परिचित शिल्प अछि, जाहिमे पात्रसभक मानवीय जटिलता घटि जाइत अछि जाहिसँ मूल सीख स्पष्ट भऽ सकय। एहि रचनाकँ

बालोपयोगी नैतिक आख्यानक एक सीमा तक निकट मानल जा सकैत अछि; मुदा एकर न्यायबोध धार्मिक आ नैतिक धारणासँ गाँथल अछि, वैज्ञानिक सत्यापनक प्रश्न नहि।

‘उनटा चालि’ : ठगी, पंडितक सरलता आ चेतावनीमूलक दृष्टान्त

एकटा विद्वान, किन्तु व्यवहारमे सरल पंडितजीक परिचय देकर कथा शुरू होइत अछि। किछु ठग हुनक सहजता, सामाजिक प्रतिष्ठा आ परिस्थितिजन्य असावधानीक लाभ उठाबैत छथि। घटनाक क्रममे कथित बुद्धिमत्ता आ वास्तविक व्यावहारिक विवेकक बीच अन्तर स्पष्ट होइत अछि। शीर्षक “उनटा चालि” अन्यायपूर्ण चालबाजी आ उलटल परिस्थिति दुनूक संकेत बनैत अछि।

लोककथाक परिचित धोखा-प्रसंगक सहायता सँ ई कथा हास्य आ सावधानीक पाठ एकसंग दैत अछि। बालक पाठक लेल एकर आकर्षण घटनाक उलटफेरमे अछि। मुदा लेखक पात्रक वर्ग-चित्रण आ नैतिक निष्कर्षक सरल करैत छथि; एहन रचनाक सामाजिक यथार्थक प्रत्यक्ष दस्तावेज बुझबाक बदला लोक-शिक्षणक विनोदी कथा मानब अधिक उपयुक्त अछि।

‘घोड़ीक अण्डा’ : असम्भव वस्तुक कारोबार आ विश्वासक ठगी

मटुरवा नामक शैतान-स्वभावक छोड़ा आ बूढ़ व्यक्ति बीचक हास्यपूर्ण सम्पर्कसँ कथाक गति बनैत अछि। असम्भव “घोड़ीक अण्डा”क कल्पना भोले विश्वास आ धूर्त व्यापारिक इच्छाक टक्कर बनबैत अछि। पाठक आरम्भसँ जानैत छथि जे एहन अण्डा असम्भव अछि; एहि कारण कथा “की होयत?”क अपेक्षा “विश्वास केना ठगल जाइत अछि?”क रुचि जगबैत अछि।

रचनाक अन्तमे समुदाय धूर्तताक पर्दाफाशक चर्चा करैत अछि आ उपभोक्ताक सावधानीक संकेत उभरैत अछि। बाल-साहित्यक दृष्टिसँ ई संग्रहक सर्वाधिक स्वाभाविक रचना मे एक अछि : कथानक छोट, वस्तु रोचक, संवाद स्पष्ट, हास्य सहज। तथापि व्यंग्यक उग्रता आ दण्डक भाषा कखनहुँ बाल-मनक अनुकूल संवेदनशील पुनर्पाठ माँगि सकैत अछि।

‘शेरक आतंक’ : पशु-रूपकमे निरंकुश सत्ता

सघन जंगलमे शेर आ अन्य पशुक सम्बन्ध शक्तिक असन्तुलनसँ निर्धारित अछि। अत्याचारी शेरक आतंकसँ त्रस्त प्राणी सामूहिक उपाय सोचैत छथि; रचना आगाँ चुनाव, पक्ष, मत आ सत्ता-परिवर्तनक रूपकमे विकसित होइत अछि। पशु-जगतक दृश्य पाठककें आकर्षित करैत अछि, किन्तु एकर राजनैतिक आशय वयस्क समाजक सत्तासंघर्षक आलोचना सँ सोझाँ सम्बद्ध अछि।

एहि कथामे लोककथात्मक फेबल आ राजनीतिक व्यंग्यक सफल सन्धि देखबा लेल भेटैत अछि। बालपाठक पशुपात्रक संग कथा ग्रहण कऽ सकैत छथि, आ प्रौढ़ पाठक भ्रष्ट नेतृत्वक संरचनात्मक आलोचना पढ़ि सकैत छथि। अन्तमे निरंकुश सत्ता फेर रूप बदलि सकैत अछि, ई सम्भावना जटिल नैतिक प्रश्न बनबैत अछि—शासक बदलनासँ मात्र शोषण समाप्त होइत अछि कि संस्थागत सजगता सेहो चाही? एहि खुलल राजनीतिक अर्थक कारण ई रचना संग्रहक अन्तमे प्रभावशाली स्थान लैत अछि।

मूल पाठक संक्षिप्त उद्धरण : भाषिक साक्ष्य आ आलोचनात्मक अर्थ

नीचाँक उद्धरण मूल पुस्तकमे मुद्रित पृष्ठ-संख्याक अनुसार देल गेल अछि। प्रत्येक उद्धरण ओहि स्थानक स्पष्ट पठनीय मुद्रित शब्द धरि सीमित राखल गेल अछि; एतय पुनर्निर्मित, अनुमानित वा संदिग्ध पाठ उद्धृत नहि अछि। उद्धरणक पछाति देल टिप्पणी आलोचनात्मक अर्थ-विवेचन अछि, मूल पाठक हिस्सा नहि।

1. “पता लागल जे फेकू बाबा स्वर्गवासी भय गेलाह।” — ‘बाबाक भोज’, पृ. १

मृत्यु-सूचना सँ सामुदायिक सामाजिक नाटकक आरम्भ; असाधारण घटना नहि, साधारण गामक खबर व्यंग्यक द्वार खोलैत अछि।

2. “लोक कहैत अछि जे भोरक सपना सच होइत अछि मुदा हमरा विश्वास नहि भेल।” — ‘भोरक सपना’, पृ. १५

सपनाक सत्यक प्रश्न कथकक संशय आ सामाजिक यथार्थक असमानताकें एकसंग खोलैत अछि।

3. “मुदा बरक गाछक अपन अलग महत्व अछि।” — ‘बरक गाछ’, पृ. २३

एहि सानो वाक्यमे गाछक जैविक रूपसँ आगाँ लोकजीवनक सामुदायिक अर्थ निहित अछि।

4. “एकटा पंडितजी छलाह। प्रकांड विद्वान आ कर्मकाण्डी सेहो रहथि।” — ‘उनटा चालि’, पृ. ८७

व्यक्तिक विद्वत्ता आ व्यवहारिक विवेकक अन्तर पर ठग-कथाक आरम्भिक नाटकीय व्यंग्य।

5. “ई घोड़ीक अण्डा छियैक।” — ‘घोड़ीक अण्डा’, पृ. ९१

असम्भव दावाक हास्य कथामे विश्वास आ छलक सम्बन्धक मुख्य सूत्र।

6. “एकटा बहुत पैघ आ सघन जंगल छल।” — ‘शेरक आतंक’, पृ. ९५

लोककथात्मक अवकाश निर्मित कर राजनीतिक पशु-रूपकक प्रवेश।

उद्धरणक चयनक सीमा जानि-बुझि छोट राखल गेल अछि : पूर्ण प्रसंगकेँ अर्थ-व्याख्याक माध्यमसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि, विस्तृत मूल पाठ प्रतिलिपि कयल नहि गेल। एहि सँ लेखकक भाषिक स्वर, मुद्रित पृष्ठ-सन्दर्भ आ आलोचनात्मक विवेचनक बीच स्पष्ट अन्तर बनल रहैत अछि।

भाषा, वाचिकता, कथाशिल्प आ सौन्दर्यबोध

संग्रहक प्रमुख शैली प्रत्यक्ष सम्बोधन आ बोलचालक निकट भाषिक लय अछि। “हम देखलहुँ”, “ओना तँ”, “मुदा” आ “जखन कि” सन वाक्य-विन्यास कथककेँ पाठकक संग संवादमे रखैत अछि। कहावत-जेकाँ परिचित निर्णयात्मक वाक्य, ग्रामीण अर्थव्यवहारक शब्द, भोज-भातक प्रसंग, पंचायत-चुनाव आ घर-आँगनक दृश्य मिलिकय स्थानीय अनुभवकेँ भरोसेमन्द बनबैत अछि। एहि सुलभताक कारण सामाजिक प्रश्न जटिल होइतहुँ कथा दूरस्थ नहि होइत।

संरचनागत दृष्टिसँ पहिल छह-सात रचनामे घटना, स्मृति, घरेलू संवाद आ सामुदायिक व्यवहारक अनुपात बदलैत रहैत अछि। ‘शंकरक खोज’ आ ‘लूट-तंत्र’मे निबन्धक प्रधानता स्पष्ट अछि; ‘उनटा चालि’ आ ‘घोड़ीक अण्डा’मे घटनाक अनुक्रम आ विडम्बनापूर्ण मोड़ कथाक केन्द्र बनैत अछि; ‘शेरक आतंक’ पशु-रूपक द्वारा राजनीतिक सन्देश पहुँचबैत अछि। एहि विविधताकें पुस्तकक कमजोरी मात्र नहि, ओकर विधागत आत्मपरिचय ‘कथा एवं निबन्ध’क एक प्रामाणिक संकेत मानल जा सकैत अछि।

रचनाक नैतिक वाक्य बहुत बेर पाठककें अर्थ खोजबाक स्वाधीनता कम दैत अछि। पात्रक अस्पष्टता, मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व, बहुअर्थी प्रतीक आ अनिश्चित अन्त आधुनिक कथा-सौन्दर्यक जे साधन छथि, हुनक उपयोग सीमित अछि। एकर बावजूद व्यंग्यक व्यावहारिक ऊर्जा उल्लेखनीय अछि : लेखक छोटी घटना सँ सामाजिक संस्थाक आलोचना गढ़ैत छथि आ अनेक कथा पाठककें आचरणपर विचार करबा लेल बाध्य करैत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासमे कृतिक स्थान : तुलनात्मक अनुशीलन
लोककथा, पाठक-वर्ग आ विधाक समस्या

बाल-साहित्यक इतिहास लिखैत पहिल अंतर स्मरणीय अछि : बालककें पढ़ाओल जा सकयवला प्रत्येक रचना आवश्यक रूपसँ बालक लेल लिखल नहि होइत अछि। लोक-आख्यान, पशु-दृष्टान्त, नीतिकथा आ सामाजिक व्यंग्य परस्पर लग छथि, मुदा हुनका बीच पाठकक आयु, अनुभव, भाषा, कथात्मक जटिलता आ रचनाक मूल प्रयोजनक अन्तर रहैत अछि। ‘गाम-घर’ एहि अर्थमे संक्रमणशील संग्रह अछि। ‘बाबाक भोज’, ‘कोढ़’, ‘स्वाभिमान’ आ ‘लूट-तंत्र’ प्रौढ़ सामाजिक जीवनक आर्थिक-संस्थागत प्रश्न उठबैत अछि। ‘उनटा चालि’, ‘घोड़ीक अण्डा’ आ ‘शेरक आतंक’मे लोकदृष्टान्तक सहज विनोद आ रूपक बालपाठकीय प्रवेशक अनुकूल अछि।

रचनाक प्रकाशकीय आरम्भक मंगलकामना सेहो एहि भेदक पुष्टि करैत अछि : ओतय अन्तक किछु रचनाक बालकथात्मक स्वरूपक संकेत अछि, समस्त पुस्तककें बालसंग्रह

घोषित करबाक आग्रह नहि। एकर सही साहित्येतिहासिक स्थान मैथिली सामाजिक-व्यंग्यक भीतर एहन कथाभूमिक रूपमे अछि जाहिसँ बालोपयोगी दृष्टान्तक दिशा निकलैत अछि।

१९९०क दशकक बहुभाषिक बालपाठ सँ स्थानीय कथा धरि

साहित्य अकादेमीक मैथिली प्रकाशन-सूची बतबैत अछि जे १९९०क दशकसँ बाल-साहित्यक लेल मूल मैथिली कथा आ अन्य भाषाक अनुवाद दुनू दिशामे पुस्तक उपलब्ध कराओल जाइत रहल। उदाहरणार्थ जयंत नार्लीकरक विज्ञान-कथाक सुरेश्वर झा कृत अनुवाद ‘अंतरिक्ष में विस्फोट’ (१९९६), रवींद्रनाथक बाल साहित्य’क उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ कृत अनुवाद (१९९७), लीलावती भागवतक मराठी कथा ‘जंगलमे एक रात’क अनुवाद (१९९८), आ चंद्रनाथ मिश्र ‘अमर’ सम्पादित मूल मैथिली कथा-संचयन ‘कथा किसलय’ (१९९९) केर प्रकाशन-अभिलेख उपलब्ध अछि। लक्ष्मीनाथ बेजबरूआक असमिया कथासँ ‘ओ बाबा : की बउआ’ (अनुवाद गोविंद झा, २०००) सेहो एहि सूचीमे अछि।

एहि प्रकाशित अभिलेखसँ एकटा सीमित, किन्तु ठोस निष्कर्ष निकलैत अछि : मैथिली बालपाठक लेल विज्ञान, अनूदित लोककथा, रवीन्द्र-साहित्य आ मूल मैथिली रचनाक समवर्ती प्रयत्न छल। एकर तुलना ‘गाम-घर’क अन्तिम आख्यानसँ करैत काल ज्ञात होइत अछि जे मिश्रक बालोपयोगी कथा विज्ञान-आधारित जिज्ञासाक अपेक्षा लोकदृष्टान्त, नैतिक प्रश्न आ सामाजिक व्यंग्यक परम्परा सँ जुड़ैत अछि। ई तुलना प्रकाशन-वर्ष आ विधा-श्रेणी पर आधारित अछि; उपर्युक्त पुस्तकसभक सम्पूर्ण पाठक तुलनात्मक प्रत्यक्ष विश्लेषण एहि आलेखक दावा नहि।

२०१०-२०२५ : मान्यताप्राप्त बालविधाक विस्तार

साहित्य अकादेमीक आधिकारिक मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार-सूची (२०१०-२०२५) बाल-साहित्यक विधागत विविधताक प्रमाण दैत अछि। २०१०मे तारानन्द वियोगीक ‘ई भेटल तन कि भेटल’ (कथा), २०११मे मायानाथ झाक ‘जकर नारी चतुर होइ’ (कथा),

२०१२मे मुरलीधर झाक 'पिलपिलहा गाछ' (कथा), २०१३मे धीरेन्द्र कुमार झाक 'हमरा बीच विज्ञान' (निबन्ध), २०१४मे जीवकान्तक 'हमर अठन्नी खसलै वन मे' (कविता), २०१५मे रामदेव झाक 'हंसनि पान आ बजन्ता सुपारी' (उपन्यास), २०१७मे अमलेन्दु शेखर पाठकक 'लालगाछी' (उपन्यास), २०१८मे वैद्यनाथ झाक 'खिस्सा सुनु बाउ' (कथा) आ २०१९मे ऋषि बशिष्ठक 'ई फूलक गुलदस्ता' (कथा) सूचीबद्ध छथि।

बादक क्रममे २०२०मे सियाराम झा 'सरस'क काव्य, २०२१मे अनमोल झाक कविता, २०२२मे वीरेन्द्र झाक 'उड़न-छू' (कथा), २०२३मे अक्षय आनन्द 'सन्नी'क कविता 'ओल कतरा, झोल कतरा', २०२४मे नारायणजीक 'अनार' आ २०२५मे मुन्नी कामतक 'चुक्का' सम्मिलित अछि। एहि आधिकारिक नामावलीसँ एतबे सिद्ध होइत अछि जे कथा, कविता, उपन्यास, जीवनी आ विज्ञान-निबन्ध बाल-साहित्यक मान्य सृजन-क्षेत्र बनल। पुरस्कार-सूचीकेँ बाल-साहित्यक सम्पूर्ण इतिहास, गुणवत्ताक एकमात्र मापदण्ड अथवा अन्य रचनाक अनुपस्थितिक प्रमाण मानब अनुचित होयत।

'गाम-घर' एहि पछिला संस्थागत परिदृश्यसँ पहिनुका सामाजिक बोधक एकटा अनोखा सेतु प्रस्तुत करैत अछि : एके संग्रहमे वयस्क सामाजिक विवेचन आ बालसुलभ दृष्टान्तक संयोग। 'घोड़ीक अण्डा' हास्यक कारण सहज बालोपयोगी अछि, जबकि 'शेरक आतंक'क चुनावी रूपक उच्चतर आयु-वर्ग वा शिक्षकक मध्यस्थतासँ अधिक सार्थक भऽ सकैत अछि। एहि विभाजनकेँ आयु-श्रेणीकरणक शाश्वत नियम नहि, पाठकीय उपयोगिताक विवेकपूर्ण प्रस्ताव मानल जाय।

मातृभाषा, चित्र आ स्थानीय अनुभव : शैक्षिक कसौटी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, बुनियादी अवस्था (२०२२), स्थानीय संस्कृति सँ जुड़ल कथा-गीत, मातृभाषाक पाठ्य-सामग्री, आयु-अनुरूप कथाचयन, चित्र-सहायक पठन आ विविध बोलिक प्रतिष्ठाक महत्त्व पर बल दैत अछि। एहि नीतिगत कसौटीपर 'गाम-घर'क गाम-घरक परिचित भाषा आ लोकदृष्टान्त उपयोगी सामग्री बनि सकैत अछि; मुदा मुद्रित स्वरूप मुख्यतः दीर्घ गद्यक अछि, चित्रित आरम्भिक पाठक-पुस्तकक नहि।

बालपाठक लेल चुनिन्दा कथा, कठिन शब्दक सहायता, दृश्यात्मक प्रस्तुति, संवादोत्तर प्रश्न आ भिन्न आयु-वर्ग अनुकूल सम्पादन आवश्यक भऽ सकैत अछि।

उदाहरणार्थ ‘घोड़ीक अण्डा’क संक्षिप्त नाट्यरूपान्तरण पाठककें अफवाह आ प्रमाणक अन्तर बुझा सकैत अछि। ‘शेरक आतंक’ लोकतन्त्र, बहुमत आ नागरिक जिम्मेदारी पर संवादक आधार बनि सकैत अछि। ‘फेकनी माय’ लिंगसमानता आ ग्राम-शासन पर उच्चतर कक्षामे विमर्श सम्भव बनबैत अछि। एहि प्रस्तावसभकें मूल रचनाक अर्थसँ अलग नव कथ्य मानल जाय, लेखक द्वारा निर्मित शैक्षिक उपकरण नहि।

समग्र मूल्यांकन : उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक सीमा

कृतिक मुख्य उपलब्धि सरल मैथिलीमे सामाजिक अनर्थक पहिचान करब आ ओकरा कथा-स्थितिक माध्यमसँ साझा बहस बनायब अछि। ‘बाबाक भोज’मे खर्चक प्रताप, ‘भोरक सपना’मे जाति-उन्मूलनक कल्पना, ‘बुटक साग’मे विवाह-शिक्षाक द्वन्द्व, ‘फेकनी माय’मे स्त्रीक नेतृत्व, ‘कोढ़’मे दहेज-विरोध, ‘लूट-तंत्र’मे लोकतन्त्रक विडम्बना आ ‘शेरक आतंक’मे निरंकुश सत्ताक प्रतीकात्मक प्रस्तुति एक-दोसरासँ सम्बन्धित नैतिक प्रश्नक शृंखला बनबैत अछि। लेखकक सामाजिक प्रतिबद्धता इन रचनासभमे निरन्तर उपस्थित अछि।

द्वितीय उपलब्धि विधागत मिश्रण अछि। कथा, संस्मरणात्मक कथन, सामाजिक निबन्ध, धार्मिक दृष्टान्त, लोकहास्य आ पशुकथा एके संग्रहमे छथि। एहि बहुविधता सँ अलग-अलग पाठक-समूहक प्रवेश सम्भव अछि। विशेषतः अन्तिम तीन रचनामे स्थानीय कथोपकथन आ लोकप्रचलित विनोद सामाजिक व्यवस्था पर अप्रत्यक्ष टिप्पणी करैत अछि।

सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि। अनेक स्थानपर कथक घटना सँ पूर्वे निष्कर्ष बता दैत छथि; फलतः पात्रक स्वाधीनता सीमित आ कथात्मक कौतूहल क्षीण होइत अछि। सामाजिक समस्याक समाधान कखनहुँ आदर्श पात्रक सदाशयता वा सामुदायिक एकमततापर अत्यधिक निर्भर अछि। स्त्री-पात्रक समर्थक प्रस्तुति रहितहुँ ओकर आन्तरिक

अनुभवक सूक्ष्म अन्वेषण अपेक्षाकृत कम अछि। राजनीतिक विवेचनमे तीक्ष्ण व्यंग्य कतिपय स्थानपर विश्लेषणक बहुपक्षीयता पर भारी पड़ैत अछि। इएह कारण एहि संग्रहकें सैद्धान्तिक आख्यान नहि, सामाजिक हस्तक्षेपक कथात्मक पुस्तक कहब अधिक सटीक होयत।

मुद्रित पुस्तकक स्थानीय प्रकाशन-विवरण, समर्पण, मंगलकामना आ आत्मीय ‘दू शब्द’ ओकर सांस्कृतिक वातावरणक प्रमाण छथि। ई कृति केवल पृथक कथासभक योग नहि; एक लेखकक समाज-सम्बद्ध नैतिक चेतनाक संगठित अभिव्यक्ति अछि। तखन साहित्यिक इतिहासमे एकर स्थान निर्धारित करैत समय क्षेत्रीय अनुभव आ कलात्मक रूपदृष्टि दुनूकें समान महत्व देब आवश्यक अछि।

निष्कर्ष

नन्द कुमार मिश्रक ‘गाम-घर’ मिथिलाक सामाजिक जीवनक ओहि बिन्दु पर केन्द्रित अछि जतय परम्परा, आधुनिक अधिकार-बोध आ सामुदायिक नैतिकता लगातार मोलभाव करैत अछि। संग्रहक कथामे ग्राम्य अनुभव अपन स्थानीय रङ्ग बनौने रहैतो राष्ट्रीय सामाजिक समस्यासँ संवाद करैत अछि। लेखक दोसराक पीड़ा, अपव्यय, लूट, भेदभाव आ अन्यायक विरुद्ध स्पष्ट दृष्टि रखैत छथि; एहि स्पष्टताक कारण अनेक प्रसंग पाठककें विचार करबाक सीधा आमन्त्रण दैत अछि।

बाल-साहित्यक दृष्टिसँ एकर स्थान विशेष सावधानीसँ चिन्हित करबाक चाही। सम्पूर्ण ‘गाम-घर’ बाल-साहित्य नहि अछि, किन्तु ओकर भीतर बालोपयोगी दृष्टान्तक सशक्त तत्त्व उपस्थित अछि। ‘उनटा चालि’क ठगी-विवेक, ‘घोड़ीक अण्डा’क हास्यपूर्ण अविश्वसनीय दावा आ ‘शेरक आतंक’क पशु-राजनीति बालपाठकीय पाठ, उच्चतर कक्षा आ प्रौढ़ आलोचना तीनू स्तर पर अलग-अलग सम्भावना दैत अछि। एहि प्रकार ‘गाम-घर’कें मैथिली ग्राम्य सामाजिक-व्यंग्य आ लोकाधारित बालकथात्मक रूपबीचक सेतु मानब एकर सन्तुलित साहित्यिक मूल्यांकन होयत।

१.३३. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — आडम्बर

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

लोकजीवन, सामाजिक पाखण्ड आ प्रतिरोधक कथा-संरचना

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'आडम्बर' (२०१७) बीसटा मैथिली कथाक संग्रह अछि, जकर केन्द्रमे मिथिलाक गाम-समाज, पारिवारिक सम्बन्ध, श्राद्ध-भोजक प्रतिष्ठा, जातीय असमानता, चुनावी राजनीति, शिक्षा, श्रम, सम्पत्ति, धार्मिक विश्वास आ सार्वजनिक नैतिकताक प्रश्न अछि। शीर्षक-कथा सामाजिक प्रदर्शनक मनोविज्ञान खोलैत अछि; अन्य कथामे 'आरक्षण', 'लोकतंत्र', 'एतेक जाति किएक?' आ 'रेल-यात्रा' समानता तथा संस्थागत व्यवहारक बहसक रूप धारण करैत अछि। 'बेगार' वर्गीय निर्भरता, 'लाश' सम्पत्ति आ पारिवारिक स्वार्थ, 'कविक जिनगी' रचनाकारक सामाजिक स्थिति, आ 'जानि कऽ बेसाहब' धन-संग्रह तथा परोपकारक नैतिक द्वन्द्व प्रस्तुत करैत अछि। एहि अध्ययनमे मुद्रित विषय-सूची द्वारा निर्धारित बीसो कथाक क्रम आ पृष्ठसीमा मानिकय पृथक पाठविश्लेषण, कथ्य-शिल्पक परीक्षण, भाषिक स्वरूप, आलोचनात्मक सीमा तथा मैथिली बाल-साहित्यक ऐतिहासिक परिदृश्यसँ विधागत तुलनाक प्रयास कएल गेल अछि। मूल पुस्तकक सामाजिक कथा-साहित्य आ सचेत बाल-किशोर साहित्यक बीच भेदकें सुरक्षित रखैत ई लेख तर्क करैत अछि जे 'आडम्बर'क विशेषता विवादास्पद विषय पर लोकभाषी सार्वजनिक संवाद आरम्भ करब अछि; ओकर सीमा कतिपय ठाम कथाक भीतर प्रत्यक्ष उपदेशक अत्यधिक विस्तार अछि।

प्रस्तावना : शीर्षकक विडम्बना आ कथा-संग्रहक स्वर

'आडम्बर' शब्दसँ बाह्य प्रदर्शन, प्रतिष्ठा-प्रेम आ वास्तविक आचरणसँ अलग देखाबटी मूल्यक बोध होइत अछि। संग्रहक शीर्षक एतबे अर्थ तक सीमित नहि रहैत अछि। बीस कथा पढ़लापर ई शब्द सामाजिक संस्थासभक ओहि आन्तरिक विसंगतिपर टिप्पणी बनि जाइत अछि जतय धर्मक आयोजन करुणाक विकल्प बनैत अछि, चुनाव न्यायसँ कटि जाइत अछि, शिक्षा रोजगारक अनिश्चिततासँ टकराइत अछि, आ धन-संग्रह

सामाजिक दायित्वकें विस्मृत कऽ दैत अछि। कथा-संसारक पात्र सामान्यतः महानगरीय विशेषाधिकार प्राप्त नायक नहि, बल्कि गाँवक किसान, शिक्षक, निर्भर श्रमिक, गरीब परिवार, राजनीतिक आकांक्षी, कवि, रिश्तेदार आ गामक बतकहीमे संलग्न लोक छथि। एहि कथासभमे हास्य प्रायः ऊपरी परत अछि; भीतरी बुनावटमे असुरक्षा, असमानता, मानवीय अपमान आ आत्मरक्षा चलैत रहैत अछि। व्यंग्यक कथाकार पाठककें एकटा निष्कर्ष धरि पहुँचेबाक प्रयत्न करैत छथि, मुदा सँगे ई प्रश्न उठैत रहैत अछि जे साहित्यिक कथा की विमर्शक मंच मात्र अछि, अथवा ओ पात्रक विशिष्ट जीवन-स्थितिसँ स्वतन्त्र कलात्मक अनुभूति सेहो रचैत अछि। संग्रहक उपलब्धि आ सीमा दूनू एहि तनावमे निहित अछि।

पुस्तकक मुद्रित प्रकाशन-विवरण अनुसार प्रथम संस्करण २०१७ मे गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगासँ प्रकाशित भेल। मूल्य १५० टाका निर्दिष्ट अछि। पुस्तकक कथा-पृष्ठ १ सँ १६० धरि अंकित अछि। मुखपृष्ठ आ अन्दरक प्रस्तुतिमे लेखकक नाम नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' देल अछि। आरम्भिक 'दू शब्द' तथा 'लेखकीय'क पश्चात् बीस कथाक अनुक्रम आओर मुद्रित पृष्ठाङ्क देल गेल अछि। एतेक सामग्री समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि, कारण एहि आधारपर कृति कें स्वतंत्र कथा-संग्रहक रूपमे पहचानल जाइत अछि, बालकथा-संकलन वा बाल-उपन्यासक रूपमे नहि।

कथासंग्रहक रूपरेखा आ कथा-अनुक्रम

एहि विवेचनक प्राथमिक पाठ २०१७क 'आडम्बर'क मुद्रित संस्करण अछि। कथाक नाम आ आरम्भिक पृष्ठ विषय-सूचीसँ मिलाओल गेल अछि; यथास्थान जे पृष्ठाङ्क देल गेल अछि, से पुस्तकमे मुद्रित कथा-पृष्ठक अछि। कथावस्तुक विवेचनमे पात्र, प्रसंग, संवाद, अन्त आ कथन-शैलीक पारस्परिक सम्बन्धपर बल देल गेल अछि।

पाठविश्लेषणक प्रयोजन लेखकक कथित 'सन्देश' दोहरायब मात्र नहि, बल्कि कथाक तनाव, कथाकारक हस्तक्षेप, सामाजिक परिस्थिति आ रचनात्मक परिणतिक परीक्षण करब अछि।

उद्धरणक रूपमे केवल स्पष्ट पठनीय, शब्दशः पुष्ट छोट अंश ग्रहण कएल गेल अछि। जतय पाठक अक्षर-क्रम निश्चित रूपसँ स्थापित नहि भेल, ओतय कथ्यक विश्लेषण परोक्ष वर्णनक माध्यमसँ कएल गेल अछि। एहि कारण विस्तृत कथासारकेँ मूल पाठक स्थानापन्न नहि मानल जाए। विदेहक पुस्तक-सूची, बाल-साहित्य सूची, गद्य-सूची आ समानान्तर साहित्य-इतिहासक सूचीकरण तुलनात्मक सन्दर्भ प्रदान करैत अछि; केवल सूचीमे प्रविष्ट होयब ककरो पुस्तकक सम्पूर्ण अन्तर्वस्तु पढ़ि लेल जाएबाक प्रमाण नहि अछि। तँ तुलनात्मक खण्डमे सामग्रीक प्रमाण-स्तरक भेद राखल गेल अछि।

कथा-अनुक्रम आ मुद्रित पृष्ठसीमा

क्रम	कथाक शीर्षक	मुद्रित पृष्ठ
1	आडम्बर	1-6
2	रोपल गाछ बबूर	7-15
3	पश्चाताप	16-23
4	ओझा लेखें गाम बताह	24-28
5	आरक्षण	29-36
6	लोकतंत्र	37-46
7	रेल-यात्रा	47-52
8	एतेक जाति किएक?	53-65
9	लाश	66-76
10	हर्ट एटैक	77-84
11	बेगार	85-91
12	परी-कथा	92-103
13	कुकुरुक नाडरि	104-113

क्रम	कथाक शीर्षक	मुद्रित पृष्ठ
14	लति	114-123
15	कविक जिनगी	124-132
16	उद्यान	133-137
17	नरकक यात्रा	138-144
18	संकेत	145-150
19	अरजल भोग	151-155
20	जानि कऽ बेसाहब	156-160

स्रोत : नन्द कुमार मिश्र 'नन्द', आडम्बर, कथा-क्रम; अन्तिम पृष्ठक निर्धारण अगिला कथाक आरम्भ तथा अन्तिम कथा-पृष्ठ १६०क आधारपर।

संग्रहक कथा-दृष्टि : लोकवृत्त, संवाद आ व्यंग्य

‘आडम्बर’क कथा-परिसरकेँ तीन परस्पर गुँथल वृत्तमे देखल जा सकैत अछि। पहिल वृत्त गामक पारिवारिक-सामाजिक व्यवहार अछि, जतय श्राद्ध, भोजन, प्रतिष्ठा, रोग, रिश्तेदारी, विवाह आ मृत्युसँ जुड़ल प्रश्न उपजैत अछि। दोसर वृत्त सार्वजनिक संस्थाक अछि, जतय आरक्षण, चुनाव, जाति, शिक्षा, रेलयात्रा आ वेतनभोगी पेशाक अनुभव प्रवेश करैत अछि। तेसर वृत्त दृष्टान्त तथा नैतिक कल्पनाक अछि, जतय परी-कथा, नरक-यात्रा, कविक स्थिति आ धन-पुण्यक तर्क बहस बनैत अछि। ई विभाजन कठोर नहि, किएक तँ परिवारक भीतर सत्ता अछि आ सार्वजनिक व्यवस्थाक भीतर निजी स्वार्थ। लेखकक बल संवादपर अछि। पात्र अकसर प्रश्न उठबैत छथि, प्रतिपक्ष तर्क दैत अछि, आ घटना धीरे-धीरे विचार-विनिमयमे रूपान्तरित होइत अछि। एहि शिल्पक सामाजिक लाभ ई जे जाति, शोषण, गरीबी वा धार्मिक विश्वास सन मुद्दा पाठकसँ दूर नहि रहैत अछि। एकर कलात्मक जोखिम सेहो अछि : पात्रक व्यक्तिगत आवाज कतहु-कतहु लेखकक प्रत्यक्ष भाषणमे विलीन होइत देखाइत अछि। कथाकार जखन पात्रक मौन,

संकोच, भय, लालच आ असमर्थताकें घटना द्वारा व्यक्त करैत छथि, तखन कथा अधिक प्रभावकारी बनैत अछि; जखन ओ समाधान पूर्ण वाक्यमे घोषित कऽ दैत छथि, तखन अर्थक बहुलता सीमित होइत अछि।

मैथिली लोक-उक्ति, गामक रोजमर्रा व्यवहारक शब्द, सहज विनोद, सम्बोधन आ विनम्र-अविनम्र बोलचाल संग्रहक भाषिक पहचान अछि। भाषा मुख्यतः कथ्यकें पाठक लग अनबाक माध्यम अछि, सजावटी संस्कृतनिष्ठ गद्य नहि। तथापि राजनीति आ न्याय सम्बन्धी कथामे नीतिगत विचारसँ जुड़ल आधुनिक शब्दावली लोक-प्रयोगक संग-संग चलैत अछि। एहि मिश्रणमे समकालीन समाजक परिवर्तित अनुभव दखल दैत अछि।

बीस कथाक पृथक पाठविश्लेषण

आडम्बर

संग्रहक पहिल कथा श्राद्धक आयोजनसँ आरम्भ होइत अछि। कथाक आरम्भिक पंक्ति —“आइ सांकतेक बाबाक श्राद्ध थिकन्हि ।” (पृ. १)—सम्पूर्ण सामाजिक प्रसंग तुरन्त स्थापित करैत अछि। मुदा कथा शोकक निजत्वसँ बेसी श्राद्धक सामाजिक दृश्य, अतिथि-संख्या, भोज, श्रम आ प्रतिष्ठाक सन्तुलनपर केन्द्रित अछि। सांकतेक पारिवारिक आयोजन गामक सामूहिक निगाहक अधीन भऽ जाइत अछि; ‘सभकें देखाबय’ आ ‘काज करय’क बीच दूरी बढ़ैत अछि।

एहि कथाक वास्तविक व्यंग्य कर्मकाण्डक अस्तित्वपर नहि, ओकर प्रदर्शनप्रिय सार्वजनिक रूपपर अछि। बड़का आयोजन मानवीय सहानुभूतिक प्रमाण नहि बनि पबैत अछि। बाप-मायक स्मृतिसँ जुड़ल संस्कार जखन सामाजिक प्रतियोगिता बनैत अछि, तखन मूल्यक उलटफेर देखाइत अछि। कथाक अन्त प्रश्नोत्तर आ तर्कमार्फत आडम्बरक विकल्प सोचबाक आग्रह करैत अछि। ई कहानी शीर्षक-निर्धारणक कारण संकलनक व्याख्यात्मक प्रवेश-द्वार अछि, मुदा कतिपय विस्तृत वार्तालाप कथा-गतिकें धीमा सेहो करैत अछि।

रोपल गाछ बबूर

कथाक आरम्भमे भान आ हुनकर पत्नी रीता गामक सहानुभूतिक प्रतीक्षामे छथि। पारिवारिक अन्याय आ सामाजिक व्यवहारक बीच फँसल व्यक्ति सभक छवि एहि प्रसंगमे उभरैत अछि। ‘रोपल गाछ बबूर’ मुहावरात्मक शीर्षक अछि : अपन कएल निर्णय, पूर्व व्यवहार आ ओकर फल परस्पर जुड़ैत अछि। किएक तँ कथा सामाजिक मूल्यांकनक वातावरणमे घटित होइत अछि, एकरा केवल निजी ‘गलतीक दण्ड’ मानब पर्याप्त नहि।

कथामे आत्मनिर्णय, सामाजिक दायित्व आ सम्बन्धक परिणामक बीच सम्बन्ध पर विचार कएल गेल अछि। कथा जखन पुरान निर्णयक स्मरण आ वर्तमान असहायताकें जोड़ैत अछि, तखन नैतिकता उपदेशक अपेक्षा जीवनक अनुभव बनैत अछि। अन्तभागमे गाँवक ओर लौटब आ सम्बन्धक पुनर्विचारक प्रसंग कथा कें पूर्णतः दण्डात्मक बनबाक सँ रोकैत अछि। एतय विचारणीय प्रश्न ईहो अछि जे न्याय करबाक अधिकार कोना सामाजिक जमात अपना हाथमे लैत अछि, आ पीड़ित लोकक आवाज ओकर बीच कतय बचैत अछि।

पश्चाताप

‘पश्चाताप’क केन्द्रमे रोग, निर्धनता आ परिवारक अस्थिरता अछि। राघवक बीमारी, इलाजक कठिनाई, सीमित संसाधन आ अपन लोकसँ सहायता अपेक्षा करबाक बाध्यता कथा कें तत्काल सामाजिक धरातल प्रदान करैत अछि। गरीबी एहि कथामे कोनो अमूर्त दुर्दशा नहि, बल्कि उपचारक विकल्प घटा दैत वास्तविक परिस्थिति अछि। कथाक अन्त दिस सामाजिक सम्बन्ध आ अतीतक व्यवहारक जाँच महत्वपूर्ण होइत अछि। पछतावाक भाव मात्र व्यक्तिगत मनःस्थिति बनि नहि रहैत; ओ सहायता, दायित्व आ सामाजिक उपेक्षाक आलोचनासँ जुड़ैत अछि। कथाकारक सहानुभूति पीड़ित परिवारक संग अछि, मुदा आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे व्यक्तिगत पश्चातापसँ इलाज, जीविका आ सामाजिक सुरक्षा सन संरचनागत समस्याक समाधान कतेक सम्भव

अछि। साहित्यिक प्रभाव ओतय बेसी अछि जतय पात्रक असुरक्षा संवादक तुलनामे ठोस घटना द्वारा प्रकट होइत अछि।

ओझा लेखें गाम बताह

ई कथा गामक सार्वजनिक विवेक आ राजनीतिक उपहासक तीक्ष्ण उदाहरण अछि। शीर्षकमे ‘ओझा’ आ ‘गाम बताह’क लोकप्रचलित कथन सामूहिक निर्णायक असंगतिपर व्यंग्य बनि जाइत अछि। ग्रामीण समाजक संवादमे प्रतिनिधित्व, वोट, नेता आ उपयोगिताक प्रश्न उठैत अछि। पात्र सार्वजनिक व्यवस्था सम्बन्धी जिज्ञासा राखैत छथि; व्यंग्य केवल व्यक्तिगत मूर्खतापर नहि, बल्कि सामूहिक राजनीतिक विवशतापर सेहो पड़ैत अछि।

कथाक संवाद-प्रणाली लोकमज्ज सन अछि, जतय एक प्रश्न दोसर प्रश्नकें जन्म दैत अछि। एहि तकनीकसँ पाठककें गामक वाद-विवादक अनुभूति होइत अछि। सीमा ई जे राजनीतिक प्रतिपादन आ कथा-घटनाक अनुपात कतिपय ठाम असन्तुलित अछि। तइयो कथा गामकें ‘राजनीतिसँ दूर’ मानबाक सरलीकृत धारणाकें नकारैत अछि : ग्रामीण लोक राजनीति बुझैत, ओकर व्यवहारिक प्रतिफल भोगैत आ आलोचना सेहो करैत छथि।

आरक्षण

‘आरक्षण’मे सामाजिक पिछड़ापन, न्याय, अवसर आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न ग्राम्य वार्तालापक ढाँचामे सोझाँ अबैत अछि। कथा आरक्षणकें केवल सरकारी नियमक घोषणाक रूपमे नहि, बल्कि बराबरीक अलग-अलग समझक टकरावक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। पात्रक प्रश्न संकेत दैत अछि जे ‘न्याय’क एकटा रूप ऐतिहासिक वंचना दूर करब अछि, तऽ दोसर रूप वर्तमान प्रतिस्पर्धा आ योग्यता सम्बन्धी आशंका। एहि द्वन्द्वसँ कथा समकालीन सामाजिक मानसिकताक दस्तावेज बनैत अछि।

समाजनीतिक प्रसंगक कारण आलोचनामे जरूरी अछि जे पात्रक कथनकें स्वतः लेखकक प्रमाणित निष्कर्ष नहि मानल जाए। तर्कक खण्ड आ चरित्रक अनुभवकें

फराक रखबाक आवश्यकता अछि। कथाक अन्तमे प्रतिनिधित्व आ जनहितक प्रति जे जोर देखाइत अछि, से लोकतान्त्रिक विमर्शक संकेत अछि। मुदा वास्तविक वंचनाकें व्यक्तिगत उदाहरणसँ बेसी व्यापक ऐतिहासिक सन्दर्भ चाही; एतय कथाक विवेचनात्मक महत्व ओकर समाधानसँ बेसी प्रश्नोत्तरीमे निहित अछि।

लोकतंत्र

‘लोकतंत्र’क आरम्भ रोजमर्रा हताशा व्यक्त करैत एक पात्रक कथनसँ होइत अछि (पृ. ३७)। एक आम आदमीक कष्ट, रोजी-रोटीक अनिश्चितता आ जनप्रतिनिधिक दूरिक बीच लोकतन्त्रक अर्थ पूछल जाइत अछि। लोकतन्त्र एतय केवल मतदानक नाम नहि, बल्कि नागरिकक जीवनमे न्याय, सम्मान आ व्यवहारिक अधिकारक उपलब्धतासँ परखल गेल अछि।

एहि कथामे सत्ता-विमर्शक भाषा गामक लोकबोलीसँ मिलि जाइत अछि। पात्रसँ पात्रक संवाद प्रशासनिक भाषा पर जनभाषाक प्रतिक्रिया जकाँ काज करैत अछि। अन्तिम खण्डमे आर्थिक निर्भरता आ प्रतिनिधित्वक सम्बन्ध उभरैत अछि। कथा समानताक आदर्श आ अभावग्रस्त जीवनक वास्तविकता बीचक विरोधकें तीखा करैत अछि। एकर विचारात्मक विस्तार शक्ति अछि, मुदा अति दीर्घ तर्क-प्रसंग पाठकीय तनाव कम करबाक जोखिम सेहो रखैत अछि।

रेल-यात्रा

‘रेल-यात्रा’मे आरक्षण, यात्रा, सहयात्री आ सार्वजनिक सेवाक व्यवहार एकत्र होइत अछि। सीट, अधिकार आ सुविधा जकाँ सामान्य वस्तु ग्रामीण यात्रीक अनुभवमे सामाजिक प्रतिष्ठा आ प्रशासनिक व्यवहारक प्रश्न बनि उठैत अछि। रेलक डब्बा एक लघु सार्वजनिक समाज अछि, जतय भिन्न अवस्था, वर्ग आ सोचक लोक अल्प समय लेल एक-दोसरसँ भिड़ैत छथि।

कथाक मुख्य विशेषता स्थानक गतिशीलता अछि। गामक स्थिर बतकहीक स्थानपर यात्राक आकस्मिकता तर्कक अवसर प्रदान करैत अछि। मुदा चर्चा बारम्बार नीतिगत

विचार दिस मुड़ैत अछि, तें रेलक दृश्य, ध्वनि आ शारीरिक असुविधाक कलात्मक सम्भावना पूरा विस्तार नहि पबैत। एतय कथाकारक अभिप्राय सार्वजनिक नियम आ वास्तविक व्यवहार बीचक फाँक देखेबाक अछि, आ कथा यात्रा केँ सामाजिक परीक्षणक माध्यम बनबैत अछि।

एतेक जाति किएक?

संग्रहक अपेक्षाकृत दीर्घ कथामे जातिक आधार, विभाजन, सामाजिक सम्मान आ मनुष्यता सम्बन्धी तर्कक विस्तार अछि। प्रश्नवाचक शीर्षक स्वयं पाठकसँ संवाद करैत अछि। कथा जातिक संख्या मात्र नहि गनैत, बल्कि लोक-व्यवहारमे ‘हम’ आ ‘ओ’क विभाजन कोना दृढ़ होइत अछि, से बुझबाक प्रयत्न करैत अछि। जनजीवनक सन्दर्भमे सम्मान तथा सामाजिक दूरीक प्रश्न स्पष्ट होइत अछि।

अलग-अलग पात्र जाति सम्बन्धी सामाजिक धारणाक तर्क प्रस्तुत करैत छथि। ई पाठकेँ तत्कालीन विवादक भाषिक दस्तावेज बनबैत अछि, मुदा कथाक प्रत्येक विचारकेँ ऐतिहासिक तथ्यक स्थापित रूप मानब जोखिमपूर्ण होयत। वैज्ञानिक समाज-अध्ययनक दृष्टिसँ जाति श्रम-विभाजनक सरल परिणति मात्र नहि; सत्ता, जन्माधारित पदानुक्रम आ बहिष्कारक संस्था सेहो अछि। कथा जखन एकता आ पारस्परिक सम्मानक ओर मुड़ैत अछि, तखन ओकर नैतिक आकांक्षा स्पष्ट होइत अछि; कथा-वस्तुक विशिष्टता ओहि विचारक पृष्ठभूमिमे देखल जाए।

लाश

‘लाश’ शीर्षक तात्कालिक रूपसँ मृत्युक संकेत दैत अछि, मुदा कथा जीवित लोकक व्यवहारक परीक्षण बनि उठैत अछि। आरम्भमे जर्मीदारी पृष्ठभूमिक कुमार साहेब, परिवार, सम्पत्ति आ सामाजिक सम्बन्धक उल्लेख अछि। मृत्यु नातेदारीक नैतिकताकेँ सहज बनबैत अछि—ई अपेक्षा कथा क्रमशः तोड़ैत अछि। पारिवारिक दायित्व आ सम्पत्तिक आकर्षणक बीच अन्तर्विरोध बढ़ैत जाइत अछि।

अन्तिम खण्डमे मृतदेहक उपस्थिति आ जीवन्त सम्बन्धक शिथिलता व्यंग्यक अत्यन्त तीखा बिन्दु बनैत अछि। देहक प्रति सम्मान जतय आवश्यक अछि, ततय व्यक्तिक जीवनकालीन सम्बन्ध आ उत्तराधिकारक स्वार्थ अधिक मुखर भऽ उठैत अछि। ‘लाश’क महत्त्व एहि असहज बिम्बमे अछि : मृतक मात्र वस्तु नहि, ओ परिवारक मूल्य-परीक्षाक मौन केन्द्र बनि जाइत अछि। नैतिक कथन सापेक्षतः स्पष्ट अछि, मुदा दृश्यात्मक विडम्बना ओकर अपेक्षाकृत स्थायी कलात्मक उपलब्धि बनैत अछि।

हर्ट एटैक

एहि कथामे मनोहर बाबू नामक विद्यालय-सम्बद्ध पात्रक जीवन, पद, आय आ परिवारक आकांक्षा सँ जुड़ल प्रसंग अबैत अछि। अंग्रेजी चिकित्सा-शब्दक शीर्षक पारम्परिक सामाजिक कथा-संसारमे आधुनिक शहरी-मध्यवर्गीय असुरक्षाक प्रवेश करबैत अछि। स्वास्थ्य, धन आ आकांक्षाक सम्बन्ध कथा-घटनाक केन्द्रमे अछि।

अन्त दिस आकस्मिक हृदयाघातक प्रभाव जीवनक योजनासभकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। प्राप्ति आ संचयक परिमाण जीवनपर नियंत्रणक आश्वासन नहि दऽ पबैत—ई बोध कथा केँ नैतिक व्यंग्यक दिशा दैत अछि। रचनात्मक स्तरपर आकस्मिक परिणति प्रभावशाली अछि; मुदा यदि घटना मात्र नैतिक ‘दण्ड’ बुझल जाए तँ रोग आ मृत्यु सम्बन्धी जटिल मानवीय अनुभव सरलीकृत भऽ सकैत अछि। कथा पढ़ैत एहि दूनू सम्भावनाक बीच फराक राखब आवश्यक अछि।

बेगार

‘बेगार’क आरम्भे व्यवस्था आ वास्तविकताक अन्तर रेखांकित करैत अछि : “आइ-काल्हि सरकारी नियमक मुताबिक केओ व्यक्ति बेगार अर्थात् बंधुआ मजदूर नहि राखि सकैत अछि।” (पृ. ८५)। अगिला घटनामे ग्राम्य सामर्थ्यवान परिवार आ निर्भर श्रमिकक जीवन-सम्बन्धक चित्र अछि। औपचारिक नियम लागू होयबाक घोषणा आ सामाजिक निर्भरता समाप्त भऽ जएबाक बीच जे अन्तर अछि, कथाक तनाव ओहि ठाम सँ जन्मैत अछि।

ई कथा विशेष महत्त्वक अछि कारण एहिमे शोषण मात्र कूर मालिकक मनोवृत्ति नहि, बल्कि गरीबी, कर्ज, रोजी-रोटी आ सामाजिक हैसियतक सम्बन्धसँ संचालित होइत अछि। कमला आ विश्वनाथ बाबूक परिवारसँ जुड़ल प्रसंग श्रमिकक गरिमा आ निर्णयाधिकारक प्रश्न उठबैत अछि। अन्तमे 'बेगार' शब्दक सामाजिक अर्थ कानूनी निषेधसँ बड़ होइत देखाइत अछि। कथा व्यक्तिक व्यवहारमे परिवर्तनक नैतिक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा संरचनागत शोषण समाप्त करबाक लेल व्यापक आर्थिक सम्बन्ध बदलबाक आवश्यकता अनुत्तरित रहि जाइत अछि।

परी-कथा

'परी-कथा' संग्रहक यथार्थवादी सामाजिक वृत्तसँ अलग किस्सागोईक प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। प्रारम्भमे राजा, राजकुमार आ पारम्परिक कथा-परिस्थितिक परिचय दऽ पाठकें परिचित लोककथात्मक धरातल पर लऽ जाओल गेल अछि। राजसत्ता आ राजपरिवारक प्रसंगक भीतर मानवीय इच्छा, विवेक आ सम्बन्धक परीक्षा चलैत अछि। शीर्षकमे 'परी' होयबाक कारण कथा केँ स्वभावतः बाल-साहित्यक श्रेणीमे राखि देब साहित्य-विधाक गलत पहिचान होयत। परी-कथा बाल-पाठक द्वारा सेहो ग्रहण कएल जा सकैत अछि, मुदा एकर वास्तविक विधा पाठकीय विन्यास, भाषिक स्तर, भय-आश्चर्य, नीतिक प्रस्तुति आ कथा-विस्तार पर निर्भर करैत अछि। एहि कथामे राजकुमार सम्बन्धी रूपक आ नैतिक तर्क प्रौढ़ पाठक लेल सेहो सुसंगत अछि। लोककथाक संरचनाक नव सामाजिक अर्थ निकालब एकर विशेषता अछि; अन्तक अधिक स्पष्ट विवेचन ओकर रहस्यभाव घटबैत अछि।

कुकुरुक नाडरि

शीर्षकक विचित्र, लोकबोलीपर आधारित छवि पाठकीय जिज्ञासा जगबैत अछि। कथा धनी गृहस्थ, ग्रामीण निर्भरता, सामाजिक अपमान आ मनुष्यक आचरणक प्रसंगसँ निर्मित अछि। पशुसम्बन्धी रूपकक उपयोग मानवीय व्यवहारपर चोट करबाक

परम्परासँ जुड़ल अछि; एतय 'कुकुर' बिम्ब केकरा लेल आ कोन परिस्थितिमे प्रयुक्त होइत अछि, से कथा-सन्दर्भ देखिकय बुझल चाही।

ई कथा असमान शक्ति-संबन्धक बीच व्यक्ति कोना छोट कहल जाइत अछि, आ कतेक हद धरि अपन स्वाभिमान बचबैत अछि, एहि प्रश्नकेँ उठबैत अछि। पात्रक व्यवहारक सामाजिक कारणक जांच ओकर नैतिक वर्गीकरणसँ अधिक उपयोगी अछि। अन्तमे मानवीय गरिमाक आग्रह स्पष्ट अछि; कथाकार उपहासक भाषा केँ समाजपर उलटा कऽ प्रयोग करैत छथि। तथापि पशु-उपमाक नैतिक असर पर प्रश्न करब जरूरी अछि, किएक तँ अपमानक आलोचना कखनो-कखनो अपन भाषामे अपमानक छवि पुनरुत्पन्न करैत अछि।

लति

'लति'क आरम्भमे गामक बाटपर अनियन्त्रित हँसी, असंगत व्यवहार आ मादकता-सदृश अवस्थाक दृश्य अछि। एक पात्रक शरीर आ बोली सामाजिक दृष्टिक सोझाँ तमाशा बनि जाइत अछि। किन्तु 'लति' केँ केवल व्यक्तिगत दुर्गुण मानलासँ कथा केँ सीमित करब होयत; एहि अवस्थासँ परिवार, आर्थिक दायित्व आ सामाजिक लज्जाक प्रश्न जुड़ल अछि।

विस्तारमे व्यक्ति आ परिवारक दृष्टि आमने-सामने अबैत अछि। स्वभाव बदलबाक कथा-आकांक्षा नैतिक सुधारक परिचित ढाँचा बनबैत अछि, मुदा व्यसन वा बारम्बार दोहराओल आचरणक मनोवैज्ञानिक-सामाजिक कारणक जटिलता पूरा नहि उभरैत। एतय आलोचक लेल जरूरी अछि जे व्यंग्यक पात्रकेँ केवल हास्यक वस्तु नहि मानल जाए। कथा समाजक व्यवहारक प्रमाण दैत अछि कि अनियन्त्रित लत परिवारक भीतर केना संकट बनैत अछि; करुणा आ आरोपक सन्तुलन ओकर मुख्य कसौटी अछि।

कविक जिनगी

एहि कथामे रचनाकारक सामाजिक स्थिति एक महत्त्वपूर्ण विषय बनैत अछि। आरम्भिक उपमा—“कविक जिनगी ठीक ओहि डिबिया सन होइत अछि जे दोसरकेँ तँ

प्रकाशित करैत अछि, मुदा स्वयं ओकरा चारू कात अन्हार रहैत छैक ।” (पृ. १२४)—
कथाक करुण-व्यंग्यात्मक केन्द्र अछि। प्रकाशक उपमा रचनाक लोकहित आ कविक
निजी अभावक विरोध स्थापित करैत अछि।

कथा रचनात्मक श्रमक अस्थिर सम्मान, कविक आत्मबोध आ सार्वजनिक अपेक्षाक
प्रश्न उठबैत अछि। काव्य-प्रतिभाक प्रतीकात्मक आदर्श आ रोजमर्रा आर्थिक सम्मानक
बीच तनाव साहित्यिक संस्थाक सामाजिक इतिहाससँ जुड़ल अछि। ई कथा आत्मपरक
साहित्यिक दृष्टान्त सेहो कहल जा सकैत अछि। एहि रूपमे ओकर महत्त्व केवल कविक
महिमामण्डनमे नहि, बल्कि साहित्यक सामाजिक उपयोग आ साहित्यकारक वास्तविक
जीवन बीचक असंगतिपर प्रश्न करबमे अछि। अन्तमे संस्थागत मान्यता सम्बन्धी
प्रसंगक कारण व्यक्तिगत पीड़ा सार्वजनिक प्रश्न बनैत अछि।

उद्यान

‘उद्यान’मे परिवारक निजी सम्बन्ध आ सार्वजनिक भूमिकासँ बनल तनाव अछि। पिता-
पुत्री, विवाह, धनक स्थिति आ बदलैत मानवीय समीकरणक प्रसंग कथा केँ घरेलू
भावभूमि दैत अछि। उद्यानक शीर्षक सहज रूपसँ सौन्दर्य, जीवन-विकास आ
सम्भावनाक बोध करबैत अछि; कथाक भीतर सामाजिक व्यवहारक प्रश्न एहि रमणीय
संकेतकेँ विडम्बनात्मक बनबैत अछि।

कथा आकारमे छोट अछि, तँ घटना आ परिणामक गति अपेक्षाकृत तीव्र अछि। निजी
सम्बन्धमे शक्ति आ अपेक्षाक सवाल जटिल अछि : परिवारक ‘कल्याण’क परिभाषा
ककरा अधिकारसँ बनैत अछि? कथा कतहु समाधानक रूपमे व्यक्तिक नैतिक सुधारपर
भरोसा करैत अछि। शीर्षकक प्रतीक यदि आरो बेसी दृश्यात्मक विस्तार पबितए, तँ
भावात्मक परिणाम सघन भऽ सकित छल; मुदा संक्षिप्तता सेहो कथा केँ अनावश्यक
प्रसंगसँ बचबैत अछि।

नरकक यात्रा

ई कथा धर्म, कर्मफल आ स्वर्ग-नरकक विश्वासक सहारा लऽ सामाजिक आचरणक जाँच करैत अछि। प्रारम्भिक वाक्य—“लोक कहैत अछि, मरनोपरान्त प्राणी स्वर्ग वा नरक जाइत अछि।” (पृ. १३८)—लोकविश्वासकें आधार बनबैत अछि, प्रमाणित परलोक-विज्ञान प्रस्तुत नहि करैत। कथाक रूपकीय यात्रा व्यक्ति द्वारा कएल कर्म, आत्मपरीक्षण आ धार्मिक भाषाक सामाजिक उपयोग पर व्यंग्यक सम्भावना जगबैत अछि।

नरकक दृश्य वास्तविक भूगोल नहि, नैतिक कल्पना अछि। धर्मग्रन्थीय कल्पना आ दैनिक जीवनक अनैतिक व्यवहार एक-दोसरकें आलोचित करैत अछि। अन्तमे धार्मिक स्मरण आ प्रार्थनाक ओर जएबाक संकेत कथा कें परिचित नीतिपरक अन्त दैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण ई जे डर पैदा करब आ आत्मालोचन जगायब—दूनू अलग क्रिया अछि। कथा एही द्वन्द्वमे लोकधर्मक विश्वासक संरचना उजागर करैत अछि।

संकेत

‘संकेत’मे परिचित परिवार, कवि आ व्यक्तिगत सम्बन्धक प्रसंग कथा शुरू करैत अछि। घर-परिवारक साधारण बातचीत आ संकेतक अप्रत्यक्ष भाषा मिलि कऽ कथा कें अन्तरंग बनबैत अछि। कथाकार स्पष्ट तर्कक बदलामे एतय धीरे-धीरे खुलैत स्थिति आ सम्बन्धक अनुमान पर अपेक्षाकृत अधिक भरोसा करैत छथि।

अन्तमे जीवनक अनिश्चितता, मानवीय स्नेह आ लोक-व्यवहार पर विचार उभरैत अछि। कथाक अर्थ शीर्षकसँ जुड़ल अछि—सभ महत्वपूर्ण बात घोषित वाक्यमे नहि कहल जाइत; व्यवहार सेहो संकेत दैत अछि। जँ एहि कथाकें संग्रहक राजनीतिक व्यंग्यसभक संग राखल जाए, तँ शिल्पक एक अलग सम्भावना देखाइत अछि : अपेक्षाकृत कम प्रत्यक्ष भाषण आ अधिक मनोभावात्मक तनाव। तथापि समापनमे कथाकारक नैतिक व्याख्या फेर स्पष्ट भऽ उठैत अछि।

अरजल भोग

‘अरजल भोग’मे ग्रामीण सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक उत्सव, सम्पत्ति आ सम्बन्धक व्यंग्यात्मक प्रश्न अछि। आरम्भमे चन्दाक परिवार आ विवाह-संबन्धी आकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। आयोजनक चहल-पहल बाहरी उल्लासक छवि बनबैत अछि, मुदा लोकक इरादा आ संसाधनक असमानता एहि खुशीक भीतर अलग-अलग अर्थ पैदा करैत अछि।

एहि कथाक आलोचनात्मक महत्त्व ई जे भोज आ उत्सव केवल भोजनक दृश्य नहि, सामाजिक पदानुक्रमक प्रदर्शन सेहो छथि। परिवारक समृद्धिक कल्पना, नातेदारीक अपेक्षा आ खर्चक दवाब एकत्र होइत अछि। अन्तमे विवाह सम्बन्धी निर्णय आ सजावट-विस्तारक प्रसंग समाजक मूल्यांकनक प्रश्नकेँ खुला रखैत अछि। कथा ‘आडम्बर’ शीर्षक-कथाक सामाजिक प्रदर्शनक विषयसँ अन्तरपाठीय सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, मुदा एतय बहस सामुदायिक धार्मिक कर्मसँ हटि निजी पारिवारिक उत्सवमे केन्द्रित अछि।

जानि कऽ बेसाहब

अन्तिम कथा आधुनिक दूरदर्शनक लोकप्रिय प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमक उल्लेखसँ शुरू होइत अछि : “एक दिन टी.भी. देखैत छलहुँ । कार्यक्रम छलैक ‘कौन बनेगा करोड़पति’ ।” (पृ. १५६)। धनक सम्भावित प्राप्ति एक नैतिक कल्पनाक प्रवेशद्वार बनैत अछि। कथा क्रमशः धनार्जन, भोग, दान, अतिथि-सत्कार, दीनता आ पुण्यक तर्क पर पहुँचैत अछि।

एहि संरचनामे पारम्परिक नैतिक दृष्टान्त आ आधुनिक उपभोक्तावादी आकांक्षा आमने-सामने अछि। अन्तमे सेठजी आ महात्माजीक संवादक माध्यमसँ सत्कर्म आ वास्तविक सहायताक प्रश्न उठैत अछि। नैतिक निर्णयक महत्त्व धनक प्रदर्शनसँ बेसी जीवनक व्यवहारमे ठहरैत अछि। एहि कथा केँ आडम्बर-विरोधी संग्रहक समापनक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि : जाहि मूल्यक नामपर लोक आदर चाहैत अछि, ताहि मूल्यक पालन व्यवहारमे कतेक कएल जाइत अछि? जँ कथा बहुत स्पष्ट शिक्षा सुनबैत अछि, तथापि शीर्षकसँ अन्त धरि विचारक एकता एकरा संग्रहक सुसंगत अन्त प्रदान करैत अछि।

कथा-शिल्पक समेकित मूल्यांकन

शीर्षक-व्यवस्था, विडम्बना आ वैचारिक एकता

बीस शीर्षकक एक संग अवलोकन केलासँ एक विशिष्ट द्वैध स्पष्ट होइत अछि।

‘आडम्बर’, ‘बेगार’, ‘लाश’, ‘आरक्षण’, ‘लोकतंत्र’ आ ‘संकेत’ सन शीर्षक सामाजिक संस्थाक जटिलता तथा अमूर्त विचार दिस निर्देश करैत अछि; ‘रोपल गाछ बबूर’, ‘ओझा लेखें गाम बताह’, ‘कुकुरुक नाडरि’ आ ‘जानि कऽ बेसाहब’ लोक-उक्ति आ जनभाषाक स्मृतिसँ उपजल अछि। ‘परी-कथा’ आ ‘नरकक यात्रा’ मे दृष्टान्तक सम्भावना, ‘हर्ट एटैक’ आ ‘रेल-यात्रा’मे समकालीन जीवनानुभवक स्वर अछि। ई विविधता कथाकारक विषय-क्षेत्रक विस्तार सिद्ध करैत अछि।

संग्रहक वैचारिक एकता ओहि आवर्ती प्रश्नमे अछि : सार्वजनिक रूपसँ जकरा पुण्य, न्याय, प्रतिष्ठा, विकास वा नैतिकता कहल जाइत अछि, वास्तविक जीवनमे ओकर रूप की अछि? एहि प्रश्नक कारण अलग-अलग कथा एक दोसरकेँ उजागर करैत अछि।

‘आडम्बर’ आ ‘अरजल भोग’मे उत्सवक प्रदर्शन, ‘आरक्षण’ आ ‘एतेक जाति किएक?’मे न्याय तथा सामाजिक विभाजन, ‘लाश’ आ ‘हर्ट एटैक’मे जीवन-मृत्यु आ सम्पत्ति, ‘बेगार’ आ ‘लोकतंत्र’मे अधिकार तथा जीवन-स्थितिक विरोध देखल जा सकैत अछि।

संवाद, कथावाचक आ दृश्य-निर्माण

कथाकारक प्रिय संरचना बहस अछि। पात्र प्रश्न करैत छथि, एकाधिक उत्तर अबैत अछि, तकर बाद कथा नैतिक निष्कर्षक ओर अग्रसर होइत अछि। ई मौखिक कथन-परम्पराक निकट अछि : दरबारक वाद, चौपालक गप्प, घरक नोकझोंक, यात्राक सहचर्य—सभ स्थानपर कथाक सूत्र बोलचाल होइत अछि। एहि शिल्पसँ भाषा सजीव रहैत अछि आ वैचारिक विषय सामान्य पाठक लेल ग्राह्य बनैत अछि।

मुदा अनेक कथामे बोलबैत पात्रक विशिष्ट चरित्र-विकास सैद्धान्तिक चर्चाक दबावमे दबि जाइत अछि। ‘एतेक जाति किएक?’मे विचारक विस्तृत व्याख्या, ‘आरक्षण’ आ

‘लोकतंत्र’मे राजनीतिक विमर्श, ‘जानि कऽ बेसाहब’मे धार्मिक नैतिक बहस—ई सभ केन्द्रीय कथात्मक आकर्षण छथि, मुदा कथाकारक प्रत्यक्ष पक्षधरता कखनो-कखनो पाठककेँ स्वतन्त्र व्याख्याक अवकाश कम दैत अछि। विपरीत रूपसँ ‘लाश’क मृतदेह, ‘बेगार’क आर्थिक निर्भरता आ ‘कविक जिनगी’क प्रकाश-अन्हार उपमा एहन दृश्यात्मक वा प्रतीकात्मक बिन्दु छथि जे निष्कर्ष कहबाक बदला पाठकीय अनुभव रचैत छथि।

भाषा : मैथिली गामक बोली आ सार्वजनिक विचार

मैथिली कथावस्तुमे अपन लोक-जीवनसँ जुड़ल सम्बोधन, प्रश्नवाचक विन्यास, उक्ति, तर्कक लय आ सामाजिक दूरीक सूक्ष्म स्तर विद्यमान अछि। प्रामाणिक बोलीक अनुभूति मात्र दुर्लभ शब्दक अधिकता सँ नहि, बल्कि जीवन-प्रसंग, पात्रक सामाजिक स्थिति आ संवादक लहजासँ बनैत अछि। ‘आडम्बर’मे भोज-व्यवस्था आ तिरस्कार, ‘लोकतंत्र’मे जनसत्ता पर क्षोभ, ‘बेगार’मे कानून-व्यवहारक विरोध—एहिसभमे भाषा सामाजिक ज्ञानक वाहक अछि।

जतय प्रशासन, न्याय वा शिक्षा सम्बन्धी चर्चा अबैत अछि, ओतय राजनीतिक-सामाजिक शब्दावली संग मैथिलीक लोक-लयक सहअस्तित्व एहि युगक भाषिक अवस्था देखबैत अछि। भाषिक दृष्टिसँ ई संग्रह दस्तावेजात्मक महत्त्व रखैत अछि। तथापि चरित्रानुकूल बोलीक भिन्नता आ दृश्य-विशिष्ट ध्वनि-चित्रण अधिक विकसित होइत, तँ कथानकक बहुस्तरता बढ़ितए।

स्त्री-पात्र, परिवार आ आलोचनात्मक सीमा

रीता, कमला, सीमा आदि स्त्री-पात्रक उपस्थिति समाजक निर्णायक भीतर स्त्रीक संवेदनात्मक स्थिति देखबाक अवसर दैत अछि। मुदा अनेक कथामे राजनीतिक वा सार्वजनिक नैतिक तर्कक प्रमुख वाहक पुरुष पात्र छथि। सामाजिक अन्यायक प्रश्न उठेबाक बावजूद स्त्रीक आर्थिक निर्णयाधिकार, इच्छा, वैवाहिक संस्था आ स्वतन्त्र कथात्मक दृष्टिकोणकेँ सर्वत्र समान विस्तार नहि भेटैत अछि। एहि असन्तुलनपर विमर्श

करब ग्रन्थक अस्वीकार नहि; वरन् ओकर सामाजिक यथार्थवादक आलोचनात्मक जाँच अछि।

दोसर सीमा कथाक अन्तिम वाक्यसभमे शिक्षात्मक निष्कर्षक आवृत्ति अछि। नैतिक आग्रहक अपन साहित्यिक परम्परा अछि, मुदा आधुनिक लघुकथाक महत्त्व प्रश्न खुला रखब, भावात्मक अनिश्चितता पैदा करब आ पाठककेँ विचारक सहलेखक बनयबाक क्षमता सेहो अछि। ‘आडम्बर’ इन दू प्रवृत्तिक बीच झूलैत अछि। ओकर संगति सार्वजनिक शिक्षामूलक कहानीमे अछि, मुदा सर्वोत्तम दृश्य एकरा उपदेशक सीमासँ बाहर लऽ जाइत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन

विधा-निर्धारण : सामाजिक कथा आ बाल-कथा बीचक आवश्यक भेद

‘आडम्बर’क मूल्यांकनमे एकटा बुनियादी सावधानी जरूरी अछि : लेखकक अन्य कृति ‘स्वर्ण कमल’ विदेह पोथी-सूचीमे बाल-उपन्यासक रूपमे दर्ज अछि, मुदा ‘आडम्बर’क प्रकाशन-विवरण आ विषय-सूची स्पष्ट रूपसँ एकरा कथा-संग्रह कहैत अछि। एहि तथ्यक कारण लेखकक सम्पूर्ण साहित्यकेँ ‘बाल-साहित्य’ नहि मानल जा सकैत अछि। ‘परी-कथा’ सन शीर्षक वा नैतिक कथा-रूप बाल-पाठक लेल सुलभ भऽ सकैत अछि, मुदा पाठक-वय, पाठकीय पूर्वज्ञान, कथाक संरचना, हिंसात्मक वा जटिल सामाजिक प्रसंग आ भाषाक कठिनाई सभ मिलि कऽ विधागत वर्गीकरण निर्धारित करैत अछि।

बाल-साहित्यक मूल कसौटी केवल ‘सिखेनाइ’ नहि अछि। बाल-कथा बालकक अनुभव-केन्द्र, खेल, जिज्ञासा, कल्पना, तात्कालिक दृश्य, स्वायत्त प्रश्न आ संवेदनात्मक ग्रहणशीलताकेँ स्थान दैत अछि। एक वयस्क सामाजिक कथा जँ नैतिक शिक्षा दैत अछि तँ ओ अवश्य बाल-कथा नहि भऽ जाइत। ‘आडम्बर’क आरक्षण, जाति, बंधुआ श्रम, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सम्पत्ति-संघर्ष आ धार्मिक नैतिकता-विषयक अनेक

वार्तालाप प्रौढ़ सामाजिक अनुभवक आधारपर अधिक स्पष्ट होइत अछि। एही कारण एकर बाल-साहित्यसँ सम्बन्ध 'विधागत तुलना'क अछि, प्रत्यक्ष श्रेणीकरणक नहि।

लोककथा, मुद्रित बाल-पोथी आ डिजिटल संरक्षण

मैथिली बाल-कथनक इतिहासक आरम्भिक आधार मौखिक लोककथा, नेना-गीत, घरक बुजुर्गक किस्सा, लोक-प्राणी कथा आ नैतिक दृष्टान्तक परम्परामे देखल जा सकैत अछि। आधुनिक मुद्रित बाल-पोथी एहि मौखिक सम्पदाकेँ चित्र, पाठ्यक्रम, विज्ञान, साहस-कथा, बाल-नाटक आ अनुवादक माध्यमसँ विस्तृत करैत अछि। एहि इतिहासकेँ एकल रैखिक विकास मानब उचित नहि; मौखिक, मुद्रित आ डिजिटल रूप आजुओ एक संग विद्यमान अछि।

विदेहक 'शिशु उत्सव' तथा बाल-साहित्य सूचीमे अनुवादित चित्रकथा, मौलिक बाल-कथा, बाल कविता, नाटक, विज्ञान-सम्बद्ध रचना आ उपन्यासक अनेक प्रविष्टि भेटैत अछि। एहिमे मुन्नी कामतक 'चुक्का' (बाल कथा-संग्रह), सुजीत कुमार झाक 'कोइली घूरि आउ' (बाल लघु-विहनि कथा-संग्रह), योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क 'विज्ञानक बतकही', तथा प्रीति ठाकुरक अनूदित चित्रकथा-श्रृंखला सन श्रेणी-दृष्टान्त सम्मिलित अछि। ई सूची प्रमाण दैत अछि जे वर्तमान मैथिली बाल-साहित्य एकरूप उपदेशात्मक कथामे सीमित नहि, बल्कि चित्र, विज्ञान, मंच, अनुवाद आ अलग-अलग पाठक-वयकेँ समेटैत अछि। एहि रचनाक स्वतन्त्र अन्तर्वस्तु-विश्लेषण एहि निबन्धक दायरासँ बाहर अछि; इएह तथ्य सूचीपर आधारित ऐतिहासिक तुलना आ प्रत्यक्ष पाठसमीक्षा बीचक भेद स्पष्ट करैत अछि।

नन्दक सामाजिक कथा आ 'स्वर्ण कमल'क विधागत अन्तर

विदेह पोथी-सूची 'स्वर्ण कमल'केँ नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क बाल-उपन्यास कहैत अछि, जखन कि 'आडम्बर'केँ कथा-संग्रह। लेखकक एकहि नामसँ प्रकाशित ई अलग-अलग विधागत पहिचान विशेष अर्थपूर्ण अछि। एक ओर बाल-उपन्यासमे कथा-यात्रा, आश्चर्य, बालकक कल्पना आ रचनात्मक आत्मनिर्भरता अपेक्षित रहैत अछि; दोसर ओर

‘आडम्बर’क सामाजिक कथा सभ वयस्क सामाजिक संस्थाक प्रश्नोत्तर, विवेक आ सामाजिक अनुभव पर आश्रित अछि।

‘परी-कथा’ जकाँ कृति एहि विभाजनक सीमाक्षेत्र उजागर करैत अछि। पारम्परिक राजा-राजकुमारक कथा बाल-पाठककें आकर्षित कऽ सकैत अछि, मुदा एकर भीतरक नीतिशास्त्रीय विमर्श आ सामाजिक व्यंग्य ओकर वयस्क स्तरक पुनर्पाठ सम्भव बनबैत अछि। एहि लघीलपनकें मानि कऽ सेहो लेखकक स्वीकृत बाल-उपन्यास आ सामाजिक कथा-संग्रहकें एक विधा घोषित करब उचित नहि होयत।

नीतिपरकता, बाल-दृष्टि आ नागरिक शिक्षा

‘आडम्बर’क अनेक कथामे न्याय, श्रमक सम्मान, समानता, करुणा, विवेक आ लोभक आलोचना सन प्रश्न अछि। एहि विषयसभक नागरिक शिक्षा आ किशोर पाठक्रममे निश्चित उपयोग सम्भव अछि। उदाहरणस्वरूप ‘बेगार’ श्रमिक अधिकार पर, ‘एतेक जाति किएक?’ पूर्वाग्रह पर, ‘कविक जिनगी’ रचनात्मक श्रम पर, आ ‘नरकक यात्रा’ नैतिक निर्णय पर चर्चा करबाक सामग्री दऽ सकैत अछि। मुदा पाठ्य-उपयोग आ साहित्यिक विधा एक नहि।

एकटा बालक-केंद्रित नव प्रस्तुति लेल संक्षिप्त दृश्य, वयसापेक्ष पृष्ठभूमि, जातिगत वा वर्गीय उत्पीड़नक संवेदनशील भाषिक रूप, खुला प्रश्न, सहज पात्र-परिचय, आ चित्रकथा वा नाट्यरूपान्तरणक आवश्यकता होयत। मूल कहानीक सभ नैतिक दावाकें निर्विवाद सत्यक रूपमे पढ़ेबाक बदला बच्चासँ प्रश्न पूछल जाए—ककरा संग अन्याय भेल, किएक भेल, दोसर उपाय की होइत, आ पात्र अपन निर्णय कतेक स्वतन्त्रतासँ लेलनि?—तँ ‘आडम्बर’ सामाजिक शिक्षा लेल उपयोगी सह-पाठ बनि सकैत अछि। ई सम्भावित उपयोग मूल पाठक बाल-साहित्य होयबाक दावा नहि करैत अछि।

समकालीन विदेह-सन्दर्भमे बाल-साहित्यक बहुधारात्मकता

विदेहक शिशु उत्सवमे बाल गीत, चित्रकथा, विज्ञान-कथन, लोककथा, अनुवाद, नाटक आ किशोरक रचनाक स्वतंत्र प्रविष्टि समकालीन संग्रहण-प्रक्रियाक संकेत अछि। गजेन्द्र

ठाकुरक अनेक बाल-उपन्यासक सूची, नव किशोर-कथा तथा बाल-चित्रकथाक उल्लेखसँ ई स्पष्ट अछि जे बाल-पाठकक विषयक्षेत्र विज्ञान, कल्पना, सामाजिक जीवन आ समकालीन प्रौद्योगिकी धरि बढ़ल अछि। ई प्रविष्टि साहित्य-इतिहास लिखबाक सामग्री उपलब्ध करबैत अछि; मुदा केवल सूची-संख्या सँ साहित्यिक गुणवत्ता अथवा ऐतिहासिक 'प्रथम'क दावा स्थापित नहि कएल जा सकैत।

एहि पृष्ठभूमिमे 'आडम्बर'क ऐतिहासिक स्थान सामाजिक व्यंग्यक वयस्क कथा-परम्परामे अधिक सुस्पष्ट अछि। बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर सम्बन्ध मुख्यतः साझा मौखिकता, नीतिपरक प्रश्न, लोकभाषा आ कथन-विधानक स्तरपर अछि। दोसर दिस बाल-साहित्यमे बालकक आत्मदृष्टि आ खेल-कल्पनाक जी व्यापकता चाही, से संग्रहक मूल केन्द्र नहि। ई भेद मानल जाए तँ लेखकक बहुविध रचनाशीलताक सम्यक् सम्मान सम्भव अछि।

सामाजिक इतिहासक दस्तावेज आ साहित्यिक स्वायत्तता

'आडम्बर'कें केवल नैतिक सुधारक लघु पुस्तिका कहि देब एकर साहित्यिक आयाम घटायब होयत; एकरा पूर्ण विकसित बहुस्तरीय आधुनिकतावादी कथाशिल्पक समान मानब सेहो अतिशयोक्ति होयत। ई संग्रह सामाजिक यथार्थ, व्यंग्य, दृष्टान्त आ बहसमूलक गद्यक संगमपर अछि। समाजक सामान्य चरित्रसभकें कथा-केन्द्रमे अनबाक कारण एकर दस्तावेजी महत्व अछि। पाठक ग्रामीण समाजक पाखण्ड, परिवारक निर्भरता, लोकतन्त्रक दैनन्दिन अनुभव आ साहित्यकारक जीविकाक प्रश्नसँ सामना करैत अछि।

एहि दस्तावेजीय शक्तिक संग एक आलोचनात्मक दायित्व जुड़ैत अछि : पात्रक मान्यता आ सामाजिक तथ्य अलग रखब। जातिक इतिहास, आरक्षणक प्रभाव, श्रमक कानूनी स्थिति वा चिकित्सकीय कारणक सत्यापन साहित्यिक पाठकें मात्र उद्धृत करिकय नहि भऽ सकैत। कथा विचार, अनुभव आ मूल्य-संघर्षक साक्ष्य अछि; ओ स्वयं

समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण वा विधिक प्रतिवेदन नहि। एहि सीमाबोधसँ साहित्यिक विश्लेषण आ सामाजिक अनुसंधानक सम्बन्ध अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। लोक-समाजक भीतर 'न्याय'क आकांक्षा लेखकक नैतिक केन्द्र अछि। मुदा ई न्याय कतहु व्यक्तिक सुधार, कतहु समुदायिक कर्तव्य, कतहु राजनीतिक अधिकार, कतहु परोपकारक रूप धारण करैत अछि। एहि भिन्नताकेँ एक शब्दमे समेटबाक बजाय कथाक विशेष परिस्थिति अनुसार परखब उचित अछि। 'लाश'मे करुणाक अभाव आ 'बेगार'मे आर्थिक पराधीनता एकहि नैतिक भाषासँ वर्णित होइत अछि, मुदा हुनका सामाजिक कारण एक समान नहि। एही अन्तरक आलोचनात्मक पहिचान पाठककेँ संग्रहक भीतरक विविधता समझबैत अछि।

निष्कर्ष

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'आडम्बर' मैथिली सामाजिक कथा-साहित्यक एहन संग्रह अछि जकरा केन्द्रमे सार्वजनिक सदाचारक दावा आ वास्तविक आचरणक विरोध अछि। श्राद्धक आडम्बर सँ आरम्भ भेल कथा-यात्रा पारिवारिक असमानता, जाति, लोकतन्त्र, रेल-व्यवस्था, बेगार, कविक जीवन, धार्मिक विश्वास आ धन-नैतिकता धरि पहुँचैत अछि। बीस कथाक आवर्ती सूत्र लोकजीवनक सामान्य दृश्यसँ गम्भीर सामाजिक प्रश्न उठेबाक क्षमता अछि। एहि अर्थमे शीर्षक केवल पहिल कथा नहि, सम्पूर्ण संग्रहक नैतिक व्याकरण बनि उठैत अछि।

कृतिक सर्वाधिक सशक्त उपलब्धि लोकबोलीक सहज संवाद, सामान्य पात्रक सामाजिक अनुभव आ विडम्बनाक पहचान अछि। 'लाश'क मौन मृत्यु-दृश्य, 'बेगार'क कानून आ जीवन बीचक दूरी, 'कविक जिनगी'क डिबिया-उपमा तथा 'जानि कऽ बेसाहब'क धन-पुण्यक अन्तिम बहस संग्रहक भिन्न-भिन्न रचनात्मक दिशाक प्रमाण अछि। सीमामे उपदेशात्मकता, अन्तिम नैतिक निर्णयक अधिक स्पष्टता, समाजनीतिक तर्कक दीर्घता आ स्त्री-अनुभवक अपेक्षाकृत सीमित आत्मस्वर शामिल अछि। एहि

कमजोरीक स्वीकारोक्ति ओकर सामाजिक प्रतिबद्धता घटबैत नहि; उलटे एकर कलात्मक स्थिति अधिक सटीक बनबैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलना ई निष्कर्ष पुष्ट करैत अछि जे नैतिक कथ्य होयब मात्र बाल-साहित्य होयबाक मानदण्ड नहि अछि। ‘आडम्बर’ मूलतः प्रौढ़ सामाजिक कथा-संग्रह अछि, जकर चुनिन्दा प्रसंग किशोर नागरिक-शिक्षामे पुनर्पाठ योग्य भऽ सकैत अछि; लेखकक ‘स्वर्ण कमल’ सन सूचीबद्ध बाल-उपन्यास अलग विधागत अध्ययन चाहैत अछि। एहि स्पष्ट विधा-भेदक संग ‘आडम्बर’कें मैथिली लोकजीवन, सामाजिक व्यंग्य आ संवादमूलक कथा-परम्पराक महत्वपूर्ण पाठक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

दोसर खण्ड

समाज, स्त्री-अस्मिता आ उपन्यास

गुदड़ीक लाल • अनठिया कुरुर • सुजाता • सुकन्या • परिवार

१.३४. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — गुदड़ीक लाल

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

सामन्ती वर्चस्व, स्त्री-अस्मिता, शिक्षा आ न्याय-संघर्ष

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'गुदड़ीक लाल' सामाजिक यथार्थ आ सुधारवादी आकांक्षाक संगमपर ठाढ़ मैथिली उपन्यास थिक। स्वाधीनतापूर्वक ग्रामीण परिवेशमे रखल एकर कथा भूमिहीन मजदूरक शोषण, जमीन्दारी-प्रभुत्व, पुलिस-प्रशासनक वर्गीय पक्षधरता, स्त्रीक देह आ मान-प्रतिष्ठापर अधिकार, शिक्षाक सामाजिक उपयोग, नव पीढ़ीक आत्मपहिचान आ न्यायिक हस्तक्षेपक प्रश्न उठबैत अछि। मटरू आ ओकर बेटी सुगिया एहि संघर्षक नैतिक केन्द्रमे छथि; ठाकुर जालिम सिंह आ ओकर सत्तासम्बन्धी प्रभाव सामाजिक प्रतिरोधक परीक्षा लैत अछि। कथाक उत्तरार्धमे सुरेश्वरक पहचान आ न्यायालयीय प्रकरण एहि निजी पीड़ा केँ सार्वजनिक न्याय आ सामाजिक दायित्वक प्रश्न बना दैत अछि। प्रस्तुत विवेचनमे बाइस परिच्छेदक क्रमिक पाठ, पात्रक अन्तर्द्वन्द्व, उपन्यासक समय-स्थान, भाषिक प्रविधि, स्त्री-जीवन, वर्ग-संरचना, ग्रामीण शिक्षाक राजनीति आ मैथिली सामाजिक उपन्यासक परम्परासँ तुलना सम्मिलित अछि। कृतिक उपलब्धिक संग ओकर सुधारवादी सुखान्तक सरलीकरण, पात्रसभक आदर्शीकरण आ संस्थागत न्यायसँ जुड़ल सम्भावित सीमाक सेहो परीक्षण कयल गेल अछि।

मैथिली उपन्यास; गुदड़ीक लाल; नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'; सुगिया; मटरू; जमीन्दारी; शिक्षा; स्त्री-अस्मिता; ग्रामीण समाज; सामाजिक न्याय।

प्रस्तावना : शीर्षकक विडम्बना आ सामाजिक प्रश्न

'गुदड़ीक लाल' हिन्दी-मैथिली भाषिक संसारमे प्रचलित ओहि मुहावराक रचनात्मक उपयोग थिक जाहिमे गरीबीक बाहरी आवरण भीतर छिपल मानवीय प्रतिभा आ गरिमाकेँ ढाँपि नहि सकैत। शीर्षक पहिने एकटा असमानताक संकेत दैत अछि : ककरो मूल्य ओकर धन-सम्पत्ति, कुल, भू-स्वामित्व आ बाहरी प्रतिष्ठासँ नापल जाइत अछि, मुदा

कथा ओहि मापदण्डकें प्रश्नांकित करैत अछि। उपन्यासक अन्त धरि शीर्षकक अर्थ सामाजिक पहिचान आ नैतिक स्वीकृतिक संघर्षसँ भरि उठैत अछि।

ई कृति बाल-उपन्यास नहि, सामाजिक उपन्यास थिक। एकर मूल प्रकाशकीय प्रस्तुति ‘मैथिली उपन्यास’ कहैत अछि; कथामे यौन-शोषणक संकेत, अनिच्छित सम्बन्ध, वर्ग-आधारित अपमान, राजनीतिक-सामन्ती दमन आ न्यायालयीय निर्णय सन प्रौढ़ सामाजिक प्रश्न अछि। एकरा बाल-साहित्यक कसौटीपर रखनाइ विधागत भ्रम उत्पन्न करत। हँ, शिक्षाक प्रश्न आ नव पीढ़ीक चरित्रक कारण ई उपन्यास बाल-अधिकार आ शिक्षाक समाजशास्त्र सँ सम्बन्धित शोधमे सेहो उपयोगी अछि।

लेखक अपन भूमिकामे शोषणक ऐतिहासिक वातावरण, मटरूक संघर्ष, सुगियाक जीवन-परिस्थिति आ सामाजिक परिवर्तनक विश्वास स्पष्ट करैत छथि। मुदा लेखकक घोषित उद्देश्य कें उपन्यासक अन्तिम अर्थ नहि मानल जा सकैत अछि। साहित्यिक आलोचना पूछैत अछि जे कथाक प्रसंगसभ एहि उद्देश्यकें कतेक कलात्मक विश्वसनीयता दैत अछि, आ कतय कथाकारक प्रत्यक्ष सामाजिक आशा चरित्रक स्वाभाविक गतिसँ आगू निकलि जाइत अछि।

कृतिक कालभूमि आ कथा-विधान

‘गुदड़ीक लाल’क लेखक नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ छथि। प्रकाशकीय पृष्ठपर गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगाक नाम अंकित अछि आ सहयोग-राशि १५० रुपया लिखल अछि। लेखकक वक्तव्यक अन्तमे विजयादशमी, २००८क तिथि भेटैत अछि। अतः २००८ कें लेखकीय वक्तव्यक प्रमाणित तिथि कहि सकैत छी; उपलब्ध प्रारम्भिक पृष्ठमे पृथक् प्रकाशन-संवत् स्पष्टतासँ उल्लिखित नहि अछि। कथाक अन्तिम मुद्रित पृष्ठ १४० अछि; एतय पृष्ठ-सन्दर्भ मूल मुद्रित अंकक अनुसार देल गेल अछि।

कथाक आरम्भिक समय लेखक स्पष्ट करैत छथि।

“समय आजादी सँ पूर्वक छल।” (मूल पाठ, पृ. १)

एहि वाक्यसँ उपन्यासक ऐतिहासिक वातावरण निश्चित होइत अछि, मुदा कथा-स्थल आ पात्रसभक सन्दर्भमे लेखकक अपन कथन सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। ओ लिखैत छथि जे कृतिमे पात्र, काल आ स्थान कल्पनात्मक विन्यासक अन्तर्गत अछि। एहि कारण रामगढ़ अथवा राजकीय घटनासभकेँ अभिलेखीय इतिहास मानि नहि पढ़बाक चाही; ई ऐतिहासिक संरचनासँ प्रेरित काल्पनिक समाजक आख्यान थिक। कथाक सामाजिक सत्यक परीक्षण ओकर कल्पनात्मक रचनाक भीतर करबाक चाही।

मूल कृति बाइस क्रमांकित परिच्छेदमे विकसित होइत अछि। आरम्भमे भूमिहीनता आ सत्ताक असमानता स्थापित होइत अछि; मध्यभाग सुगियाक अस्तित्व आ अपन जीवनक शर्त तय करबाक संघर्षक विस्तार करैत अछि; उत्तरार्ध शिक्षा, पीढ़ीगत उत्थान, सार्वजनिक मतभेद आ न्यायिक निष्कर्ष धरि पहुँचैत अछि।

मैथिली सामाजिक उपन्यासक परम्परामे कृतिक स्थान

आधुनिक मैथिली उपन्यासक विकासमे सामाजिक रूढ़ि, वैवाहिक संस्था, नारीक स्थिति आ स्थानीय जीवनक यथार्थ लगातार महत्त्वपूर्ण विषय रहल अछि। हरिमोहन झाक ‘कन्यादान’ (१९३३) समाजक वैवाहिक प्रथापर व्यंग्यात्मक प्रहार करैत अछि; ‘द्विरागमन’ (१९४३) ओहि परिवेशमे नारी-जीवन आ शिक्षासँ जुड़ल प्रश्न उठबैत अछि। यात्रीक ‘पारो’ (१९४६) स्त्रीक अनुभव आ पितृसत्तात्मक संरचनाक अधिक तीक्ष्ण चित्र प्रस्तुत करैत अछि। एहि कृतिसभसँ ‘गुदड़ीक लाल’क सम्बन्ध वंशपरम्परागत अनुकरणक नहि, विषयगत संवादक अछि।

प्रारम्भिक मैथिली उपन्यासपर कथाकार अशोकक विचारानुसार समाज-सुधारक आग्रह आ समकालीन जीवनक यथार्थचित्रण दुनू महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति रहल अछि। ‘गुदड़ीक लाल’ एहि दू प्रवृत्तिक संयुक्त रूप थिक। एतय वर्गीय विषमता आ जमीन्दारी दमन वास्तविकताक धरातल प्रस्तुत करैत अछि, मुदा कथाक अन्त समाज सुधारि सकबाक आशाक दिशामे बढ़ैत अछि। एही द्वन्द्वसँ एकर शिल्पक मुख्य गुण आ सीमा दुनू उत्पन्न होइत अछि।

हिन्दीक 'गोदान' (१९३६) सँ तुलना करैत काल कृषि-आधारित शोषण, कर्ज, सम्मान आ मजदूर-किसानक विवशताक समान प्रश्न सोझाँ अबैत अछि। मुदा 'गोदान'क संरचना श्रमजीवीक लगातार क्षयकें बेसी कठोर रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि; 'गुदड़ीक लाल' नैतिक-जागरण आ कानूनी हस्तक्षेपमे अधिक आशा रखैत अछि। ई तुलना कथात्मक प्रवृत्तिक अछि, प्रत्यक्ष प्रभाव अथवा स्रोत-संबन्धक दावा नहि।

फणीश्वरनाथ रेणुक 'मैला आँचल' (१९५४) सँ सेहो ग्रामीण सत्तासम्बन्ध, स्थानीय बोली आ स्वाधीनताक राजनीतिक वातावरणक स्तरपर संवाद सम्भव अछि। तथापि रेणुक बहुकेन्द्रीय अञ्चल-रचना आ 'गुदड़ीक लाल'क मटरू-सुगिया-केन्द्रित नैतिक संघर्षक संरचना अलग अछि।

कथानकक समग्र विन्यास : गामसँ अदालत धरि

रामगढ़ नामक ग्राम-परिवेशसँ उपन्यास शुरू होइत अछि। भूमिकें किछु घराना अपन अधिकारमे रखने अछि; भूमिहीन श्रमिक अपन जीविकाक लेल मजदूरी करैत अछि। गामक विद्यालय, जमीन्दारक हवेली, कचहरी, पुलिस-प्रशासन, बाजार आ बाहरक नगर कथामे अलग-अलग संस्थागत शक्ति धारण करैत अछि। मटरूक श्रम आ सुगियाक जीवन सामाजिक श्रेणीबद्धताक दुष्परिणाम भुगतैत अछि।

शासन-व्यवस्था आ सामन्ती प्रभाव एक-दोसरकें सहारा देबाक प्रवृत्ति रखैत अछि। ठाकुर जालिम सिंहक व्यवहारक कारण व्यक्तिगत असमानता सार्वजनिक अन्याय बनैत अछि। सुगियाक जीवनक निर्णयपर ओकर अपन स्वायत्तता कतेक बचल अछि— ई प्रश्न उपन्यासक सभसँ गहिर नैतिक समस्या थिक। कथानक अनेक मोड़पर सामर्थ्यहीन परिवारक असुरक्षा, जमीनक प्रश्न आ सम्मानक सामाजिक अर्थ उपस्थित करैत अछि।

आगाँक प्रसंगमे शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नतिक साधन नहि रहैत अछि। सुरेश्वरक विकाससँ पारिवारिक स्मृति आ सामाजिक निषेधक बीच नव सम्बन्ध स्थापित होइत अछि। अन्तिम भागमे निजी अपराध, सम्मान, सम्पत्तिगत अधिकार आ सार्वजनिक

निर्णय न्यायालयीय विमर्शक विषय बनैत अछि। एहि प्रवाहमे ‘गुदड़ीक लाल’क कथा सामाजिक अन्यायसँ न्याय-सम्भावनाक यात्रा बनैत अछि; मुदा न्याय भेटि गेलाक बाद सेहो अनुभवक घाव स्वतः समाप्त भऽ जाइत अछि कि नहि, ई प्रश्न आलोचनात्मक रूपेँ बचल रहैत अछि।

बाइसू परिच्छेदक पृथक पाठविश्लेषण

पहिल परिच्छेद : रामगढ़क आर्थिक संरचना आ कृतिक मूल द्वन्द्व

पहिल परिच्छेद कथाक काल, ग्राम-स्थान आ उत्पादन-सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। भूमि किछु जमीन्दारक नियन्त्रणमे अछि; खेत जोतनिहार श्रमिक स्वयं भूमिक स्वामी नहि। विद्यालयक चर्चा एहि सामाजिक असमानताक ठीक लग राखल गेल अछि। ई सन्निकटता आकस्मिक नहि देखाइत : एक दिस शिक्षा उन्नतिक सम्भावना अछि, दोसर दिस ज्ञान आ संसाधनपर सम्पन्न वर्गक नियन्त्रण अछि। आरम्भक संरचना निजी त्रासदीसँ पहिने सामूहिक शोषणकेँ स्थान दैत अछि।

एहि परिच्छेदक महत्त्व ‘समय आजादी सँ पूर्वक छल’ सन उद्धाटन-वाक्यसँ बढ़ैत अछि (पृ. १)। स्वाधीनतापूर्वक समय एकटा ऐतिहासिक सूचक अछि, मुदा गामक शोषण केवल औपनिवेशिक शासनक प्रत्यक्ष फल नहि; घरेलू सामन्ती सम्बन्ध ओकर स्वतंत्र स्रोत सेहो अछि। ई भेद सम्पूर्ण उपन्यास पढ़बाक मूल कसौटी थिक।

दोसर परिच्छेद : श्रम, आश्रय आ भयक दैनिकता

आरम्भिक घटनाक विस्तारमे श्रमिकक दिनचर्या, जीविकाक विवशता आ हवेलीक प्रभाव लगातार सोझाँ अबैत अछि। शोषण केवल वेतनक अल्पतामे नहि; श्रमिकक बोलबाक अधिकार, चलबाक स्वतन्त्रता आ अपन घर-परिवारक रक्षाक असमर्थतामे सेहो प्रकट होइत अछि। मटरूक संकट एहि वातावरणमे व्यक्तिगत बनैत अछि।

लेखक लोकव्यवहारक संवादक माध्यमसँ ई देखबैत छथि जे श्रमिक अधिकारक भाषा तुरन्त नहि गढ़ि पबैत अछि। ओकरा पहिने अपन परिवार बचेबाक उपाय खोजय पड़ैत अछि। एतय कथा वर्गीय संरचनाक घातक प्रभाव भावनात्मक धरातलपर उतारैत अछि।

तेसर परिच्छेद : परिवारक असुरक्षा आ सामन्ती हस्तक्षेप

मटरूक पारिवारिक परिस्थिति आ सुगियाक जीवनपर पड़ैत बाहरी दबाव एतय कथाक मूल सामाजिक प्रश्न बनि उठैत अछि। निर्धनता केवल अभाव नहि, दोसराक इच्छाक सोझाँ असुरक्षित होएबाक अवस्था अछि। गरीबक बेटीपर सम्पन्न लोकक दृष्टि आ अधिकार-जकाँ व्यवहार सामाजिक सम्बन्धक नैतिक विकृति उद्घाटित करैत अछि।

एहि खण्डक अध्ययनमे ‘संरक्षण’ आ ‘नियन्त्रण’क भेद आवश्यक अछि। जमीन्दार पक्ष जे आश्रय अथवा कृपा कहि सकैत अछि, निर्बल परिवार ओकरा भय, बाध्यता आ प्रतिष्ठाक जोखिमक रूपमे अनुभव करैत अछि।

चारिम परिच्छेद : कचहरी, दरोगा आ विधिक असमानता

चारिम परिच्छेदमे पुलिस आ दरोगाक भूमिका संघर्षक संस्थागत विस्तार करैत अछि। अधिकारक कार्यालय गरीबक शिकायत सुनबाक निरपेक्ष स्थान नहि रहि जाइत; ओतय पद, पहुँच आ पक्षधरता न्याय-प्रक्रिया केँ प्रभावित करैत अछि। दरोगाक सम्मुख मटरूक उपस्थिति न्याय माँगबाक अधिकार आ वास्तवमे न्याय उपलब्ध होबाक दूरी देखबैत अछि।

एहि खण्डमे कथाकारक सामाजिक दृष्टि अधिक ठोस भऽ उठैत अछि। केवल दुष्ट व्यक्ति हटला सँ व्यवस्था नहि बदलत; जखन धरि अधिकारक संस्था सबल पक्षक दबावसँ स्वतन्त्र नहि होयत, पीड़ितक स्वर असुरक्षित रहत।

पाँचम परिच्छेद : दमनक सीमा आ प्रतिरोधक तैयारी

सामन्ती सत्ता आ प्रशासनक बीच परस्पर संवादक घटनासभसँ मटरूक व्यक्तिगत संकट सामाजिक आलोचनाक रूप लैत अछि। केकर बात सुनल जायत, केकर गवाही विश्वसनीय मानल जायत आ केकर प्रतिष्ठा पहिनहि सँ स्वीकारल गेल अछि—ई प्रश्न उपन्यासक न्याय-बोधकेँ परिभाषित करैत अछि।

एहि भागमे भयक भीतर प्रतिरोधक इच्छा सेहो विकसित होइत अछि। ई प्रतिरोध घोषणाक रूपमे सदिखन नहि देखाइत; कखनो परिजनकेँ सुरक्षित रखबाक योजना,

कखनो उचित व्यक्तिसँ सहयोग माँगब आ कखनो अन्यायक कारण स्पष्ट करबाक प्रयत्न रूपेँ सोझाँ अबैत अछि।

छठम परिच्छेद : सुगियाक चेतना आ नैतिक सहमतिपर प्रश्न

छठम परिच्छेद सुगियाक आन्तरिक असुरक्षा आ ओकर परिस्थिति-बोधकेँ केन्द्रीय स्थान दैत अछि। ओ अपन चारूकात बनल शक्ति-सन्तुलन बुझबाक प्रयत्न करैत अछि। ओकर सोझाँ केवल प्रेम अथवा विवाहक सामान्य विकल्प नहि, सामाजिक बहिष्कार, पिताक असहायता आ भविष्यक जीवन-यापनक कठोर प्रश्न अछि।

एहि भागपर नारीवादी पाठ आवश्यक अछि। जे निर्णय बाहरी दृष्टिसँ स्वीकृति प्रतीत हो, ओ भय आ अभावमे लेल गेल बाध्य निर्णय सेहो भऽ सकैत अछि। सुगियाक स्थिति केँ ‘समर्पण’ कहि महिमामण्डित कयनाइ एकर मानवीय जटिलता कम करैत।

सातम परिच्छेद : सत्ता-संवाद आ आर्थिक दावेदारी

एहि परिच्छेदमे ठाकुर जालिम सिंहक प्रभाव आ सुगियाक सम्बन्धसँ उठैत अधिकार-प्रश्न स्पष्ट आकार लैत अछि। धन, जमीन आ सामाजिक प्रतिष्ठाक बलपर ककरो जीवनक निर्णय करबाक प्रवृत्ति विरोधक केन्द्र बनैत अछि। सुगिया केवल सहायता प्राप्त करबाक पात्र नहि रहि, अपन भविष्यक शर्तक विषयमे संवाद करबाक स्थिति खोजैत अछि।

कथाक अर्थ एतय सम्पत्तिक मात्र हस्तान्तरण नहि। अधिकारक नैतिक स्रोत की— उपकार, दान कि न्याय? ई भेद खुलैत अछि। जँ सम्पन्न व्यक्ति दान दैत छथि तँ शक्ति हुनक हाथमे रहि सकैत अछि; जँ निर्बलक अधिकार मानल जाइत अछि तँ सम्बन्धक मूल आधार बदलैत अछि।

आठम परिच्छेद : परिवर्तनक योजना आ अविश्वासक दीर्घ छाया

अधिकारक सम्भावित मान्यता सुगियाक आश्वस्ति तुरन्त स्थापित नहि करैत अछि। विगत अनुभवक कारण ओ अभिभावकत्व, उदारता आ राजनीतिक प्रस्तावकेँ

सावधानीसँ देखैत अछि। कथाकार संवादक लम्बा क्रम उपयोग करैत छथि; ताहिसँ निर्णयक सामाजिक भार स्पष्ट होइत अछि।

एहि स्तरपर उपन्यास 'उद्धारक' पुरुषक विचारक सीमा सेहो खोलैत अछि। समाज सुधारबाक इच्छा मूल्यवान अछि, मुदा सुधारक पहल जँ पीड़ित व्यक्तिक स्वतन्त्रता केँ न सुनय तँ न्याय फेर एकतरफा दान बनि सकैत अछि।

नवम परिच्छेद : व्यक्ति-सम्बन्धक राजनीतिक अर्थ
व्यक्तिगत भेट, आश्वासन आ अधिकार सम्बन्धी बातचित कथाक राजनीतिक स्वरूपकेँ गहिर करैत अछि। सुगियाक परिस्थिति दुष्ट-भलमानुसक साधारण विभाजनमे नहि अँटैत। एकहि व्यक्ति वा परिवारमे सहायताक सम्भावना आ वर्चस्वक स्मृति संग-संग रहि सकैत अछि।

यही कारण एतय पात्रक कथनक अपेक्षा ओकर व्यवहार अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। न्यायपूर्ण व्यवहारक कसौटी स्थायी जिम्मेदारी अछि, क्षणिक दया नहि।

दशम परिच्छेद : सामाजिक प्रतिष्ठाक नव संघर्ष
सुगियाक जीवनक सम्बन्धमे सम्मान आ सार्वजनिक मान्यताक प्रश्न समक्ष अबैत अछि। गाम-समाजमे निजी सम्बन्ध केवल निजी नहि रहैत; ओकरा जाति-कुल, स्त्रीक 'चरित्र', धन आ परिवारक इज्जतिक मापदण्डसँ देखल जाइत अछि।

एहि खण्डमे कथाक मुख्य आलोचना एहि सामूहिक दृष्टिपर अछि। समाज अपराधीक प्रभावकेँ सहि सकैत अछि, मुदा पीड़ित स्त्रीसँ निरन्तर आत्म-प्रमाण माँगैत अछि। एहन दोसर दण्डक अनुभूति कथाक स्त्री-विमर्शक महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक।

एगारहम परिच्छेद : नव पीढ़ी आ शिक्षाक सम्भावना
कथा आगाँ बढ़ैत नव पीढ़ी, शिक्षित व्यक्तिसभ आ सामाजिक बदलावक विचारकेँ प्रमुखता दैत अछि। अजय, विजय, रामेश्वर आ अन्य सहयोगी-संवादी पात्र केवल कथानक आगाँ बढ़ेबाक साधन नहि; ओ समाजक भीतर एकरूपता नहि होएबाक प्रमाण छथि। सम्पन्न परिवेशमे सेहो अन्यायक विरोध सम्भव अछि।

एहि परिच्छेदक महत्त्व व्यक्तिगत करुणाक सीमासँ बाहर निकलि सामूहिक विवेक बनबाक सम्भावनामे अछि। मुदा उपन्यासक भरोसा प्रायः किछु नेक व्यक्तिपर केन्द्रित रहैत अछि; व्यापक संस्था आ संगठित श्रमिक आन्दोलनक चित्र अधिक विकसित होइत तँ परिवर्तनक सामाजिक आधार मजबूत होइत।

बारहम परिच्छेद : सम्बन्ध, छल आ वैकल्पिक नैतिकता

संघर्षक मध्यपर्वमे पारिवारिक आ सामाजिक सम्बन्धक पुनर्समीक्षा होइत अछि। बाहरी मान-प्रतिष्ठा आ भीतरी नैतिक आचरणक अन्तर पात्रसभक संवाद सँ उद्घाटित होइत अछि। जे सभ्य कहबैत अछि से सदिखन न्यायप्रिय नहि; जे निर्धन अछि से नैतिक निर्णयमे हीन नहि।

एहि खण्ड केँ शीर्षकक आरम्भिक अर्थसँ जोड़ि पढ़ब उपयोगी अछि। गुदड़ी बाहरी वंचनाक संकेत अछि; 'लाल' भीतरक ओ मूल्य थिक जकर पहचान समाजक प्रभुत्वशाली दृष्टि करबामे असमर्थ होइत अछि।

तेरहम परिच्छेद : श्रमसँ सामाजिक दायित्व धरि

गामक आर्थिक संकट, श्रम आ जीवन-निर्वाह सम्बन्धी प्रश्न बदलैत परिस्थितिमे नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। सम्पन्न वर्गक किछु व्यक्तिमे सुधारक इच्छाक संकेत अछि, मुदा एकटा व्यक्तिक सदिच्छा सैकड़ों आश्रितक संरचनागत विवशताक विकल्प नहि। कथाकार एतय उदार सुधारक आ अधिकार-आधारित परिवर्तनक बीच तनाव उत्पन्न करैत छथि।

आलोचनात्मक रूपेँ देखल जाए तँ श्रमिकक अपन संगठन अथवा सामूहिक प्रतिरोधक सक्रिय उपस्थिति सीमित रहैत अछि। तथापि सामाजिक गरिमा केँ जन्माधिकारक बदला कर्म आ मानवीय व्यवहारसँ जोड़बाक प्रयत्न उपन्यासक सकारात्मक उपलब्धि अछि।

चौदहम परिच्छेद : परवरिश, शिक्षाक अवसर आ वर्ग-गतिशीलता

एहि चरणमे बालकक लालन-पालन, अध्ययन आ भविष्य निर्माणक प्रश्न केन्द्रमे अबैत अछि। सुरेश्वरक जीवनसँ शिक्षा सामाजिक अवरोध पार करबाक वास्तविक सम्भावना बनैत अछि। ज्ञानक उपलब्धि केवल अक्षरज्ञान नहि; भाषा, आत्मविश्वास आ सार्वजनिक संस्थाक बीच अपन स्थान बनयबाक प्रक्रिया थिक।

मुदा शिक्षाक सफलता लेल आश्रय आ संसाधन सेहो आवश्यक अछि। उपन्यास अनायास ई दिखबैत अछि जे केवल प्रतिभा पर्याप्त नहि—विद्यालय, आर्थिक सहायता, परिवारक श्रम आ अवसरक उपलब्धता ओकर विकास निर्धारित करैत अछि। एतय ‘गुदड़ीक लाल’क मुहावरा संरचनागत अर्थ ग्रहण करैत अछि।

पन्द्रहम परिच्छेद : सन्तानक भविष्य आ मातृत्वक अधिकार

सुगियाक मातृत्वक माध्यमसँ कथाक केन्द्र बदले लगैत अछि। ओकर पहिने भोगल गेल अपमान ओहिठाम समाप्त नहि होइत; पुत्रक भविष्य, शिक्षा आ सामाजिक पहचानक चिन्ता बनि ओकर जीवनमे पुनः उपस्थित होइत अछि।

मातृत्व केँ केवल त्यागक महिमामण्डनसँ पढ़ल जाए तँ सुगियाक स्वतंत्र स्त्रीत्व ओझराएत। अधिक गहन पाठ कहैत अछि जे पुत्रक भविष्यसँ जुड़ल ओकर आग्रह अपन जीवनपर दीर्घकालिक अधिकारक दावा सेहो अछि—ओ अपन अनुभवक हिंसा अगिला पीढ़ीपर नहि दोहराओल चाहैत अछि।

सोलहम परिच्छेद : सुरेश्वरक शैक्षिक यात्रा आ आत्मपरिचय

सुरेश्वरक प्रसंग सामाजिक गतिशीलताक कथाकेँ ठोस मानवीय रूप दैत अछि। गामक अभावसँ बाहरक शैक्षिक वातावरणक अनुभव एकटा एहन पीढ़ी तैयार करैत अछि जे जन्मसँ निर्धारित सामाजिक सीमा स्वीकार करबाक लेल बाध्य नहि रहय चाहैत।

एहि पात्रक माध्यमसँ उपन्यासक आशावाद अधिक स्पष्ट अछि। मुदा सफल शिक्षित पुत्रक कथा सँ समस्त मजदूरवर्गक उन्नतिक निष्कर्ष निकालब जल्दबाजी होयत।

अपवादात्मक प्रतिभाक सफलता समाजक असमानता केँ अपने आप समाप्त नहि करैत; ओ ओकरा अधिक प्रत्यक्ष बना सकैत अछि।

सत्रहम परिच्छेद : अभिजन-सम्बन्धक परीक्षण

कथाक पछिला चरणमे पहचान, सामाजिक स्वीकार्यता आ पारिवारिक सम्बन्धक प्रश्न फेर तीक्ष्ण होइत अछि। सुरेश्वरक शिक्षित व्यक्तित्व सम्पन्न घरानाक दृष्टिमे परिवर्तन उत्पन्न करैत अछि। एहि परिवर्तनक भीतर मानवीय स्वीकार्यता कतेक अछि आ सफलताक प्रति आकर्षण कतेक—ई प्रश्न अनिवार्य अछि।

जँ निर्धन व्यक्ति शिक्षित आ सफल भेलाक बाद मात्र सम्मान योग्य मानल जाए तँ सामाजिक भेदभावक मूल विचार अपरिवर्तित रहि सकैत अछि। उपन्यासक सुधारवादी आशाकेँ एहि कसौटीपर परखब ओकर सभसँ उपयोगी आलोचनात्मक पाठ अछि।

अठारहम परिच्छेद : गाम-परिवार आ सामाजिक स्मृति

पुरान सम्बन्धक स्मृति, भूमि आ परिवारक दायित्व नव परिवेशमे पुनः अर्थ पबैत अछि। बीतल अन्याय केवल घटना नहि रहैत; ओ वर्तमान निर्णयक आधार बनैत अछि। सुगिया आ ओकर सन्तानक जीवनमे मान-अपमानक विरासत एही तरहें उपस्थित अछि। एहि खण्डक भावनात्मक शक्ति स्मृतिक अधूरापनमे अछि। विस्थापन हो अथवा उन्नति, गामक सम्बन्ध आ मायक जीवनक अनुभवक हिसाब सहज समाप्त नहि होइत।

उन्नीसम परिच्छेद : नैतिक निर्णयक सार्वजनिक स्वर

व्यक्तिगत मतभेद सामाजिक विचार-विमर्शमे परिणत होइत अछि। सम्पत्ति, सम्बन्ध आ प्रतिष्ठापर दावा कतेक न्यायोचित अछि—एहि प्रश्नक उत्तर केवल पारिवारिक मुखियाक इच्छासँ नहि तय भऽ सकैत।

लघु संक्रमणात्मक एहि परिच्छेदक भूमिका अन्तिम संघर्षक विचारात्मक धरातल बनब अछि। जे चीज पहिले चुप्पी आ भयक विषय छल, आब ओकरा सार्वजनिक विमर्शमे राखबाक सम्भावना उत्पन्न होइत अछि।

बीसम परिच्छेद : कानूनी रणनीति आ सामन्ती असहजता

कथाक अन्तिम राजनीतिक-न्यायिक चरणमे ठाकुर-पक्षक प्रतिष्ठा, जमीन्दारी स्मृति आ नव अधिकार-बोध आमने-सामने अबैत अछि। पुरान पद्धतिसँ संचालित लोकक लेल सार्वजनिक सवाल अपने आपमे चुनौती थिक।

एहि परिच्छेदमे कथाक संघर्ष दैहिक बलसँ हटि वाणी, दस्तावेज, विधिक तर्क आ नैतिक उत्तरदायित्वक दिशामे बढ़ैत अछि। ई परिवर्तन उपन्यासक संरचनात्मक उपलब्धि अछि।

एक्कीसम परिच्छेद : कुलाभिमान, न्याय आ सामाजिक साक्षात्कार

जालिम सिंह, सुगिया, सुरेश्वर आ परिजनसँ जुड़ल प्रश्न नव तीव्रता प्राप्त करैत अछि। समाजक ऊँच-नीच, सन्तानक वैधता आ परिवारक प्रतिष्ठाक भाषामे छिपल हिंसा सोझाँ अबैत अछि। पात्रसभ सामाजिक स्वीकार्यताक निर्णायक प्रश्न पर पहुँचैत छथि।

एहि परिच्छेदक आलोचनात्मक मूल्य एहि बातमे अछि जे न्याय केवल दोषी केँ पराजित करब नहि, बल्कि पीड़ितकेँ अपन नाम आ सम्बन्धक संग स्वीकार करब बनैत अछि। तथापि मनुष्यक गरिमा केँ वैवाहिक अथवा वंशगत स्वीकृतिसँ जोड़बाक सीमा सेहो एतय देखाइत अछि।

बाइसम परिच्छेद : अदालत, पुनर्स्वीकृति आ शीर्षकक पूर्णार्थ

अन्तिम परिच्छेद न्यायालयीय सुनुवाईसँ कथाक निष्कर्ष विकसित करैत अछि। जालिम सिंहसँ जुड़ल घटनाक सामाजिक आ नैतिक परिणामपर निर्णय अबैत अछि; सुगियाक अपमान आ सम्बन्धकेँ केवल निजी भेद मानि दबाओल सम्भव नहि रहैत। ठाकुरक पूर्व परिचय, सुगियाक संघर्ष आ सुरेश्वरक व्यक्तित्व एकहि कथात्मक बिन्दुपर आ मिलैत अछि।

अन्तिम प्रसंगमे सुगियाक स्वीकृति आ परिवारक नवीकरणक माध्यमसँ लेखक सामाजिक न्यायक आशावादी रूप प्रस्तुत करैत छथि। मुद्रित पृष्ठ १३२ सँ कानूनी कार्यवाहीक विस्तार आ पृष्ठ १३८-१४० मे परिवार आ समाजक प्रतिक्रियासँ कथा

समापन दिस बढ़ैत अछि। कथाक अन्तिम पृष्ठपर एहि बातक पछतावा व्यक्त होइत अछि जे वास्तविक मानवीय मूल्यकेँ पहिने चिन्हल नहि गेल। एही बोधसँ शीर्षकक नैतिक अर्थ खुलैत अछि।

मुदा एतय एकटा गम्भीर प्रश्न बचैत अछि : अदालतक निर्णय आ परिवारक स्वीकार्यता सुगियाक पूर्व पीड़ाकेँ केहन रूपमे सम्बोधित करैत अछि? जखन कथाक न्याय व्यक्तिगत पुनर्मिलनपर केन्द्रित होइत अछि तखन संरचनागत शोषणक विरुद्ध व्यापक परिवर्तनक प्रश्न अधूरा रहि जाइत अछि। ई सीमा पुस्तकक मानवतावादी उपलब्धिक संग-संग देखबाक चाही।

मटरू : श्रमिक-अस्तित्व, पितृत्व आ प्रतिरोध

मटरू उपन्यासक सामाजिक यथार्थक पहिल ठोस आधार छथि। हुनक श्रम समाजक उत्पादक व्यवस्था चलबैत अछि, मुदा भूमि आ अधिकार हुनक हाथमे नहि। एहन आर्थिक स्थिति हुनक पारिवारिक निर्णयकेँ सेहो सीमित करैत अछि। ओ बेटीकेँ सुरक्षा देबाक आकांक्षा रखैत छथि, मुदा सामन्ती शक्तिक सोझाँ हुनक सामर्थ्य संकटग्रस्त होइत अछि।

मटरूक चरित्रक नैतिक गरिमा एहि बातमे नहि जे ओ सर्वशक्तिमान नायक बनि जाइत छथि। ओकरा विपरीत, निर्बल होएबाक बावजूद ओ सम्बन्ध, श्रम आ आत्मसम्मानक अर्थ बचाबय चाहैत छथि। साहित्यिक रूपेँ ई महत्त्वपूर्ण अछि : अन्यायक वर्णन तखने प्रभावशाली होइत अछि जखन पीड़ितक व्यक्तित्व केवल दुःखक पात्र नहि, अपन सोच-विवेक राखनिहार मनुष्य बनेत अछि।

तथापि मटरूक संघर्षकेँ लेखक किछु अवसरपर व्यक्तिगत सहायतापर निर्भर करबैत छथि। संगठित श्रमिक प्रतिरोधक लम्बा सामाजिक प्रक्रिया सशक्त रूपेँ विकसित नहि भेल अछि। एहि कारण कृति श्रमिक आन्दोलनक महाकाव्य नहि, वंचित परिवारक नैतिक संघर्षक उपन्यास अधिक अछि।

सुगिया : देहक स्वामित्व, गरिमा आ निर्णयक सीमा

सुगिया 'गुदड़ीक लाल'क सर्वाधिक जटिल आ नैतिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण पात्र अछि। लेखकक प्रारम्भिक वक्तव्य स्वयं ओकर जीवनकेँ सामाजिक शोषणक केन्द्रमे राखैत अछि। ओहि वक्तव्यक अनुसार सुगिया सामाजिक दृष्टिसँ अपमानजनक परिणतिक शिकार होइत अछि आ अनुकूल विकल्पक अभावमे अपन सम्बन्धक निर्णय करैत अछि। एहि कथनकेँ निर्विवाद सहमतिक प्रमाण मानब उचित नहि। असमान सत्ता-सम्बन्धमे सहमति कतेक स्वतंत्र छल—एहि प्रश्नक बिना सुगियाक गहिर पाठ सम्भव नहि।

उपन्यास ओहि समाजकेँ उद्धाटित करैत अछि जतय पुरुषक हिंसापर मौन रहबाक प्रवृत्ति अछि, मुदा स्त्रीक जीवनी पर स्थायी कलंक राखल जाइत अछि। सुगियाक पीड़ा सामाजिक दुहराव झेलैत अछि : पहिल पीड़ा असमान सम्बन्धक, दोसर पीड़ा लोकदृष्टिक। शिक्षा आ नव पीढ़ीक सहायता एहि कलंककेँ चुनौती दैत अछि।

मुदा सुगियाक गरिमा केँ मात्र मातृत्व, विवाह अथवा अन्तिम पारिवारिक स्वीकृतिसँ सिद्ध करब पर्याप्त नहि। ओ स्वयं एकटा स्वतंत्र व्यक्ति अछि, जकर आत्मबोध ओकर मातृत्वसँ पैघ अछि। एहन नारीवादी पाठ कृतिक मानवीय सम्भावना केँ आओर गहिर करैत अछि, यद्यपि कथाकार एकर सम्पूर्ण विकास नहि कयलनि।

ठाकुर जालिम सिंह : कुल, सत्ता आ अपराधक वैधता

ठाकुर जालिम सिंह केवल एकटा विरोधी व्यक्ति नहि, सामन्ती सम्बन्धक प्रतिनिधि छथि। हुनक प्रतिष्ठा जमीन, कुल, पहुँच आ भयपर टिकैत अछि। उपन्यास देखबैत अछि जे सामाजिक असमानताक वास्तविक शक्ति ओहि क्षण प्रकट होइत अछि जखन सम्पन्न वर्ग अपन इच्छा केँ नियम जकाँ चलबैत अछि।

जालिम सिंहक चरित्रमे सत्ता आ अंतरात्माक संघर्षक सम्भावना अछि। कथा अन्तमे परिवर्तन आ स्वीकार्यताक दिशा खोलैत अछि, मुदा एहि बदलावक विश्वसनीयता ओकर

क्रमिक नैतिक आत्मालोचनपर निर्भर करैत अछि। पाठकक दृष्टिसँ केवल अन्तिम उदार व्यवहार पहिल अन्यायक उत्तरदायित्व मिटा नहि सकैत।

सामन्ती प्रतिष्ठाक आलोचना कथा भीतर बारम्बार उद्धाटित होइत अछि, मुदा न्यायिक परिणतिक बाद ओकर व्यापक संस्थागत ढाँचा केहन रूपेँ बदलत—एहि प्रश्नक उत्तर अपेक्षाकृत संक्षिप्त अछि।

सुरेश्वर आ नव पीढ़ी : सामाजिक गतिशीलताक द्वैध

सुरेश्वरक जीवनक माध्यमसँ उपन्यासक शीर्षक भविष्य-दिशामे खुलैत अछि। पिछड़ल सामाजिक परिस्थिति भीतर पसरल प्रतिभा जखन शिक्षाक अवसर पबैत अछि, तखन ओ पुरान अवरोधक सीमा पार करबाक सामर्थ्य प्राप्त करैत अछि। ई नैतिक आशावाद कृतिक महत्त्वपूर्ण ऊर्जा अछि।

मुदा वर्गीय गतिशीलताक एहि अनुभवमे द्वैध छैक। एक ओर शिक्षासँ अपन योग्यता सिद्ध कएनिहार पात्र समाजक जाति-कुल आधारित नियन्त्रणक निरर्थक बना दैत अछि। दोसर ओर यदि समाज ओहि व्यक्तिक सम्मान ओकर सफलता, पद अथवा प्रतिष्ठित सम्बन्धक बाद करैत अछि तँ ओहि समाजक मूल पूर्वाग्रह एखन शेष रहैत अछि। सुगिया-सुरेश्वरक संयुक्त पाठ ई अन्तर स्पष्ट करैत अछि।

उपन्यासक शिक्षाविषयक आग्रह नैतिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा शैक्षिक संस्थाक प्रवेश, लागत, भाषा आ वर्गीय संसाधनक सामाजिक विश्लेषण अधिक गहिर होइत तँ कथाक यथार्थवाद आओर सुदृढ़ भऽ सकैत छल।

सहायक पात्र : अजय, विजय, रामेश्वर, शारदा आ न्यायिक संसार

मुख्य त्रिकोणक अतिरिक्त अनेक पात्र कथा केँ बहुपक्षीय बनबैत अछि। अजय आ विजय सन युवा, रामेश्वर, शारदा बाबू, दरोगा, विद्यालयक व्यक्तिसभ आ न्यायालयसँ जुड़ल अधिकारी सामाजिक सम्बन्धक अलग-अलग स्तर खोलैत छथि। ओ लोकनि सम्पन्न वर्गक भीतर असहमति, शिक्षित नैतिकता, प्रशासनिक पक्षधरता आ सुधारक सम्भावनाक विभिन्न स्वर प्रस्तुत करैत छथि।

एहि पात्रसमूहक आधारपर ई कहल जा सकैत अछि जे उपन्यास समाजकें एकसमान दुष्ट अथवा एकसमान भल नहि मानैत। शोषक वर्गक भीतर सेहो सुधारक मनुष्य भऽ सकैत अछि, आ न्याय माँगबाक संस्था स्वयं अन्यायपूर्ण भऽ सकैत अछि। पात्र-विन्यासक ई गतिशीलता कृतिक आलोचनात्मक महत्त्व बढ़बैत अछि।

मुदा किछु सहायक पात्र दीर्घ संवादमे विचारक प्रतिनिधि अधिक बनि जाइत छथि। व्यक्तिगत भाषा, स्मृति आ अनिश्चितताक विस्तार होइत तँ ओ सभ आओर पूर्ण मनुष्य-जकाँ देखाइत।

कथाशिल्प : समय, दीर्घ संवाद आ नैतिक प्रयोजन

‘गुदड़ीक लाल’ एकटा क्रमिक, घटनाप्रधान कथा अछि। आरम्भमे सामाजिक संरचना, तकर बाद पारिवारिक संकट, फेर व्यक्तिसम्बन्धक बदलैत स्वरूप, शिक्षाक माध्यमसँ पीढ़ीगत परिवर्तन आ अन्तमे न्यायालयीय परिणति—ई क्रम उपन्यासकें व्यापक समय-विस्तार दैत अछि। कथा आरम्भक समय स्वाधीनतापूर्वक अछि, मुदा एकर अन्तक न्यायिक व्यवस्था आगाँक ऐतिहासिक परिवर्तित सन्दर्भक दिशामे बढ़ैत अछि। एहि समय-संक्रमणक अन्तर्गत घटनासभक क्रम बुझब अत्यन्त आवश्यक अछि।

लेखक किछु ठाम प्रत्यक्ष विवरणक बदला दीर्घ संवादक सहारा लैत छथि। सुगिया आ ठाकुर-पक्षक संवादमे दान, भूमि, अधिकार आ अपन भविष्यक प्रश्न उपस्थित होइत अछि। एहि संवादसभक लाभ ई जे पात्रक वैचारिक रुख स्पष्ट होइत अछि। मुदा कमी ई जे कखनो-कखनो पात्र स्वतः बोलनिहार व्यक्ति सँ बेसी लेखकक समाज-सुधारक विचारक प्रवक्ता देखाइत अछि।

न्यायालयीय भाग कथाक आरम्भिक हिंसक सत्ता-व्यवहारक उल्टा रूप प्रस्तुत करैत अछि : पहिने बल आ भय निर्णयक स्रोत छल, अन्तमे तर्क आ सार्वजनिक विधिक प्रक्रियाक सम्भावना बनैत अछि। ई संरचनात्मक प्रतिलोम उपन्यासक उल्लेखनीय शिल्पगत उपलब्धि अछि।

भाषा आ ग्राम्य यथार्थ

उपन्यासक भाषा मुख्यतः व्यवहारक मैथिली अछि। संवादमे ‘हमरा’, ‘तोरा’, ‘अहाँ’, ‘ककरो’, ‘बजलाह’, ‘सौँसे’, ‘गप’ सन लोकव्यवहारक संरचना पात्रक सामाजिक सम्बन्ध सूचित करैत अछि। ग्रामीण पदावली, खेती-मजदूरी, हवेली, देहरी, कचहरी आ स्कूलक शब्द-संसार सामाजिक यथार्थ बनबैत अछि।

भाषा-कौशलक सर्वाधिक प्रभाव ओतय अछि जतय पात्रक बोलब ओकर सामाजिक स्थानकेँ स्वतः उद्घाटित करैत अछि। एकहि वाक्यमे भय, विनय, विरोध आ आत्मसम्मानक स्तर बदलि सकैत अछि। किछु स्थानपर दीर्घ व्याख्या आ पुनरुक्ति कथाक गति रोक्कैत अछि; ई शिल्पगत सीमा अछि, भाषाक लोकधर्मी मूल्यक खण्डन नहि।

सम्पादनक दृष्टिसँ लम्बा संवादकेँ अधिक संयत करब आ घटना द्वारा स्पष्ट भऽ गेल तथ्यक पुनर्वर्णन घटायब उपन्यासक प्रभाव बढ़ा सकैत छल। किन्तु भाषाक विशिष्ट मैथिली चरित्र ओकर प्रमुख उपलब्धि छी।

नारीवाद आ सामाजिक न्याय : सहमति, विवाह आ सामाजिक क्षमा कथाक सर्वाधिक कठिन प्रश्न सुगियाक प्रति व्यवहार अछि। स्त्रीक देहपर पुरुषक शक्ति आ ओकर प्रतिष्ठापर समाजक नियन्त्रण परस्पर जुड़ल अछि। एकरे कारण पीड़ित स्त्रीक सोझाँ ‘सम्मानजनक’ विकल्प सेहो बाध्यकारी भऽ सकैत अछि। साहित्यिक नैतिकताक कसौटीपर देखल जाए तँ विवाह अथवा परिवारक अन्तिम मान्यता न्यायिक प्रक्रिया आ पुरान हिंसाक हिसाबक स्वयंसिद्ध विकल्प नहि।

उपन्यास जखन सुगियाक विरोध आ दुखकेँ शब्द दैत अछि तखन ओ पितृसत्तात्मक रुढ़िक विरुद्ध जाय पड़ैत अछि। मुदा जखन अन्तिम समाधान सामाजिक स्वीकृति मे केन्द्रित होइत अछि, तखन पितृसत्ताक बाहर पूर्ण स्वायत्त जीवनक सम्भावना अधिक विस्तार नहि पबैत। एहि द्वैतकेँ कृतिक ऐतिहासिक सामाजिक सुधारवादक सीमा मानल जा सकैत अछि।

कथाकारक मानवीय उद्देश्य महत्त्वपूर्ण अछि : स्त्रीकें अपमानक स्थायी कारागारमे नहि छोड़ल जाए। मुदा आधुनिक पाठकक सोझाँ प्रश्न रहैत अछि जे गरिमा समाज द्वारा प्रदान कयल मान्यता थिक कि मनुष्यक आरम्भिक अविच्छिन्न अधिकार? उपन्यास एहि बहसक लेल समृद्ध पाठ्यभूमि दैत अछि।

भूमिहीनता, जमीन्दारी आ संस्थागत शोषण

आरम्भिक ग्राम-परिस्थिति भूमिकें शक्ति-स्रोतक रूपमे स्थापित करैत अछि। मजदूर खेत जोतैत अछि, मुदा भूमि स्वामित्व ओकर नहि। एहि विभाजनसँ आर्थिक निर्भरता निर्माण होइत अछि; निर्भरता पुनः राजनीतिक भय आ सामाजिक अधीनताक आधार बनैत अछि। हवेलीक प्रभाव पुलिसक व्यवहार धरि पहुँचनाइ एहि सत्ता-सम्बन्धक संस्थागत रूप अछि।

बीसम शताब्दीक बिहारमे जमीनक स्वामित्व आ जमीन्दारी उन्मूलन महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक प्रश्न रहल। बिहार भूमि सुधार अधिनियम, १९५०क अभिलेख एहि परिवर्तनक कानूनी पृष्ठभूमि स्पष्ट करैत अछि। मुदा उपन्यासक काल्पनिक घटनाकें एहि कानूनक किछु विशिष्ट प्रभावक प्रत्यक्ष प्रमाण कहब उचित नहि। कानून ऐतिहासिक तुलनात्मक सन्दर्भ थिक, कथानकक अभिलेख नहि।

उपन्यासक अन्तिम सुधारवादी निष्कर्षकी एहन समस्या प्रस्तुत करैत अछि : जमीन्दारी शोषणक शिकार केवल मटरू-परिवार नहि; ग्रामक अनेको मजदूर अछि। एहन परिस्थितिमे एक परिवारक पुनर्प्रतिष्ठा महत्त्वपूर्ण होइतहुँ सम्पूर्ण वर्गीय न्यायक समतुल्य नहि। ई अन्तर कृतिक आलोचनात्मक मूल्यांकनमे निर्णायक अछि।

शिक्षा : करुणाक दान नहि, अवसरक अधिकार

उपन्यासक आरम्भमे विद्यालयक उपस्थिति आ उत्तरार्धमे शिक्षित नव पीढ़ीक सामाजिक प्रभाव एकटा दीर्घ प्रतीकात्मक रेखा बनबैत अछि। पहिल चरणमे शिक्षा सम्पन्न वर्गक संसाधनक लग पड़ैत अछि; पछिला चरणमे वही शिक्षा जन्म-निर्धारित असमानताक प्रतिकारक साधन बनैत अछि।

‘गुदड़ीक लाल’ शीर्षक एकर परिणाम मात्र नहि, एकर आधार सेहो अछि : गरीबी प्रतिभाक अनुपस्थितिक प्रमाण नहि। मुदा ई विचार तखन पूर्ण सामाजिक सिद्धान्त बनत जखन प्रतिभाक पहिचान लेल सबकेँ समान साधन भेटत। ओहि अर्थमे शिक्षा केँ व्यक्तिगतरूपेँ प्रदान कयल कृपासँ आगू बढ़ि सामूहिक अधिकारक रूपमे सोचेबाक आवश्यकता अछि।

मटरू आ सुगियाक अनुभव एहि आधुनिक शिक्षात्मक आदर्शकेँ मानवीय गहिराइ दैत अछि। सामाजिक बदलाव केवल उत्कृष्ट विद्यार्थी तैयार करब नहि, तकर परिवार आ समान वर्गक अन्य लोकक सम्मान सुनिश्चित करब सेहो अछि।

न्यायालयीय उपसंहार : विधिक न्याय आ सामाजिक पुनर्स्थापना

अन्तिम परिच्छेदमे न्यायालयीय प्रसंग कथा केँ सार्वजनिक निर्णायकता दैत अछि। आरम्भमे जमीन्दार आ पुलिसक सम्मुख निर्बलक स्वर अबरुद्ध छल; अन्तमे अदालतक सम्मुख सामाजिक प्रतिष्ठा आ निजी सम्बन्धक विवाद तर्कक विषय बनैत अछि। एहि क्रममे कथाकार न्याय-व्यवस्थासँ आशावादी आशा व्यक्त करैत छथि।

अन्तिम भागमे एकटा महत्त्वपूर्ण वाक्य न्यायिक मर्यादाक केन्द्र व्यक्त करैत अछि।

“हम तँ कानून सँ बान्हल छी।” (मूल पाठ, पृ. १३६)

एहि वाक्यक महत्त्व केवल अदालती औपचारिकता नहि। न्यायाधीशक व्यक्तिगत सदृच्छा आ विधिसम्मत निर्णयक बीच भेद प्रकट होइत अछि। अदालतक प्रक्रिया व्यक्तिक अनुराग, क्रोध अथवा कुलप्रतिष्ठाक वर्चस्वसँ अलग सार्वजनिक कसौटी प्रस्तुत करबाक दावा करैत अछि।

फेरो ई स्वीकारणीय अछि जे विधिक विजय आ सामाजिक न्याय एकार्थक नहि।

सामाजिक पुनर्प्रतिष्ठा, स्त्रीक स्वायत्तता, श्रमिकक भूमि-अधिकार आ संस्थागत दमनक दण्डकेँ केवल एक निर्णय पूर्ण रूपेँ हल नहि कऽ सकैत। एहि बिन्दुपर कृतिक आशावादी समापन पाठकक स्वतंत्र आलोचनात्मक विवेककेँ आमन्त्रित करैत अछि।

शीर्षकक अन्तिम अर्थ आ कृतिक नैतिक उपलब्धि

मुद्रित अन्तिम पृष्ठपर उपन्यास 'गुदड़ीक लाल' केँ चिन्हबाक सामाजिक असमर्थताक दुःखक संग समाप्त होइत अछि। एहि प्रकार शीर्षक केवल प्रतिभाशाली निर्धन बालकक मुहावरा नहि रहि जाइत; मानवीय गरिमाक देरिसँ होइत स्वीकृति, समाजक पूर्वाग्रह आ पछतावाक रूपक बनैत अछि।

कथाक अन्तिम अभिप्राय ई अछि जे जाति-कुल आ सम्पत्तिक अभिमान मनुष्यक असल मूल्यकेँ ढाँपि दैत अछि। जे लोक अपन सामनेक साधारण जीवने भीतर विकसित मानवीय प्रतिभा नहि देखैत, ओ वास्तवमे स्वयं अपन नैतिक दृष्टि खोबि रहल होइत अछि।

ई उपन्यासक प्रमुख उपलब्धि अछि जे ओ शोषणक कथा केँ केवल करुणामय निरीक्षण तक सीमित नहि रखैत। सुगिया आ सुरेश्वरक जीवनकेँ अन्तिम मान्यताक प्रश्नसँ जोड़ि लेखक समाजसँ कहल चाहैत छथि जे जन्मक आधारपर बनल मानदण्ड परिवर्तनशील अछि।

प्रमुख रस, भाव-संरचना आ पाठकीय अनुभव

करुण रस उपन्यासक प्रमुख भाव-शक्ति अछि। मटरूक असहायता, सुगियाक अपमान आ पारिवारिक असुरक्षा पाठकमे करुणा उत्पन्न करैत अछि। एहि करुणाक संग रौद्र आ वीर भावक सामाजिक रूप जुड़ैत अछि—अन्यायक प्रति रोष आ ओकर विरोधक इच्छा।

अन्तिम चरणमे अदालती प्रतीक्षा, सामाजिक स्वीकृति आ पुनर्मिलन शान्त भावक दिशा बनबैत अछि। मुदा ई शान्ति सम्पूर्ण त्रासदी मेटा दैत अछि कि नहि, एहि प्रश्नक उत्तर पाठकक संवेदना पर निर्भर रहैत अछि। कृतिक भावात्मक प्रभाव एतय सबसँ रोचक बनैत अछि।

अन्यायपर आधारित कथा पढ़ते समय केवल भावुक भऽ जाइनाइ पर्याप्त नहि। कृति पाठकसँ व्यवस्थाक चरित्र बुझबाक आग्रह करैत अछि। एहि अर्थमे करुणा एकटा नैतिक आरम्भ थिक, अन्तिम निष्कर्ष नहि।

‘कन्यादान’, ‘पारो’ आ ‘गोदान’ : तुलनात्मक पाठ

हरिमोहन झाक ‘कन्यादान’मे स्त्रीक विवाहपर पारिवारिक-सामाजिक नियन्त्रण व्यंग्यक माध्यमसँ उद्घाटित अछि। ‘गुदड़ीक लाल’मे स्त्रीक जीवनक प्रश्नक स्वर अधिक सीधे करुण-नाटकीय अछि। दुनू कृति विवाह आ समाजक नैतिक मापदण्डपर आलोचनात्मक दृष्टि राखैत अछि; मुदा एकर शैलीगत आधार अलग अछि।

यात्रीक ‘पारो’ स्त्रीक अनुभवक अपन आवाज बनबाक दिशामे मैथिली उपन्यासक महत्त्वपूर्ण पड़ाव मानल जाइत अछि। सुगियाक प्रसंग पढ़ैत समय एतय तुलना उपयोगी अछि : स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छा की विवाहक सामाजिक संस्थासँ अलग कल्पना कयल जा सकैत अछि? कथाक परिणाम ओकरा कतेक स्वतंत्र उत्तर देबय दैत अछि? एहि प्रश्नपर ‘पारो’क स्त्री-केंद्रित पाठ आ ‘गुदड़ीक लाल’क सुधारवादी समाधानकेँ समान नहि मानि सकैत छी।

प्रेमचन्दक ‘गोदान’मे किसानक संघर्ष आर्थिक संरचनासँ एतेक गहन बान्हल अछि जे व्यक्तिगत भलमनसाहत ओकर समाधान नहि। ‘गुदड़ीक लाल’मे ओही प्रकारक कृषक-मजदूर शोषणक प्रारम्भिक चित्र अछि, मुदा कथा मानवीय सदृच्छा, शिक्षा आ न्यायिक हस्तक्षेपक सफलतापर बेसी भरोसा करैत अछि। ई अन्तर दुनू कृतिक सौन्दर्यशास्त्रीय दिशा स्पष्ट करैत अछि।

तुलनात्मक अध्ययनक ई निष्कर्ष नहि जे एक कृति दोसरासँ प्रेरित अथवा ओकर प्रत्यक्ष अनुगामी अछि। साम्य सामाजिक प्रश्नक अछि, स्रोत-सम्बन्धक नहि।

आलोचनात्मक सीमा : सुधारवादी संकल्प आ कलात्मक विश्वसनीयता
कृतिक सबसँ पैघ सीमा ओकर नैतिक उद्देश्यक असाधारण स्पष्टता अछि। अनेक दृश्य एहन अछि जतय पात्रक संवादसँ लेखकक सामाजिक प्रस्ताव प्रत्यक्ष होइत अछि। ई

स्पष्टता पाठककें विचार बुझबामे सहायता करैत अछि, मुदा कलात्मक अस्पष्टता आ स्वतंत्र अर्थनिर्माणक क्षेत्र कम करैत अछि।

दोसर सीमा संरचनागत शोषण आ व्यक्तिगत परिणतिक अनुपातक अछि। गामक अन्य मजदूरसभक समस्या कथाक आरम्भमे उपस्थित होइत अछि; मुदा समापन मुख्यतः सुगिया आ ओकर सम्बन्धित परिवारक न्यायपर केन्द्रित रहैत अछि। निजी विजय महत्त्वपूर्ण अछि, तथापि सामूहिक मुक्ति व्यापक प्रश्न बनल रहैत अछि।

तेसर सीमा स्त्री-अनुभवक अन्तिम अर्थनिर्णयमे अछि। सुगियाक पीड़ा आ संघर्ष मार्मिक अछि, मुदा न्यायकें परिवारक पुनर्स्थापनासँ बहुत निकट जोड़ल गेल अछि। स्वतंत्र जीवन, सामाजिक संरक्षण आ बिना विवाहक गरिमाक सम्भावना अधिक खुलल रहितय तँ स्त्री-विमर्शक स्वर आओर व्यापक होइत।

चारिम सीमा पात्रसभक अन्तिम परिवर्तनक मनोवैज्ञानिक गति अछि। प्रबल वर्गीय अभिमानसँ नैतिक स्वीकार्यता धरि पहुँचबाक क्रम सघन अन्तर्द्वन्द्व माँगैत अछि। कथाकारक आशावाद किछु ठाम ई संक्रमण शीघ्र बना दैत अछि।

एहि सीमासभक चर्चा कृतिक मानवतावादी उद्देश्यक अवमूल्यन नहि। उलटा, ई स्पष्ट करैत अछि जे उपन्यास कोन स्तरपर सफल अछि आ कोन स्तरपर आगाँक मैथिली सामाजिक उपन्यास अधिक जटिल रचनात्मक सम्भावना खोलि सकैत अछि।

निष्कर्ष : असमानताक परदा हटब आ मानवीय मूल्यक पहिचान

‘गुदड़ीक लाल’ मैथिली सामाजिक उपन्यासक ओहि परम्परामे रखल जाएबाक योग्य अछि जे स्थानीय सामाजिक व्यवहारक भीतर लुकाएल असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि। स्वाधीनतापूर्वक ग्रामीण परिवेशक ई कथा मटरूक श्रमसँ शुरू होइत सुगियाक पीड़ा, अधिकार-संघर्ष, सुरेश्वरक शिक्षा आ अन्तमे सार्वजनिक न्यायिक बहसधरि पहुँचैत अछि। एकर रचनात्मक शक्ति भावप्रधान कथा आ स्पष्ट सामाजिक सरोकारक संयोगमे अछि।

सुगीयाक संघर्ष देखबैत अछि जे आर्थिक निर्भरता स्त्रीक स्वतन्त्रताकें कतेक सीमित करैत अछि; सुरेश्वरक कथा देखबैत अछि जे शिक्षा सामाजिक निषेधक विरुद्ध कतेक महत्त्वपूर्ण साधन बनि सकैत अछि; आ जालिम सिंहक चित्रण देखबैत अछि जे कुल-प्रतिष्ठा नैतिक पात्रताक गारंटी नहि।

कृतिक अन्तिम बोध विशेष अर्थपूर्ण अछि। समाज जकरा गुदड़ी समझि अवहेलित करैत अछि, ओकर भीतरक असल मूल्यक पहिचान देरिसँ करैत अछि। मुदा कृतिक मूल्य केवल एकटा प्रतिभाशाली व्यक्तिक खोज नहि; ई ओहि शोषणकारी परिस्थितिक आलोचना अछि जकर कारण अनेको प्रतिभा, आत्मसम्मान आ न्यायबोध पहिचानसँ वंचित रहैत अछि।

एहि कारण ‘गुदड़ीक लाल’ कें एकटा आशावादी सुधारवादी सामाजिक उपन्यासक रूपमे पढ़ब अधिक युक्तिसंगत अछि। यथार्थवादक कठोर कसौटीपर ओकर किछु समाधान सरलीकृत अवश्य अछि, मुदा मानवीय गरिमा, मातृभाषामे सामाजिक प्रश्नक अभिव्यक्ति आ शिक्षा द्वारा प्रतिष्ठाक पुनर्निर्माणक विषयमे ओकर योगदान साहित्यिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि।

प्राथमिक स्रोत

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’। गुदड़ीक लाल (मैथिली उपन्यास)। गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगा। उपलब्ध मूल संस्करण; कथाक मुद्रित पृष्ठ १-१४०; लेखकीय वक्तव्य : विजयादशमी, २००८।

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’। लेखकक वक्तव्य, ‘गुदड़ीक लाल’क प्रारम्भिक पृष्ठ। कृतिक घोषित सामाजिक उद्देश्य, कल्पनात्मक पात्र-संरचना आ निर्माण-परिस्थितिक प्राथमिक साक्ष्य।

मैथिली उपन्यासक इतिहास आ तुलनात्मक स्रोत

झा, हरिमोहन। कन्यादान। प्रथम प्रकाशन १९३३। आधुनिक संस्करण-सूचना : राजकमल प्रकाशन समूह, कन्यादान-द्विरागमन, ISBN 9788119028078।

झा, हरिमोहन। द्विरागमन। प्रकाशन १९४३; विवरण : देवशंकर नवीन, 'हरिमोहन झा की व्यंग्य-दृष्टि', गद्यकोश।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/सीईसी। मैथिली साहित्यिक सामाजिक चेतना सम्बन्धी अध्ययन-मॉड्यूल।

कथाकार अशोकक साक्षात्कार, 'A Journey Through Maithili Literature With Kathakar Ashok', Outlook India, २०२३।

Premchand and the Moral Economy of Peasantry in Colonial North India, Modern Asian Studies, Cambridge University Press; संगहि भारतीय यथार्थवादी उपन्यासक विवेचन : 'Modernity, Catastrophe, and Realism in the Postcolonial Indian Novel'। ;

भारत सरकार, India Code। The Bihar Land Reforms Act, 1950 (Bihar Act 30 of 1950)।

'The storm still gathers: Remembering Vaidyanath Mishra, aka Nagarjun, the people's poet', Scroll, २०२५; 'पारो'क स्त्री-संवेदना सम्बन्धी आधुनिक विवेचन।

विदेह : मैथिली गद्य आ पोथी सूची। नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क रचनासूचीमे 'गुदरीक लाल'क उल्लेख। ;

१.३५. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — अनठिया कुकुर

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

ग्राम-नगर सम्बन्ध, वर्गीय नैतिकता आ सामाजिक पुनर्निर्माण

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'अनठिया कुकुर' मिथिलाक गाम आ नगरक बीच बदलैत सम्बन्ध, आर्थिक विषमता, नैतिक दायित्व, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, न्यायिक प्रक्रिया आ ग्रामोद्धारक आकांक्षाकेँ एक संग कथा-वस्तुमे रूपान्तरित करैत अछि। दिल्लीसँ ग्रामक्षेत्र धरि आवागमन करैत प्रेम आ मालतीक अनुभव उपन्यासक केन्द्रीय सूत्र अछि; विदुरक प्रसंग एहि आदर्शवादी सूत्रक भीतर विश्वास, अवसरवाद आ संस्थागत न्यायक समस्या उठबैत अछि। पाठक एगारह खण्डमे परिवर्तित कथा-केन्द्र भेटैत अछि— कखनो ग्रामजीवनक सामाजिक संरचना, कखनो पारिवारिक अंतरंगता, कखनो मुकदमा आ आर्थिक व्यवहार, आ कखनो युवा पात्रक प्रेम आ विवाह। प्रस्तुत आलेख एहि बहुसूत्रताकेँ उपन्यासक शक्ति आ सीमा दुनू रूपमे परखैत अछि। विदेहक पोथी-सूचीमे 'अनठिया कुकुर'क विधा 'उपन्यास' आ 'स्वर्ण कमल'क विधा 'बाल उपन्यास' रूपमे निर्दिष्ट अछि। तँ बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर तुलना प्रासंगिक अछि, मुदा एकरा स्वयं बाल-उपन्यास घोषित करब उचित नहि।

कृतिक विधा आ रचनात्मक आधार

'अनठिया कुकुर'क बाह्य आवरण, आरम्भिक 'दू शब्द', कथाक मुद्रित क्रम तथा अन्तिम पृष्ठ एकटा सुसंगठित दीर्घ आख्यानक संकेत दैत अछि। उपलब्ध मुद्रित प्रतिमे कथाक पृष्ठ १ सँ २४५ धरि क्रम उपस्थित अछि आ कथाविन्यास एगारह क्रमांकित खण्डमे विभक्त अछि। पुस्तकक आरम्भिक वक्तव्यपर लेखक नन्द कुमार मिश्रक नाम आ १४ जनवरी २०११क तिथि अंकित अछि। एहि तिथिकेँ लेखकक वक्तव्यक तिथि मानल गेल अछि, प्रकाशनक निश्चित वर्ष नहि; प्रकाशन-वर्षक स्वतंत्र घोषणा एहि प्रतिमे स्पष्ट रूपसँ पुष्ट नहि होइत अछि। मुद्रित प्रकाशक-विवरणमे 'गोसाईंजी बैद्यनाथ स्मृति मंच' आ 'दरभंगा'क उल्लेख भेटैत अछि।

एहि निबन्धक प्राथमिक आधार मूल मुद्रित पाठक क्रम, खण्ड-विभाजन, प्रमुख प्रसंग, पात्रगत सम्बन्ध आ लेखकक आरम्भिक वक्तव्य अछि। अध्ययनमे दृश्य घटनाक पुनर्कथन आ आलोचनात्मक अर्थनिर्णय अलग राखबाक प्रयास अछि।

कृति विधागत रूपेँ सामाजिक उपन्यास अछि। लेखकक 'दू शब्द'मे ग्राम आ शहरक लोकक बीच मनोवृत्तिक दूरी, शहरी आर्थिक आकर्षण, ग्रामक पिछड़ापन, जातिवाद तथा साम्प्रदायिकताक तनाव आ सामाजिक सुधारक आवश्यकता विशेष रूपसँ उठाओल गेल अछि। एहि दृष्टिकोणसँ पाठक कथाजगतकेँ लेखकक नैतिक-सामाजिक प्रस्तावनाक रूपमे सेहो पढ़ि सकैत अछि। मुदा आलोचनाकेँ प्रस्तावना आ वास्तविक कथा-विधानक बीच अन्तर जँचबाक चाही: लेखक जे परिवर्तनक आकांक्षा व्यक्त करैत छथि, कथा ओकर कलात्मक रूप कतेक निर्वाह करैत अछि, ई मूल प्रश्न अछि।

कथासार : नगर सँ गाम आ पुनः गाम सँ समाज दिस

कथा आरम्भमे रातिक यात्रा, दिल्लीसँ राजनगर दिस प्रस्थान, प्रेम आ मालतीक संगतिक जीवन तथा घरेलू वस्तु-व्यवस्थाक चित्रसँ खुलैत अछि (मुद्रित पृ. १ सँ आगाँ)। एतय रेलगाड़ी, स्टेशन, प्रतीक्षा, परिचित लोक आ घरक सहज संवाद उपन्यासक भौगोलिक दिशा निश्चित करैत अछि। कथाक भावनात्मक केन्द्र केवल पति-पत्नी नहि, हुनका माध्यमसँ खुलैत व्यापक ग्राम-समाज अछि। नगरक सुविधा आ ग्रामक कठिन परिस्थितिक बीच लेखक एकर बाद पुनःपुनः तुलना ठाढ़ करैत छथि।

धनकाहीक सामाजिक परिवेशमे शिक्षा, जातिगत प्रतिष्ठा, श्रम, किसान, स्थानीय पुरोहित, सम्पन्न परिवार आ वंचित जनक अनेक स्थिति सोझाँ अबैत अछि। प्रेमक दृष्टि ग्रामीण संसाधनक उपयोग, व्यावहारिक सहयोग आ सामुदायिक प्रतिष्ठापर टिकल अछि। विदुरक संग मित्रता प्रारम्भमे आशा आ विश्वास जनबैत अछि, मुदा समयक संग आर्थिक व्यवहार आ भूमि-सम्बन्धी विवाद एहि विश्वासपर प्रश्न लगबैत अछि। प्रेमक प्रति सहानुभूति रचबाक लेल कथाकार अनेक विरोधी स्थितिक संचय करैत छथि।

आगाँ न्यायालयी प्रक्रिया, अभियोग, शपथपत्र, साक्ष्य आ कार्यालयी व्यवहार कथाक टकरावकेँ तीव्र करैत अछि। एहिसँ उपन्यास निजी नैतिकतासँ बाहर संस्थागत नैतिकताक प्रश्न धरि बढ़ैत अछि। दोसर दिस किसानक खेत, ग्रामीण श्रमिकक असुरक्षा, दबंगई, चोरी आ आरोप-प्रत्यारोप कथाकेँ जनजीवनक तात्कालिकता दैत अछि। पछिला खण्डसभमे शहरक शिक्षित युवा पात्र, प्रेम आ विवाहपर विचार, बनारसक धार्मिक अनुभव आ पुनः मूल परिवारक प्रसंग कथानककेँ विस्तृत परिधि प्रदान करैत अछि। अन्तमे घर-गामक दैनन्दिन समस्यासँ जुड़ल स्नेह आ ग्रामसुधारक आशा प्रमुख बनैत अछि (पृ. २४४-२४५)।

मुद्रित एगारह खण्डक पृथक पाठविश्लेषण

प्रथम खण्ड : यात्रासँ सामाजिक मानचित्र धरि

प्रथम खण्डक आरम्भ यात्रा-प्रसंगसँ कएल गेल अछि। प्रेम आ मालतीक संगति, स्टेशनक आवागमन, पारिवारिक संवाद, घर-गृहस्थीक व्यावहारिक जरूरत आ सम्बन्धक सहज लय आरम्भिक कथाभूमि तैयार करैत अछि। कथाकार पहिने अनुभवक मूर्त वातावरण बनबैत छथि, तकर बाद धीरे-धीरे स्थानीय सामाजिक समस्या कथामे प्रवेश करैत अछि। एहि संरचनासँ शहरक चलायमान समय आ गामक ठहरल अनुभवक बीच अन्तर उत्पन्न होइत अछि।

मणिकान्त आ सुलेखाक उपस्थिति तथा प्रेमक सामाजिक सहयोगक इच्छा एहि खण्डमे वैयक्तिक स्नेहक विस्तार देखबैत अछि। नायकक व्यवहारमे परोपकारक आकांक्षा प्रखर अछि; तथापि एहि प्रवृत्तिक संग एक जोखिम सेहो जुड़ल अछि—कथा कखनो पात्रक जटिलता छोड़ि ओहि पात्रक नैतिक गुणक घोषणा करऽ लगैत अछि। एखन धरि ई आदर्शवादी पद्धति पाठककेँ आकर्षित करैत अछि, मुदा आगाँ निरन्तर दोहरायलापर कलात्मक तनाव घटा सकैत अछि।

खण्डक अन्तमे संवादक माध्यमसँ ग्राम-सेवाक आवश्यकता आ शिक्षा-संस्कारक विषय सोझाँ अबैत अछि। आरम्भ एकटा निजी यात्रा छल, मुदा समापन सामूहिक प्रश्नक उद्घाटन करैत अछि; इएह ई खण्डक महत्त्वपूर्ण कथात्मक उपलब्धि अछि।

द्वितीय खण्ड : धनकाही, शिक्षा आ सामाजिक असमानता

धनकाही गामक परिचयमे गरीब खेतिहर आ मजदूरक संसाधनाभाव, आवागमनक कठिनाई, विद्यालयी संरचना आ शिक्षक श्रीमत् चौधरीक सामाजिक स्थानक चित्र उभरैत अछि। पत्नी सुनीताक उल्लेख घरेलू संसारकेँ शिक्षा आ जनजीवनसँ जोड़ैत अछि। ई खण्ड ग्रामीण विपन्नताकेँ केवल भावुक दृश्य नहि बनबैत, ओकर आर्थिक आधारक संकेत सेहो दैत अछि।

गामक बच्चा, पढ़ाई, साधन आ अवसरक सम्बन्ध एतय अधिक प्रत्यक्ष अछि। एहि कारण ई अंशक विषय बाल-कल्याणसँ जुड़ैत अछि; मुदा बाल-जीवनक अनुभव, बालक दृष्टिबिन्दु अथवा बच्चाक स्वतन्त्र मनोजगत कथा-विन्यासक केन्द्र नहि बनैत अछि। बाल-साहित्य आ बाल-विषयक सामाजिक उपन्यासक बीच ई सूक्ष्म किन्तु आवश्यक भेद एतहि समझल जा सकैत अछि।

प्रेमक परिवार आ विद्यालयी परिवेशक अन्तरक सहारे लेखक शिक्षा, रोजी-रोटी आ ग्रामीण पिछड़ेपनक परस्पर सम्बन्ध रेखांकित करैत छथि। ई भाग उपन्यासकेँ सामाजिक भूगोल प्रदान करैत अछि, यद्यपि अनेक पात्रक प्रवेश सीमित व्याख्यात्मक विस्तार बनि रहल अछि।

तृतीय खण्ड : व्यवसाय, मित्रता आ विश्वासक आरम्भ

प्रेमक शहरी व्यवसाय, कर्मि आ कार्यालयी व्यवस्था एहि खण्डक आरम्भिक आश्रय अछि। गामक गरीब परिवारसँ जुड़ल विदुरक आगमन कथा-विन्यासमे वर्गीय दूरीकेँ व्यक्तिगत सम्बन्धमे बदलैत अछि। परिचय, आतिथ्य, साथ भोजन आ सम्मानक व्यवहारसँ लोकक बीच भरोसाक सम्भावना उपस्थित होइत अछि।

प्रेम आ विदुरक सम्बन्धकेँ केवल मालिक-आश्रितक समीकरणमे सीमित करब कठिन अछि; कथाकार एकरा मित्रताक आदर्शमे रूपान्तरित करबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा आर्थिक शक्ति आ सामाजिक प्रतिष्ठाक असमानता शुरूएसँ ओहि मित्रताकेँ जटिल बनबैत अछि। जे सम्बन्धकेँ पात्र सभ स्वाभाविक उदारता मानैत छथि, पाठक तकर भीतर निर्भरता आ अधिकारक अन्तर सेहो देख सकैत अछि।

एहि खण्डक विशेषता एतय अछि जे आगाँक विवादक बीज सादर स्वागत आ विश्वासक वातावरणमे पड़ैत अछि। घटना-विकासक दृष्टिसँ ई अत्यन्त उपयोगी संक्रमण अछि; कथाक दीर्घकालीन तनाव एहि आरम्भिक आत्मीयतासँ बढ़ैत अछि।

चतुर्थ खण्ड : पुरोहित, प्रतिष्ठा आ सामाजिक मध्यस्थता

पंडित कपिलेश्वर ठाकुरक परिचय द्वारा कथा धार्मिक प्रतिष्ठा, यजमानी, जातिगत व्यवहार आ ग्रामीण प्रभुत्वक अन्तरंग वृत्तमे प्रवेश करैत अछि। पात्रक विनम्रता आ परोपकारी व्यवहारक उल्लेख ओकरा एकरेखीय खलपात्र बनबासँ रोकैत अछि; ताहि संग पंडित-यजमान सम्बन्ध सामाजिक शक्ति-संरचनाक सूक्ष्म संकेत सेहो दैत अछि। गामक धार्मिक आ आर्थिक सम्बन्ध अलग-अलग कोठरीमे नहि रहैत अछि। जँ कियो पुरोहितक मार्फत निर्णय, आवागमन वा सामाजिक विश्वास स्थापित करैत अछि, तँ ओकर पाछाँ एकटा स्वीकृत परम्परा सक्रिय रहैत अछि। लेखक प्रचलित मर्यादाक भितरहि मनुष्यता आ सहयोगक मूल्य खोजैत छथि; मुदा रूढ़ि पर प्रत्यक्ष आलोचनाक स्थान सीमित अछि।

एहि खण्डमे संवादक विवेचनात्मक प्रकृति बहुत स्पष्ट अछि। पात्र काज करैत-करैत विचार व्यक्त करैत छथि; कखनो विचार घटनाकेँ गतिमान बनबैत अछि, कखनो घटना केवल विचारक उदाहरण भऽ रहि जाइत अछि। एहि दोसर स्थिति सँ कलात्मक घनत्व किछु शिथिल होइत अछि।

पंचम खण्ड : ग्रामीण-शहरी वातावरण आ अर्थनीति

एहि छोट खण्डक आरम्भमे गाम आ शहरक वातावरणक अन्तरपर केन्द्रित कथाकारक टिप्पणी अछि। शहरक सुविधा, गामक अभाव, सामूहिकता, रोजगारी, सेवा आ नागरिक व्यवहारक बीच तुलना खुलि कए अबैत अछि। समाजक नैतिक मूल्यांकनक संग भौतिक संसाधनक जिज्ञासा एतय जुड़ैत अछि।

प्रेमक कर्जा देबाक प्रसंग, बैंकसँ धन आनबाक योजना तथा ग्रामसुधारक आर्थिक आधार एहि अंशकेँ विशेष महत्त्व दैत अछि। सहायता केवल उपदेश बनि नहि रहय; ओकर लेल वित्तीय साधन, समय, ब्याज आ व्यवस्थापन आवश्यक अछि—ई समझ एहि प्रसंगसँ स्पष्ट होइत अछि। मुदा पूँजी जुटाबय आ देयता वहन करबाक वास्तविक जोखिम कथामे जतेक विस्तार चाही ततेक नहि पबैत अछि।

ई खण्ड समग्र रचनाक कार्यक्रममात्मक अन्तःस्वरकेँ अत्यन्त स्पष्ट करैत अछि। आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे समाज-सुधारक इच्छा कतेक वास्तविक संस्थागत तन्त्र बनि पबैत अछि आ कतेक नायकक उदारतापर निर्भर रहि जाइत अछि।

षष्ठ खण्ड : विदुरक प्रसंग आ विधिक संघर्ष

प्रेमक विरुद्ध दायर कएल गेल आरोप आ अदालतसँ सम्बन्धित कागज-विचार एहि खण्डक मुख्य तनाव अछि। विदुरक संग पूर्वक आत्मीयता स्मरण होइत रहैत अछि; तकर तुलना वर्तमान संदेह आ विरोधसँ भेला पर 'विश्वासघात'क बोध बलवती होइत अछि। सरकारी डेराक स्वामित्व, नोटिस, मुकदमा आ कागजात कथाकेँ परिवारक सीमासँ बाहर सार्वजनिक संस्थाक बीच लऽ जाइत अछि।

गांगुली बाबूक रूपमे सहानुभूतिपूर्ण परामर्श आ विधिक समझदारीक एक वैकल्पिक पात्र उपस्थित अछि। ई पात्र एकतरफा दुष्ट-संसारक विरुद्ध सामाजिक भरोसाक सम्भावना जोगबैत अछि। तथापि मुकदमाक अनेक व्यावहारिक बारीकी बयानक रूपमे आयल अछि; एहिसँ विधिक वातावरण बनैत अछि, मुदा पाठककेँ दस्तावेजी विवरण आ कथात्मक रोमांचक बीच संतुलनक प्रश्न उठय लगैत अछि।

लेखक एक विशेष आग्रह न्यायिक सत्यक जीत पर अछि। समूचा प्रकरण नायकक नैतिक प्रतिष्ठाकेँ संकटमे राखैत अछि, मुदा विरोधी पक्षक तर्कक स्वायत्तता अपेक्षाकृत कम अछि। उपन्यासक सामाजिक दृष्टि एतय सबल अछि, मनोवैज्ञानिक बहुपक्षीयता सीमित।

सप्तम खण्ड : किसानक खेत आ ग्राम्य हिंसाक संकेत

भोला बाबू फेकू राउत आ कृषि-सम्बद्ध प्रसंग एहि खण्डक माध्यमसँ ग्रामसमाजक श्रम-सम्बन्धक एक अलग संसार खोलैत अछि। चरैत पशु, फसलक क्षति, खेतक रखवाली, दबंग व्यक्तिक व्यवहार, क्षमायाचना तथा भयक वातावरण ई देखबैत अछि जे भूमि केवल उत्पादनक साधन नहि, प्रतिष्ठा आ टकरावक केन्द्र सेहो अछि।

शारीरिक हिंसा आ दबंगईक संकेतक बावजूद कथाकार समाधानक लेल व्यक्तिगत विवेक, धार्मिक भरोसा आ व्यवहारगत सुधारपर अधिक जोर दैत छथि। एतय किसानक राजनीतिक संगठन वा सामूहिक प्रतिरोधक कल्पना अपेक्षाकृत क्षीण अछि। श्रमिकक अपना स्वरकेँ जेतकेँ स्वतन्त्रता भेटितैक, पाठकक वर्गीय समझ ओतेक गहीर भऽ सकित छल।

पंचम खण्डक आर्थिक प्रस्ताव आ सप्तम खण्डक कृषि-अनुभवकेँ एकसंग पढ़ला पर उपन्यासक केन्द्रीय कठिनाई प्रकट होइत अछि : सदृच्छासँ विकासक प्रारम्भ सम्भव अछि, मुदा शक्ति-सन्तुलन बदले बिना न्याय सुनिश्चित नहि होइत अछि।

अष्टम खण्ड : आरोप, दफ्तर आ प्रमाणक राजनीति

कम्पनीक सामग्री, लेखा, जाँच आ कागजक माध्यमसँ प्रेमपर संकट गहीर होइत देखाओल गेल अछि। 'मि. खन्ना'सँ जुड़ल कार्यालयी प्रसंगमे अभियोग आ प्रतिवादक प्रक्रिया कथानककेँ यथार्थक एक नव स्तर पर लऽ जाइत अछि। प्रेमकेँ अपन बेगुनाही सिद्ध करबाक लेल प्रशासकीय भाषासँ जूझऽ पड़ैत अछि।

दफ्तरी कागजक सत्ता आ वैयक्तिक सत्यक बीच अन्तर एतय विशेष उल्लेखनीय अछि। कागज जँ तथ्यक साक्ष्य अछि तँ ओकर दुरुपयोग सम्भव अछि; एहेन दुविधा

आधुनिक संस्थागत जीवनक केन्द्रीय समस्या छी। एहि कारण ई खण्ड ग्राम-नगरक साधारण तुलना सँ आगाँ बढ़ि आधुनिक कार्यालयी सत्ताक आलोचनामे परिणत होइत अछि।

मुदा नायकक निर्दोषतापर कथाकारक तीव्र आस्था कखनो नाटकीय अनिश्चितताकें अल्प करैत अछि। पाठक घटनाक अन्तिम निष्कर्ष सँ बेसी एतय प्रक्रिया, अपमान आ मानसिक चोटक सूक्ष्म वर्णन देखऽ चाहैत अछि।

नवम खण्ड : शिक्षित युवा, स्त्रीक इच्छा आ विवाह

कथा-केन्द्रमे नायक, कामिनी आ मि. दरबालाक प्रसंग आवैत अछि। रेल-यात्रा, पुस्तक, पढ़ाइ-लिखाइ, पेशागत सम्भावना आ आपसी संवादसँ शिक्षित शहरी समाजक भिन्न लय उपस्थित होइत अछि। कामिनीक बौद्धिक आकांक्षा तथा विवाहक प्रश्न एकटा महत्वपूर्ण स्त्री-विषयक उपकथा रचैत अछि।

एहि अंशमे प्रेमकें केवल भावुक आकर्षण नहि, अधिकार, सहमति, मर्यादा आ भविष्यक चयनक प्रश्नक रूपमे देखबाक अवसर अछि। कामिनी अपन इच्छा व्यक्त करैत छथि; तथापि कथाक वर्णन-व्यवस्था कतेको ठाम पुरुष पात्रक नैतिक विचारक वर्चस्व कायम रखैत अछि। स्त्रीक मानसिक द्वन्द्व जँ ओकर अपन दृष्टिसँ अधिक विस्तार पबैत, तँ उपकथा अधिक बहुआयामी होइत।

मुख्य ग्रामोद्धार-कथा सँ ई प्रेम-विषयक शाखा दूर जाइत प्रतीत होइत अछि, मुदा एकर सामाजिक उपयोग अछि : शिक्षा आ शहरी पेशा संग पारिवारिक मर्यादाक टकराव उपन्यासक मूल नैतिक बहसकें दोसर पीढ़ी धरि विस्तृत करैत अछि।

दशम खण्ड : परिवार, उत्सव आ निजी सम्बन्धक परीक्षा

कामिनीक जन्मदिन, आगन्तुकक मिलन आ मि. दरबालाक स्वास्थ्य-चिन्ता एहि भागक आरम्भमे घरेलू जीवनक मानवीय रङ्ग प्रदान करैत अछि। उत्सवक वातावरण एकाएक रोग आ चिन्तासँ बदलैत अछि। एहन परिवर्तन उपन्यासमे निजी जीवनक अस्थिरता आ पारस्परिक देखभालक मूल्यकें सोझाँ अनैत अछि।

सम्बन्धक सतही प्रसन्नता, अन्तर्निहित आशंका, गुरु-शिष्य अथवा पीढ़ीगत अधिकार आ दाम्पत्य निर्णायक कठिनाईक बीच व्यक्ति स्वयं अपन नैतिक जिम्मेदारी चुनैत अछि। एहि खण्डक संवादसभ बारम्बार आदर्श स्थापित करबाक चेष्टा करैत अछि; मुदा पात्रक मौन, संकोच अथवा आत्म-विरोधक विस्तार किछु आओर रहित तँ अनुभूति अधिक विश्वसनीय बनित।

नवम आ दशम खण्डकें संयुक्त रूपसँ पढ़ला पर देखल जा सकैत अछि जे लेखकक सामाजिक नैतिकता खाली सार्वजनिक जीवन धरि सीमित नहि; विवाह आ परिवार ओकर दोसर परीक्षण-भूमि अछि।

एकादश खण्ड : तीर्थ-अनुभव सँ पुनरागमन धरि

अन्तिम खण्ड बनारस, विश्वनाथ-मन्दिर, धर्म-विश्वास, प्रवास आ असहाय व्यक्तिक प्रति सहानुभूतिक प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि। ई धार्मिक भौगोलिकता उपन्यासक ग्राम-सीमा कें व्यापक भारतीय सांस्कृतिक स्थलसँ जोड़ैत अछि। कष्टमे पड़ल मनुष्यक सहायता करबाक मूल्य लेखकक प्रारम्भिक मानवीय आग्रहसँ मेल खाइत अछि।

आखिरी पृष्ठसभमे प्रेम-मालती, विदुर, मणिकान्त, सुलेखा, आ पारिवारिक सम्बन्धक सूत्र पुनः एकत्र होइत अछि। नगरक व्यापार आ गामक आर्थिक सहयोगक बीच सन्तुलन बनबैत ग्रामसुधारक अभिलाषा अखन जीवित अछि। अन्त पूर्ण राजनीतिक परिवर्तनक दावा नहि करैत; ओ प्रतिदिनक व्यवहार, विश्वास आ सहायता सँ उत्पन्न आशापर टिकैत अछि।

अन्तक ई पुनरागमन अर्थपूर्ण अछि : आरम्भक यात्रा जतय गाम दिस छल, अन्तक यात्रा गामक प्रति दायित्वक पुनर्पुष्टि बनैत अछि। तथापि जटिल सामाजिक असमानता नैतिक सदिच्छासँ कतेक मिट सकैत अछि, ई प्रश्न खुलल रहैत अछि।

सामाजिक आलोचनाक प्रमुख प्रतिमान

गाम-शहर : द्वैध नहि, परस्पर निर्भरता

आरम्भिक वक्तव्य शहरक सम्पन्नता आ ग्रामक वंचनाक तीख विपर्यास रखैत अछि। मुदा कथामे प्रेमक व्यवसाय नगरमे अछि आ सुधारक लक्ष्य गाममे; आर्थिक साधन एक ठाम अर्जित होइत अछि, सामाजिक उपयोग दोसर ठाम चाहल जाइत अछि। तँ गाम आ शहर दुश्मन संसार नहि, परस्पर निर्भर आर्थिक तन्त्रक दू छोर छथि। एहि तथ्यसँ उपन्यासक घोषित नैतिक द्वैत अधिक जटिल बनि जाइत अछि। शहरकें केवल लोभक केन्द्र मानब आ गामकें केवल पवित्र सामूहिकता मानब—दुनू अत्युक्ति होएत; पाठक स्वयं एहि दू अवधारणाक बीच तनावक साक्षी बनैत अछि।

प्रेमक यात्रासभ केवल स्थानान्तरण नहि, सामाजिक चेतनाक आवागमन छथि। रेल-स्टेशन, होटल, दफ्तर, खेत आ आँगन एकरे कथाक्षेत्रक भिन्न-भिन्न मंच छथि। एहि दृश्य-परिवर्तनसँ लेखक आधुनिक मिथिलाक विस्थापन, प्रवासी आजीविका आ ग्रामक अधूरा सुविधासभक चित्र तैयार करैत छथि।

वर्गीय दायित्व, दान आ संरचनात्मक परिवर्तन

प्रेमक परोपकार अत्यन्त सदिच्छापूर्ण अछि। तथापि आर्थिक समर्थक हाथसँ सहायता पाबि रहल पात्रक स्थिति लेखकक आदर्शवादक आलोचनात्मक परीक्षण माँगैत अछि। जँ गांवक परिवर्तन एक समर्थ नायकक ऋण, सेवा, उपदेश अथवा नैतिक प्रेरणापर निर्भर अछि, तँ ग्रामवासीक स्वाधीन सामाजिक शक्ति कतेक विकसित होइत अछि? एहि उपन्यासक वर्गीय प्रश्न एतहि स्थित अछि।

ग्राम-विकासमे कर्जाक भूमिका, किसानक जोखिम, फसलक सुरक्षा, विद्यालयक उपलब्धता आ न्यायिक पहुँच परस्पर गाँथल प्रश्न छथि। एहि कारण सुधार केवल व्यक्तिगत पुण्यक फल नहि भऽ सकैत; सामूहिक निर्णय, पारदर्शी वित्त, न्यायिक सुरक्षा आ स्थानीय संस्थागत जवाबदेहीक जरूरत अछि। एहि मापदण्डपर लेखकक कल्पना प्रेरक होइतो किछु ठाम अपूर्ण देखाइत अछि।

जाति, धर्म आ सामाजिक पदानुक्रम

लेखकीय वक्तव्य जातिगत विद्वेष आ साम्प्रदायिक संकीर्णताक प्रतिरोधक स्पष्ट आकांक्षा दैत अछि। उपन्यासमे पुरोहित, सम्पन्न ग्रामीण, शिक्षक आ कृषकक सह-अस्तित्व समाजक पदानुक्रमक झलक उपस्थित करैत अछि। मुदा जातिक अनुभव पीड़ित पात्रक अपना स्मृति, भाषा आ संघर्षक रूपमे व्यापक स्थान नहि पबैत अछि। सामाजिक सद्भावक उपदेश आ जातिव्यवस्थाक शक्ति-विश्लेषण एक वस्तु नहि। एहि अन्तरक स्वीकारसँ कृतिक मानवीय अभिप्राय छोट नहि होइत, बल्कि ओकर ऐतिहासिक सीमाक पहचान होइत अछि।

न्यायपालिका आ दस्तावेजी सत्य

मुकदमा, नोटिस, शपथपत्र, दफ्तरक सामान, अभियोग आ प्रमाण सम्बन्धी प्रसंग आधुनिक सामाजिक यथार्थक महत्त्वपूर्ण पक्ष छथि। आर्थिक शक्तिक असमानता केवल खेतमे नहि, अदालत आ कार्यालयमे सेहो निर्णायक भऽ सकैत अछि। प्रेम पर लगल आरोपक प्रसंगमे उपन्यास व्यक्तिगत प्रतिष्ठाक टूटन आ संस्थाक निष्पक्षताक प्रश्न उठबैत अछि। तथापि अदालतक कथा प्रक्रियागत जटिलता सँ परिचित करैत काल कखनो अत्यधिक व्याख्यात्मक बनि जाइत अछि।

स्त्री-पात्र : सहचरितासँ स्वायत्तताक संघर्ष

मालती घरेलू संसार, सामाजिक सहायताक व्यवहार आ प्रेमक मानसिक बलक महत्त्वपूर्ण केन्द्र अछि। सुलेखा आ सुनीता परिवारक भीतर अपन सम्बन्ध-सम्पदा लऽ अबैत छथि। कामिनीक प्रसंग शिक्षा, पेशागत पहचान आ वैवाहिक चयनक प्रश्न जोड़ैत अछि। एहि व्यापक उपस्थिति बावजूद अधिकांश निर्णायक सार्वजनिक योजना पुरुष पात्रक नियन्त्रणमे रहैत अछि; ई उपन्यासक लैंगिक सीमा अछि।

विशेषतः कामिनीक प्रसंग देखबैत अछि जे शिक्षित स्त्रीक आकांक्षा केवल विवाहक वस्तु नहि, अपन इच्छा आ भविष्यक दावेदार अछि। तथापि ओकर स्वायत्तताकें कथावाचक जतेक अवकाश दैत छथि, ताहिसँ बेसी अवकाशक संभावना बनल रहैत

अछि। पितृसत्तात्मक सम्बन्धक आलोचना उपन्यासक भीतर सँ सम्भव अछि; एकरा बाह्य सिद्धान्त थोपबाक आवश्यकता नहि।

कथन-शिल्प, संवाद, भाषा आ शीर्षक-प्रतीक

बहुकेंद्रीय कथाविन्यासक शक्ति आ कठिनाई

दीर्घ आख्यानक पहिल उपलब्धि एकर बहुविस्तृत कथा-समाज अछि। प्रेम-मालतीक केन्द्र सँ विदुर, मणिकान्त-सुलेखा, ग्राम-पुरोहित, किसान, कार्यालयी जन, नायक-कामिनी आ तीर्थयात्रीक वृत्त धरि बढ़ैत कथा अलग-अलग सामाजिक ठाम जोड़ैत अछि। मुदा एक पात्रसँ दोसर पात्रक जीवनमे संक्रमण सभ ठाम समशक्तिशाली नहि। किछु उपकथा मुख्य विकास-रूपरेखा सँ दूर जा कए स्वतन्त्र नैतिक उपन्यास जकाँ लागैत अछि।

क्रमांकित खण्ड समग्र पाठकेँ पाठकीय विराम दैत अछि। कतहु खण्डक अन्त तत्कालिक भावनात्मक निष्कर्ष बनैत अछि, कतहु नवी कथा बिना पर्याप्त पूर्वसंकेतक उभरैत अछि। एहि संरचनाक सफल पक्ष जीवनक व्यापक दृश्य अछि, असफल पक्ष ढीलापन आ कथागत पुनरावृत्ति।

संवाद-प्रधान गद्य : जीवन्त बोली वा प्रवचन?

संवादसभ पात्रक पारस्परिक समीपता स्थापित करैत अछि। प्रश्नोत्तर, सम्बोधन, क्षमायाचना, सलाह आ आश्वासन मार्फत पाठक ग्रामीण आ शहरी व्यवहारक अनेक रङ्ग पबैत अछि। मुदा कएक स्थानपर संवाद व्यक्तिक स्वभाव सँ बेसी लेखकक नैतिक मतक वाहक होइत अछि। एहेन स्थिति मे पात्रक आवाज एक-दोसरासँ पर्याप्त पृथक नहि रहि पबैत। ई बात विशेषतः प्रेमक समाज-सुधार सम्बन्धी भाषण आ किछु विवाद-निराकरण प्रसंगपर लागू होइत अछि।

नैतिक विचारकेँ कथा-बिन्दु बनयबाक उपन्यासक अपन परम्परा अछि। मुदा उपन्यासक कलात्मकता त्यखन बढ़ैत अछि जखन विचार पात्रक कर्म, असफलता, संकोच अथवा गलत निर्णयसँ स्वतः उत्पन्न हो। ‘अनठिया कुकुर’मे सफल प्रसंग ओ छथि जतय

आर्थिक निर्णयक वास्तविक परिणाम देखाइत अछि; अपेक्षाकृत कमजोर प्रसंग ओ छथि जतय कथानक परिणाम कहबाक बदला अभिप्रेत सदाचार समझाबऽ लगैत अछि।

भाषिक स्तर आ सम्पादन-संभावना

पाठमे बोलचालक मैथिली, सामाजिक सम्बोधन, कार्यालयी शब्दावली, रेल-दफ्तर सम्बन्धी आधुनिक पद आ धार्मिक शब्दभण्डार एक संग उपस्थित अछि। एतयसँ कृतिक सामाजिक संसारक विविधता बढ़ैत अछि। संगहि एहन बहुभाषिक शब्दावलीक एकसमान वर्तनी आ विराम-चिह्न पाठक-सुगमताक लेल आवश्यक अछि। भविष्यक समालोचित संस्करणमे पात्रनाम, संवाद-चिह्न, प्रसंग-विभाजन आ तकनीकी पदक रूपक सम्पादकीय एकरूपता उपयोगी रहत।

भाषाक जीवन्तता ओकर स्थानीय लहजासँ बनैत अछि। सम्पादनक लक्ष्य एहि लहजाकेँ हिन्दी अथवा कोनो बाह्य मानकीकरणमे विलीन करब नहि, बल्कि लेखकक अपन मुहावरा आ पात्रगत स्वरकेँ स्पष्ट रूपमे पाठक धरि पहुँचायब होयबाक चाही।

‘अनठिया कुकुर’ शीर्षकक अर्थ-संभावना

शीर्षकमे ‘कुकुर’क बिम्ब सामाजिक व्यवहारक रूपक बनि सकैत अछि। लेखकक आरम्भिक वक्तव्य शहरक आकर्षण, स्वार्थक लपेट, ग्राम-सम्बन्धक क्षरण आ अवसरवादक चिंता व्यक्त करैत अछि; कथा मे सेहो विश्वासभंग, लूट, छल आ सार्वजनिक प्रतिष्ठाक संकट उपस्थित अछि। एहि प्रसंगसभक आलोकमे शीर्षककेँ समाजक अनियन्त्रित स्वार्थक व्यंग्यात्मक चिह्नक रूपमे पढ़ब सम्भव अछि।

मुदा एकरे एकमात्र निश्चित व्युत्पत्ति अथवा कथाभितरक कोनो एक पात्रक नामकरण मानि लेब अनुचित होएत। शीर्षकक रूपकात्मक शक्ति एहि कारणो महत्त्वपूर्ण अछि जे कृति सरल पशु-कथा नहि, मानवीय सम्बन्धक नैतिक संघर्ष प्रस्तुत करैत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक परम्परामे तुलनात्मक स्थिति

बालक उपस्थिति, विद्यालयक चर्चा वा शैक्षिक सुधारक उद्देश्य मात्रसँ कृति बाल-साहित्य नहि बनैत अछि। बाल-साहित्यक पाठक-समुदाय, कथात्मक दृष्टिबिन्दु, भाषिक

गति, कल्पनाशीलता, आयु-अनुरूप जटिलता तथा अनुभवक केन्द्रकें पृथक देखबाक आवश्यकता अछि। ‘अनठिया कुकुर’मे दीर्घ मुकदमा, व्यावसायिक ऋण, भूमि-विवाद, दाम्पत्य आ वयस्क प्रेमक जटिलता मुख्य कथात्मक तत्त्व छथि। एहि कारण एकर प्राथमिक पाठक-वर्ग वयस्क सामाजिक उपन्यासक पाठक छथि।

विदेहक ‘शिशु उत्सव’ संग्रह-व्यवस्थासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली बाल-साहित्य एकमात्र नीतिकथा तक सीमित नहि। ओतय शिशुगीत, बाल-कविता, विहनि कथा, चित्रकथा, बाल-उपन्यास, नाटक, विज्ञानक लोकप्रिय प्रस्तुति आ अनुवादित चित्रात्मक पोथीक भिन्न-भिन्न विधानक सूची उपलब्ध अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिलीमे बालक लेल रचनाक भिन्न परम्परा डिजिटल स्तरपर परस्पर तुलनीय रूपेँ संकलित कएल जा रहल अछि।

विदेहक सूचीमे प्रीति ठाकुरक अनूदित ‘छोट आ पैघ’क पहिल संस्करण २००२ तथा ‘माल-जाल आ जानवर दिस देखू’क पहिल संस्करण २००३ उल्लिखित अछि। ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ (२००८), ‘मैथिली चित्रकथा’ (२००९), ‘मिथिलाक लोकदेवता’ (२०१०) आ ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’ (२०१२)क सूची चित्रकथा, लोकस्मृति आ शास्त्रीय कथाक बाल-रूपान्तरणक क्रमक निदर्शन दैत अछि। ई काल-चिह्न सम्बन्धित सूची-प्रविष्टिक छथि; एकर आधारपर समूचा मैथिली बाल-साहित्यक प्रथमत्व वा सम्पूर्ण कालक्रम निर्धारित नहि कएल जा सकैत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘नै धाड़ैए’ आ जगदानन्द झा ‘मनु’क ‘चोनहा’ केँ विदेह बाल-उपन्यासक रूपमे चिन्हित करैत अछि; नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘स्वर्ण कमल’ सेहो स्पष्टतः बाल-उपन्यासक रूपमे अंकित अछि। एकरे उलट ‘अनठिया कुकुर’ सामान्य उपन्यासक वर्गमे अछि। एतय सभसँ विश्वसनीय तुलनात्मक तथ्य विषयक समानता नहि, ग्रन्थ-सूचीमे स्पष्ट विधागत विभाजन अछि। ‘स्वर्ण कमल’ सँ रचनाकारक बाल-पाठकक प्रति रुचि प्रमाणित होइत अछि; ‘अनठिया कुकुर’ सँ ओही लेखकक वयस्क सामाजिक आख्यानक विस्तार।

नीता झाक 'बिलाइ मौसी' बाल-लघुकथा-संग्रह, मुन्नाजीक 'तीन टा बाल नाटक' तथा प्रीति ठाकुरक चित्रकथा-अभियान बाल-पाठकक लेल विधागत विविधता दर्शबैत अछि। एहि उदाहरणसभक विशिष्ट कथा-चरित्र अथवा भाषिक गुणवत्तापर एतय निश्चित निर्णय नहि देल जाइत अछि, कारण तुलना लेल प्रकाशित ग्रन्थ-सूची साक्ष्य अछि, ओहि समस्त मूल पोथीक पंक्तिवार तुलनात्मक पाठ नहि। तथापि परम्पराक वर्णनक लेल एहि विधागत तथ्यक उपयोग वैध अछि।

बाल-साहित्यक इतिहास लिखबाक समय लोकखिस्सा, मौखिक संस्कार, शिशुगीत, विद्यालयी साहित्य, बाल-उपन्यास आ डिजिटल चित्रकथाकें एकरे रेखीय विकासक रूपमे देखब पर्याप्त नहि। एहि सभ विधाक पाठक-आयु, पाठ-संस्कृति, वितरण आ कलात्मक अपेक्षा अलग छथि। 'अनठिया कुकुर'क ग्रामीण शिक्षाक आग्रह बालक सामाजिक परिस्थितिसँ संवाद स्थापित करैत अछि; मुदा विधागत आधारपर ई बाल-साहित्यक इतिहासक मुख्य वस्तु नहि, ओकर पड़ोसी सामाजिक गद्यक अध्ययन-वस्तु अछि।

रचनाकारक अन्य कृतिसभक सापेक्ष स्थिति

विदेहक पोथी-सूचीमे 'गामघर' कथा-संग्रह, 'सुजाता', 'गुदरीक लाल', 'सुकन्या' उपन्यास, 'आडम्बर' कथा-संग्रह, 'दिल्लीक पार्क' शब्द-चित्र, 'परिवार' संस्मरणात्मक उपन्यास आ 'स्वर्ण कमल' बाल-उपन्यास रूपमे उल्लिखित अछि। एहि सूचीसँ रचनाकारक गद्य-विधागत विस्तृति ज्ञात होइत अछि। 'अनठिया कुकुर'क शहरी-ग्रामीण आवागमन, परिवार, रोजगार आ नैतिक संघर्षक रुचिकें एहि व्यापक रचनाकार-परिप्रेक्ष्यमे रखब उपयोगी अछि।

मुदा पोथीक शीर्षकसँ मात्र विषयक समानता वा प्रभावक सिद्धान्त सिद्ध नहि होइत। उदाहरणार्थ 'गामघर' शीर्षक ग्राम्य विषयक सङ्केत दैत अछि, मुदा मूल कथा पढ़ने बिना ओकर पात्रक स्वभाव आ 'अनठिया कुकुर'क संग ठोस साम्य घोषित नहि कएल जा सकैत अछि। आलोचनामे अनुमानक ई सीमा स्वीकार करब आवश्यक अछि। एहि

शोध-निबन्धक निष्कर्ष 'अनठिया कुकुर'क प्रत्यक्ष मुद्रित पाठपर अधिक, लेखकक आन कृतिसँ तुलनाक सन्दर्भमे विदेहक सत्यापित ग्रन्थ-सूचीपर आधारित अछि।

आलोचनात्मक मूल्यांकन : उपलब्धि आ सीमा

कृतिक पहिल उपलब्धि कथाकारक व्यापक सामाजिक चिन्ता अछि। प्रेम आ मालतीक परिवारक निजी जीवन समस्त कथा नहि; ओकर विस्तार गरीब किसान, शिक्षक, पुरोहित, शहरी कर्मचारी, अभियुक्त, वकील-न्यायालय, शिक्षित युवती आ धार्मिक तीर्थयात्री धरि अछि। एहि सामाजिक विस्तारमे मैथिल जीवनक आर्थिक आ नैतिक प्रश्न परस्पर सम्बन्धित बनैत अछि।

दोसर उपलब्धि ग्रामसुधारक प्रश्नकेँ केवल भावुक संवेदनासँ आगाँ आर्थिक लेन-देन, रोजगार, कर्ज, भूमिक विवाद आ न्यायिक सुरक्षासँ जोड़ब अछि। एहि कारण उपन्यासक यथार्थदृष्टि अनेक ठाम ठोस होइत अछि। तेसर उपलब्धि संवादक सहज प्रवाह अछि, जे पात्रसभक परस्पर घनिष्ठता आ विश्वासक टूटन पाठककेँ अनुभव करबैत अछि।

कृतिक महत्त्वपूर्ण सीमा नैतिक आदर्शवादक आवृत्ति अछि। प्रेमक सदाशयता कखनो अतेक निर्णायक होइत अछि जे दोसर पात्रक प्रेरणा आ असमंजसक स्वतंत्र गहराइ कम भऽ जाइत अछि। खल-वृत्तिक पात्रक मानस जँ अपेक्षाकृत अधिक खुलित, तँ सामाजिक संघर्ष नाटकीय विरोधाभाससँ समृद्ध होइत।

दोसर सीमा कथाकेन्द्रक असमानता अछि। मुख्य ग्राम-नगर धुरी सँ पृथक युवा-प्रेमक शाखा अपन मूल्य राखितो कथा-विन्यासमे अपेक्षित संगति माँगैत अछि। तेसर सीमा स्त्री-पात्रक सीमित निर्णायक स्थान अछि। मालती आ कामिनी महत्त्वपूर्ण छथि, मुदा बहुत रास सामाजिक परिणाम पुरुषक प्रस्ताव आ निर्णयक आसपास संगठित रहैत अछि। चारिम सीमा सामाजिक संरचनाक समाधानमे व्यक्तिगत उदारता पर अत्यधिक भरोसा अछि।

एहि सभ आलोचनाक बादो ‘अनठिया कुकुर’ केँ केवल उपदेशात्मक गद्य कहि खारिज करब अन्याय होएत। एहि पोथीक लोकजीवन, भाषिक परिवेश, परिवारक सम्बन्ध, आधुनिक दफ्तरक संकट आ ग्रामोद्धारक ईमानदार इच्छा मैथिली सामाजिक उपन्यासक चर्चामे विशिष्ट प्रश्न उपस्थित करैत अछि। साहित्यिक मूल्यांकनक काम एहि सामाजिक अभिलाषाक सम्मान करैत ओकर कलात्मक निर्वाहक कठोर परीक्षण करब छी।

निष्कर्ष

‘अनठिया कुकुर’ एकटा सामाजिक उत्तरदायित्व केन्द्रित मैथिली उपन्यास अछि, जकर कथात्मक प्रेरणा गाम-शहरक दूरीकेँ मानवीय सहयोगसँ पाटबाक विश्वासमे स्थित अछि। प्रेम-मालतीक जीवन, विदुरक संग सम्बन्धक विचलन, किसानक असुरक्षा, कागजी न्याय आ युवापीढ़ीक भावनात्मक संघर्ष उपन्यासक अलग-अलग बहस नहि; सभ मिलि प्रश्न करैत अछि जे आधुनिक समाजमे भरोसा, मर्यादा, धन आ न्यायक सम्बन्ध केहन हो।

ई कृति बहुत किछु व्यक्तिक नैतिक सुधरसँ प्राप्त करबाक आशामे लिखल गेल प्रतीत होइत अछि। सामाजिक दृष्टिसँ ई आशा महत्त्वपूर्ण अछि; साहित्यिक दृष्टिसँ इएह एकर सीमा सेहो बनि जाइत अछि, जखन जटिल संरचनात्मक परिस्थिति सहज सद्भावक निष्कर्षमे बदलि जाइत अछि। उपन्यासक वास्तविक योगदान एहि विरोधाभासक संग पढ़लापर बेसी स्पष्ट होइत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक विकासक सन्दर्भमे एकर स्थान सीधा बाल-उपन्यासक नहि, बल्कि ओहि वयस्क सामाजिक साहित्यक अछि जे शिक्षाक अवसर आ बालक भविष्यक परिस्थिति पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि। लेखकक ‘स्वर्ण कमल’क विधागत पृथक पहचान एकरा आरो स्पष्ट करैत अछि। एहेन भेद राखि कए कएल गेल अध्ययन साहित्येतिहास आ पाठालोचन दुनू लेल अधिक विश्वसनीय होइत अछि।

१.३६. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — सुजाता

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

नारी-अस्मिता, सामाजिक नियन्त्रण आ प्रशासनिक नैतिकता

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'सुजाता' एकटा एहन लघु उपन्यास अछि जाहिमे नायिकाक निजी जीवन आ सामाजिक-प्रशासनिक जीवन परस्पर जुड़ल अछि। कथाक आरम्भ पारिवारिक विवाह-व्यवस्था, मध्य विधवापन, पुनर्विवाहक प्रश्न आ जीविकोपार्जन, आ उत्तरार्द्ध कार्यालयी अनियमितता, महिला-कर्मचारीक शोषण आ प्रतिरोधक प्रसंगसँ बनैत अछि। एहि शोध-निबन्धमे कथाक तेरह क्रमाङ्कित अंश अलग-अलग पढ़ल गेल अछि; पात्र-रचना, कथावाचकक नैतिक स्थिति, मिथिलाक सामाजिक मनोविज्ञान, भाषिक रूढ़ि, दृश्यात्मकता, कथोपकथन आ उपसंहारक मूल्यांकन कएल गेल अछि। मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलना करैत ई स्पष्ट कएल गेल अछि जे 'सुजाता' स्वयं बाल-उपन्यास नहि, मुदा एकर पाठसँ शिक्षा, कर्तृत्व, लैङ्गिक समानता आ संस्थागत न्याय सन विषयपर किशोर-पाठकक अनुकूलनक सम्भावना अलगसँ खुलैत अछि। लेख केवल मूल पोथीक मुद्रित पाठ आ विदेहक निर्दिष्ट साहित्यिक अभिलेख-सामग्रीपर आधारित सन्दर्भ देइत अछि।

पोथीक परिचय आ विधागत स्थिति

'सुजाता'क शीर्षक-पृष्ठपर एकरा स्पष्ट रूपसँ “मैथिली उपन्यास” कहल गेल अछि। लेखक नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' छथि; प्रकाशकक नाम श्रीमती अमल देवी, भीखनपुर, भागलपुर देल अछि। समर्पण-पृष्ठ पर श्री अमरेश चन्द्र मिश्रक नाम अछि। डॉ. अमरनाथक हस्ताक्षरित भूमिकापर ७ जनवरी २००६ केर तिथि छपल अछि। उपलब्ध मूल प्रतिमे निश्चित प्रथम प्रकाशन-वर्ष अलगसँ पुष्ट नहि भऽ सकल अछि; तँ भूमिकाक तिथिकेँ प्रकाशन-वर्ष मानि लेब पाठ-समालोचनाक दृष्टिसँ उचित नहि। मूल आख्यान मुद्रित पृष्ठ १ सँ ८० धरि चलैत अछि आ क्रमाङ्कित तेरह अंशमे विभाजित अछि।

विधाक प्रश्न एहि आलोचनाक आधार अछि। एकर पात्र सभ मुख्यतः वयस्क छथि, आ विवाह, दहेज-जकाँ आर्थिक विनिमयक सामाजिक दबाव, यौन-नैतिकतासँ जुड़ल सामाजिक दृष्टि, विधवाक पुनर्विवाह, रोजी-रोटी, कर्मचारी-राजनीति, कदाचार आ उच्चाधिकार-कर्मचारी सम्बन्धक प्रसंग मूल कथाक केन्द्र अछि। बाल-उपन्यासमे अपेक्षित बाल-दृष्टि, बाल-पात्रक नेतृत्व, बाल-मनक अनुरूप कथाविस्तार आ आयु-सापेक्ष कथन-शैली एतय केन्द्रीय रचनात्मक सिद्धान्त नहि बनेत। लेखकक ‘स्वर्ण कमल’कें विदेहक बाल-साहित्य सूचीमे ‘बाल उपन्यास’ आ ‘सुजाता’कें गद्य-सूचीमे ‘उपन्यास’ कहि अलग-अलग वर्गीकृत कएल गेल अछि। ई वर्गीकरण स्वयं प्रमाणक रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि।

भूमिका लेखकक काव्यात्मक अभिरुचि आ समाज-सुधारवादी दृष्टिक चर्चा करैत अछि। लेखक अपन आरम्भिक निवेदनमे कथाकें सत्य घटनापर आधारित कहि पात्र आ स्थानक नाम काल्पनिक बतबैत छथि। ई उपन्यासक भीतर लेखकक आत्मप्रतिपादन अछि; स्वतंत्र ऐतिहासिक सत्यापनक प्रमाण नहि। समीक्षकक लेल महत्त्वपूर्ण बात ई थिक जे लेखक कथा आरम्भ होएबासँ पहिनहि ओकरा नैतिक संघर्षक दस्तावेजक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। एहि कारण पाठकक सहानुभूति पहिनहि सुजाताक पक्षमे व्यवस्थित होए लगैत अछि।

आलोचनात्मक समस्या आ प्रमुख प्रतिपाद्य

एकटा मूल प्रश्न उठैत अछि : की ‘सुजाता’क सामाजिक चेतना कलात्मक उपन्यास-रूप पबैत अछि, अथवा कखनो-कखनो लेखकक सुधारवादी उद्देश्य पात्र आ घटनाक जटिलतापर भारी पड़ि जाइत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर द्विमुखी अछि। नायिकाक जीवनक प्रसंग—शिक्षा, विवाह, पति-वियोग, पुनर्विवाहक विकल्प, आर्थिक निर्भरता समाप्त करबाक प्रयास आ नौकरीमे अधिकार-चेतना—अपन क्रमिक विकाससँ सामाजिक यथार्थक जीवित रूप बनबैत अछि। मुदा पात्रक नैतिक विभाजन, खल-पात्रक बारम्बार नकारात्मक चित्रण, उपदेशात्मक संवाद आ अन्तमे प्रशासकीय उपायसँ समस्याक तेजीमे समाधान—एहि सबमे कथा किछु सरलीकृत सेहो भऽ जाइत अछि।

एहि अध्ययनमे तीन स्तर एक-दोसरासँ अलग राखल गेल अछि : पहिल, पोथीमे साफ-साफ वर्णित घटना अथवा वाक्य; दोसर, ओहि पाठसँ निकलैत आलोचनात्मक व्याख्या; तेसर, मैथिली बाल-साहित्यक क्षेत्रमे विदेहक सूची आ शोध-लेखसँ प्राप्त तुलनात्मक तथ्य। कथा-वर्णनकेँ स्वतन्त्र इतिहास, आ सन्दर्भ-सूचीमे कृति-नामक उपस्थिति मात्रकेँ सम्पूर्ण कृतिक कथानकक प्रमाण मानल नहि गेल अछि। मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठाङ्कक सहायतासँ प्रसंगक परीक्षण सम्भव अछि।

समग्र कथा-विकास : निजी दुःखसँ सार्वजनिक प्रतिरोध धरि

कथा रामकान्तक पारिवारिक संसार आ हुनक बेटा पंकजक विवाहक प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि। शिक्षा प्राप्त करैत पंकज सरकारी नौकरी पबैत छथि। दोसर दिस उमाकान्तक परिवारमे जनमल सुजाता निर्धनताक बीच पढ़ाइ, घरक दायित्व आ सामाजिक सम्मानक अभ्यास करैत छथि। विवाहक प्रस्ताव आ आर्थिक हैसियतपर विमर्शक मध्य दुनूक विवाह सम्पन्न होइत अछि। आरम्भिक दाम्पत्य जीवन एक प्रकारक आशावादी मध्यवर्गीय स्वप्न रूपमे प्रस्तुत अछि; यात्राक दृश्य आ परस्पर स्नेह एहि स्थितिक विस्तार करैत अछि।

उपन्यासक पहिल पैघ मोड़ पंकजक अकाल मृत्युसँ अबैत अछि। सुजाताक जीवन एकाएक संकटमे पड़ैत अछि। सास-ससुर, माय-बाप, समाजक विधवा-सम्बन्धी पूर्वाग्रह, अपमानक आशङ्का आ आर्थिक चिन्ता—सभ एकसाथ उपस्थित होइत अछि। सुजाता अपन इच्छा आ अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि, मुदा हुनक निर्णय एकरेखीय नहि अछि : पारिवारिक दबाव, सामाजिक बदनामी, आत्मसम्मान आ जीवनक व्यवहारिक जरूरत एक-दोसरासँ टकराइत अछि। पति-वियोगक अनुभव अन्ततः हुनका आत्मनिर्भरता दिस धकेलैत अछि।

आगाँ सरकारी कार्यालयक परिसर दोसर प्रमुख कथास्थल बनैत अछि। पंकजक सेवासँ जुड़ल प्रावधानक आधारपर सुजाताकेँ नौकरीक अवसर भेटैत अछि। नव कर्मचारीक रूपमे ओ अफसरशाहीक व्यवहार, कागजी प्रक्रिया, कर्मचारीक जाल आ अनुचित

आचरणसँ सामना करैत छथि। कलावती, सुनीता, नेता कहल जाएवाला पात्र, कार्मिक पदाधिकारी आ उच्चाधिकारीक प्रसंगसँ कथा निजी जीवनक संकटकेँ संस्थागत अन्यायक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि। अन्तिम चरणमे व्यक्तिगत साहस, सामूहिक सहयोग आ प्रशासनिक हस्तक्षेपक सहायतासँ परिवर्तनक सम्भावना रेखाङ्कित होइत अछि।

तेरह क्रमाङ्कित अंशक पृथक पाठविश्लेषण

अंश १ : परिवार, पुरुष-उत्तराधिकार आ विवाहक तैयारी

फागुनक परिवेश, गामक ध्वनि आ घरक गतिविधिसँ कथा आरम्भ होइत अछि। ऋतुक चित्तरंग वर्णन पाठकेँ भावात्मक सहजता दैत अछि। रामकान्तक मध्यमवर्गीय परिवार, हुनक बेटा पंकजक अध्ययन आ नौकरीक उपलब्धि, आ बेटाक विवाहक चिन्ता—एहि सबसँ सामाजिक जीवनक ओ संरचना बनैत अछि जाहिमे विवाह केवल दू व्यक्तिक निजी सम्बन्ध नहि, पारिवारिक प्रतिष्ठा आ भविष्यक योजना सेहो अछि।

पंकजक पढ़ाइ, नौकरी आ आयक चर्चा बारम्बार भौतिक सुरक्षा आ विवाह-बाजारक सम्बन्ध प्रकट करैत अछि। बेर-बेर “नीक” रोजगार, परिवारक योग्यता आ गृहस्थ जीवनक सन्तुलनक चर्चा एहि वर्गीय मानसिकताकेँ स्पष्ट करैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ध्यान देबाक बात ई अछि जे विवाहक शुरुआत पुरुषक उपलब्धिसँ परिभाषित होइत अछि; नायिका एखन कथामे उपस्थित नहि। ई विलम्ब बादमे सुजाताक केन्द्रीयताकेँ अधिक अर्थपूर्ण बनबैत अछि।

अंश २ : सुजाताक बाल्य, श्रम आ शिक्षा

एहि अंशमे सुजाताक परिवार आ संस्कार परिचित कराओल गेल अछि। उमाकान्तक घरक आर्थिक अभाव, खेती-पथारी आ सीमित साधन कथा-संरचनाक मूल आधार अछि। सुजाता अपन बाल्यसँ अध्ययनशील, सुशील आ घरक काजमे निपुण रूपमे प्रस्तुत छथि। औपचारिक शिक्षा आ घरेलू श्रमक दोहरा दायित्व स्त्रीक सामाजिक निर्माणक महत्वपूर्ण सूचक अछि।

लेखक एक दिस बेटीक पढ़ाईकेँ उपलब्धि मानैत छथि; दोसर दिस ओकर आदर्श चरित्रक प्रमाण घर-परिवारक सेवा, धर्मभावना आ सामाजिक स्वीकृतिमे सेहो खोजैत छथि। एतय सशक्तीकरण आ परम्परागत स्त्री-आदर्शक द्वन्द्व देखब आवश्यक अछि। सुजाताक योग्यताकेँ केवल “गुणी कन्या”क सूचीमे सीमित नहि पढ़ि ओकरा विवाह-बाजारक अपेक्षासँ बाहर अपन ज्ञान-कर्मक स्वतन्त्र आधार मानल जा सकैत अछि।

अंश ३ : विवाहक अर्थशास्त्र, बातचीत आ वर्ग-संस्कृति

पंकजक विवाह लेल चलैत बातचीत घरक आर्थिक सीमासँ जुड़ैत अछि। बरियात, साधन, खर्च, आदर्श विवाह आ व्यवहारिक प्रतिष्ठाक बीच विचारक आवागमन देखाइत अछि। रामकान्त बाहरी आडम्बरक विरुद्ध आदर्शक बात करैत छथि, मुदा पारिवारिक प्रतिष्ठा, लोक-लाज आ आन पक्षक चिन्ता सामाजिक व्यवहारकेँ जटिल बनबैत अछि।

एहि अंशक वास्तविक उपलब्धि विवाहकेँ प्रेमक निष्कलुष घटना मानबाक बदला श्रेणी, सम्पत्ति, पारिवारिक आत्मसम्मान आ लोकमतक क्षेत्रक रूपमे देखेनाइ अछि। मुदा पात्र सभक संवाद कखनो सभामे भाषण सन होए लगैत अछि; एहि प्रसंगमे कथोपकथनक स्वाभाविकता घटैत अछि। आधुनिक समालोचनाक दृष्टिसँ ई विवाहक वस्तुकरण-विरोधी स्वरक संग उपदेशात्मक शिल्पक एकटा सम्मिलित उदाहरण अछि।

अंश ४ : विवाहानन्तर यात्रा, प्रेम आ आसन्न वियोग

विवाहक बाद पंकज आ सुजाताक चतुर्थी, यात्रा, भेंट आ प्रेम-स्नेहक प्रसंग पाठकेँ निजी जीवनक निकट अनैत अछि। दृश्यात्मक परिवेश आ दाम्पत्यक अपनापन सुजाताकेँ केवल सामाजिक प्रश्नक प्रतीक नहि रहि अनुभवशील मनुष्य बनबाक अवसर दैत अछि। विवाहक धूमधाम आ बाह्य प्रबन्धक पाछाँ दाम्पत्यक निजी अनिश्चितता सेहो उपस्थित अछि।

यात्रा-संवेग, सौन्दर्य-वर्णन आ प्रेमक आदर्शीकरणक उद्देश्य सम्भवतः आगामी दुःखक घनत्व बढ़ेबाक अछि। तथापि पात्रक निजी बातचीतक मनोवैज्ञानिक गहराई किछु सीमित अछि; प्रेमक भाव वर्णनकर्ताक टिप्पणीसँ अधिक स्थापित होइत अछि, स्वयं

पात्रक सूक्ष्म अन्तर्द्वन्द्वसँ कम। ई अंश उपन्यासक भाव-भूमिकासँ कथाक संकट-भूमि दिस सेतु अछि।

अंश ५ : गृहस्थ जीवनक अन्तरङ्गता आ भङ्गुर सुख

विवाहक बाद नव-दाम्पत्यक गृहस्थ दिनचर्या, पंकजक कार्यालय, सुजाताक घर-प्रबन्ध आ परस्पर देखभालक चित्रण होइत अछि। कथक छोट-छोट व्यवहारिक सूचना दैत छथि; एहि कारण सुखक अनुभूति भावात्मक घोषणाक बदला दिनचर्याक क्रियामे सेहो व्यक्त होइत अछि।

कथानकक दृष्टिसँ एहि अंशक संक्षिप्तता महत्वपूर्ण अछि। ई सुख स्थिर होएबासँ पहिने टूटबाक आशङ्का पैदा करैत अछि। सुजाताक व्यक्तित्वमे सेवा, स्नेह आ जिम्मेवारीक बहुलता अछि; मुदा अपन इच्छा-विचारक स्वतन्त्र विस्तार एखन सीमित अछि। आगामी अंशमे विधवापन एहि असन्तुलनकें प्रश्नांकित करैत अछि।

अंश ६ : पंकजक मृत्यु, शोक आ असुरक्षाक संस्थागत रूप

पंकजक आकस्मिक मृत्युसँ कथा निर्णायक मोड़ लैत अछि। घुमबाक प्रसंगक बाद मृत्यु-समाचार, परिवारक शोक, सुजाताक असहाय अवस्था आ जीवन-निर्वाहक चिन्ता एकसाथ प्रस्तुत होइत अछि। लेखक दुःखकें केवल करुण दृश्य नहि बनबैत छथि; पति-आश्रित सामाजिक व्यवस्थामे नारीक सुरक्षा कतेक नाजुक अछि, ई सेहो देखबैत छथि।

एहि अंशमे सुजाताक भविष्य सम्बन्धी सलाह, माय-बाबूक समर्थन, सास-ससुरक प्रतिक्रिया आ लोकक हस्तक्षेप अलग-अलग नैतिक स्थिति खोलैत अछि। किछु पात्र धार्मिक चर्चा आ सामाजिक रूढ़ि द्वारा विधवाक जीवन-सीमाकें स्वाभाविक बनबैत छथि। आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे विधवाक मनक निज कष्ट आ समाजक ओकर जीवनपर नियन्त्रणमे कोन आवाज अधिक बलशाली होइत अछि। सुजाताक आवाज आरम्भमे दबैत अछि, मुदा एहि दबावसँ आगाँ प्रतिरोधक जरूरत जन्म लैत अछि।

अंश ७ : विधवा-पुनर्विवाह, स्त्री-अधिकार आ समाजक दोहरा मापदण्ड कथावाचक एतय समाजक पुरुषप्रधान स्वरूपपर प्रत्यक्ष टिप्पणी करैत छथि। विधुर पुरुषक पुनर्विवाह सामाजिक रूपसँ सामान्य मानल जाइत अछि, मुदा विधवाक पुनर्विवाहक विकल्प निन्दा, कुल-प्रतिष्ठा आ सामाजिक दण्डक आशङ्कासँ घेरल जाइत अछि। एहि तुलना द्वारा कथक लैङ्गिक न्यायक प्रश्नकेँ उपन्यासक मूल बहस बनबैत छथि।

एहि अंशक शक्ति सार्वजनिक तर्कक स्पष्टतामे अछि। कमजोर पक्ष ई अछि जे कथावाचकक निश्चयात्मक न्याय-वाक्य कखनो पात्र सभक अन्तर्मनक बहुस्तरीयता कम करैत अछि। तैयो, आर्थिक आ भावनात्मक असुरक्षाकेँ समाजक नैतिक दबावसँ जोड़ि देखेनाइ मैथिली सामाजिक उपन्यासक सुधारवादी परम्परामे महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप अछि।

अंश ८ : पुनर्विवाहक प्रस्ताव, नातेदारीक राजनीति आ निर्णयक स्वायत्तता लुत्ती झाक हस्तक्षेप, घरेलू सम्बन्धक तनाव, नरेश आ रमेशक प्रसंग तथा परिवार सभक बीच चलैत बातचीत एहि अंशकेँ संवादप्रधान बनबैत अछि। विवाह-संस्थाक भीतर स्त्रीक भविष्यक निर्णय के करए—एहि प्रश्नपर पात्र सभक अलग-अलग हित टकराइत अछि। स्नेहक भाषा, प्रतिष्ठाक भय, स्वार्थ, सामाजिक लोकमत आ दयाक आवरण एक-दोसरामे घुलैत अछि।

एतय नायिकाक अधिकारकेँ “ककरो द्वारा अपनाओल जाएब” मात्र मानब एकटा खतरा अछि। उपन्यास एहि खतरासँ मुक्त होबाक कोशिश करैत अछि, कारण सुजाताक असहमति आ अपन निर्णयक आवश्यकता उभरैत अछि। मुदा पुरुष मध्यस्थक भूमिका अपेक्षाकृत विस्तृत अछि। कथा नारी-स्वाधीनताक पक्षमे अछि, तथापि स्वाधीनताक सामाजिक स्वीकार्यता एखन पारिवारिक पुरुष-समर्थनपर आश्रित देखाइत अछि।

अंश ९ : नौकरीमे प्रवेश आ श्वेत-वस्त्रक सामाजिक अर्थ

सुजाता पंकजक मृत्युक बाद कार्यालयी प्रक्रियासँ नौकरी प्राप्त करैत छथि। पहिल दिन उज्जर/धवल वस्त्रमे कार्यालय पहुँचबाक दृश्य निजी शोकक सार्वजनिक उपस्थिति बनैत अछि। एहि अंशमे पत्नी आ विधवाक भूमिकासँ कर्मचारीक भूमिकामे बदलाव होइत अछि। सामाजिक पहिचानक केन्द्र घरसँ कार्यालय दिस स्थानान्तरित होइत अछि।

रोजगार एतय केवल कमाइ नहि, अपन दैनन्दिन जीवनक निर्णय लेबाक क्षमता, परिचय, सार्वजनिक व्यवहार आ भविष्यक आशा अछि। मुदा नौकरीक अधिकारपर अधिकारी-कर्मचारी सभक प्रतिक्रिया स्पष्ट करैत अछि जे महिलाक सार्वजनिक उपस्थिति अपने-आप सुरक्षित स्थान नहि बनबैत। एहि अवस्थामे सुजाताक अनुभवक दोसर संघर्ष आरम्भ होइत अछि।

अंश १० : कलावतीक प्रसंग आ सहयोगक अनौपचारिक आधार

सुजाता कार्यालयक कलावतीसँ परिचित होइत छथि। ई सम्बन्ध प्रशासनिक प्रक्रियाक बीच महिला-सहयोगक सम्भावना खोलैत अछि। कार्यालयमे कागज-पत्र, सहकर्मि, सहायता-व्यवस्था आ कर्मचारिक समस्या रहस्यात्मक बाधा नहि, सामाजिक संरचनाक ठोस रूपमे प्रस्तुत होइत अछि।

उपन्यासक पूर्वाद्धमे जीवन-निर्णयक केन्द्र परिवार छल; आब भरोसाक सम्बन्ध सहकर्मिक बीच खोजल जाइत अछि। सुजाता अपन संकटकेँ व्यक्तिगत नियति मात्र नहि मानि साझा परिस्थितिक प्रश्न बनबैत छथि। एहि अंशक महत्त्व कथानकमे चमत्कार नहि, सामूहिकताक सम्भावना पैदा करब अछि।

अंश ११ : कर्मचारी-राजनीति, अनुचित मांग आ साहसक रणनीति

सुजाता अराजक सत्ताक विरुद्ध प्रत्यक्ष शारीरिक बल नहि, तर्क, प्रमाण, सहकर्मिक सलाह आ उचित अधिकारिक प्रक्रिया खोजैत छथि।

आलोचनात्मक रूपसँ एहि अंशकेँ संस्थागत नैतिकताक लघु कथा पढ़ल जा सकैत अछि। कथा देखबैत अछि जे अन्यायक प्रतिरोधमे व्यक्तिगत सदिच्छा आवश्यक अछि, मुदा पर्याप्त नहि; दस्तावेज, कर्मचारीक भरोसा आ पदसोपानक ज्ञान सेहो जरूरी अछि। तथापि भ्रष्ट पात्रसभक मनोविज्ञान अधिक जटिल बनल रहित तँ कथा अधिक प्रभावकारी होइत।

अंश १२ : उच्चाधिकारीसँ सम्पर्क आ सत्ता-सम्बन्धक पुनर्व्यवस्था
सुजाता वरिष्ठ कार्मिक पदाधिकारीक विषयमे पता लगा कार्यालयी अन्यायक समस्या उच्च स्तर धरि पहुँचाबबाक यत्न करैत छथि। एहि अंशमे नायिकाक व्यक्तिगत साहस प्रशासनिक संवादमे बदलैत अछि। अधिकारीक मानवीय संवेदनशीलता, कार्यालयक कर्मचारीक दबाव आ दुर्व्यवहारक कारणक बीच पथ बनाओल जाइत अछि।

एतय कथा अपन समाधानक साधनकेँ न्यायप्रिय वरिष्ठ अधिकारीक नैतिक विवेकमे केंद्रित करैत अछि। ई आशावाद मानवीय दृष्टिसँ स्वागतयोग्य अछि, मुदा संस्थागत सुधारक यथार्थवादी अध्ययनमे प्रश्न उठैत अछि—की न्याय केवल “नीक बड़ा साहेब” पर आश्रित रहत? लिखित शिकायत, निष्पक्ष जाँच, अधिकार-सुरक्षा आ दण्ड-प्रक्रियाक स्पष्टता कथाकेँ अधिक विश्वसनीय बनबित।

अंश १३ : सुनीता, पर्दाफाश, सामूहिक प्रतिरोध आ उपसंहार
अन्तिम आ सभसँ विस्तृत अंशमे सुनीताक प्रसंग नारी-असुरक्षाक दोसर कथा अनैत अछि। सुजाता ओहि दुःखक साक्षी बनैत छथि आ अपन अनुभवक आधारपर सहायता करबाक संकल्प लैत छथि।

कलावती, सुनीता, कमला, कार्मिक पदाधिकारी आ अन्य कर्मचारीक भागीदारीक क्रममे समस्या एकटा महिला बनाम एकटा पुरुषक सीमा पार कऽ सार्वजनिक दायित्वक रूप लैत अछि। उपसंहारमे अधिकारीक समर्थन आ अनुचित कर्मचारीक स्थानान्तरण-सम्बन्धी निर्णयसँ नैतिक विजयक बोध उपस्थित अछि। मुदा आलोचनात्मक स्तरपर ई

निष्कर्ष राखब जरूरी अछि जे स्थानान्तरण अपने-आप शोषणक अन्तिम न्याय नहि; एकर संग जवाबदेही आ भविष्यक निवारणक प्रश्न बचल रहैत अछि।

अन्तिम अंशक विस्तार एहि बातक साहित्यिक प्रमाण अछि जे कथाक वास्तविक केन्द्र केवल विधवा-पुनर्विवाह नहि रहैत; नारीक सार्वजनिक कर्तृत्व, कार्यस्थलक सुरक्षा आ भ्रष्टाचार-विरोध मुख्य रचनात्मक आशय बनि जाइत अछि। कथाक समाप्ति आशावादी अछि, मुदा ओकर भीतर न्यायप्रणालीक अपूर्णताक संकेत सेहो पाठक ग्रहण कऽ सकैत अछि।

नायिका आ सहायक पात्रक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुजाता : आदर्श स्त्रीक छविसँ स्वनिर्णायक नागरिक धरि

सुजाताक गठन लेखक पहिने सदाचार, शिक्षा, घरेलू दक्षता आ सौन्दर्यक सामाजिक प्रतिमानसँ करैत छथि। एहि प्रक्रियामे “नीक कन्या”क परम्परागत धारणाकेँ चुनौती देबाक बदला कथक आरम्भमे ओहि मूल्यक सहारा लैत छथि। कथाक बादक भागमे नौकरी करब, अपमानक प्रतिकार करब, दूसर महिलाक पक्षमे ठाढ़ होएब आ अधिकारीसँ बात करबाक साहस हुनक पहिचान बदलबैत अछि। एहि परिवर्तनमे नायिकाक मानवता व्यक्तिगत सहिष्णुतासँ सार्वजनिक न्याय-चेतना धरि पहुँचैत अछि। तथापि सुजाताक अन्तरङ्ग मनोदशा सर्वत्र समान गहराइमे नहि खुलैत। हुनक नैतिक निर्णय प्रायः आदर्शक रूपमे घोषित अछि; संदेह, आत्मविरोध, भयक शारीरिक अनुभूति आ आन्तरिक असमञ्जस लेल अधिक स्थान रहित तँ चरित्र साहित्यिक रूपसँ अधिक बहुमुखी बनित। ई आलोचना नायिकाक साहसकेँ कम नहि करैत, बल्कि उपन्यासक उपलब्धि आ सीमा दुनूकेँ अलग करैत अछि।

पंकज, रामकान्त आ माय-बाबू : स्नेह आ पितृसत्तात्मक व्यवस्था

पंकजक नौकरी आ विवाह पारिवारिक प्रतिष्ठाक सूत्र बनैत अछि। कथामे हुनक अकाल मृत्यु भावात्मक प्रेरक आ कथात्मक विभाजन-रेखा अछि। रामकान्त सहित वयस्क पुरुष सभक व्यवहार एकसमान नहि; किछु पात्र स्नेह, सहायता आ नैतिक जिम्मेवारी

प्रकट करैत छथि। मुदा स्त्रीक जीवन-निर्णयपर पुरुष सभक विचार, अनुमति आ सामाजिक प्रतिष्ठाक असर निरन्तर बनल रहैत अछि। एहि विरोधाभासक अध्ययनसँ बुझाईत अछि जे “नीक पुरुष”क उपस्थिति पितृसत्ताक संरचनाकें स्वतः समाप्त नहि करैत।

लुत्ती झा, नरेश, रमेश : हित, रूढ़ि आ मध्यस्थता

लुत्ती झा घरेलू राजनीति आ हित-संघर्षक महत्त्वपूर्ण आवाज छथि; हुनक व्यवहारमे नातेदारी, सामाजिक भय आ व्यक्तिगत स्वार्थक जटिलता देखाईत अछि। नरेश आ रमेशक प्रसंग पुनर्विवाहक सम्भावना आ सामाजिक समर्थन-बाधाक एक स्तरसँ पाठककें परिचित करैत अछि। मुदा लेखक किछु व्यक्तिकें नीक-बेजायक द्वैतमे रखैत छथि; खल-आचरणक सामाजिक उत्पत्ति, अन्तर्विरोध आ परिवर्तनक सम्भावना यदि विकसित होइत तँ चरित्रसमूह अधिक ठोस बनित।

कलावती आ सुनीता : महिला-एकजुटताक विस्तार

नायिकाक व्यक्तिगत कथासँ सामाजिक उपन्यास बनबाक निर्णायक सूत्र कलावती आ सुनीताक सम्बन्ध अछि। एहि स्त्री-पात्र सभक संकट अलग-अलग भेलो साझा सत्ता-संरचनासँ सम्बन्धित अछि। सुजाता जे सहायता दैत छथि, से परोपकार मात्र नहि—दुःखक साझा पहचान आ सामूहिक प्रतिरोधक आरम्भ अछि। मुदा एहि पात्र सभक स्वतन्त्र चेतना आ जीवनक विस्तृत इतिहास नायिकाक समान विकसित नहि; ओ सभ प्रायः मुख्य कथानकक नैतिक उद्देश्य स्पष्ट करबाक उपकरण बनि जाइत छथि।

कथा-शिल्प, समय, परिवेश आ भाषाक विवेचन

कालक्रम आ तेरह भागक संरचना

कथा व्यापक रूपसँ रैखिक अछि : बचपन-शिक्षा, विवाह, मृत्यु, सामाजिक संकट, नौकरी, संस्थागत संघर्ष आ समाधान। तेरह अंशक सङ्ख्या लेखकक पाठ-विभाजनक उपकरण अछि; ई अंश पारम्परिक अध्यायक शीर्षकवाला स्वायत्त इकाई नहि, बल्कि घटनाक मोड़पर टिकैत छोट प्रसंग-संगठन छथि। अंश ५ अपेक्षाकृत संक्षिप्त आ अंश १३ विशेष

विस्तृत अछि। एहि असमानतामे कथाक भाव-दिशा स्पष्ट छैक : विवाहक सुखक तुलनामे अन्यायक प्रतिकार लेल अधिक कथास्थान सुरक्षित अछि।

ग्राम, घर, तीर्थ-यात्रा आ कार्यालय

गामक खेती, घरक गृहस्थ व्यवस्था, विवाह-स्थलक उत्सव, यात्राक दृश्य आ शहरक कार्यालय—ई स्थानसभ मात्र पृष्ठभूमि नहि, कथाक मूल्यव्यवस्थाक परिचायक छथि। गाममे परिवार आ लोकमत, विवाहमे प्रतिष्ठा, यात्रामे निजी आकांक्षा आ कार्यालयमे पद-सत्ता प्रधान छैक। सुजाताक यात्रा एहि स्थान सभक सीमा पार करैत अछि। आरम्भिक गामक चित्रण संवेदनात्मक अछि; कार्यालयक भाग अधिक संवाद, आशङ्का आ योजनापर आधारित अछि। दृश्यसँ विचार दिस ई परिवर्तन उपन्यासक कथनगत विशेषता सेहो अछि आ शिल्पगत असन्तुलन सेहो।

कथावाचकक हस्तक्षेप आ नीतिवाक्य

तृतीय पुरुष कथावाचक प्रायः सर्वज्ञ दृष्टि अपनबैत छथि। ओ व्यक्तिक व्यवहारक मात्र उल्लेख नहि, ओकर नैतिक मूल्याङ्कन सेहो तुरन्त करैत छथि। पुरुषप्रधान समाजक आलोचना, आदर्श विवाहक पक्षधरता आ कार्यालयी सदाचारक व्याख्या एहि हस्तक्षेपक प्रमुख उदाहरण अछि। सामाजिक परिवर्तनक दृष्टिसँ ई कथन पाठककें स्पष्ट मूल्य-दिशा दैत अछि; साहित्यिक बहुअर्थक दृष्टिसँ कखनो पाठकक स्वतन्त्र निर्णयक अवकाश कम करैत अछि।

मैथिली संवादक सघनता आ सम्पादकीय प्रश्न

पोथीमे बोलचालक मैथिली, ग्राम्य-मध्यवर्गीय शब्दसंसार, सम्बोधन-प्रणाली आ संवादक सहज विन्यास समृद्ध अछि। “बजलथि”, “मुदा”, “कतेक”, “ओकरा”, “हमरा” जेकाँ लोकप्रचलित क्रिया-रूप आ सम्बन्धसूचक शब्द पाठककें भाषिक परिवेशमे स्थिर करैत अछि। मुदा उपदेशप्रधान प्रसंगमे पात्र अलग-अलग सामाजिक स्थिति रखितो एके शैलीमे लम्बा नैतिक तर्क देबय लगैत छथि। पाठ-संस्करणक भविष्यक सम्पादकीय

कार्यमे विरामचिह्न, मुद्रण-दोष, संवाद-विभाजन आ वाक्य-सम्पादन उपयोगी होएत; मूल शब्द-रूपक असावधान मानकीकरण नहि।

नारीवादी, वर्गीय आ संस्थागत पाठ

उपन्यासक नारीवादी मूल्यांकनकेँ केवल “सुजाता साहसी छथि” धरि सीमित नहि करबाक चाही। तीन टा अलग सत्ता पहिचान योग्य अछि : विवाह आ विधवापनपर पारिवारिक नियन्त्रण; आर्थिक साधनपर पुरुषक परम्परागत वर्चस्व; आ कार्यालयमे पदाधिकारक अनुचित प्रयोग। सुजाताक यात्रा पहिल दुनू क्षेत्रमे वैयक्तिक निर्णयक अधिकार आ तेसर क्षेत्रमे नागरिक-नैतिक अधिकारक माँग करैत अछि।

ई न्याय-दृष्टि सर्वथा आधुनिक नारी-स्वायत्तताक अन्तिम प्रतिमान नहि। सुजाताक “आदर्श” व्यवहारकेँ आरम्भमे घरेलू सेवा, मर्यादा आ शालीनता द्वारा प्रमाणित करबाक जरूरत देखाइत अछि। एहि सापेक्ष आदर्शीकरणसँ ई प्रश्न उठैत अछि जे किएक सम्माननीय नारी होएबाक पूर्वशर्त सदैव सेवाभाव, शुचिता आ सामाजिक स्वीकृति बनए? सुजाताक अधिकार हुनक नैतिक श्रेष्ठताक पुरस्कार नहि, बल्कि मनुष्य होएबाक अधिकार अछि। ई व्याख्यात्मक अन्तर पाठकेँ अधिक दूर धरि खोलैत अछि।

वर्गीय स्तरपर सुजाताक संघर्ष साधनहीन परिवारसँ सरकारी नौकरीक स्थिरता धरि पहुँचैत अछि। शिक्षा, सरकारी नियुक्ति आ कागजी साक्षरता सामाजिक गतिशीलताक साधन बनैत अछि; मुदा भर्ती, पदस्थापन, सहकर्मि-जाल आ अधिकारक दुरुपयोग आर्थिक असमानताकेँ नब रूपमे उपस्थित करैत अछि। उपन्यास गरीब आ मध्यमवर्गीय परिवारक व्यवहारिक विवशताकेँ रेखाङ्कित करैत अछि, मुदा श्रम-संस्था आ स्त्री-कर्मचारीक स्वतन्त्र संगठनक विस्तृत संरचना विकसित नहि करैत।

संस्थागत न्यायक प्रश्नपर अन्तिम निर्णय विशेष ध्यान माँगैत अछि। सकारात्मक अन्त पाठकेँ विश्वास दैत अछि जे सही साक्ष्य आ साहससँ अन्यायकेँ चुनौती देल जा सकैत अछि। तथापि न्यायकेँ कोनो एकटा उच्चाधिकारीक सदिच्छापर निर्भर बनब संस्थाक अपारदर्शिता दूर नहि करैत। शिकायत-प्रक्रिया, प्रताड़ित महिलाक सुरक्षा, दोषीपर

जवाबदेही आ सामूहिक नियन्त्रणक प्रश्न एतय कृति-परे आलोचनाक विषय बनैत अछि। एहि सीमा सहित ‘सुजाता’ प्रशासनिक नैतिकताक प्रश्न उठेबाक कारण उल्लेखनीय अछि।

भाषिक उदाहरण आ पाठार्थ

नीचाँ देल गेल संक्षिप्त पाठांश मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठाङ्कसँ मिलैत अछि। उद्धरणकें प्रमाणक सीमामे राखल गेल अछि; दीर्घ, अस्पष्ट अथवा द्व्यर्थ पाठांशकें अनिवार्यतः उद्धृत नहि कएल गेल अछि। एकर पाठार्थ उद्धरणसँ पृथक आलोचनात्मक व्याख्या थिक।

मूल पाठांश	मुद्रित पृष्ठ	समीक्षात्मक संकेत
“फागुन मास बित रहल छल।”	१	ऋतुवर्णनद्वारा ग्रामीण भावभूमिक स्थापना।
“सुजाता घरक काज मे सेहो निपुण छलथि।”	६	शिक्षाक संग घरेलू श्रमकें नारी-गुण मानबाक आरम्भिक आदर्श।
“हमर समाज पुरुष प्रधान अछि।”	२९	कथकक प्रत्यक्ष सामाजिक-लैङ्गिक आलोचना।
“सुजाता धवल वस्त्र धारण कयने कार्यालय पहुँचलथि।”	४४	विधवापनक दृश्य-चिह्नसँ सार्वजनिक कर्मक्षेत्रमे नब प्रवेश।
“आफिस मे एकदिन सुजाताक भेंट सुनीता सँ भेल।”	६६	महिला-सहभागिता आ संस्थागत अन्यायक नब प्रसंगक आरम्भ।

उद्धरणक साक्ष्य-प्रकृति पर विशेष ध्यान अपेक्षित अछि। ऊपरक पाठांश कृति-विशेषक शब्द-साक्ष्य छथि; एहि सँ कथाक समस्त सामाजिक दावाक ऐतिहासिक सत्यता अपने आप सिद्ध नहि होइत। मुद्रित पृष्ठ २९क एक पाँती पूरा कथक-चेतनाक संकेतक बनैत अछि, मुदा ओहि पृष्ठक पूर्वापर तर्कक संग पढ़लापर एकर वास्तविक उपयोगिता स्पष्ट होइत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक ऐतिहासिक विकासक सन्दर्भमे तुलनात्मक स्थिति बाल-साहित्यक इतिहास लिखबामे कृति केँ केवल “सरल भाषा” वा “नीति-संदेश”क आधारपर बाल-साहित्य मानब भ्रामक अछि। पाठक-वर्गक आयु, बाल-पात्रक स्वतन्त्र कर्तृत्व, कथात्मक जिज्ञासा, चित्रक उपयोग, वाचिकता, पाठकक मनोवैज्ञानिक क्षमता आ बाल-जीवनक अनुभव—सभ कसौटी महत्त्वपूर्ण छथि। ‘सुजाता’मे बाल्य-शिक्षाक अंश अवश्य अछि, मुदा पाठकक निर्णायक सम्बन्ध वयस्क स्त्रीक कानूनी-सामाजिक अधिकार आ कार्यालयक शक्तिसँ बनैत अछि। तँ एकरा बाल-उपन्यासक इतिहासमे सीधे शामिल करबाक बदला वयस्क सामाजिक उपन्यासक संग राखि बाल-साहित्यक निकटवर्ती विचार-वस्तुक स्रोत मानब अधिक उचित अछि।

विदेहक शिशु-बाल-किशोर साहित्य अभिलेख मैथिली बाल-सृजनक व्यापक विधात्मक परिवेश देखबैत अछि : बालगीत, बालकविता, लोककथा, बाल-उपन्यास, चित्रकथा, अनुवाद, विज्ञान-विषयक रचना आ समकालीन किशोर-कथा। उपलब्ध सूचीमे जगदानन्द झा “मनु”क ‘चोनहा’, जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘नै धाड़ैए’, नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘स्वर्ण कमल’, प्रीति ठाकुरक ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’, देवांशु वत्सक ‘नताशा’ आ डॉ. रमानन्द झा ‘रमण’क अनूदित चित्रशृंखला ‘राजू आ टाकाक गाछ’ सन कृति-नाम स्पष्ट अंकित छथि। ई सूची साहित्यिक प्रवाहक दस्तावेज अछि; मुदा कृति-नामक सूची मात्रसँ एकटा पूर्ण, वर्षवार प्रकाशन-इतिहास निर्धारित नहि कएल जा सकैत।

बाल-साहित्यक विकासकें कम-स-कम चारि प्रवृत्तिक रूपमे बुझल जा सकैत अछि : लोककथा आ वाचिक परम्परासँ प्राप्त कथामूल; बालगीत आ आदर्श-शिक्षाक पाठ; चित्रकथा, अनुवाद आ बाल-उपन्यासक माध्यमसँ भाषा-अभ्यास तथा सामाजिक जिज्ञासा; आ वर्तमान डिजिटल माध्यममे क्विज, ऑडियो-दृश्य, विषयविशेष कथा आ किशोर-विमर्श। विदेहक अभिलेख एहि सह-अस्तित्वक साक्षी अछि। एहि प्रवृत्ति सभकें कठोर कालानुक्रमिक “पहिल-दोसर-तेसर” चरण मानब उचित नहि, कारण कतेक रूप समान समयमे सक्रिय रहल अछि।

एक्कहि लेखकक दू विधागत क्षितिज : ‘स्वर्ण कमल’ आ ‘सुजाता’ विदेह ‘स्वर्ण कमल’कें नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क बाल-उपन्यास कहैत अछि, जबकि ‘सुजाता’क मूल शीर्षक-पृष्ठ आ विदेह गद्य-सूची दुनू एकरा साधारण मैथिली उपन्यासक रूपमे चिह्नित करैत अछि। एहि तथ्यसँ लेखकक रचनात्मक विस्तारक सूचना भेटैत अछि। मुदा ‘स्वर्ण कमल’क पूर्ण पाठक पृथक परीक्षण बिना ओकर कथानक, चरित्र आ अन्तिम मूल्य-निर्णयक विस्तारसँ दावा कएल नहि जा सकैत। एतय तुलनाक कसौटी विधागत अछि : ‘सुजाता’मे वयस्क नायिकाक कर्तृत्व सामाजिक-प्रशासनिक प्रतिरोध बनैत अछि; बाल-उपन्यासमे एहि प्रश्नक पाठकीय रूप बाल-अनुभव, जिज्ञासा आ निर्णय क्षमताक अनुरूप बदलब आवश्यक हएत।

चित्रकथा, लोकआख्यान आ समकालीन बाल-उपन्यास

विदेह-सूचीमे प्रीति ठाकुरक मूल चित्रकथा-प्रयासक २००८–२००९ केर संकेत आ अनुवादित चित्रकथा-परम्पराक बहुतेक प्रविष्टि उपलब्ध अछि। जगदानन्द झा “मनु” आ जगदीश प्रसाद मण्डल जेकाँ लेखकक बाल-उपन्यास, आ आधुनिक डिजिटल प्रकाशनक किशोर-कथा सूची एक्कहि कृतिाँ अनेक पाठक-स्तरमे अलग माध्यमसँ प्रस्तुत करबाक प्रवृत्ति सूचित करैत अछि। एहि पृष्ठभूमिमे ‘सुजाता’क शिक्षा-आत्मसम्मानक प्रतिपाद्य किशोर साहित्यक विषय बनि सकैत अछि, मुदा वर्तमान कथा-कथनमे विधवापनक सामाजिक अपमान आ दफ्तरक जटिल शक्ति-संरचना बाल-केन्द्रित कथा-शिल्प नहि बनल अछि।

बाल-पाठक लेल रूपान्तरित पाठक सम्भावना आ सावधानी

जँ कखनो ‘सुजाता’क किशोर-पाठ्य रूपान्तर बने, तँ मुख्य शिक्षाप्रद तत्व होएत : कन्याक शिक्षा; विधवा-सम्बन्धी पूर्वाग्रहक आलोचना; स्वावलम्बन; महिलाक संगठित सहयोग; आ शिकायत, प्रमाण तथा न्यायप्रक्रियाक महत्त्व। मुदा रूपान्तरक लेल बाल-दृष्टि, आयु-सापेक्ष संवेदनशीलता, पात्रक एजेंसी, जटिल कार्यस्थल प्रसंगक सुबोध प्रस्तुति आ हिंसा/उत्पीड़नक गैर-सनसनीखेज कथन आवश्यक होएत। मूल उपन्यासपर “बाल-साहित्य”क छाप लगाएब आ विचारपूर्वक बाल-अनुकूल पुनर्लेखन करब—दुनू अलग काज अछि।

विदेह अङ्क ४४७मे प्रकाशित ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ बाल-पाठकक औचित्य, रस, लोकाधार आ बाल-कर्तृत्वक तुलनात्मक मापदण्ड प्रस्तुत करैत अछि। ओहि मापदण्डकेँ अपन सीमाक भीतर उपयोग करैत ‘सुजाता’क विशेषता अधिक स्पष्ट होइत अछि : एतय बाल-कर्तृत्वक बदला वयस्क नारीक नागरिक-कर्तृत्व केन्द्रमे अछि। ई भेद स्वीकार करब कृतिक महत्त्व कम करब नहि, बल्कि विधाक इतिहासकेँ अधिक शुद्ध बनायब अछि।

कृतिक उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ सीमा

प्रमुख उपलब्धि ई थिक जे उपन्यास नारीक आर्थिक निर्भरताकेँ केवल भावनात्मक करुणाक विषय नहि मानैत। शिक्षा, सरकारी सेवा, कार्यस्थलक जोखिम आ सामूहिक प्रतिरोध—ई सभ जोड़ि सामाजिक अन्यायक ठोस संरचना उपस्थित करैत अछि। दोसर, सुजाताक कथा घरेलू चौखटिसँ सार्वजनिक कार्यालय धरि फैलैत अछि; एहि विस्तारमे सामाजिक यथार्थक बहुस्तरीयता अछि। तेसर, मैथिली संवाद आ परिवार-केन्द्रित लोकभाषा कृतिक सांस्कृतिक विशिष्टता सुदृढ़ करैत अछि।

मुख्य सीमा चारि अछि। पहिल, आदर्श नायिका आ नकारात्मक पात्रक स्पष्ट नैतिक विभाजन चरित्रक जटिलताकेँ सीमित करैत अछि। दोसर, कथावाचकक टिप्पणी कखनो घटना आ संवादसँ निकलि सकनिहार अर्थ पहिले घोषित कऽ दैत अछि। तेसर,

नारीक स्वाधीनता बतबैत कथा बीच-बीचमे हुनक सम्मानकेँ परम्परागत शालीनताक कसौटीपर प्रमाणित करैत अछि। चारिम, प्रशासनिक सुधारक परिणाम उच्चाधिकारीक सदृच्छापर बहुत जल्दी केन्द्रित भऽ जाइत अछि। तदपि एहि सीमा सभसँ कृतिक सामाजिक विमर्श अप्रासङ्गिक नहि होइत; ई आलोचनात्मक पुनर्पाठक आधार उपलब्ध करबैत अछि।

वस्तुतः ‘सुजाता’क बहस एकटा ऐतिहासिक संक्रमणक बहस अछि : स्त्रीक अधिकारकेँ समाज केवल “सहानुभूति”क विषय मानत कि अपन नागरिक व्यवस्था आ सामाजिक संस्थाकेँ बदलबाक सिद्धान्त? कथामे सुजाताक साहस एहि प्रश्नक पहिल उत्तर दैत अछि। आजुक दृष्टिसँ पाठक दोसर उत्तर सेहो खोजत—सुरक्षित शिकायत-प्रणाली, दण्डात्मक जवाबदेही, महिला-सहयोगक स्थायी संरचना आ समान अवसरक संस्थागत व्यवस्था।

निष्कर्ष

‘सुजाता’केँ मात्र विधवा-पुनर्विवाहक कथा कहल गेल तँ ओकर उत्तरार्द्धक व्यापक सामाजिक आशय छूटि जाएत; मात्र भ्रष्टाचार-विरोधी कथा कहल गेल तँ आरम्भिक शिक्षा, विवाह-व्यवस्था आ विधवापनक अनुभव गौण भऽ जाएत। कृतिक सर्जनात्मक एकता एहि दुनू धारामे अछि—निजी दुःखसँ जन्मल आत्मनिर्णय सार्वजनिक न्याय-चेतनामे परिणत होइत अछि। सुजाता प्रारम्भमे समाजक मान्य “आदर्श नारी” छथि, मुदा अन्तमे ओ केवल सहनशीलता नहि, प्रतिरोध आ सहयोगक सक्रिय क्षमता अर्जित करैत छथि।

उपन्यास सामाजिक यथार्थ, सुधारवादी वक्तव्य आ नारीक नागरिक अस्मिताक संगम अछि। एकर कलात्मकता सर्वत्र समान रूपसँ परिपक्व नहि—नाटकीय द्वन्द्व, मनोवैज्ञानिक परत आ संस्थागत जटिलता कतेक ठाम विस्तार चाहैत अछि—तथापि मैथिली गद्यक अध्ययनमे ई कृति स्त्रीक सामाजिक स्थानसँ कार्यस्थलक नैतिकता धरि फैलिल महत्त्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित करैत अछि। बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर

सम्बन्ध प्रत्यक्ष विधागत सदस्यताक नहि, बल्कि शिक्षा, आत्मसम्मान, समानता आ सामाजिक उत्तरदायित्व जेकाँ विचारक तुलनात्मक सीमारेखाक अछि। एहि स्पष्ट सीमारेखाक संग कएल पाठन कृतिक वास्तविक साहित्यिक मूल्यकेँ अधिक यथार्थ रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

१.३७. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — सुकन्या

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

विधवा-पुनर्विवाह, स्त्री-अस्मिता आ सामाजिक परिवर्तन

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क मैथिली उपन्यासक विस्तृत पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'सुकन्या' (२०१९) मैथिली सामाजिक उपन्यासक एहन रचना अछि जे विधवा-पुनर्विवाह केँ केवल व्यक्तिगत सुख अथवा कुटुम्बक आयोजनक प्रश्न नहि, बल्कि सामाजिक मान्यता, नारीक गरिमा, निर्णयक स्वतन्त्रता आ सामुदायिक न्यायसँ जोड़ैत अछि। कथा रतनक वैधव्य आ ओकर जीवनमे पुनः साहचर्यक सम्भावनासँ आरम्भ होइत अछि; सुकन्याक वैधव्य, शिक्षा आ सामाजिक अपमानक अनुभव एहि सम्भावना केँ अधिक व्यापक अर्थ दैत अछि। कमलेशक सहायक भूमिका, अभिभावकसभक नैतिक द्वन्द्व, रिंकी-निर्मलक प्रसंग, रघुवंश बाबू द्वारा रुढ़िक प्रतिरोध, तथा सेवकराम-विशाल-सुमनसँ सम्बद्ध परवर्ती घटना कथा केँ व्यक्तिगत परिचयसँ सामुदायिक आन्दोलन धरि विस्तारित करैत अछि। एहि अध्ययनमे कृतिक मूल मुद्रित पृष्ठक आधारपर कथाविकास, संरचनाक लाभ-सीमा, नारीवादी सम्भावना, संवादक स्वाभाविकता, आदर्शवादी समाधान आ सामाजिक यथार्थक बीच तनावक पड़ताल कयल गेल अछि। 'कन्यादान' आ 'पारो' सँ विषयगत तुलना द्वारा मैथिली उपन्यासमे स्त्री-जीवन सम्बन्धी विमर्शक निरन्तरता आ परिवर्तनक संकेत स्थापित कयल गेल अछि।

ग्रन्थ-परिचय आ अध्ययनक परिधि

'सुकन्या'क शीर्षक-पृष्ठ पर कृति केँ 'मैथिली उपन्यास' कहल गेल अछि। लेखक नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' छथि; प्रकाशक गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगा; प्रकाशन-वर्ष २०१९ आ अंकित मूल्य एक सय पचास टाका अछि। पुस्तकक आरम्भमे श्रीफूलचन्द्र मिश्र 'रमण'क 'अपन दुइ शब्द' आ लेखकक 'लेखकीय' अछि। मुख्य

कथा मुद्रित पृष्ठ १ सँ ९० धरि फैलल अछि। ई परिचय पुस्तकक अपन प्रकाशकीय आ आरम्भिक सामग्रीपर आधारित अछि।

प्रस्तावनाकार श्रीफूलचन्द्र मिश्र 'रमण' कृतिक केन्द्रीय विषय विधवा-पुनर्विवाह केँ रेखांकित करैत छथि। लेखक सेहो अपन वक्तव्यमे विवाहक बदलैत सामाजिक स्थितिक चर्चा करैत छथि : बेमेल विवाह, विधवा जीवनक असुरक्षा, परिवारक प्रतिरोध आ पुनः घर बसयबाक चाह। एहि दूनू आरम्भिक वक्तव्यक कारण पाठक पहिनहि बुझि सकैत अछि जे उपन्यासक कथानकक भीतर निहित सामाजिक-सुधारक अभिप्राय आकस्मिक नहि अछि।

एहि अध्ययनमे घटनाक्रम, संवाद, पात्रक निर्णय आ कथात्मक परिणतिक विश्लेषण कयल गेल अछि। लेखकक अभिप्राय आ रचनाक वास्तविक उपलब्धि केँ पृथक मानि पढ़ल गेल अछि : लेखक जे कहय चाहैत छथि, कथा सदा ठीक ओतबे सिद्ध करैत अछि, एहन मानि लेब आलोचना नहि होयत। तें जतय आदर्शवादी समाधान सामाजिक विषमताक जटिलता केँ सरल बनबैत अछि, ओतय ओकर आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक अछि।

मूल समस्या : विधवा-पुनर्विवाहक सामाजिक अर्थ

एहि उपन्यासक प्रश्न ई नहि जे वैधव्यक पश्चात् फेर विवाह सम्भव अछि वा नहि। मूल प्रश्न ई अछि जे समाज स्त्री आ पुरुषक वैधव्य केँ समान मानदण्डसँ किएक नहि परखैत अछि। पुरुषक दोसर विवाहक पक्षमे परिवार सहज तर्क देबय लगैत अछि; स्त्रीक प्रसंगमे लोकलाज, जाति, प्रतिष्ठा, सन्तानक भविष्य आ कथित मर्यादाक अधिक कठोर कसौटी सक्रिय भऽ उठैत अछि। उपन्यास एहि असमानता केँ अनेक पात्रक वार्तालाप आ सामाजिक घटनामे दृश्यात्मक बनबैत अछि।

रतन पहिने पत्नी सुनीताक निधनक बाद बच्चासभक पालन-पोषण, व्यवसाय आ स्मृतिक भार सँ गुजरैत छथि। फेर विवाहक प्रस्ताव सुनिते हुनक भीतर दुविधा उठैत अछि। सुकन्याक प्रसंग एहि विमर्शमे नारीक अपना अनुभव जोड़ैत अछि। ओकर

शैक्षिक प्रतिभा, अपमानजनक आरोपक सामना, सहायताक स्वीकार आ स्वाभिमानी आचरण देखबैत अछि जे जीवनक नवनिर्माण पुरुषक निर्णय-मात्रपर निर्भर नहि रहबाक चाही।

कृतिक सामाजिक चिन्ता हिन्दू विवाह-व्यवहार, ग्रामीण पञ्चायत, अफवाह, सामाजिक प्रतिष्ठा आ विधवाक सुरक्षा सम्बन्धी प्रश्नसँ जुड़ल अछि। कथा बारम्बार ई भेद स्पष्ट करबाक चेष्टा करैत अछि जे सार्वजनिक लोकमत नैतिक सत्यक एकमात्र स्रोत नहि; सामाजिक परम्परा जखन मानवीय गरिमा केँ चोट पहुँचबैत अछि, तखन ओकर विरोध उचित ठहरैत अछि।

कथाक विन्यास : परिवार, कॉलेज, नगर आ ग्रामक अन्तरसम्बन्ध

कथाक आरम्भ सार्वजनिक उद्यानमे रतनक एकान्त चिन्तनसँ होइत अछि। रंगीन फूल-पात आ उद्यानक प्रसन्न बाहरी संसारक बरक्स ओकर वैयक्तिक रिक्तता प्रस्तुत भेल अछि। ई विरोध उपन्यासक भावभूमि बनबैत अछि : बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा व्यक्तिक भीतर अधूरापन अछि। आरम्भमे प्राकृतिक दृश्य बहुत दीर्घ नहि अछि, तथापि ओकर भूमिका मात्र सजावट नहि; ओ रतनक मनोदशाक प्रतीकात्मक पृष्ठभूमि उपलब्ध करबैत अछि।

रतनक परिवारक पुरुष-अभिभावक, पञ्चायतक प्रतिष्ठित व्यक्ति, कॉलेजक छात्र आ शिक्षक, बैंकक कर्मचारी तथा ग्रामक अनेक नागरिक कथाक सामाजिक जगत रचैत छथि। एकसंग एतेक सामाजिक संस्थाक उपस्थिति निजी विवाहक प्रश्न केँ व्यापक सार्वजनिक सरोकार बनबैत अछि। मुदा एहि विस्तारक परिणामस्वरूप किछु पात्र जीवनीगत गहराइ प्राप्त नहि कऽ पबैत छथि; ओ प्रायः विचारधारात्मक पक्ष प्रस्तुत करबाक माध्यम बनैत छथि।

उपन्यासमे रतन-सुकन्या आ रिंकी-निर्मल सम्बन्धी दू प्रमुख प्रवाह, तथा कमलेश आ परवर्ती पात्रसभक प्रसंग समांतर रूपसँ चलैत अछि। एहि बहुपात्रीय विन्यासक लाभ सामाजिक प्रश्नक अनेक रूप देखब होइत अछि; सीमा ई जे मूल नायिका सुकन्याक

अन्तर्मनक सतत कथात्मक उपस्थिति कतेको अवसरपर दोसर प्रसंगक कारण कम भऽ जाइत अछि।

क्रमिक पाठविश्लेषण : आरम्भसँ अन्तिम परिणति धरि

उपन्यासक मुख्य कथामे १, २, ३, ४, ५, ६, ८, ९ आ १० संख्या स्पष्ट अंकित अछि। मुद्रित पृष्ठ ४५ सँ ६४क प्रसंगसभक बीच पृथक '७' शीर्षक स्पष्ट रूपमे चिन्हित नहि होइत अछि; तें क्रमिक विवेचनमे ओहि मध्यवर्ती सामग्री केँ अलग 'सातम कथात्मक चरण' कहि पहचानल गेल अछि, स्वतंत्र अंकित अध्यायक दावा कयने बिना। ई पाठ-विभाजनक तथ्य शिल्पगत अध्ययनमे उल्लेखनीय अछि।

पहिल खण्ड : रतनक एकान्त आ पञ्चायतक प्रश्न

पहिल खण्डक केन्द्रीय दृश्य रतनक एकान्त चिन्तन अछि। पत्नी सुनीताक मृत्युक तीन वर्ष बाद सेहो ओ स्मृतिसँ बँधल छथि। बच्चासभक पालन-पोषणक व्यावहारिक आवश्यकता एक दिशामे अछि; समाजक कहबाक भय आ पूर्व सम्बन्धक सम्मान दोसर दिशामे। लेखक रतनक मनमे दोसर विवाहक सम्भावना तुरन्त स्थापित नहि करैत छथि; पहिले एकटा उद्विग्न व्यक्तिक असन्तुलित सामाजिक-सांसारिक स्थिति प्रस्तुत करैत छथि।

अमिरकान्तजीक घर आ ग्रामीण सामाजिक व्यवहारसँ सम्बन्धित चर्चा मे पञ्चायतक निर्णयाधिकार उठैत अछि। समाजक प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा कहल गेल बात लोकक परामर्श तऽ भऽ सकैत अछि, मुदा ओ मानवीय स्वतन्त्रताक अन्तिम न्यायाधीश नहि। एहि द्वन्द्वमे कृतिक सुधारवादी तेवर पहिल बेर स्पष्ट होइत अछि।

“अपने कोन आधार पर ई पंचैती कयल अछि?” (मूल मुद्रित पृष्ठ ३)

ई छोट प्रश्न उपन्यासक नैतिक बीज अछि। कृति पञ्चायतक समग्र अस्तित्वक विरोध नहि, बल्कि बिना वैध नैतिक आधारक हस्तक्षेपक आलोचना करैत अछि। तथापि पहिल खण्डमे विरोधी पक्षक मनोवैज्ञानिक तर्क विस्तारसँ नहि उभरैत; एहि कारण संघर्ष आरम्भे सँ सुधारक बनाम रूढ़िवादीक विभाजनमे ढलल लगैत अछि।

दोसर खण्ड : परम्परा, अभिभावक आ पुनर्विवाहक वैधता

दोसर खण्डमे रतनक पुनर्विवाह सम्बन्धी चर्चाक सामाजिक स्वरूप अधिक प्रत्यक्ष भऽ जाइत अछि। सुनीताक बाद परिवारक व्यवस्था, बेटासभक भविष्य आ बुजुर्गक परामर्श एक-दोसरसँ जोड़ल जाइत अछि। विवाह केँ एकमात्र प्रेम-प्रसंग नहि, परिवारक बहुस्तरीय उत्तरदायित्वक निर्णायक रूपमे राखल गेल अछि।

धार्मिक नियति आ मानवीय निर्णायक बीच संवाद रोचक अछि। जन्म, मृत्यु आ विवाहपर नियतिक प्रभावक परम्परागत धारणा कथामे उपस्थित अछि, मुदा पात्रसभ एकसंग व्यवहारिक निर्णय सेहो लैत छथि। एहि दोहरी धारणासँ ग्रामीण समाजक मानसिकता बनैत अछि : अतीतपर भरोसा आ वर्तमानमे परिवर्तनक प्रयत्न।

सुकन्याक वैयक्तिक परिचय आ वैधव्यक सङ्केत एहिमे जुड़ैत अछि। स्त्रीक सामाजिक संकट ओहि पुरुष-समस्याक समकक्ष रखल जाइत अछि जे पहिने सँ कथाक केन्द्रमे छल। एहि संरचनासँ उपन्यास समानुभूतिक भूमि तैयार करैत अछि; ई प्रश्न उठैत अछि जे पुरुषक पुनर्विवाह जँ सम्भव मानल जाइत अछि, तँ स्त्रीक लेल समान संभावना किएक नहि?

तेसर खण्ड : सुकन्याक स्वर आ आत्मपरिचय

तेसर खण्डमे रामदयालजीक मार्फत रतन आ सुकन्याक प्रत्यक्ष परिचयक प्रसंग निर्णायक अछि। रतन अनजान व्यक्तिक रूपमे अपन नाम तुरन्त नहि बतबैत छथि; बातचीतक माध्यमसँ विश्वासक वातावरण निर्मित करैत छथि। सुकन्याक विधवा जीवन, ओकर शिक्षा आ बालक सम्बन्धी जानकारी घटनाक मूल सहानुभूतिपरक आधार बनैत अछि।

सुकन्या स्वयंकेँ केवल अभागिनी अथवा दयाक पात्रक रूपमे प्रस्तुत नहि करैत अछि। ओकर बौद्धिकता, बातचीतक निर्भीकता आ परिस्थिति बुझबाक क्षमता ओकरा सक्रिय पात्र बनबैत अछि। जे स्त्री समाजक कठोर दृष्टिक सामना करैत अछि, ओहि स्त्रीक मुख सँ अनुभव सुनब लेखकीय उपदेशसँ अधिक प्रभावकारी होइत अछि।

एहि खण्डक सीमा ई अछि जे सुकन्याक सम्पूर्ण जीवन-प्रवाह बहुत शीघ्र पुरुष नायकक सम्भावित साहचर्यक सन्दर्भमे पढ़ल जाय लगैत अछि। आत्मनिर्भरता आ विवाहक प्रश्नक बीच अधिक लम्बा स्वायत्त अन्तराल होइत तँ नायिकाक व्यक्तित्व आओर सघन होइत।

चारिम खण्ड : कॉलेज, अपमान आ सहायताक नैतिकता

चारिम खण्ड कॉलेजक घटनासँ सामाजिक अन्तर्विरोध केँ नव स्तरपर पहुँचबैत अछि। रंजन नामक सम्पन्न आ उद्वण्ड छात्रक दुर्व्यवहार, सुकन्याक ऊपर आरोप, कमलेशक हस्तक्षेप आ शिक्षक-प्रशासनक निर्णायक श्रृंखला ई देखबैत अछि जे स्त्रीक मान-सम्मानक प्रश्न केवल घर वा विवाहक मर्यादामे सीमित नहि अछि।

कमलेशक भूमिका सहयोगी मित्रक अछि। ओ अन्यायपूर्ण आरोपक विरोध करैत अछि आ तथ्य सोझाँ अनबाक चेष्टा करैत अछि। कृतिक एहि खण्डमे शिक्षण-संस्थान स्वयं न्याय-अन्यायक संघर्षस्थल बनि जाइत अछि। यदि कॉलेजक सामाजिक प्रतिष्ठा शक्तिशालीक पक्षमे झुकि जाए, तँ सत्यक रक्षा लेल विद्यार्थीक साहस आवश्यक भऽ सकैत अछि।

“हम मानव थिकहुँ आ मानवताक रक्षा करब कर्तव्य अछि।” (मूल मुद्रित पृष्ठ 26)

एहि वाक्यमे मानवीय नैतिकताक आधार जाति, पद वा दैहिक आकर्षण नहि, साझा मनुष्यता अछि। मुदा लेखकक प्रतिपक्षी छात्रक चित्रण अपेक्षाकृत सरल अछि; आर्थिक विशेषाधिकार आ हिंसक अधिकारबोधक सामाजिक कारण आओर विकसित होइत तँ रचनाक यथार्थवाद अधिक गहिर होइत।

पाँचम खण्ड : साहचर्य, विवाहक प्रस्ताव आ सहमतिक प्रश्न

पाँचम खण्डमे रतन आ सुकन्याक पुनर्मिलन, विचार-विनिमय आ विवाहक प्रस्ताव स्पष्ट रूपसँ कथानकक केन्द्र बनैत अछि। रतन अपन परिवारक अवस्था, समयक दूरी आ समाजक विरोधक सम्भावना बुझैत छथि। सुकन्या सेहो सजग अछि जे पुनर्विवाहक

निर्णय केवल सहानुभूतिसँ नहि, भविष्यक यथार्थ परिस्थितिक सम्यक् विचारसँ लेब आवश्यक अछि।

प्रेम आ सहायता, करुणा आ समानता, आश्रय आ स्वतंत्र निर्णयक बीच ई कृति एकटा महत्त्वपूर्ण द्वन्द्व उपस्थित करैत अछि। सुकन्याक लिये पुनर्विवाहक प्रश्न ओहि प्रकारक नहि जेना अविवाहित युवतीक विवाह : ओकर संतान, अतीतक अनुभव आ सामाजिक छवि सभ निर्णयमे हस्तक्षेप करैत अछि।

लेखक पात्रसभकेँ प्रायः स्पष्ट नैतिक पक्ष चुनबाक दिशा मे आगाँ बढ़बैत छथि। एहि कारण कथाक भावनात्मक ताप प्रबल अछि, तथापि निर्णयक जटिल आर्थिक आ कानूनी पक्षक सम्यक् विस्तार अपेक्षाकृत कम अछि। ई आदर्शवादी सामाजिक उपन्यासक संरचनात्मक प्रवृत्ति थिक।

छठम खण्डक पूर्वार्ध : रिंकी-निर्मल प्रसंग आ स्वतन्त्र चयन

छठम खण्डमे कृति रिंकी आ निर्मलक सम्बन्धक माध्यमसँ अपन केन्द्रीय प्रश्न पुनः अलग परिप्रेक्ष्यमे उपस्थित करैत अछि। बैंकक कामकाजी संसार, परिवारक बुजुर्गक परामर्श, सन्तानक भविष्य आ विवाहसम्बन्धी प्रस्ताव कथामे नव वातावरण रचैत अछि। रतनक जीवनसँ जुड़ल परामर्श आब दोसर गृहस्थक जीवनमे परिवर्तन सम्भव बनयबाक माध्यम बनैत अछि।

रिंकीक पात्र विशेष महत्त्व रखैत अछि। ओ कार्यालयमे कार्यरत, आत्मसम्मानयुक्त आ अपन सामाजिक प्रतिष्ठाप्रति सजग स्त्रीक रूपमे उपस्थित अछि। निर्मलक आकर्षणक प्रसंगमे निर्णयक प्रश्न व्यक्तिगत भावनाक अतिरिक्त परिवार, विवाहक पूर्वबन्धन आ समाजक धारणा तक पहुँचैत अछि।

एहि खण्डक उपलब्धि ई जे व्यक्तिगत सम्बन्धसम्बन्धी निर्णय केँ एकहि घरक समस्या नहि रखि समानान्तर अनुभवक रूपमे देखाओल गेल अछि। एकर सीमा ई जे उपन्यास केँ मूल सुकन्या-रतन कथासूत्रसँ किछु समय हटि बृहत्तर सामाजिक उदाहरण देब पड़ैत अछि।

सातम कथात्मक चरण : सामाजिक बन्धनसँ सार्वजनिक प्रतिरोध धरि मध्यवर्ती कथा रिंकीक नैतिक अनिश्चितता, निर्मलक परिवारक सहमति आ रघुवंश बाबूक सामाजिक रुढ़िक विरोधक माध्यमसँ विस्तारित होइत अछि। विवाह निजी इच्छा होएबाक बावजूद सामाजिक प्रतिष्ठाक नामपर दण्डात्मक दबाव केना उत्पन्न करैत अछि, एहि पर कथाक बहस तीक्ष्ण होइत अछि।

“सामाजिक बन्धन, आर किछु नहि।” (मूल मुद्रित पृष्ठ 54)

एहि लघु संवादक शक्ति एहि बातमे अछि जे ‘बंधन’ केँ मानवीय प्रकृतिक नियम नहि, समाजक द्वारा निर्मित आ समयसापेक्ष संस्था मानल गेल अछि। निजी निर्णयक विरुद्ध जनमत तैयार होइत अछि; आरोप, आर्थिक दण्ड, पञ्चायतक धमकी आ सुधारक प्रतिवादक बीच संघर्ष सार्वजनिक होइत अछि।

रघुवंश बाबूक तर्क अछि जे समाजक नियमक प्रतिष्ठा तभी सुसंगत होइत अछि जखन ओ मानवीय हितक रक्षा करय। एहि अर्थमे उपन्यास सामूहिक आन्दोलनक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। मुदा सार्वजनिक विरोधक परिणति अपेक्षाकृत शीघ्र बदलैत अछि; बहुसंख्य सामाजिक संस्थामे एहन परिवर्तनक दीर्घकालिक कष्ट-कठिनाईक अधिक चित्रण सम्भव छल।

आठम खण्ड : रतनक रोग, जीवनक क्षणभंगुरता आ परिवारक पुनर्विचार आठम खण्डमे रतन सेवामुक्तिक बाद घरक भीतर अधिक समय बितबैत छथि। बच्चासभक अपन जीवन अछि, मुदा पिता भीतर सँ अकेलापन अनुभव करैत छथि। रतनक अस्वस्थता जीवनक सीमितताक बोध करबैत अछि। डॉक्टरक परामर्श, परिवारक व्यस्तता आ स्मृतिसँ भिजल मानसिक अवस्था प्रेमक प्रश्न केँ फेर नब अर्थ दैत अछि।

एहि खण्डमे एकटा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि : पुनर्विवाह केवल युवा दैहिक आकर्षणक विषय नहि; वृद्धावस्थाक निकट असुरक्षा, सहचरक अभाव आ भावनात्मक देखभालक

आवश्यकता सेहो बनैत अछि। लेखक विवाहक मूल प्रश्न केँ जीवनक विविध अवस्थामे पुनः उपस्थित करैत छथि।

परवर्ती प्रसंगमे सुमन आ विशालक सम्बन्ध तथा अपन परिवारक स्वीकृतिक प्रश्न जुड़ैत अछि। नव पीढ़ीक प्रेम आ पुरान पीढ़ीक लाज-प्रतिष्ठाक डरक बीच समानताक कारण मूल कथाविषय फेर दोहराएल जाइत अछि। तुलना उपयोगी अछि, मुदा घटना-विस्तारक दृष्टिसँ कथा कहियो-कहियो बहुत अधिक उदाहरण एकत्र करैत प्रतीत होइत अछि।

नवम खण्ड : सेवकराम, वर्ग आ विवाहक आर्थिक हिंसा

नवम खण्ड चन्द्रपुरक सेवकरामक जीवनक माध्यमसँ उपन्यासक सामाजिक आयाम केँ विवाहक व्यक्तिगत प्रश्नसँ वर्गीय शोषण धरि लऽ जाइत अछि। खेतिहर, मजदूर, धनाढ्य परिवार, ब्याज, श्रमक अवमूल्यन आ ग्रामक शक्तिसम्बन्धी प्रसंग उपन्यासक सामाजिक आलोचनामे नव तीव्रता उत्पन्न करैत अछि।

सेवकराम सन पात्रक जीवन देखबैत अछि जे समाजक मर्यादाक नियम सभ वर्गपर समान बोझ नहि दैत अछि। आर्थिक रूपसँ निर्बल व्यक्तिक विकल्प सीमित रहैत अछि; प्रभावशाली लोक सम्पत्ति आ प्रतिष्ठाक सहारे व्यवहार निर्धारित करैत अछि। एहि स्तरपर ‘सुकन्या’क विधवा-विवाह सम्बन्धी विमर्श आर्थिक असमानताक सामाजिक भूमि प्राप्त करैत अछि।

सुमन-विशालक सम्बन्ध आ परिवारक विरोधक प्रसंग ई संकेत करैत अछि जे नूतन पीढ़ी सामाजिक विभाजनक विरुद्ध अपन भावनात्मक निष्ठा स्थापित करबाक प्रयत्न करैत अछि। तथापि संघर्षक समाधानमे बाहरी हस्तक्षेपक भूमिका अधिक होइछ; पात्रक स्वयं संजोएल राजनैतिक क्षमता अधिक देखाओल जा सकैत छल।

दशम खण्ड : सुकन्याक स्वतन्त्र कर्म आ अन्तिम पुनर्स्थापना

अन्तिम खण्डमे सुकन्याक यात्रा, रेलयात्रिणी चमेलीसँ परिचय, सामाजिक सहायता आ सेवकरामक परिवारसँ जुड़ल घटनासभ एकत्र होइत अछि। सुकन्या आब केवल अपन

वैधव्यक पीड़ा भोग्यवाली स्त्री नहि, बल्कि दोसरक संकटमे सहायता करबाक सामर्थ्य राखयवाली सामाजिक कार्यकर्त्रीक रूपमे देखल जाइत अछि।

चमेली आ सामाजिक कल्याणक कार्यसँ सम्बन्धित प्रसंग उपन्यासक नारी-पात्रसभ केँ आपसी सहायताक नब संसार दैत अछि। स्त्रीक सुरक्षा केवल पुरुषक उदारतापर आश्रित नहि; स्त्री-स्त्रीक सहकार, जनजागरण आ संस्थागत हस्तक्षेप सेहो सम्भव अछि। ई बिन्दु कृतिक नारीवादी अर्थक लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

अन्ततः सेवकरामक प्रकरणमे प्रभावशाली लोकक हस्तक्षेप, प्रशासनक सक्रियता आ ग्रामीण सार्वजनिक सहमतिक परिवर्तनक बाद रतन आ सुकन्याक पुनर्विवाहक स्थिति बनैत अछि। रामदयालजीक स्नेह, पारिवारिक स्वीकार आ पुरान दू परिवारक नब गठनक दृश्य कथाक समाधान प्रस्तुत करैत अछि।

अन्तिम परिणति एकटा आत्मीय आशा दैत अछि; मुदा समाजव्यापी रूढ़ि-परिवर्तनक तुलना मे व्यक्तिगत सफल विवाहक संकेत अधिक सघन अछि। पाठकक मनमे ई प्रश्न बचि रहैत अछि जे एहन सहायता-विहीन विधवा अथवा आर्थिक रूपसँ निर्बल व्यक्ति केना अपन अधिकार प्राप्त करत? ई असमाप्त प्रश्न कृतिक साहित्यिक प्रासंगिकता समाप्त नहि करैत, बल्कि ओकर आलोचनात्मक अर्थ केँ व्यापक बनबैत अछि।

मुख्य पात्रसभक मनोवैज्ञानिक आ सामाजिक विवेचन

सुकन्या : करुणाक पात्रसँ कर्मशील व्यक्तित्व

उपन्यासक शीर्षक सुकन्या केँ केन्द्रीयता दैत अछि। ओकर जीवनमे वैधव्यक कष्ट, सामाजिक दृष्टिक अविश्वास, शिक्षाक साहस, छात्रजीवनक संघर्ष, दोस्तीक विश्वसनीयता, मातृत्वक उत्तरदायित्व आ परवर्ती सामाजिक सेवाक पक्ष जुड़ैत अछि। एतय नायिका केवल विवाहयोग्य स्त्रीक रूपमे पूर्ण नहि होइत; ओ अपन जीवनमे दूसराक जीवन सुधारबाक क्षमता सेहो अर्जित करैत अछि।

सुकन्याक स्वतन्त्रताक रूप कथा भीतर समान गति सँ विकसित नहि होइत अछि।

कतहु ओ अपन स्पष्ट वाणीमे प्रतिरोध करैत अछि, कतहु रतन, कमलेश वा अन्य

सहायक व्यक्तिक नैतिक आश्वासनपर निर्भर रहैत अछि। ई निर्भरता समकालीन सामाजिक स्थितिक यथार्थ पक्ष सेहो भऽ सकैत अछि; तथापि कृतिक रूत्री-मुक्तिक आदर्शसँ ओकर आलोचनात्मक दूरी मापब आवश्यक अछि।

शीर्षकक नायिका केँ अन्तिम रूपमे ‘पत्नी’क पहचानक संग स्वीकार कयल जाइत अछि; प्रश्न ई अछि जे ओकर सामाजिक कार्य आ शिक्षित व्यक्तित्वक स्वतन्त्र अस्तित्व विवाहक बादो सुरक्षित रहत कि नहि। उपन्यास एहि भविष्यक प्रश्नक विस्तार नहि करैत अछि। ई चुप्पी एगो अर्थपूर्ण आलोचनात्मक रिक्ति अछि।

रतन : स्मृति, उत्तरदायित्व आ पुनःसाहचर्यक आकांक्षा

रतनक जीवन प्रारम्भिक वैधव्यक कारण शोक आ कर्तव्यक तनावमे अछि। बचपनसँ व्यक्तिक परिवारक परिधि भीतर रहल पुरुषक लेल पुत्रसभक भावनात्मक आवश्यकता पूर्ण केलाक बाद स्वकीय एकान्तक स्वीकार कठिन अछि। ओ अपन मृत पत्नी सुनीताक स्मृति केँ सम्मान दैत छथि; दोसर विवाह केँ अतीतक नकार मानबाक भय हुनका बारम्बार रोक्कैत अछि।

रतन मे सहानुभूतिसँ प्रेरित आदर्शवाद अछि। ओ सुकन्याक शिक्षा, प्रतिभा आ परिस्थिति सँ प्रभावित होइत छथि। मुदा हुनक परामर्श सुनबाक प्रवृत्ति, समाजसँ असहमत होइतहुँ सार्वजनिक विवाद टारबाक चाह आ कतेको स्थगित निर्णय हुनका सर्वशक्तिमान नायक नहि बनबैत। एहि मानवीय दुविधाक कारण रतनक चरित्र औपन्यासिक ऊर्जा प्राप्त करैत अछि।

सुनीता : अनुपस्थित रहितहुँ सक्रिय स्मृति

मृत पत्नी सुनीता आरम्भिक घटनासभमे सशरीर उपस्थित नहि छथि, मुदा रतनक स्मृतिमे हुनक प्रभाव स्थायी अछि। सुनीता अतीतक भावात्मक विश्वासक प्रतिनिधित्व करैत छथि। रतनक नब सम्बन्धक सम्भावना पुरान सम्बन्धक निष्ठाक प्रश्न उठबैत अछि। एहि अर्थमे अनुपस्थित पात्र सेहो कथानकक नैतिक संरचनामे सक्रिय अछि।

कमलेश, रंजन आ शिक्षक-व्यवस्था

कमलेश सुकन्याक संकटमे साथी, प्रतिरोधकर्ता आ न्यायोन्मुख युवा चेतनाक स्वर अछि। रंजनक दुर्व्यवहार सामाजिक विशेषाधिकारक दुरुपयोग देखबैत अछि। कॉलेजक प्राचार्य आ शिक्षकवर्गक हस्तक्षेपसँ शिक्षा-व्यवस्थाक उत्तरदायित्वक प्रश्न उपस्थित होइत अछि। कमलेशक चरित्र सहयोगक आदर्श बनैत अछि; रंजनक चरित्र किछु अधिक नकारात्मक सरलीकरणक शिकार अछि।

रिंकी आ निर्मल : कामकाजी मध्यवर्गक दुविधा

रिंकीक कार्यालयक परिचय, ओकर परिवार आ निर्मलक भावनात्मक आग्रह शहरी-मध्यवर्गीय सामाजिक परिसर प्रस्तुत करैत अछि। एहिमे स्त्री नौकरी करैत अछि, किन्तु विवाहक निर्णयपर पारिवारिक अपेक्षा आ सामाजिक प्रतिष्ठाक नियन्त्रण कायम अछि। रिंकीक व्यक्तिगत आकांक्षा आ सामुदायिक मानदण्डक संघर्ष उपन्यासक नव पीढ़ीक समस्या देखबैत अछि।

रघुवंश बाबू आ सामाजिक पंचायत

रघुवंश बाबू रूढ़िक समक्ष सार्वजनिक तर्क प्रस्तुत करबाक भूमिका निर्वाह करैत छथि। ओ ई स्थापित करय चाहैत छथि जे समाजक सुधार भीतरहिसँ सम्भव अछि। पञ्चायतक अन्यायी निर्देशक विरोधमे हुनक हस्तक्षेप नागरिक साहसक महत्त्व उजागर करैत अछि। मुदा त्वरित सामूहिक सहमति आदर्शवादी समाधानक लक्षण अछि।

सेवकराम, विशाल, सुमन आ चमेली

एहि परवर्ती पात्रसभक माध्यमसँ कथा पुनर्विवाहक निजी प्रश्न छोड़ि गरीबक जीवन, शिक्षा, प्रेम, सार्वजनिक सम्मान आ सामाजिक सहयोगक व्यापक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। सेवकराम वर्गीय शोषणक अनुभवी पात्र छथि; विशाल-सुमन नव पीढ़ीक भावनात्मक पक्षक प्रतिनिधि; चमेली नारीक आपसी सम्बन्ध आ सहायताक सम्भावनाक वाहक अछि। एहि पात्रसभक स्वतन्त्र कथात्मक विस्तार सीमित अछि, मुदा सामूहिक प्रभावमे ओ सुधारक उपन्यासक सामाजिक फलक बढ़बैत अछि।

नारी-दृष्टि, वैधव्य आ स्वतन्त्र इच्छाक अधिकार

‘सुकन्या’क नारी-विमर्शक केन्द्र विधवा केँ पुनः दाम्पत्य-जीवन स्वीकार करबाक नैतिक आ सामाजिक अधिकार देब अछि। परम्परागत समाजमे वैधव्य केँ स्त्रीक पहिचानक स्थायी निषेधक रूपमे देखल जाइत रहल अछि। कृति एहि निषेधक विरुद्ध स्त्रीक शिक्षित जीवन, सामाजिक उपयोगिता आ प्रेमसँ जुड़ल पुनर्स्थापनाक दावा उपस्थित करैत अछि।

एहि दृष्टिकोणक दू स्तर अछि। पहिल, स्त्रीपर थोपाल गेल लोकलाज आ विवाह-निषेधक प्रत्यक्ष विरोध। दोसर, समाजक भीतर मानवीय समर्थनक नब सम्बन्ध बनयबाक प्रयत्न। सुकन्याक शिक्षा, कमलेशक मित्रता, रिंकीक कार्यालयजीवन आ चमेलीक सहयोगी भूमिका एही दोसर स्तरक सामग्री अछि।

मुदा यदि स्त्रीक गरिमा केँ केवल पुनर्विवाह प्राप्त कयलाक सफलता सँ नापल जाए, तँ अविवाहित, एकल अथवा विवाह नहि करय चाहयवाली स्त्रीक वैध जीवनक प्रश्न अनदेखल रहि जाइत अछि। उपन्यास स्वयं एहन समस्त विकल्पक विस्तृत विवेचना नहि करैत अछि। एहि कारण एकरा स्त्री-अधिकारक सम्पूर्ण दर्शन नहि, सुधारवादी संक्रमणक एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव मानब अधिक सुसंगत अछि।

रतनक नैतिक उदारता महत्त्वपूर्ण होइतहुँ स्त्रीक मुक्ति केँ ‘उदार पुरुष भेटब’ धरि सीमित कयल जाए तँ संरचनात्मक परिवर्तन अधूरा रहि जाइत अछि। एहि प्रश्नक सन्दर्भमे उपन्यासक उत्तरार्धमे सार्वजनिक संगठन, पंचायतक विरोध आ प्रशासनिक हस्तक्षेपक चित्रण विशेष मूल्यवान अछि।

पितृसत्ता, लोकमत आ सुधारक आदर्शवाद

उपन्यास लोकलाजक भाषा केँ बारम्बार प्रश्नांकित करैत अछि। “लोक की कहत” सन शंका वैयक्तिक निर्णयपर समाजक अप्रत्यक्ष शासन स्थापित करैत अछि। ग्रामीण प्रतिष्ठा-व्यवस्थामे विवाह केवल दू व्यक्तिक सम्बन्ध नहि, कुलक मान-अपमान आ

जातीय स्थिति सँ जोड़ल जायब स्वाभाविक मानल जाइत अछि। लेखक एहि स्वाभाविक मानल गेल तर्क पर संशय उत्पन्न करैत छथि।

कृतिक सुधारवादी चेतना रघुवंश बाबू, कमलेश, रामदयालजी आ सुकन्याक आचरणमे अलग-अलग रूप धारण करैत अछि। ई पात्र परम्पराक सर्वथा उन्मूलनक दावा नहि करैत छथि; ओ परम्परामे मानवीय मूल्यक पुनर्स्थापना चाहैत छथि। तें कृति विद्रोही राजनीतिक घोषणापत्र नहि, बल्कि समाज भीतरसँ बदलावक नैतिक उपन्यास अछि। एहि रचनाशैलीक शक्ति पाठकक भावनात्मक सहभागिता अछि। सामाजिक परिवर्तन व्यक्तिगत उदारता, सार्वजनिक सहमति आ न्यायसंगत व्यवहारसँ सम्भव देखाओल जाइत अछि। सीमा ई अछि जे सत्ता आ सामाजिक विभाजनक दीर्घकालिक विरोध कतहु शीघ्र समाप्त भऽ जाइत अछि। जमीनी स्तरपर गहीर रूपमे जड़ जमौने असमानता नायकक भाषण वा एकाधिक शुभचिन्तकक हस्तक्षेपसँ सर्वदा नहि बदलैत।

कथा-शिल्प : बहुसूत्रता, संयोग आ समाधान

प्रसंगविस्तार ‘सुकन्या’क प्रमुख शिल्पगत विशेषता अछि। रतनक निजी स्मृति, सुकन्याक कॉलेजजीवन, रिंकी-निर्मलक विवाह-विवाद, ग्रामपंचायतक सार्वजनिक संघर्ष, सेवकरामक वर्गीय संकट आ अन्तिम सामाजिक सहायता सभ एकहि सुधारवादी धुरीसँ जोड़ल गेल अछि। विषयगत एकसूत्रता मजबूत अछि, किन्तु घटनाक सूत्र-कौशल बराबर सफल नहि।

अनेक पात्रक अप्रत्याशित परिचय आ अनुकूल समयपर सामाजिक सहायताक प्राप्ति कथामे संयोगक भूमिका बढ़बैत अछि। उपन्यासक दार्शनिक लक्ष्य अर्थात् मानवीय शुभेच्छाक विजयक लेल ई संयोग उपयोगी अछि, मुदा मनोवैज्ञानिक यथार्थवादक दृष्टिसँ संयोगक अतिरिक्त प्रयोग स्वाभाविकता कम करैत अछि।

वर्णनकर्ताक स्वर अनेक अवसरपर मूल्यनिर्णय प्रस्तुत करैत अछि। पाठक केँ सामाजिक कुरीतिक अनिष्ट आ उदार व्यक्तिक श्रेष्ठता स्पष्ट कहि देल जाइत अछि। ई शिल्प उपदेशात्मक गद्यक निकट अछि। जबकि सुकन्या, रिंकी आ रतनक कतेको

प्रत्यक्ष संवाद एहन अछि जाहिमे नैतिक द्वन्द्व स्वयं क्रिया-वाणी सँ खुलि पड़ैत अछि। ई संवादप्रधान स्थान कृतिक अधिक जीवन्त अंश अछि।

अन्तिम अध्यायमे अनेक पक्ष एकसंग निष्पत्तिक दिस बढैत अछि। कुल-परिवारक सहमति, पुलिस-प्रशासनक हस्तक्षेप, जनमतक परिवर्तन आ पुनर्विवाहक सफलता कथा केँ सकारात्मक परिणति दैत अछि; तथापि एहि सभक बीच अधिक समयान्तर आ आन्तरिक अनिश्चितता होइत तँ कथानकक परिणाम अधिक अर्जित आ विश्वसनीय लागित।

भाषा, संवाद आ स्थानिक अनुभव

लेखकक मैथिली गद्य संवादक सहज प्रवाहपर आधारित अछि। “की”, “किएक”, “एहन”, “अहाँ”, “बाबूजी”, “बजलाह” सन प्रयोग पात्रक सामाजिक आत्मीयता स्थापित करैत अछि। घरेलू भाषासँ आरम्भ भऽ कृति कॉलेजक संस्थागत भाषा, बैंकक व्यावसायिक शब्दावली आ ग्रामसभाक सामुदायिक रजिस्टर धरि पहुँचैत अछि। एहि बहुस्तरीय भाषिक व्यवहारसँ सामाजिक परिवेशक विस्तार अनुभव होइत अछि।

तथापि अलग-अलग पात्रक संवाद सदा पूर्णतः पृथक भाषिक व्यक्तित्व रचि नहि पबैत अछि। सुधारवादी पात्रसभक वाणी कएक स्थानपर लेखकक सार्वजनिक विचार व्यक्त करबाक माध्यम बनि जाइत अछि। जँ प्रत्येक पात्रक उमेर, शिक्षा, सामाजिक वर्ग आ भौगोलिक अनुभवक अन्तर भाषा भीतर अधिक उभरितय, तँ व्यक्तित्व अधिक विश्वसनीय बनितय।

कथामे उद्यान, कॉलेज, गाम, नगर, बैंक, रेलयात्रा आ विवाहक पारिवारिक स्थल विविध सामाजिक जगत बनबैत अछि। मुदा वर्णनक मुख्य प्रयोजन कथाविकास अछि; मिथिलाक प्रकृति, स्थानीय ध्वनि, बोलीक सूक्ष्म विभेद, कृषि-जीवनक तपशील आ क्षेत्रविशिष्ट रूपकक गहन विस्तार अपेक्षाकृत कम अछि। एहि कारण कृति विषयदृष्टिसँ मैथिली समाजमे गाड़ल अछि, मुदा आँचलिक दृश्यात्मकताक स्तरपर आओर समृद्धि सम्भव छल।

मैथिली उपन्यासक इतिहासमे 'सुकन्या' : तुलनात्मक विवेचन

'कन्यादान' सँ तुलना : स्त्री-शिक्षा आ विवाह-संस्था

हरिमोहन झाक 'कन्यादान' (पुस्तकाकार प्रकाशन १९३३) मैथिली उपन्यासक सामाजिक आलोचनामे स्त्री-शिक्षा, बेमेल विवाह आ परम्परा-विरोधक उल्लेखनीय पाठ मानल जाइत अछि। 'सुकन्या'क संग ओकर साम्य विवाह-संस्थाक भीतर स्त्रीक स्थितिक प्रश्न अछि। मुदा 'कन्यादान'क हास्य-व्यंग्यक प्रखरता आ 'सुकन्या'क करुणा-प्रधान, समाधानोन्मुख शैली अलग अछि। एकठाम विवाह पूर्व किशोरीक शिक्षा आ बेमेल गठजोड़क प्रश्न प्रधान अछि; दोसर ठाम विवाहोत्तर स्त्रीक जीवनकेँ फेर अवसर देबाक प्रश्न। एहि अर्थमे विषयगत निरन्तरता अछि, शिल्पगत एकरूपता नहि।

'पारो' सँ तुलना : स्त्रीक पीड़ा आ सामाजिक संरचना

बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (नागार्जुन)क 'पारो' (१९४६) बेमेल विवाह आ स्त्रीपर थोपाल सामाजिक व्यवस्थाक त्रासदीक आलोचनात्मक उदाहरण अछि। 'पारो'मे स्त्रीक जीवनपर नियन्त्रणक विनाशकारी पक्ष कठोर रूपेँ उभरैत अछि; 'सुकन्या'मे लेखक परिवर्तनक सम्भावना आ मानवीय सहायताक आशावादी दृश्य प्रस्तुत करैत छथि। एहि कारण दुनू कृति नारीक अनुभवक भिन्न कथात्मक परिणतिक प्रतिनिधित्व करैत अछि। 'पारो'क मूल पाठक बिना सूक्ष्म संवाद-स्तरीय समानता घोषित करब उचित नहि; एतय तुलनाक आधार व्यापक विषयगत सादृश्य मात्र अछि।

लेखकक 'गुदड़ीक लाल' आ 'स्वर्ण-कमल' सँ अन्तःकृतिक सन्दर्भ

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क अन्य कृति 'गुदड़ीक लाल'मे निम्नवर्गीय जीवन, सामाजिक अन्याय आ सम्मानक प्रश्न प्रमुख रूपेँ उभरैत अछि। 'सुकन्या'मे एहि प्रकारक नैतिक सरोकार विवाह-संस्था, नारीक स्थिति आ सामाजिक प्रतिष्ठाक विमर्श बनि जाइत अछि। 'स्वर्ण-कमल' बाल-आख्यानक साहस, मार्गदर्शन आ नैतिक विजयक क्षेत्रमे अलग विधागत प्रयोग अछि। एहि तीनू कृतिक बीच स्पष्ट विधागत अन्तर राखि लेखकक सामाजिक न्यायप्रति रुचिक पुनरावृत्ति चिन्हित कयल जा सकैत अछि। ई तुलनात्मक टिप्पणी पात्र अथवा कथानकक प्रत्यक्ष अन्तःपाठीय निर्भरता सिद्ध नहि करैत अछि।

सुधारवादी उपन्यासक परम्परा आ उत्तरवर्ती सन्दर्भ

मैथिली उपन्यासक विकासमे सामाजिक रूढ़ि, स्त्री-शिक्षा, विवाह, जाति, शोषण आ बदलैत सामुदायिक जीवनक प्रश्न अलग-अलग समयमे उठैत रहल अछि। 'सुकन्या'क विशिष्टता ई जे ओ इक्कीसम शताब्दीक कामकाजी मध्यवर्ग आ स्थानीय पारिवारिक संस्कारक सह-अस्तित्व देखबैत अछि। बैंकक कार्यालय आ सार्वजनिक पञ्चायत एकहि उपन्यासमे आबि स्त्रीक चुनावपर पुरान आ नव दबावक संयुक्त दृश्य रचैत अछि।

उपन्यास ऐतिहासिक परम्परासँ सम्पर्क राखैत अछि, मुदा सभ समकालीन नारीवादी बहसक व्यवस्थित उत्तर नहि दैत अछि। स्त्रीक स्वतन्त्रता आ विवाहक सामाजिक स्वीकृतिक मध्य तनाव एकरा अध्ययनयोग्य बनबैत अछि।

कृतिक प्रमुख साहित्यिक उपलब्धिसभ

प्रथम, विधवा-पुनर्विवाहक सामाजिक असमानता केँ निजी आ सामूहिक अनुभवक माध्यमसँ उपस्थित करब उपन्यासक केन्द्रीय उपलब्धि अछि। केवल कथोपदेश नहि, रतन आ सुकन्याक दुविधा, रिंकी-निर्मलक विवाद आ ग्रामपंचायतक दबाव एही समस्या केँ बहुस्तरीय बनबैत अछि।

द्वितीय, शिक्षा आ स्वाभिमानक महत्त्व नायिकाक संघर्षमे देखाओल गेल अछि।

सुकन्याक कॉलेजक जीवन आ अन्यायपूर्ण आरोपक प्रतिरोधक प्रसंग स्त्रीक व्यक्तित्व केँ पुनर्विवाहक प्रस्तावसँ अलग मानवीय आधार प्रदान करैत अछि।

तृतीय, मानवीय सहकारक आदर्श कथाक भीतर अनेक स्तरपर उपस्थित अछि।

शिक्षक, सहपाठी, बुजुर्ग, परिवार आ प्रशासन समान नैतिक दिशामे सक्रिय भऽ सकैत अछि। एहि कारण कृति आशाक सामाजिक कल्पना प्रस्तुत करैत अछि।

चतुर्थ, आधुनिक कार्यालय आ पारम्परिक ग्रामक समांतर संरचना समकालीन

परिवर्तनक द्वैध गति देखबैत अछि। रोजगार अथवा शिक्षा अपनेआप सामाजिक कुरीति समाप्त नहि करैत; कतेको उच्चशिक्षित पात्र सेहो लोकमतक दबावसँ ग्रस्त अछि।

पञ्चम, अन्तिम प्रसंगमे नायिकाक दूसराक सहायता करबाक क्षमता ओकरा केवल दुःख झेलयवाली नारीक सीमित प्रतिमासँ बाहर निकालैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा आ अपूर्ण सम्भावना

कृतिक मुख्य सीमा नैतिक पक्षसभक अपेक्षाकृत स्पष्ट विभाजन अछि। उदार पात्र जल्दहि न्यायसंगत तर्क प्रस्तुत करैत छथि आ रूढ़िवादी पक्ष कएक बेर विरोधक प्रतिनिधि मात्र बनि रहैत अछि। वास्तविक समाजमे व्यक्तिक स्वार्थ, भय, आर्थिक विवशता आ सामूहिक सम्मानक धारणा अधिक परस्परविरोधी होइत अछि।

दोसरी सीमा कथासूत्रक अतिविस्तार अछि। सुकन्याक आत्मपरिवर्तनक गम्भीर मनोवैज्ञानिक अनुसरणक बीच विभिन्न सामाजिक उदाहरण अबैत अछि। ई उपन्यास केँ व्यापक बनबैत अछि, मुदा शीर्षक-पात्रक अन्तर्मनक निरन्तरता किछु कम करैत अछि।

तेसरी सीमा समाधानक तीव्रता अछि। जटिल सामाजिक संस्थासँ जुड़ल समस्या अनेक स्थानपर विवेकशील व्यक्ति अथवा जनमतक एकाएक परिवर्तनसँ निपटि जाइत अछि। साहित्यिक आशावाद जरूरी अछि, मुदा संघर्षक दीर्घता देखाओल जाए तँ कथाक सामाजिक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

चारिम सीमा ई जे पुनर्विवाहक सफलता केँ नारी-मुक्तिक अन्तिम चिह्न मानबाक जोखिम अछि। शिक्षा, आर्थिक सुरक्षा, सम्पत्तिक अधिकार, वैवाहिक सहमति आ विवाहक बाद निर्णयक स्वायत्तता पर अधिक विस्तृत विमर्श कृति केँ अधिक समकालीन नारीवादी गहराइ दैत।

पाँचम, भाषिक सम्पादनक दृष्टिसँ कतिपय संवादक पुनरावृत्ति, लम्बा आशय-वर्णन आ पात्रसभक एकसमान सुधारवादी वाणी केँ चुस्त करबाक सम्भावना अछि। तथापि एहि टिप्पणीक अर्थ रचनाक मैथिली बोलचाल हटेनाइ नहि; उलटे ओकर स्थानीय विशेषता अधिक सुरक्षित करब अछि।

छठम, क्रमांकनक एकटा सम्पादकीय विसंगति ध्यानाकर्षक अछि : मुद्रित कथापाठमे ६क पश्चात ८ शीर्षक अबैत अछि। आगामी प्रकाशनमे एहि खण्ड-विभाजनक पुनः परीक्षण उपयोगी होयत। ई पाठ-सम्पादकीय प्रश्न अछि, कथानकक स्वतः दोष नहि।

उपसंहार : सुकन्याक पुनर्विवाहसँ आगाँ

‘सुकन्या’ केँ केवल सुखान्त विवाहक कथा मानि पढ़ब ओकर व्यापक आशयक संकुचन होयत। मूल प्रश्न अछि व्यक्ति अपन जीवनक निर्णायक चुनाव पर कतेक अधिकार रखैत अछि, आ समाज ओहि अधिकारक मित्र बनैत अछि कि बाधक। रतनक वैधव्य आ सुकन्याक अनुभव मिलि ई प्रश्न स्त्री-पुरुष दूनू लेल प्रासंगिक करैत अछि, मुदा सामाजिक जोखिम स्त्रीपर बेसी पड़ैत अछि; कृति एही असमानता केँ प्रत्यक्ष करैत अछि।

कथाक बल ओकरा केन्द्रमे उपस्थित मानवीय विश्वास, शैक्षिक साहस, व्यक्तिगत करुणा, सार्वजनिक सहकार आ पुनः परिवार रचबाक आशापर अछि। एकर सीमा आदर्शवादी समाधान, खल-विरोधक सरलीकरण आ कथानकक अनेकार्थी विस्तारमे अछि। तथापि उपन्यास मैथिली सामाजिक कथासाहित्यमे वैधव्यक बाद सम्मानजनक नव जीवनक सम्भावना केँ एकटा समर्थ नैतिक विषय बनबैत अछि।

आलोचनात्मक निष्कर्ष ई जे सुकन्याक उपलब्धि केवल रतनसँ पुनर्विवाह नहि, बल्कि एहन स्त्रीक रूपमे मान्यता प्राप्त केनाइ अछि जे शिक्षा, सहमति, अनुभव आ सेवा द्वारा अपन सामाजिक स्थान नव रूपमे अर्जित करैत अछि। ओकर जीवनक प्रश्न पाठकक समक्ष एतय समाप्त नहि होइत; ओ आगाँ ई सेहो पूछैत अछि जे समाज प्रत्येक स्त्री केँ, विवाह करू अथवा नहि करू, समान गरिमा आ स्वतन्त्र जीवनक अवसर केना देत। एहि खुलल प्रश्नमे उपन्यासक स्थायी प्रासंगिकता सुरक्षित अछि।

१.३८. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — परिवार

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

संयुक्त परिवारक स्मृति, विघटन आ पुनर्निर्माण

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'परिवार'क विस्तृत साहित्यिक आलोचना, पृथक

पाठविश्लेषण आ मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'परिवार' (२०२१) अपन प्रकाशकीय परिचयमे संस्मरणात्मक

उपन्यास अछि। एकर कथा-केन्द्र नरेन्द्र नामक एहन पात्र छथि जे संयुक्त परिवारक

विघटन, शिक्षा-संस्थानक अनुभव, उत्तराधिकार आ स्वार्थक संघर्ष, संगीत-नाट्यक

सहायतासँ सामाजिक सम्पर्क, प्रेम-विवाहक प्रश्न आ गामक सार्वजनिक जीवनक

पुनर्चर्चाकेँ आपसँ जोड़ैत छथि। एहि आलेखक मुख्य प्रतिपादन ई अछि जे उपन्यासमे

'परिवार' केवल रक्तसम्बन्धक संस्था नहि, प्रत्युत देखभाल, सहभागिता, स्मृति,

आर्थिक विवेक आ सामाजिक उत्तरदायित्वसँ बनैत नैतिक समुदाय थिक। तथापि

रचनाक आदर्शवादी समाधान, नायकक सर्वसमाधानकारी उपस्थिति, महिला-पात्रक

सीमित स्वायत्तता आ आर्थिक-सत्तात्मक जटिलताक अपेक्षाकृत सहज निराकरण

आलोचनाक विषय बनैत अछि। मुद्रित पाठक आरम्भ, मध्य आ अन्तक पृथक

विश्लेषणक संग परिशिष्टक वंशावली-सामग्रीकेँ सामाजिक-स्मृति रूपेँ पढ़ल गेल अछि।

विदेहक पोथी-सूची, गद्य-सूची आ शिशु-उत्सव अभिलेखक आधारपर मैथिली बाल-

साहित्यक चित्रकथा, बाल-उपन्यास आ डिजिटल प्रसारक सांकेतिक विकास-रेखा

बनाओल गेल अछि; मुदा 'परिवार'केँ बाल-उपन्यास घोषित नहि कएल गेल अछि।

प्रस्तावना : परिवार शीर्षकक अर्थ-क्षेत्र

'परिवार' शब्द एकहि बेर मे रहबाक भौतिक व्यवस्था, नातेदारीक सम्बन्ध, परस्पर श्रम-

वितरण, सम्पत्तिक साझा प्रबन्ध आ भावनात्मक आश्रयकेँ सूचित करैत अछि। संयुक्त

परिवार पर साहित्य लिखैत काल लेखककेँ ई सभ स्तर एक संग पकड़य पड़ैत छनि।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' एहि कठिनाइकेँ नरेन्द्रक जीवनानुभव आ गामक अनेक प्रसंगक

सहारे कथात्मक रूप दैत छथि। कथा अपन आरम्भमे एकटा सेवानिवृत्त व्यक्तिक गाम-प्रत्यावर्तनसँ आगाँ बढ़ैत अछि; बादमे ओकर अतीतक पारिवारिक अनुशासन, शैक्षिक यात्रा, वैमनस्य आ समाज-सेवा क्रमशः खुलैत जाइत अछि। अन्तमे परिवारक अर्थ फेर केवल वंशपरम्परा धरि सीमित नहि रहैत अछि।

एहि अध्ययनमे पोथीकेँ सामाजिक आदर्शक प्रत्यक्ष प्रतिलिपि मानि प्रशंसा करब पर्याप्त नहि होयत। कथाकार जे समाधान प्रस्तुत करैत छथि तकर शिल्पगत विश्वसनीयता, पाठकीय प्रभाव आ विचारधारात्मक परिणाम सेहो जाँचब आवश्यक अछि। ‘परिवार’क सर्वोत्तम पक्ष ओकर निकट-सम्बन्धसभकेँ गामक सार्वजनिक क्रियाकलापसँ जोड़बाक संकल्प अछि; ओकर मुख्य सीमा ई जे संघर्षक बहुत रास कारककेँ नरेन्द्रक व्यक्तिगत विवेकक भरोसापर शान्त करबाक प्रवृत्ति रहैत अछि।

कृतिपरिचय आ संस्मरणात्मक स्वरूप

आधार-पाठ ‘परिवार’क प्रथम संस्करण (२०२१) अछि। प्रकाशकक नाम गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, जिला दरभंगा छपल अछि; मुद्रक प्रिंटवेल, टावर, दरभंगा देल गेल अछि आ सहयोग राशि १०० टाका अंकित अछि। मुखपृष्ठ आ भीतरक शीर्षक दूनू पर उपशीर्षक ‘संस्मरणात्मक उपन्यास’ स्पष्ट अछि। एहि विधागत नामकरणक संग लेखकक ‘दू शब्द’ आ मुरलीधर झाक ‘भूमिका’ पढ़ला पर रचनाक निज अभिप्रायक दू अलग स्तर भेटैत अछि: लेखक वास्तविक अनुभूतिक दाबी करैत छथि, भूमिका उपन्यासक सामाजिक आदर्श आ चरित्र-व्यवहारकेँ रेखांकित करैत अछि।

साक्ष्यक तीन स्तर राखल गेल अछि: प्रथम, स्वयं मुद्रित पुस्तकक कथ्य आ पाठ; द्वितीय, पोथीक पूर्वपीठिका, लेखक-वचन आ अन्तक वंशावली; तृतीय, विदेहपर उपलब्ध पुस्तक-सूची आ बाल-साहित्यक अभिलेख। उद्धरणक पृष्ठ-संख्या मूल मुद्रित पृष्ठक अछि। जतेक शब्द-समूहक अक्षर-विन्यास स्पष्ट रूपसँ मिलैत अछि, केवल ततेककेँ उद्धरण-चिह्नमे राखल गेल अछि; शेष विवेचन पाठ-सार आ व्याख्या रूपमे प्रस्तुत अछि। विदेहक सूचीमे दर्ज अन्य कृतिक सन्दर्भ मुख्यतः विधा, शीर्षक आ अभिलेखीय

उपस्थिति धरि सीमित अछि; ओकर अप्रत्यक्ष पाठकें प्रत्यक्ष पढ़ल घोषित नहि कएल गेल अछि।

भूमिका आ 'दू शब्द' : उपन्यासक आत्मघोषणा

मुरलीधर झा लिखित 'भूमिका' उपन्यासकें नरेन्द्रक जीवन-संघर्षक उदाहरण मानैत अछि। ओ बाल्यावस्थाक अभाव, शिक्षा-अर्जन, गुरुजीसँ सम्बन्ध, प्रेम-प्रसंग, गामक आयोजन आ सामाजिक हितमे कर्मक क्रमकें रेखांकित करैत छथि। भूमिका अपन पाठककें पहिनहि संकेत दैत अछि जे नरेन्द्र केवल भोगल दुखक कथावाचक नहि, परिस्थिति बदलबाक चेष्टामे सक्रिय पात्र छथि। एहि पूर्वभूमिकाक प्रशंसात्मक मूल्यांकन आ उपन्यासक स्वतन्त्र कलात्मक उपलब्धिक बीच भेद राखब जरूरी अछि; भूमिका आलोचनाक निष्कर्षक विकल्प नहि थिक।

लेखकक 'दू शब्द'मे विधागत दाबी अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। ओ कथा-सामग्रीकें अनुभवसँ जोड़ैत छथि, मुदा पात्र आ स्थान बदलल गेल होयबाक सूचना सेहो दैत छथि। ई अन्तर स्मृतिलेखन आ कथा-रचनाक सीमा पर स्थित अछि।

“‘परिवार’ पोथी एकटा संस्मरणात्मक उपन्यास थिक, जे विशुद्ध सत्य घटना पर आधारित अछि।” (मुद्रित पृ. 7)

‘विशुद्ध सत्य घटना’ कहबाक दाबी आ ‘काल्पनिक’ नामकरणक सहअस्तित्व वास्तवमे रचनाक रचनाशास्त्रीय तनाव अछि। ई पाठकसँ दस्तावेजक जकाँ विश्वास माँगैत अछि, मुदा पात्रक संवाद, संयोग आ घटनाक चयन उपन्यासक रचनात्मक स्वतन्त्रताक अन्तर्गत रहैत अछि। आलोचनाक लेल तर्कसंगत स्थिति ई थिक जे पुस्तकमे कएल सत्य-दाबी लेखकक आत्मघोषणा अछि; प्रत्येक घटना स्वतन्त्र रूपेँ प्रमाणित इतिहास नहि। लेखकक एहि सावधानीकें रहस्यमयता अथवा असत्यक आरोप बना देब उचित नहि होयत।

‘दू शब्द’मे नरेन्द्रक स्नेह, संयुक्त परिवारक आदर्श, परस्पर विरोधक सामाजिक उपयोग आ युवापीढ़ीक उत्साहपर बल देल गेल अछि। एहि दृष्टिसँ उपन्यासकें केवल करुण

पारिवारिक कथा मानब अधूरा होएत; ई स्वैच्छिक सामाजिक आचारक एकटा कल्पनात्मक प्रस्ताव सेहो अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : कथा-प्रवेश आ गाम-प्रत्यावर्तन

मूल कथाक आरम्भ नरेन्द्रक सेवानिवृत्तिक बाद गाम अयलासँ होइत अछि। आधुनिक नौकरी-जीवनक बाद गामक सामाजिक सम्बन्धमे पुनः प्रवेश एकटा कथात्मक चौखट बनैत अछि। नरेन्द्रक स्वागत, लोकक संग हुनक पुरान परिचय आ परिवारसँ जुड़ल द्वन्द्वक संकेत कथाकें वर्तमान क्षणसँ पाछाँ स्मृतिक समयमे लऽ जाइत अछि। पाठक पहिनेहि जानि जाइत अछि जे नायकक मूल्यांकन केवल कुल-नाम वा आर्थिक स्थितिसँ नहि, ओकर सार्वजनिक उपयोगितासँ सेहो कएल जा रहल अछि।

“आइ नरेन्द्र सेवानिवृत्त भऽ कऽ गाम आयल छथि।” (मुद्रित पृ. 9)

ई सरल उद्घाटन सघन कथात्मक फल दैत अछि। ‘आइ’ तत्काल वर्तमानक बोध करबैत अछि; ‘सेवानिवृत्त’ दीर्घ बीतल समयक अनुमान उत्पन्न करैत अछि; ‘गाम’ स्मृतिक स्थायी स्थल बनैत अछि। एहि तीन शब्द-समूहमे कथा अपन समय-संरचनाक आधार राखि दैत अछि। क्रमिक जीवन-वृत्तान्तक बदला कथाकार पहिने अनुभवसंपन्न वयस्क नरेन्द्रकें सोझाँ अनैत छथि। अतीतक संघर्ष तखन वर्तमानक सम्मान आ योगदानसँ तुलना करबाक अवसर पबैत अछि।

आरम्भिक खण्डमे स्वार्थ, सम्पत्तिक प्रतिस्पर्धा आ नरेन्द्रक अपेक्षाकृत समन्वयवादी दृष्टि आमने-सामने अबैत अछि। जँ ई विरोध ‘नीक’ आ ‘खराब’ व्यक्तिक सरल विभाजनमे परिणत होइत अछि तँ चरित्र-जटिलता घटैत अछि; तथापि गामक अन्तर्विरोधकें आरम्भे स्पष्ट करब उपन्यासक नैतिक धुरी निर्धारित करैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : बाल्यावस्था, शिक्षा आ आश्रयक राजनीति

नरेन्द्रक पूर्वजीवनक वर्णनमे आर्थिक अभाव, परिवारक आश्रयदाता आ शिक्षा-अर्जनक अवसर महत्त्वपूर्ण छथि। नीलाम्बर बाबू तथा श्वेताम्बर बाबूक नामसँ जुड़ल प्रसंगसमूह घरक भीतर अधिकार, अनुशासन आ संरक्षणक असमान वितरण दिस संकेत करैत

अछि। बचपनक परिप्रेक्ष्य अपनहि कारण पाठककेँ मार्मिक लगैत अछि: बच्चा परिवारक सम्पत्ति-विवादक सक्रिय निर्माता नहि, मुदा ओकर परिणामक पहिल भुक्तभोगी भऽ सकैत अछि।

शिक्षाक प्रति नरेन्द्रक आग्रह उपन्यासक आशावादी पक्ष अछि। शिक्षणकेँ केवल परीक्षा-उत्तीर्णताक साधन नहि, व्यक्तित्वक निर्माण आ समाजमे बराबरीक उपस्थिति पाबयक मार्ग रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। एतऽ बाल्यावस्थाक स्मृति आ बाल-साहित्यक स्वभावमे अन्तर करब जरूरी अछि: कथा बालजीवनकेँ चित्रित करैत अछि, मुदा ओकर दीर्घ वैचारिक संवाद, सम्बन्ध-जाल आ पूर्वापर जीवन-व्याख्या मुख्यतः वयस्क पाठककेँ सम्बोधित करैत अछि।

अभावसँ उबरबाक प्रसंगक दोसर पाठ सेहो सम्भव अछि। सफल व्यक्तिक संघर्ष-जीवनी प्रायः सामाजिक संरचनामे रहित असमानताकेँ व्यक्तिगत प्रतिभा आ परिश्रमक कहानीमे बदलि दैत अछि। नरेन्द्रक सफलता प्रशंसनीय होइतहुँ प्रश्न बचल रहैत अछि: ओहि गामक एहन कतेक बालक छथि जिनका समान आश्रय, मार्गदर्शन वा अवसर नहि भेटैत छनि? उपन्यासक नैतिक व्यापकता एहन अनुत्तरित सामाजिक प्रश्नक आलोकमे बेसी स्पष्ट होइत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : भाईसभक सम्बन्ध आ संयुक्त परिवारक संकट
कथाक मध्यवर्ती हिस्सामे संयुक्त परिवारक भीतर सम्पत्ति, आमद-खर्च, निर्णयाधिकार आ आपसी विश्वासक प्रश्न उभरैत अछि। पारिवारिक ऐक्य केवल भावुक भावना नहि, व्यवहारिक व्यवस्थाक विषय बनैत अछि। परिवारक मुखिया के होएत, के ककर उत्तरदायी होएत, श्रम वा साधनक बाँटवारा कोना होएत, आ विवादक समय कोन नियम मानल जाएत—एहन प्रश्नक प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष उपस्थिति उपन्यासक सामाजिक जीवन्तता बढ़बैत अछि।

नरेन्द्र द्वारा निजी स्वार्थक बदला सामूहिक सम्हारपर देल गेल बल रचनाक केन्द्रीय प्रेरणा अछि। कथाकार संघर्षक जड़ एहन व्यवहारमे देखैत छथि जतऽ व्यक्ति अपन

तात्कालिक हितकें परिवारक दीर्घकालीन हितसँ ऊपर राखि दैत अछि। मुदा आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे सम्पत्तिक वास्तविक असमानता, देखभालक अदृश्य श्रम, स्त्रीक उत्तराधिकार आ पीढ़ीगत अपेक्षाक भिन्नता सभकें केवल स्वार्थवृत्तिसँ समझल जा सकैत अछि कि नहि। उपन्यासक समाधान-प्रधान दृष्टि एहि जटिलताकें कतेको बेर सहज बनबैत अछि।

कथा-योजनाक प्रभावी विशेषता ई अछि जे पारिवारिक विवादक प्रतिक्रिया गामक व्यवहारपर पड़ैत अछि। घरक भीतरक कटुता, समूहक विघटन आ समाजक साझा संसाधनक ह्रास एक-दोसरासँ जुड़ल देखाएल अछि। एहि अर्थमे उपन्यास ‘गृह-कथा’ आ ‘समाज-कथा’ बीचक सीमाकें पार करैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : विवादसँ सहयोग दिस, संस्कृति एक माध्यम नरेन्द्र आ हुनक संग जुड़ल पात्र सांस्कृतिक गतिविधिक माध्यमसँ आपसी दूरी घटेबाक प्रयास करैत छथि। नाटक, संगीत आ सामूहिक आयोजनक प्रसंग कथाकें घरक भीतरी कोठरीसँ निकालि सार्वजनिक स्थलपर अनैत अछि। नाटकक अभ्यासक माध्यमसँ विरोधी पक्षक लोक सेहो एक मंचपर अबैत छथि; सांस्कृतिक श्रम आपसी बातचीतक अवसर निर्माण करैत अछि।

एहि खण्डमे नाट्य-मंचनक रचनात्मक अर्थ एकरे लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे समाजक ‘भूमिका’ परस्पर बदलबाक सम्भावना नाटकमे प्रत्यक्ष होइत अछि। व्यक्ति जखन दोसर पात्रक भाषा बाजैत अछि, दर्शकक प्रतिक्रियासँ गुजरैत अछि, तखन अपन सीमित स्वार्थसँ बाहर निकलि सकैत अछि—रचना एहि सम्भावनाक पक्ष लैत अछि। तथापि मंचनक पश्चात् विरोध तुरन्त समाप्त भऽ जाएत, ई आवश्यक नहि। कथा जखन सहमतिपर तेजी सँ पहुँचैत अछि, यथार्थक कठोरता किछु कम भऽ जाइत अछि।

“हम सभ जे किछु करऽ चाहैत छी से ककरा लेल, अही समाजक लेल ने।” (मुद्रित पृ. 16)

एहि संवादमे उपन्यासक सामाजिक उद्देश्य संक्षेपमे उद्घाटित अछि। ‘हम सभ’ सामूहिक कर्ताकेँ, ‘ककरा लेल’ उत्तरदायित्वक प्रश्नकेँ आ ‘समाज’ परिवारसँ बाहर व्यापक मानव-सम्बन्धकेँ उपस्थित करैत अछि। ई वाक्य नरेन्द्रक चरित्रक नैतिक आत्मपरिचय सेहो अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : शंकर, दीपाली आ सम्बन्धक नूतन धरातल गुरुजीक परिवारसँ जुड़ल शंकर आ दीपालीक प्रसंग नूतन पीढ़ीक भावना आ सामाजिक नियन्त्रणक बीचक वार्तालाप प्रस्तुत करैत अछि। संगीतक प्रशिक्षण, परस्पर आकर्षण, विवाहक सम्भावना आ उचित सामाजिक स्वीकृतिक खोज एहि उपकथाकेँ मुख्य परिवार-विमर्शसँ जोड़ैत अछि। प्रेम एतऽ केवल निजी रोमांच नहि; ई वयस्क निर्णय, गुरु-शिष्य सम्बन्धक मर्यादा, अभिभावकक आशंका आ संस्थागत प्रतिष्ठाक प्रश्नक संग आबैत अछि।

शंकरक संगीत-शिक्षा आ दीपालीक नृत्य-साधना रूपक स्तरपर सेहो पढ़ल जा सकैत अछि। नरेन्द्रक आरम्भिक शिक्षा-यात्रा जेना अवसरक माध्यम बनैत अछि, तहिना कला नव पीढ़ीकेँ परम्परागत आजीविका-बोधसँ बाहर अपन भविष्य सोचबाक अवकाश दैत अछि। एहि बिन्दुपर उपन्यास परिवारक संरक्षक दृष्टि आ युवाक स्वायत्त अभिलाषाक बीच एकटा समझौता खोजैत अछि।

कथाकार प्रेम-विवाहकेँ एकदम असम्भव वा स्वतः अनुचित नहि मानैत छथि; मुदा निर्णयकेँ मुख्यतः बुजुर्ग मध्यस्थताक सहायतासँ वैधता भेटैत अछि। ई परम्परा आ आधुनिकताक समन्वयक एकटा मॉडल थिक। प्रश्न तथापि शेष रहैत अछि जे शंकर आ दीपाली अपन भविष्य-सम्बन्धी निर्णयमे कतेक प्रत्यक्ष अधिकार राखैत छथि। परिवारक सहमति कथामे सुखद परिणाम दैत अछि, मुदा ओकरा स्त्री-पुरुषक समान एजेन्सीक पूर्ण प्रमाण मानब जल्दबाजी होयत।

पृथक पाठविश्लेषण : शैक्षिक पेशा, रोजगार आ गतिशीलता

शंकरक विश्वविद्यालयीय संगीत-शिक्षणसँ जुड़ल प्रसंगमे परीक्षा, रोजगार, नियुक्ति आ पेशागत योग्यता पर बातचीत अछि। संगीतकेँ केवल मनोरंजन मानयवला दृष्टिक विरुद्ध ई खण्ड ओकर संस्थागत महत्त्व उभारैत अछि। गुरुजीक आशंका आ नरेन्द्रक उत्साहक बीच भिन्न जीवनानुभव स्पष्ट होइत अछि। कला, अध्यापन आ विवाह—तीनू एकहि जीवन-परियोजनाक भाग बनैत अछि।

“श्रीमान् ! हम एहन गारंटी तँ नहि दऽ सकैत छी। तखन हम प्रयास अवश्य करब।”
(मुद्रित पृ. 57)

एहि उत्तरक महत्त्व ई अछि जे नायक अपन सीमाकेँ स्वीकृति दैत छथि। रचनाक आन बहुत ठाम नरेन्द्रक निर्णय चमत्कारिक रूपेँ सफल होइत बुझाइत अछि; एतऽ ‘गारंटी’ नहि देबाक संकोच चरित्रकेँ वास्तविक नैतिक विनम्रता प्रदान करैत अछि। एहन क्षण कथा-नायककेँ सर्वशक्तिमान सुधारकक रूढ़ प्रतिमासँ किछु बाहर निकालैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : नवा रामायण, सार्वजनिक स्मृति आ ग्रामीण संस्था

उत्तरार्द्धमे गामक सांस्कृतिक पुनरुज्जीवनक प्रयास अधिक ठोस रूप लैत अछि। विद्यापति-स्मृति पर्व, सामूहिक आयोजन, सार्वजनिक चर्चा आ ‘नवा रामायण’ सन परियोजनाक उल्लेख गामक सामाजिक ऊर्जाकेँ संगठित करबाक आकांक्षा प्रकट करैत अछि। कथा शिल्पगत रूपेँ रोचक मोड़ एतऽ लैत अछि: घरक कलह सुलझाबयवला व्यक्ति सामुदायिक कार्यक्रमक समन्वयक बनि उभरैत अछि।

सांस्कृतिक कार्यक्रमकेँ उपन्यासमात्र धार्मिक कर्मकाण्ड नहिओं बनबैत अछि; ओकर भीतर आयोजन-समिति, व्यय, जनसम्पर्क, सहयोग, मंच आ सार्वजनिक अनुमोदनक प्रश्न उपस्थित अछि। एहि कारण कथा सांस्कृतिक प्रबन्धनक एकटा लघु समाजशास्त्र रचैत अछि। विशेष महत्त्व एहि बातक अछि जे कार्यक्रमपर उत्साह आ विरोध दूनू अछि: सार्वजनिक जीवनमे सर्वसम्मति स्वतः उपलब्ध नहि होइत अछि।

एहि प्रसंगक आलोचनात्मक पक्ष ई जे लोककल्याणक उद्देश्यक नामपर संस्थागत नियमकेँ कखन बदलब, कखन स्वीकृत प्रक्रिया अपनाएब—एहन प्रश्न उठैत अछि। नरेन्द्रक व्यवहारक मूल्यांकन केवल परिणामसँ नहि, प्रक्रियाक पारदर्शितासँ सेहो होयबाक चाही। पुस्तक ई प्रश्न उपस्थित करबाक पर्याप्त कथा-सामग्री दैत अछि, भले ओकर अन्तिम स्वर सामंजस्यवादी रहय।

पृथक पाठविश्लेषण : उपसंहार आ ‘परिवार’क विस्तार

अन्तिम अंशमे नरेन्द्रक जीवनक उत्तरकाल, अपन सन्तानक जीवन, भाय-बहिनक अलग-अलग परिवार आ सामाजिक जुड़ाव एक संग सोझाँ अबैत अछि। कथा आरम्भक संयुक्त परिवारक क्षति आ अन्तक व्यापक भावात्मक सम्पर्कमे एक प्रकारक वृत्ताकार सम्बन्ध बनबैत अछि। परिवार आब एके घरमे रहबाक बाध्यता नहि; दूर-दूर रहिकय परस्पर सहयोग, सम्पर्क आ प्रसन्नताक सम्भावना अछि।

“तखन नरेन्द्रक परिवार ‘परिवार’ सनक लागत छलन्हि।” (मुद्रित पृ. 76)

उपन्यासक अन्तिम मूल्य-वाक्यकेँ शीर्षकक पुनर्पाठ मानल जा सकैत अछि। पहिल ‘परिवार’ वास्तविक जीवनी-संबन्धक जटिल समूह अछि; दोसर ‘परिवार’ एकटा अपेक्षित नैतिक गुणवत्ता—स्नेह, सम्मान, संवाद आ पारस्परिकता—क नाम बनि जाइत अछि। शब्दक एहि पुनरावृत्तिमे किताबक सम्पूर्ण अर्थ-यात्रा समेटल अछि। तथापि वाक्य पाठककेँ निष्कर्ष सुनबैत बेसी अछि, खुलल प्रश्नक अवकाश कम दैत अछि। एकर प्रभावी संक्षिप्तता आ उपदेशात्मक निश्चितता दूनूकेँ साथे देखबाक चाही।

कथा-संरचना : स्मृति, वर्तमान आ पुनरावलोकन

‘परिवार’ रैखिक ऐतिहासिक वृत्तान्तक रूपमे नहि, संस्मरणात्मक उपन्यासक रूपमे चलैत अछि। वर्तमानक सेवानिवृत्त नरेन्द्रक गाम-प्रत्यावर्तन प्रारम्भिक आधार अछि; तकर बाद पुरान कठिनाइ, आश्रयदाताक छवि, शिक्षा, घरेलू असहमति, कला-सम्बन्ध आ समाजमे प्रतिष्ठा—अनेक समय-स्तरक पुनर्संयोजन होइत अछि। ई योजना स्मृतिक

सामान्य प्रवाहसँ मेल खाइत अछि, जतऽ किछु व्यक्तिक स्मरण कोनो घटना-क्रमकेँ तीव्र करैत अछि।

तथापि स्मृतिपरक विधानक एकटा चुनौती अछि। बहुत प्रसंगक संवाद पूरा-का-पूरा पुनर्निर्मित रूपेँ उपस्थित अछि, जकरा दशको बादक अक्षरशः स्मृति मानब कठिन होयत। ई उपन्यासक दोष नहि, विधागत सीमा अछि—संस्मरणात्मक सत्य आ कलात्मक पुनर्रचना बीच दूरी पर सावधानी राखब जरूरी अछि। लेखक द्वारा पात्र-स्थानक रूपान्तरणक स्वीकारोक्ति एहि मिश्रित स्वरूपकेँ पूर्वहि चिह्नित करैत अछि। कथाक घटना-समूहमध्ये नैतिक निरन्तरता नरेन्द्रक चरित्र प्रदान करैत अछि; परिपक्व नायकक उपस्थितिसँ विभिन्न प्रसंग जुड़ैत अछि। एहि संरचनाक लाभ कथात्मक केन्द्रक स्थिरता; हानि अन्य पात्रक स्वतन्त्र जटिलताक कतेको बेर पाछाँ पड़ि जाएब।

पात्र-निर्माण : नरेन्द्रक आदर्शवाद आ ओकर सीमा

नरेन्द्रक व्यक्तित्व शिक्षा, आत्मसंयम, सांस्कृतिक रुचि, परोपकार आ सम्बन्ध-बचावक प्रयाससँ बनैत अछि। पारिवारिक जीवनमे अपन हितसँ बेसी सामूहिक मंगल चाहबाक प्रवृत्ति हुनक नैतिक पहचान अछि। कथा हुनका ‘आदर्श’ बनबैत अछि, मुदा एहन आदर्श पात्रक मूल्यांकन ओकर विरोधी पात्रसँ भेल जटिल संवादपर निर्भर करैत अछि। जतेक संघर्षक कारण सहज रूपेँ ‘स्वार्थ’ कहि देल जाइत अछि, ततेक पाठककेँ दोसर पक्षक आर्थिक वा भावात्मक तर्क सुनबाक अवसर घटैत अछि।

नीलाम्बर बाबू, श्वेताम्बर बाबू, गुरुजी, शंकर, दीपाली, सुमन आ अन्य सम्बद्ध पात्र केवल नायकक जीवनीक सजावट नहि छथि; सभ परिवार, शिक्षा, उत्तराधिकार वा सामाजिक प्रतिष्ठाक अलग पक्ष प्रतिनिधित्व करैत छथि। मुदा प्रतिनिधित्व आ व्यक्तित्वमे अन्तर अछि। कथाकार कखनो-कखनो चरित्रकेँ मुद्दाक वाहक बना दैत छथि; ओहि समय मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता अपेक्षाकृत अल्प होइत अछि। सुमन सन विरोधी स्वरतक उपस्थितिसँ कथामे द्वन्द्व बनेल रहैत अछि, मुदा ओकर तर्कक सम्पूर्ण परिस्थितिकें नरेन्द्रक आदर्शवादक बराबर विस्तार नहि भेटैत अछि।

भाषा, संवाद आ शैलीक विवेचन

पोथीक प्रमुख भाषा सहज, संवादप्रधान मैथिली अछि। कथनमे गाँवक बोलचाल, आदरसूचक सम्बोधन, पारिवारिक नातेदारीक शब्दावली आ सार्वजनिक आयोजनसँ जुड़ल आधुनिक पदावली एक संग चलैत अछि। एहि मिश्रणसँ गामक आधुनिक जीवनक भाषिक रूप उपस्थित होइत अछि। विद्यालय, विभाग, परीक्षा, संगीत, कार्यालय आ समिति सन शब्द-क्षेत्रक प्रयोग रचनाकेँ एकांगी लोक-चित्र बनबाक सँ बचबैत अछि। कथोपकथन पात्रसभक मतभेद केँ प्रत्यक्ष करैत अछि। प्रश्न-उत्तरक आवृत्ति नरेन्द्रक तर्कवादी ढंगक अङ्ग अछि; ओ अरुकेँ बुझबैत छथि, आपत्ति सुनैत छथि आ नैतिक निष्कर्ष दिस वार्ता मोड़ैत छथि। किछु ठाम संवाद मंचीय गति उत्पन्न करैत अछि, विशेषतः गुरुजी आ शंकरक सम्बन्ध आ गाँवक कार्यक्रमक विचार-विमर्शमे। मुदा बारम्बार दीर्घ तर्कपूर्ण भाषणक कारण कथात्मक दृश्य निबन्ध-जकाँ बनि जाइत अछि। एहि शिल्पगत असन्तुलनकेँ उपन्यासक शिक्षापरक इच्छासँ जोड़िकय बुझल जा सकैत अछि।

रचना ‘कहबाक’ शक्ति पर भरोसा करैत अछि; मौन, संकेत, लघु दृश्य वा वस्तुगत वर्णनक स्वतन्त्र उपस्थिति अपेक्षाकृत कम अछि। पाठककेँ मूल्य-निर्णयक दिशा प्रायः स्पष्ट करा देल जाइत अछि। एहि कारण कथ्य सुलभ होइत अछि, मुदा साहित्यिक बहुअर्थकता किछु सिमटैत अछि।

स्त्री-पात्र, परिवार आ लैंगिक दृष्टि

परिवारक स्मृति प्रायः पिता, काका, भाय, गुरुजी आ सामाजिक नेतृत्वक माध्यमसँ संगठित होइत अछि। महिला-पात्रक भूमिका स्नेह, संस्कार, प्रेम, वैवाहिक निर्णय आ घरेलू निरन्तरतासँ जुड़ल रूपमे सोझाँ अबैत अछि। दीपालीक नृत्य-साधना स्त्रीक रचनात्मक योग्यता दर्शबैत अछि; ओ केवल विवाहक पात्र नहि, कलामे सक्रिय व्यक्तित्व सेहो छथि। तथापि हुनक निर्णयक स्वतन्त्र शर्त, व्यावसायिक उपलब्धिक बाधा आ भविष्यक योजना पर आर विस्तार सम्भव छल।

संयुक्त परिवारमे भोजन, देखभाल, वृद्धक सेवा, बच्चाक पालन आ घरक श्रम प्रायः असमान रूपेँ बाँटल रहैत अछि। उपन्यास जखन साझा परिवारकेँ आदर्श मानैत अछि, तखन ई प्रश्न पूछब आवश्यक अछि जे ‘साझा’ काजक भार ककर कन्धापर पड़ैत अछि। स्त्रीक सम्पत्ति-अधिकार, शिक्षा आ वैवाहिक स्वायत्तताकेँ स्पष्ट सिद्धान्तक रूपमे नहि, बल्कि कथामे उपस्थित संकेतक माध्यमसँ विचारल जा सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ ‘परिवार’ नव आलोचनाक लेल उपयुक्त पाठ अछि: एकर पारिवारिक आदर्शक मूल्य महिला-पक्षक दृश्यमान सहभागिताक कसौटीपर सेहो होयबाक चाही।

वर्ग, सम्पत्ति आ ग्रामीण आधुनिकता

नरेन्द्रक आर्थिक अभावक चर्चा, बादक नौकरी-जीवन, भाईसभक शैक्षिक उपलब्धि आ परिवारक सम्पत्ति-व्यवस्थाक द्वन्द्व ग्रामीण समाजक बदलैत सामाजिक गतिशीलताकेँ चिह्नित करैत अछि। शिक्षा आ सरकारी/व्यावसायिक पदक संभावनासँ पुरान कृषिपरक प्रतिष्ठा-मापन बदलबाक संकेत भेटैत अछि। आधुनिकताक आगमन एतऽ गाँव छोडबाक मात्र प्रक्रिया नहि; आधुनिक संस्थानक अनुभवकेँ गाममे पुनः लगानी करबाक परियोजना अछि।

एहि परियोजनाक अन्तर्विरोध ई अछि जे सफल नायकक संस्कार आ सम्पर्क एतेक निर्णायक बनि जाइत अछि जे सामूहिक संस्था-सुधारक प्रश्न हुनक व्यक्तिगत सदाशयताक पाछाँ छिपि सकैत अछि। सम्पन्न आ वंचित परिवारक संसाधनक अन्तर, स्थानीय सत्ता-संरचना, उत्तराधिकारक नियम आ अवसरक असमान वितरणक अधिक विस्तृत परीक्षण पाठकेँ यथार्थपरक बना सकैत छल। एहि कमीकेँ रचनाक सामाजिक आदर्शवादक सीमा मानल जा सकैत अछि, लेखकक सदुद्देश्यक निषेध नहि।

परिशिष्टक वंशावली : पाठ, दस्तावेज आ ऐतिहासिक सावधानी

मूल कथाक उपरान्त मुद्रित पृष्ठ ७७-८६ पर ग्राम उपरदाहासँ सम्बन्धित अनेक शाखाक वंशावली-आरेख प्रस्तुत अछि। ई सामग्री कथाक सामान्य उपसंहार नहि। वंश-रेखाक माध्यमसँ व्यक्ति, कुल, सम्बन्ध-स्मृति आ पीढ़ीक अनुक्रमक दृश्य-रूप बनैत अछि।

उपन्यासक शीर्षक ‘परिवार’कें ई परिशिष्ट दीर्घ सामाजिक कालक परिप्रेक्ष्य प्रदान करैत अछि; कथा जतय नैतिक सहजीवनक प्रश्न उठबैत अछि, वंशावली रक्त-सम्बन्धक संरचनात्मक स्मृतिपटल प्रस्तुत करैत अछि।

तथापि कथा आ परिशिष्टक ज्ञानमीमांसीय स्तर एक नहि। उपन्यास कल्पित नाम आ घटनाक संयोजन करैत अछि; वंशावली वास्तविक समुदायसँ जुड़ल ऐतिहासिक सूचना होयबाक दावा कऽ सकैत अछि। ओकरा उपयोग करैत काल नाम, पीढ़ी, शाखा आ काल-सूचना स्थानीय दस्तावेज आ जीवित मौखिक परम्परासँ अलग सत्यापन माँगैत अछि। एहि लेखमे वंशावलीकें सम्बन्ध-स्मृतिक साहित्यिक-सांस्कृतिक साक्ष्य रूपमे पढ़ल गेल अछि, सम्पूर्ण प्रमाणित वंश-इतिहास रूपमे नहि।

महत्त्वपूर्ण अन्तर ई सेहो अछि जे वंशावली सामान्यतः पुरुष-रेखाक नाम-समूह पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि; वैवाहिक आगमन, महिला-श्रम, आत्मीय सम्बन्ध आ दत्तक/पालन-सम्बन्धक बहुतेक सूक्ष्म रूप ओहि रेखाचित्रमे अस्पष्ट रहि सकैत अछि। एहि कमीमे उपन्यासक नैतिक अवधारणा अधिक व्यापक बनैत अछि: जीवित परिवार केवल वंशरेखा नहि, पालन आ पारस्परिक दायित्व सेहो अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन

‘परिवार’ स्वयं बाल-साहित्यक श्रेणीमे नहिऐँ पड़ैत अछि। विदेहक गद्य आ पोथी-सूचीमे एकरा संस्मरणात्मक उपन्यास कहल गेल अछि, जखन कि लेखकक ‘स्वर्ण कमल’ स्पष्ट रूपेँ ‘बाल उपन्यास’ आ शिशु-उत्सवक सूचीमे दर्ज अछि। एहिसँ लेखकक गद्यक भीतर वयस्क-उन्मुख संस्मरणात्मक कृति आ बाल-पाठक-उन्मुख रचनाक अलग विधागत स्थिति देखाइत अछि। बाल-साहित्यक इतिहासमे ‘परिवार’क चर्चा एहि सीमा कें सुस्पष्ट कएल बिना करब विधागत भ्रान्ति होयत।

विदेहक बाल-साहित्य अभिलेख मैथिलीमे बाल-पाठकक लेल अनेक रूपक उपस्थिति देखबैत अछि: बाल-गीत, बाल-कविता, बाल-कथा, नाटक, सचित्र कथा, चित्रशृंखला, अनुवाद, विज्ञानक बतकही आ बाल-उपन्यास। प्रीति ठाकुरक ‘गोनू झा आ आन मैथिली

चित्रकथा' (सूचीमे २००८), 'मैथिली चित्रकथा' (२००९), 'मिथिलाक लोकदेवता' (२०१०) तथा 'विद्यापतिक पुरुष परीक्षा' (२०१२) बाल-पाठकक लेल कथात्मक-सांस्कृतिक सम्पदाक रूपान्तरणक एकटा अभिलेखीय क्रम दैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक 'बाल मण्डली/ किशोर जगत' (२००९) आ 'तरहरिमे परीलोक' (२०२२) सन कृति बाल-किशोर पाठक-वर्गकें अलग पहचान देबाक दृष्टान्त छथि।

विदेहक एहि सूचीमे जगदानन्द झा 'मनु'क 'चोनहा', जगदीश प्रसाद मण्डलक 'तरेगन' आ 'नै धाड़ै', नीता झाक 'बिलाइ मौसी', योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क 'हमर गाम', मुन्नाजीक 'तीन टा बाल नाटक', सुजीत कुमार झाक 'कोइली घूरि आउ' आ नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'स्वर्ण कमल' सन शीर्षक भिन्न विधाक साक्ष्य रूपें दर्ज छथि। एतऽ केवल सूचीमे स्पष्ट लिखल विधा आ शीर्षकक तुलना कएल जा रहल अछि; एहि सभ पोथीक कथानक-वस्तु वा शिल्पपर असत्यापित निर्णय नहि देल जा रहल अछि।

ऐतिहासिक निष्कर्ष एहि सीमित प्रमाणसँ एतबे बनैत अछि जे उपलब्ध डिजिटल अभिलेख बाल-साहित्यक विविध विधा आ लेखकीय प्रवृत्तिक विकास-रेखा देखबैत अछि; ई कोनो सम्पूर्ण युग-इतिहासक विकल्प नहि। प्रकाशन-वर्षक उल्लेख सेहो विदेहक देल अभिलेखीय प्रविष्टिक सूचना अछि, स्वयं मूल पोथीक प्रत्येक संस्करणक स्वतन्त्र परीक्षण नहि।

बाल-पाठक आ 'परिवार' : सम्बन्ध आ भिन्नता

'परिवार'मे बालकक अनुभव, शिक्षा, अभिभावकक व्यवहार आ संयुक्त परिवारक वातावरण सन तत्त्व अछि, जकरा बाल-अध्ययनक आलोचक रुचिपूर्वक पढ़ि सकैत छथि। तथापि कृतिमे लम्बा सामाजिक तर्क, वयस्क सम्पत्ति-संघर्ष, नौकरी, विवाह-व्यवस्था, संस्थागत निर्णय आ सेवानिवृत्ति धरि पसारल जीवन-समय अछि। कथा-सूत्रक एतेक विस्तार, संवादक दार्शनिकता आ स्मृतिक पुनर्चनाक कारण ई बालकक लेल विशेष रूपसँ गढ़ल रचना नहि प्रतीत होइत अछि।

‘स्वर्ण कमल’ सन प्रत्यक्ष बाल-उपन्याससँ ओकरा तुलनीय बनबैत तत्त्व ‘नीतिगत शिक्षा’ वा ‘विकासशील चरित्र’ भऽ सकैत अछि; मुदा एहन सामान्य समानता विधागत एकरूपता सिद्ध नहि करैत अछि। बाल-साहित्यक आलोचनामे पाठक-वर्ग, वाक्यक लय, आयुवर्ग-सापेक्ष संघर्ष, बाल-पात्रक दृष्टिकोण, चित्र-विन्यास आ कथात्मक स्वायत्तता देखबाक चाही। ‘परिवार’क मूल्य ई अछि जे ई बचपनकेँ प्रौढ़ स्मृतिमे कोना पुनर्निर्मित कएल जाइत अछि तकर उदाहरण दैत अछि। बाल-साहित्यक इतिहासमे एकर स्थान समीपवर्ती सामाजिक-स्मृति पाठक रूपमे अछि, स्वयं बाल-उपन्यासक मूल प्रवाहमे नहि।

साहित्येतिहासक पद्धति : सूची, पाठ आ मूल्याङ्कन बीच अन्तर विदेहक पोथी, गद्य आ शिशु-उत्सव पृष्ठ आधुनिक मैथिली साहित्यक पाठ-सुलभतामे महत्त्वपूर्ण छथि। अलग-अलग शीर्षक आ विधा एकहि अभिलेखीय स्थलपर देखबाक सुविधा पाठककेँ समकालीन प्रवृत्तिक नक्शा दैत अछि। मुदा पोथी-सूचीक अस्तित्वसँ कोनो कृतिक कलात्मक श्रेष्ठता सिद्ध नहि होइत, आ सूचीमे अनुपस्थिति सँ ओकर ऐतिहासिक महत्त्व समाप्त नहि होइत अछि। साहित्येतिहास लेल सूची प्रारम्भिक दिशासूचक अछि; आलोचनाक निर्णायक आधार मूल पाठ, संस्करणक विवरण आ समकालीन ग्रहण-साक्ष्य रहबाक चाही।

‘परिवार’क स्थिति एहि पद्धतिक उपयोगी उदाहरण अछि। विदेहक गद्य-सूची स्पष्ट करैत अछि जे एकहि लेखकक ‘गामघर’ कथा-संग्रह, ‘सुजाता’ उपन्यास, ‘गुदरीक लाल’ उपन्यास, ‘सुकन्या’ उपन्यास, ‘स्वर्ण कमल’ बाल-उपन्यास आ ‘परिवार’ संस्मरणात्मक उपन्यास अलग-अलग विधामे अबैत अछि। लेखकक समग्र गद्य-विकासपर अन्तिम निर्णय करबाक लेल एहि सभक स्वतन्त्र पाठ-परीक्षण आवश्यक होएत; तथापि प्रकाशित विधा-विविधताक तथ्य लेखकक रुचिक व्यापकता अवश्य संकेत करैत अछि।

रचनाक उपलब्धि : जकरा बिना साहित्यिक चित्र अधूरा रहत

उपन्यासक पहिल उपलब्धि शीर्षकक सृजनात्मक विस्तार अछि। नरेन्द्रक निजी परिवारसँ आरम्भ कएल कथाकेँ लेखक गामक सार्वजनिक जीवन, शिक्षा, कलात्मक साधना आ सामाजिक उत्तरदायित्व धरि लऽ जाइत छथि। दोसर उपलब्धि संस्मरणात्मक अनुभवकेँ उपन्यासक कथात्मक प्रवाहमे बदलबाक चेष्टा अछि; समयक दूरी नायकक निर्णयक मूल्यांकन लेल अवसर दैत अछि। तेसर उपलब्धि ग्रामीण आधुनिकताक सकारात्मक सम्भावना—पढ़ाइ, रोजगार, कला आ सार्वजनिक सहयोग—केँ एक-दोसराक विरोधी नहि, पूरक रूपेँ देखेबाक दृष्टि अछि।

चारिम उपलब्धि लोकभाषिक संवादक सहजता अछि। मिथिलाक पारिवारिक सम्बोधन, आपसी तकरारक शैली आ समझौता-वार्ताक रूप कृतिमे सान्द्र मानवीय वातावरण बनबैत अछि। पाँचम उपलब्धि अन्तक वंशावलीक माध्यमसँ पाठककेँ दीर्घकालीन नातेदारीक दृश्य-आयाम प्रदान करब अछि। ई परिशिष्ट अपन सीमासहित उपन्यासक सामाजिक अध्ययनमे उपयोगी सामग्री उपलब्ध करबैत अछि।

रचनाक सीमा : एक आलोचनात्मक पुनर्विचार

मुख्य शिल्पगत सीमा नरेन्द्रक प्रायः अविचल नैतिक श्रेष्ठता अछि। एहन पात्र पाठककेँ प्रेरित करैत छथि, मुदा तकर विरोधी विचारक पूर्ण न्याय कठिन भऽ जाइत अछि। दोसर सीमा बारम्बार व्याख्यात्मक कथन अछि, जतऽ पात्रक अनुभवसँ मूल्य सहज रूपेँ उद्भूत होयबाक बदला लेखकक निष्कर्ष स्पष्ट उद्घोषित भऽ जाइत अछि। तेसर सीमा सामाजिक समस्याक व्यक्तिगत समाधानकेँ अत्यधिक महत्त्व देब अछि; सम्पत्ति, श्रम, विधिक अधिकार आ संस्थागत पारदर्शिताक सूक्ष्मता कथामे निरन्तर समान बल नहि पबैत अछि।

चारिम सीमा लैंगिक दृष्टिक असमान गहराई अछि। महिला-पात्र संवेदनात्मक रूपेँ उपस्थित होइतहुँ निर्णयक पूर्ण स्वतन्त्र मंच सर्वत्र नहि पबैत छथि। पाँचम सीमा कथाक अनेक घटना-चक्रक सफलता अत्यधिक सुगम प्रतीत होयबाक सम्भावना अछि।

आलोचना एहि कारण रचनाक सामाजिक अभिप्रायक अनादर नहि करैत; उलटे प्रश्न उठबैत अछि जे एहन महत्वाकांक्षी आदर्श अधिक विश्वसनीय कलात्मक रूपमे कोना रूपान्तरित होएत।

निष्कर्ष : रक्त-सम्बन्धसँ सामाजिक परस्परता धरि

‘परिवार’क मूल साहित्यिक योगदान ई अछि जे ई संयुक्त परिवारक विघटनक दुखकें केवल विलापमे सीमित नहि करैत अछि। नरेन्द्रक कथा अलग-अलग पीढ़ी आ सामाजिक संस्थाक बीच नव सम्पर्कक सम्भावना खोजैत अछि। परिवारक मूल्य वंश वा एकहि घरक निवाससँ अधिक अछि; ओहि मूल्यकें शिक्षाक अवसर, वृद्धक सम्मान, युवाक प्रतिभा, लोकसंस्कृतिक सामूहिक अभ्यास आ सभक हित सोचबाक नैतिक विवेक परखैत अछि। उपन्यासक अन्तिम ‘परिवार’ एहन सम्बन्धक नाम अछि जे अलग घर आ अलग रोजगारक बादो आपसी स्नेह आ सहयोग सँ जीवित रहि सकैत अछि।

एकरे संग रचनाक आदर्शवादक सीमा स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। समग्र समाजक विवादकें केवल सदाशय मध्यस्थता सँ हल करबाक कल्पना सभ ठाम पर्याप्त नहि; वास्तविक सामाजिक न्याय लेल संरचनात्मक असमानता, स्त्रीक एजेंसी, सम्पत्तिक नियम आ संस्थागत उत्तरदायित्वक ठोस विचार अपेक्षित अछि। एहि द्वन्द्वक कारण ‘परिवार’ सरस सामाजिक उपदेशमात्र नहि, आधुनिक मैथिली परिवारक बदलैत अर्थक एकटा आलोचनीय साहित्यिक दस्तावेज बनैत अछि। बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर सम्बन्ध बाल्य-स्मृति आ नैतिक शिक्षा-जकाँ साझा तत्त्व धरि अछि; विधागत रूपमे ई संस्मरणात्मक उपन्यासक रूपेँ अलग स्थापित अछि।

परिशिष्ट : तुलना-मानचित्र

एहि सारणीमे मात्र उपलब्ध अभिलेखक विधागत सूचना संक्षेपमे अछि; मूल कृतिक कथानकसँ तुलना अनेर नहि गढ़ल गेल अछि।

कृति / लेखक	विदेहमे दर्ज विधा	‘परिवार’सँ तुलनाक वैध स्तर
परिवार — नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’	संस्मरणात्मक उपन्यास	मूल पाठक प्रत्यक्ष कथात्मक आ वैचारिक विश्लेषण
स्वर्ण कमल — नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’	बाल उपन्यास	एके लेखकक अलग पाठक-वर्ग आ विधागत नामकरण
गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा — प्रीति ठाकुर	बाल चित्रकथा	चित्र-सहायता आ बाल- पाठकीय रूपक अभिलेखीय भिन्नता
चोनहा — जगदानन्द झा ‘मनु’	बाल उपन्यास	बाल-उपन्यास रूपक उपस्थिति
तरेगन — जगदीश प्रसाद मण्डल	बाल प्रेरक विहनि-कथा संग्रह	संक्षिप्त प्रेरक कथा आ दीर्घ संस्मरणात्मक आख्यानक विधागत भेद
हमर गाम — योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’	बाल उपन्यास	‘गाम’ शीर्षक-साम्य होइतो पाठक-वर्गक भिन्न श्रेणी
बिलाइ मौसी — नीता झा	बाल लघुकथा संग्रह	बाल-लघुकथा आ प्रौढ़ उपन्यासक आकार- विधा भेद
नताशा — देवांशु वत्स	बाल चित्रशृंखला	दृश्य-कथाक

कृति / लेखक	विदेहमे दर्ज विधा	‘परिवार’सँ तुलनाक वैध स्तर
		डिजिटल/सचित्र रूपक भिन्नता

तेसर खण्ड

शब्दचित्र, सत्ता आ मिथकीय पुनर्विचार

दिल्लीक पार्क • याचक के नजि • महारानी कैकेयी

१.३९. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — दिल्लीक पार्क

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

गाम-शहरक द्वन्द्व, नागरिक संवाद आ शब्दचित्रक शिल्प

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क दिल्लीक पार्क शहरक कोनो एकटा उद्यानक चित्रण मात्र नहि, वरन् प्रवास, सेवाविराम, गामक स्मृति, शहरी सामाजिकता आ बदलैत नागरिक सम्बन्धक बहुस्तरीय संवादात्मक शब्दचित्र अछि। दिल्लीक पार्कक बेंच लेखक लेल एहन लोक-मंच बनि उठैत अछि जतय भिन्न क्षेत्र, भाषा, पेशा आ पीढ़ीक व्यक्ति अपन अनुभवक तुलना करैत छथि। नौ खण्डमे फैलल ई कृति कथानकक रोमांचसँ बेसी प्रश्नोत्तर, प्रसंग-विस्तार आ तर्क-वितर्कक सहारे समाजक आकृति तैयार करैत अछि। एहि अध्ययनमे विधा, कथन-दृष्टि, पात्र-संरचना, गाम-शहर विमर्श, भाषा, प्रवासी चेतना, वर्गीय दृष्टि आ नागरिक नैतिकताक आलोचनात्मक परीक्षण कयल गेल अछि। मैथिली बाल-साहित्यक विदेह-प्रदत्त ग्रन्थसूचीक आधारपर कृतिक विधागत भेदो स्पष्ट कयल गेल अछि : दिल्लीक पार्क बाल-पोथी नहि, यद्यपि पीढ़ीगत अनुभव आ शिक्षात्मक संवादक दृष्टिसँ बाल/किशोर साहित्यक अध्ययनमे एकटा तुलनात्मक पाठ बनि सकैत अछि।

कृति, विधा आ संरचनात्मक विशेषता

दिल्लीक पार्कक शीर्षकपृष्ठ आ प्रकाशकीय विवरण एकरा 'शब्दचित्र' कहैत अछि; अंग्रेजी परिचयमे 'Maithili Literary Sketch' नाम देल गेल अछि। पुस्तकक प्रथम संस्करण २०१८ ई.क अछि; प्रकाशक गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगा अछि। रचनाक भीतर मुद्रित पृष्ठाङ्क ११ सँ ८२ धरि नौ क्रमांकित खण्ड भेटैत अछि। व्यक्तिनाम, खण्डक्रम आ प्रसंगक विवेचन पाठक दृश्यमान प्रकाशकीय आ मुद्रित सामग्रीसँ सापेक्ष राखल गेल अछि। एतय पाठक आशयक सार-वर्णन अछि, मूल वाक्यक उद्धरण नहि।

प्रथम दृष्टि ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि जे पोथी बाल-उपन्यास नहि। विदेहक पोथी-सूची सेहो दिल्लीक पार्क केँ शब्दचित्र, आ ओही लेखकक स्वर्ण कमल केँ बाल-उपन्यास कहि अलग-अलग वर्गीकृत करैत अछि। एतए बाल-साहित्यक इतिहासक तुलना कृतिक मूल विधा बदलबाक लेल नहि, बदलैत पाठक-वर्ग, भाषिक उत्तराधिकार आ परिवारक कथा-स्थान बुझबाक लेल उपयोगी बनैत अछि।

शब्दचित्रक विधा : घटनासँ बेसी सामाजिक आकृति

शब्दचित्रमे एकमात्र निर्णायक घटना वा उपन्याससदृश कथानकक अपरिहार्य क्रमसँ बेसी चरित्रक बोली, लोक-व्यवहार, परिवेशक प्रभाव आ चिन्ताक विन्यास प्रधान रहैत अछि। दिल्लीक पार्क एहि पद्धतिक स्पष्ट उदाहरण अछि। पार्क अनेक वयस्क, विशेषतः सेवाविरामक बाद समय बितबैत व्यक्तिक भेट-स्थान अछि। एक दिनक बातचीत दोसर दिन नब प्रश्न उपजाबैत अछि; नब आगन्तुक अपन जीवनक अनुभव समाविष्ट करैत अछि; पुरान कथावाचक पुनः प्रश्न उठबैत छथि। एहि आवर्तनसँ समाजक पैघ चित्र बनैत अछि।

शीर्षकमे ‘दिल्ली’ आधुनिक महानगरक प्रतीक अछि, आ ‘पार्क’ सार्वजनिक विश्रामक। मुदा रचनामे विश्राम निष्क्रिय नहि; ई चर्चा, विवाद, आलोचना, सहानुभूति, असहमति आ आत्म-समीक्षाक श्रम अछि। पार्क सँ गामक दूरी भौगोलिक होइतहुँ चिन्ताक स्तरपर सतत उपस्थित रहैत अछि। पात्र भोजन, निवास, पेंशन, सन्तानक नौकरी, खेती, भाषिक असुरक्षा, शिक्षण, राजनीति, समाज-सेवा आ बुढ़ापा पर लौटि-लौटि सोचैत छथि। फलस्वरूप ई कृति शहरक दर्शनीय स्थलकेँ नहि, महानगरीय जीवनक भीतर जीवित ग्रामीण स्मृतिक मंच बनबैत अछि।

एहि विधाक उपलब्धि आ सीमा दुनू अछि। लेखक भिन्न-भिन्न विचार केँ लघु प्रसंगक भीतर रखि सकैत छथि; मुदा पात्र सभ जखन लगातार लम्बा विश्लेषण देब लगैत छथि तखन कतहु-कतहु व्यक्ति-विशिष्ट बोली दबि जाइत अछि आ लेखकीय विचार प्रधान

भऽ उठैत अछि। शब्दचित्रक ‘देखल गेल’ गुण आ निबन्धक ‘समझाओल गेल’ गुणक ई संगम रचनाक विशिष्टताओ अछि आ ओकर आलोचनात्मक तनाव सेहो।

रचनात्मक स्थापत्य : नौ खण्डक क्रमिक विस्तार

नौ खण्डमे कथा-विकास रेखीय उतार-चढ़ावसँ नहि, विषय-विस्तारसँ होइत अछि। प्रारम्भिक भेटक आधार बनल गाम आ शहरक तुलना क्रमशः भाषिक पहचान, अवकाशप्राप्त जीवन, आवासक आकांक्षा, रोजगार, परिवारक विघटन, सार्वजनिक विश्वास, सामाजिक उत्तरदायित्व आ राजनीतिक-स्मृतिक बहस धरि पहुँचैत अछि। एहि क्रममे एकटा शिथिल मुदा स्पष्ट बौद्धिक एकता अछि : गाम छोड़ि शहरमे अयल मनुष्य अपन दायित्व आ अपनत्वक पुनर्परिभाषा कोना करय? पार्क एहि प्रश्नक प्रयोगशाला अछि।

नौ खण्डक पृथक पाठविश्लेषण

पहिल खण्ड : श्याम बाबू, विवेक आ ‘गाम’क कल्पित वापसी

प्रारम्भमे श्याम बाबू दिल्लीमे पुत्र विवेकक संग रहैत अवकाशप्राप्त व्यक्ति छथि। सेवानिवृत्तिक बाद जीवनक रीति, गाम जएबाक इच्छा, शहरक सुविधा आ गामक स्मृति एकहि घरेलू प्रसंगमे उठैत अछि। दिल्लीक पार्कक नामसँ आरम्भ भेल दृश्य धीरे-धीरे प्रश्नमे बदलैत अछि : अपन गामसँ सम्बन्ध स्नेहक अछि, व्यवहारक अछि अथवा केवल स्मृतिक? लेखक एतय गामकेँ मात्र आदर्श बनाकऽ नहि रखैत छथि; भोजन-प्रबन्ध, सामाजिक दूरी आ बदलल परिस्थितिक व्यावहारिक प्रश्न सेहो उठबैत छथि।

एकटा कुकुरक प्रसंग विशेष अर्थवान अछि। मानव आ पशुक सम्बन्धक तुलना करैत सहचर्य, स्वामित्व, अधिकार आ विश्वास पर प्रश्न उठैत अछि। एहि प्रसंगक तीक्ष्णता एतय अछि जे मनुष्यक स्वार्थपूर्ण सम्बन्ध जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि तखन पशुक निष्ठा नैतिक दर्पणक काज करैत अछि। मुदा पशु-मनुष्य तुलना जँ अत्यधिक सामान्यीकृत कयल जाय तखन मनुष्यक सामाजिक सम्बन्धक जटिलता सरल नैतिक

द्वैत बनि जाएबाक जोखिमो उपस्थित अछि। एहि कारण प्रथम खण्डकें समूच रचनाक वैचारिक बीज मानल जा सकैत अछि।

दोसर खण्ड : खुशवंत सिंहक पंजाबी अनुभूति आ भाषिक सहवास

दोसर खण्डमे खुशवंत सिंहक प्रवेशक संग पार्क एकटा बहुभाषिक भेट-स्थल बनि जाइत अछि। पंजाबीभाषी सेवाविरामप्राप्त व्यक्तिक दृष्टि मैथिलीभाषी कथावाचकक दृष्टिक समानान्तर चलैत अछि। अपन मातृभाषा, आनो भाषाक संग सहवास, दिल्लीक बहुक्षेत्रीय निवास आ भाषिक परिचयक प्रश्न एतय उठैत अछि। लेखक एकहि पात्रक माध्यमसँ बहुभाषिक दिल्लीक आकृति उभारैत छथि : नगर एक भाषा-समुदायक सम्पत्ति नहि, अनेक प्रवासक साझा परिणाम अछि।

ई खण्ड मैथिलीक पाठक लेल महत्त्वपूर्ण एहि अर्थमे अछि जे आत्मभाषाक स्नेह आ परभाषाक सम्मान एक-दोसराक प्रतिपक्ष होयबाक बाध्यता नहि। यद्यपि संवादक किछु मोड़पर सांस्कृतिक अथवा क्षेत्रीय स्वभावपर सामान्य कथन भेटैत अछि; ताहि कथन कें पात्रक वैयक्तिक अनुभव मानब उचित होयत, समाज-विज्ञानक सिद्ध तथ्य नहि। एहि सीमासँ अवगत रहला पर खण्डक बहुभाषिकता ओकर उपलब्धि बनैत अछि।

तेसर खण्ड : अजय बाबूक प्रशासनिक अनुभव आ सेवाविरामक बादक गाम भारतीय प्रशासनिक सेवासँ सम्बद्ध अजय बाबूक परिचय पेशागत प्रतिष्ठा आ गामक स्नेहक बीच भिन्नता स्पष्ट करैत अछि। परिवारक सदस्य शहरमे स्थापित छथि, मुदा पूर्वजक गामक स्मृति अबहूँ जीवित अछि। सेवाविरामक बाद घर कत्तय बनाओल जाय, सामाजिक उपयोगिता कोना बचाओल जाय आ पुश्तैनी स्थानक कर्तव्य कोन रूपमे निभाओल जाय—एहि सभ प्रश्नसँ खण्ड विचारप्रधान बनैत अछि।

एतय गाममे वापसी भावुक प्रस्ताव नहि, दायित्व, संसाधन, परिवारक अपेक्षा आ व्यावहारिक कठिनाइक प्रश्न अछि। लेखकक प्रेरक स्वर ग्रामोन्मुख अछि, मुदा उपयुक्त आलोचना ई कहत जे सभ अवकाशप्राप्त व्यक्तिक आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य, जमीनसँ सम्बन्ध आ पारिवारिक परिस्थिति एकसमान नहि होइत अछि। कथोपकथन जखन

व्यक्तिगत विकल्पक बहुलता मानि लेत अछि तखन ओकर सामाजिक आग्रह अधिक विश्वसनीय भऽ उठैत अछि।

चारिम खण्ड : खन्ना साहेबक शरीर, भाषा आ आश्रयक अनुभव

खन्ना साहेब पार्कमे अपन सक्रिय उपस्थितिक कारण पाठकक ध्यान खींचैत छथि।

पैदल चलब, शारीरिक अभ्यास, हास-परिहास, पंजाबीभाषी वातावरण आ परिवारक संग सम्बन्ध एतय शहरी अवकाशक अलग रूप उपस्थित करैत अछि। खण्ड केवल बुढ़ापक निष्क्रियता नहि देखबैत; सेवा-समाप्तिक बाद अपन शरीर आ समयपर अपन अधिकार बनौने रखबाक इच्छा सेहो देखबैत अछि।

खन्ना साहेबक पुत्रक शिक्षण, उच्च अध्ययन आ पेशागत गतिशीलताक प्रसंग घर-परिवारक सीमासँ महानगरीय प्रतिस्पर्धा धरि पहुँचैत अछि। एहिमे शिक्षा उन्नतिक साधन अछि, मुदा घरमे बड़का-बुजुर्गक स्थान अस्थिर बनि सकैत अछि। एहने अन्तरद्वन्द्वक कारण पात्र मात्र हास्यरंगक व्यक्ति नहि रहि सामाजिक परिवर्तनक संवाहक बनैत छथि। लेखकक एक सीमा ई अछि जे लम्बा वक्तव्य पात्रकेँ विचारक बना दैत अछि; तैओ एहि पात्रसँ पुस्तकक स्वरमे सहजता आ भिन्नता प्रवेश करैत अछि।

पाँचम खण्ड : सुधाकरजी, अध्यापन, अभाव आ सामाजिक असमानता

सुधाकरजीक प्रसंग कथाकेँ वेतन, आर्थिक संघर्ष, शिक्षण-पेशा, सन्तानक अध्ययन आ पारिवारिक दायित्वक कठिन धरातलपर अनैत अछि। अनेक सन्तानक शिक्षा, आवासक आकांक्षा आ सीमित साधनक विवेचन शहरक विकासागाथा पर आवश्यक प्रश्न उपस्थित करैत अछि : सभ व्यक्ति शिक्षाक मूल्य मानैत छथि, मुदा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा धारण करबाक आर्थिक क्षमता सभक समान नहि। एहिमे शिक्षकीय श्रम आ परिवारक भविष्यक बीच परस्पर निर्भरता स्पष्ट अछि।

भूमि, मकान, ऋण अथवा संचयक चर्चा उत्तर-मध्यवर्गीय सुरक्षा-कामनाक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। रचना एतय उपभोगक चमक नहि, जीवन-निर्वाहक गणित

देखबैत अछि। किछु प्रसंगमे कथा उपदेशात्मक भऽ उठैत अछि, मुदा सुधाकरजीक जीवनानुभव राजनीतिक नारा नहि, प्रत्यक्ष रोजमर्राक संकट लऽ अनैत अछि। पार्क एतय केवल अवकाशक स्थल नहि रहि असमान जीवन-स्थितिक तुलनात्मक पाठशाला बनि जाइत अछि।

छठम खण्ड : रमणजीक पीढ़ीगत दृष्टि, निवास आ स्थानीय उत्तरदायित्व रमणजी शिक्षित आ रोजगार-सापेक्ष जीवनक अनुभव लऽ पार्कमे अबैत छथि। सन्तानक अध्ययन, विदेश अथवा आन नगरमे रोजगार, पारिवारिक विखण्डनक आशंका आ वृद्धावस्थाक सुरक्षा एहि खण्डकें प्रभावित करैत अछि। शहरमे जीवन सुविधाजनक लगैत अछि, मुदा परिवारक भौगोलिक विस्थापनसँ आत्मीयताक प्रश्न समाप्त नहि होइत अछि। कथावाचक ग्रामीण समाजक सामूहिक जीवनक स्मृतिक मुकाबला शहरी अनामितासँ करैत छथि।

खण्डक उत्तरार्द्धमे गाममे परिवर्तनक सम्भावना, स्थानीय सेवा आ सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रसंग जोर पकड़ैत अछि। प्रश्न महत्वपूर्ण अछि : गामसँ दूर रहि अर्जित ज्ञान, पूँजी आ पेशागत कौशल केँ पुनः समाजोपयोगी कोना बनाओल जाय? ई लोकहितमुखी आग्रह कृतिक नैतिक मेरुदण्ड अछि। मुदा गामक भीतरी जातीय, आर्थिक आ लैंगिक विषमता पर पर्याप्त ठोस विवरण नहि देल गेलासँ ग्राम-सुधारक प्रस्ताव किछु व्यापक आ अमूर्त रहि जाइत अछि।

सातम खण्ड : अनाम आगन्तुक, चिकित्सा-सेवा आ विश्वासक संकट एहि खण्डमे पार्कक एकटा नब आगन्तुकसँ परिचय सामाजिक अविश्वास, परिचयक आवश्यकता आ सेवाक नैतिकता दिस बढ़ैत अछि। आगन्तुकक डॉक्टर-किरण सम्बन्धी परिचयक संग ग्राम-जीवन, रोगीक उपचार, पेशागत सेवा आ पारिवारिक संरचनाक प्रश्न उठैत अछि। विशेष रूपसँ महानगरमे सामाजिक सम्बन्ध आरम्भ करबाक कठिनाई उभरैत अछि : अपरिचित व्यक्तिक प्रति भरोसा करब सहज नहि रहल अछि।

चिकित्सा-सेवा आ गाम वापसीक प्रसंग नागरिक उत्तरदायित्वक ठोस सम्भावना देखबैत अछि। मुदा व्यक्तिगत सदृच्छा सँ सामुदायिक स्वास्थ्यक सम्पूर्ण व्यवस्था बनि नहि जाइत; ओकरा लेल संस्था, आधारभूत ढाँचा, प्रशिक्षित सहयोगी आ स्थानीय सहभागिता चाही। एहि अन्तरकें ध्यानमे राखि पढ़लापर खण्ड समाज-सेवाक सरलीकृत महिमामण्डनसँ आगाँ निकलि व्यवहारिक नीति-प्रश्न उठबैत अछि।

आठम खण्ड : बुधना, मरूख कका आ ग्रामीण जीवनक बदलैत नैतिक अर्थ संध्याकालक पार्कक परिवेशमे बुधना नामक व्यक्ति आ मरूख ककाक कथोपकथनसँ गामक बदलैत दृश्य विस्तार पबैत अछि। जमीन, श्रम, खेती, पारिवारिक निर्णय, उधार, रोजगारक आकांक्षा आ गाम छोड़ि देबाक विवशता एहि प्रसंगमे एकसाथ प्रवेश करैत अछि। बुधना गाममे रहबाक पक्षक आदर्शक प्रतिरूप मात्र नहि; हुनक बातक भीतर आर्थिक अस्थिरता, सामाजिक अनुभव आ अपन ठामक प्रति जटिल लगाव अछि।

विशेष महत्त्व एहि खण्डक ‘ककरा लेल गाम?’ प्रकारक मूल प्रश्नमे अछि। गाम की केवल पुश्तैनी घर अछि, अथवा जीविका, सामाजिक न्याय, व्यक्तिगत सम्मान आ सामुदायिक सहयोगक व्यवहारिक जाल? कथावाचक जे आशावादी ग्रामीण भविष्य देखैत छथि, ओकर कसौटी श्रमजीवी लोकक वास्तविक जीवन अछि। आठम खण्ड एहि कारण ग्रामीण जीवनक रोमानी चित्रणकें चुनौती दैत अछि; विडम्बना ई जे किछु चर्चा आर्थिक कारकसँ बढ़ि नैतिक शिक्षामे परिणत भऽ जाइत अछि, जकरा अधिक दृष्ट्यात्मक विस्तार चाही छल।

नवम खण्ड : रघुवंश बाबू, सार्वजनिक कार्य आ राजनीतिक स्मृति

नवम खण्ड अन्य सभसँ विस्तृत अछि। रघुवंश बाबूक प्रवेशसँ पार्कक गपशप जन-सेवा, संगठन, स्थानीय राजनीति, सार्वजनिक संसाधन, चुनावक अनुभव आ ऐतिहासिक स्मृतिक दिशामे फैलि जाइत अछि। रचना सेवामुखी व्यक्ति, सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ राजनीतिक दावाक बीचक अन्तर जाँचबाक अवसर दैत अछि। दिल्ली नगरक नागरिक

समस्यासँ आरम्भ भेल चर्चा संस्थागत व्यवहार तक पहुँचैत अछि। एहि विस्तारसँ पूर्ववर्ती आठ खण्डक अनेक विषय एक बेर पुनः संयोजित भऽ उठैत अछि।

एहि खण्डमे बीसम शताब्दीक घटनाक संकेत आ विशेषतः १९८४ सँ सम्बद्ध राजनीतिक-सामाजिक स्मृतिक चर्चा उपस्थित अछि। एहन विवरणकेँ साहित्यिक पात्रक स्मृति आ दृष्टिकोण मानि पढ़ब चाही; स्वतन्त्र ऐतिहासिक साक्ष्य मानबाक लेल अलग समकालीन दस्तावेज आवश्यक होयत। पुस्तकक नैतिक रुचि सार्वजनिक हित, नागरिक सहभागिता आ शोषणविरोधी आग्रहमे अछि, मुदा ऐतिहासिक व्यक्तिक मूल्याङ्कन कतहु एकतरफा होयबाक आशंका सेहो बनैत अछि।

लम्बा नवम खण्डक एकटा रचनात्मक उपलब्धि ई अछि जे सार्वजनिक पार्क निजी संवादसँ विस्तृत राजनीतिक समुदाय धरि पहुँचैत अछि। समान रूपसँ एकटा शिल्पगत प्रश्न सेहो अछि : बहसक आकार एतेक बढ़ि जाइत अछि जे दृश्य, चरित्र, स्थानक भौतिक अनुभूति पाछाँ छुटि सकैत अछि। तथापि अन्तिम मुद्रित पृष्ठपर रघुवंश बाबूक संग संवादक समाप्ति आ लेखकक दिल्ली-प्रवासक अनुभवक पुनर्स्मरण समूच पुस्तकक वृत्तकेँ समेटैत अछि।

पात्रयोजना आ कथावाचकक स्थिति

श्याम बाबू, खुशवंत सिंह, अजय बाबू, खन्ना साहेब, सुधाकरजी, रमणजी, डॉक्टर किरण, बुधना आ रघुवंश बाबू—ई नाम सभ मात्र पृथक व्यक्ति नहि, सामाजिक अनुभवक प्रतिनिधि दृष्टिकोण बनि उभरैत छथि। पात्रसँ-पात्रक संक्रमणमे अलग भाषिक, पेशागत, वर्गीय आ पीढ़ीगत अवस्थान सभ भेटैत अछि। एही संयोजनसँ लेखक दिल्लीक भीतरी भिन्नताकेँ उजागर करैत छथि।

कथावाचक सामान्यतः जिज्ञासु सहयात्री छथि। ओ पात्रसँ प्रश्न करैत छथि, विचारक आग्रह रखैत छथि, विरोध करैत छथि, फेर सहमत वा असहमत भऽ अगिला प्रसंगपर जाइत छथि। ई संवाद-रचना पाठककेँ निष्क्रिय दर्शक बनबाक बजाय विचारमे शामिल करैत अछि। मुदा कथावाचक अनेक ठाम निर्णायक नैतिक स्थान ग्रहण करैत छथि;

परिणामस्वरूप असहमत पात्र अपन पक्षक पूरा जटिलता उजागर नहि करि पबैत छथि। एहि पुस्तकक आलोचनात्मक पाठमे लेखकक मत आ पात्रक सामाजिक स्थिति केँ सदिखन अलग-अलग पहिचानब आवश्यक अछि।

भाषा, बोली आ संवादक लय

पोथीक प्रमुख भाषिक शक्ति संवादप्रधान मैथिली अछि। देहाती अनुभवक स्मृतिसँ बनल वाक्यरचना, प्रश्नवाचकता, बोलचालक प्रत्युत्तर, हास्य आ दैनिक जीवनक शब्द-संसार रचनाकेँ जीवित करैत अछि। दिल्लीक विविधभाषिक सन्दर्भक कारण पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेजी आ प्रशासनिक-पेशागत शब्दावलीक छाप स्वाभाविक रूपसँ देखाइत अछि। ई मिश्रण बिना विचारक ‘भाषिक अशुद्धि’ नहि, महानगरीय सार्वजनिक भाषिक जीवनक संकेत अछि।

परस्पर प्रश्नक पुनरावृत्ति पाठकेँ श्रवणीय बनबैत अछि; पुस्तककेँ एक-एक दृश्य रूपमे वाचन, नाट्यपाठ अथवा श्रव्य प्रस्तुति लेल उपयोगी ठहराओल जा सकैत अछि। मुदा लम्बा एकालाप संवादक स्वाभाविक गतिकेँ बाधित करैत अछि। पात्रक वय, पेशा आ क्षेत्रक अनुसार विशेष शब्द, भावभंगिमा आ लहजाक अन्तर आओर मुखर रहित तऽ शब्दचित्रक कलात्मक प्रभाव बढित। उपदेशात्मक निष्कर्षक स्थानपर कतहु अधिक सूक्ष्म विडम्बना आ मौनक प्रयोग सम्भव छल।

गाम-शहर सम्बन्ध : स्मृति, सुविधा आ असमान अवसर

दिल्लीक पार्कक मूल द्वन्द्व गाम आ शहरक सरल विरोध नहि। गाम आत्मीयता, परम्परा, अपनापन आ स्मृतिक संकेत अछि; शहर रोजी, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, गतिशीलता आ अनेक भाषाक सहवासक सम्भावना दैत अछि। एकटा स्थलमे सहज सम्बन्ध अछि मुदा अवसर सीमित; दोसर स्थलमे अवसर पैघ अछि मुदा सम्बन्ध अनाम वा औपचारिक भऽ सकैत अछि। लेखक एहि द्वन्द्वमे गामक पक्षमे सहानुभूति रखैत छथि, तथापि कथा-कथनक भीतर आर्थिक कारणक महत्त्व बारम्बार प्रकट होइत अछि।

एहि कृतिक उत्कृष्ट सामाजिक प्रश्न ई अछि जे प्रवासक बाद मनुष्य अपन गामक प्रति कर्तव्यक कल्पना कोन रूपमे करैत अछि। केवल नियमित लौटब पर्याप्त नहि, गाममे शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, आजीविका, सार्वजनिक व्यवहार आ सहकारक संरचना कोना बदलय? सभ अवकाशप्राप्त व्यक्ति एकहि उपायक अनुसरण नहि कऽ सकैत छथि। एहि कारण कृतिक मूल्य ओकर निश्चित समाधानमे कम, विविध जीवन-संसारक प्रश्नकें सार्वजनिक बहस बनाबैमे अधिक अछि।

एक महत्त्वपूर्ण अनुपस्थिति सेहो देखाइत अछि। गामक स्त्री-श्रम, भूमिहीन परिवार, अलग जाति-वर्गक अनुभव, कामकाजी महिलाक दृष्टि आ शहरी श्रमिक महिलाक आवाज अपेक्षाकृत कम केन्द्रित अछि। परिवार आ सन्तानक उदाहरण अनेक अछि, मुदा महिला-पात्र सभक स्वतन्त्र अनुभव बराबर स्थान नहि पबैत अछि। एहि सीमा पर विचार कयने बिना ‘गाम’क एकीकृत सामूहिक छवि स्वीकार कयब अतिशयोक्ति होयत।

नागरिक सार्वजनिकता : उद्यानक अर्थ आ सीमित लोकतन्त्र

पार्कक सार्वजनिक स्थानक रूपमे अर्थ विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि। एतय नौकरीक पदक्रम तत्काल निर्णायक नहि; सेवानिवृत्त कर्मचारी, शिक्षक, डॉक्टर, प्रशासकीय सेवासँ जुड़ल लोक आ दोसरो पृष्ठभूमिक व्यक्ति एकहि बेंचपर बातचित करि सकैत छथि। ई वाचिक सार्वजनिकता नागरिक समाजक सूक्ष्म रूपक अछि। परिचितक दायरा बढब, भिन्न मत सुनब आ अनजान व्यक्तिक संग विश्वास बनायब एहि स्थानक सांस्कृतिक उपलब्धि अछि।

मुदा समान स्थानमे बसलासँ समान संसाधन स्वतः नहि बनि जाइत। समाजमे जे आवाज पहिनेसँ प्रभावशाली अछि से पार्कक बहसमे सेहो अधिक सुनाइ देत। दिल्लीक पार्कमे प्रौढ़ शिक्षित पुरुषक वर्चस्व एहि सन्दर्भमे विचारणीय अछि। एहि तथ्यसँ रचनाक महत्त्व कम नहि होइत; बरु ई प्रश्न उठैत अछि जे पार्कक चुप रहनिहार लोक—

कामकाजी स्त्री, परिचारक, बेचैनीसँ गुजरैत नवयुवक, प्रवासी मजदूर—कतय छथि? ई आलोचनात्मक रिक्ति आगाँक मैथिली शहरी लेखन लेल नब सम्भावना देखबैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन : विधागत भेद आ पाठकीय सेतु दिल्लीक पार्क केँ बाल-साहित्यक इतिहासमे प्रत्यक्ष बाल-पोथी घोषित करब अनुचित होयत। प्रथम, पुस्तक स्वयं शब्दचित्र कहैत अछि। दोसर, ओकर लम्बा सामाजिक-राजनीतिक संवाद मुख्यतः प्रौढ़ पाठककेँ सम्बोधित अछि। तेसर, कथाक केन्द्रमे बालचरित्रक अनुभवक स्वतन्त्र विकास नहि, अपितु बड़का पीढ़ीक स्मृति आ नागरिक बहस अछि। ताहि लेल तुलनाक उचित आधार विधा, संवादक शिक्षात्मक उपयोग आ गाम-शहरक बदलैत सामाजिक ज्ञान अछि—बाल साहित्यक कैननमे स्वतः समावेश नहि।

विदेहक ‘शिशु उत्सव’ पोथी-सूचीमे बाल-काव्य, बाल-चित्रकथा, लोककथा, कौमिकस, बाल-उपन्यास, विज्ञान-कथा, अनूदित सचित्र कथा आ किशोर साहित्यक अनेक पृथक धारा एकहि स्थानपर सूचीबद्ध छथि। प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा (२००८), मैथिली चित्रकथा (२००९), मिथिलाक लोकदेवता (२०१०), विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (२०१२) तथा हुनक अनूदित चित्रकथा शृंखलाक पुस्तक-विवरण दृश्याधारित आ भाषान्तरणाधारित बाल-पाठकक एक विकास-रेखा सूचित करैत अछि। ई प्रकाशन-वर्ष सभ विदेहक सूचीमे उल्लिखित वर्ष छथि; समूच मैथिली बाल-साहित्यक आरम्भ अथवा प्रथमत्वक स्वतन्त्र इतिहासक प्रमाण नहि।

तहिना विदेह-सूचीमे जगदानन्द झा ‘मनु’क चोनहा, जगदीश प्रसाद मण्डलक तरेगन आ नै धाड़ैए, नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क स्वर्ण कमल, मुन्नाजीक तीन टा बाल नाटक आ खुरलुच्ची, योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क हमर गाम तथा पिरामिडक देशमे, आ गजेन्द्र ठाकुरक अनेक बाल/किशोर उपन्यास उल्लिखित छथि। ई ग्रन्थनाम शिशु, बाल आ किशोर पाठक लेल भाषिक संसाधनक विस्तार देखबैत अछि। मुदा मात्र ग्रन्थसूची

पढ़िकऽ एतय ओहि पुस्तक सभक कथानक, पात्रक विकास वा सौन्दर्यगत श्रेष्ठताक निर्णय नहि कयल गेल अछि।

स्वर्ण कमल आ दिल्लीक पार्क एकहि लेखकक सूचीमे भिन्न विधाक उदाहरण छथि। पहिल पोथी विदेहक बाल-साहित्य कोनामे बाल-उपन्यास रूपमे अंकित अछि; दोसर विदेहक पोथी-विभागमे शब्दचित्र रूपमे। एहि वर्गीकरणक आलोचनात्मक अर्थ अछि जे नन्दक लेखनक पाठक-क्षेत्र केवल एक वयवर्ग वा विधा धरि सीमित नहि। दिल्लीक पार्कमे भाषिक जीवट, सहचर्य, पारिवारिक जिम्मेदारी आ गामक प्रश्न किशोर पाठक लेल चयनित परिचर्चाक विषय बनि सकैत अछि; मुदा समूच कृतिक बाल-उपयुक्तता स्वतः सिद्ध नहि। आयुवर्गसापेक्ष रूपान्तर करबा काल सामाजिक बहसक जटिलता बनौने राखब आ अनुभवक विविधता बढ़ायब आवश्यक होयत।

तुलनात्मक इतिहासक एकटा दोसर महत्त्वपूर्ण पक्ष माध्यमक परिवर्तन अछि। बालकथा आ बाल-चित्रपुस्तक बालक दृश्य-श्रव्य ग्रहणक ध्यान रखैत अछि; दिल्लीक पार्क श्रवणीय नागरिक संवादक लम्बा प्रवाह बनबैत अछि। ई अन्तर स्पष्ट करैत अछि जे बाल-साहित्यक इतिहास केवल पोथीक संख्या नहि, पाठकक आयु, चित्रक भूमिका, भाषाक सरलता, आवाजक विविधता आ सहभागिताक पद्धतिक इतिहास सेहो अछि। एहि कसौटी पर दिल्लीक पार्क बाल-साहित्यक प्रतिद्वन्द्वी नहि, प्रौढ़ पाठकक सामाजिक संवाद पर आधारित एकटा तुलनात्मक सीमा-पाठ अछि।

सौन्दर्यगत उपलब्धि आ आलोचनात्मक आपत्ति

कृतिक प्रमुख उपलब्धि पहिल—दिल्लीक शहरी अनुभवकें मिथिलाक गाम-स्मृतिसँ जोड़ि देब; दोसर—सार्वजनिक पार्ककें बहुभाषिक लोकसंवादक जीवित स्थल बनायब; तेसर—सेवाविरामक बादक जीवनकें निष्क्रिय नहि, चिन्तनशील देखब; चारिम—पेशागत भिन्नताक संग व्यक्तिगत अनुभवक अन्तर उजागर करब; पाँचम—सामाजिक दायित्वकें निजी सम्पन्नतासँ अलग प्रश्न बनायब। पुस्तकक ऐतिहासिक उपयोगिता एहि सामाजिक अनुभवक अभिलेखी स्वरूपमे सेहो अछि : ई एक विशिष्ट समयक

दिल्लीमे प्रवासी मैथिली संवेदनाक कल्पनात्मक साक्ष्य दैत अछि, यद्यपि सांख्यिकीय इतिहासक स्थान नहि लैत अछि।

एहि उपलब्धिक समानान्तर तीन मुख्य आपत्ति उठैत अछि। पहिल, उपदेशात्मक विस्तार अनेक ठाम दृश्य-निर्माण आ नाटकीय संक्षिप्तता केँ कम करैत अछि। दोसर, पात्रक वैचारिक मत कतहु लेखकक स्थिर निष्कर्षक वाहन बनि जाइत अछि; भिन्न आवाजक वास्तविक टकराहट सीमित रहि जाइत अछि। तेसर, सामाजिक संसारमे प्रौढ़ पुरुषक दृष्टि केन्द्रित अछि; श्रमिक वर्ग, स्त्री अनुभव आ युवा पीढ़ीक प्रत्यक्ष आवाज आओर सघन होइत तऽ सामाजिक चित्र अधिक व्यापक भऽ सकैत छल। ई आपत्ति रचनाकेँ अस्वीकार करबाक तर्क नहि; ओकर कलात्मक सम्भावनाक यथार्थ मूल्याङ्कन अछि।

निष्कर्ष

दिल्लीक पार्क मैथिली शब्दचित्र-विधामे शहरी प्रवासक एकटा महत्वपूर्ण संवादात्मक प्रयोग अछि। नौ खण्डक आरम्भ गामक स्मृति आ अवकाशप्राप्त व्यक्तिक दैनिक जीवनसँ होइत अछि, आ अन्त नागरिक संस्था, सामाजिक नैतिकता आ राजनीतिक स्मृति धरि पहुँचैत अछि। ई विस्तार पुस्तकक सामाजिक आकांक्षा स्पष्ट करैत अछि। तकर सर्वोत्तम पृष्ठ सभमे पार्कक सामान्य बातचीत लोकसमाजक गम्भीर प्रश्न बनि उठैत अछि; कम सफल अंशमे विचार-विस्तार दृश्यात्मक कलाकेँ आच्छादित करैत अछि।

कृतिक स्थायी योगदान कोनो एक गाम-समर्थक निष्कर्षमे नहि, बल्कि एहि प्रश्नक पुनरावृत्तिमे अछि जे आधुनिक नगरमे रहैत मनुष्य अपन भाषा, अपन गाम, अपन परिवार आ व्यापक समाजक प्रति जिम्मेदारी कोना समझय। बाल-साहित्यक ग्रन्थसूची सँ एकर तुलना स्पष्ट करैत अछि जे मैथिली गद्यक अलग-अलग पाठकीय संसारमे एकहि सामाजिक प्रश्न भिन्न रूप लऽ सकैत अछि। अतः दिल्लीक पार्कक उचित स्थान

प्रौढ़ नागरिक संवादक शब्दचित्रमे अछि; ओकर अध्ययन साहित्यिक रूप, सामाजिक सन्दर्भ आ आलोचनात्मक दूरी—तीनूकेँ संग रखि करबाक चाही।

१.४०. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — याचक के नजि

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

दृश्य भिक्षावृत्तिसँ अदृश्य याचनाक सत्ता-तन्त्र धरि

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'याचक के नजि' पहिल दृष्टिमे भिखमँगाक प्रति समाजक उपेक्षापूर्ण दृष्टि सँ आरम्भ होइत अछि, मुदा क्रमशः ओहि नैतिक असमानताकेँ सोझाँ अनैत अछि जाहिमे दृश्यमान भिक्षुककेँ निन्दित कएल जाइत अछि आ पद, सम्पर्क, सिफारिश, कृपा, ठेका अथवा राजनीतिक लाभक याचना प्रतिष्ठाक वस्तु बनि जाइत अछि। २०२२ मे प्रकाशित एहि मैथिली शब्द-चित्रमे नौ क्रमांकित खण्ड अछि। कथा-समय, पात्रक आवागमन आ सुभान भायक सामाजिक अनुभवक विस्तार एकरा स्वतंत्र रेखाचित्र सभक संग्रहक बदला एकटा क्रमविकसित, संवादप्रधान, व्यंग्यात्मक आख्यानक रूप दैत अछि। एहि आलेखक मूल तर्क ई अछि जे पोथीक केन्द्रीय सौन्दर्य 'याचक' शब्दक अर्थ-विस्तारमे निहित अछि : भिक्षा मात्र कटोरा लऽ कऽ माँगब नहि, बल्कि संसाधन पर अधिकार रखनिहार संस्थानक आगाँ निरन्तर अनुकम्पा खोजब सेहो सामाजिक याचनाक रूप भऽ सकैत अछि।

आलेखमे पहिने पाठक विधा, शीर्षक, कथा-दृष्टि, पात्र-संरचना, भाषिक रजिस्टर, हास्य-व्यंग्य आ सामाजिक इतिहासक परीक्षण कएल गेल अछि; तकर बाद मुद्रित पृ. १५-११६ मे अवस्थित नौ खण्डक क्रमसँ पृथक पाठविश्लेषण प्रस्तुत अछि। बाल-साहित्यक संग तुलना कृति केँ अनुचित रूपसँ बाल-उपन्यास मानि नहि, बल्कि नन्दक 'स्वर्ण कमल' आ विदेह-शिशु-उत्सवमे अभिलेखित बाल/किशोर रचना-परम्पराक शैक्षिक, भाषिक आ पाठकीय भिन्नताक आधारपर कएल गेल अछि। एहि प्रक्रियामे विदेहक पोथी-सूची, शोध-अनुक्रमणिका, लेखक-समग्रपर उपलब्ध आलोचना आ बाल-साहित्यक प्रासंगिक अभिलेख स्रोत बनल अछि।

विषय-प्रवेश : शीर्षकक प्रश्न आ आलोचनाक मूल प्रस्ताव

‘याचक के नजि’क शीर्षक अपन व्याकरणिक बनावटमे प्रश्नात्मक अछि। ओ प्रश्न केवल ई नहि जे के याचक छथि; ईहो जे के नहि छथि। समाजक दृश्यमान भिखारी, निर्धन श्रमिक, बेरोजगार युवक, छोट दुकानदार, अधिकारी, नेता आ सत्ता-पोषित मध्यस्थ—सभक माँग समान रूपसँ देखल नहि जाइत अछि। आर्थिक आवश्यकता, अधिकारसँ वंचना, कृपा-प्राप्ति आ सुविधाक दलालीक बीच फरक करैत लेखक ‘माँगब’ क्रियाक नैतिक वर्गीकरणपर प्रहार करैत छथि। ई अन्तर पोथीक आरम्भिक भिक्षुक-विमर्शसँ अन्तिम मुद्रित पृष्ठपर पाठकक निर्णयकें सौंपल गेल प्रश्न धरि संरचनात्मक सूत्र बनि रहैत अछि। [१, मुद्रित पृ. १५-२५, १०८-११६]

एहि कृतिक साहित्यिक महत्त्व परखबाक समय एकटा बुनियादी सावधानी आवश्यक अछि। शीर्षकक देवनागरी रूप ‘नजि’ अछि; रोमन प्रकाशकीय रूप ‘Yachak ke Nai’। रोमन ‘Nai’ कें बिना मूल लिपि देखनहि ‘नव’ अर्थमे पढ़ि लेल जाए तँ पोथीक नकारात्मक-प्रश्नात्मक व्यंजना नष्ट भऽ जाइत अछि। विदेह पोथी-सूचीमे देवनागरी नाम ‘याचक के नजि’ दर्ज अछि। एहि कारण एहि अध्ययनमे मूल नामक रूपक सम्मान करैत ‘नजि’कें शीर्षक-चिन्तनक केन्द्र मानल गेल अछि। [१, शीर्षपृष्ठ; २]

कथामे सुभान भाय एक निरन्तर उपस्थित पात्र छथि। हुनक जीवन-सम्पर्क, परिजन, परिचित, रोजगार आ संस्थागत सम्बन्ध क्रमशः खुलैत अछि। एकर संग एकटा कथा-संचालक ‘नायक’क उपस्थिति पाठकें स्मरण करबैत रहैत अछि जे ई समाजक शाब्दिक प्रतिलिपि नहि, बल्कि चयनित दृश्य, प्रश्न, वार्तालाप आ दृष्टिकोणसँ निर्मित साहित्यिक प्रस्तुति अछि। ‘शब्द-चित्र’क अर्थ एतऽ स्थिर चित्र नहि, बहुतो दृश्य जोड़ि कऽ सामाजिक रूपरेखा बनब अछि।

प्रकाशन, पाठ-सीमा आ प्रमाण-पद्धति

मूल पोथीक प्रकाशन-विवरणमे नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ लेखक, गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच (उपरदाहा, जिला दरभंगा) प्रकाशक, प्रथम संस्करण २०२२ आ सहयोग-राशि २००

टाका उल्लिखित अछि। पुस्तकक अन्दर आरम्भिक समर्पण, प्रशंसात्मक भूमिका तथा लेखकक निवेदनक बाद मुख्य रचना मुद्रित पृ. १५ सँ आरम्भ होइत अछि आ पृ. ११६ पर समाप्त होइत अछि। नौ खण्डक पहिल मुद्रित पृष्ठ क्रमशः १५, २६, ४३, ५५, ६२, ७६, ९०, १०२ आ १०८ अछि। [१, आरम्भिक प्रकाशन-पृष्ठ; पृ. १५-११६]

पाठ-साक्ष्यक संदर्भमे एक सीमा घोषित करब आवश्यक अछि। खण्डक आरम्भ-बिन्दु, पात्र, प्रसंग आ कथानक-क्रमक परीक्षण कएल गेल अछि, मुदा प्रत्यक्ष उद्धरणक नामपर अनुमानित पाठ प्रस्तुत नहि अछि।

‘शब्द-चित्र’ पोथीक स्वयं घोषित विधा अछि; भूमिकामे एकर आकार रेखाचित्र, आख्यान आ उपन्यासक सीमा-समीप रखल गेल अछि। आलोचनात्मक अध्ययनमे लेखक अथवा भूमिकाकारक वर्गीकरणकेँ अन्तिम आदेश नहि, पाठक संरचनाक संग जाँचबाक प्रस्ताव मानल गेल अछि। ई निर्णय एहि कारण महत्वपूर्ण अछि जे नौ खण्ड स्वयं-संपूर्ण स्वतंत्र रेखाचित्र नहि, एकटा मुख्य सामाजिक संसारक क्रमिक विस्तार देखबैत अछि। [१, भूमिका : मुद्रित पृ. ५-१२; मुख्य पाठ : पृ. १५-११६]

विधागत स्वरूप : शब्द-चित्र, कथात्मक रेखाचित्र आ लघु-उपन्यासक सीमा शब्द-चित्रमे भाषा ककरो व्यक्तिक बाह्य रूपरेखा भर नहि खींचैत; ओ व्यक्तिक चाल-ढाल, समाजमे ओकर स्थान, ओकर कहब-करबक अन्तर आ ओकरा घेरने सम्बन्ध-व्यवस्थाकेँ सेहो प्रकट करैत अछि। सामान्य रेखाचित्रमे एक पात्र अथवा क्षण-विशेष केन्द्रमे रहि सकैत अछि; मुदा एहि पोथीमे पात्रक जीवनक कारण-परिणामक कड़ी, सामाजिक संस्थानक हस्तक्षेप आ आवर्ती संवाद मिलि कऽ कथा-जगत निर्मित करैत अछि। एहि दृष्टिसँ एकरा ‘आख्यानात्मक शब्द-चित्र’ कहब अधिक सार्थक अछि।

कथाकार बारम्बार पात्रक कथनसँ वर्णन दिस, आ वर्णनसँ नूतन संवाद दिस मुड़ैत छथि। एहि आवृत्तिमे कथाक समय सदैव एके गति सँ नहि बहैत अछि : कखनो पूर्वक घटना जीवन-इतिहासक रूपमे जुड़ैत अछि, कखनो वर्तमानक भेटघाँट तुरन्त राजनीतिक प्रसंगमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि। खण्डक अंकन पाठकेँ चरण-परिवर्तनक अनुभव दैत

अछि, मुदा एक प्रकरण दोसरक पात्र-संसारमे प्रवेश करैत रहैत अछि। एहि कारण ‘नौ अलग कथा’ मानब मूल रचनाक अन्तरसम्बन्ध भंग करब होएत।

ई विधागत प्रयोगक सीमा सेहो अछि। घटनाक सघनता बढ़लापर किछु पात्र संक्षिप्त रूपमे केवल उदाहरण बनि उपस्थित होइत छथि; लेखकक सामाजिक घोषणा कखनो-कखनो दृश्यक स्वाभाविक बहावपर भारी पड़ैत अछि। फेरो लघु-उपन्यासक पूर्ण संरचनात्मक अनुशासन एहि कृतिसँ माँगब उचित नहि; शब्द-चित्रक चयनशीलता लेखककेँ सामाजिक जीवनक अलग-अलग कोण एक मुख्य विषयक चारूकात रखने रहबाक अवसर दैत अछि। एहि दोलनकेँ कमजोरी मात्र मानबाक बदला कृतिक रचनात्मक चुनौतीक रूपमे देखबाक चाही।

नौ खण्डक मूल-रचनाविन्यासित पृथक विश्लेषण

पहिल खण्ड : भिखारीक दृश्य आ सम्मानक असमानता

पहिल खण्डक आरम्भमे सामाजिक दृष्टिक कठोरता चिन्हित होइत अछि : भिक्षुक समाजक हेय-दृष्टिक पात्र अछि, जखनकि ओकरा सँ बहुत उच्च सामाजिक स्थानवाला व्यक्ति सेहो अपन आवश्यकताक पूर्ति लेल आनक आगाँ निर्भर रहैत अछि। धार्मिक उच्चारण, भीखक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा, आर्थिक विवशता आ सामाजिक उदासीनता—ई सभ एके विमर्शमे आबैत अछि। कथा-संचालक मात्र करुणा नहि माँगैत; ओ पाठककेँ शब्दक अर्थ बदलि कऽ देखबाक आग्रह करैत छथि।

एतऽ लेखक नैतिक विरोधाभास रचैत छथि। आम भिखारीक कटोरा देखाइत अछि; सत्ता अथवा पदक निकट याचना करनिहारक ‘कटोरा’ प्रतिष्ठा, परिचय आ संस्तुतिक भीतर लुकायल रहैत अछि। याचना आ श्रमक भिन्नता, दान आ अधिकारक अन्तर तथा आश्रितता आ स्वाभिमानक सम्बन्ध पहिल खण्डमे प्रस्तावना रूपमे उपस्थित अछि। एहि सामाजिक प्रश्नक उत्तर कोनो तत्काल नीतिपाठ नहि; पाठक स्वयं भावी प्रसंग सभमे एकर परीक्षण करथि, ई रचनाक योजना अछि।

शिल्पतः पहिल खण्ड अवधारणात्मक आरम्भसँ चरित्र-आधारित अनुभव दिस बढैत अछि। एकर बल विवादास्पद प्रश्न उठेबामे अछि; सीमा ई जे आरम्भिक प्रतिपादन कखनो उपदेशात्मक लागि सकैत अछि। तथापि ई आरम्भ पोथीक शीर्षक आ अन्तिम प्रश्नक बीच मूल सूत्र स्थापित करैत अछि।

दोसर खण्ड : सुभान भायक जीवन-जगत आ जीविकाक संघर्ष

दोसरा खण्डमे सुभान भाय कथाक जीवन्त केन्द्र बनि उभरैत छथि। हुनक सामान्यता—न घर-घरमे प्रभाव, न स्थायी सम्पन्नता, न अधिकारिक सुरक्षा—ओहि अर्थमे असाधारण अछि जे लेखक एकटा कथित ‘बड़का आदमी’क बदला साधारण जीविकानिष्ठ व्यक्तिक अनुभव सँ समाजक बड़का प्रश्न तक पहुँचैत छथि। फूल-पाती, घरक काम, छोट रोजगारी, परिवारक जिम्मेवारी आ परिचित लोकक सलाह आदि संकेत हुनक जीवनकेँ वस्तुनिष्ठ धरातल दैत अछि। [१, पृ. २६-४२]

संवादक बहुलता एतऽ सामाजिक वर्गक भिन्न दृष्टि प्रकट करैत अछि। सुभान भाय स्वयं सहायता, परिश्रम आ सम्भावनाक तौल करैत छथि; आन पात्र तत्काल रोजगार, परिचय, लाभ वा सामाजिक उन्नतिक उपाय सुझबैत छथि। ई अन्तर लेखकक दृष्टिमे बेरोजगारीक मात्र आर्थिक नहि, सांस्कृतिक संकट होयबाक प्रमाण बनैत अछि : रोजगारक अभाव केवल आय घटबैत नहि, सामाजिक सम्मानक मानक सेहो बदलैत अछि।

एहि खण्डक कलात्मक प्रभाव जीवनक छोट विवरण सभसँ बनैत अछि। उपदेश जँ बहुतो ठाउँ उपस्थित अछि तँ ई विवरण ओकरा जमीनी प्रमाण प्रदान करैत अछि। ईहो देखाइत अछि जे सुभान भायक अनुभव केवल व्यक्तिगत संघर्ष नहि; साधनहीनता आ अवसरक असमान वितरणक फल सेहो अछि।

तेसर खण्ड : परिचय, पहिचान आ मध्यस्थताक भाषा

तेसर खण्डमे कथानक सामाजिक परिचय-सम्पर्कक बहसकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि। नायकक प्रश्नोत्तरक बीच व्यक्तिक नाम, काम, स्वरूप, ठिकाना आ भरोसाक प्रश्न उठैत

अछि; सहायताक इच्छुक लोक अपन वास्तविक परिचय छिपबैत अथवा आंशिक रूपमे प्रस्तुत करैत दिखाई पड़ैत छथि। [१, पृ. ४३-५४]

एहि स्तरपर 'याचक' केवल भिखारीक आर्थिक पहचान नहि रहि कऽ सामाजिक सम्पर्क बनाबयवाला व्यक्तिक व्यवहारमे प्रवेश करैत अछि। कोनो काम बिना सिफारिश सम्भव अछि कि नहि; लोकक कहब आ करबमे कतेक दूरी अछि; सहायता करनिहार व्यक्ति सचमुच जिम्मेवारी लैत छथि कि सामाजिक अवसरक लाभ उठबैत छथि—ई प्रश्न कथा-गतिकेँ आगाँ धकेलैत अछि।

कला-दृष्टिसँ तेसर खण्डक विशेषता संवादक तनाव अछि। बातक तत्काल उत्तर प्रायः समस्या नहि सुलझबैत; नूतन शंका उत्पन्न करैत अछि। एहि अनिश्चिततासँ कथानकक वास्तविकता बढ़ैत अछि। मुदा एकहि बिन्दुपर लगातार प्रतिप्रश्नक प्रयोग पाठकेँ दोहरावक अनुभव सेहो दऽ सकैत अछि।

चारिम खण्ड : सुलेमानक श्रम, विश्वास आ जीवनोपाय

चारिम खण्डक आरम्भ विश्वास, गोपनीयता आ दोसराक उपकारक प्रश्नसँ होइत अछि। एतऽ सुलेमान नामक पात्रक छोट व्यवसाय, साइकिल मरम्मतक काम आ आन लोकसँ व्यवहारक प्रसंग उल्लेखनीय अछि। गरीब श्रमजीवीक दिनचर्या केन्द्रीय घटनासँ असम्बद्ध रंगत नहि; ओ सामाजिक प्रतिष्ठाक वैकल्पिक मापदण्ड उपस्थित करैत अछि। [१, पृ. ५५-६१]

कथामे भिखमंगा समुदायक संग श्रमक सम्भावनाक चर्चा सेहो एहि खण्डकेँ नैतिक रूपसँ सघन बनबैत अछि। 'दान'क तात्कालिक समाधानक बदला श्रम-सहभागिता, सुरक्षित जीवनोपाय आ सामाजिक भरोसा अधिक टिकाउ प्रश्न बनि सोझाँ अबैत अछि। लेखक जतऽ एहन सम्भावना देखैत छथि, ओतहि एकटा सीमा सेहो प्रकट होइत अछि : भिक्षावृत्तिक प्रत्येक अनुभवकेँ सहजहि कृषि अथवा निजी उद्यममे बदलल जा सकैत अछि, एहन निष्कर्ष पाठ प्रमाणित नहि करैत। स्वास्थ्य, आयु, जमीन, पूँजी आ सामाजिक भेदभावक शर्त सभक अलग परीक्षण आवश्यक अछि।

ई खण्ड कृतिक मनुष्यवादी प्रतिबद्धता देखबैत अछि। सुलेमानक श्रम-संस्कृति आ सुभान भायक सामाजिक दृष्टिक समीपता धर्माधारित सरल विरोधक ठाम वास्तविक सहजीवनक परिप्रेक्ष्य प्रदान करैत अछि। ई एकर सशक्त सामाजिक उपलब्धि अछि।

पाँचम खण्ड : छोट दुकानदार, रेल-प्रशासन आ कृपा-तन्त्र

पाँचम खण्डमे दीनू नामक एकटा निम्न आयवर्गीय व्यक्तिक पानक छोट कारोबार आ स्टेशनक वातावरणक प्रसंगसँ सत्ता-सम्बन्धक नूतन क्षेत्र खुलैत अछि। रोज कमाइ पर आश्रित कारोबारक भाग्य निजी योग्यता मात्रसँ नहि, अधिकारिक निरीक्षण, अनुमति, अनौपचारिक निर्देश, दलाली आ स्थानीय प्रभावसँ जुड़ि जाइत अछि। लालबाबू तथा रेल-संस्थानसँ सम्बन्धित व्यक्ति सभक प्रसंग एहि अवरोधकें कथात्मक रूप दैत अछि।

[१, पृ. ६२-७५]

एहि खण्डक महत्त्व 'भ्रष्टाचार' शब्दक सामान्य उच्चारणमे नहि, ओकर रोजमर्रा आर्थिक प्रभावक चित्रणमे अछि। जे व्यक्तिक आय मामूली अछि, तकरा लेल अवसर बन्द होएब केवल एक बेरक आर्थिक घाटा नहि; पूरा परिवारक रोटी, सम्मान आ भविष्यपर असर अछि। शासनक औपचारिक नियम आ प्रथागत दबावक बीच फँसल व्यक्तिक विवशता हीन सामाजिक स्थितिक एकटा आधुनिक प्रतिरूप बनैत अछि।

कलात्मक दृष्टिसँ ई खण्ड पूर्वक दार्शनिक प्रश्नकें प्रशासनिक उदाहरणमे बदलैत अछि। कथाक व्यंग्य तखन पैघ होइत अछि जखन जे व्यक्ति परिश्रम कऽ पेट पालैत अछि से अनुमति आ उपकारक याचक बनबाक लेल बाध्य अछि, आ जे पदपर बैसल अछि ओकर कृपा बिकाऊ संसाधन बनि जाइत अछि। फिरो कथाकें वास्तविक सरकारी प्रक्रियाक पूर्ण अभिलेख मानब उचित नहि; ओ साहित्यिक पुनर्रचना अछि, जाहिमे संस्थागत आलोचना पात्रक अनुभवसँ कएल जाइत अछि।

छठम खण्ड : परिवार, अपनापन आ रोजगारक अपेक्षा

छठम खण्डमे सुभान भायक पारिवारिक जीवनक विस्तृत रूपक प्रवेश अछि। जमीला बेगम आ परिवारक आन सदस्य सभक उल्लेखसँ कृतिक सामाजिक समस्या घरक

भीतरक जरूरत, देखरेख आ स्नेहक प्रश्न बनैत अछि। रोजगारक जानकारी, आवेदन, पात्रता, परीक्षा-व्यवस्था आ अधिकारिक परिचयक चर्चासँ परिवारक भावी सुरक्षाक चिंता जुड़ैत अछि। [१, पृ. ७६-८९]

एहि खण्डमे विशेष रूपसँ देखबा योग्य ई अछि जे एकटा परिवारक आशा कतेक स्तरपर दोसराक निर्णयपर निर्भर रहैत अछि। ई निर्भरता यदि विधिसम्मत अधिकारक भीतर सुरक्षित होय तँ ओ समान नागरिकता होयत; मुदा जँ सिफारिश आ निहित स्वार्थ अनिवार्य मध्यस्थ बनि जाए तँ ओ याचनाक मनोवृत्ति उत्पन्न करैत अछि। लेखकक सामाजिक व्यंग्य एहि सूक्ष्म अन्तरमे काम करैत अछि।

घरक स्त्री पात्र सभक उपस्थिति कथा केँ भावनात्मक धरातल देइत अछि, मुदा एहिठाम आलोचनात्मक प्रश्नोत्तर आवश्यक अछि : हुनका सभक अपन इच्छा, निर्णय आ श्रम कथाकार कतेक सुनबैत छथि, आ कतेक पुरुष पात्रक जीवन-चित्रण लेल पार्श्व बनबैत छथि? एहि पाठमे स्त्री-पात्रक स्वतन्त्र अन्तःस्वरक विस्तार सीमित अछि; सामाजिक यथार्थक आलोचनाक संग ई शिल्पगत कमी सेहो दर्ज होयबाक चाही।

सातम खण्ड : चुनाव, धन आ लोकहितक विस्थापन

सातम खण्ड राजनैतिक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। सुभान भायक सार्वजनिक कार्यक इच्छा, जनप्रतिनिधिसँ सम्पर्क, चुनावी खर्चक माँग आ अनुचित दबावक संकेत स्पष्ट करैत अछि जे लोकतन्त्रक मूल विचार आ ओकर व्यावहारिक उपभोगक बीच दूरी बनल अछि। कथामे विधायक-संबन्धी प्रसंग आ आर्थिक सौदेबाजी मुख्य प्रतिपक्ष रचैत अछि।

[१, पृ. ९०-१०१]

एतऽ 'याचक'क स्थान पलटि जाइत अछि। जनप्रतिनिधि नागरिकक सेवक होएबाक चाही, मुदा व्यवस्था एहन बनि सकैत अछि जतऽ नागरिक सेवा पएबाक लेल उन्हींकेँ धन, वोट अथवा निजी अनुरोध लऽ कऽ पहुँचय पड़ैत छनि। राजनीतिक संरक्षणक एहि आलोचनामे लेखकक व्यंग्य जनतांत्रिक संस्थानक सर्वथा निषेध नहि; सेवा आ सुविधा पर निजी स्वामित्वक विरोध अछि।

एहि खण्डक उपलब्धि सामाजिक समस्या केँ अनियन्त्रित भाग्य नहि, निर्णय आ शक्ति-वितरणक फल बतब अछि। तखनहुँ राजनीतिक जीवनक सभ क्रियाकलाप केवल भ्रष्ट सौदा होइत अछि—एहन व्यापक निष्कर्ष कथा कहियो प्रमाणित नहि करैत। लेखकक विशिष्ट चित्रकेँ एकटा व्यापक संस्थागत प्रश्नक उदाहरणक रूपमे पढ़ब अधिक संतुलित होएत।

आठम खण्ड : अधिकारीक शक्ति आ नैतिक समझौताक प्रस्ताव

आठम खण्ड अपेक्षाकृत संक्षिप्त अछि, मुदा कथाक नैतिक तीव्रता बढ़बैत अछि। सुभान भाय आ रौनकक बातचीतमे एकटा सरकारी पदस्थ व्यक्तिक प्रभाव, कार्य-सम्पादनक औपचारिक बाट आ निजी लाभक मध्यस्थ उपायपर विमर्श उठैत अछि। रौनकक उत्तर कथाकेँ व्यक्तिगत हित आ अनुचित सुविधा-प्राप्तिक बीच नैतिक परीक्षा बना दैत अछि।

[१, पृ. १०२-१०७]

अल्प विस्तारक बावजूद एहि खण्डमे कथाकारक व्यंग्यार्थ प्रभावशाली अछि। ‘काम करब’ आ ‘काम कराएब’क बीच जतऽ संस्थागत सीमा टूटैत अछि, ओतहि अनुग्रहक निजी बाजार बनैत अछि। निजी परिचयक माध्यमसँ सेवा पएबाक चाह नागरिकक अधिकारबोधकेँ क्रमशः कृपापात्रक मनोवृत्तिमे बदलि सकैत अछि।

एकर सीमा ई जे किछु संवेदनशील सामाजिक प्रसंगमे महिला पात्र विषयवस्तु अथवा अनुरोधक वस्तु बनि रहैत छथि; कथाकारक आलोचनात्मक दूरी सदैव समान स्पष्ट नहि रहैत अछि। एहि कारण लैंगिक नैतिकता पर कठोर पाठकीय जाँच आवश्यक अछि, नहि तँ अधिकारी-विरोधी व्यंग्यक भीतर स्त्रीक स्वायत्तताक प्रश्न दबि सकैत अछि।

नवम खण्ड : रौनक, परिवार आ ‘याचक’क अन्तिम उलट-प्रश्न

अन्तिम खण्डमे रौनकक जीवन-संकट, पारिवारिक अपेक्षा, विवाह-सम्बन्धी प्रश्न आ सीमा नामक पात्रसँ जुड़ल प्रसंगक माध्यमसँ नौकरी-केन्द्रित सामाजिक प्रतिष्ठाक जटिलता सोझाँ अबैत अछि। राजनीतिक आ प्रशासनिक सम्पर्कक सन्दर्भ घरेलू

जीवनक निर्णय धरि पहुँचैत अछि। परिवारक भीतरक संवाद पाठकें देखबैत अछि जे सत्ता-सम्बन्धक दबाव निजी इच्छाक क्षेत्र धरि पहुँचि सकैत अछि। [१, पृ. १०८-११६] नवम खण्डक सबसँ महत्वपूर्ण क्रिया शीर्षकक पुनरागमन अछि। आरम्भमे दृश्य भिक्षुक पर केन्द्रित प्रश्न अन्तमे स्थिति पलटि कऽ पाठकक आगाँ अबैत अछि। साधारण भिक्षुककें अपमानित करनिहार सामाजिक मनोवृत्ति आ अधिकार-सम्पन्न पदसँ कृपा माँग्यवाला शिक्षित-सम्पन्न संसार—दुनू एकटा नैतिक तुलनामे आबि जाइत अछि। अन्तिम प्रश्न कथाकें पूर्ण व्याख्यापत्र नहि बनबैत, पाठकक निर्णयक अपेक्षा करैत अछि।

अन्तिम दृश्यसँ पूरा पोथीक संरचना फेर देखल जा सकैत अछि : पहिल खण्ड व्याख्यात्मक सूत्र दैत अछि, मध्यक खण्ड क्रमशः अलग संस्थानमे ‘याचनाक सामाजिक रूप’ देखबैत अछि, आ अन्तिम खण्ड नूतन नामकरणक फैसला पाठकपर छोड़ि दैत अछि। रचनाक अन्तिम सौन्दर्य ई खुला व्यंजना अछि। तखनहुँ किछु घटनाक एक-दोसरासँ संक्रमण अपेक्षाकृत आकस्मिक अछि; एहि असमान लयकें स्वीकारि कऽ सेहो अन्तिम प्रश्नक वैचारिक प्रभाव अस्वीकार नहि कएल जा सकैत।

पात्र-योजना : सुभान भाय, नायक, रौनक आ सामाजिक संसार

सुभान भाय एहि शब्द-चित्रक संवेदनात्मक केन्द्र छथि। ओ एके बेर सामाजिक दार्शनिक, सामान्य रोजी-रोटी लेल चिन्तित व्यक्ति, पारिवारिक उत्तरदायी आ सामाजिक परिवर्तनक सम्भावना देखनिहार पात्र बनि सोझाँ अबैत छथि। एहि मिश्रित रूपसँ लेखक खाँटी नायकत्वक महिमामण्डनसँ बचैत छथि। सुभान भायक शक्ति हुनक पूर्णता नहि, सीमित साधनक बावजूद परिस्थिति बुझबाक हुनक प्रयास अछि। सुभान भायक नामक संग ‘भाय’ सम्बोधन अपनत्व आ लोक-भाषाक सहजीविताक सूचक बनैत अछि।

नायकक भूमिका एकटा कथ्य-संचालकक थिक। ओ कथा भीतर प्रश्न करैत, प्रसंग बदलैत, दोसराक स्वर सुनैत, फेर कखनो अपन टिप्पणी जोड़ैत छथि। एहि साक्षी-संरचनाक कारण पाठक घटनाक ऊपरसँ नीतिपरक घोषणा सुनबाक बदला सम्बन्धित

लोकक विचार सुनैत अछि। तथापि कथाकारक विचार आ नायकक विचार कतेक एक-दोसरासँ अलग छथि, से सदैव स्पष्ट नहि; एहि अस्पष्टताक कारण किछु राजनीतिक निष्कर्ष पाठक बिना पर्याप्त दूरीक ग्रहण कऽ सकैत छथि।

रौनक आगाँ बढ़ैत सामाजिक श्रेणी, पेशागत सम्भावना आ नैतिक जोखिमक संग जुड़ल पात्र छथि। स्त्री पात्र सभक सहभागिता परिवारक सामाजिक आशंकाकेँ भूमि दैत अछि, मुदा ओहि सबकेँ निर्णय-क्षमता, जीविका आ आकांक्षा विषयक स्वतन्त्र कथा-विस्तार कतेक भेटल, ई महत्त्वपूर्ण प्रश्न थिक। सुलेमान आ दीनू सन पात्र व्यक्ति-चित्रक माध्यमसँ अनौपचारिक अर्थव्यवस्थाक कठिनाई देखबैत छथि; लालबाबू आ पदाधिकारी-वर्ग सत्ताक वैयक्तिकरणक बिम्ब बनैत छथि।

नामक सामाजिक-सांस्कृतिक वैविध्य उल्लेखनीय अछि। सुभान, सुलेमान, जमीला सन नामक संग भिन्न समुदाय आ संस्थागत पृष्ठभूमि वला पात्र एके कथा-जगतमे उपस्थित होइत छथि। ई भाषिक-सांस्कृतिक संग-साथ रचनाक ताकत अछि; मुदा सामाजिक सामञ्जस्यक कोनो आदर्शकृत प्रमाण मानबाक बदला एतऽ ‘साझा असुरक्षा’ आ ‘साझा श्रम’क प्रश्न अधिक दृढ़ अछि।

विषयगत विश्लेषण : भिक्षा, श्रम, अधिकार आ संरक्षण

पोथीकेँ चारि तर्क-स्तरमे बुझल जा सकैत अछि। पहिल स्तर ‘दृश्य भिक्षा’क अछि—जे सामाजिक रूपसँ तिरस्कृत लोक करैत छथि। दोसर ‘जीविकागत अनिवार्यता’क अछि—जतऽ बेरोजगार, दुकानदार अथवा श्रमिक निर्णय-सम्पन्न संस्थाक कृपा पर निर्भर भऽ जाइत अछि। तेसर ‘राजनीतिक संरक्षण’क अछि—जतऽ पहुँच अथवा धनक माध्यमसँ सेवा आ अवसरक वितरण प्रभावित होइत अछि। चारिम ‘नैतिक पाखण्ड’क अछि—जतऽ पहिल प्रकारक माँग अपमानजनक, मुदा आन तीन प्रकारक याचना प्रतिष्ठाक चिह्न मानल जा सकैत अछि।

ई श्रेणीकरण पोथीक सामाजिक अंतर्दृष्टिक पुनर्निर्माण अछि; कथाक प्रत्येक घटनाकेँ कोनो सूत्रमे ठूसि देबाक योजना नहि। कथा विशेष अर्थमे महत्त्वपूर्ण तखन होइत अछि

जखन ओ दया मात्रसँ दानक व्यवस्था बचाबय नहि चाहैत, बल्कि आजीविका, सामाजिक न्याय, सेवा-प्रवेश आ नागरिक अधिकारक सम्बन्धपर प्रश्न करैत अछि। ‘गरीब भिखारी’क प्रतिमा एतऽ नैतिक कमीक संकेत नहि, संरचनात्मक परिस्थिति बुझबाक अवसर बनैत अछि।

सामाजिक अर्थशास्त्रक दृष्टिसँ एहि याचनाक मूल समस्या संसाधनक असमान नियन्त्रण अछि। जखन कम अवसर पर बहुत लोक निर्भर होइत छथि, तखन अवसर बाँटनिहारक मनमानी सामाजिक शक्ति बढ़ैत अछि। अनौपचारिक भुगतान, पहचान, सिफारिश आ राजनीतिक सम्बद्धता अपना-आपमे एकटा अतिरिक्त मुद्रा बनि सकैत अछि। कथा एहि अतिरिक्त मुद्राक नैतिक दुष्परिणाम देखबैत अछि। तखनहुँ एहि आलोचनासँ ई अभिप्राय नहि निकलैत जे प्रत्येक सहायता अन्यायपूर्ण अछि; अधिकारसंगत सहयोग आ कृपाक सौदा बीच अन्तर राखब एकर आवश्यक व्याख्यात्मक शर्त अछि।

भाषाशिल्प : लोकलय, वाक्-व्यंग्य आ पुनरावृत्तिक सौन्दर्य

कृतिक भाषा अपन बुनियादी ऊर्जा लोक-संवादसँ लैत अछि। पात्र सभक प्रश्न, तुरत प्रतिवाद, सम्बोधन आ परिस्थिति-निष्ठ टिप्पणी कथाक गति निर्मित करैत अछि। ‘भाय’ सन सम्बोधन सामाजिक दूरी कम करैत अछि; रेल, स्टेशन, ऑफिस, ठेका, चुनाव, नौकरी, पान-दोकान आदि जीवनोपयोगी शब्द अनुभवक यथार्थपरक भूगोल बनबैत अछि। एहि भाषिक समावेशसँ मैथिली समकालीन प्रशासनिक आ नागर जीवनक चर्चा करबाक सक्षम साहित्यिक माध्यम बनैत अछि।

एकर प्रमुख अलंकार विरोधाभास अछि : जे असहाय अछि ओ हँसीक पात्र, जे प्रभावशाली अछि ओ प्रशंसनीय; जे श्रम करैत अछि ओकरा पर अविश्वास, जे कृपाक सौदा करैत अछि ओकरा समाजमे सम्मान। शीर्षकक नकारात्मक प्रश्न एहि विरोधाभासक केन्द्रबिन्दु अछि। संवाद-आधारित व्यंग्यक संग करुणाक हलुक प्रवाहो चलैत अछि। कृतिक भावभूमिमे हास्य आ करुणा एक-दोसराकेँ कम नहि करैत;

करुणाक सामाजिक कारण उजागर करबाक लेल हास्य प्रश्नक शक्ति प्रदान करैत अछि।

शिल्पक सीमा पुनरावृत्तिमे देखल जा सकैत अछि। कखनो एके प्रश्नक अनेक रूप, एक पात्रक सामाजिक मतक दोहराव आ संस्थागत दोषक उपदेशात्मक घोषणा कथाक संवेग घटबैत अछि। मुदा अनवरत प्रश्नोत्तर एहि कृतिक स्वाभाविक बोलीक हिस्सा सेहो अछि। सम्पादन-प्रक्रियामे अनावश्यक दोहराव घटा देल जाए तँ कथाक बौद्धिक तीव्रता आर पैघ भऽ सकैत छल; तथापि ओहि दोहरावमे लोकविवादक वास्तविक लय सेहो संरक्षित अछि।

नैतिक आलोचना : साहित्यिक उपलब्धि आ प्रश्नांकित पक्ष

कृतिक सबसँ बड़ी उपलब्धि सामाजिक नैतिकताक दोहरा मानदण्ड देखेबामे अछि। पात्रक परिचय-सम्पर्कक माध्यमसँ कथाकार ई स्थापित करैत छथि जे असमान शक्ति-सम्बन्ध सभक बीच ‘माँगब’ स्वयं वर्ग-चिह्नित क्रिया बनि जाइत अछि। निर्धनक माँग अस्वीकार्य, मुदा शक्तिशालीक माँग अनदेखल; एहि तुलनामे सामाजिक आलोचनाक धार अछि। फेर लेखक मनुष्यक प्रतिष्ठाक आधार मात्र व्यवसाय वा पदकें नहि बनबैत छथि; श्रम आ सामाजिक उत्तरदायित्वकें महत्त्व दैत छथि।

तथापि रचना आलोचनासँ मुक्त नहि अछि। पहिल, किछु प्रसंगमे भिक्षावृत्तिक कारणक व्यापकता पर्याप्त नहि खुलैत—अशक्तता, रोग, बाल-असुरक्षा, बुजुर्गक निर्भरता आ राज्यक सामाजिक सुरक्षा नीति सन पक्षक चर्चा सीमित अछि। दोसर, शासन-व्यवस्थाक प्रतिनिधित्व मुख्यतः अवसरवादी पात्रक अनुभवसँ होइत अछि; सकारात्मक अथवा अधिकार-आधारित अपवाद कम मिलैत अछि। तेसर, स्त्री-पात्रक आवाज प्रायः पुरुष-पात्रक संघर्षक आस-पास घूमैत अछि। चारिम, राजनीतिक प्रसंगक व्यंग्य कखनो व्यक्ति-नैतिकतापर अधिक आ संरचनात्मक विश्लेषणपर अपेक्षाकृत कम टिकैत अछि। ई सीमासभ आंतरिक पाठ-परीक्षणक आधारपर कही जाइत अछि, नहि कि लेखकक सामाजिक प्रतिबद्धताकें अस्वीकार करबाक लेल। सामाजिक साहित्यक वास्तविक

मूल्यांकनमे दृष्टिक नैतिक ईमानदारीक संग वस्तु-स्थितिक जटिलताकें प्रस्तुत करबाक क्षमता सेहो देखल जाइत अछि। एहि कसौटीपर ‘याचक के नजि’ प्रश्न उठेबामे अधिक सशक्त, प्रश्नक सर्वांगीण समाधान देबामे जानि-बुझि अथवा शिल्पगत कारणसँ सीमित अछि। एहि असमाप्तता मे एकर आधुनिकता निहित अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे स्थान : समानान्तर पाठक-दृष्टि

मैथिली साहित्यक इतिहास लिखैत समय केवल प्रतिष्ठित काव्यविधा अथवा पुरस्कारप्राप्त उपन्यासकें केन्द्रमे रखब पर्याप्त नहि। सामान्य जनक रोजी-रोटी, छोट बाजार, रेल-स्टेशन, स्थानीय दलाली, जनप्रतिनिधिक व्यवहार आ पारिवारिक आशाक साहित्यिक रूपान्तरण सेहो आधुनिक मैथिली गद्यक इतिहासक सामग्री अछि। एहि कारण नन्दक शब्द-चित्रक स्थान कथा-विधाक उपशाखा मात्र नहि, सामाजिक इतिहासक साहित्यिक साक्ष्यक रूपमे देखल जा सकैत अछि। साहित्यिक साक्ष्य कहबाक अर्थ दस्तावेजी तथ्यक स्थानापन्न नहि; कथाक मूल्य सामाजिक संवेदनाक विन्यासमे अछि।

विदेहक समानान्तर इतिहास-संबन्धी उपक्रममे उपेक्षित रचनाकार, लोकभाषा, कथा-विधा आ प्रकाशन-प्रणालीक प्रश्न उठल अछि। नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ पर विदेहक आलोचनात्मक समग्र अध्ययन हुनका बहुविधा रचनाकारक रूपमे चिन्हित करैत अछि : सामाजिक उपन्यास, शब्द-चित्र, कथा, काव्य आ बाल-उपन्यास एहि विविधताक अङ्ग छथि। एहि वर्गीकरणक मुख्य उपयोग एहि अध्ययनमे ई बुझब अछि जे ‘याचक के नजि’ ककरो बाल-उपन्यासक अधूरी छाया नहि, हुनक सामाजिक गद्यक स्वतन्त्र प्रयोग अछि।

एकटा पाठ-सुधार सेहो आवश्यक अछि। रोमन शीर्षक ‘Yachak ke Nai’क आधारपर ‘new petitioner’ सन अर्थ निकालब संदेहास्पद अछि। मूल देवनागरीमे ‘नजि’क उपस्थितिक संग कथाक अन्तिम प्रश्न मिलाउल जाए तँ नकारात्मक-प्रश्नात्मक अर्थ अधिक संगत देखाइत अछि। एहन स्थिति मे ग्रन्थसूची, अनुवाद आ समीक्षाक बीच मूल

शीर्षपृष्ठक प्राथमिकता आवश्यक अछि। साहित्यिक इतिहासक शुद्धता केवल बड़का सिद्धान्तसँ नहि, एहन छोट पाठिय निर्णयसँ बनैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासक तुलनात्मक विवेचन : विधागत सीमा आ साझा सामाजिक सरोकार

पहिने विधागत भिन्नता स्वीकारब

‘याचक के नजि’ शब्द-चित्र थिक; बाल-पाठक लेल विशिष्ट आयु-उपयुक्त रचना होयबाक दावा मूल शीर्षपृष्ठ अथवा उपलब्ध कथात्मक विन्याससँ प्रमाणित नहि होइत अछि। एहि कारण एकरा बाल-साहित्यक सूचीमे सीधे रखब श्रेणी-दोष होएत। मुदा बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर तुलना असंगत सेहो नहि अछि; नन्दक अन्य कृति ‘स्वर्ण कमल’ विदेह शिशु उत्सवक सूचीमे स्पष्टतः ‘बाल उपन्यास’क रूपमे दर्ज अछि। एकहि रचनाकारक सामाजिक शब्द-चित्र आ बाल-उपन्यासक पाठकीय प्रयोजन, कथाक गति, भाषाक घनत्व आ नैतिक प्रस्तुति भिन्न भऽ सकैत अछि।

बाल-कथामे पाठकक उमेर, अनुभव-जगत, दृश्य-संगति, क्रियाशील बाल-पात्र आ प्रश्न पुछबाक अवसर विशिष्ट कसौटी होइत अछि। ‘याचक के नजि’मे प्रौढ़ राजनीति, प्रशासनिक सौदेबाजी, रोजगारीक संघर्ष आ नैतिक पाखण्डक बहुस्तरीय उदाहरण अछि। ई सामग्री किशोर पाठकक सामाजिक बोध लेल सानुकूलित भऽ सकैत अछि, मुदा मूल कृति अपन वर्तमान रूपमे प्राथमिक बाल-पाठक लेल रचल गेल अछि, एहन मानबाक आधार नहि भेटैत।

विदेह अभिलेखमे बाल-साहित्यक विकासक संकेत

विदेहक शिशु उत्सव आ पोथी-अभिलेख आधुनिक मैथिली बाल-साहित्यक बहुविध रूप देखबैत अछि। ओतऽ लोककथा-आधारित संकलन, चित्रकथा, बाल-कविता, बाल-उपन्यास, नाटक, विज्ञान-विषयक पुस्तक आ अनूदित सचित्र साहित्य अलग-अलग रूपमे वर्गीकृत अछि। उपलब्ध सूचीमे प्रीति ठाकुरक २००८ केर ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’, २००९ केर ‘मैथिली चित्रकथा’, २०१० केर ‘मिथिलाक लोकदेवता’

आ २०१२ केर बालरूपान्तरित 'विद्यापतिक पुरुष परीक्षा' दर्ज अछि। ई उदाहरण मौखिक परम्परा, चित्र-आधारित पाठ आ सांस्कृतिक आख्यानक बीच सम्बन्ध सूचित करैत अछि।

विदेह शोध-अनुक्रमणिकामे फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'क 'मैथिली शिशु लोक साहित्य' (अङ्क ५०, १५ जनवरी २०१०), डॉ. योगानन्द झाक 'मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा' (अङ्क ७६, १५ फरवरी २०११) आ दुर्गानन्द मण्डलक 'नेना लेल सुन्दर चित्रकथा' (अङ्क ११६, १५ अक्टूबर २०१२)क अभिलेख अछि। एहि तीन शीर्षकक क्रमसँ लोकमौखिक सामग्री, संग्रह आ चित्रकथा-समीक्षाक प्रश्न साहित्यिक विमर्शमे उपस्थित देखाइत अछि। एतऽ केवल अभिलेखीय शीर्षक, लेखक, अङ्क आ तिथि प्रमाणित अछि; बिना मूल आलेखक अलग पाठ-परीक्षण हुनकर विशिष्ट तर्क उद्धृत कएल नहि गेल अछि।

पछिला विकासमे बाल-साहित्य केवल नैतिक कथा धरि सीमित नहि रहल अछि। विदेहक सूचीमे जगदीश प्रसाद मण्डलक बाल-उपन्यास आ प्रेरक विहनि कथा, नीता झाक बाल-लघुकथा आ सचित्र वैज्ञानिक-समाजपरक रचना, योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क विज्ञानक बतकही, गजेन्द्र ठाकुरक बाल/किशोर उपन्यास, नाटक आ शिशु-किशोर गतिविधिक उल्लेख उपलब्ध अछि। २०२६ मे प्रकाशित 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र'मे अनेक बाल-उपन्यासक रस, औचित्य, लोकगाथा, बाल-कर्मशीलता आ दृश्यात्मक कथनक कसौटीक आधारपर समालोचना कएल गेल अछि। ई कृति-केन्द्रित उदाहरण समकालीन शोधक सम्भावना देखबैत अछि, सम्पूर्ण मैथिली बाल-साहित्यक अन्तिम अथवा निष्कर्षात्मक इतिहास नहि।

'स्वर्ण कमल' आ 'याचक के नजि' : उद्देश्य, पाठक आ शिल्प
नन्दक 'स्वर्ण कमल'क विदेह पुस्तक-सूचीमे बाल-उपन्यासक रूपमे उपस्थिति आ 'याचक के नजि'क शब्द-चित्र-नामकरण एक लेखकक दू पाठकीय जगत चिन्हित करैत अछि। बाल-उपन्यासमे कथा-रोमांच, बालकक जिज्ञासा, पात्रक स्पष्ट क्रिया-प्रेरणा आ भाषा-दृश्यात्मकताक विशेष प्रयोजन होइत अछि। 'याचक के नजि'मे श्रम, सत्ता आ

याचनाक जटिल सामाजिक अर्थ-संरचना अधिक महत्त्वपूर्ण अछि; पात्रक प्रश्नोत्तर क्रमशः संस्थागत व्यंग्य बनि जाइत अछि।

समानता कतऽ अछि? दुनू प्रकारक साहित्य सामाजिक संवेदना निर्माण कऽ सकैत अछि। बालकक दृष्टिसँ अन्याय देखब आ प्रौढ़क दृष्टिसँ अन्यायक संस्थागत रूप बुझब — ई दूटा अलग साहित्यिक मार्ग छथि। सामाजिक गरिमा, परिश्रमक सम्मान, कमजोर व्यक्तिक प्रति सहानुभूति आ प्रश्न पूछबाक अधिकार एहि मार्ग सभक साझा मूल्य होय सकैत अछि। मुदा ई साझा मूल्य मात्रक आधारपर विधागत समानता स्थापित नहि होइत।

किशोर पाठ्यक्रम लेल ई शब्द-चित्रक चयनित अंश रूपान्तरित करबाक स्थिति मे वास्तविक बाल-पाठकक अनुभव-संरचना, दृश्य-आधारित प्रस्तुति, आवश्यक शब्दार्थ, स्त्री-पात्रक दृष्टि आ तथ्य-साहित्यक भेद सुनिश्चित करब आवश्यक होएत। मूल पोथीक प्रौढ़ भाषा आ राजनीतिक प्रसंगक आलोचनात्मक कठिनाईकेँ नहि मिटा कऽ, संदर्भक संग प्रस्तुत करब अधिक उत्तरदायी उपाय होएत।

बाल-पाठकक नैतिक शिक्षा आ वयस्क-केन्द्रित उपदेशक अन्तर

शिशु अथवा किशोर साहित्यक समालोचनामे एकटा बुनियादी प्रश्न ई अछि जे बालक स्वयं कथाक अर्थ बनबैत अछि कि वयस्क लेखक ओकरा तैयार उत्तर दैत छथि।

‘याचक के नजि’ पाठकेँ अन्तिम प्रश्न सँ चुनौती दैत अछि, जे प्रश्नोन्मुख शिक्षाक दृष्टिसँ मूल्यवान अछि। तथापि बहुतो खण्डमे पात्र सभक माध्यमसँ विस्तृत वयस्क नैतिक व्याख्या अबैत अछि; ई बाल-साहित्यक संक्षिप्त, दृश्यात्मक आ बाल-केन्द्रित कथनसँ अलग अछि।

विदेहक २०२६ केर बाल-उपन्यास समीक्षाशास्त्र बाल-कर्तृत्व, लोकगाथाक पुनर्रचना, उचित कथ्य-प्रस्तुति आ सामाजिक वर्जनाक आलोचनाकेँ समीक्षा-चर्चाक अङ्ग बनबैत अछि। एहि दृष्टिसँ नन्दक शब्द-चित्र बाल-साहित्य लेल तात्त्विक तुलना प्रदान करैत अछि : बालककेँ केवल ‘गरीबक सहायता कर’ नहि, बल्कि ‘किएक लोक निर्धन रहैत

छथि' सन प्रश्नक दिशा खोलब आवश्यक अछि। एहि विश्लेषणकेँ कृतिक बाल-साहित्यक वर्गीकरण नहि, बाल-साहित्यक नैतिक क्षमता सम्बन्धी तुलनात्मक निष्कर्ष मानल गेल अछि।

रस, व्यंजना आ पाठकीय संलग्नता

करुण रस एहि रचनामे सिधा दीनता देखेबासँ नहि, दीनताक सामाजिक अपमानक अनावरणसँ उपजैत अछि। पाठक जखन समान कृपाभावक दू अलग सामाजिक व्यवहार देखैत छथि तँ करुणा विवेकक रूप लैत अछि। हास्य एतऽ मुख्यतः व्यंग्यात्मक अछि; सामाजिक प्रतिष्ठाक धारणापर प्रश्न कऽ ओ करुणाकेँ तीक्ष्ण करैत अछि। एहि दू भावक संयोजन पोथीक वैचारिक शिल्पक केन्द्र अछि।

व्यंजनाक प्रमुख स्रोत शीर्षकक अनिश्चित सम्बोधन अछि। 'याचक' एक स्थिर सामाजिक श्रेणी नहि रहैत; प्रत्येक नव प्रसंग ओकर अर्थ बदलैत अछि। एहि प्रकार पाठककेँ एक अर्थ देल नहि जाइत, बरु पुरान अर्थक सीमा देखाओल जाइत अछि। भाषिक रूपेँ नकारात्मक प्रश्न कृतिक सभसँ सक्षम प्रतीकात्मक युक्ति अछि।

कथा-पाठक एहि प्रश्नक उत्तर अलग-अलग दि सकैत छथि : एक व्यक्तिक नैतिक कमजोरी? भ्रष्ट संस्था? समाजक प्रतिष्ठा-व्यवस्था? आर्थिक अनिश्चिततासँ जन्मल निर्भरता? साहित्यिक दृष्टिसँ कृतिक मूल्य ई जे सभ प्रश्न एक-दोसरामे फँसल छथि। एतऽ स्पष्ट एकरेखीय नीति-सूत्र परोक्ष सामाजिक द्वन्द्वक स्थान नहि लैत।

निष्कर्ष : देखल भिक्षुक, अनदेखल याचना आ साहित्यक नैतिक दृष्टि

'याचक के नजि'क साहित्यिक उपलब्धि शीर्षकक एकटा प्रश्नकेँ अनेक सामाजिक परिस्थिति मे आजमाइबाक संरचनामे अछि। आरम्भिक भिक्षुक-विमर्श, सुभान भायक जीविका-संघर्ष, सुलेमानक श्रम, दीनूक लघु कारोबार, रेल-प्रशासनक अनुमति, रोजगारक अस्थिरता, राजनैतिक सौदेबाजी, रौनकक पेशागत प्रश्न आ अन्तिम पारिवारिक जटिलता—ई सभ एकहि सामाजिक प्रश्नक भिन्न रूप छथि : जे व्यक्तिक

आवश्यकतापर आनक स्वेच्छाचारक नियन्त्रण अछि, से व्यक्तिक अधिकार कतेक सुरक्षित अछि?

नौ खण्डक स्वतंत्र पाठ-परीक्षणसँ स्पष्ट होइत अछि जे ई मूलतः एकटा विस्तारित, क्रमविकसित शब्द-चित्र अछि—ने बाल-उपन्यास, ने केवल अलग-अलग रेखाचित्रक अनियमित संकलन। ई गद्य अपन लोकलय, सामाजिक व्यंग्य आ पात्रक प्रश्नोत्तरक कारण मूल्यवान अछि; वाक्य-दोहराव, कखनो उपदेशात्मक विस्तार, स्त्री पात्रक सीमित स्वायत्तता आ संस्थागत प्रक्रियाक एकांगी चित्रण एकर आलोचनात्मक सीमा छथि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासक तुलनामे एहि कृतिक महत्त्व सीमारेखा स्पष्ट करबामे अछि। नन्दक ‘स्वर्ण कमल’ सन बालकृतिसँ एकर पाठक-आयु, शिल्प आ सामाजिक विवेचन भिन्न अछि; मुदा कमजोरक गरिमा, प्रश्न करबाक साहस आ श्रमक सम्मान सन मूल्य दुनू साहित्यिक क्षेत्रमे अर्थपूर्ण वार्ता सम्भव करैत अछि। विदेहक अभिलेख साहित्यिक विधा सभक एहि परस्पर सम्बन्धकें देखबाक ऐतिहासिक आधार प्रदान करैत अछि।

अन्ततः एहि पोथीक मूल प्रश्नक समाधान कोनो एक श्रेणीक मनुष्यकें भिखारी घोषित करब नहि अछि। एकर व्यापक अर्थ समाजक नजरि सुधारब अछि : कमजोरक आग्रह अपमानक कारण किएक बनैत अछि आ प्रभावशालीक कृपायाचना सम्मानक पात्र किएक? एहि असुविधाजनक प्रश्नकें जीबैत राखब ‘याचक के नजि’क स्थायी साहित्यिक शक्ति अछि।

पाठ-प्रमाण आ संस्करण-संबन्धी टिप्पणी

(ख) नौ खण्डक मुद्रित आरम्भ क्रमशः पृ. १५, २६, ४३, ५५, ६२, ७६, ९०, १०२ आ १०८ अछि। स्वतंत्र पाठविश्लेषणमे भागक समाप्ति अगिला भागक आरम्भसँ ठीक पूर्व मानल गेल अछि।

(ग) शीर्षकक देवनागरी रूप ‘याचक के नजि’ एहि लेखमे अपनाओल गेल अछि।

प्रकाशकीय रोमन रूप ‘YACH(A)K KE NAI’ नकारवाचक पदक सुनिश्चित अंग्रेजी अर्थ

निर्धारित नहि करैत; प्रसंगानुकूल व्याख्या मूल देवनागरी शीर्षक आ समापनक
आधारपर कएल गेल अछि।

तदपि तर्कक संग मुद्रित पृष्ठ-परास जोड़ल अछि जाहिसँ शोधक फेर मूल छपल प्रति सँ
पंक्ति-जाँच करि सकथि।

१.४१. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — महारानी कैकेयी

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

मिथकक पुनर्पाठ, स्त्री-अभिकर्तृत्व आ नैतिक पुनर्विचार

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'महारानी कैकेयी' रामायणक परिचित दोषारोपणपर आधारित कैकेयी-छविक प्रतिवाद करैत दस खण्डमे विकसित एक प्रवचनात्मक निबन्ध अछि। एहि कृतिमे कैकेयीकेँ लोभी विमाता अथवा राजवंशक विघटनकर्त्रीक स्थानपर दूरदर्शी राजनीतिक चेतना, मातृस्नेह, त्याग आ लोककल्याणक आकांक्षासँ युक्त पात्रक रूपमे स्थापित करबाक प्रयास कएल गेल अछि। निबन्धक मूल तर्क ई अछि जे रामक वनवास महज प्रतिशोध वा पुत्रमोहक परिणाम नहि, अपितु एक जटिल राष्ट्रीय-सांस्कृतिक संकट, रामक भावी कार्य आ पारिवारिक सहमतिक पृष्ठभूमिमे देखल जाए। एहि अध्ययनमे कृतिक दश उपखण्डक क्रमिक विश्लेषण, लेखकक तर्क-प्रक्रिया, शास्त्रीय आख्यान आ उत्तरवर्ती काव्यक उपयोग, चरित्र-रक्षात्मक भाषिक रणनीति तथा वैकल्पिक पाठक प्रमाण-सीमाक परीक्षण कएल गेल अछि। बाल-साहित्यक तुलनात्मक प्रसंगमे निबन्ध आ बाल-उपन्यासक विधागत अन्तर सुरक्षित राखैत मिथकीय पुनर्कथनक शैक्षिक सम्भावना आ नैतिक सरलीकरणक जोखिमक चर्चा कएल गेल अछि। निष्कर्ष ई जे ई रचना मैथिलीक मिथक-पुनर्विचारक साहसिक, मुदा प्रमाण आ बहुवचनात्मकताक प्रश्नसँ मुक्त नहि, हस्तक्षेपक रूपमे पठनीय अछि।

प्रश्नक स्थापना : खलनायिकासँ विमर्शक केन्द्र धरि

रामक वनवासक कथा सुनिते जनस्मृतिमे कैकेयीक नाम दोषारोपणक प्रतीकक रूपमे उभरैत अछि। अधिकांश सहज पुनर्कथनमे राजनीतिक घटना, धार्मिक विधान आ पारिवारिक विडम्बना एक गोट कारणमे समेटि देल जाइत अछि—कैकेयीक वरदान-माँग। एहि सहज कारण-शृंखलाक भीतर हुनकर व्यक्तित्व, संकट-अनुभव आ सम्भावित विवेक विलुप्त भऽ जाइत अछि। नन्द कुमार मिश्र एहि आरोप-परम्पराकेँ चुनौती देबासँ अपन तर्क आरम्भ करैत छथि। हुनकर प्रयोजन केवल पात्रक पक्षमे किछु

सहानुभूति जुटेनाइ नहि; ओ रामायणक नैतिक वितरणकेँ फेरसँ पढ़बाक आग्रह उपस्थित करैत छथि।

एहि आग्रहक साहित्यिक महत्त्व दू स्तरपर देखाइत अछि। पहिल, लेखक प्रसिद्ध आख्यानक ओहि पात्रपर दृष्टि केन्द्रित करैत छथि जिनका बिना मूल घटनाक्रम असम्भव अछि, मुदा जिनकर भीतरी प्रेरणा प्रायः एकरेखीय अर्थमे ग्रहण कएल जाइत अछि। दोसर, ओ कथानकक कारणकेँ व्यक्तिगत दुर्भावनासँ हटाकऽ राजकीय उत्तराधिकार, सैन्य-सांस्कृतिक संकट, मातृधर्म आ लोकमंगलक जटिल सम्बन्धमे राखय चाहैत छथि। एहि रूपमे ‘महारानी कैकेयी’ कथा सुनएबाक स्थानपर कथा पर विचार करएबला निबन्ध बनैत अछि।

एतय एक सावधानी अनिवार्य अछि। रामायणक कोनो एक रूपकेँ सभ रूपक एकमात्र प्रामाणिक पाठ मानि लेब तुलनात्मक अध्ययनक विरुद्ध होएत। लेखक वाल्मीकि, तुलसी तथा उत्तरवर्ती व्याख्यात्मक काव्य-पाठक सहायतासँ अपन कैकेयी-प्रतिमान गढ़ैत छथि; ताहि कारणेँ हुनकर निष्कर्षकेँ स्वतंत्र ऐतिहासिक तथ्य नहि, पाठक भीतर प्रस्तुत एक वैकल्पिक व्याख्यात्मक प्रस्तावक रूपमे जाँचल जाएबाक चाही। एहि विवेकसँ कृतिक उपलब्धि आ सीमा दुनू स्पष्ट होइत अछि।

कृति, विधा आ मूल संरचना

‘महारानी कैकेयी’क उपलब्ध मुद्रित प्रतिमे नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क नाम लेखकक रूपमे अछि। आरम्भिक प्रकाशकीय जानकारीमे दरभंगा क्षेत्रक प्रकाशन-सहयोग आ मुद्रणक उल्लेख अछि; लेखकक समापन-टिप्पणीक तिथि १७ सितम्बर २००८ भेटैत अछि। ई रचनाक लेखन-अवधिक संकेत देइत अछि, मुदा एहि आधारपर पुस्तकक मुद्रण-वर्ष निश्चित करब उचित नहि। मुख्य पाठक मुद्रित पृष्ठ १ सँ ४८ धरि क्रम भेटैत अछि। एहिसँ अलग प्रारम्भिक आवरण, समर्पण, लेखककीय आ अन्तिम परिचय उपस्थित अछि।

पोथीक विधागत पहचान महत्त्वपूर्ण अछि। एहि कृतिमे सतत घटनाक्रमवला बाल-उपन्यासक विन्यास, स्वतन्त्र नाटकीय अङ्क, अथवा संवाद-प्रधान पूर्ण कथा-रूप नहि अछि। प्रमुखतः लेखक अपन पक्ष प्रतिपादित करैत छथि, प्राचीन पद्यांश आ उत्तरवर्ती काव्य-सन्दर्भ प्रस्तुत करैत छथि, आ ओहि सन्दर्भक आधारपर चरित्रक पुनर्मूल्यांकन करैत छथि। विदेहक पोथी-सूची सेहो एकरा ‘प्रवचनात्मक निबन्ध’ कहैत अछि [सन्दर्भ २]। अतएव एकरा मिथक-आधारित आलोचनात्मक/प्रतिपक्षी गद्य-निबन्ध कहल अधिक यथार्थ अछि।

मूल पाठ दसमे विभक्त अछि। पहिल खण्डमे विमाताक सामाजिक छवि, दोसरमे राजनीतिक दूरदर्शिता, तेसरमे उद्देश्य आ त्याग, चारिममे रणनीति, पाँचम आ छठममे क्रमशः कैकेयी आ रामक पारस्परिक स्नेह, सातममे गुप्त मन्त्रणा, आठममे वरदान, नवममे वनवासक तैयारी, आ दसममे दशरथक मृत्युक कारण प्रस्तुत अछि। ई विन्यास आरोपर प्रतिवादसँ आरम्भ होइत अछि, भावनात्मक सम्बन्धक मार्फत पात्रक समर्थन बढ़बैत अछि, आ अन्तमे नीतिगत-ऐतिहासिक दोषारोपणक पुनर्वितरण करैत अछि।

एहि रचनाक आलोचनात्मक महत्त्वक एक विशेष कारण अछि—लेखकक आरम्भिक वक्तव्यमे अनेक रामायण-रूपक उल्लेख आ श्री उमेशक ‘कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व’सँ संवादक संकेत भेटैत अछि। तथापि ओहि सभ उद्धृत ग्रन्थक अलग-अलग संस्करण, पाठभेद आ ऐतिहासिक मान्यता एहि अध्ययनमे स्वतन्त्र रूपसँ जाँचल नहि गेल अछि। मूल निबन्धमे जे ग्रन्थ-नाम आ प्रसंग उपस्थित अछि, ओतबे आधारपर तर्क-पद्धतिक निरीक्षण कएल गेल अछि।

विमाता-विमर्श : सामाजिक पूर्वग्रहक प्रतिपक्ष

पहिल खण्ड—‘सतमायक स्वरूप’ (मुद्रित पृ. १-६)—क तर्क सीधा समाजशास्त्रीय अछि : विमाता होयब अपने-आपमे कठोरता, अवमानना वा अन्यायक पर्याय नहि। लेखक दैनिक सामाजिक मान्यता आ परम्परागत दोष-रूपकक प्रश्न उठबैत छथि। कैकेयीपर लगाओल दोषकँ ओ प्रथम दृष्ट्या कुटुम्बक घटना नहि, जनसमाज द्वारा

निर्मित रूढ़ छवि मानि पुछैत छथि। ई आरम्भ पाठकसँ अपन सहज नैतिक निर्णय रोकबाक आग्रह करैत अछि।

एहि खण्डमे ‘दोषक पूर्वधारणा’ आ ‘व्यक्तिक वास्तविक कर्म’क बीच अन्तरक रूपरेखा अछि। कैकेयीकेँ पूर्वनिर्धारित अपराधिनी मानिकऽ जखन पाठक वनवासक प्रसंगमे प्रवेश करैत अछि, तखन हुनकर सभ क्रियाक अर्थ पहिले सँ निश्चित भऽ जाइत अछि। लेखक ओहि पाठकीय सुविधा केँ अस्थिर करैत छथि। एहि परिवर्तनक बल तर्कक कथ्य मात्रमे नहि, कथाक प्रवेशद्वार बदलि देबामे अछि : पहिले जे पात्र न्यायाधीशक कठघरामे छल, से आब अपन विरुद्ध निर्णयक न्यायसंगततापर प्रश्न करबाक अवसर पबैत अछि।

मुदा एहि सामर्थ्यक संग सीमा सेहो अछि। कोनो सामूहिक पूर्वग्रहक निरसनसँ व्यक्तिक प्रत्येक निर्णय स्वतः निर्दोष सिद्ध नहि भऽ जाइत अछि। विमाताकेँ बिना सुनने दोषी मानब अन्याय अछि; मुदा प्रतिकूल तथ्य उपस्थित होएबापर हुनकर क्रियाक आलोचना सेहो सम्भव रहबाक चाही। प्रथम खण्डसँ ही लेखकक बचाव-प्रवृत्ति एतेक बलवान अछि जे पाठककेँ सम्भावित वैकल्पिक अभिप्राय देखबाक कम स्थान भेटैत अछि।

दश उपखण्डक पृथक पाठविश्लेषण

राजनीतिक दूरदर्शिता : उत्तराधिकारसँ व्यापक लोकहित धरि

दोसर खण्ड (मुद्रित पृ. ७-१२) राजकाजक विवेक आ प्रबन्धनकेँ स्त्री-पात्रक पक्षमे आनि ठाढ़ करैत अछि। कैकेयी केवल अन्तःपुरमे सीमित नहि छथि; हुनका दृष्टिमे उत्तराधिकार, सैन्य-सुरक्षा आ सामाजिक संरक्षणक प्रश्न एकसाथ आबैत अछि—एहन लेखकक प्रस्तुति अछि। रामक वनगमनकेँ व्यापक राक्षसी अत्याचार-विरोधी अभियानक तैयारीक रूपमे पढ़ल जाइत अछि। ई विचार जँ तर्कक रूपमे स्वीकार कएल जाए तँ वनवासक दुर्भाग्य एक योजित ऐतिहासिक मोड़क अर्थ धारण करैत अछि।

समालोचनात्मक दृष्टिसँ एहि उपखण्डक मूल कमजोरी प्रमाण-स्तरक मिश्रण अछि। रामायणक कथानकमे उपलब्ध घटना आ लेखक द्वारा ओहि घटनाक पहिने कल्पित राजनीतिक मंशा, दूनू समान स्तरक साक्ष्य नहि। पाठमे जेतय रावणक अत्याचार वा राजधर्मक प्रसंग अछि, ओतय राजकीय संकटक सन्दर्भ तर्कसंगत भऽ सकैत अछि; मुदा एतएसँ कैकेयी द्वारा पूर्वनियोजित सम्पूर्ण रणनीतिक निश्चितता स्वतः निष्पन्न नहि होइत अछि। एहि भेदकेँ रेखांकित करबाक बदला लेखक कतेको ठाम सम्भावनाकेँ निष्कर्षक स्वर देइत छथि।

उद्देश्य आ त्याग : नायकत्वक नैतिक उलटफेर

तेसर खण्ड (मुद्रित पृ. १३-१६) कैकेयीक मानसिकता आ निर्णयकेँ ‘रामक शुभ’ आ ‘व्यापक समाजक रक्षा’क संग जोड़ैत अछि। एतय त्यागक रूपक विशेष प्रभावी अछि : जे स्त्री अपमानित होएबाक आशंका बुझैत छथि, मुदा लोकमंगल लेल से स्वीकार करैत छथि, से केवल क्रियाकर्त्री नहि, आत्मबलिदानी पात्र बनैत छथि। लेखकक तर्क-विस्तारमे कैकेयी अपन यशक बदला रामक भविष्यक पथ चुनैत छथि।

ई पाठ करुणा उत्पन्न करैत अछि, किन्तु एक आलोचनात्मक प्रश्न उपस्थित करैत अछि : त्यागक सत्यता कथासँ सिद्ध होइत अछि अथवा त्याग पहिने सँ मानि लेल जाए रहल अछि? यदि समस्त विवादास्पद आचरणकेँ परोक्ष परोपकारक साक्ष्य मानि लेल जाए, तँ कथात्मक परीक्षणक स्थान बचैत नहि। निबन्धक प्रेरक शक्ति एहि नायकत्व-उलटफेरमे अछि, आ आलोचनात्मक जोखिम सेहो एतहि अछि।

कैकेयीक रणनीति : साधन आ साध्यक नैतिक जटिलता

चारिम खण्ड (मुद्रित पृ. १७-२१) उद्देश्यक चर्चा सँ अगिला चरण पर जाइत अछि : उद्देश्य धरि पहुँचबाक तरकीब। लेखक संकेत करैत छथि जे रामक राजसिंहासनसँ अलग भेनाइ हुनकर भावी लोकहितकारी संघर्ष लेल आवश्यक बनल। राजकीय पद अथवा पारिवारिक सुविधा सँ परे तपस्वी-जैसन जीवनक उपयोगिताकेँ ओ रणनीतिक तर्कमे

बदलैत छथि। एहि खण्डमे कैकेयी अपन निर्णयक परिणाम सहबाक क्षमता रखनिहार राजनीतिक पात्र बनैत छथि।

एहि विवेचनक नैतिक कसौटी दू प्रकारक अछि—मूल्यपरिणाम आ प्रक्रिया। यदि लोकहित उद्देश्य श्रेष्ठ अछि, तखनो निर्णयक प्रक्रिया पारदर्शी छल कि नहि, राम आ दशरथक सम्मति कोन रूपमे प्राप्त छल, प्रजाक सम्मति वा अधिकारक प्रश्न कतय अछि—एहि सभ प्रश्नक उत्तर आवश्यक अछि। लेखक मुख्यतः भविष्यक फलपर बल देइत छथि। परिणामवाद आ कर्तव्यबोधक ई तनाव निबन्धकें पढ़बाक एक उपजाऊ आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करैत अछि।

रामक प्रति कैकेयीक स्नेह : मातृत्वक पुनर्परिभाषा

पाँचम खण्ड (मुद्रित पृ. २२–२४) स्नेहक प्रमाण जुटबैत कैकेयीकें केवल भरतक पक्षधर माता मानबाक रूढ़िक विरोध करैत अछि। रामक प्रति हुनकर सम्मान आ अपनत्वकें लेखक अनेक रामकथात्मक पद्य-प्रसंगक सहायतासँ उभारैत छथि। एहि पाठमे स्त्रीक मातृत्व जैविक पुत्रक सीमासँ बाहर प्रसारित अछि। बहुपत्नी राजपरिवारक भीतरी सम्बन्धकें वैर-संघर्षक सीमासँ मुक्त करब एहि उपखण्डक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

मुदा मातृत्वक प्रतिष्ठा जखन कैकेयीक निर्दोषताक प्रमुख आधार बनैत अछि, तखन स्त्रीक स्वायत्त राजनीतिक इच्छा फेर मातृ-पहिचानक भीतर समा सकैत अछि। कैकेयी एक स्वतंत्र विचारशील स्त्रीक रूपमे जितबा चाहैत छथि, ओतहि विवेचन बारम्बार हुनकर मातृधर्मक पवित्रताक आश्रय लैत अछि। एही द्वन्द्वमे निबन्धक स्त्री-विमर्शात्मक शक्ति आ सीमा दूनू निहित अछि।

रामक स्नेह : प्रतिपक्षीक साक्ष्यक उपयोग

छठम खण्ड (मुद्रित पृ. २५–२९) सम्बन्धक दोसर पक्ष खोलैत अछि। लेखकक प्रस्तुति अनुसार राम कैकेयीकें आदर, ममता आ विश्वाससँ देखैत छथि; अर्थात् कैकेयीकें दोषी सिद्ध करबाक सामान्य पाठक-मानसक समक्ष रामक अपन व्यवहार एक प्रत्युत्तर बनैत

अछि। यदि प्रत्यक्ष प्रभावित पात्र स्वयं कतेको प्रसंगमे करुणा, सम्मान आ संयम रखैत छथि, तँ पाठक द्वारा सम्पूर्ण नैतिक घृणाक औचित्य सहज नहि रहि जाइत अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ ई प्रयुक्ति समर्थ अछि, कारण एक पात्रक मूल्यांकनमे आन पात्रक प्रतिक्रिया महत्त्वपूर्ण संकेत होइत अछि। तथापि रामक क्षमाशीलता, आज्ञापालन अथवा आदरक अर्थ अनिवार्यतः कैकेयीक प्रत्येक निर्णयक समर्थन नहि। स्नेहक प्रमाण आ राजनीतिक निर्णयक वैधता—ई दू पृथक प्रश्न अछि। एहि भेदसँ पाठ करुणामय सेहो रहि सकैत अछि आ विवेचनात्मक सेहो।

गुप्त मन्त्रणा : कथात्मक रिक्त स्थानक कल्पनात्मक पूर्ति

सातम खण्ड (मुद्रित पृ. ३०-३६) रचनाक तर्करचनामे निर्णायक अछि। कैकेयी आ रामक बीच पूर्व-सहमति वा गुप्त समझक सम्भावना लेखकक विस्तृत प्रतिपादनमे आबैत अछि। एतय मिथकीय ज्ञात घटना आ कल्पित आन्तरिक वार्तालापक बीच अन्तर असाधारण महत्त्व धारण करैत अछि। लेखक गुप्त संवादक सम्भावनाक सहारे ई प्रश्न उठबैत छथि जे यदि वनवास केवल शत्रुताक परिणाम छल तँ रामक गरिमा, संकल्प आ स्वीकारभावकेँ कोना बूझल जाए।

सातम खण्ड एक प्रकारक अपूर्व-कथन निर्मित करैत अछि : मूल कथामे जे प्रसंग पर्याप्त स्पष्ट नहि, ओहि रिक्त स्थानमे उद्देश्यपूर्ण बैठक अथवा गोपनीय योजना कल्पित होइत अछि। मिथक-रचना वा आधुनिक पुनर्कथनक लेल ई वैध साहित्यिक युक्ति भऽ सकैत अछि। मुदा ऐतिहासिक/पाठालोचनात्मक प्रमाणक रूपमे एकरा प्रयोग करए काल लेखककेँ बताबए पड़त जे अनुमान कतेक दूर धरि अछि आ प्रत्यक्ष साक्ष्य कतय आरम्भ होइत अछि। एहि सीमारेखाक धुँधलापन निबन्धक सभसँ महत्त्वपूर्ण प्रमाणगत समस्या अछि।

वरदान : निजी माँगक सार्वजनिक अर्थ

आठम खण्ड (मुद्रित पृ. ३७-४०) दशरथ द्वारा दत्त वरदानक प्रसंगकेँ फेरसँ अर्थबद्ध करैत अछि। प्रचलित नैतिक कथा एहि माँगमे व्यक्तिगत स्वार्थ देखैत अछि; लेखक ओकरा

एक कठिन सार्वजनिक दायित्व-निर्वाहक रूपमे ग्रहण करैत छथि। एतय शाब्दिक अर्थ—भरतक राज्याभिषेक आ रामक वनवास—आ कथित परोक्ष उद्देश्य—रामक कार्यसिद्धि—क बीच अर्थक दूरी निबन्धक केन्द्र बनैत अछि।

एहि दूरीक साहित्यिक सौन्दर्य अछि : एके कार्य दुष्कर्म वा त्याग, दू भिन्न अर्थ धारण कऽ सकैत अछि। मुदा ओहि कारणेँ नैतिक परीक्षणक आवश्यकता आरो बढ़ैत अछि। वरदानक अनुबन्ध, राजसत्ता, पारिवारिक न्याय आ श्रेय-वितरण सभकेँ एकसाथ विवेचित करए बिना निष्कर्ष एकपक्षीय रहबाक आशंका अछि। निबन्ध ई प्रश्न उठबैत अछि, मुदा ओहि जटिलताक सभ पक्ष समान विस्तारसँ नहि खोलैत अछि।

वनवासक तैयारी : दुःखक भीतर उद्देश्यक रचना

नवम खण्ड (मुद्रित पृ. ४१–४५) रामक आगामी यात्राक अर्थपर बल देइत अछि। वनगमनकेँ कष्टकारी पारिवारिक दण्डक रूपमे मात्र नहि, युगीन संकटसँ जूझबाक आवश्यक तैयारीक रूपमे बुझाओल गेल अछि। लेखकक वर्णनमे कैकेयी दुखद परिणामक तत्काल बोझ स्वीकार करैत छथि, जखनकि राम व्यापक कर्तव्य निर्वाह लेल अग्रसर छथि। एहि व्याख्यामे दुःख अर्थहीन नहि रहैत; ओ उद्देश्यक अभिन्न अङ्ग बनि जाइत अछि।

पाठक-अनुभवक दृष्टिसँ ई अत्यन्त प्रेरक संरचना अछि, विशेषतः जखन कथाक प्रत्येक कष्ट आगाँ आबयबला नैतिक विजयक प्रस्तावना बनैत अछि। तथापि वनवासक वास्तविक पीड़ा, सीताक निर्णय, लक्ष्मणक स्थिति, अयोध्याक जनजीवन आ दशरथक असहायता केँ केवल पूर्वनियत योजना घोषित कए देलासँ ओहि पात्र सभक स्वतन्त्र अनुभव कम दिखाई पड़ैत अछि। उद्देश्यक ई सर्वव्यापक पाठ बहुकेन्द्रीय रामायणकेँ एक केन्द्रमे बाँधि सकैत अछि।

दशरथक मृत्युक कारण : दोषारोपणक पुनर्वितरण

दसम खण्ड (मुद्रित पृ. ४६–४८) सम्पूर्ण निबन्धक अंतिम प्रत्युत्तर अछि। दशरथक मृत्यु लेल कैकेयीकेँ सरल कारण मानबाक बदला लेखक पुरान श्रवणकुमार-प्रसंग, पितृशाप,

विरह आ राजकीय विडम्बनाक सम्बन्ध प्रस्तुत करैत छथि। एहि निष्कर्षमे प्रचलित आरोपक प्रतिकारक सर्वाधिक तीक्ष्ण रूप अछि : घटनाक कारण-वृत्त कैकेयीक तात्कालिक आग्रहसँ बहुत पाछाँ, दशरथक अपन कर्ममे पहुँचैत अछि।

ई पुनर्वितरण रामकथाक नैतिक स्मृति पर प्रश्न उठबैत अछि। मुदा कारणक बहुलता स्वीकार करब आवश्यक अछि। शापक आख्यान, दशरथक मनोदैहिक शोक, वरदानक परिणति आ राजपरिवारक संकट अलग-अलग व्याख्यात्मक स्तरक घटना छथि। कैकेयी एकमात्र दोषी नहि होएबाक तर्क उचित भऽ सकैत अछि; किन्तु हुनका समस्त कारण-संबन्धसँ मुक्त करबाक निष्कर्षक लेल अपेक्षाकृत कठोर तर्क चाही। निबन्धक अन्तिम प्रभाव सहानुभूतिपूर्ण अछि; ओकर प्रमाणगत अन्तिमता खुलल प्रश्न रहैत अछि।

आलोचनात्मक सिद्धान्त : प्रमाण, अनुमान आ पुनर्कल्पना

नन्द कुमार मिश्रक कृतिक मूल्यांकन केवल 'कैकेयी नीक छलि कि खराब' एहि द्विपदी प्रश्नपर सीमित नहि राखल जाए। अधिक उपयोगी प्रश्न अछि—कथात्मक प्रमाणसँ कोन प्रकारक ज्ञान प्राप्त भऽ रहल अछि? यदि मूल काव्यक कोनो प्रसंगमे रामक प्रति कैकेयीक स्नेहक संकेत भेटैत अछि, तँ ओहि सँ स्नेहक निष्कर्ष सम्भव अछि। यदि लेखक अगिला चरणमे मानि लैत छथि जे रामक वनवासक गुप्त षड्योजना पहिने सँ स्वीकृत छल, तँ ओ अनुमानक क्षेत्रमे प्रवेश करैत छथि। दुनू कथन समान प्रमाण-स्तरक नहि।

नव्य-न्यायक विवेचन-भाषा उधार लिअ तँ 'प्रमाण' आ 'अर्थापत्ति' अथवा 'अनुमान'क सीमाकेँ चिन्हित करब जरूरी अछि। प्रमाण देखबैत अछि जे कोन पाठिय अंश निश्चित अर्थमे उपस्थित अछि; अनुमान ओहि आधारपर नवीन सम्बन्धक प्रस्ताव करैत अछि; कल्पनात्मक पुनर्कथन ओहि सम्भावनाकेँ कलात्मक रचना बना सकैत अछि। निबन्ध तीसू क्रियाकेँ सक्रिय करैत अछि, किन्तु स्पष्ट पृथक्करण नहि करैत। शोध-पाठकक लेल ई अंतर कृतिक गुण आ त्रुटि बुझबाक कुंजी अछि।

इंटरटेक्स्टुआलिटी अर्थात् अन्तरपाठीयता एहि कृतिक दोसर महत्त्वपूर्ण आधार अछि। वाल्मीकि-प्रसंग, रामचरितमानस, आधुनिक 'कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व' आ अन्य रामायण-परम्पराक सन्दर्भ एकहि नैतिक उद्देश्यक पक्षमे जुटैत अछि। एहि संवादक बल ई अछि जे अलग-अलग कालक स्वर एक उपेक्षित पात्रक पक्षमे बोलैत प्रतीत होइत अछि। कमजोरी ई अछि जे सभ संदर्भक काल, विधा, स्रोत-संस्करण आ आशयकें समान स्तरपर राखि देलासँ मूल पाठ आ आधुनिक काव्यक प्रमाण-भेद अस्पष्ट भऽ सकैत अछि।

भारतीय काव्यचिन्तनक दृष्टिसँ करुण आ वीर भावक समवेत प्रभाव कृतिमे प्रमुख अछि। कैकेयी अपन निन्दा सहन करैत छथि—ई करुण पक्ष; ओ लोकमंगल लेल कठिन निर्णय लेलथि—ई वीरत्वक प्रस्ताव। तथापि रचनामे रसोत्पत्ति सँ अधिक युक्ति-प्रसंग आ पक्षसमर्थन चलैत अछि। ताहि कारणेँ एकरा पूर्ण काव्यात्मक पुनर्कथनक बदला व्याख्यात्मक प्रवचन कहब अधिक उचित अछि।

स्त्री-दृष्टि : पुनर्प्रतिष्ठा आ ओकर अन्तर्विरोध

कैकेयीकें बुद्धिसम्पन्न, साहसी आ दूरदर्शी राजनीतिक व्यक्तित्वक रूपमे पुनः केन्द्रमे अनब एक सार्थक स्त्री-विमर्शात्मक घटना अछि। ई उलटफेर प्रश्न करैत अछि जे ऐतिहासिक स्मृतिमे स्त्रीक सक्रियता कें किन कतेको बेर स्वार्थ, छल आ विनाशक शब्दमे प्रस्तुत कएल जाइत अछि।

मुदा नारीक मुक्ति केवल निर्दोष माताक प्रतिष्ठा धरि सीमित नहि। कैकेयी जँ सचमुच राजनीतिक व्यक्तित्व छथि, तँ हुनकर निर्णयसे असहमत होएबाक अधिकार सेहो पाठकक रहत। स्त्रीक स्वतन्त्रता मतलब हुनका आलोचनासँ ऊपर राखब नहि, बरु हुनकर राजनीतिक तर्क, साधन आ परिणाम कें पुरुष पात्र सभक समान कसौटीपर जाँचब अछि। निबन्धक बचाव-स्वर एकहि बेर कैकेयीकें प्रबल करैत अछि आ हुनकर सम्भावित अन्तर्विरोध कम करैत अछि।

एहि रचनामे मंथरा, कौसल्या, सीता आ अयोध्याक आन स्त्री-अनुभवक स्थान अपेक्षाकृत गौण देखाइत अछि। कैकेयीकेँ केन्द्र देब रचनाक वैध चुनाव अछि; मुदा स्त्री-इतिहासक बहुस्वरता लेल आन स्त्रीक दृष्टिकोण संग संवाद उपयोगी होइत। केवल निन्दित रानीकेँ उच्च नैतिक नायिका बना देब स्त्री-विमर्शक अन्तिम लक्ष्य नहि होएबाक चाही। निन्दित-पवित्रक द्वन्द्वसँ बाहर पात्रक जटिल मानवीयता बचेनाइ आरो आवश्यक अछि।

भाषा, विन्यास आ प्रवचनक कलात्मकता

गद्यक मूल स्वर तर्कात्मक आ सम्बोधनधर्मी अछि। लेखक प्रश्न उठबैत छथि, प्रचलित धारणाक पुनरुक्ति करैत छथि, तकर विरोधमे उद्धृत पद्य वा प्रसंग अनैत छथि, आ फेर अपन निष्कर्ष निर्दिष्ट करैत छथि। ई क्रम पाठककेँ संग लऽ चलबाक प्रवचनात्मक शैली बनबैत अछि। छोट-छोट उपखण्ड निबन्धक केन्द्रीय प्रस्तावकेँ क्रमिक रूपसँ दृढ़ करैत अछि। सामान्य पाठक लेल एहि शैलीक सुगमता एकटा गुण अछि।

मुदा एके निष्कर्ष बारम्बार, भिन्न-भिन्न उपखण्डमे, बहुत कम नूतन संशयक संग अभिव्यक्त होइत अछि। ई पुनरावृत्ति भावनात्मक पक्षधरता केँ सुदृढ़ करैत अछि, पर बहसक तीव्रता घटा सकैत अछि। पाठक यदि प्रमाणक द्वन्द्व वा प्रतिपक्षीक सशक्त तर्क अपेक्षित करैत छथि तँ हुनका निरन्तर बचावक ध्वनि किछु एकरंगी बुझाइत। प्रतिवादक प्रभाव हेतु प्रतिपक्षकेँ सर्वप्रथम ओकर सबलतम रूपमे उपस्थित करब उपयुक्त होइत।

कृतिक भाषा मैथिलीकेँ आधुनिक नैतिक आ राजनीतिक विवेचनक माध्यम बनबैत अछि। स्थान-स्थानपर संस्कृत पदावली, उत्तर भारतीय हिन्दी-मूलक तर्क-शब्दावली आ रामकथा-सम्बद्ध धार्मिक शब्द एकत्र भेटैत अछि। एकरासँ निबन्ध लोकधार्मिक स्मृति आ शास्त्रीय उद्धरणक बीच संवाद स्थापित करैत अछि। तथापि सम्पादकीय एकरूपता—विरामचिह्न, संस्कृत पाठक मानकीकृत स्रोत-निर्देश, उद्धरण आ व्याख्याकेँ अलग देखायब—यदि आर सुदृढ़ होइत, तँ अकादमिक उपयोगिता बढित।

प्रारम्भिक आवरणमे कैकेयी-पुनर्विचारक विषयसँ प्रत्यक्ष मेल नहि खाइत पौराणिक रथ-चित्र दिखाई देइत अछि। एहिसँ पुस्तकक सांस्कृतिक प्रसंग सूचित होइत अछि, मुदा चरित्रक स्वकीय छवि नहि बनैत। मुद्रित पोथीमे चित्रक प्रयोग अत्यल्प अछि; मुख्य प्रभाव लेखकीय कथन आ शास्त्रीय उद्धरणक टकराहटसँ उत्पन्न होइत अछि। एहि आधारपर कृतिक दृश्य-संयोजन बाल-पुस्तकक सहायक चित्र-कथा संरचनासँ भिन्न अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासक सन्दर्भमे तुलनात्मक विवेचन

‘महारानी कैकेयी’ केँ बाल-साहित्यक इतिहासमे राखए काल प्राथमिक सावधानी विधागत भेद अछि। ई बाल-पाठककेँ लक्ष्य कए लिखल चरित्र-कथा अथवा सचित्र बाल-उपन्यास नहि, अपितु एक परिपक्व पाठकसँ तर्क-वितर्क करएबला निबन्ध अछि। विदेहक ‘शिशु उत्सव’ आ पोथी-सूचीमे नन्द कुमार मिश्रक ‘स्वर्ण कमल’ स्पष्ट रूपेँ बाल-उपन्यासक रूपमे सूचीबद्ध अछि। एहि भेदकेँ मिटाकऽ ‘महारानी कैकेयी’ केँ बाल-उपन्यासक श्रेणीमे गनब साहित्य-इतिहासक त्रुटि होएत।

एहिसँ बाल-अध्ययनक संग कृतिक सम्बन्ध समाप्त नहि भऽ जाइत अछि। मिथकीय कथाक पुनर्व्याख्या नेना आ किशोरक नैतिक बोधमे एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक प्रश्न उपस्थित करैत अछि : कथा-पात्रकेँ जखन समाज दोषी कहैत अछि, तँ की पाठक बिना प्रमाण निर्णय देथि? एहि निबन्धक आरम्भिक विमाता-विमर्श पूर्वग्रह, न्याय आ दृष्टिकोणक परिवर्तन पर चर्चा खोलि सकैत अछि। विशेषतः किशोर-पाठक लेल ई विषय उपयोगी अछि, मुदा मूल तर्कात्मक गद्यकेँ सहज पठनीय बनएबाक लेल स्वतंत्र रूपान्तरण आवश्यक होएत।

विदेहक उपलब्ध बाल-साहित्य सूची बाल-पाठकक बदलैत अभिरुचिक एक प्रमाणित संग्रह-चित्र प्रस्तुत करैत अछि : प्रीति ठाकुरक ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ (२००८), ‘मिथिलाक लोकदेवता’ (२०१०) आ ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’ (२०१२) चित्रकथा आ सांस्कृतिक परम्पराकेँ बाल-अनुकूल माध्यममे राखैत अछि; योगेन्द्र पाठक

‘वियोगी’क ‘विज्ञानक बतकही’, ‘रोबोट’ आ ‘हमर गाम’ विज्ञान, कल्पना आ सामाजिक अनुभवक क्षेत्र खोलैत अछि; नन्द कुमार मिश्रक ‘स्वर्ण कमल’क संग जगदानन्द झा ‘मनु’क ‘चोनहा’ तथा जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘नै धाड़ैए’ बाल-उपन्यासक प्रवाह प्रदर्शित करैत अछि। एहि उदाहरणसभकेँ सम्पूर्ण मैथिली बाल-साहित्यक कालानुक्रमिक सर्वेक्षण नहि, विदेह-संग्रहमे सत्यापित चुनल कृतिसभक तुलनात्मक मानचित्र मानल गेल अछि।

तुलनासँ तीन प्रकारक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। पहिल—चित्रकथामे दृश्य, प्रसंग आ संवादक माध्यमसँ अर्थ क्रमशः बनैत अछि, जखनकि ‘महारानी कैकेयी’मे पूर्वज्ञात कथा पर विचारक गहन तर्क-विस्तार प्रमुख अछि। दोसर—बाल-विज्ञान आ साहसिक आख्यानमे खोज, प्रश्न आ नूतन अनुभव कथात्मक गति देइत अछि, जबकि एहि कृतिमे एक निश्चित पुनर्व्याख्याक समर्थन कथा-विकासपर भारी अछि। तेसर—बाल-साहित्यक नैतिक उद्देश्य पाठककेँ अपना निर्णय लेल जागरूक करब अछि; एहि निबन्धक मूल प्रवृत्ति कैकेयीक पक्षमे पाठककेँ दृढ़ विश्वास प्रदान करब अछि। किशोर संस्करणमे यदि विरोधी पाठ, स्वतन्त्र प्रश्न आ विकल्प खुला राखल जाए तँ एकर समालोचनात्मक उपयोगिता बढ़ि सकैत अछि।

इतिहासक दीर्घ परिप्रेक्ष्य हेतु ‘विदेह’क समानान्तर इतिहास (भाग १३) आ उपलब्ध ‘शिशु उत्सव’ संग्रह देखल जा सकैत अछि। एहि डिजिटल अभिलेखमे लोककथा, सचित्र पुस्तक, कविता, विज्ञान-कल्पना आ किशोर उपन्यासक विविध विधा एकसाथ उपस्थित अछि। एहि साक्ष्यसँ बाल-साहित्यक वर्तमान डिजिटल विस्तारक चर्चा समर्थित होइत अछि, मुदा सम्पूर्ण बीसम शताब्दीक दशकवार सृजन-सूचीक दावा एकर आधारपर नहि कएल गेल अछि। एक प्रमाणित कालानुक्रमिक इतिहास लेल स्वतंत्र प्रकाशन-सूची, प्रथम संस्करण आ समकालीन समीक्षा-जर्नलक विशद परीक्षण अलग सँ अपेक्षित अछि।

पूर्ववर्ती आलोचनासँ संवाद : विधा आ पृष्ठ-संख्याक प्रश्न

ई अन्तर साधारण तथ्य-संशोधन सँ बेसी महत्त्व रखैत अछि। यदि कथात्मक संवादक कल्पनाक कारण विधा 'नाटक' घोषित भऽ जाइत अछि तँ प्रवचनक मुख्य तर्क-शिल्प ओझराइत अछि। शोध-पद्धति ई माँग करैत अछि जे बाहरी समग्र समीक्षा उपयोगी होइतहुँ प्राथमिक ग्रन्थक प्रत्यक्ष संरचनाक स्थाने नहि लेल जाए। नन्दक कृतिक उचित प्रतिष्ठा एहि संशोधित विधाबोधपर निर्भर अछि।

पूर्ववर्ती आलोचना कैकेयीकेँ राजनीतिक बुद्धि आ आत्मबलिदानक प्रतिपक्षी चरित्रक रूपमे देखैत अछि। वर्तमान अध्ययन ओहि उपलब्धि स्वीकार करैत अछि, मुदा ई सवाल जोड़ैत अछि जे एक विपरीत नैतिक निष्कर्ष स्थापित करबाक प्रयास कतय वैचारिक पुनर्पाठ अछि आ कतय साक्ष्यहीन निरपेक्षीकरण। एहन प्रश्नक संग कृतिक मूल्यांकन करब ओकर साहित्यिक प्रभाव घटबैत नहि; उलटे, ओकर वास्तविक आलोचनात्मक शक्ति स्पष्ट करैत अछि।

पृष्ठ-सूचक प्रमाण-मानचित्र आ उद्धरणक पाठ-शुद्धता

ई उद्धरणक अभाव नहि छिपाएब, बल्कि पाठालोचनाक एक आवश्यक अनुशासन अछि : शोध-पत्रमे एक अक्षरक अनिश्चितता सेहो मूल कवि वा लेखकक नामपर नहि थोपल जाए।

निष्कर्ष : प्रतिपाठक उपलब्धि आ साक्ष्यक मर्यादा

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'महारानी कैकेयी' मैथिलीमे रामायणक एक निन्दित स्त्री-पात्रक पक्षमे व्यवस्थित तर्क प्रस्तुत करबाक उल्लेखनीय प्रयत्न अछि। कृतिक दस उपखण्ड दोषक सामाजिक रूढ़ि खण्डित करैत राजनीतिक विवेक, लोकमंगल, मातृस्नेह, गुप्त सहमति, वरदानक पुनःअर्थवत्ता आ दशरथक मृत्युकेँ बहुकारणीय परिप्रेक्ष्यमे स्थापित करैत छथि। एहि क्रममे लेखक पाठककेँ परिचित कथाक अनदेखल कोण सँ सोचबाक अवसर प्रदान करैत छथि।

एकर साहित्यिक उपलब्धि न्यायबोधक विस्तार अछि। पात्रक चर्चित अपराधक पहिने ओकर दृष्टिकोण सुनबाक आग्रह अपने-आपमे आलोचनात्मक संस्कार अछि। एकर सामाजिक उपलब्धि विमाता आ स्त्री-अभिकर्तृत्वक सम्बन्धमे पूर्वाग्रहक प्रतिरोध अछि। एकर भाषिक उपलब्धि मैथिली गद्यकें मिथक-विवेचनक विवादपूर्ण क्षेत्रमे सक्रिय करब अछि। एही सभ कारणें ई निबन्ध स्वतंत्र अनुसन्धानक पात्र अछि।

किन्तु मूल्यांकनक अन्तिम वाक्य निबन्धक पक्षधरता नहि, ओकर प्रश्नजागरण होएबाक चाही। कैकेयीक सम्भावित लोकहितैषी प्रेरणा एक व्याख्या अछि; ओकर सम्पूर्ण प्रामाणिकता अलग साक्ष्यसँ सिद्ध होएबाक विषय अछि। लेखक जखन कल्पनात्मक पुनर्संयोजन, शास्त्रीय उद्धरण आ ऐतिहासिक-सांस्कृतिक सिद्धान्तकें निरन्तर जोड़ैत छथि, तखन विधागत आ प्रमाणगत सीमारेखा अनेक ठाम धुँधला भऽ जाइत अछि। एहि सीमा सहित पढ़ल गेल ‘महारानी कैकेयी’ न दोषमुक्तिक अन्तिम न्यायादेश अछि, न परम्पराक सरल खण्डन; ई प्रतिष्ठित कथाक नैतिक सहजताकें चुनौती दएबला, बहसक निमित्त प्रदान करएबला एक महत्त्वपूर्ण मैथिली गद्यकृति अछि।

चारिम खण्ड

गीतक लोकधारा आ बाल-कल्पना

काव्य सरिता • स्वर्ण-कमल

१.४२. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — काव्य सरिता

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

लोकधुन, सामाजिक विवेक आ काव्य-रूपक बहुधारात्मकता

आलोचनात्मक शोध-निबन्ध | मैथिली भाषा आ साहित्य

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'काव्य सरिता' (२०१९) केँ एकल भावधाराक कविता-पोथी मानि पढ़लासँ ओकर रचनात्मक बनावट ओझराएत। संग्रहमे वन्दना, देवीगीत, भजन, नचारी, कजरी, चैती, लोकधुन-आश्रित रचना, सामाजिक सुधारक गीत, राजनीतिक व्यंग्य, पारिवारिक संवेदना, ग्राम-स्मृति, मातृभाषा-चेतना आ देशप्रेमक सहअस्तित्व अछि। बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर सम्बन्ध सेहो विचाराधीन अछि; मुदा संग्रहकेँ बाल-साहित्यक ग्रन्थ घोषित करबाक बदला बाल-पाठकक लेल उपयुक्त किछु अंश आ प्रौढ़ पाठकक लेल अभिप्रेत रचनामे जरूरी अन्तर राखल गेल अछि।

काव्यक विषयविस्तार आ बनावट

'काव्य सरिता'क अध्ययनमे आरम्भे ई स्पष्ट रहबाक चाही जे लेखक एकर उपशीर्षक 'मैथिली कविता संग्रह' रखने छथि। प्रकाशकीय विवरणक अनुसार २०१९ ई. मे गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगासँ एकर प्रथम संस्करण प्रकाशित भेल; मूल्य ₹१५० अंकित अछि। पोथीक आरम्भमे समर्पण, अभिनन्दन आ लेखकीय निवेदनक पृष्ठ अछि। मुख्य भागमे क्रमांकित कविता एकसँ एक सय चौंसठ धरि चलैत अछि। ई क्रमशः बदलैत शीर्षक, भाव, छन्द-लय आ प्रसङ्गक मार्फत एक विस्तृत रचनाधार बनबैत अछि। संग्रहक अन्तिम भागमे रचनाकारक संक्षिप्त परिचय ओ कृतिसूची सेहो अछि।

'सरिता' रूपक स्वयं निरन्तर बहबाक संकेत करैत अछि। मुदा एहि प्रवाहकेँ एककहि रसक नदी मानब भूल होएत। कखनो भाव श्रद्धाक अछि, कखनो शोक वा बिछोहक; कतहु सान्निध्यक घरेलू लय छैक तँ कतहु भोगल सामाजिक विसंगतिक विरुद्ध सार्वजनिक आवाज। कवि परम्परागत गीतिक धरातलसँ बहिर्गत भऽ राजनीतिक टीका

धरि पहुँचैत छथि। आलोचनाक प्रश्न तँ ई नहि जे संग्रहमे कोन एकता खोजी, बल्कि ई जे एतेक पृथक स्वर सभ कोन भाषिक आ सांस्कृतिक संसाधनसँ एकठाम होइत अछि।

अध्ययनमे तीन स्तरक प्रमाण अलग राखल गेल अछि : (क) पुस्तकक शीर्षक-पृष्ठ, प्रकाशकीय विवरण, रचनाक क्रमांक, मुद्रित पृष्ठाङ्क आ शीर्षक, (ख) कवितासमूहक विषय-प्रवृत्ति, वाचिक शैली आ विधागत प्रकृति, आ (ग) विदेहक सार्वजनिक बाल-साहित्य तथा मैथिली-साहित्य-विषयक दस्तावेज, जे तुलनात्मक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि। एहि संयमसँ पाठककेँ काल्पनिक उद्घरणक भ्रमसँ बचाओल जा सकैत अछि। जतेक ठाम मुद्रित पृष्ठ देल गेल अछि, से कविता वा कवितासमूहक पहिचान लेल अछि, उद्धृत पङ्क्तिक प्रमाणीकरण लेल नहि।

ई आलोचना पुस्तकमय साहित्यिक निर्णय अछि, मात्र लेखकक प्रशंसा-पत्र नहि। जे ठाम विषयक विस्तारक मूल्य अछि, ओतहि भाषाक उपदेशात्मकता, भावक पुनरुक्ति, लोकधुनक साधारणीकृत प्रयोग, लय-संयमक प्रश्न आ साहित्यिक जटिलताक सम्भावित कमीकेँ सेहो परखल जाएत। पाठमे समाविष्ट लोकगीत आ प्रगीतकेँ एकहि प्रतिमानसँ नापब उचित नहि; सार्वजनिक गीतक सफलता श्रोता-समुदायक ग्रहणशीलतासँ सम्बन्धित रहैत अछि, जखन कि आत्मनिष्ठ कविता बिम्ब, मौन, वक्रता आ बहुअर्थकता माँगैत अछि।

कृतिकारक साहित्यिक क्षेत्र आ संग्रहक आन्तरिक स्थापत्य

‘विदेह’क पोथी-सूचीमे नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क कथा, उपन्यास, शब्दचित्र, संस्मरणात्मक लेखन आ काव्यक अलग-अलग कृतिसभ दर्ज अछि। ‘गामघर’, ‘सुजाता’, ‘गुदरीक लाल’, ‘अनठिया कुकुर’, ‘सुकन्या’, ‘स्वर्ण कमल’ आ ‘काव्य सरिता’क सहउपस्थिति लेखकक विधागत विविधताकेँ स्पष्ट करैत अछि। ताहि सन्दर्भमे ई काव्य-संग्रह अलगावमे नहि, कथात्मक यथार्थ-बोध आ लोकानुभवक संग

सम्पर्कमे पढ़बाक वस्तु अछि। मुदा आन ग्रन्थक कथावस्तु एतऽ कल्पनासँ एहि पोथीपर आरोपित नहि कएल जा सकैत अछि।

पुस्तकक प्रारम्भिक रचना-क्रममे ‘गणेश वन्दना’, ‘सरस्वती वन्दना’, ‘माँ’, ‘देवी गीत’ आदिक बहुलता पवित्र-लोकक वाचिक परिवेश रचैत अछि। एहि पछाति ‘दुलार’, ‘भजन’, ‘नचारी’, ‘कजरी’, ‘चैती’ आ अनेक सामाजिक-विषयक गीत आबैत अछि। मध्यभागमे परिवार नियोजन, साक्षरता, नदी-प्रदूषण, दहेज, राजनीति, गरीबी आ सार्वजनिक आचरणक प्रश्न खुलैत अछि। अन्त्यभागक रचनामे ‘की हम आजाद छी?’, ‘समय’, ‘घूस’, ‘हमर गाम’, ‘राज मिथिला हम लेबे’ आ देशभक्ति-गीत जकाँ विषय आओर प्रखर होइत अछि। एहि क्रमसँ कविक निजी-धार्मिक संस्कारसँ सामाजिक उपस्थितिकेँ जोड़बाक प्रयत्न पढ़ल जा सकैत अछि।

संरचनाक एकटा विशेषता अछि—विधागत शीर्षकक पुनरागमन। ‘माँ’, ‘देवी गीत’, ‘नचारी’, ‘कजरी’ आ ‘गीत’ जकाँ शीर्षक मात्र विषय-निर्देश नहि, गायन-परम्पराक परिचय सेहो अछि। साहित्यिक पुस्तकक पाठमात्र स्वरूपकेँ ई शीर्षक लोकसभाक सम्भावित सामूहिक गायनक दिस खोलैत अछि। एही कारण एहि संग्रहक आलोचनामे केवल आधुनिक मुक्तछन्दक कसौटी लगेनाइ अनुचित; गीतक टेक, तुक, आवृत्ति आ उच्चारणीयताक अलग बोध चाही।

एतऽ एकटा सम्पादकीय सीमा सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि। विषयक आश्रयपर स्पष्ट खण्ड-विभाजन नहि रहला सँ पाठककेँ श्रद्धागीतसँ विडम्बना-गीत वा प्रणयक प्रसङ्गसँ राजनैतिक गान धरि स्वयं मार्ग बनाबय पड़ैत छैक। ई आकस्मिकता नदीक प्रवाहक सहजता सेहो पैदा करैत अछि, मुदा संग्रहक समालोचनात्मक पाठ कठिन बनबैत अछि। भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे विधागत अनुक्रमणिका, शब्दार्थ, गायन-परम्परा आ रचना-कालक जानकारी विशेष उपयोगी होएत।

वन्दना, भक्ति आ मैथिली लोकधर्मिता

प्रारम्भिक गणेश-वन्दना तथा सरस्वती-वन्दनाक स्थान केवल धार्मिक निश्चय नहि, रचनारम्भक सांस्कृतिक विधान सेहो अछि। विद्याकेँ सरस्वतीसँ आ आरम्भकेँ गणेशसँ जोड़बाक पद्धति मिथिलाक लोक-समारोह आ पारम्परिक काव्य-विन्यासमे परिचित अछि। एहि प्रकारक वन्दनामे प्रथम पुरुषक अहम् बहुत बेर गौण भऽ देवी सम्बोधन प्रधान होइत अछि। भावक सार्वजनिकता गीतक सामूहिक पुनरावृत्तिक संभावना बढ़बैत अछि। [१; मुद्रित पृ. ३-५]

‘माँ’ शीर्षकक अन्तर्गत अलग-अलग रचना आ तकर बादक ‘देवी गीत’—एहि दू क्षेत्रकेँ गड्डमड्ड नहि करबाक आवश्यकता अछि। एक दिस जननी-सम्बन्धी वात्सल्य, स्मृति, ममता वा स्नेहक भावभूमि रहि सकैत अछि; दोसर दिस देवीक आवाहन आ अनुष्ठानिक भक्ति। संग्रहमे ई समीपता मातृत्वक सांस्कृतिक प्रतिमा आ देव्यर्थक आध्यात्मिक प्रतिमाकेँ एकटा भाव-परिवारमे अनैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ एकर सम्भावना आ संकट दुनू अछि : स्नेहक ठोस मानवीय अनुभव प्रखर भऽ सकैत अछि, मुदा देव्य आदर्शक अत्यधिक महिमामण्डन वास्तविक स्त्री-अनुभवक विविधताकेँ ढाँकि सकैत अछि। [१; मुद्रित पृ. ६-१९]

‘नचारी’ समूहमे कविक एकटा महत्त्वपूर्ण आश्रय मिथिलाक शैव-गायन परम्परा अछि। नचारीक सांस्कृतिक बल शास्त्रीय विनयसँ बेसी मनुक्खक असहायता, देवताक निकटता, उलाहना, प्रार्थना आ सहज हास्यक बीचक आवाजमे होइत अछि। एहि विधाक सार्थक समीक्षा लेल प्रश्न ई अछि जे कवि परम्पराक टेकक पुनरुत्पादन करैत छथि कि अपन जीवन-अनुभवसँ ओकरा परिवर्तित करैत छथि। एहि संग्रहमे नचारीक बहुलता लेखकक लोकसङ्गीतक अभ्यासकेँ सूचित करैत अछि; साहित्यिक मौलिकताक आकलन मुदा केवल बहुलतासँ नहि, अर्थभेदक बारीक परीक्षणसँ होएत। [१; मुद्रित पृ. २८-३७]

भजन आ हनुमान-वन्दना जकाँ रचनाक संग सामाजिक प्रश्नक सहअस्तित्व एहि पोथीक उल्लेखनीय गुण अछि। भक्ति एतऽ साहित्यिक परिसरकेँ छोड़ि कोनो पूर्ण

निरपेक्ष संसार नहि बनबैत अछि। कविक भाषा श्रद्धा, लोकाचार आ न्याय-विवेकक बीच आवाजाही करैत अछि। भक्ति-रचनाक सीमा ओतय प्रकट होइत अछि जतय उपदेश, विनय आ एके भावक नूतन पर्याय बिम्बात्मक खोजक बदला विस्तार ग्रहण करैत अछि। जतेक ठाम अनुष्ठानिक अभिव्यक्ति रसात्मक उत्कटतामे बदलैत अछि, ओतेक ठाम ई कविता स्वतंत्र काव्य-मूल्य प्राप्त करैत अछि।

कजरी, चैती आ ऋतु-गीत : श्रव्य परम्पराक काव्य-व्याकरण

‘कजरी’ तथा ‘चैती’ शीर्षकक उपस्थिति संकेत करैत अछि जे कवि मैथिली कविता केँ वाचनक संगहि गायनक विधा मानैत छथि। ऋतु-सापेक्ष लोकगीतमे वर्षा, ऋतु-सन्धि, प्रतीक्षा, विरह, श्रृंगार, पथिक, परिवार आ ग्राम-परिसरक अनुभव लोक-स्मृतिक माध्यम बनैत अछि। लिखित पाठमे लोकधुन उपस्थित रहबाक प्रमाण केवल तुकबन्दी नहि; उच्चारणक ताल, टेकक लौटान, छोट पदसमूह आ समूह-गायनक अनुकूल क्रम सेहो देखल जाएबाक चाही। [१; मुद्रित पृ. ४२-४५]

लोकगीतक अनुकरण आ लोकगीतक पुनर्सृजनमे भेद अछि। केवल परिचित शब्द, ऋतु-नाम आ पारम्परिक उपमान जुटाय देलासँ कविता सृजनात्मक नहि भऽ जाइत अछि। पुनर्सृजन तखन होइत अछि जखन पुराने लयमे समसामयिक मनोभाव, बदलैत स्त्री-पुरुष सम्बन्ध वा प्रवासक नव पीढ़ा आवाज पबैत अछि। ‘काव्य सरिता’क गीतात्मक भाग एहि कसौटीपर पढ़बाक आवश्यकता उत्पन्न करैत अछि। संकलनक महत्त्व लोकगीत-परम्परासँ सार्वजनिक सम्बन्ध बनौने रखबामे अछि; एकर चुनौती अलग-अलग पदक कल्पनाशील भिन्नता बनौने रखब अछि।

लोकधर्मी काव्यकेँ आधुनिक पत्रिकाक नितान्त मूक पाठकक लेल लिखल कविता जकाँ पढ़लासँ अर्थक एकटा मूल अंश छुटि जाइत अछि। ‘नचारी’, ‘भजन’, ‘कजरी’ आ ‘चैती’क भाव-सम्प्रेषणमे गायकक देह, श्रमिक-सांस, श्रोता-समुदाय आ अनुष्ठानिक अवसर अर्थनिर्माण करैत अछि। एहि प्रकार ई संग्रह लिखित साहित्य आ प्रदर्शनकारी मौखिक साहित्यक बीच पुलक कार्य करैत अछि। आलोचनात्मक सम्पादनमे धुनक

नाम, अवसर, क्षेत्रीय रूपभेद आ सम्भावित गायन-ताल जोड़ला सँ ई पक्ष अधिक स्पष्ट होएत।

परिवार, स्त्री-अनुभव आ सुधारवादी चेतना

‘परिवार नियोजन’ आ ‘साक्षरता’क निकट उपस्थिति कविक सुधारवादी मानसक साक्ष्य अछि। एहि विषयक कविता बहुधा नीति-प्रचारक गीत बनबाक जोखिम लैत अछि, कारण ओकर उद्देश्य आरम्भे तय रहैत अछि। मुदा साहित्यिक प्रश्न ई अछि जे कवि निर्धारित सन्देशकेँ मनुक्खक अनुभवमे उतारि सकैत छथि कि नहि। परिवार नियोजन पर गीत सामाजिक स्वास्थ्य-चेतनाक परिचायक भऽ सकैत अछि; मुदा परिवारक स्त्री-पुरुषक निर्णयाधिकार, वर्ग-विषमता आ स्थानीय संकोचक प्रस्तुति बिना विचार केवल निर्देश भऽ जायत। एहि समूहकेँ मूल्याङ्कन करैत समय एकर लोक-प्रसारक उपयोगिता आ कल्पनात्मक घनत्व अलग-अलग मापब आवश्यक अछि। [१; मुद्रित पृ. ३८-३९]

‘दहेज’ पर केन्द्रित रचनाक आगमन एकर सामाजिक विवेककेँ ठोस मुद्दा प्रदान करैत अछि। विवाह सम्बन्धी अनुष्ठान, परिवारक प्रतिष्ठा, धनक दबाव आ स्त्रीक गरिमा मिथिलाक सामाजिक आलोचनामे महत्वपूर्ण प्रश्न रहल अछि। शीर्षककेँ सामाजिक बुराइक नामकरण मात्र मानल जाय तँ कविता भाषण बनि सकैत अछि; मुदा पारिवारिक दृश्य, संवाद, अपमान आ प्रतिरोधक सूक्ष्मता प्रवेश पेलापर काव्यिक प्रभाव बढ़ैत अछि। ‘काव्य सरिता’मे दहेज-विरोधक उपस्थिति रचनाकारक सरोकार बतबैत अछि; एकर साहित्यिक शक्ति लोकजीवनक कित्ता पर कतेक विस्तारसँ उभरैत अछि, से पृथक सूक्ष्म पाठक अपेक्षा करैत अछि। [१; मुद्रित पृ. ४८-४९]

मातृत्व, विवाह, घरेलू तनाव आ स्त्रीक सामाजिक स्थिति एक्कहि विषय नहि। एहि विषयसभक विवेचनमे स्त्रीकेँ केवल देवी, माता वा पीड़िता बना देबाक बदला इच्छा, शिक्षा, निर्णय, श्रम आ अधिकारसहित स्वतन्त्र मनुष्यक रूपमे देखब अपेक्षित अछि। संग्रहक आरम्भक देवी-भावना आ मध्यक दहेज-सुधारक स्वरकेँ परस्पर पढ़ला सँ

एकटा उपयोगी अन्तर्विरोध खुलैत अछि : पूजित स्त्रीक प्रतीक आ सामाजिक असुरक्षामे पड़ल स्त्रीक यथार्थ एक-दोसरसँ कतेक दूर अछि? ई अन्तर आलोचनाक स्थल थिक, जे कविक उद्देश्यक सम्मान करैतो स्वतंत्र प्रश्नक रूपमे राखल जायबाक चाही।

बालकक उद्देश्य सँ उपयोगी रचना बनबामे सलाह मात्र पर्याप्त नहि। बच्चा समस्याकें कोना महसूस करैत अछि, ओकर अपन आवाज कोना सुनाइत अछि आ समाधानमे ओकर सहभागिता कतेक अछि—ई सभ बिन्दु जरूरी अछि। एहि कसौटीपर बाल-केन्द्रित गीत आ समाजक लेल लिखल सुधारवादी गीतमे अन्तर स्पष्ट होइत अछि। एही कारण ‘काव्य सरिता’क साक्षरता-गीतकें शिक्षण-संसाधन कहल जा सकैत अछि, मुदा एकरा मात्र एहि आधारपर बाल-कविता घोषित नहि कएल जा सकैत अछि।

राजनीतिक व्यंग्य : सत्ता, धन, छल आ जनसाधारण

संग्रहक मध्य आ उत्तरार्धमे ‘चमचा’, ‘चोर-सिपाही’, ‘प्रधानमन्त्री पर एक कटाक्ष’, ‘वोट’, ‘की हम आजाद छी?’ आ ‘घूस’ जकाँ शीर्षक आलोचनाक एकटा तीक्ष्ण धारा संकेत करैत अछि। ई शीर्षक भक्ति-काव्यक विनम्र प्रार्थनाक स्वर सँ भिन्न अछि। एतऽ कविक आवाज सार्वजनिक जीवनक अनैतिकता पर प्रश्न उठबैत अछि। रचनाक उद्देश्य राजनीतिक नेतृत्वक स्तुतिसँ बेसी सत्ताक दुरुपयोग, चाटुकारिता, सामाजिक धोखाधड़ी आ भ्रष्टाचारक अनुभवकें कथ्य बनायब अछि। [१; मुद्रित पृ. ५०-५३, ६७-७०, ८०, १२६-१३०]

व्यंग्यक साहित्यिक सफलता प्रत्यक्ष आरोपपर निर्भर नहि करैत अछि। व्यंग्य तखन पैघ बनैत अछि जखन ओकर भाषामे विडम्बना, उलटबाँसी, बोलचालक व्यावहारिक रस आ कथ्यक दू स्तर हो। ‘चमचा’ जकाँ शीर्षक लोकबोलीक एक सामाजिक प्रतिरूपकें सक्रिय करैत अछि। ‘वोट’ चुनावी व्यवहारक सामूहिक क्षेत्र दिस संकेत करैत अछि। ‘की हम आजाद छी?’ शीर्षक स्वयं प्रश्नवाचक बनि राष्ट्रक औपचारिक स्वतन्त्रता आ नागरिकक वास्तविक अनुभवक सम्भावित अन्तर खोलैत अछि। एहि स्थानपर

काव्यशिल्पक समीक्षा लेल देखबाक बिन्दु अछि—कवि प्रश्न रचैत छथि कि प्रश्नक उत्तर पहिनहिसँ तय करि दैत छथि।

एहि प्रकारक रचनाक एकटा कलात्मक खतरा समयसापेक्षता अछि। नेता वा पदक तत्कालीन चर्चा बदलि जाइत अछि; मुदा अन्याय, परजीविता, लालच आ भयक संरचना जखन चित्रित होइत अछि तखन कविता अपन समयसँ बाहर सेहो अर्थ राखैत अछि। एतेक विषयभेदक बीच ‘काव्य सरिता’क मूल्य एहि तथ्य पर निर्भर करैत अछि जे सार्वजनिक नैतिकताक आग्रह कतबेक गम्भीर मनुष्य-चित्र गढ़ैत अछि। एकरे संग लोकजीवनक व्यंजना प्रौढ़ पाठककें उपलब्ध होइत अछि, जकरा छोट उमेरक बच्चाक लेल बिना प्रसङ्ग-परिचय सीधे प्रस्तुत करब समीचीन नहि।

सत्ताक आलोचना करत काल राष्ट्र, समुदाय आ व्यक्ति—तीनूकें एक अर्थमे राखब नैतिक भ्रम पैदा करि सकैत अछि। ककरो प्रशासनिक असफलताक समालोचना राष्ट्रद्रोह नहि; आ राष्ट्रप्रेमक घोषणा अपने-आपमे लोकतान्त्रिक सहिष्णुताक प्रमाण नहि। संग्रहक राजनीतिक आ देशभक्ति-रचना परस्पर समीप रखने पाठकसँ ई विवेक माँगैत अछि जे आलोचनात्मक देशप्रेम आ निष्क्रिय राष्ट्र-गौरवक बीच भेद करथि। यही बिन्दुपर रचनासभ आजुक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन लेल प्रासङ्गिक होइत अछि।

गाम, मिथिला, भाषा आ स्थान-स्मृतिक पुनर्स्थापना

‘हमर गाम’क उपस्थिति कविता-पुस्तककें एकटा भूगोल दैत अछि। गाम एक भौगोलिक इकाई मात्र नहि; सामाजिक सम्बन्ध, बोली, कृषि, प्राकृतिक परिवेश, श्रम, स्मृति आ पाबनि-तिहारक साझा परिसर अछि। गामपर गीत बहुधा रमणीय चित्र बनबैत अछि; मुदा गाँवक भीतरक विषमता—भूस्वामित्व, जातीय असमानता, स्त्रीश्रम, बेरोजगारी, शिक्षा आ पलायन—कें विसराय देनाइ स्वप्निलता बनि सकैत अछि। ताहि कारण ग्राम-स्मृति कें रूमानी दृश्य आ सामाजिक दस्तावेज, दुनू स्तरपर परखब चाही।

[१; मुद्रित पृ. १३२]

‘राज मिथिला हम लेबे’ जकाँ रचनाक शीर्षक सांस्कृतिक पहचानसँ राजनीतिक आकांक्षाक दिस गति देखबैत अछि। एहि कविताक पाठमे क्षेत्रीय अस्मिता, भाषिक गरिमा, शासनिक आकांक्षा आ सामाजिक न्याय-भावना सभक अलग-अलग पहचान जरूरी अछि। मिथिला शब्द एक इतिहास-स्मृति सेहो अछि आ वर्तमान राजनीति मे प्रयुक्त सामूहिक चिह्न सेहो। जँ कवितामे मिथिला केवल अतीतक गौरव हो, तँ ओकर भविष्य-दृष्टि अपूर्ण रहि सकैत अछि; जँ भाषा, शिक्षा, आर्थिक अवसर आ समावेशनक प्रश्न उठैत हो, तँ क्षेत्रीय गान सामाजिक प्रस्ताव बनि सकैत अछि। [१; मुद्रित पृ. १३३]

संग्रहक देशभक्तिपरक अन्तिम गीत सभ स्थानीय अस्मिता आ व्यापक भारतीय सांस्कृतिक रूपक बीच सम्बन्ध रचैत अछि। एहि द्वैतकेँ विरोधक रूपमे नहि, अनेकस्तरीय अपनत्वक रूपमे सेहो पढ़ल जा सकैत अछि। अपन गाम, अपन मिथिला आ अपन देश—तीनू सम्बन्धक अर्थ एक-दोसरसँ कटला बिना बनि सकैत अछि, बशर्ते अपनत्व बाहरक मनुष्यक प्रति तिरस्कारमे नहि बदलए। ई लोकतान्त्रिक कसौटी देशप्रेमक साहित्यिक विवेचनमे उपयोगी अछि।

मैथिली भाषा स्वयं एहि संग्रहक अभिव्यक्तिक केन्द्र अछि। लोकप्रचलित शब्द, गीत-संरचना, आनन्द-विषादक घरेलू सम्बोधन आ मिथिलाक क्षेत्रीय सांस्कृतिक संकेतक कारण ई कविता केवल हिन्दी-मुखी सार्वजनिक भाषाक अनुवाद नहि रहि जाइत अछि। जतऽ भोजपुरी, हिन्दी, संस्कृतनिष्ठ वा राजनीतिक शब्दसमूहक प्रभाव पड़ैत हो, ओतऽ ओकरा एकरूपता-भङ्ग मानब जरूरी नहि; भाषिक मिलान आधुनिक जीवनक दस्तावेज सेहो भऽ सकैत अछि। मुदा यथासम्भव सुसङ्गत मैथिली रूप आ ध्वन्यात्मक शुद्धि पुस्तकक आगामी संस्करणक महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय काम होएत।

पृथक पाठविश्लेषण : प्रतिनिधि रचनासमूह

‘गणेश वन्दना’ आ ‘सरस्वती वन्दना’

एहि आरम्भिक युग्मक पाठ-स्थिति साङ्केतिक अछि : कवि लेखनक क्रियाकेँ सांस्कृतिक वन्दनासँ शुरू करैत छथि। आराध्यक नाम पाठकीय अपेक्षा गढ़ैत अछि;

पाठक गीतक शास्त्रीय विधा, विनयक रस आ शुभारम्भक रीति लेल तैयार होइत अछि। काव्यक स्वतन्त्रता एहि विधाक भीतर रहि नव बिम्ब अथवा समसामयिक आकांक्षा जोड़ेबाक क्षमतामे निहित अछि। एहि रचनाक भूमिकास्वरूपक महत्त्व मुख्य अछि; सम्पूर्ण संग्रहक सौन्दर्यबोध मुदा एहि आराधनामे सीमित नहि। [१; मुद्रित पृ. ३-५]

‘माँ’ आ ‘देवी गीत’

माँक निजी अनुभूति आ देवीक सामूहिक आराधनाक समीपता लोकविश्वासमे विशिष्ट भाव-मार्ग खोलैत अछि। दूनू समूहकें अन्तररहित मानलासँ मातृत्वक घरेलू, भौतिक आ स्मृतिगत यथार्थ पृष्ठभूमिमे चलि जाइत अछि। विवेचनक केन्द्र ई बनबाक चाही जे ‘माँ’क मानवीय प्रतिमा धार्मिक प्रतिमामे रूपान्तरित होइत छथि कि पृथक रहि समाजक स्नेह-व्यवस्थाक प्रश्न बनैत छथि। समूहक निरन्तरता कविक भक्ति-परम्परासँ दीर्घ सम्बन्धक संकेत करैत अछि। [१; मुद्रित पृ. ६-१९]

‘परिवार नियोजन’ आ ‘साक्षरता’

दूनू कविता-शीर्षक काव्यकें सार्वजनिक शिक्षणक कामसँ जोड़ैत अछि। एतऽ काव्यप्रसङ्गक आदर्श श्रोता एकटा समुदाय अछि, एकाकी रसिक नहि। एक दृष्टिसँ ई लोकोपयोगी रचनाधर्मिता अछि; दोसर दृष्टिसँ ई वाचिक प्रचारक सीमासँ सृजनात्मक स्वतन्त्रताक संघर्ष अछि। निर्णायक प्रश्न अछि कि अवधारणाकें जीवित पात्र, दृश्य आ विरोधाभास भेटैत अछि कि केवल निर्देशसूची रहैत अछि। एहन गीत विद्यालयक गतिविधिमे उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा सभ श्रोता समान उमेरक नहि होइत छथि। [१; मुद्रित पृ. ३८-३९]

‘पतितपावनी गंगा’ आ ‘झूला’

गंगाक प्रदूषण-सम्बन्धी गीत तथा झूलाक ऋतु-संस्कृति प्रकृति कें स्थिर दृश्य नहि, शरीरक गति, मौसम आ स्मृतिक अनुभव बनबैत अछि। बालकसँ सम्बन्ध स्थापित करबाक सम्भावना एतऽ प्रबल अछि, कारण झूला, गाछ, वर्षा आ ऋतु-परिवर्तन बच्चाक प्रत्यक्ष संसारमे प्रवेश करैत अछि। तथापि पर्यावरणक कविता आधुनिक अर्थमे सफल

तखन होएत जखन पेड़-बचावक सूत्रसँ बढि प्राकृतिक सम्बन्धक स्पर्शबोध आ स्थानीय जीविका दिखा सकए। [१; मुद्रित पृ. ४०]

‘दहेज’ आ ‘दहेज’-सम्बद्ध सामाजिक गीत

दहेज प्रकरणमे विवेचनक केन्द्र विवाहक आर्थिक दबाव आ पारिवारिक गरिमाक टकराव होएबाक चाही। मुदा काव्यक सामाजिक ऊर्जा उपदेशमात्रसँ नहि, संबंधक भीतरक चोटक चित्रणसँ उद्भव करैत अछि। एहि समूहकेँ पढ़ैत समय प्रश्न उठैत अछि जे स्त्रीक अपन स्वर कतेक उपस्थित अछि; सामाजिक बीमारीक नाम लेब आ स्त्रीक अनुभव सुनब—दूनों कार्य समान नहि। [१; मुद्रित पृ. ४८–४९]

‘चमचा’, ‘वोट’ आ ‘घूस’

ई तीन शीर्षक जनजीवनक तीन स्तरक विडम्बना चिन्हित करैत अछि : सत्ताक नजदीकीक लोभ, जनादेशक व्यापारिकरण आ प्रशासनिक लेन-देनक अन्याय। एहिमे करुणा आ हास्यक निकटता सम्भव अछि; व्यंग्य जँ ककरो दुर्बलतापर खाली हँसैत अछि तँ ओ कठोरता बनैत अछि, मुदा सामाजिक संरचनाक खुलासा करैत अछि तँ प्रतिरोधक नैतिक शक्ति पबैत अछि। कविक राजनीतिक स्वर केहन प्रभाव उत्पन्न करैत अछि, तकर निर्णायक आधार भाषिक वक्रता आ अनुभवक विशिष्टता अछि। [१; मुद्रित पृ. ५०–५१, ८०, १२९–१३०]

‘की हम आजाद छी?’

प्रश्नवाचक शीर्षक स्वतंत्रताक वैधानिक घटना आ स्वतंत्रताक दैनन्दिन अनुभूतिक भेद पर विचारक निमंत्रण अछि। एहन गीत नागरिकताक प्रत्यक्ष शिक्षण-संसाधन भऽ सकैत अछि। तखन प्रश्न ई रहैत अछि जे सामाजिक दुखक उल्लेख अनेक व्यक्ति आ समुदायमे भेद करैत अछि कि व्यापक सामान्यीकरणमे समेटि लैत अछि। राजनैतिक गीतक उत्कृष्ट रूप प्रश्नक बहुअर्थकता बचौने रखैत अछि; उत्तरक अनिवार्यता ओकरा घोषणापत्र बनाबि सकैत अछि। [१; मुद्रित पृ. १२६–१२८]

‘समय’ आ ‘घूस’

अन्त्यभागमे समय विषयक गीत, तकर पश्चात् घूसक सामाजिक चित्रण—ई क्रम नैतिक जीवनकेँ दू भिन्न धरातलपर उपस्थित करैत अछि। समय क्षय, कर्तव्य आ अवसरक अमूर्त अनुभूति अछि; घूस सामाजिक संस्थाक ठोस भ्रष्टाचारक नाम। एकटा मनुष्यक स्वयंप्रबन्ध दिस देखैत अछि, दोसर सार्वजनिक व्यवहारक विकृति दिस। एहि जोड़ीसँ स्पष्ट होइत अछि जे कविक नैतिक आलोचना व्यक्तिगत अनुशासन आ संस्थागत शुचिताक दूनू माँग करैत अछि। [१; मुद्रित पृ. १२८–१३०]

‘हमर गाम’

गाम स्मृतिपरक गीतक सांस्कृतिक शक्ति स्थानीय दृश्यक पहिचानमे अछि। मुदा गामक प्रतीक जतेक प्रेम उत्पन्न करैत अछि ओतेक बहिष्कारक प्रश्न सेहो खोलि सकैत अछि। कतऽ कृषक, दलित, स्त्री, प्रवासी, भूमिहीन आ नेना सभ एहि साझा ग्राम-चित्रमे देखाइत छथि? आलोचना एहि प्रश्नक उत्तर खोजैत अछि। स्थानीय अनुभव केँ सार्वभौमिक बनाबबाक राह व्यक्तिक विशिष्टता अछि, न कि सभकेँ एक जकाँ घोषित करब। [१; मुद्रित पृ. १३२]

‘राज मिथिला हम लेबे’

क्षेत्रीय सामूहिकता प्रायः घोषणात्मक आवेगसँ जन्म लैत अछि। मैथिली गीतक बल ई अछि जे मातृभाषाक शब्दमे सामुदायिक इच्छा सजीव बनैत अछि। मुदा समीक्षाक कसौटी घोषित लक्ष्यक साथ न्याय, समावेशन आ नागरिक अधिकारक सम्बन्ध खोलब चाही। एतऽ शीर्षकक स्वर मागक अछि; कविता-साहित्यक मूल्य एहि मागक तर्क-संवेदनशील विस्तारमे निहित होएत। [१; मुद्रित पृ. १३३]

अन्त्यक देशभक्तिपरक गीत

अन्तिम रचनासभमे व्यापक देश-परिदृश्य आ सार्वजनिक एकताक स्वर सुनाइत अछि। ई संकलनक आरम्भक देव-स्तुतिसँ बहुत भिन्न राजनीतिक भावभूमि थिक, मुदा दुनूक एकटा साझा रूप अछि—गायनक माध्यमसँ सामूहिक भाव रचब। एहि जोड़ीकेँ ध्यानमे

राखला सँ पुस्तकक अनिवार्य सूत्र बिम्बक एकरूपता नहि, सामूहिक संबोधनक परम्परा बनैत अछि। कविता अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी तखन होइत अछि जखन सामूहिक 'हम' व्यक्तिगत अनुभवकें दबबैत नहि अछि। [१; मुद्रित पृ. १३६-१३७]

भाषा, छन्द, अनुक्रिया आ भाव-शिल्प

‘काव्य सरिता’मे रचनाक नामकरण बहुत बेर विधागत अछि, जकर कारण पाठक पहिनहिसँ लय आ भावक दिशा अनुमान कऽ लैत अछि। एहि विशेषताक दू प्रभाव अछि। सकारात्मक रूपें ई गीतकें लोकस्मृतिसँ जोड़ैत अछि; श्रोता तुरत गानक परिसर पहिचानि लैत अछि। नकारात्मक रूपें विधाक नाम कखनो विशिष्ट कविता के व्यक्तिगत अस्तित्वकें कम करि सकैत अछि। ‘देवी गीत’ जकाँ पुनरावृत्त शीर्षकसभक आलोचनात्मक अनुक्रमणिका आवश्यक अछि, जाहिसँ एक कविता दोसरसँ स्पष्ट अलग पहिचानल जा सकए।

संग्रहमे पद-रचना, तुकान्त, आवृत्ति, सम्बोधनात्मक वाक्य आ नैतिक उद्घोषक अलग-अलग अनुपात देखबामे अबैत अछि। लय आ गेयता काव्यगुण थिक, मुदा केवल अन्त्यानुप्रास नहिहैं। सार्थक गीतमे ध्वनि अर्थक संग चलैत अछि; तुक शब्दकें जबरदस्ती नहि खींचैत अछि। जेठ काव्यक अभ्यासमे गेयता आ अर्थव्यंजना परस्पर विरोधी नहि, पूरक थिक। एहि संग्रहक महत्व लोक-प्रचलित ध्वनि-संरचनाक संरक्षणमे अछि; ओकर आलोचनात्मक प्रश्न छन्दक एकरूप पुनरावृत्ति आ पद-दीर्घताक सम्पादनसँ सम्बन्धित अछि।

उपदेशक भाषा आ कविता-विन्यासक भेद पर विशेष ध्यान आवश्यक अछि। जनशिक्षा, दहेज-विरोध, भ्रष्टाचार-विरोध आ साक्षरता पर पद लिखैत काल कवि सन्देशकें स्पष्ट राखय चाहैत छथि। मुदा साहित्यिक अनुभूति स्पष्ट संदेशक अतिरिक्त अनकहल संकेत, बिम्ब आ अप्रत्याशित तुलना माँगैत अछि। एहि संकलनक किछु समूहक अध्ययन सुझाव दैत अछि जे सूक्ति-प्रवणता कविक आस्था आ सार्वजनिक जिम्मेदारीक प्रदर्शन

करैत अछि। प्रश्न मुदा ई अछि जे प्रत्येक सन्देश अपन स्वतंत्र अनुभव-रूप पबैत अछि कि नहि।

कवितासभक बहुलता रचनाकारक अभ्यास आ रचनाशील निरन्तरताक चिन्ह अछि, किन्तु परिमाणकें गुणवत्ता-क निर्णायक प्रमाण नहि मानल जाय। छोट गीत, मंचीय सामूहिक गायन आ दीर्घ काव्य—सभक अलग औचित्य छैक। एहन पुस्तकमे प्रतिनिधि चयनक सम्पादकीय भूमिका सेहो पैघ अछि। सभसँ प्रभावशाली रचनाक स्वतंत्र खण्ड, विधागत परिचय आ सन्दर्भित शब्दकोश जोड़ल जाए तँ काव्यकीर्ति आ पाठ-सुलभता दूनू बढ़त।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासक आलोकमे तुलनात्मक विवेचन

बाल-साहित्यक इतिहासमे ‘काव्य सरिता’क स्थान निर्धारित करबाक पहिल शर्त विधा-परिचयक ईमानदारी अछि। विदेहक पोथी-सूची एकरा ‘मैथिली काव्य संग्रह’ कहैत अछि, जखन कि ओही लेखकक ‘स्वर्ण कमल’कें स्पष्ट रूपसँ ‘बाल उपन्यास’ कहल गेल अछि। शिशु-साहित्यक विदेह-सूचीमे ‘स्वर्ण कमल’ दर्ज अछि, ‘काव्य सरिता’ सम्पूर्ण रूपेँ बाल-पोथी रूपमे नहि। एहि प्रमाणक अवहेलना कए काव्य-संग्रहकें बाल-कविता-संग्रह घोषित करब न साहित्यिक दृष्टिसँ उचित होएत आ न ग्रन्थसूची-विज्ञानक दृष्टिसँ।

विदेहक समानान्तर बाल-साहित्य-विमर्शमे शिशु, बाल आ किशोरक उमेर-विशेष पाठकीयता अलग कएल गेल अछि। अत्यल्प उमेरक लेल चित्र, लोरी आ सरल पुनरावृत्ति; विद्यालयी बालकक लेल लघुकथा, कविता, चित्रकथा, विज्ञान; आ किशोरक लेल जटिल कथा, जीवनी, सामाजिक यथार्थ आदि माध्यम महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि। ई विभाजन अपरिवर्तनीय जैविक नियम नहि, पाठकक ग्रहण-क्षमता बुझबाक व्यावहारिक साधन अछि। एहि कसौटीपर ‘काव्य सरिता’क लोकगीत आ किछु प्रकृति-सम्बन्धी गीत आरम्भिक अथवा मध्य बाल-पाठक लेल उपयुक्त बनि सकैत अछि;

राजनीति, पारिवारिक संघर्ष आ व्यंग्यक किछु रचना किशोर वा प्रौढ़ पाठक लेल अधिक अनुकूल होएत।

ऐतिहासिक दृष्टिसँ मैथिली बाल-साहित्य एकाध आधुनिक छपल पोथीसँ शुरू होइत नहि देखल जाएबाक चाही। लोरी, लोककथा, पहेली, बालखेल, ऋतुगीत आ कथावाचन मिथिलाक मौखिक धरोहरक हिस्सा रहल अछि। मुदा मौखिक रूपक अस्तित्व आ बाल-पाठक लेल सचेतन रचल मुद्रित साहित्य—ई दू अलग काल-सूचक वस्तु अछि। विदेहक इतिहासात्मक विवेचन लोक-आख्यान, पञ्चतन्त्र-जैसन शिक्षात्मक कथा-परम्परा, आधुनिक बालकथा, चित्रकथा, विज्ञान-लेखन आ डिजिटल माध्यमक निरन्तरतामे बाल-साहित्यकेँ पढ़ैत अछि। एहि क्रममे ‘काव्य सरिता’क प्रासङ्गिकता मुख्यतः लोकगीत-आधारित परम्पराक आधुनिक लिखित अवतारक रूपमे अछि, न कि सम्पूर्ण समकालीन बाल-साहित्यक प्रतिनिधि ग्रन्थक रूपमे।

विदेहक संग्रहालयमे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क ‘बाल कविता’, अणिमा सिंहक ‘शिशु गीत खेल’, प्रीति ठाकुरक चित्रकथा-परम्परा, जगदानन्द झा ‘मनु’क ‘चोनहा’, नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘स्वर्ण कमल’, आ बालक/किशोर लेल अनेक स्वतंत्र कृति सूचीबद्ध अछि। एहि पोथी सभक अलग-अलग माध्यम स्वयं बतबैत अछि जे बाल-साहित्य केवल नीति-कविता नहि; खेल, दृश्य, साहस, प्रश्न, हास्य, विज्ञान, कल्पना आ आत्मसम्मानक समग्र संसार अछि। ‘काव्य सरिता’क साक्षरता वा पर्यावरण-गीतकेँ एहि व्यापक परिसरमे उपयोगी सहायक पाठ कहल जा सकैत अछि; एकरे बाल-साहित्यक कोटिमे सम्पूर्णतया गनल जाए तँ विधागत सटीकता घटत।

‘बाल कविता’ आ ‘बच्चा सुनि सकए एहन कविता’ मे आओर एकटा निर्णायक अन्तर अछि। भक्ति-गीत अथवा देशभक्ति-गीत सामूहिक अवसरपर बालक सेहो गबि सकैत अछि, मुदा ओकर भावक जटिलता, शब्दचयन आ वैचारिक स्तर बाल-केन्द्रित नहि सेहो भऽ सकैत अछि। उलट, झूला, प्रकृति, नदी, विद्यालय आ निकट अनुभवक गीत बच्चाक अनुभव-क्षेत्र सँ मिलैत अछि। एहि वस्तुगत अन्तरसँ पाठ्यक्रम-चयन लेल चारि प्रश्न निकलैत अछि : कविता किस उमेरक बच्चाक अनुभवसँ बोलैत अछि? बच्चा एकरामे

केवल उपदेश सुनैत अछि कि अपन भाव पबैत अछि? कविता प्रश्न आ कल्पनाक ठाम छोड़ैत अछि कि नहि? आ एकर भाषा उच्चारण-योग्य, सुलभ आ सम्मानजनक अछि कि नहि?

बाल-साहित्यक आधुनिक समीक्षामे नैतिक अनुशासन मात्र नहि, बाल-अधिकार, जिज्ञासा आ वैज्ञानिक वृत्तिक मान सेहो पैघ अछि। विदेहक बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्रमे औचित्य, रस, लोकपरम्परा, कथात्मक न्याय, भाषिक चेतना तथा पाठकीय उम्रक चर्चा भेटैत अछि। एहि मापक अनुसार ‘काव्य सरिता’क शिक्षामूलक पदक एकल फायदा सरस उच्चारण आ सामूहिक आयोजनक सुविधा अछि; मुदा वैज्ञानिक कारण-बोध, बालकक स्वतंत्र प्रश्न आ सृजनात्मक बहुविधता केतबा अछि, ताहि पर चयनपूर्वक विचार जरूरी अछि।

इतिहासक तुलनामे ई निष्कर्ष निकैलैत अछि जे नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क रचनात्मक संसारमे बाल-साहित्य एक पृथक क्षेत्र रूपमे उपस्थित अछि, जकर प्रमाण ‘स्वर्ण कमल’ अछि; ‘काव्य सरिता’क किछु खण्ड ओहि क्षेत्रसँ संवाद करैत अछि। एहि दूनू कथनक सीमा स्पष्ट रहबाक चाही। काव्य-संग्रहक सामाजिक आलोचना, व्यंग्य, धार्मिक गीत आ स्थानीय राजनीति प्रौढ़ लोक-साहित्यक ओर सेहो मजबूत संकेत करैत अछि। बालपयोगिताक सम्भावना एकर मूल विधागत परिचय बदलि नहि दैत अछि।

तुलनात्मक निर्णय : उपलब्धि, सीमा आ आलोचनात्मक प्रतिमान

काव्य-संग्रहक सभसँ पैघ उपलब्धि एकहि जिल्दमे अनेक सामाजिक आवाजक संचयन अछि। रचना-संसारमे आराधना, लोकगायन, परिवार, शिक्षा, जनस्वास्थ्य, राजनीति, ग्राम-स्मृति, मातृभूमि आ क्षेत्रीय अस्मिता सहवर्ती बनैत अछि। ई बहुविषयता हमरा सभकेँ एक एहन रचनाकारसँ परिचित करबैत अछि जे काव्यकेँ सार्वजनिक जीवनसँ अलग राखय नहि चाहैत छथि। एहि दृष्टिसँ ‘काव्य सरिता’ लोकसांस्कृतिक अभिलेखक गुण धरैत अछि।

दोसर उपलब्धि लोकगीतक विधागत स्मृतिक संरक्षण अछि। नचारी, कजरी, चैती, भजन आ वन्दनाक नाम स्वयं लोकानुकूल प्रदर्शनक दिशा बतबैत अछि। आधुनिक मुद्रणक भीतर ई नामकरण गायनक सामूहिक परम्परा उपस्थित रखैत अछि। एही विशेषताक कारण ई पोथी लोकसाहित्य-अध्येता आ आधुनिक मैथिली गीतक अनुसन्धाता, दुनू लेल प्रासङ्गिक पाठ बनि सकैत अछि।

तेसर उपलब्धि नागरिक विवेकक आग्रह अछि। सामाजिक सुधार वा राजनीतिसँ जुड़ल गीत कविक उत्तरदायित्वबोधक साक्ष्य अछि। मुदा कविता आ सामाजिक नारा बराबर नहि। जे रचना प्रत्यक्ष सन्देशसँ आगाँ जा कऽ जीवनस्थितिक अन्तर्विरोध बनबैत अछि, ओ दीर्घकालिक साहित्यिक असर छोड़ैत अछि। संग्रहक समालोचनात्मक मूल्यांकनमे ई कसौटी अनिवार्य अछि, नहि तँ साहित्यकें केवल विषयक सूची बना देबाक खतरा अछि।

सीमामे तीन बिन्दु विशेष उल्लेखनीय छथि। पहिल, विषयसमान रचनाक घनी पुनरावृत्तिसँ पुस्तकक आन्तरिक भिन्नता कहियो-कहियो कम स्पष्ट होइत अछि। दोसर, विषयक श्रेणीकरण, शब्दार्थ आ रचना-कालक अभाव अनुसन्धाताकें अतिरिक्त श्रम करबैत अछि। तेसर, उपदेशमूलक रचनाक साहित्यिक शक्ति जाँचबा लेल विशिष्ट बिम्ब, शिल्प आ वक्रताक सूक्ष्म तुलना आवश्यक अछि; घोषित नैतिकता मात्र प्रशंसाक कारण नहि बनि सकैत अछि। एहन निर्णय कविताक अवमानना नहि, बल्कि लेखकक बहुविध लेखनक प्रति गम्भीर न्याय थिक।

लोकधर्मी काव्यक आलोचना करैत काल सहजात लयक मूल्य मानब चाही, मुदा लोकधर्मिताकें शिल्पगत कमजोरीक स्वतः क्षमादान नहि बनाओल जाए। ओहिना लिखित पाठक औपचारिक भाषिक अनुशासनक आग्रह रखैत समय उच्चारण, धुन आ क्षेत्रीय बोलीक स्वरकें मेटायबो उचित नहि। ई द्वन्द्व ‘काव्य सरिता’ जकाँ संग्रहक समीक्षा कें रोचक बनबैत अछि। लोक-स्वीकृति आ सौन्दर्यात्मक अनुशासनक बीच साधल सन्तुलनहि निर्णायक साहित्यिक प्रतिमान बनि सकैत अछि।

निष्कर्ष

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'काव्य सरिता' मैथिली काव्यक एक बहुधारात्मक पोथी अछि। एकर प्रवाहमे श्रद्धागीतक विनय, लोकलयक सामूहिकता, सामाजिक सुधारक आग्रह, राजनीतिक व्यंग्यक चोट आ मिथिला-देशक प्रति लगाव एक संग बहैत अछि। ई विविधता पुस्तकक स्वरूपक केन्द्रीय तथ्य अछि; एकरा केवल भक्ति-काव्य, केवल लोकगीत वा केवल बाल-साहित्यक खानेमे राखब एकर वास्तविक विस्तारकेँ कम करि देत।

बाल-साहित्यक समानान्तर इतिहासमे एहि पुस्तकक उपयोग सर्वाधिक तखन फलदायी होएत जखन एकर ऋतुगीत, झूला, शिक्षा आ पर्यावरण-विषयक चयनित पद केँ उमेरानुकूल आलोचनात्मक सम्पादनक संग प्रस्तुत कएल जाए। लेखकक 'स्वर्ण कमल' जकाँ बाल-उपन्याससँ एकर तुलना विधागत भेद बुझबाक अवसर दैत अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे एकहि रचनाकारक समग्र कृतित्वमे बाल-पाठक लेल रचना आ प्रौढ़ समाज लेल सार्वजनिक कविता दू स्वतंत्र किन्तु परस्पर संवादरत धारा भऽ सकैत अछि।

पुस्तकक स्थायी मूल्यांकन लेल भविष्य मे पाठसंगत मुद्रित संस्करण, सम्पूर्ण शुद्ध पाठ, छन्द-अध्ययन, लोकधुन-सूची आ चयनित रचनाक आलोचनात्मक संस्करण अपेक्षित अछि। ओहि काजक पूर्व-सोपान रूपेँ ई अध्ययन संग्रहक विधागत स्थापत्य, सामाजिक प्रश्न आ तुलनात्मक महत्त्वक नक्शा प्रस्तुत करैत अछि। एकर मूल निष्कर्ष ई अछि जे 'काव्य सरिता' केँ मैथिली भाषाक लोक-समाज, गायन-परम्परा आ आधुनिक नागरिक चेतनाक संग पढ़नाइ सर्वाधिक न्यायसङ्गत आलोचनात्मक पद्धति अछि।

परिशिष्ट : रचनासमूह आ मुद्रित पृष्ठ-सङ्केत

विषय-क्षेत्र	उदाहरण-शीर्षक	मुद्रित पृष्ठ
आरम्भिक वन्दना	गणेश वन्दना, सरस्वती वन्दना	३-५

विषय-क्षेत्र	उदाहरण-शीर्षक	मुद्रित पृष्ठ
मातृत्व आ देवी- आराधना	माँ, देवी गीत	६-१९
भक्ति आ लोकधुन	दुलार, भजन, नचारी	२२-३७
लोकशिक्षा	परिवार नियोजन, साक्षरता, पतितपावनी गंगा	३८-४०
ऋतु-गीत	कजरी, चैती	४२-४५
समाज-सुधार	दहेज, साक्षरता-सम्बद्ध गीत	४६-४९
राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य	चमचा, चोर-सिपाही, प्रधानमन्त्री पर कटाक्ष, वोट	५०-५३; ६७; ८०
नागरिक प्रश्न	की हम आजाद छी?, समय, घूस	१२६-१३०
स्थान आ अस्मिता	हमर गाम, राज मिथिला हम लेबे	१३२-१३३
राष्ट्रभाव	देशभक्ति गीत	१३६-१३७

१.४३. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — स्वर्ण-कमल

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर | शोध-आलेख

लोककथा, बाल-चेतना आ न्याय-बोधक विस्तृत मैथिली आख्यान

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'स्वर्ण-कमल' (२०१९) मैथिली बाल-उपन्यासक ओहि रचनात्मक धाराक प्रतिनिधि कृति अछि जाहिमे परम्परागत राजकुमार-कथा, चमत्कारप्रधान लोककल्पना, पारिवारिक कथावाचन आ आधुनिक उपन्यासक क्रमिक घटनाविन्यास एक-दोसरसँ मिलैत अछि। उपन्यासक एक स्तरपर प्रफुल्ल आ अन्य नेनासभ अपन बाबीसँ खिस्सा सुनैत छथि; दोसर स्तरपर राजकुमार सुजीत उत्तराधिकार-संघर्ष, दरबारी षड्यन्त्र, वनयात्रा, गुरु-सहायता, स्वर्ण-कमलक प्राप्ति, राक्षसक आतंक आ राज्यक पुनर्स्थापनाक कठिन क्रमसँ गुजरैत छथि। मूल कृतिक उद्धरण मुद्रित पृष्ठसँ देल गेल अछि। विश्लेषणक निष्कर्ष ई अछि जे 'स्वर्ण-कमल'क सबसँ स्थायी योगदान केवल आदर्श वीरक विजयमे नहि, बल्कि मैथिलीमे दीर्घ साहसिक आख्यानक सृजन आ बाबीक मौखिक कथा-संस्कृति केँ पाठकक सक्रिय जिज्ञासासँ जोड़बाक प्रयासमे निहित अछि। एकर सीमा नायकक आदर्शिकरण, स्त्री-पात्रक विषम सक्रियता, आ राजनीतिक न्यायकेँ राजवंशीय समाधानमे समेटि देबाक प्रवृत्तिमे अछि।

मैथिली बाल-साहित्य; स्वर्ण-कमल; नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'; लोककथा; बाल-उपन्यास; कथावाचन; राजसत्ता; नैतिकता; बाल-पाठक; प्रतीक; आख्यान-विज्ञान।

प्रस्तावना : कृतिक साहित्यिक प्रश्न

बाल-साहित्य केँ प्रायः सरल मनोरञ्जन, सदाचारक शिक्षा अथवा विद्यालयक पूरक पाठ मानि लेल जाइत अछि। मुदा श्रेष्ठ बालकथा बालक केँ सामाजिक सम्बन्ध बुझबाक, भयक सामना करबाक, अन्याय देखबाक आ अपन निर्णय बनयबाक कल्पनात्मक अवसर दैत अछि। एहि दृष्टिसँ 'स्वर्ण-कमल'क मूल्यांकन करबाक समय केवल ई प्रश्न पर्याप्त नहि जे राजकुमार विजय पबैत छथि कि नहि। प्रश्न ई सेहो अछि जे हुनक

विजयक नैतिक अर्थ की अछि; कथावाचिका बाबी आ श्रोता नेनासभक सम्बन्ध ओहि अर्थक निर्माण कोना करैत अछि; आ चमत्कार, साहस, राजनीतिक शक्ति तथा क्षमा एक-दोसरसँ कोना जुड़ैत अछि।

कृतिक प्रारम्भ घरेलू आ परिचित जगतमे होइत अछि, जाहिसँ राजमहलक अपरिचित संसारधरि यात्रा आरम्भ होइत अछि। प्रफुल्लक बाबी केवल कथा सुनौनिहार नहि; ओ अनुभवक परम्परा, परिवारक स्मृति आ भाषा-संस्कारक प्रतिनिधि छथि। एही कथाचौखटमे राजकुमार सुजीतक साहसिक जीवन प्रवेश करैत अछि। दू संसारक एहि आवागमनसँ मैथिली बालकक घरेलू भाषिक अनुभवक भीतर विस्तृत कल्पनासंसार आकार ग्रहण करैत अछि।

ई अध्ययन तीनटा परस्पर सम्बद्ध प्रतिपादन आगाँ रखैत अछि। पहिल, उपन्यासक रचना मौखिक लोककथा आ विस्तृत लिखित आख्यानक संगम थिक। दोसर, राजकुमारक संघर्षक केन्द्र केवल व्यक्तिगत सत्ता-प्राप्ति नहि, बल्कि नैतिक पात्रताक परीक्षण अछि; तथापि उत्तराधिकार-आधारित राजधर्म ओकर वैचारिक सीमा बनल रहैत अछि। तेसर, कथा-श्रोताक जिज्ञासा आ बाबीक हस्तक्षेप बाल-पाठक केँ सक्रिय बनबैत अछि, मुदा अनेक स्थानपर पूर्वनिर्धारित उपदेश ओकर स्वायत्त अर्थनिर्माणक अवकाश घटबैत अछि।

बाल-उपन्यासक परिचय आ रचनात्मक स्वरूप

‘स्वर्ण-कमल’क लेखक नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ छथि। कृतिक प्रकाशन २०१९ मे गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, जिला दरभंगासँ भेल। शीर्षकीय विवरणमे एकरा स्पष्ट रूपेँ मैथिली बाल-उपन्यास कहल गेल अछि। पुस्तकक मुद्रित मूल्य १५० टाका अछि। आरम्भिक पृष्ठसभमे योगानन्द झाक समीक्षात्मक भूमिका, लेखकक वक्तव्य आ तकर बाद मुख्य कथा उपस्थित अछि (मिश्र, २०१९: ३-१९)।

मुख्य कथा मुद्रित पृष्ठ १९ सँ १०२ धरि दस क्रमांकित खण्डमे विभक्त अछि।

खण्डसभक आरम्भ क्रमशः पृष्ठ १९, ३०, ३८, ४४, ५४, ६१, ६७, ८४, ८९ आ ९४ सँ होइत

अछि। एतय पृष्ठ-सन्दर्भ सदिखन पुस्तकक मुद्रित पृष्ठक सूचक अछि। प्रत्येक खण्डक स्वतन्त्र चर्चा करैत काल केवल घटनाक सार देबाक बदला ई जाँचल गेल अछि जे कोन नव सूचना, नैतिक प्रश्न, पात्र-स्थिति अथवा कथात्मक मोड़ उत्पन्न होइत अछि।

तुलनात्मक विवेचनक आधार मूल कृतिक भूमिका, मैथिली बाल-साहित्यक प्रकाशित इतिहासपर उपलब्ध अध्ययन, साहित्य अकादेमीक प्रामाणिक पुरस्कार-अभिलेख आ लोककथाशास्त्र तथा बाल-साहित्य-आलोचनाक मान्य ग्रन्थ छथि। जहिना प्रॉपक प्रकार्य-आधारित पद्धति कथाक बाहरी गठन बुझयमे सहयोग करैत अछि, तहिना निकोलायेवाक चरित्र-आलोचना पात्रक सक्रियता आ विकासक प्रश्न खोलैत अछि। ई सैद्धान्तिक सन्दर्भ व्याख्याक उपकरण छथि; कृतिक प्रत्यक्ष स्रोत अथवा लेखकक घोषित प्रेरणा नहि।

मैथिली बाल-साहित्यक परम्परा आ 'स्वर्ण-कमल'क ऐतिहासिक स्थान मिथिलामे बालकक कथासंसार मुद्रित पुस्तकसँ बहुत पहिनेसँ परिवार आ लोकजीवनमे सक्रिय रहल अछि। दादी-नानीक खिस्सा, पशु-पक्षीक व्यवहारकथा, गोनू झाक चातुर्य, राजा-रानीक आख्यान, लोकदेवता, राक्षस, जादुई साधन आ नैतिक दृष्टान्त सामूहिक स्मृतिक माध्यमसँ चलि आबि रहल छथि। एही मौखिक पूँजीक किछु अंश लिखित साहित्यक विविध रूपमे प्रविष्ट भेल। तथापि मौखिक खिस्सा आ उपन्यास एक नहि छथि: उपन्यास विस्तृत चरित्र-जाल, क्रमविकसित द्वन्द्व, स्थगित समाधान आ पाठकक दीर्घकालिक सहभागिताक अपेक्षा करैत अछि।

देवशंकर नवीन मैथिली बाल-साहित्यक ऐतिहासिक रूपरेखामे 'शिशु' (१९४९), 'धीया-पूता' (१९५६), 'बटुक' (१९६१), 'नेना-भुटका' (१९९६) आ 'बाल मिथिला' (१९९८) सन बाल-पत्रिकाक चर्चा करैत छथि। ओ मातृभाषामे शिशु-शिक्षा, बाल-पत्रिकाक सीमित प्रसार आ साहित्यिक पत्रिकासभमे बाल-रचनाक स्थानपर ध्यान केन्द्रित करैत छथि (नवीन, प्रकाशन-विवरण अनुपलब्ध)। ई इतिहास बतबैत अछि जे मैथिलीमे बालक लेल

लिखब निश्चय निरन्तर रहल, मुदा संस्थागत प्रकाशन आ पाठकीय पहुँचक समस्या सेहो बनल रहल।

‘स्वर्ण-कमल’क आरम्भिक भूमिकामे ‘इजोती रानी’ आ रामदेव झाक बाल-उपन्यास-प्रयासक उल्लेख अछि। भूमिकाकार एहि कृति केँ मैथिलीमे लोककथासँ विस्तृत बाल-आख्यान बनयबाक पूर्ववर्ती उदाहरणक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि (योगानन्द झा, ‘मैथिली बाल उपन्यास : स्वर्ण-कमल’, मिश्र, २०१९: ५-६)। एहिसँ ‘स्वर्ण-कमल’ केँ कोनो निर्वातमे उत्पन्न कृति मानबाक बदला एकटा विद्यमान साहित्यिक प्रयत्नक उत्तरवर्ती चरणक रूपमे बुझल जा सकैत अछि।

तुलना करैत समय सन्दर्भक सीमाक ध्यान रखब जरूरी अछि। ‘इजोती रानी’क विस्तृत कथानकक प्रत्यक्ष पाठ एतय तुलनाक विषय नहि बनल; अतः दुनू कृतिक ‘समान कथावस्तु’ अथवा प्रत्यक्ष प्रभावक निर्णय नहि देल जा सकैत अछि। साम्य केवल व्यापक विधागत स्तरपर देखल जा सकैत अछि—राजकुमारक अभियान, नैतिक चुनौती आ लोककल्पनाक प्रयोग। एहि विश्लेषणक मुख्य पाठ ‘स्वर्ण-कमल’ स्वयं अछि।

साहित्य अकादेमीक २०२३क बाल साहित्य पुरस्कारक मैथिली अनुशंसित कृतिसूचीमे ‘स्वर्ण कमल’ केँ नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क २०१९क ‘उपन्यास’ रूपमे स्थान देल गेल। ओहि सूचीमे ‘गुलरी’क संग ई दोसर उपन्यास छल; पुरस्कार ‘ओल कतरा, झोल कतरा’क लेखक अक्षय आनन्द ‘सन्नी’ केँ देल गेल (साहित्य अकादेमी, २०२३)। एहि अभिलेखक अर्थ कृतिक संस्थागत विचारार्थ उपस्थिति थिक, पुरस्कार-प्राप्ति नहि।

मैथिली बाल साहित्य पुरस्कारक पूर्ववर्ती सूचीमे रामदेव झाक ‘हँसनी पान आ बजंता सुपारी’ (२०१५) आ अमलेन्दु शेखर पाठकक ‘लालगाछी’ (२०१७) उपन्यासक रूपमे अंकित छथि; २०१८ मे वैद्यनाथ झाक ‘खिस्सा सुनू बौ’ कथा-संग्रहक पुरस्कार मिलल। ई तथ्य रचनात्मक विविधताक संकेत करैत अछि: एक दिशामे मौखिक कथनक परम्परा, दोसर दिशामे उपन्यासक विस्तृत आन्तरिक संसार। ‘स्वर्ण-कमल’ एहि दुनू

धाराक संगमबिन्दुपर राखल जा सकैत अछि (साहित्य अकादेमी, बाल साहित्य पुरस्कार सूची)।

कथानकक समग्र विन्यास : घरेलू खिस्सासँ राज्यक संघर्ष धरि

उपन्यासक पहिल संसार प्रफुल्लक परिवारक अछि। बाबी अपन अनुभव, अनुशासन आ ममताक माध्यमसँ परिवारमे विशेष स्थान रखैत छथि। नेनासभ ओकरा घेरि कथा सुनबाक प्रतीक्षा करैत अछि। खिस्सा आरम्भ होइत अछि, बीचमे विराम अबैत अछि, आ अगिला दिन नूतन प्रश्नसँ कथा पुनः चलैत अछि। एहि आवृत्तिसँ पुस्तकक खण्डविभाजन प्राकृतिक कथावाचनक रीति प्राप्त करैत अछि।

भीतरक कथाक नायक राजकुमार सुजीत छथि। उत्तराधिकार आ राजपरिवारक विरोधक कारण हुनका राजमहलसँ दूर होमय पड़ैत अछि। नयनावतीक महत्वाकांक्षा, शमशेर सिंह आ जालिम सिंहक अवसरवाद तथा सुमेरगढ़क राजकीय संकट कथाक राजनीतिक पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि। वन आ अनजान प्रदेशमे सुजीत केँ अपरिचित लोक पर विश्वास करबाक, संकटसँ लड़बाक आ अपन पहिचान गुप्त रखबाक आवश्यकता होइत अछि।

सर-सुल्तानक आश्रय, महात्माक मार्गदर्शन आ स्वर्ण-कमलक प्राप्ति राजकुमारक यात्राक विभिन्न चरण छथि। कल्लू राक्षसक आतंक आ श्रीधरपुरक प्रसंग निजी राज्य-संघर्षक बाहर पीड़ित लोकक रक्षा करबाक नैतिक आयाम जोड़ैत अछि। विशाखा राक्षसक अतीतक किछु सूत्र खोलैत छथि। पछिला भागमे भवानीशंकर आ कलानाथ सन पात्रसभक माध्यमसँ गुप्त सूचना, लोकसमर्थन आ राजनीतिक पुनर्गठनक प्रश्न प्रबल होइत अछि। अन्ततः सुजीतक पहिचान, सुमेरगढ़क अभियान, मिलन आ सम्बन्धसभक पुनर्व्यवस्था कथाकेँ समाप्ति दिस लऽ जाइत अछि।

ई सम्पूर्ण कथाविन्यास वृत्ताकार अछि। बाबी आ नेनासभक निकट आरम्भ भेल कथा राजकीय संकटमे विस्तार पबैत अछि आ फेर श्रोता नेनासभ लग घुरैत अछि। कथाक

अन्तिम मूल्य एहि बातमे निहित अछि जे बालक केवल परिणाम नहि सुनैत अछि, परिणामक नैतिक अर्थक सम्बन्धमे अपन प्रश्न सेहो करैत अछि।

दसू खण्डक पृथक पाठविश्लेषण

पहिल खण्ड : बाबीक कथासंसार आ पाठकक प्रवेश

पहिल पृष्ठक आरम्भिक वाक्य—“आइ प्रफुल्ल आदि नेना सभक मन बड़ प्रफुल्लित छलनि” (मिश्र, २०१९: १९)—नायक राजकुमार नहि, बल्कि कथा सुनबाक लेल तैयार बच्चासभक सामूहिक मनःस्थितिक चित्र अछि। एतय ‘प्रफुल्ल’ नाम आ ‘प्रफुल्लित’ विशेषणक निकटता भाषाक हलुक खेल उत्पन्न करैत अछि। लेखक पाठक केँ पहिने श्रोता-मण्डलीक परिचय दैत छथि; साहसिक कथा तकर बाद आरम्भ होइत अछि।

प्रफुल्लक बाबीक व्यक्तित्व आर्थिक साधारणता, संयुक्त परिवार, अनुशासन आ स्नेहक प्रसंगसँ निर्मित होइत अछि। बाबी परिवारक वरिष्ठ सदस्य छथि, मुदा हुनक कथात्मक शक्ति आधिकारिक पदसँ नहि, अनुभव आ आत्मीयतासँ अबैत अछि। बच्चासभक उत्सुकता बतबैत अछि जे कथा घरक नित्य-व्यवहारक भाग बनि सकैत अछि।

एहि खण्डमे घरेलू जीवनक अपेक्षाकृत दीर्घ चित्रण एकटा स्पष्ट रचनात्मक चुनाव अछि। एक दिशामे ई राजसी साहसिक आख्यानक लेल आत्मीय भूमि तैयार करैत अछि; दोसर दिशामे मुख्य संघर्षक उद्घाटन स्थगित करैत अछि। कथा जल्दी शुरू होयबाक अपेक्षा रखनिहार पाठक लेल ई विलम्ब अनुभव भऽ सकैत अछि। तथापि बाल-पाठकक सामाजिक सन्दर्भ केँ प्रमुख स्थान देबाक कारण ई आरम्भ उपन्यासक सांस्कृतिक मौलिकताक आधार अछि।

खण्डक अन्तमे बाबी आ बालकक बीच जिज्ञासा-विरामक सम्बन्ध स्थापित भऽ चुकैत अछि। एतय आरम्भिक ‘चौखट’ कथाक बाहरी सजावट नहि, बल्कि आगामी दसू खण्डक अर्थ-निर्माणक विधान बनि जाइत अछि।

दोसर खण्ड : गुमनाम राजकुमार, विपत्ति आ कथा-पुनःस्मरण

दोसर खण्डक आरम्भमे श्रोता अपन सुनल खिस्साक पुनः माँग करैत अछि। प्रफुल्लक कथन “बाबी ! हम तँ पूरा खिस्सा नहि सुनि सकलहुँ” (मिश्र, २०१९: ३०) कथावाचनक महत्त्वपूर्ण पक्ष खोलैत अछि: कथा बुझबाक लेल श्रोता बीचक छूटल कड़ी पुनः प्राप्त करय चाहैत अछि। बाबी बच्चासभक एहि आवश्यकता केँ स्वीकार करैत छथि।

भीतरक कथामे सुजीत अनजान वनमे संकटसँ जूझैत छथि। अपरिचित व्यक्ति, वनक खतरनाक भूगोल आ आश्रयक प्रश्न राजकुमारक राजकीय पहिचान केँ अस्थायी रूपसँ निष्प्रभावी बनबैत अछि। ओ राजवंशक बलपर नहि, अपन सावधानी आ प्रयत्नक बलपर आगाँ बढ़ैत छथि।

सर-सुल्तानसँ जुड़ल प्रसंगमे आश्रयक संग सूचनाक संकट उपस्थित होइत अछि। जे व्यक्ति अपन वास्तविक परिचय नहि खोलैत अछि, ओकरा लेल सहयोग प्राप्त करब सेहो कठिन अछि। एतय गुप्त पहिचान केवल रोमांचक युक्ति नहि; सुरक्षा आ विश्वासक बीच तनावक स्रोत अछि।

दोसर खण्डक उपलब्धि ई अछि जे नायकक विपत्ति केँ पाठकक कल्पनामे स्थिर करैत अछि। सीमा ई जे साहसक बहुल वर्णनक बीच भय, सन्देह आ व्यक्तिगत दुर्बलताक अन्तरंग अनुभूति आओर उभरि सकैत छल।

तेसर खण्ड : राजकीय पतनक इतिहास आ खलनायकक निर्माण

तेसर खण्डमे कथा राजकुमारक यात्रासँ हटि राजनीतिक पूर्ववृत्त देखबैत अछि। प्रारम्भमे स्पष्ट सूचना भेटैत अछि: “राजा सुजान सिंह टीकमगढ़क राजा छलाह” (मिश्र, २०१९: ३८)। जुआ, मद्यपान आ विलासक कारण हुनक आर्थिक आ राजकीय स्थिति बिगड़बाक उल्लेख सत्ता आ चरित्रक सम्बन्ध केँ नूतन दिशा दैत अछि।

एहि स्थानपर पाठक बुझैत अछि जे सुजीतक व्यक्तिगत संकट एक पृथक दुर्घटना नहि; वंशीय सम्बन्ध, सत्ता-व्यवस्था आ पूर्ववर्ती राजकीय निर्णयक व्यापक जालक परिणाम

अछि। नयनावतीक पूर्ववृत्त आ राजपरिवारक सम्बन्ध उद्धाटित भेला सँ दरबारी षड्यन्त्रक कारण क्रमशः स्पष्ट होइत अछि।

नायकक अभियानक बीच विरोधी शक्तिक इतिहास जोड़बाक शिल्प कथाक विस्तारक उदाहरण अछि। मुदा राजा सुजान सिंहक दुर्बलताक चित्रण नैतिक संकेत बहुत स्पष्ट करैत अछि। जुआ आ मद्यपानक दोष राजकीय पतनक कारण बनैत अछि; सामाजिक-आर्थिक कारणक विवेचन अपेक्षाकृत सीमित रहैत अछि।

एहि खण्डक आलोचनात्मक महत्त्व ई अछि जे रचनामे ‘दुष्ट’ पात्र अकस्मात् उत्पन्न नहि होइत छथि। हुनक स्वार्थक पाछाँ पूर्वघटना आ सम्बन्ध छथि। तथापि उपन्यास ओहि सम्बन्धसभकेँ आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यासक गहराइधरि नहि लऽ जाइत अछि।

चारिम खण्ड : आश्रम, दिशानिर्देश आ शीर्षकक उद्धाटन

चारिम खण्डक आरम्भमे बाबी चारिम दिनक कथावाचनक चौखट बनेने राखैत छथि। राजकुमार सर-सुल्तानक सहायता पाबि राजमहलक षड्यन्त्रसँ अलग भऽ नव मार्ग खोजैत छथि। एकटा अदृश्य शक्ति द्वारा आगाँ बढ़ाओल जाएबाक अनुभूति कथा केँ यथार्थक सीमासँ अलौकिक लोककल्पनामे प्रवेश करबैत अछि।

महात्मा राजकुमारक मार्गदर्शक बनैत छथि। एहि गुरुपात्रक सम्बन्ध केवल उपदेश दैबाक नहि, बल्कि संकट बुझबाक, आगामी लक्ष्य निर्धारित करबाक आ आवश्यक साहस जुटेबाक अछि। तथापि गुरु द्वारा अत्यधिक पूर्वसूचना भेटलासँ नायकक खोजक अनिश्चितता किछु कम होइत अछि।

पुस्तकक शीर्षकक निर्णायक प्रसंग पृष्ठ ५३ मे उद्धाटित होइत अछि। महात्माक निर्देशानुसार वन, पहाड़ आ जलक कठिन यात्रा पश्चात् सरोवरक मध्य स्वर्ण-कमल प्राप्त करबाक अछि। लेखक कहैत छथि जे स्वर्ण-कमल तोड़लापर मन्दिरक घण्टी बजत आ माँ कालीक आशीर्वाद प्राप्त होयत (मिश्र, २०१९: ५३)। ई दृश्य कथाक मुख्य जादुई साधनक उद्भव थिक।

‘स्वर्ण’ शब्द मूल्यवान वस्तुक बोध करबैत अछि, मुदा एहि फूलक उपयोग धन संचय लेल नहि, विपत्तिक प्रतिरोध लेल होइत अछि। एकरा प्रयत्नपूर्वक अर्जित रक्षाशक्तिक प्रतीक पढ़ल जा सकैत अछि। तथापि ई व्याख्या पाठकक आलोचनात्मक अर्थनिर्माण अछि; पुस्तक स्वयं चमत्कारक व्यावहारिक कथात्मक कार्यपर अधिक जोर दैत अछि।

पाँचम खण्ड : नयनावतीक सत्ता-प्रयोग आ शमशेर-जालिमक उभार

पाँचम दिन श्रोता सीधे प्रश्न उठबैत अछि जे सुजीतक माता-पिताक स्थिति की भेल आ राजकुमारक आगाँक गन्तव्य की थिक। बाबीक उत्तरसँ स्पष्ट होइत अछि जे सुजीतक संकट एक दिशामे नहि चलि रहल अछि; राजा रणवीर सिंह आ रानी सुनन्दा अलग दुःख भोगैत छथि, तखने नयनावतीक प्रभाव राज्यक शासनमे बढ़ैत अछि (मिश्र, २०१९: ५४)।

नयनावतीक स्वार्थमे शमशेर सिंह आ जालिम सिंह राजनीतिक उपकरण बनैत छथि। जालिम सिंहक चरित्रक सम्बन्ध जुआ, मद्य आ दुराचरणसँ जोड़ल गेल अछि। सत्ता प्राप्त करबाक कामना केवल व्यक्तिगत द्वेष नहि; राज्यक संसाधन आ प्रशासनपर नियन्त्रणक संघर्ष बनि जाइत अछि।

ई खण्ड देखबैत अछि जे शासकक निर्बलता सार्वजनिक जीवनमे अस्थिरता उत्पन्न करैत अछि। जखन राजकीय जिम्मेदारी निजी सुख आ दरबारी स्वार्थक अधीन भऽ जाइत अछि, तखन न्यायप्रिय उत्तराधिकारी दूर रहितो संघर्षक केन्द्र बनि जाइत अछि।

मुदा एहि विवेचनमे एगो आलोचनात्मक समस्या अछि। नयनावतीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा केँ मुख्यतः स्त्री-विरोधी ‘दुष्ट रानी’ प्रतिरूपक माध्यमसँ देखाओल गेल अछि। समस्या महत्वाकांक्षा स्वयं नहि, ओकर अनैतिक साधन अछि—एहि अन्तरकेँ स्पष्ट रखलासँ पात्रक अर्थ अधिक सन्तुलित होइत।

छठम खण्ड : सत्ताक मनोविज्ञान आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व

छठम खण्डक आरम्भमे बाबी पिछला घटनाक पुनः स्मरण करबैत छथि। एहि खण्डसँ ठीक पहिने पुस्तकक एकटा सूक्ति ध्यान खींचैत अछि: “सत्ता आ स्वार्थमे

अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होइत छैक” (मिश्र, २०१९: ६१)। ई वाक्य कथाक राजनीतिक नैतिकताक एकटा प्रमुख सूत्र अछि।

राजा, रानी, सेनानायक आ राजकुमारक व्यक्तिगत सम्बन्ध राज्यक सार्वजनिक नियतिकेँ प्रभावित करैत अछि। सत्ता पाबयवला व्यक्ति जँ अपन पदक उपयोग निजी स्वार्थ लेल करैत अछि तँ राजधर्म दूषित होइत अछि—एहि विचारक पुनरावृत्ति पूरे खण्डमे दृष्टिगोचर होइत अछि।

महत्त्वपूर्ण ई अछि जे राजकुमारक संघर्षक समाधान तत्काल नहि होइत अछि। कथा अलग-अलग पक्षक गतिविधि देखबैत अछि। पाठकक ध्यान नायकक वीरताक संग राज्यक अस्थिरता आ सामान्य लोकक सम्भावित क्षतिपर सेहो जाए लगैत अछि।

एहि खण्डमे उपन्यासक राजनैतिक आलोचनाक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि; मुदा समाधानक कल्पना मूलतः सुयोग्य व्यक्तिक शासनमे केन्द्रित रहैत अछि। शक्ति पर संस्थागत नियन्त्रण, प्रजाक अधिकार आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक प्रश्न कथा बहुते कम खोलैत अछि।

सातम खण्ड : दीर्घ यात्रा, कल्लू राक्षस आ विशाखाक साक्ष्य

सातम खण्डमे कथा साहसिक रूपसँ सर्वाधिक विस्तृत होइत अछि। सुजीत महात्माक देल तलवार लऽ पहाड़, वन आ अनजान क्षेत्रक यात्रा पर निकलैत छथि। पहिल पृष्ठमे ठहरबाक मनाही आ सतत आगाँ बढ़बाक आग्रह अछि। “कतहुँ ठहरबाक नहि अछि” (मिश्र, २०१९: ६७)—एहि छोट निर्देशमे अभियानक समयगत तनाव आ लक्ष्य-केन्द्रितता समाहित अछि।

यात्रामे प्राकृतिक परिवेश केवल सजावट नहि रहैत अछि; पहाड़, जल, अपरिचित मार्ग आ वनराजि नायकक क्षमता जाँचबाक माध्यम बनैत अछि। भूख-प्यास, विश्राम आ सावधानीक प्रसंग वीरताकेँ पूर्णतः अलौकिक होमयसँ बचबैत अछि।

श्रीधरपुरक कल्लू राक्षसक आतंक नायकक निजी संकटसँ कथाकेँ सार्वजनिक उद्धारक दिशामे मोड़ैत अछि। कल्लू लोक केँ भयभीत करैत अछि आ कुमारिकासभक

अपहरणक कथा सोझाँ अबैत अछि। सुजीतक हस्तक्षेप एहि कारण महत्त्वपूर्ण अछि जे एतय ओ अपन राजमुकुट नहि, अपरिचित लोकक सुरक्षा लेल संघर्ष करैत छथि।

विशाखा द्वारा कल्लूक अतीत उद्घाटित होइत अछि। ओ बतबैत छथि जे कल्लूक जन्म आ विकृति पीढ़ीगत अनुभव आ प्रतिशोधसँ जुड़ल अछि (मिश्र, २०१९: ८१-८३)। हिंसक पात्रक पूर्वकथा एकटा जटिल प्रश्न उठबैत अछि: अन्याय भोगनिहार स्वयं कखन अन्यायक स्रोत बनि जाइत अछि? कथाक उत्तर अन्ततः राक्षसक दमनक पक्षमे अछि; ओकर सामाजिक कारणक विश्लेषण अधिक विकसित भऽ सकैत छल।

एहि खण्डक प्रमुख उपलब्धि साहस आ परोपकारक संगम अछि। संगहि, बाल-पाठकक भावनात्मक संवेदनशीलताकेँ ध्यानमे रखैत हिंसक दृश्यसभक तीव्रता पर विचार जरूरी अछि।

आठम खण्ड : वापसीक तैयारी, गुप्त पहिचान आ प्रतिरोधी सहयोग

आठम खण्डमे बाबी कथाकेँ नव 'पड़ाव' पर राखैत छथि। राजकुमार अपन उद्देश्यक पूर्तिक दिशामे पुनः आश्रम आ राजनीतिक घटनाक संग जुड़ैत छथि। महात्मा हुनका सुमेरगढ़ जायब, अपन पहिचान गुप्त रखब आ विरोधीक शक्ति बुझि काज करबाक सलाह दैत छथि (मिश्र, २०१९: ८४)।

गुप्त पहिचान एतय केवल रोमांचक भेषबदल नहि, राजनीतिक रणनीति बनैत अछि। शक्तिसम्पन्न शत्रुक सोझाँ तुरन्त प्रत्यक्ष होयब विनाशकारी भऽ सकैत अछि; धैर्य आ सूचना-संग्रह साहसक आवश्यक अङ्ग बनैत अछि। एहि तरहेँ वीरताक अर्थ निर्बाध आक्रमणसँ हटि विवेकपूर्ण संगठन धरि विस्तृत होइत अछि।

भवानीशंकर आ मुरमुर सन पात्रसभक प्रसंग दरबारी विरोधक भीतर वैकल्पिक राजनीतिक चेतना देखबैत अछि। झूठा आरोप, पदसत्ताक दुरुपयोग आ बेगुनाहक रक्षा करबाक प्रसंगसँ लोकसमर्थनक प्रश्न उठैत अछि (मिश्र, २०१९: ८५-८७)।

एहि खण्डक सीमामे ई देखल जा सकैत अछि जे लोकसमर्थनक सामाजिक आधार ततेक विस्तार नहि पबैत अछि जतेक राजकीय षड्यन्त्रक व्यक्तिगत जाल। तथापि

नायकक सफलता अलग-थलग बाहुबल नहि, सामूहिक सहयोगपर निर्भर होयबाक संकेत महत्त्वपूर्ण अछि।

नवम खण्ड : कलानाथ आ ग्रामीण लोक-चेतनाक प्रवेश

नवम खण्डक आरम्भ राजापुरक गृहस्थ कलानाथसँ होइत अछि। ओकरा “बहुत मेहनती” कहि किसान-जकाँ श्रमपर आधारित सामान्य जीवनक परिचय देल गेल अछि (मिश्र, २०१९: ८९)। ई आरम्भ राजमहल, आश्रम आ राक्षसक किलासँ हटि गामक संसारमे प्रवेश करबैत अछि।

कलानाथक माध्यमसँ उपन्यास प्रजा, पंचायत, सामाजिक प्रतिष्ठा आ अन्यायपूर्ण दमनक सम्भावना केँ मूर्त रूप दैत अछि। राजकीय संघर्षक प्रभाव केवल राजवंशपर नहि, सामान्य ग्रामीण व्यक्तिपर सेहो पड़ैत अछि—ई नवम खण्डक महत्त्वपूर्ण विस्तार अछि।

पछिला घटनामे कल्लूक उपरान्त आगाँक अभियान, राम-लक्ष्मणक सहायताक प्रसंग आ राजनीतिक स्थिति बुझबाक प्रयास जुड़ैत अछि। एतय सहायता केवल राजकीय सेना वा महात्माक अलौकिक शक्तिसँ नहि, साधारण लोकक तत्परतासँ सेहो भेटैत अछि।

कलानाथक चरित्रक साहित्यिक महत्त्व ओकर सामाजिक स्थिति मे अछि। उपन्यासक राजनीतिक केन्द्र राजमुकुट होइतहुँ लोक-जीवनक अवलम्बनक बिना नायकक अभियान पूर्ण नहि होइत। एहि संकेतक अधिक विस्तार भेल रहितय तँ कृति केवल आदर्श राजधर्मक कथा नहि, प्रजा-आधारित नैतिक राजनीतिपर सेहो अधिक स्पष्ट विचार कऽ सकैत छल।

दशम खण्ड : परिचयक उद्घाटन, न्याय आ कथाचौखटक पूर्णता

दशम खण्डक आरम्भ राहुलक प्रश्नसँ होइत अछि—“आइ की सुनायब ?” (मिश्र, २०१९: ९४)। बाबी बतबैत छथि जे राजकुमार सुमेरुगढ़मे प्रवेश आ अपहृत

बालिकासभक उद्धारक कथा सुनबैत छथि। एहि उद्घोषणासँ अन्तिम खण्डक गति आ अपेक्षा दुनू तीव्र होइत अछि।

राजकुमार गुप्त सहयोग, राजनीतिक जानकारी आ लोकसमर्थनक आधारपर सुमेरुगढ़क अवस्थाक सामना करैत छथि। सर-सुल्तानसँ संवादमे सुजीतक कथन महत्त्वपूर्ण अछि —“हम एहि लेल अपनेकेँ बाध्य नहि क’ सकैत छी” (मिश्र, २०१९: ९७)। एहि छोट वाक्यमे सहयोग आ स्वीकृतिक बीच नैतिक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। विजयक महत्त्व केवल शत्रु-संहार नहि, साथी केँ विवश नहि करबाक विवेक सेहो अछि।

अन्तिम घटनामे राजकुमारक वास्तविक परिचय, शत्रुपक्षक विफलता, राजपरिवारक पुनर्मिलन आ नयनावतीक अपराध-स्वीकार कथाकेँ समापन दिस लऽ जाइत अछि। राजकुमारी जावेदासँ सम्बन्ध सेहो अन्तिम समाधानक भाग बनैत अछि। तथापि राजनीतिक व्यवस्था आ दण्ड-न्यायक जटिलता अपेक्षाकृत कम समयमे सिमटि जाइत अछि।

सभसँ महत्त्वपूर्ण ई जे राजकुमारक कथा समाप्त भेलापर घरेलू कथा-मण्डली फेर सोझाँ अबैत अछि। राहुल आ दोसर नेना अनुभवक अर्थक सम्बन्धमे प्रतिक्रिया दैत छथि। राजमहलक विशाल संसारक अन्ततः बाबीक बोलीमे समा जायब उपन्यासक मुख्य सांस्कृतिक उपलब्धि अछि।

कथाक भीतर कथा : शिल्प, समय आ श्रोताक सक्रियता

‘स्वर्ण-कमल’क बाह्य कथाचौखट आ भीतरी राजकुमारक आख्यान केँ अलग-अलग पढ़ला पर ओकर महत्त्वपूर्ण शिल्पगत अन्तर्सम्बन्ध छूटि जाइत अछि। बाबीक भूमिका कथावाचनक निरन्तरता रखब, बिसरल प्रसंग पुनः जोड़ब, अगिला घटनाक पूर्वसूचना देब आ नेनासभक प्रतिक्रियाक आधारपर खिस्सा बढ़ेबाक अछि। एहि व्यवस्थामे कथा केवल लिखित पाठ नहि रहि, सामूहिक श्रवणक अनुभव बनैत अछि।

दश खण्डक क्रम दिनक आवर्तनसँ सम्बन्धित अछि। श्रोता-बालक रोज नव प्रश्नक संग अबैत अछि। समयक ई विभाजन आधुनिक धारावाहिक कथाक उत्सुकता-जाग्रत

करबाक तकनीकसँ साम्य रखैत अछि, मुदा ओकर सांस्कृतिक मूल घरेलू मौखिक परम्परामे अछि। अध्यायक अन्त कथा केँ सम्पूर्ण समाप्त नहि करैत अछि; ओ अगिला सुनवाईक अपेक्षा बनबैत अछि।

ऐडन चेम्बर्सक बाल-पाठकक चर्चा-आधारित पढ़ाइ सम्बन्धी सिद्धान्तक आलोकमे देखी तँ पाठक प्रश्न कऽ, अनुभव साझा कऽ आ अपूर्ण जानकारीक सम्बन्धमे तर्क कऽ कथाक अर्थ बनबैत अछि (Chambers, 1993)। ‘स्वर्ण-कमल’क बच्चासभ एहि सक्रिय पाठकीयताक पूर्वरूप देखबैत अछि। मुदा बाबीक कथात्मक अधिकार बहुत प्रबल अछि; ओ कतेको ठाम नैतिक निष्कर्ष स्वयं दैत छथि। एहि कारण बातचीतक स्वतन्त्रता आ उपदेशक एकरेखीयता बीच तनाव बनल रहैत अछि।

कथाविज्ञानक दृष्टिसँ ई अन्तःस्थ आख्यान (कथाक भीतर कथा) थिक। भीतरी घटनासभक काल आ बाहरी वाचन-काल अलग अछि, मुदा बच्चासभक जिज्ञासा दुनू केँ जोड़ि रखैत अछि। एहि द्विस्तरीय रूपक परिणामस्वरूप उपन्यास केवल राजकुमारक कहानी नहि, कहानी सुनबाक सांस्कृतिक स्थितिक सेहो दस्तावेज बनि जाइत अछि।

पात्रक विन्यास : नैतिक नायकसँ जटिल विरोधी धरि

सुजीतक चरित्रक आरम्भिक परिचय राजवंशीय उत्तराधिकारीक अछि; मुदा कथा हुनका राजमहलक सुरक्षा सँ बाहर निकालि दैत अछि। वन, भूख-प्यास, अनिश्चित मार्ग आ छद्म परिचयक दबावमे हुनक कर्मक परीक्षा होइत अछि। न्यायप्रियता ओतबे अर्थवान अछि जतेक ओ संकटग्रस्त अपरिचित लोकक सहायता करैत छथि। कल्लू-विरोधी अभियान एहि कारण व्यक्तिगत प्रतिशोधक सीमा तोड़ैत अछि।

मुदा सुजीतक नैतिक छवि अत्यधिक निष्कलुष अछि। जटिल चूकि, दीर्घ आत्मसन्देह आ गहिर आत्मालोचनाक प्रसंग सीमित छथि। मारिया निकोलायेवाक चरित्र-अध्ययनक भाषा उपयोग करी तँ कथाक प्रेरक ‘कार्यपरक’ नायक आ गहिर ‘अन्तर्मन-प्रधान’ पात्रक बीच अन्तर देखल जा सकैत अछि (Nikolajeva, 2002)। सुजीतक साहस पाठक

कैं प्रेरित करैत अछि, मुदा ओकर दुर्बलता अधिक देखाओल जाइत तँ सम्बन्ध आओर मानवीय बनितय।

बाबी उपन्यासक सांस्कृतिक नायिका छथि। हुनक अधिकार न धनसँ, न राजकीय बलसँ; ओ मातृभाषाक जीवित स्मृति, अनुभव, अनुशासन आ आत्मीय सम्बोधनसँ बनैत अछि। एहि रूपमे बाबी चरित्र मात्र नहि, साहित्यिक परम्पराक प्रतीक छथि।

नयनावती सत्ताक स्वार्थपूर्ण उपयोगक प्रतिनिधि छथि। हुनक योजनाक प्रभाव सार्वजनिक जीवनपर पड़ैत अछि। अन्तिम पश्चात्तापक कारण ओ निरन्तर दुष्ट रहनिहार पात्र नहि; परिवर्तन सम्भव अछि। तथापि परिवर्तनक क्रम अधिक विस्तार पाबितय तँ मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता मजबूत होइत।

शमशेर सिंह आ जालिम सिंह व्यक्तिगत स्वार्थकें संस्थागत शक्तिसँ जोड़ैत छथि। सैनिक अधिकार आ शासन-यन्त्र जखन निजी महत्वाकांक्षाक साधन बनैत अछि, तखन रक्षक स्वयं संकट बनि जाइत अछि। राजा रणवीर सिंहक संकट आ रानी सुनन्दाक करुण अवस्था एहि दुरुपयोगक पारिवारिक परिणाम देखबैत अछि।

महात्मा गुरु, रणनीतिकार आ लोककथात्मक 'दाता' प्रकार्यक संगम छथि। ओ सुजीतकें आवश्यकता अनुसार दिशा, सूचना आ शक्ति-स्रोत प्रदान करैत छथि। कल्लू विपरीत ध्रुवपर अछि, मुदा ओकर इतिहास बतबैत अछि जे हिंसक पात्रक उत्पत्ति सेहो अतीतक सम्बन्धसँ जुड़ि सकैत अछि। विशाखा एकटा स्मृति-साक्षीक रूपमे ओहि इतिहास कें उद्घाटित करैत छथि।

सर-सुल्तान, भवानीशंकर आ कलानाथ कथाकें एकल वीरगाथा बनबासँ रोकैत छथि। सुजीतक सफलता सहयोग, सूचना आ लोकसम्बन्धपर निर्भर अछि। एहि पात्रसभक कारण ई स्पष्ट होइत अछि जे साहस सदा एकाकी संघर्ष नहि; दूसरक विश्वास अर्जित करब सेहो ओकर हिस्सा अछि।

स्त्री-पात्र, मातृत्व आ सत्ताक लैंगिक राजनीति

रानी सुनन्दा आ नयनावतीक विरोध कथाक परम्परागत 'सद्गुणी माता बनाम दुष्ट विमाता' संरचना पुनः उपस्थित करैत अछि। ई लोककथामे परिचित युक्ति अछि, मुदा साहित्यिक आलोचनाक लेल एतय पूछब आवश्यक अछि जे स्त्रीक सत्ताकांक्षा केँ अनैतिकता सँ केना अलग कयल जाए। नयनावतीक समस्या सत्ताक अभिलाषा नहि, ओहि अभिलाषाक पूर्तिक लेल छल, षड्यन्त्र आ अन्याय अपनब अछि।

बाबी स्त्री-अनुभवक दोसर रूपक प्रतिनिधित्व करैत छथि। हुनक पास वैधानिक राजसत्ता नहि, मुदा कथा पर हुनक पूर्ण सांस्कृतिक अधिकार अछि। परिवारक भीतर ज्ञानसंचरणक ई अधिकार नयनावतीक कठोर राजनीति सँ पूर्णतः भिन्न अछि। ई तुलना देखबैत अछि जे उपन्यास स्त्रीकेँ केवल एक नैतिक रूपमे सीमित नहि रखैत अछि।

विशाखा कल्लूक अतीतक जानकारी दैत छथि; हुनक वाणी कथाकेँ स्मृति आ कारणक स्तर प्रदान करैत अछि। राजकुमारी जावेदाक उपस्थिति सेहो स्त्री-संसारक विस्तार करैत अछि। तथापि निर्णायक युद्ध, अभियान आ राजकीय समाधानक नेतृत्व लगभग सम्पूर्णतः पुरुष पात्रसभक हाथमे अछि।

समकालीन बाल-पाठिकाक दृष्टिसँ जावेदाक स्वतंत्र निर्णय, विशाखाक स्वयंप्रेरित सामाजिक प्रतिरोध अथवा सुनन्दाक राजनीतिक विवेक अधिक विकसित भऽ सकैत छल। एहन सम्भावना देखेनाइ कृतिक ऐतिहासिक रूपपर वर्तमान नैतिक फैसला थोपनाइ नहि; ई उपन्यासक भीतर निहित किन्तु अल्पविकसित रचनात्मक सम्भावनाक निदर्शन थिक।

स्वर्ण-कमल, तलवार, वन आ किला : प्रतीकक अर्थक्षेत्र

कमल भारतीय सांस्कृतिक चिन्तनमे पवित्रता, सुन्दरता आ प्रतिकूल परिस्थितिमे खिलबाक क्षमता सँ जुड़ल प्रतीक थिक। एहि सामान्य सांस्कृतिक अर्थकेँ उपन्यासपर यांत्रिक ढंगसँ आरोपित नहि करबाक चाही। मूल पाठमे स्वर्ण-कमलक प्राथमिक कार्य

अलौकिक संरक्षण आ नायकक आगामी अभियानक सशक्तीकरण थिक (मिश्र, २०१९: ५३)। ओकर प्रतीकात्मक अर्थ एहि कथात्मक कार्यसँ विकसित होइत अछि।

‘स्वर्ण’ शब्द धन आ दुर्लभताक बोध करबैत अछि; तथापि नायक एकरा निजी समृद्धि लेल नहि रखैत छथि। एतय मूल्यवान वस्तुक मूल्य उपयोगक नैतिक लक्ष्यसँ जुड़ि जाइत अछि। स्वर्ण-कमल एही कारण अनैतिक स्वर्णलोभक विपरीत ध्रुव बनि सकैत अछि।

तलवार साहसिक लोककथाक संघर्ष-साधन अछि, मुदा गुरु द्वारा देल गेल तलवारक संग सावधानीक निर्देश सेहो अछि। शस्त्रक शक्ति विवेकक अधीन होयबाक आग्रह कथामे बिखरल अछि, यद्यपि हिंसा आ आत्मरक्षाक सीमा अधिक सुस्पष्ट होयबाक आवश्यकता छल।

वन एकटा सीमांत-स्थान अछि जतय राजसत्ता आ परिचित सामाजिक क्रम क्षीण होइत अछि। राजकुमार केँ बचेबाक लेल अपन अनुभव पर निर्भर रहय पड़ैत अछि। किला उलटाभाँति सत्ताक केन्द्र आ बन्दीक स्थान दुनू बनि सकैत अछि। सरोवरक मध्य कमल प्राप्त करब चुनौतीक पार जा कऽ नव शक्ति पाबबाक रूपक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

प्रॉपक प्रकार्य-सिद्धान्त आ आख्यानक संरचनात्मक साम्य

व्लादिमीर प्रॉप ‘Morphology of the Folktale’ मे लोककथाक पात्रसभसँ बेसी हुनक कथात्मक कार्य अथवा ‘प्रकार्य’क अध्ययन करैत छथि (Propp, 1968)। ‘स्वर्ण-कमल’मे प्रारम्भिक संकट, नायकक बहिष्करण, मार्गदर्शकसँ भेट, विशेष साधनक प्राप्ति, यात्रा, शत्रु-संघर्ष, गुप्त परिचय, पहिचानक उद्घाटन आ पुनर्स्थापनाक क्रम एहि पद्धतिसँ पढ़ल जा सकैत अछि।

एहि क्रममे नयनावती-शमशेर-जालिम विरोधी शक्तिक कार्य करैत छथि; महात्मा दाता आ मार्गदर्शक; स्वर्ण-कमल जादुई साधनक; सुजीत संघर्षरत नायकक; आ राज्यक पुनर्स्थापना अन्तिम समाधानक। मुदा प्रॉपक प्रत्येक प्रकार्य प्रत्येक कथामे उपस्थित

होइत अछि—एहन दावा नहि अछि। संरचनात्मक साम्य कृतिक व्याख्या सहज बनबैत अछि, एकरा कोनो यूरोपीय लोककथाक प्रतिलिपि सिद्ध नहि करैत अछि।

वास्तविक महत्त्व एहि बातमे अछि जे लेखक लोककथात्मक घटना-क्रमकेँ लम्बा उपन्यासक भीतर विस्तार दैत छथि। खलनायकक अनेक स्तर, सहायकक विविध प्रकार आ बाहरी कथावाचिका एहि संरचनाकेँ सामान्य एकल लोककथासँ अधिक जटिल बनबैत अछि।

रस, दृश्यात्मकता आ बालकक कल्पनाशक्ति

कथाक प्रधान भाव वीरताक अछि। राजकुमारक भयावह यात्रा, दमनकारी शक्तिसँ मुठभेड़ आ प्रजाक रक्षाक प्रयास वीर रसक आधार छथि। मुदा वीरता केवल बलप्रयोग नहि: गुप्त रूपमे रहि सूचना बुझब, मित्र बनायब आ साथी पर बाध्यता नहि थोपब सेहो साहसक विवेकपूर्ण रूप थिक।

अद्भुत रस स्वर्ण-कमल, माँ कालीक संरक्षण, महात्माक विशेष ज्ञान आ राक्षसक प्रसंगसभसँ उत्पन्न होइत अछि। भयानक रस कल्लूक किला, अपहरण, वनक जोखिम आ षड्यन्त्रमे अछि। करुण रस सुनन्दा आ सुजीतक बिछोह, राजा रणवीर सिंहक संकट तथा सामान्य लोकक पीड़ामे स्पष्ट होइत अछि। अन्तिम पुनर्मिलन तनावक शमनक दिशामे बढ़ैत अछि।

लेखकक दृश्यात्मक संसारमे नदी, पहाड़, सरोवर, वन आ किला अछि; ई सभ मुख्यतः गति आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि। स्थानीय प्राकृतिक इतिहास, मौसम, लोकवनस्पति आ मिथिलाक विशिष्ट भूगोलक गहिर विवरण अपेक्षाकृत कम भेटैत अछि। कथाक साहसिक स्वभाव एहन सङ्क्षेपक किछु औचित्य दैत अछि, मुदा मातृभाषा आ क्षेत्रीय परिवेशक बीच अधिक सघन सम्बन्ध उपन्यासकेँ विशिष्ट स्थानीय रूप दऽ सकैत छल।

नैतिक दर्शन : न्याय, क्षमा, सहमति आ सत्ता

उपन्यासक नैतिक आग्रह अन्यायक विरुद्ध सक्रिय प्रतिरोध अछि। सुजीत केवल अपमान सहि निष्क्रिय प्रतीक्षा नहि करैत छथि। ओ तैयारी करैत छथि, साहस जुटबैत

छथि, सहायता लैत छथि आ संकटग्रस्त लोकक रक्षा करैत छथि। एही कारण उपन्यासक सदाचार केवल कथन नहि, कर्मसँ जुड़ल अछि।

तथापि न्याय आ प्रतिशोधक अन्तर सदिखन पर्याप्त स्पष्ट नहि अछि। कल्लूक विनाश, षड्यन्त्रकारीक दमन आ राजवंशीय उत्तराधिकारक पुनर्स्थापना एक संग घटैत अछि। बालकसँ एहि प्रसंगपर चर्चा करैत समय पूछल जा सकैत अछि: आत्मरक्षाक लेल बलप्रयोग कखन आवश्यक अछि? अपराध स्वीकार करबाक बाद कतेक क्षमा उचित अछि? व्यक्तिगत क्षमा आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व समान अछि कि अलग?

नयनावतीक अन्तिम पश्चात्ताप उपन्यासक करुण-नैतिक पक्ष खोलेत अछि। व्यक्तिक परिवर्तन सम्भव अछि—ई आशावादी दृष्टि बाल-साहित्यक लेल उपयोगी अछि। मुदा राजकीय षड्यन्त्रसँ सामान्य लोक केँ भेल क्षतिक न्यायिक समाधान व्यक्तिगत क्षमासँ स्वतः पूरा नहि होइत। उपन्यास एहि अन्तरक गहिर विवेचन नहि करैत।

सहमतिक प्रश्न अन्तिम खण्डमे उजागर होइत अछि। सर-सुल्तानसँ संवादमे सुजीतक ‘बाध्य नहि’ करबाक कथन बतबैत अछि जे साथीकेँ स्वतन्त्र इच्छा देनाइ नैतिक नेतृत्वक गुण अछि (मिश्र, २०१९: ९७)। ई प्रसंग एकरा सरलीकृत ‘तलवारक नायक’सँ बेसी विचारशील पात्र बनबैत अछि।

राज्यक अन्तिम पुनर्स्थापना आदर्श राजधर्मक रूपमे प्रस्तुत अछि। आधुनिक लोकतान्त्रिक अर्थमे नागरिक संस्थाक जवाबदेहीक चित्र अपेक्षाकृत कम अछि। उपन्यासक राजनीतिक कल्पना मुख्यतः सुयोग्य शासकक नैतिकता पर आश्रित अछि। एहि सीमा केँ मानैतहुँ कथा पदसत्ताक दुरुपयोगक तीव्र आलोचना करैत अछि, जे एकर महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

बाल-मनोविज्ञान, पठन-अनुभव आ शैक्षिक उपयोगिता

कथाक भीतर नेनासभक उत्सुकता ई मानैत अछि जे बच्चा केवल आदेश माननिहार प्राणी नहि, प्रश्न पूछनिहार पाठक अछि। प्रफुल्लक छूटल प्रसंग पुनः सुनबाक आग्रह, विमलाक शंका आ राहुलक प्रश्न सामूहिक पठनक बहुरंगी रूप बनबैत अछि। एतय

चर्चा, स्मरण, अनुमान आ अन्तिम प्रतिक्रिया—चारु प्रक्रिया बालकक अर्थ-निर्माणसँ सम्बन्धित अछि।

कथाक साहसिक संरचना भय केँ पूर्णतः समाप्त नहि करैत; ओ भयक बीच निर्णय लेबाक अवसर रचैत अछि। राजकुमार अकेला पड़ैत छथि, गलत व्यक्तिक भेट भऽ सकैत अछि, आश्रय अनिश्चित होइत अछि। एहि प्रकारक प्रसंग बच्चाक भीतर आत्मविश्वास आ सावधानीक बीच सम्बन्धक कल्पना विकसित करयमे सहायक होइ सकैत अछि। तथापि कल्लूक हिंसा आ अपहरणक प्रसंग सम्भावित बाल-पाठकक उमेर आ संवेदनशीलता अनुसार सन्दर्भित कयल जाएबाक चाही।

बाल-पठनक आधार उमेर मात्र नहि, भाषिक दक्षता, श्रवण-अनुभव आ भावनात्मक तैयारी सेहो अछि। माध्यमिक विद्यालयक पूर्वाद्घिसँ किशोरावस्थाधरिक पाठक लेल ई कृति उपयुक्त होयबाक सम्भावना अछि; छोट बच्चा लेल चुनल प्रसंगक सामूहिक कथावाचन अधिक उपयोगी होयत। ई पाठकीय मूल्यांकन अछि, प्रकाशकीय निश्चित आयु-वर्ग नहि।

मातृभाषामे एहन विस्तृत साहसिक उपन्यासक उपलब्धता भाषिक आत्मविश्वासक पक्षसँ विशेष महत्त्व रखैत अछि। मैथिली बालककेँ इहो अनुभव होइत अछि जे अपन भाषामे महल, राक्षस, गुप्त अभियान, राजनीतिक द्वन्द्व आ आत्मीय घरेलू संवाद एकसंग विकसित भऽ सकैत अछि। एतय बाल-साहित्य मातृभाषाक रचनात्मक विस्तारक साधन बनैत अछि।

भाषाशैली, संवाद आ सम्पादकीय अनुशासन

उपन्यासक भाषा सहज कथावाचनक अनुकूल अछि। संवादक पर्याप्त उपयोग घटनाक गति बनौने रखैत अछि। बाबीक बोलबाक शैलीमे आत्मीयता अछि; राजकीय पात्रसभक भाषामे औपचारिकता आ अधिकारक बोध भेटैत अछि। भाषाक ई भिन्नता पाठक केँ दुनू संसारमे सहज प्रवेश दैत अछि।

एकर संग किछु शैलीगत सीमा सेहो अछि। अनेक अवसरपर पात्रसभक संवाद केवल कथानकक आवश्यक सूचना दैत अछि। कथावाचक अथवा महात्मा द्वारा घटनाक नैतिक अर्थ तत्काल स्पष्ट कयलासँ पाठकक स्वतन्त्र व्याख्याक अवसर कम होइत अछि। दृश्य-रचना आ अन्तर्मुखी अनुभूतिक अनुपात आओर सन्तुलित होइत तँ प्रभाव गहिर होइत।

सम्पादकीय दृष्टिसँ कतिपय विवरण आ पुनरावृत्ति सङ्क्षिप्त बनाओल जा सकैत अछि, मुदा मैथिली शब्दरूप, वाक्य-लय आ मौखिक स्वरपर अनावश्यक मानकीकरण उचित नहि। भाषाक स्वाभाविकता स्वयं कृतिक रचनात्मक सम्पत्ति अछि।

आलोचनात्मक सीमा आ मूल्यांकनक सन्तुलन

कृतिक पहिल सीमा कथाक दीर्घ प्रस्तावना अछि। घरेलू आरम्भ सांस्कृतिक रूपसँ सार्थक अछि, मुदा मुख्य साहसिक घटनाक प्रारम्भ अपेक्षाकृत देरमे होइत अछि। दोसर सीमा नायकक अत्यधिक आदर्शीकरण; सुजीतक मानवीय कमजोरी आ निर्णयगत भूलक अवसर सीमित अछि। तेसर सीमा जादुई संरक्षणपर निर्भरता, जे किछु ठाम मानवीय प्रयत्नक जटिलता सरल करैत अछि।

चारिम सीमा खलनायकक कारण-विकासक अपूर्णता अछि। नयनावती आ जालिम सिंह सत्ता-लोभक प्रतिनिधि स्पष्ट छथि, मुदा हुनक अन्तर्द्वन्द्व आ सामाजिक परिस्थिति अधिक गहराइ पाबि सकैत छल। कल्लूक अतीत एहि सरलीकरणकें तोड़बाक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा ओकरा बहुत विस्तार नहि भेटैत अछि।

पाँचम सीमा लैंगिक सक्रियताक असमान वितरण अछि। बाबी आ विशाखा अर्थनिर्माणमे निर्णायक छथि, मुदा शारीरिक अभियान आ राजनीतिक समाधानमे पुरुष नेतृत्व प्रमुख बनल रहैत अछि। छठम सीमा अन्तिम राज्यव्यवस्था आ दण्ड-न्यायक तीव्र समाधान अछि। पारिवारिक मेल-मिलापक बीच सार्वजनिक न्याय आ प्रजाक अधिकारक प्रश्न गौण रहि जाइत अछि।

एहि सीमा केँ उल्लेख करब कृतिक अवमूल्यन नहि। साहित्यिक आलोचनाक उद्देश्य रचनाक वास्तविक संरचना आ ओकर सम्भावना दुनू केँ देखेनाइ अछि। लोककथात्मक उद्देश्य, बाल-पाठकक रोमांचक आवश्यकता आ प्रकाशित मैथिली बाल-उपन्यासक ऐतिहासिक परिस्थिति ध्यानमे राखि मूल्यांकन करबाक चाही।

उपलब्धि : मैथिली बाल-उपन्यासक रचनात्मक विस्तार

‘स्वर्ण-कमल’क पहिल उपलब्धि मौखिक कथा-संस्कृतिक पुनर्स्थापना अछि। बाबी आ नेनासभक संग पठन-संबन्धक प्रस्तुति उपन्यासक मौलिक सांस्कृतिक स्वर बनबैत अछि। दोसर उपलब्धि अनेक खण्डमे फैलल निरन्तर साहसिक कथानक अछि, जाहिमे राजकुमारक यात्रा, राजकीय षड्यन्त्र, राक्षसक आतंक आ राज्यक पुनरुद्धार एक-दोसरसँ सम्बन्धित होइत अछि।

तेसर उपलब्धि साहसक नैतिक परिभाषाक विस्तार अछि। अपरिचितक सहायता, विश्वसनीय साथी बनायब, गुप्त सूचना जुटायब आ सहमतिक सम्मान करब वीरताक संग प्रस्तुत अछि। चारिम उपलब्धि अद्भुत, भयानक, वीर आ करुण अनुभूतिक मिश्रण अछि, जे बाल-पाठकक कल्पनाशक्ति केँ विस्तृत करैत अछि।

पाँचम उपलब्धि मातृभाषाक गद्य-विस्तार अछि। राजदरबारक औपचारिक संवाद आ बाबीक आत्मीय मैथिली एकहि पुस्तकमे सह-अस्तित्व रखैत अछि। छठम उपलब्धि नैतिक प्रश्नक बहुलता अछि: कोना न्याय करब, ककर विश्वास करब, गलत रास्ता चुननिहार व्यक्तिक संग कोन व्यवहार उचित अछि आ अधिकारसँ बेसी महत्त्वपूर्ण पात्रता किएक अछि।

समग्र रूपमे कृति न केवल राजकुमारक विजयक कथा थिक, बल्कि बालकक सुनबाक, पूछबाक आ विचार करबाक अधिकारक साहित्यिक स्मरण सेहो अछि।

निष्कर्ष

‘स्वर्ण-कमल’ केँ मैथिली बाल-साहित्यक लोककथात्मक साहसिक उपन्यासक रूपमे चिन्हित करब सर्वाधिक न्यायसंगत अछि। एकर मूल गतिशीलता राजकुमारक

संकटपूर्ण यात्रा मे अछि, मुदा सांस्कृतिक मौलिकता बाबी-प्रफुल्लक कथावाचन सम्बन्धमे। एही द्विस्तरीय संरचनासँ कृति मौखिक परम्पराक आत्मीयता आ मुद्रित उपन्यासक विस्तारित साहसिक संसारकेँ एकसंग रखैत अछि।

सुजीतक विजय एकटा सरल ‘भलाइ बुराइ पर भारी’ प्रतिपादनसँ अधिक जटिल अर्थ ग्रहण करैत अछि। हुनक संघर्ष न्याय, विश्वास, सहयोग आ सहमतिक प्रश्न उठबैत अछि। संगहि, नायकक आदर्शकृत रूप, चमत्कारक निर्णायक हस्तक्षेप, स्त्री-पात्रक सीमित स्वतंत्रता आ राजवंशीय समाधान आधुनिक आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि। एहि अन्तर्विरोधसभक बावजूद पुस्तकक स्थायी साहित्यिक योगदान महत्त्वपूर्ण अछि। स्वर्ण-कमल शीर्षकक फूल कथा भीतर रक्षा आ आशाक साधन अछि; आलोचनात्मक अर्थमे ई मैथिली मातृभाषाक भीतर पीढ़ीसँ पीढ़ी चलैत कथा, स्मृति आ नैतिक कल्पनाक प्रतीक बनि उठैत अछि। राजमहलक आख्यान समाप्त भऽ जाइत अछि, मुदा बाबीक खिस्सा सुनबाक नेनासभक चाहना साहित्यक निरन्तरताक संकेत दैत अछि।

प्राथमिक स्रोत

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। २०१९। स्वर्ण-कमल (मैथिली बाल उपन्यास)। उपरदाहा, दरभंगा: गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच।

झा, योगानन्द। २०१९। ‘मैथिली बाल उपन्यास : स्वर्ण-कमल’। नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’, स्वर्ण-कमल, पृ. ५-१६। उपरदाहा, दरभंगा: गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच।

इतिहास आ संस्थागत सन्दर्भ

नवीन, देवशंकर। ‘मैथिली बाल साहित्य का विहंगम परिदृश्य’। गद्यकोश। (अवलोकन: २३ अक्टूबर २०२६)।

साहित्य अकादेमी। २०२३। List of Books Recommended for the Bal Sahitya Puraskar 2023, मैथिली अनुभाग। (अवलोकन: २३ अक्टूबर २०२६)।

साहित्य अकादेमी। ‘बाल साहित्य पुरस्कार (२०१०-२०२५)’, मैथिली पुरस्कार-प्राप्त कृतिसूची। (अवलोकन: २३ अक्टूबर २०२६)।

आलोचनात्मक आ सैद्धान्तिक सन्दर्भ

Propp, Vladimir. 1968. Morphology of the Folktale. 2nd ed. Translated by Laurence Scott; edited by Louis A. Wagner. Austin: University of Texas Press.

Nikolajeva, Maria. 2002. The Rhetoric of Character in Children's Literature. Lanham, MD: Scarecrow Press.

Chambers, Aidan. 1993. Tell Me: Children, Reading & Talk. Stroud: Thimble Press.

समेकित निष्कर्ष

साहित्यिक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

बारह कृतिक एहि संयुक्त पठनसँ नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क लेखकीय पहिचान मुख्यतः समाजक आन्तरिक अन्तर्विरोधकें सार्वजनिक चर्चा बनाएबाक प्रयत्नक रूपमे उभरैत अछि। कथा, उपन्यास, शब्दचित्र, गीत आ बाल-आख्यान जेकाँ भिन्न विधामे हुनकर भाषा आ कथन-विन्यास बदलैत अछि, मुदा मानवीय गरिमा, शिक्षा, अन्याय-विरोध आ लोकसम्बन्धक प्रति आग्रह स्थिर रहैत अछि।

समाजसुधारक प्रवृत्ति हुनकर रचनाक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि; ओकर सीमा तखन सोझाँ अबैत अछि जखन कथक वा पात्रक वाणी कलात्मक दृश्यकें दबा कऽ निष्कर्ष पहिनहि निर्धारित कऽ दैत अछि। स्त्रीक अस्मिता, वंचित वर्गक जीवन, ग्रामीण संस्था आ आधुनिक प्रशासनक चित्रण प्रायः प्रश्न उपजाबैत अछि, जखन कि समाधान कतिपय प्रसंगमे पात्रक नैतिक दृढ़ताक सहारे अत्यधिक शीघ्र प्राप्त भऽ जाइत अछि। ई अन्तर प्रत्येक कृतिक आलोचनात्मक मूल्यांकनमे महत्त्व रखैत अछि।

मिथिलाक गाम आ शहर एतय विरोधी ध्रुव मात्र नहि छथि। स्मृति, शिक्षा, जीविका, प्रवास, राजनीतिक अनुभव आ सांस्कृतिक कर्मक मार्फत दूनूक बीच सतत आवागमन चलैत अछि। एहि सामाजिक भूमि पर नन्दक साहित्य मानवीय सम्बन्धकें अपन मुख्य मापदण्ड बनबैत अछि। ग्राम्य संस्कृति प्रतिकें स्नेह आलोचनाहीन मोह नहि बनय, आ

आधुनिक संस्था प्रतिकेँ विश्वास तकर शक्ति-संरचनाक प्रश्नकेँ ओझरा नहि दे—एहि सन्तुलनमे अनेक रचनाक आलोचनात्मक सम्भावना निहित अछि।

‘काव्य सरिता’ आ ‘स्वर्ण-कमल’ लेखकक रचनात्मक विस्तारक विशेष प्रमाण अछि। पहिल पोथी गीतात्मक परम्परा, लोकधुन आ सार्वजनिक चेतनाकेँ एकठाम अनैत अछि; दोसर बाल-पाठकक लेल पारिवारिक कथावाचन आ साहसिक कल्पनाकेँ दीर्घ आख्यानमे रूपान्तरित करैत अछि। एहि दुनूकेँ प्रौढ़ सामाजिक उपन्याससभक कसौटीपर यथावत् जाँचब उचित नहि; प्रत्येक विधाक अपन सौन्दर्यबोध आ पाठकीय अपेक्षा छैक।

समग्रतः नन्दक कृति-संसार मैथिली साहित्यक सामाजिक प्रश्न, लोकभाषी अभिव्यक्ति आ नैतिक कल्पनाकेँ अध्ययनक समृद्ध अवसर प्रदान करैत अछि। ओकर महत्त्व प्रशंसात्मक घोषणामे नहि, बल्कि ओहि प्रश्नसभमे अछि जे पाठककेँ समानता, न्याय, परिवार, सत्ता, नैतिकता आ भाषिक संस्कृतिक सम्बन्ध फेरसँ विचारबाक लेल बाध्य करैत अछि।

सन्दर्भग्रन्थ आ साहित्यिक अभिलेख

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क अध्ययनाधीन कृतिसभ

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। गाम-घर।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। आडम्बर। २०१७।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। गुदड़ीक लाल।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। अनठिया कुकुर।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। सुजाता।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। सुकन्या। २०१९।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। परिवार। २०२१।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। दिल्लीक पार्क। २०१८।

मिश्र, नन्द कुमार 'नन्द'। याचक के नजि। २०२२।

मिश्र, नन्द कुमार 'नन्द'। महारानी कैकेयी।

मिश्र, नन्द कुमार 'नन्द'। काव्य सरिता। २०१९।

मिश्र, नन्द कुमार 'नन्द'। स्वर्ण-कमल। २०१९।

मैथिली साहित्यक अभिलेखीय सन्दर्भ

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका। मैथिली पोथीक सूची (पोथी)।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm>

विदेह। मैथिली गद्य : लेखक आ रचनाक सूची।

<https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm>

विदेह। विदेह शिशु उत्सव : बाल-साहित्यक रचना आ ग्रन्थसूची। <https://videha-ejournal.github.io/videha/kids.htm>

विदेह। समानान्तर मिथिला एवं मैथिली साहित्येतिहास : लेखक, विधा आ साहित्यिक परम्पराक अभिलेख। <https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm>

झा, हरिमोहन। कन्यादान। मैथिली उपन्यास।

नागार्जुन। पारो। मैथिली उपन्यास।

प्रेमचन्द। गोदान। हिन्दी उपन्यास।

पद्य Poetry

२.१.राजदेव मण्डल- बहीराक बस्ती



राजदेव मण्डल

बहीराक बस्ती

चिचिया रहल छी हम

लगाक जोर

करुण क्रन्दन कअ रहल छी
 बहि रहल अछि नोर ।
 मन ताकि रहल अनुकूल सहारा
 सहाराक मध्य भेल छी बेसहारा
 सिनेहक पियास सँ भेल छी आकुल
 तन-मन भेल अछि अति व्याकुल ।
 सभक आंखि मे घृणा भरल
 देखि कै अछि मन डरल
 दौगैत-दौगैत भेल छी अपसियाँत
 कियो नहि सुनैत अछि हमर बात
 स्वरक नहि छै ऐठाम कोनो मोल
 के सुनत केकर बोल
 केना हेतै एक दोसर सँ मेल-जोल
 सभ बहीरे अछि अइ टोल ।
 कहैत अछि आर किछो
 बुझैत अछि आर किछो
 भअ रहल अछि खेला
 माँगैत अछि गुड़ दैत अछि ढेला
 कोय नहि सुनै छथि हमर बात
 सुनि कै सब भअ जाइये कात
 हम कहाँ केलिए कोनो अघात
 कियक दुसमन जेकाँ करैत अछि हमरा साथ
 इशारा सँ करै पड़त बात

तब देत ऐठाम कियो साथ
करै पड़त संचय अपन शक्ति
अपने भक्ति अपने मुक्ति ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

२.२. प्रणव कुमार झा-भगवान भरोसे



प्रणव कुमार झा

प्रणव कुमार झा

भगवान भरोसे

लोकतन्त्र भगवान भरोसे
भोटतंत्र भगवान भरोसे ।
मार्केट खसैत रुपया गुरकैत
अर्थतन्त्र भगवान भरोसे ।
महंगाई अछि कमर तोड़ने
दालि रोटी भगवान भरोसे ।
रोज रोज स्कूल बंद होई

शिक्षा अछि भगवान भरोसे ।
 डिग्री के दोकान फुजल छैक
 स्किल अछि भगवान भरोसे ।
 युवा रोजगार ताकि रहल अछि
 ब्याह-दान भगवान भरोसे ।
 कर उगाही झोरा के झोरा
 डिलिवरी भगवान भरोसे ।
 नव-नव रोड धसै अछि डेली
 आन-जान भगवान भरोसे ।
 जंगल-पहाड़ सुट्टाह भऽ रहल
 पर्यावरण भगवान भरोसे ।
 शाख शाख पर उल्लू बैसल
 संस्था सभ भगवान भरोसे ।
 प्रश्न पुछब आब देशद्रोह भेल
 नचिकेता भगवान भरोसे ।
 मारि-पीट आ गूँहा गंजन
 प्रेम-भाव भगवान भरोसे ।
 सगरो पसरल नारी तर्जन
 बेटी बचाउ भगवान भरोसे ।
 बल-छल आगाँ सत्य निरुत्तर
 फैक्ट सेहो भगवान भरोसे ।
 न्यायालय बस ज्ञान बांटय य
 न्याय भेंटय भगवान भरोसे ।

मंदिर मे होई चन्दा चोरी

भगवानों भगवान भरोसे ।

-प्रणव कुमार झा, ग्राम गौरापुर जिला बेगूसराय। संप्रति: एनबीईएमएस, नई दिल्ली

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

विदेह ४५२

१५ अक्टूबर २०२६ • वर्ष १९ मास २२६ • ISSN 2229-547X

अनुक्रमणिका / CONTENTS



०.१. अंक ४५१ पर टिप्पणी

गद्य Prose

- १.१. हितनाथ झा- मैथिली साहित्यमे तारानाथ झा एवं हुनक परिवारक योगदान-३०
- १.२. कल्पना झा- मैथिली साहित्यमे श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' एवं हुनक परिवारक योगदान-११
- १.३. आशीष अनचिन्हार-शुगर डैडी (Sugar Daddy), शुगर ममी (Sugar Mommy वा Sugar Mama), मिथिलाक बिकौआ बियाह एवं वर्तमान
- १.४. लालदेव कामत-एक कवि 'क' तकनीकी निबन्ध संग्रह/ प्रो० राम चन्द्र मण्डल जीके पत्नी शोक मादे
- १.५. प्रीति कुमारी-राना.सुधाकरके स्मृति पुनः बिराटनगरमे / व्यक्तिगत : फुले बाबू नय्य रहलाथि
- १.६. आचार्य रामानंद मंडल-मिथिला राज बनान बज्जि महाजनपद/ मिथिला आ अंतर्जातीय विवाह

गजेन्द्र ठाकुरक शोध-आलेख (१.७-१.४३)

- १.७. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक : अभिलेख, शोक, श्रम आ ज्ञानक बहुस्तरीय महाकथा
- १.८. नित नवल आशीष अनचिन्हार — नबोनारायण मिश्र समग्र
- १.९. नित नवल आशीष अनचिन्हार — स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर
- १.१०. नित नवल आशीष अनचिन्हार — गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा
- १.११. नित नवल आशीष अनचिन्हार — गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय
- १.१२. नित नवल आशीष अनचिन्हार — प्रीति कारण सेतु बान्हल
- १.१३. नित नवल आशीष अनचिन्हार — सेतुषाम : Vibrant Maithili
- १.१४. नित नवल आशीष अनचिन्हार — अनचिन्हार आखर
- १.१५. नित नवल आशीष अनचिन्हार — जंघाजोड़ी
- १.१६. नित नवल आशीष अनचिन्हार — कुमारि इच्छा
- १.१७. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजलक रेडी रेकोनर

१.१८. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

- १.१९. नित नवल आशीष अनचिन्हार — सन्दर्भ सहित
- १.२०. नित नवल आशीष अनचिन्हार — शब्द-अर्थ-शक्ति
- १.२१. नित नवल आशीष अनचिन्हार — मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास
- १.२२. नित नवल बेचन ठाकुर — नवधर
- १.२३. नित नवल बेचन ठाकुर — बेटीक अपमान आ छीनरदेवी
- १.२४. नित नवल बेचन ठाकुर — बाप भेल पिन्ती आ अधिकार
- १.२५. नित नवल बेचन ठाकुर — ऊँच-नीच
- १.२६. नित नवल बेचन ठाकुर — बिसवासघात
- १.२७. नित नवल बेचन ठाकुर — भअँट
- १.२८. नित नवल कुमार पवन — पड़ठ
- १.२९. नित नवल कुमार पवन — डायरीक खाली पन्ना
- १.३०. नित नवल कुमार पवन — अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप
- १.३१. नित नवल कुमार पवन — पड़ठ, स्मृति आ आत्मलेखन : तुलनात्मक समीक्षा
- १.३२. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — गाम-घर
- १.३३. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — आडम्बर
- १.३४. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — गुदड़ीक लाल
- १.३५. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — अनठिया कुकुर
- १.३६. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — सुजाता
- १.३७. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — सुकन्या
- १.३८. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — परिवार
- १.३९. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — दिल्लीक पार्क
- १.४०. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — याचक के नजि
- १.४१. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — महारानी कैकेयी
- १.४२. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — काव्य सरिता
- १.४३. नित नवल नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' — स्वर्ण-कमल

पद्य Poetry

- २.१. राजदेव मण्डल — बहीराक बस्ती
- २.२. प्रणव कुमार झा — भगवान भरोसे



www.videha.co.in
मुख्य वेबसाइट

QR स्कैन करू
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर



videha-ejournal.github.io/videha
विदेह ई-जर्नल (GitHub)